प्राचीन भारत

टॉपिक -1 : सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल एवं उनकी विशेषताएँ

सिंधु घाटी सभ्यता (या हड़प्पा सभ्यता) विश्व की प्राचीन कांस्ययुगीन नदीघाटी सभ्यताओं में सबसे उन्नत और नगरीय सभ्यता थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अनुसार इसका काल-निर्धारण लगभग 2500 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व के मध्य माना जाता है। यह सभ्यता एक त्रिभुजाकार क्षेत्र में फैली थी, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 12.99 लाख वर्ग किलोमीटर था। इसके भौगोलिक विस्तार के अंतर्गत उत्तरी छोर पर मांडा (चिनाब नदी, जम्मू-कश्मीर), दक्षिणी छोर पर दायमाबाद (प्रवर नदी, महाराष्ट्र), पूर्वी छोर पर आलमगीरपुर (हिंडन नदी, उत्तर प्रदेश) और पश्चिमी छोर पर सुतकागेंडोर (दासक नदी, बलूचिस्तान) स्थित थे।

इस सभ्यता की सबसे विशिष्ट और उत्कृष्ट पहचान इसका **नगरीय नियोजन (Town Planning)** था। शहर 'ग्रिड पद्धति' पर आधारित थे, जहाँ मुख्य सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। मकान पकी हुई ईंटों से निर्मित होते थे, और घरों की खिड़कियाँ तथा दरवाजे मुख्य सड़क के बजाय अंदर गलियों की ओर खुलते थे। उन्नत जल-निकास (Drainage System) प्रणाली इस सभ्यता का अद्वितीय पहलू था, जिसमें नालियों को ढंका जाता था और गंदे पानी के निकास के लिए सोकपिट बने थे।

परीक्षा की दृष्टि से इसके प्रमुख स्थलों और उनकी विशेष खोजों का विवरण इस प्रकार है:

1. **हड़प्पा (रावी नदी, पाकिस्तान):** दयाराम साहनी द्वारा 1921 में खोजा गया यह पहला स्थल था। यहाँ से अन्नगार, श्रमिक आवास, तांबे का पैमाना और ताबूत श्मशान के साक्ष्य मिले हैं।
2. **मोहनजोदड़ो (सिंधु नदी, पाकिस्तान):** राखालदास बनर्जी द्वारा 1922 में खोजे गए इस स्थल को 'मृतकों का टीला' कहा जाता है। यहाँ का विशाल स्नानागार, विशाल अन्नगार, कांस्य की नर्तकी की मूर्ति और पशुपतिनाथ की मुहर अत्यंत प्रसिद्ध है।
3. **कालीबंगा (घग्गर नदी, राजस्थान):** इसका शाब्दिक अर्थ 'काले रंग की चूड़ियाँ' है। यहाँ से जूते हुए खेत के साक्ष्य, हवन कुंड और अग्निकुंड के प्रमाण मिले हैं।
4. **लोथल (भोगवा नदी, गुजरात):** यह सिंधु सभ्यता का प्रमुख बंदरगाह (Dockyard) और मैनचेस्टर था, जहाँ से गोदीवाड़ा, फारस की मुहरें और चावल के साक्ष्य मिले हैं।
5. **धौलावीरा (लूनी नदी, गुजरात):** यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। यह नगर सामान्यतः तीन भागों में विभाजित था और यहाँ अद्वितीय जल-प्रबंधन एवं साइन-बोर्ड के साक्ष्य मिले हैं।

यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि और व्यापार था। वे कपास उगाने वाले विश्व के पहले लोग थे। वे मातृदेवी, पशुपति शिव और प्रकृति की पूजा करते थे, लेकिन यहाँ किसी भी मंदिर के अवशेष नहीं मिले हैं। इस सभ्यता के लोगों को लोहे का कोई ज्ञान नहीं था।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: हड़प्पाकालीन स्थलों और उनकी अवस्थिति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कालीबंगा घग्गर नदी के तट पर राजस्थान में स्थित है जहाँ से जूते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं।
2. लोथल एक प्रमुख तटीय बंदरगाह था जहाँ से फारस की मुहरें प्राप्त हुई हैं।
3. धौलावीरा नगर तीन भागों में विभाजित था और यहाँ से उन्नत जल प्रबंधन के साक्ष्य मिले हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार, कालीबंगा घग्गर नदी के किनारे स्थित है और वहाँ से प्राग्-हड़प्पा एवं हड़प्पाकालीन जूते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं (कथन 1 सही है)। लोथल भोगवा नदी के

तट पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह था जहाँ से विदेशी व्यापार के प्रमाणस्वरूप फारस की मुहरें मिली हैं (कथन 2 सही है)। धौलावीरा यूनेस्को स्थल है जो सामान्यतः तीन भागों (किला, मध्यम नगर, निचला नगर) में विभाजित था तथा यहाँ की जल संचयन प्रणाली अद्वितीय थी (कथन 3 सही है)।

प्रश्न 2: सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

1. यह एक पूर्णतः विकसित लौह-युगीन सभ्यता थी जिसके साक्ष्य उत्तर भारत के विभिन्न स्थलों से मिलते हैं।
2. इस सभ्यता के लोग कपास का उत्पादन करने वाले विश्व के पहले लोग थे।
3. नगरों में जल निकास प्रणाली अत्यंत उन्नत थी और नालियों को ढंका जाता था।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (ब) अर्थात केवल 2 और 3 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** कथन 1 **असत्य** है क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता एक **कांस्य-युगीन (Bronze Age)** सभ्यता थी; यहाँ के लोगों को तांबे और काँसे का ज्ञान था, किंतु लोहे का ज्ञान नहीं था (भारत में लोहे का आगमन उत्तर वैदिक काल में हुआ)। कथन 2 सही है क्योंकि सिंधु सभ्यता के लोग सबसे पहले कपास उगाने वाले थे (जिसे यूनानी 'सिंडन' कहते थे)। कथन 3 सही है क्योंकि यहाँ की ढकी हुई नालियों और सुनियोजित जल-निकास प्रणाली इस सभ्यता की सबसे अनूठी विशेषता थी।

2. **टॉपिक: हड़प्पा कालीन अर्थव्यवस्था एवं व्यापार**

सिंधु घाटी सभ्यता (या हड़प्पा सभ्यता) की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से उन्नत कृषि, पशुपालन, कुशल दस्तकारी और सुव्यवस्थित आंतरिक व बाह्य व्यापार पर आधारित थी। इस सभ्यता की असाधारण समृद्धि का मुख्य आधार इसकी उच्च कृषि उत्पादन क्षमता थी, जो सिंधु और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई जाने वाली उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी पर निर्भर थी। यहाँ के निवासी मुख्य रूप से गेहूँ, जौ, राई, मटर, तिल और चना उगाते थे। कपास का उत्पादन करने वाले ये विश्व के सबसे पहले लोग थे, जिसे यूनानी भाषा में 'सिंडन' कहा जाता था। इसके अतिरिक्त, लोथल और रंगपुर से चावल के प्रारंभिक साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।

कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग था। यहाँ के लोग बैल, गाय, भेड़, बकरी, सूअर और भैंस पालते थे। कुख्यात कूबड़ वाला सांड इस सभ्यता के लोगों के लिए विशेष रूप से पूजनीय और महत्वपूर्ण पशु था। साक्ष्यों के अनुसार, घोड़े के अवशेष सुरकोटड़ा से तथा हाथी के अवशेष लोथल व कालीबंगा से प्राप्त हुए हैं।

शिल्प और उद्योग इस नगरीय अर्थव्यवस्था की मुख्य रीढ़ थे। तांबे और टिन को आपस में मिलाकर कांसा बनाने की तकनीकी में ये अत्यधिक दक्ष थे, जिसके कारण इसे कांस्ययुगीन सभ्यता कहा जाता है। चन्हूदरो और लोथल मनके (Beads) बनाने के प्रमुख औद्योगिक केंद्र थे। यहाँ गोमेद, लापीस लाजुली, सीप और हाथीदांत से आभूषण व कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती थीं। चाक पर निर्मित लाल और काले रंग के चित्रित मृदभांड इस काल की उत्कृष्ट हस्तकला को दर्शाते हैं।

व्यापार और वाणिज्य का दायरा अत्यंत विस्तृत था। व्यापार वस्तु-विनिमय प्रणाली पर आधारित था क्योंकि इस काल में किसी भी प्रकार के सिक्कों के प्रचलन के प्रमाण नहीं मिलते हैं। वस्तुओं के तौल और माप के लिए एक निश्चित और मानकीकृत प्रणाली थी, जो अधिकांशतः 16 के गुणकों पर आधारित थी। आंतरिक व्यापार के साथ-साथ सुमेर (मेसोपोटामिया), फारस और ओमान के साथ व्यापक बाह्य व्यापार संचालित होता था। गुजरात स्थित लोथल का कृत्रिम गोदीवाड़ा समुद्री व्यापार का प्रमुख केंद्र था। मेसोपोटामिया के ऐतिहासिक अभिलेखों में सिंधु क्षेत्र के लिए 'मेलुहा' शब्द का स्पष्ट उल्लेख मिलता है, जबकि दिलमुन और मगन महत्वपूर्ण मध्यस्थ व्यापारिक चौकियां थीं।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 1: हड़प्पा कालीन अर्थव्यवस्था और व्यापार के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस काल में व्यापार के लिए सोने और चांदी के सिक्कों का नियमित रूप से बड़े पैमाने पर प्रचलन था।
2. मेसोपोटामिया के समकालीन अभिलेखों में सिंधु घाटी सभ्यता के लिए 'मेलुहा' (Meluhha) शब्द का प्रयोग किया गया है।
3. बाट और माप की प्रणाली अधिकांशतः 16 के गुणकों पर आधारित थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (ब) अर्थात केवल 2 और 3 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, हड़प्पा काल में किसी भी प्रकार के सिक्कों (स्वर्ण या रजत) के प्रचलन का कोई प्रमाण नहीं मिलता है; यहाँ व्यापार पूरी तरह से वस्तु-विनिमय (Barter System) पर आधारित था (कथन 1 असत्य है)। मेसोपोटामिया के अभिलेखों में सिंधु क्षेत्र के लिए 'मेलुहा' शब्द का उल्लेख मिलता है (कथन 2 सही है)। वस्तुओं के तौल और माप की इकाई के लिए बाट सामान्यतः 16 के गुणकों (जैसे 16, 64, 160 आदि) में होते थे (कथन 3 सही है)।

प्रश्न 2: निम्नलिखित में से कौन-सा/से हड़प्पा कालीन स्थल मनके (Beads) बनाने के प्रमुख कारखानों और औद्योगिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध था/थे?

1. चन्हूदरो
2. लोथल
3. धौलावीरा

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: (अ) केवल 1 (ब) केवल 1 और 2 (स) केवल 2 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (ब) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** चन्हूदरो और लोथल दोनों ही स्थल मनके (Beads) बनाने के कारखानों, सीप-हस्तशिल्प और औद्योगिक उत्पादन के लिए प्रमुख रूप से जाने जाते थे (कथन 1 और 2 सही हैं)। जबकि धौलावीरा अपनी उन्नत जल-प्रबंधन प्रणाली, विशाल जलाशयों और साइन-बोर्ड (सूचनापट) के लिए प्रसिद्ध था, न कि मनके के कारखानों के लिए (कथन 3 असत्य है)।

IAS HINDI MEDIUM

3. **टॉपिक: वैदिक साहित्य (वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद)**

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के पश्चात भारतीय उपमहाद्वीप में जिस नवीन ग्रामीण सभ्यता का विकास हुआ, उसे वैदिक सभ्यता कहा जाता है। इसके निर्माता आर्य थे। वैदिक संस्कृति की संपूर्ण जानकारी का मुख्य स्रोत इसका समृद्ध साहित्य है, जिसे 'श्रुति' (सुनी हुई ज्ञान परंपरा) कहा जाता है। वैदिक साहित्य का क्रमिक विकास चार प्रमुख चरणों में हुआ है, जो भारतीय दर्शन और संस्कृति के आधार स्तंभ हैं।

प्रथम चरण में **चार वेद** आते हैं। **ऋग्वेद** सबसे प्राचीन वेद है, जिसमें देवताओं की स्तुति के लिए 1028 सूक्त और 10 मंडल हैं; इसके तीसरे मंडल में विश्वामित्र रचित प्रसिद्ध 'गायत्री मंत्र' तथा दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में चार वर्णों की उत्पत्ति का उल्लेख है। **सामवेद** को भारतीय संगीत का मूल माना जाता है, क्योंकि इसमें यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संकलन है। **यजुर्वेद** गद्य और पद्य दोनों में रचित है, जिसमें यज्ञों के नियम और अनुष्ठानों के विधिवत विधान का वर्णन मिलता है। **अथर्ववेद** में लोक-विश्वास, औषधियाँ, वशीकरण और आपदा निवारण से संबंधित मंत्र संकलित हैं।

द्वितीय चरण में **ब्राह्मण ग्रंथ** आते हैं, जो वेदों के गद्य रूप में विस्तृत टीका और व्याख्या हैं। इनमें यज्ञीय कर्मकांडों के दार्शनिक और अनुष्ठानिक अर्थ समझाए गए हैं, जैसे ऋग्वेद के ऐतरेय और कौषीतकि ब्राह्मण, तथा यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण।

तृतीय चरण **आरण्यक** हैं, जिन्हें 'वैन्य ग्रंथ' भी कहा जाता है। इनकी रचना वनों में एकांत में अध्ययन करने वाले मुनियों और शिष्यों के लिए की गई थी, जो कर्मकांड के बाहरी आडंबर के स्थान पर उसके दार्शनिक और रहस्यवादी पक्षों पर जोर देते हैं।

चतुर्थ और अंतिम चरण **उपनिषद** हैं, जिन्हें 'वेदांत' (वेदों का अंत या अंतिम भाग) कहा जाता है। उपनिषद भारतीय दर्शन (ज्ञान मार्ग) के मूल स्रोत हैं। इनकी कुल संख्या 108 मानी गई है, जिनमें मंडूककोपनिषद से 'सत्यमेव जयते' और कठोपनिषद से यम-नचिकेता संवाद अत्यंत प्रसिद्ध हैं। यह संपूर्ण साहित्य प्राचीन भारत की बौद्धिक, दार्शनिक और सामाजिक चेतना का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज है।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: वैदिक साहित्य के विभिन्न अंगों (ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ब्राह्मण ग्रंथ वेदों के गद्य रूप में रचित टीकाएं हैं, जिनमें यज्ञीय कर्मकांडों के अनुष्ठानिक पक्ष को समझाया गया है।
2. आरण्यकों की रचना वनों में की गई थी और वे मुख्य रूप से यज्ञीय कर्मकांडों के स्थान पर दार्शनिक तथा रहस्यवादी चिंतन पर बल देते हैं।
3. उपनिषदों को 'वेदांत' भी कहा जाता है और ये प्राचीन भारतीय दर्शन के मूल स्रोत हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, ब्राह्मण ग्रंथ वेदों की व्याख्या करते हैं और यज्ञीय नियमों को स्पष्ट करते हैं (कथन 1 सही है)। आरण्यक (वैन्य ग्रंथ) वनों में पढ़े-लिखे जाते थे और वे बाहरी कर्मकांड के स्थान पर आंतरिक दर्शन व रहस्यवाद पर जोर देते हैं (कथन 2 सही है)। उपनिषदों को वेदों का अंतिम भाग यानी 'वेदांत' कहा जाता है, जो अद्वैत और ब्रह्म-विद्या जैसे दार्शनिक विषयों का प्रतिपादन करते हैं (कथन 3 सही है)।

प्रश्न 2: निम्नलिखित वेदों और उनके ब्राह्मण ग्रंथों के जोड़ों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

1. ऋग्वेद - ऐतरेय और कौषीतकि ब्राह्मण
2. यजुर्वेद - शतपथ ब्राह्मण
3. सामवेद - पंचविंश (ताण्ड्य) ब्राह्मण

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** प्राचीन वैदिक साहित्य की संरचना के अनुसार, ऋग्वेद के प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ ऐतरेय और कौषीतकि हैं (युग्म 1 सही है); यजुर्वेद का सबसे महत्वपूर्ण और विस्तृत ब्राह्मण ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण है (युग्म 2 सही है); तथा सामवेद से संबंधित प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ पंचविंश (ताण्ड्य) और षडविंश हैं (युग्म 3 सही है)।

4. **टॉपिक: ऋग्वैदिक और उत्तर वैदिक कालीन समाज**

©IASHINDIMEDIUM

प्राचीन भारतीय इतिहास में वैदिक काल को दो प्रमुख चरणों में विभाजित किया जाता है: ऋग्वैदिक काल (लगभग 1500 से 1000 ईसा पूर्व) और उत्तर वैदिक काल (लगभग 1000 से 600 ईसा पूर्व)। इन दोनों कालों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचे में गहरा अंतर दिखाई देता है, जिसका मुख्य आधार उत्तर वैदिक काल में लोहे के व्यापक उपयोग और कबीलाई समाज से प्रादेशिक राज्यों में संक्रमण था।

ऋग्वैदिक कालीन समाज मूल रूप से एक कबीलाई, अर्ध-घुमंतू और समतावादी समाज था जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर आधारित था। समाज की सबसे छोटी और मूलभूत इकाई कुल या परिवार थी। इस काल में वर्ण व्यवस्था कठोर नहीं थी और इसका आधार जन्म के बजाय व्यक्ति का कर्म था। महिलाओं की स्थिति अत्यंत सम्मानजनक और उच्च थी; उन्हें उपनयन संस्कार, उच्च शिक्षा और वेदों के अध्ययन का पूरा अधिकार प्राप्त था। लोपामुद्रा, अपाला, विश्ववारा और घोषा जैसी विदुषी महिलाओं ने वैदिक ऋचाओं की रचना की। स्त्रियाँ सभा और समिति जैसी राजनीतिक संस्थाओं में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। इस दौर में बाल विवाह, पर्दा प्रथा या सती प्रथा का कोई अस्तित्व नहीं था। अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से पशुपालन पर केंद्रित थी, जहाँ गाय सबसे मूल्यवान संपत्ति और युद्धों का मुख्य कारण थी।

उत्तर वैदिक काल में लोहे के आगमन के साथ भारी सामाजिक रूपांतरण हुआ। अर्थव्यवस्था पशुपालन से बदलकर स्थायी कृषि-प्रधान हो गई, जिससे भूमि के स्वामित्व की अवधारणा उपजी। इसके परिणामस्वरूप, कबीलाई समाज अधिक जटिल हो गया और वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित होकर अत्यंत कठोर हो गई। ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग समाज के शीर्ष पर स्थापित हो गए, जबकि वैश्य करदाता बने और शूद्रों की स्थिति दोयम दर्जे की हो गई। महिलाओं के अधिकारों में भारी गिरावट आई; उन्हें सभा और समिति से बाहर कर दिया गया तथा उनका उपनयन संस्कार बंद हो गया। बहुविवाह, गोत्र व्यवस्था और चार आश्रमों की अवधारणा इसी काल की देन है।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: ऋग्वैदिक और उत्तर वैदिक कालीन समाज के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था का निर्धारण जन्म के आधार पर न होकर व्यक्ति के कर्म पर आधारित था।
2. उत्तर वैदिक काल में लोहे के व्यापक प्रयोग ने अर्थव्यवस्था को पशुपालन से कृषि-प्रधान बना दिया।
3. ऋग्वैदिक काल की तुलना में उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, ऋग्वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था लचीली थी और उसका आधार कर्म था (कथन 1 सही है)। उत्तर वैदिक काल में उत्तर प्रदेश के अतरंजीखेड़ा जैसे स्थलों से लोहे के साक्ष्य मिलने के बाद कृषि मुख्य अर्थव्यवस्था बन गई (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं बल्कि भारी गिरावट आई थी; उन्हें सभा और समिति जैसी संस्थाओं से वंचित कर दिया गया था और उपनयन संस्कार बंद हो गए थे।

प्रश्न 2: निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषताएँ उत्तर वैदिक कालीन समाज से संबंधित हैं?

1. गोत्र व्यवस्था का प्रादुर्भाव
2. चार आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास) की स्थापना
3. सभा और समिति में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** उत्तर वैदिक काल में सामाजिक जटिलता बढ़ने के साथ 'गोत्र' व्यवस्था की उत्पत्ति हुई (जिसका अर्थ वह स्थान था जहाँ पूरे कुल का गोधन पाला जाता था) और जीवन को व्यवस्थित करने के लिए

©IASHINDIMEDIUM

चार आश्रमों की अवधारणा का विकास हुआ (कथन 1 और 2 सही हैं)। कथन 3 गलत है क्योंकि सभा और समिति में महिलाओं की भागीदारी केवल ऋग्वैदिक काल में थी, उत्तर वैदिक काल में उनसे यह अधिकार छीन लिया गया था।

5. **टॉपिक: जैन धर्म के सिद्धांत व संगतियाँ**

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तर भारत में हुए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों और जटिल वैदिक कर्मकांडों के विरोध में श्रमण परंपरा के तहत जैन धर्म का उदय हुआ। जैन परंपरा में कुल 24 तीर्थंकर हुए, जिनमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) तथा 24वें और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी थे। महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था।

जैन धर्म के दार्शनिक और आचरण संबंधी मुख्य सिद्धांत अत्यंत कठोर और उच्च नैतिक मानदंडों पर आधारित हैं। जैन दर्शन के मूल आधार त्रिरत्न हैं—सम्यक् दर्शन (सत्य में विश्वास), सम्यक् ज्ञान (वास्तविक ज्ञान) और सम्यक् चरित्र (शुद्ध आचरण)। महावीर स्वामी ने पार्श्वनाथ द्वारा दिए गए चार व्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह) में पाँचवाँ व्रत ब्रह्मचर्य जोड़ा था। जैन धर्म चरम अहिंसा और कायाक्लेश (कठोर तपस्या) पर बल देता है। इसके दार्शनिक पक्ष में स्याद्वाद (सप्तभंगी नय) और अनेकांतवाद (वस्तुओं के बहुआयामी स्वरूप का सिद्धांत) का विशेष महत्व है, जो यह मानता है कि सत्य के कई दृष्टिकोण हो सकते हैं। यह धर्म वेदों की प्रामाणिकता, ईश्वर के अस्तित्व और यज्ञीय विधानों को अस्वीकार करता है। कालान्तर में वैचारिक मतभेदों के कारण यह धर्म दो प्रमुख संप्रदायों— श्वेतांबर (श्वेत वस्त्र धारण करने वाले, स्थूलभद्र के अनुयायी) और दिगंबर (नग्न रहने वाले, भद्रबाहु के अनुयायी)—में विभाजित हो गया।

जैन ग्रंथों के संकलन और संरक्षण के लिए इतिहास में प्रमुख जैन संगतियों (सम्मेलनों) का आयोजन किया गया:

1. प्रथम जैन संगति: इसका आयोजन तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में हुआ था, जिसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी। इस संगति में जैन ग्रंथों के बिखरे हुए ज्ञान को संकलित करने का प्रयास किया गया।
2. द्वितीय जैन संगति: इसका आयोजन छठी शताब्दी ईस्वी (लगभग 512 ई.) में गुजरात के वल्लभी स्थान पर हुआ था, जिसके अध्यक्ष देवर्धि क्षमा श्रमण थे। इस संगति में सभी जैन ग्रंथों (12 अंग और 12 उपांग) को अंतिम रूप से संकलित कर लिपिबद्ध किया गया।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: जैन धर्म के दार्शनिक सिद्धांतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'अनेकांतवाद' और 'स्याद्वाद' का संबंध जैन दर्शन से है, जो ज्ञान की सापेक्षता और बहुआयामी स्वरूप को दर्शाते हैं।
2. जैन धर्म के त्रिरत्न में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र शामिल हैं।
3. जैन धर्म ने वेदों की प्रामाणिकता और ईश्वर के सृष्टिकर्ता रूप को पूर्ण रूप से स्वीकार किया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक और दार्शनिक स्रोतों के अनुसार, 'अनेकांतवाद' (वस्तुओं का बहुधर्मी होना) और 'स्याद्वाद' (सापेक्षता का सिद्धांत) जैन दर्शन के मूल स्तंभ हैं (कथन 1 सही है)। जैन धर्म के त्रि-रत्न सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र हैं (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि जैन धर्म एक नास्तिक दर्शन है जो वेदों की प्रामाणिकता और ईश्वर को सृष्टि के रचयिता के रूप में पूरी तरह अस्वीकार करता है।

प्रश्न 2: जैन संगतियों (सम्मेलनों) के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

©IASHINDIMEDIUM

1. प्रथम जैन संगति - पाटलिपुत्र (अध्यक्ष: स्थूलभद्र)
2. द्वितीय जैन संगति - वल्लभी, गुजरात (अध्यक्ष: देवर्धि क्षमा श्रमण)

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1 (ब) केवल 2 (स) 1 और 2 दोनों (द) न तो 1, न ही 2

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (स) अर्थात 1 और 2 दोनों सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** प्राचीन जैन इतिहास के अनुसार, प्रथम जैन संगति तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में स्थूलभद्र की अध्यक्षता में हुई थी, जहाँ जैन ग्रंथों के संकलन की शुरुआत हुई (युग्म 1 सही है)। द्वितीय जैन संगति 512 ईस्वी में गुजरात के वल्लभी में देवर्धि क्षमा श्रमण की अध्यक्षता में हुई थी, जहाँ अंतिम रूप से जैन ग्रंथों (12 अंग और 12 उपांग) को लिपिबद्ध किया गया (युग्म 2 सही है)।

©IASHINDIMEDIUM

मध्यकालीन भारत

1. टॉपिक: पूर्व मध्यकालीन क्षेत्रीय राजवंश (पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट)

गुप्त साम्राज्य के पतन और हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात आठवीं शताब्दी के मध्य से लेकर दसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक उत्तर भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर तीन महान राजवंशों—पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट—का वर्चस्व स्थापित हुआ। इन तीनों राजवंशों के बीच कन्नौज (जो उस समय संप्रभुता और साम्राज्य का प्रतीक माना जाता था) पर अधिकार करने के लिए लगभग दो शताब्दियों तक एक दीर्घकालिक त्रिकोणीय संघर्ष चला, जिसे इतिहास में 'त्रिपक्षीय संघर्ष' (Tripartite Struggle) कहा जाता है।

1. पाल वंश (बंगाल): पाल वंश की स्थापना 750 ईस्वी में गोपाल ने की थी, जिन्होंने बंगाल में फैली राजनीतिक अराजकता (मत्स्य न्याय) को समाप्त कर शांति स्थापित की। इस वंश का सबसे प्रतापी और महान शासक धर्मपाल था, जिसने विक्रमशिला विश्वविद्यालय और सोमपुरी विहार की स्थापना की तथा बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया। पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म की महायान शाखा के अनुयायी थे। राष्ट्रकूट राजा ध्रुव और प्रतिहार राजा वत्सराज के साथ त्रिपक्षीय संघर्ष में धर्मपाल ने भी सक्रिय भाग लिया। इस वंश के अंतिम प्रमुख शासक महीपाल प्रथम थे, जिनके शासनकाल में राजेंद्र चोल ने बंगाल पर आक्रमण किया था। पाल शासकों के समय नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में फले-फुले, तथा कांस्य मूर्तिकला (ढीमान और वित्तपाल इसके प्रसिद्ध कलाकार थे) का अभूतपूर्व विकास हुआ।

2. गुर्जर-प्रतिहार वंश (पश्चिम भारत / मालवा-कन्नौज): प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक भोज प्रथम (मिहिर भोज) था, जो इस राजवंश का सबसे पराक्रमी सम्राट था। उसने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया और 'आदि वराह' तथा 'प्रभास' की उपाधियाँ धारण कीं। प्रतिहार शासकों ने अरब आक्रमणकारियों को पश्चिम भारत में रोके रखने में मुख्य प्रहरी की भूमिका निभाई। अरब यात्री अल-मसूदी ने मिहिर भोज के शासनकाल में भारत की यात्रा की थी और प्रतिहार राजा की सैन्य शक्ति की भरपूर प्रशंसा की थी। इस काल में कन्नौज कला, संस्कृति और व्यापार का महान केंद्र बन गया था।

3. राष्ट्रकूट वंश (दक्खन / मान्यखेत): दक्कन के क्षेत्र में शासन करने वाले राष्ट्रकूट वंश की स्थापना दंतीदुर्ग ने की थी, और इनकी राजधानी मान्यखेत (मालखेड) थी। इस वंश के महान शासकों में कृष्ण प्रथम, ध्रुव, अमोघवर्ष प्रथम और इंद्र तृतीय शामिल हैं। कृष्ण प्रथम ने एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर (एकाश्म पाषाण वास्तुकला का अद्भुत नमूना) का निर्माण कराया था। अमोघवर्ष प्रथम जैन धर्म का अनुयायी और उच्च कोटि का विद्वान था, जिसने कन्नड़ भाषा में प्राचीनतम ग्रंथ 'कवि राजमार्ग' की रचना की। राष्ट्रकूट शासकों ने कला, साहित्य और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया तथा उनके दरबार में जैन और बौद्ध विद्वानों को समान आश्रय मिला।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: पूर्व मध्यकालीन क्षेत्रीय राजवंशों और उनके संस्थापकों/शासकों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. पाल वंश - गोपाल (संस्थापक)
2. गुर्जर-प्रतिहार वंश - मिहिर भोज (प्रतापी शासक एवं 'आदि वराह' की उपाधि धारी)
3. राष्ट्रकूट वंश - दंतीदुर्ग (संस्थापक) और कृष्ण प्रथम (एलोरा के कैलाश मंदिर के निर्माता)

©IASHINDIMEDIUM

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही सुमेलित हैं। स्पष्टीकरण: मानक ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, 750 ईस्वी में गोपाल ने बंगाल में पाल वंश की नींव रखी थी (युग्म 1 सही है); प्रतिहार वंश का सबसे प्रतापी राजा मिहिर भोज (भोज प्रथम) था जिसने 'आदि वराह' की उपाधि धारण की थी (युग्म 2 सही है); तथा राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक दंतीदुर्ग थे और उनके उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम ने एलोरा में विश्व प्रसिद्ध चट्टान को काटकर एकाश्म 'कैलाश मंदिर' बनवाया था (युग्म 3 सही है)।

प्रश्न 2: पूर्व मध्यकालीन भारत के 'त्रिपक्षीय संघर्ष' (Tripartite Struggle) और उससे संबंधित राजवंशों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. त्रिपक्षीय संघर्ष मुख्य रूप से कन्नौज पर अधिकार करने के लिए पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट राजवंशों के बीच लड़ा गया था।
2. पाल शासक बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय के अनुयायी थे और उन्होंने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।
3. राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष प्रथम ने कन्नड़ भाषा में प्रसिद्ध ग्रंथ 'कवि राजमार्ग' की रचना की थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही हैं। स्पष्टीकरण: कन्नौज पर आधिपत्य जमाने के लिए आठवीं से दसवीं शताब्दी के बीच बंगाल के पाल, मालवा-कन्नौज के प्रतिहार और दक्कन के राष्ट्रकूटों के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ था (कथन 1 सही है)। पाल राजा बौद्ध धर्म के संरक्षक थे, और धर्मपाल ने भागलपुर में 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की थी (कथन 2 सही है)। राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष प्रथम साहित्य प्रेमी था, और उसने कन्नड़ काव्यशास्त्र पर आधारित ग्रंथ 'कवि राजमार्ग' की रचना की थी (कथन 3 सही है)।

2. **टॉपिक: राजपूत काल और उनकी शासन प्रणाली**

पूर्व मध्यकालीन भारतीय इतिहास (लगभग 7वीं से 12वीं शताब्दी) का कालखंड 'राजपूत काल' के नाम से जाना जाता है। हर्षवर्धन के साम्राज्य के विघटन के पश्चात उत्तर और पश्चिम भारत में अनेक स्वतंत्र क्षेत्रीय राजपूत राजवंशों का उदय हुआ, जिनमें प्रमुख रूप से कन्नौज के गढ़वाल, मालवा के परमार, बुंदेलखंड के चंदेल, अजमेर व दिल्ली के चौहान, गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) और मेवाड़ के गुहिल (ि◌सोदिया) राजवंश शामिल थे। इन राजपूत कुलों ने प्राचीन क्षत्रिय परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए अपनी वीरता, रणकौशल और शौर्य के लिए भारतीय इतिहास में एक विशिष्ट पहचान बनाई।

राजपूतों की उत्पत्ति को लेकर इतिहासविदों में विभिन्न मत हैं; जहाँ चंद्रबरदाई के महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' में उन्हें माउंट आबू पर महर्षि वशिष्ठ के अग्निकुंड से उत्पन्न माना गया है, वहीं आधुनिक इतिहासकार जैसे डॉ. दशरथ शर्मा और सी.वी. वैद्य उन्हें प्राचीन क्षत्रियों का ही वंशज मानते हैं।

राजपूतों की शासन प्रणाली: राजपूतों की राजनीतिक व्यवस्था मुख्य रूप से सामंती व्यवस्था (Feudal System) पर आधारित थी।

- **केंद्रीय व प्रांतीय प्रशासन:** शासन का सर्वोच्च केंद्र राजा होता था, जो दैवीय अधिकारों और वंशानुगत परंपरा में विश्वास रखता था। राजा की सहायता के लिए मंत्रिपरिषद होती थी, जिसमें महासंधि विग्रही (युद्ध व शांति मंत्री), महासामंत, और अक्षपटलिक (लेखा परीक्षक) प्रमुख अधिकारी होते थे। साम्राज्य विभिन्न भुक्तियों (प्रशांत), मंडलों (जिलों) और विषियों में विभाजित था।
- **सैन्य संगठन और सामंतवाद:** राजपूतों की सैन्य शक्ति मुख्य रूप से उनके सामंतों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेना पर निर्भर करती थी। राजा और सामंतों के बीच 'पट्ट' या पट्टा प्रणाली प्रचलित थी, जिसके तहत सामंत राजा को सैन्य सहायता और कर देते थे।

©IASHINDIMEDIUM

घुड़सवार सेना और तलवारबाजी इनकी सेना का मुख्य आधार थी, हालांकि इनमें सुसंगठित केंद्रीय सेना का अभाव और आपसी फूट इनकी राजनीतिक कमजोरी बन गई।

- **समाज और संस्कृति:** समाज में सामंती संस्कृति का बोलबाला था, जिसमें 'जौहर' और 'सतीप्रथा' जैसी कुप्रथाएँ राजपूत कुलों में प्रचलित हो गईं। कला और स्थापत्य के क्षेत्र में इस काल ने बेजोड़ योगदान दिया; खजुराहो के मंदिर (चंदेल शासकों द्वारा निर्मित), माउंट आबू के दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सोलंकी काल) और राजस्थान के भव्य दुर्ग राजपूत वास्तुकला के अमर प्रतीक हैं।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: राजपूत कालीन शासन प्रणाली और प्रशासनिक अधिकारियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राजपूतों की राजनीतिक व्यवस्था केंद्रीयकृत नौकरशाही के बजाय मुख्य रूप से सामंती व्यवस्था पर आधारित थी।
2. इस काल में 'महासंधि विग्रही' नामक अधिकारी युद्ध और शांति मामलों का मंत्री होता था।
3. राजपूत राजाओं की सेना पूरी तरह से केंद्रीय थी और वे सामंतों की सैन्य सहायता पर बिल्कुल निर्भर नहीं थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, राजपूत काल में सामंती व्यवस्था अपनी पराकाष्ठा पर थी जहाँ राजा की शक्ति बहुत हद तक सामंतों पर टिकी होती थी (कथन 1 सही है)। प्रशासनिक दृष्टि से युद्ध और शांति के मामलों को देखने वाले मुख्य मंत्री को 'महासंधि विग्रही' कहा जाता था (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि राजपूत सेना विकेंद्रीकृत थी और राजा को युद्ध के समय विभिन्न सामंतों द्वारा अपनी सेना उपलब्ध कराई जाती थी, जिससे उनके पास सुसंगठित स्थायी केंद्रीय सेना का अभाव रहता था।

प्रश्न 2: निम्नलिखित में से कौन-से राजवंश और उनके द्वारा शासित क्षेत्र/राजधानियाँ सही सुमेलित हैं?

1. चंदेल राजवंश - बुंदेलखंड (खजुराहो)
2. चौहान राजवंश - अजमेर और दिल्ली
3. परमार राजवंश - मालवा (धार)
4. सोलंकी (चालुक्य) राजवंश - गुजरात (अहिलवाड़)

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: (अ) केवल 1, 2 और 3 (ब) केवल 2, 3 और 4 (स) केवल 1 और 4 (द) 1, 2, 3 और 4 सभी

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2, 3 और 4 सभी सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** पूर्व मध्यकालीन राजपूत राजवंशों के भौगोलिक वितरण के अनुसार, चंदेलों ने बुंदेलखंड क्षेत्र पर शासन किया और खजुराहो में प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण कराया (युग्म 1 सही है); चौहान वंश का प्रभाव क्षेत्र शाकंभरी, अजमेर और बाद में दिल्ली तक था (युग्म 2 सही है); परमार वंश ने मालवा क्षेत्र पर शासन किया जिसकी राजधानी धार थी (युग्म 3 सही है); तथा सोलंकी या चालुक्य वंश ने गुजरात के अहिलवाड़ से शासन किया (युग्म 4 सही है)।

3. **टॉपिक: भारत पर इस्लामिक आक्रमण (महमुद गजनी और मोहम्मद गोरी)**

©IASHINDIMEDIUM

पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत की राजनीतिक विखंडता और आपसी फूट का लाभ उठाकर आठवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य उत्तर-पश्चिम सीमा से तुर्क-इस्लामिक आक्रमणकारियों का आगमन हुआ। इस क्रम में महमूद गजनी और मोहम्मद गोरी के आक्रमणों ने भारतीय इतिहास की दिशा और दशा को हमेशा के लिए बदल दिया।

1. महमूद गजनी (सुल्तान महमूद): गजनी साम्राज्य के संस्थापक सबुक्तागीन का पुत्र महमूद गजनी (998-1030 ईस्वी) भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम सुल्तान था। उसने भारत की राजनीतिक संप्रभुता को कुचलने के बजाय यहाँ के अपार धन-संपन्न मंदिरों को लूटने और अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से 1000 ईस्वी से 1027 ईस्वी के बीच भारत पर **17 बार आक्रमण** किए।

- **प्रमुख अभियान:** उसके शुरुआती आक्रमण सीमावर्ती राजाओं के विरुद्ध थे। 1008-09 ईस्वी में उसने वहीहिंद के शाही राजा आनंदपाल को पराजित किया। उसका सबसे प्रसिद्ध और विध्वंसक आक्रमण **1025 ईस्वी में गुजरात के सौराष्ट्र स्थित सोमनाथ मंदिर** पर था, जहाँ से वह अपार संपत्ति लूटकर गजनी ले गया। 1027 ईस्वी में उसका अंतिम आक्रमण जाटों के विरुद्ध था।

- **सांस्कृतिक प्रभाव:** उसके साथ कई प्रसिद्ध विद्वान भारत आए, जिनमें **अल-बेरूनी** (रचयिता: 'किताब-उल-हिंद' या 'तहकीक-ए-हिंद'), **फिरदौसी** (रचयिता: 'शाहनामा') और इतिहासकार **उत्बी** व **बहाकी** शामिल थे।

2. मोहम्मद गोरी (मुहम्मद बिन साम): ग़ौर साम्राज्य का शासक मोहम्मद गोरी भारत में तुर्क साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। गजनी के विपरीत, उसका उद्देश्य भारत में केवल धन लूटना नहीं, बल्कि **स्थाई मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना** करना था। उसके प्रमुख सैन्य संघर्ष भारतीय शासकों के साथ हुए:

- **तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ईस्वी):** इसमें अजमेर और दिल्ली के महान चौहान शासक **पृथ्वीराज चौहान (पृथ्वीराज तृतीय)** ने मोहम्मद गोरी को बुरी तरह पराजित किया।

- **तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ईस्वी):** गोरी ने अपनी हार का बदला लेते हुए कूटनीति और बेहतर घुड़सवार सेना के बल पर पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर दिया। इस युद्ध को भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ माना जाता है, क्योंकि इसने उत्तर भारत में तुर्क-सल्तनत के मार्ग खोल दिए।

- **चंदावर का युद्ध (1194 ईस्वी):** मोहम्मद गोरी ने कन्नौज के गढ़वालवंशी शासक **जयचंद** को पराजित किया। अपने तुर्क गुलाम और सेनापति **कुतुबुद्दीन ऐबक** को भारतीय प्रदेशों का दायित्व सौंपकर गोरी वापस लौट गया, जिसने 1206 ईस्वी में दिल्ली सल्तनत और 'गुलाम वंश' की नींव रखी।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: महमूद गजनी के आक्रमणों और उसके समकालीन विद्वानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. महमूद गजनी ने भारत पर कुल 17 आक्रमण किए थे, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत में स्थायी मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना करना था।

2. उसके साथ प्रसिद्ध विद्वान अल-बेरूनी भारत आया था जिसने 'किताब-उल-हिंद' (तहकीक-ए-हिंद) की रचना की थी।

3. 'शाहनामा' के रचयिता महाकवि फिरदौसी महमूद गजनी के दरबार से जुड़े थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (ब) अर्थात केवल 2 और 3 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, महमूद गजनी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किए थे, किंतु उसका मुख्य उद्देश्य भारत में साम्राज्य विस्तार करना नहीं बल्कि यहाँ के मंदिरों की अपार संपत्ति को लूटकर अपने मध्य एशियाई साम्राज्य को आर्थिक रूप से मजबूत करना था (कथन 1 **असत्य** है)। उसके साथ भारत आए विद्वान अल-

बेरूनी ने 'किताब-उल-हिंद' में भारतीय समाज, विज्ञान और संस्कृति का सजीव चित्रण किया है (कथन 2 सही है), तथा 'शाहनामा' के लेखक फिरदौसी भी गजनी के दरबार के प्रतिष्ठित विद्वान थे (कथन 3 सही है)।

प्रश्न 2: मोहम्मद गोरी के भारत-अभियानों और उनके परिणामों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.) - पृथ्वीराज चौहान द्वारा मोहम्मद गोरी की पराजय
2. तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.) - मोहम्मद गोरी द्वारा पृथ्वीराज चौहान की पराजय और उत्तर भारत में तुर्क सत्ता की नींव
3. चंदावर का युद्ध (1194 ई.) - मोहम्मद गोरी और कन्नौज के राजा जयचंद के मध्य युद्ध

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** तराइन के प्रथम युद्ध (1191) में पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गोरी को हराया था (युग्म 1 सही है); तराइन के द्वितीय युद्ध (1192) में गोरी ने चौहान को पराजित किया, जो भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ (युग्म 2 सही है); तथा 1194 के चंदावर के युद्ध में मोहम्मद गोरी ने गढ़वाल वंश के राजा जयचंद को परास्त किया (युग्म 3 सही है)।

4. **टॉपिक: दिल्ली सल्तनत और गुलाम वंश**

1206 ईस्वी में मोहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात भारत में तुर्क साम्राज्य की नींव पड़ी, जिसे 'दिल्ली सल्तनत' के नाम से जाना जाता है। दिल्ली सल्तनत पर क्रमिक रूप से पाँच राजवंशों (गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी) ने 1206 से 1526 ईस्वी तक शासन किया। इनमें सबसे पहला राजवंश **गुलाम वंश (या मामलुक वंश)** था, जिसने 1206 से 1290 ईस्वी तक शासन किया। 'मामलुक' एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ 'स्वतंत्र माता-पिता से उत्पन्न गुलाम' होता है, जिन्हें युद्ध में बंदी बनाकर बेचा जाता था और बाद में शाही सेवा के लिए मुक्त कर दिया जाता था।

गुलाम वंश के संस्थापक **कुतुबुद्दीन ऐबक** (1206-1210 ईस्वी) ने अपनी राजधानी लाहौर से स्थापित की और उसे 'लखबख्श' (लाखों का दान देने वाला) कहा गया। उसने दिल्ली में कुतुब मीनार (प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में) और कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा बनवाया। 1210 ईस्वी में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

ऐबक के पश्चात उसका अयोग्य पुत्र आरामशाह गद्दी पर बैठा, जिसे अपदस्थ कर गोरी के सबसे योग्य गुलाम और दामाद **इल्तुतमिश** (1211-1236 ईस्वी) ने सिंहासन संभाला। इल्तुतमिश को **दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक** माना जाता है। उसने अपनी राजधानी लाहौर से हटाकर दिल्ली स्थानांतरित की तथा 1229 ईस्वी में बगदाद के खलीफा से 'सुल्तान' की वैधानिक मान्यता प्राप्त की। उसने अर्थव्यवस्था और प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए दो प्रमुख मुद्राएँ— **चांदी का टंका** और **तांबे का जीतल**—चलाईं तथा प्रशासनिक नियंत्रण के लिए **इक्ता प्रणाली** की शुरुआत की। उसने 40 तुर्क गुलाम सरदारों के एक निष्ठावान दल **'तुर्कान-ए-चहलगामी' (चालीस दल)** का गठन किया। उसके शासनकाल में 1221 ईस्वी में चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोल आक्रमण का खतरा उत्पन्न हुआ था, जिसे उसने अपनी कूटनीति से टाल दिया।

इल्तुतमिश ने अपने योग्य पुत्रों के अभाव में अपनी पुत्री **रजिया सुल्तान** को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। रजिया (1236-1240 ईस्वी) **दिल्ली सल्तनत की प्रथम और अंतिम महिला मुस्लिम शासिका** थीं। उसने पर्दा प्रथा का त्याग कर पुरुषों की तरह कबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर दरबार में बैठना शुरू किया। मलिक जमालुद्दीन याकूत को अमीर-ए-आखुर (अश्वशाला का प्रधान) नियुक्त करने

©IASHINDIMEDIUM

के कारण तुर्क अमीर उससे रुष्ट हो गए, जिसके परिणामस्वरूप बठिंडा के गवर्नर अल्तूनिया के साथ हुए संघर्ष और षड्यंत्र में उसकी हत्या कर दी गई।

रजिया के पश्चात बहराम शाह, मसूद शाह और महमूद शाह ने शासन किया। इस वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक **गियासुद्दीन बलबन** (1266-1287 ईस्वी) था, जो कभी चालीस दल का सदस्य था। सुल्तान बनते ही उसने 'चालीस दल' (चहलगामी) का पूर्ण दमन कर दिया। बलबन ने राजत्व के सिद्धान्त को ऊँचा उठाते हुए **'नियम-ए-खुदाई'** (ईश्वर का प्रतिनिधि) और **'जिल्ल-ए-इलाही'** (ईश्वर की छाया) की उपाधि धारण की। उसने दरबार में फारसी परंपराओं पर आधारित **'सिजदा'** (घुटने टेककर प्रणाम करना) और **'पैबोस'** (सम्राट के चरण चूमना) प्रथा लागू की तथा फारसी त्योहार **'नौरोज'** का आरंभ किया। अपने साम्राज्य को आंतरिक विद्रोहों और मंगोलों से बचाने के लिए उसने **'लह और रक्त की नीति' (Blood and Iron Policy)** अपनाई तथा दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग) का गठन किया।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: गुलाम वंश के शासकों और उनके द्वारा किए गए प्रशासनिक सुधारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कुतुबुद्दीन ऐबक को उसकी उदारता के कारण 'लखबख्श' कहा गया और उसने दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण कार्य आरंभ कराया था।
2. इल्तुतमिश ने सल्तनत काल में पहली बार शुद्ध अरबी सिक्के—चांदी का टंका और तांबे का जीतल—चलाए थे।
3. इल्तुतमिश ने सल्तनत के प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण के लिए 'तुर्कान-ए-चहलगामी' (चालीस दल) का गठन किया था और इक्ता प्रणाली शुरू की थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, कुतुबुद्दीन ऐबक अपनी दानशीलता के लिए 'लखबख्श' के रूप में विख्यात था और उसने कुतुब मीनार की नींव रखी थी जिसे बाद में इल्तुतमिश ने पूरा कराया (कथन 1 सही है)। इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक था जिसने अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए चांदी का टंका और तांबा का जीतल चलाया (कथन 2 सही है)। उसने प्रशासनिक नियंत्रण हेतु भू-राजस्व वितरण की 'इक्ता प्रणाली' और वफादार सरदारों का संगठन 'तुर्कान-ए-चहलगामी' शुरू किया था (कथन 3 सही है)।

प्रश्न 2: गयासुद्दीन बलबन के राजत्व सिद्धांत और उसकी नीतियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बलबन ने राजत्व के दैवीय सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए स्वयं को 'नियम-ए-खुदाई' (ईश्वर का प्रतिनिधि) घोषित किया था।
2. उसने दरबार में अभिवादन के लिए 'सिजदा' और 'पैबोस' प्रथा की शुरुआत की तथा फारसी उत्सव 'नौरोज' का आरंभ किया।
3. बलबन ने तुर्क अमीरों की शक्ति को बढ़ाने के लिए 'तुर्कान-ए-चहलगामी' (चालीस दल) को और अधिक अधिकार तथा संरक्षण प्रदान किया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** गयासुद्दीन बलबन ने राजा की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए दैवीय अधिकार का सिद्धांत अपनाया और खुद को नियामत-ए-खुदाई/जिल्ल-ए-इलाही कहा (कथन 1 सही है)। दरबार में कठोर अनुशासन और राजसी शिष्टाचार के लिए उसने सिजदा, पैबोस और नौरोज उत्सव की शुरुआत की (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि बलबन स्वयं 'चालीस दल' (चहलगामी) का सदस्य रह चुका था और वह उनकी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं व सुल्तान के खिलाफ षड्यंत्रों से भली-भांति परिचित था, इसलिए सुल्तान बनते ही उसने **'तुर्कान-ए-चहलगामी' का पूर्ण रूप से दमन** कर दिया था।

©IASHINDIMEDIUM

5. **टॉपिक: खिलजी वंश (अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण व सुधार)**

दिल्ली सल्तनत के खिलजी वंश (1290-1320 ईस्वी) के संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी थे, किंतु इस वंश के सबसे पराक्रमी, साम्राज्यवादी और क्रांतिकारी सुधारक शासक **अलाउद्दीन खिलजी** (1296-1316 ईस्वी) थे। उन्होंने सल्तनत काल में पहली बार धर्म को राजनीति से अलग रखा ('दीन से सियासत अलग') और 'सिकंदर-ए-सानी' (द्वितीय सिकंदर) की उपाधि धारण की। उन्होंने उत्तर भारत के साथ-साथ दक्षिण भारत के राज्यों (देवगिरी, वारंगल, होयसाल और मदुरा) को भी अपने सैन्य अभियानों (सेनापति मलिक काफूर के नेतृत्व में) से जीता।

अलाउद्दीन खिलजी की ऐतिहासिक प्रसिद्धि उसके प्रशासनिक, सैन्य और विशेष रूप से **आर्थिक एवं बाजार नियंत्रण सुधारों** के कारण है। उसकी इन सुधार नीतियों का मुख्य उद्देश्य एक विशाल और स्थायी सेना का रखरखाव करना था, जिसे कम वेतन में भी संतुष्ट रखा जा सके।

बाजार नियंत्रण एवं मूल्य नियंत्रण प्रणाली: अलाउद्दीन खिलजी देश का प्रथम सुल्तान था जिसने वस्तुओं के मूल्य निश्चित किए और बाजार पर कड़ा नियंत्रण स्थापित किया। इसकी विस्तृत जानकारी जियाउद्दीन बरनी की 'तारीख-ए-फिरोजशाही' और अमीर खुसरो के ग्रंथों से मिलती है। उसने बाजार को चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया था:

1. **गल्ला बाजार:** खाद्यान्न (अनाज) की बिक्री के लिए, जिसके लिए 'शहना-ए-मंडी' (बाजार अधीक्षक) और 'बरिद' (गुप्तचर) नियुक्त किए गए थे। खाद्यान्न की कीमत कम और स्थिर रखी गई ताकि अकाल या संकट के समय भी कीमतें न बढ़ें।
2. **सराय-ए-अदल:** कपड़ा, शर्करा, सूखे मेवे, जड़ी-बूटियाँ और अन्य वस्त्रों के लिए एक नियंत्रित बाजार था। यहाँ व्यापारियों का पंजीकरण अनिवार्य था और रियायती दरों पर ऋण भी दिए जाते थे।
3. **घोड़े, दासों और मवेशियों का बाजार:** घोड़ों और दासों की दलालों व मूल्य पर कड़ी नजर रखी जाती थी ताकि बिचौलिए मुनाफाखोरी न कर सकें।
4. **सामान्य बाजार:** अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएँ।

बाजार में कड़ाई सुनिश्चित करने के लिए उसने कई प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति की थी। **'दीवान-ए-रियासत'** बाजार का नियंत्रक विभाग था, जिसके अंतर्गत **'शहना-ए-मंडी'** अधिकारी बाजारों की देखरेख करते थे। सुल्तान को बाजार की हर छोटी-बड़ी गतिविधि की रिपोर्ट **'बरिद'** (गुप्तचर) और **'मुनहियाँ'** (गुप्त सूचना देने वाले) द्वारा मिलती थी। माप-तौल में बेईमानी करने वालों के लिए उसने अत्यंत कठोर दंड का प्रावधान किया था— यदि कोई व्यापारी कम तोलता था, तो उसके शरीर से मांस का उतना ही हिस्सा काट लिया जाता था। इसके अतिरिक्त, उसने कृषि सुधारों के तहत उपजाऊ भूमि का पैमाइश (विश्वा) कराकर भू-राजस्व बढ़ाकर उपज का **50% (आधा भाग)** नकद या अनाज के रूप में लेना अनिवार्य कर दिया तथा **'चराई कर'** (दुधारू पशुओं पर) और **'घड़ी कर'** (घरों और झोपड़ियों पर) नामक नए कर लगाए।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण और आर्थिक सुधारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अलाउद्दीन खिलजी ने एक विशाल स्थायी सेना के रखरखाव और कम वेतन में उसे संतुष्ट रखने के लिए बाजार नियंत्रण प्रणाली लागू की थी।
2. खाद्यान्न की बिक्री के लिए स्थापित 'गल्ला बाजार' के नियंत्रण और देखरेख के लिए 'शहना-ए-मंडी' नामक अधिकारी नियुक्त किए गए थे।
3. उसने माप-तौल में बेईमानी रोकने के लिए बहुत उदार दंड नीति अपनाई थी ताकि व्यापारियों को सुधारा जा सके।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

©IASHINDIMEDIUM

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, अलाउद्दीन खिलजी का बाजार नियंत्रण मुख्य रूप से उसकी सैन्य आवश्यकता से प्रेरित था ताकि कम सैनिकों के वेतन में भी एक बड़ी स्थायी सेना का खर्च चलाया जा सके (कथन 1 सही है)। अनाज बाजार (गल्ला मंडी) के संचालन और मूल्य नियंत्रण के लिए शहना-ए-मंडी और गुप्तचरों की तैनाती की गई थी (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि अलाउद्दीन की दंड नीति जरा भी उदार नहीं थी; तौल में कम तौलने पर व्यापारी के शरीर से उसके बराबर मांस काट लेने का अत्यधिक कठोर नियम था।

प्रश्न 2: अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासन और कर-व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. दीवान-ए-रियासत - बाजार नियंत्रण और व्यापार का सर्वोच्च अधीक्षक विभाग
2. चराई कर - दुधारू पशुओं पर लगाया जाने वाला कर
3. घड़ी कर - मकानों और झोपड़ियों पर लगाया जाने वाला कर

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** अलाउद्दीन खिलजी ने प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण के तहत व्यापार और बाजारों पर नियंत्रण रखने के लिए 'दीवान-ए-रियासत' नामक विभाग की स्थापना की थी (युग्म 1 सही है)। उसने किसानों और पशुपालकों पर आर्थिक दबाव और आय बढ़ाने के लिए मवेशियों पर 'चराई कर' (Pasture Tax) तथा मकानों व झोपड़ियों पर 'घड़ी कर' (House Tax) लगाया था (युग्म 2 और 3 सही हैं)।

IAS HINDI MEDIUM

आधुनिक भारत

1. टॉपिक: यूरोपीय कंपनियों का आगमन (पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश, फ्रांसीसी)

पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कुस्तुनतुनिया के पतन (1453 ईस्वी) के पश्चात यूरोपीय देशों के लिए भारत और एशिया के साथ पारंपरिक स्थलीय व्यापार मार्ग अवरुद्ध हो गए, जिसके परिणामस्वरुप नए समुद्री मार्गों की खोज आरंभ हुई। इस अन्वेषण युग में यूरोपीय व्यापारी कंपनियाँ व्यावसायिक लाभ की लालसा से भारत आईं, जिन्होंने धीरे-धीरे भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। भारत आने वाली इन यूरोपीय शक्तियों का क्रम पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश, डेनिश और फ्रांसीसी था।

1. पुर्तगाली: भारत आने वाले प्रथम और जाने वाले अंतिम यूरोपीय पुर्तगाली थे। **वास्को डी गामा** 1498 ईस्वी में कालीकट (केरल) के तट पर पहुँचा, जहाँ राजा जमोरिन ने उसका स्वागत किया। पुर्तगालियों ने भारत में अपने व्यापारिक केंद्रों की स्थापना की। **फ्रांसिस्को डी अल्मेडा** भारत का प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था, जिसने 'ब्लू वाटर पॉलिसी' (शांत जल नीति) लागू की। वास्तविक संस्थापक **अल्फांसो डी अल्बुकर्क** (1510) था, जिसने बीजापुर के सुल्तान से गोवा को छीनकर अपनी राजधानी बनाया और पुर्तगाली साम्राज्य की नींव सुदृढ़ की।

2. डच (नीदरलैंड): नीदरलैंड की यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी (VOC) की स्थापना 1602 ईस्वी में हुई। डचों का मुख्य ध्यान दक्षिण-पूर्वी एशिया के मसाले वाले द्वीपों (जैसे इंडोनेशिया) पर था, किंतु उन्होंने भारत में भी मसूलीपट्टनम (1605), पुलीकट, सूरत और चिनसुरा में अपनी फैक्टरियाँ स्थापित कीं। 1759 के बेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को निर्णायक रूप से पराजित कर दिया।

3. ब्रिटिश (इंग्लैंड): महारानी एलिजाबेथ प्रथम द्वारा 31 दिसंबर 1600 को 'इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी' को चार्टर प्रदान किया गया। कैप्टन विलियम हॉकिंस (1608) और सर थॉमस रो (1615) ने मुगल दरबार में आकर व्यापारिक रियायतें प्राप्त कीं। अंग्रेजों ने 1613 में सूरत में अपनी पहली स्थायी फैक्ट्री स्थापित की। इसके बाद मद्रास, बंबई और कलकत्ता (फोर्ट विलियम) को केंद्र बनाकर उन्होंने भारत में अपनी सर्वोच्चता स्थापित कर ली।

4. फ्रांसीसी: फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1664 ईस्वी में लुई चौदहवें के मंत्री कोल्बर्ट के प्रयासों से हुई। फ्रांसीसियों ने सूरत (1668), मछलीपट्टनम और पांडिचेरी (पुदुचेरी) में अपनी बस्तियाँ बसाईं। फ्रांसिस्को मार्टिन ने पांडिचेरी की स्थापना की। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में कर्नाटक के तीन युद्धों (आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष) के पश्चात ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने फ्रांसीसियों को पराजित कर भारत में अपनी निर्विवाद राजनीतिक सत्ता स्थापित कर ली।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: यूरोपीय कंपनियों के भारत आगमन और उनके प्रारंभिक अभियानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वास्को डी गामा 1498 ईस्वी में कालीकट पहुँचा था, जहाँ स्थानीय शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया था।
2. फ्रांसिस्को डी अल्मेडा भारत का प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था, जिसने 'ब्लू वाटर पॉलिसी' (शांत जल नीति) का प्रतिपादन किया था।

©IASHINDIMEDIUM

3. डच ईस्ट इंडिया कंपनी (VOC) की स्थापना 1602 ईस्वी में हुई थी और 1759 के बेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने उन्हें पराजित किया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, वास्को डी गामा की समुद्री यात्रा 1498 में कालीकट पहुँची थी जहाँ जमोरिन ने उसका स्वागत किया (कथन 1 सही है); पुर्तगाली शक्ति को हिंद महासागर में मजबूत करने के लिए अल्मेडा ने 'ब्लू वाटर पॉलिसी' अपनाई (कथन 2 सही है); तथा 1602 में स्थापित डच कंपनी को बंगाल के बेदरा युद्ध (1759) में अंग्रेजों द्वारा निर्णायक शिकस्त दी गई थी (कथन 3 सही है)।

प्रश्न 2: भारत में यूरोपीय शक्तियों के संस्थापकों, गवर्नरों और प्रमुख व्यक्तियों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. अल्फांसो डी अल्बुकर्क - पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक (गोवा पर अधिकार)
2. फ्रांसिस्को मार्टिन - पांडिचेरी शहर के संस्थापक
3. कैप्टन विलियम हॉकिंस - सम्राट जहाँगीर के दरबार में आने वाला प्रथम ब्रिटिश दूत

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** अल्बुकर्क को भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है जिसने 1510 में गोवा जीता था (युग्म 1 सही है); फ्रांसीसी अधिकारी फ्रांसिस्को मार्टिन ने वलिकोण्डापुरम के सूबेदार से जमीन लेकर पांडिचेरी की स्थापना की थी (युग्म 2 सही है); तथा जेम्स प्रथम का राजदूत बनकर विलियम हॉकिंस 1608 में जहाँगीर के दरबार में व्यापारिक अनुमति लेने आया था (युग्म 3 सही है)।

2. टॉपिक: ब्रिटिश विजय - बंगाल, मैसूर, मराठा और पंजाब

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में अपनी राजनीतिक सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए चरणबद्ध रूप से क्षेत्रीय राज्यों को पराजित किया। इस साम्राज्यवादी विस्तार के तहत बंगाल, मैसूर, मराठा और पंजाब की विजय ने भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन करने में सबसे निर्णायक और ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

1. बंगाल की विजय: बंगाल उस समय भारत का सबसे समृद्ध और उपजाऊ प्रांत था। ब्रिटिश आधिपत्य की वास्तविक शुरुआत **प्लासी के युद्ध (1757)** से हुई, जिसमें रॉबर्ट क्लाइव की कूटनीति ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दोला को पराजित किया। इसके पश्चात **बक्सर के युद्ध (1764)** ने इस विजय को कानूनी पूर्णता प्रदान की, जहाँ हेक्टर मुनरो ने बंगाल के अपदस्थ नवाब मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दोला और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना को करारी शिकस्त दी। इसके बाद 1765 की इलाहाबाद संधि के माध्यम से अंग्रेजों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी अधिकार प्राप्त हो गए और यहाँ लूट आधारित द्वैध शासन प्रणाली की शुरुआत हुई।

2. मैसूर की विजय: दक्षिण भारत में हैदर अली और उनके ऊर्जावान पुत्र **टीपू सुल्तान** के नेतृत्व में मैसूर राज्य अंग्रेजों की विस्तारवादी नीतियों के मार्ग में एक बड़ी बाधा था। मैसूर पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के लिए अंग्रेजों को चार कड़े आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-1799) लड़ने पड़े। **1799 के चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध** में राजधानी श्रीरंगपट्टनम की रक्षा करते हुए टीपू सुल्तान वीरगति को प्राप्त हुए, जिसके बाद मैसूर के अधिकांश क्षेत्रों पर अंग्रेजों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित हो गया।

3. मराठों की विजय: अठारहवीं शताब्दी के अंत तक मराठा साम्राज्य आंतरिक फूट, सामंती कलह और नेतृत्व की कमी से कमजोर हो रहा था। अंग्रेजों ने सहायक संधि और कूटनीति का प्रयोग करते हुए तीन आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-1818) लड़े। **तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध**

(1817-18) के दौरान गवर्नर-जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स ने पेशवा बाजीराव द्वितीय को निर्णायक रूप से पराजित कर पेशवा का पद हमेशा के लिए समाप्त कर दिया और मराठा संघ को भंग कर दिया।

4. पंजाब की विजय: महाराजा रणजीत सिंह के कुशल और शक्तिशाली नेतृत्व में पंजाब एक अत्यंत शक्तिशाली स्वतंत्र सिख राज्य के रूप में उभरा था। उनकी मृत्यु (1839) के पश्चात पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता फैल गई। अंग्रेजों ने दो आंग्ल-सिख युद्धों (1845-49) के माध्यम से सिखों को पराजित किया और **1849 में लॉर्ड डलहौजी** के कार्यकाल में पंजाब का ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य में पूर्ण विलय कर लिया गया।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: बंगाल और मैसूर विजय से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्लासी का युद्ध 1757 में रॉबर्ट क्लाइव और सिराजुद्दोला के मध्य लड़ा गया था, जिसने बंगाल में ब्रिटिश प्रभुत्व की नींव रखी थी।
2. बक्सर के युद्ध (1764) में अंग्रेजों ने मीर कासिम, शुजाउद्दोला और शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना को पराजित किया था।
3. चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799) में टीपू सुल्तान विजयी रहा था और अंग्रेजों को मैसूर से पीछे हटना पड़ा था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, 1757 का प्लासी युद्ध बंगाल में ब्रिटिश सत्ता के प्रसार की शुरुआत था (कथन 1 सही है); 1764 का बक्सर युद्ध अत्यंत निर्णायक था जिसमें मुगल सम्राट, अवध के नवाब और बंगाल के अपदस्थ नवाब की संयुक्त सेना को हेक्टर मुनरो ने हराया था (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि **1799 के चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध में टीपू सुल्तान की पराजय हुई थी** और श्रीरंगपट्टनम के किले की रक्षा करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुए थे।

प्रश्न 2: मराठा और पंजाब विजय के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18) के पश्चात गवर्नर-जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स ने पेशवा का पद समाप्त कर मराठा संघ को भंग कर दिया था।
2. पंजाब का ब्रिटिश साम्राज्य में पूर्ण विलय 1849 में लॉर्ड डलहौजी के कार्यकाल में द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के बाद हुआ था।
3. महाराजा रणजीत सिंह के जीवनकाल में ही अंग्रेजों ने पंजाब पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के बाद मराठों की शक्ति को पूरी तरह कुचलते हुए पेशवा बाजीराव द्वितीय को हटाकर पेशवा का पद समाप्त कर दिया गया था (कथन 1 सही है); पंजाब का विलय 1849 में लॉर्ड डलहौजी द्वारा द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के परिणामस्वरूप किया गया था (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि महाराजा रणजीत सिंह के जीते जी (1839 तक) अंग्रेजों में उनसे सीधे टकराव की हिम्मत नहीं हुई थी, और अंग्रेजों ने उनके जीवित रहते 'अमृतसर की संधि' (1809) के माध्यम से उनके साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे थे।

3. **टॉपिक: ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियाँ (स्थायी, रैयतवाड़ी और महालवाड़ी)**

©IASHINDIMEDIUM

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासनकाल (1757–1947) के दौरान भारत में लागू की गई भू-राजस्व नीतियों का मुख्य उद्देश्य भारतीय कृषि से अधिकतम राजस्व वसूल करना और ब्रिटेन के औद्योगिक हितों को साधना था। अंग्रेजों ने अपनी वित्तीय आवश्यकताओं और क्षेत्रीय भिन्नताओं के आधार पर भारत में मुख्य रूप से तीन प्रकार की भू-राजस्व प्रणालियाँ लागू कीं, जिनका भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था और किसानों पर अत्यंत गहरा और विनाशकारी प्रभाव पड़ा।

1. स्थायी बंदोबस्त (इस्तमरारी या जमींदारी व्यवस्था): इसे 1793 ईस्वी में गवर्नर-जनरल **लॉर्ड कॉर्नवालिस** द्वारा बंगाल, बिहार, उड़ीसा और वाराणसी के क्षेत्रों में लागू किया गया, जो ब्रिटिश भारत के लगभग 19% भू-भाग पर फैली थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत **जमींदारों को भूमि का स्थायी स्वामी** मान लिया गया। अंग्रेजों ने कुल लगान का 10/11 भाग (लगभग 89%) अपने पास रखने तथा मात्र 1/11 भाग जमींदारों को पारिश्रमिक के रूप में देने का नियम बनाया। लगान भुगतान के लिए 'सूर्यास्त कानून' (Sunset Law) लागू किया गया, जिसके तहत निश्चित तिथि को सूर्यास्त तक कर न चुकाने पर जमींदारों की जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी।

2. रैयतवाड़ी व्यवस्था: इस व्यवस्था के जन्मदाता थॉमस मुनरो और कैप्टन रीड थे, जिसे सर्वप्रथम मद्रास प्रेसिडेंसी में और बाद में 1820 के दशक में **मद्रास, बंबई और असम** के बड़े भागों में लागू किया गया। यह ब्रिटिश भारत के लगभग 51% भू-भाग पर लागू होने वाली सबसे बड़ी प्रणाली थी। इसमें **सरकार और किसान (रैयत) के बीच सीधा संबंध** स्थापित किया गया और पारंपरिक बिचौलियों (जमींदारों) को समाप्त कर दिया गया। किसानों को भूमि का स्वामित्व मिला, बशर्ते वे नियमित रूप से कर चुकाते रहें। हालाँकि, लगान की दरें बहुत अधिक (30% से 50% तक) थीं और सरकार द्वारा समय-समय पर इसमें वृद्धि कर दी जाती थी।

3. महालवाड़ी व्यवस्था: इस प्रणाली की रूपरेखा हॉल्ट मैकेंज़ी द्वारा 1822 में तैयार की गई थी और 1833 में विलियम बेंटिक के शासनकाल में इसे सुव्यवस्थित रूप दिया गया। यह उत्तर-पश्चिम प्रांत (आधुनिक उत्तर प्रदेश), मध्य प्रांत और पंजाब के क्षेत्रों में लागू थी, जो कुल ब्रिटिश भारत के लगभग 30% हिस्से पर थी। इस व्यवस्था में भू-राजस्व का निर्धारण व्यक्तिगत किसान के बजाय **पूरे गाँव या 'महाल' (गाँवों के समूह)** के साथ संयुक्त रूप से किया जाता था। कर संग्रह और भुगतान की जिम्मेदारी पूरे गाँव के मुखिया या 'लंबरदार' को सौंपी जाती थी।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: ब्रिटिश काल में भारत में लागू की गई भू-राजस्व प्रणालियों (स्थायी बंदोबस्त और रैयतवाड़ी) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. स्थायी बंदोबस्त को 1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा बंगाल, बिहार और उड़ीसा में लागू किया गया था, जिसमें जमींदारों को भूमि का स्वामी बनाया गया था।
2. रैयतवाड़ी व्यवस्था मुख्य रूप से बंगाल और बिहार के क्षेत्रों में लागू की गई थी और इसमें सरकार व किसान के बीच सीधा संबंध था।
3. स्थायी बंदोबस्त के तहत ब्रिटिश सरकार ने लगान का 10/11 भाग अपने पास रखा था और रैयतवाड़ी में किसानों पर कर का बोझ बहुत अधिक था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (स) अर्थात केवल 1 और 3 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** कथन 1 सही है क्योंकि स्थायी बंदोबस्त 1793 में कॉर्नवालिस द्वारा बंगाल, बिहार, उड़ीसा में शुरू हुआ जिसमें जमींदार भू-स्वामी बने; कथन 3 सही है क्योंकि स्थायी बंदोबस्त में 89% हिस्सा (10/11 भाग) कंपनी का और 11% जमींदार का था, तथा रैयतवाड़ी में कर दरें 30% से 50% तक ऊँची थीं। कथन 2 **असत्य** है क्योंकि रैयतवाड़ी व्यवस्था बंगाल या बिहार में नहीं बल्कि **मद्रास, बंबई और असम** प्रेसिडेंसी में लागू की गई थी।

प्रश्न 2: महालवाड़ी व्यवस्था के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

©IASHINDIMEDIUM

1. यह व्यवस्था उत्तर-पश्चिम प्रांत, मध्य प्रांत और पंजाब के क्षेत्रों में लागू की गई थी, जो ब्रिटिश भारत के लगभग 30% भू-भाग पर थी।

2. इस व्यवस्था के तहत भू-राजस्व का निर्धारण व्यक्तिगत किसान के साथ अलग-अलग किया जाता था, और इसमें किसी मुखिया की भूमिका नहीं होती थी।

3. इस प्रणाली की रूपरेखा हॉल्ट मैकेंज़ी द्वारा तैयार की गई थी और इसे विलियम बेंटिक के काल में विस्तार दिया गया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (स) अर्थात केवल 1 और 3 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** महालवाड़ी व्यवस्था उत्तर-पश्चिम भारत, मध्य प्रांत और पंजाब में लागू थी और यह कुल ब्रिटिश भारत का लगभग 30% क्षेत्र कवर करती थी (कथन 1 सही है); हॉल्ट मैकेंज़ी ने इसकी रूपरेखा बनाई और विलियम बेंटिक ने इसे कानून का रूप दिया (कथन 3 सही है)। कथन 2 **असत्य** है क्योंकि महालवाड़ी व्यवस्था में राजस्व का निर्धारण व्यक्तिगत किसान के साथ नहीं, बल्कि **पूरे गाँव या 'महाल' के साथ सामूहिक रूप से** किया जाता था और कर संग्रह की जिम्मेदारी गाँव के मुखिया या लंबरदार की होती थी।

4. **टॉपिक: 1857 की महान क्रांति - कारण, केंद्र और नेतृत्व**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में 1857 की महान क्रांति ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध पहला व्यापक और संगठित सशस्त्र विद्रोह था, जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है। इस क्रांति के उद्भव के पीछे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और तात्कालिक कारण उत्तरदायी थे।

प्रमुख कारण:

1. **राजनीतिक कारण:** लॉर्ड डैल्हौजी की 'व्यपगत सिद्धांत' (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स / हड़प नीति) और सहायक संधियों के माध्यम से सतारा, नागपुर, झाँसी और अवध जैसे भारतीय राज्यों का ब्रिटिश साम्राज्य में अन्यायोचित विलय।

2. **आर्थिक कारण:** अंग्रेजों की शोषणकारी भू-राजस्व नीतियों और पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योगों के विनाश ने किसानों, दस्तकारों और शिल्पकारों को पूरी तरह बर्बाद कर दिया था।

3. **सामाजिक व धार्मिक कारण:** ब्रिटिश प्रशासन द्वारा सामाजिक सुधारों की आड़ में भारतीय संस्कृति में हस्तक्षेप, ईसाई मिशनरियों का प्रचार और सेना में भारतीयों के साथ नस्लीय भेदभाव।

4. **तात्कालिक कारण:** सेना में पुरानी 'ब्राउन बैस' बंदूक के स्थान पर नई 'एनफील्ड राइफल' का प्रयोग, जिसमें कारतूसों पर गाय और सुअर की चर्बी लगी होने की खबर फैली थी। इन्हें दाँत से काटना पड़ता था, जिससे हिंदू और मुस्लिम सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची। 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी के सिपाही **मंगल पांडे** ने इसका विरोध करते हुए अंग्रेजी अधिकारियों पर गोली चला दी।

प्रमुख केंद्र और नेतृत्व: विद्रोह का प्रसार उत्तर और मध्य भारत के कई प्रमुख केंद्रों तक हुआ, जिनका नेतृत्व निम्नलिखित नायकों ने किया:

- **दिल्ली:** यहाँ विद्रोह का प्रतीकात्मक नेतृत्व वृद्ध मुगल सम्राट **बहादुर शाह द्वितीय (जफर)** ने किया, जबकि वास्तविक सैन्य कमान जनरल बख्त खान के हाथ में थी।

- **कानपुर:** पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र **नाना साहब** ने तांत्या टोपे के सहयोग से कमान संभाली।

- **लखनऊ (अवध):** यहाँ बेगम हजरत महल ने अपने अल्पवयस्क पुत्र बिरजिस कादिर को नवाब घोषित कर विद्रोह का नेतृत्व किया।
- **झाँसी:** रानी **लक्ष्मीबाई** ने अंग्रेजों के खिलाफ अदम्य साहस का परिचय दिया।
- **बिहार (जगदीशपुर):** 80 वर्षीय वीर जमींदार **कुंवर सिंह** ने यहाँ के विद्रोह का सफल नेतृत्व किया।
- **बरेली:** खान बहादुर खान ने मोर्चा संभाला।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: 1857 की क्रांति के प्रमुख केंद्र और उनके नेतृत्वकर्ताओं के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. दिल्ली - जनरल बख्त खान और बहादुर शाह जफर
2. कानपुर - नाना साहब और तांत्या टोपे
3. लखनऊ - बेगम हजरत महल
4. बिहार (जगदीशपुर) - खान बहादुर खान

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1, 2 और 3 (ब) केवल 2 और 4 (स) केवल 1 और 4 (द) 1, 2, 3 और 4 सभी

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1, 2 और 3 सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, दिल्ली में विद्रोह का नेतृत्व बहादुर शाह जफर और बख्त खान ने किया था (युग्म 1 सही है); कानपुर में नाना साहब व तांत्या टोपे सक्रिय थे (युग्म 2 सही है); लखनऊ में बेगम हजरत महल ने कमान संभाली थी (युग्म 3 सही है)। युग्म 4 **गलत सुमेलित है** क्योंकि बिहार के जगदीशपुर में विद्रोह का नेतृत्व **बाबू कुंवर सिंह** ने किया था, जबकि खान बहादुर खान ने बरेली में नेतृत्व किया था।

प्रश्न 2: 1857 की क्रांति के कारणों और उसके तात्कालिक घटनाक्रम के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. लॉर्ड डैल्हौजी की 'हड़प नीति' (Doctrine of Lapse) के तहत सर्वप्रथम सतारा रियासत का विलय किया गया था।
2. बैरकपुर छावनी में चर्बीयुक्त कारतूसों के प्रयोग के खिलाफ विद्रोह करने वाले प्रथम सिपाही मंगल पांडे थे।
3. 1857 की क्रांति का संपूर्ण भारत में एकसमान और सुनियोजित विस्तार हुआ था, जिससे ब्रिटिश सत्ता तुरंत समाप्त हो गई थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** डैल्हौजी की हड़प नीति के अंतर्गत विलय होने वाली पहली रियासत 1848 की सतारा थी (कथन 1 सही है); बैरकपुर छावनी में एनफील्ड राइफल के कारतूसों के खिलाफ मुखर होकर विद्रोह का बिगुल फूंकने वाले प्रथम सैनिक मंगल पांडे थे (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि यह क्रांति अखिल भारतीय और सुनियोजित नहीं थी; यह मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत तक सीमित थी और देश के कई बड़े शासकों ने अंग्रेजों का साथ दिया था, जिसके कारण 1858 तक अंग्रेजों ने इस पर नियंत्रण पा लिया था।

5. **टॉपिक: 1857 की क्रांति के परिणाम और असफलता के कारण**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में 1857 की महान क्रांति यद्यपि अपने तात्कालिक उद्देश्यों में असफल रही, किंतु इसके दूरगामी राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक परिणाम अत्यंत व्यापक और ऐतिहासिक सिद्ध हुए। इस महान विद्रोह की असफलता और इसके परिणामों ने भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की प्रकृति को हमेशा के लिए बदल दिया।

1. क्रांति की असफलता के प्रमुख कारण:

- **केंद्रीय नेतृत्व व संगठन का अभाव:** इस विद्रोह में किसी एक सर्वमान्य, अखिल भारतीय और कुशल केंद्रीय नेता का अभाव था। विभिन्न केंद्रों के नेता अपने स्थानीय हितों के लिए लड़ रहे थे, जिससे राष्ट्रीय एकता और समन्वय की कमी खली।
- **सीमित भौगोलिक प्रसार:** यह क्रांति मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत तक ही सीमित रही। दक्षिण भारत, पंजाब और पश्चिमी भारत के अधिकांश हिस्से शांत रहे, और कई देशी रियासतों (जैसे सिंधिया, होलकर और हैदराबाद) ने अंग्रेजों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग किया।
- **संसाधनों और सैन्य आधुनिकता की कमी:** विद्रोहियों के पास पारंपरिक तलवारें, भाले और पुराने हथियार थे, जबकि अंग्रेजों के पास अत्याधुनिक हथियार, रेल, और तार संचार प्रणाली जैसी सुदृढ़ सैन्य व्यवस्था थी जिससे उन्हें तेजी से सेनाएँ भेजने में मदद मिली।
- **शिक्षित वर्ग और व्यापारियों की तटस्थता:** भारत के आधुनिक शिक्षित मध्यम वर्ग, बुद्धिजीवियों और बड़े व्यापारियों ने सामाजिक सुधारों और प्रशासनिक स्थिरता की उम्मीद में इस क्रांति का समर्थन नहीं किया।

2. क्रांति के परिणाम एवं प्रभाव:

- **कंपनी के शासन का अंत:** ब्रिटिश संसद द्वारा पारित 1858 के 'भारत शासन अधिनियम' के तहत भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से वापस लेकर सीधे ब्रिटिश क्राउन (महारानी विक्टोरिया) के अधीन कर दिया गया।
- **वायसराय पद का सृजन:** भारत के गवर्नर-जनरल को अब 'वायसराय' कहा जाने लगा, और लॉर्ड कैनिंग प्रथम वायसराय बने। ब्रिटेन में भारत के नियंत्रण के लिए एक नए पद 'भारत राज्य सचिव' (Secretary of State) की स्थापना की गई।
- **सेना का पुनर्गठन:** सेना में अंग्रेजों का अनुपात बढ़ाया गया तथा बंगाल सेना में 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत जाति, क्षेत्र और संप्रदाय के आधार पर रेजिमेंटों का गठन किया गया ताकि भविष्य में एकजुटता न बन सके।
- **रियासतों की नीति में परिवर्तन:** अंग्रेजों ने विलय और हड़प नीति (Doctrine of Lapse) को हमेशा के लिए त्याग दिया तथा भारतीय राजाओं को उत्तराधिकारी गोद लेने का अधिकार प्रदान किया गया।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: 1857 की क्रांति की असफलता के कारणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस विद्रोह का प्रसार संपूर्ण भारत में एकसमान रूप से अखिल भारतीय स्तर पर हुआ था।
2. इस क्रांति में किसी एक सर्वमान्य और कुशल केंद्रीय राष्ट्रीय नेतृत्व का पूर्ण अभाव था।
3. कई भारतीय शासकों और रियासतों ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोहियों का साथ देने के बजाय अंग्रेजों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता प्रदान की थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (ब) अर्थात केवल 2 और 3 सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, 1857 की क्रांति का प्रसार अखिल भारतीय नहीं था, बल्कि यह मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत तक ही सीमित था (कथन 1 असत्य है); क्रांति के पास

©IASHINDIMEDIUM

कोई सर्वमान्य राष्ट्रीय नेता नहीं था क्योंकि अलग-अलग क्षेत्रों के नेता अपने सीमित हितों के लिए लड़ रहे थे (कथन 2 सही है); तथा सिंधिया, होलकर, हैदराबाद और भोपाल जैसे कई भारतीय शासकों ने अंग्रेजों की मदद की थी जिससे अंग्रेजों को विद्रोह कुचलने में आसानी हुई (कथन 3 सही है)।

प्रश्न 2: 1857 की क्रांति के परिणामों और 1858 के भारत शासन अधिनियम के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का अंत - भारत का शासन सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन हुआ
2. गवर्नर-जनरल का पद - इसे 'वायसराय' नाम दिया गया (प्रथम वायसराय: लॉर्ड कैनिंग)
3. सेना का पुनर्गठन - 'फूट डालो और राज करो' के तहत जाति और क्षेत्र आधारित रेजिमेंटें बनाई गईं

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** 1858 के अधिनियम के द्वारा भारत में कंपनी का शासन समाप्त कर सीधे ब्रिटिश साम्राज्य का नियंत्रण स्थापित कर दिया गया (युग्म 1 सही है); गवर्नर-जनरल को क्राउन का प्रतिनिधि 'वायसराय' कहा जाने लगा और लॉर्ड कैनिंग इस पद पर पहले व्यक्ति थे (युग्म 2 सही है); तथा भविष्य में सैनिकों को एकजुट होने से रोकने के लिए सेना में जाति, समुदाय और क्षेत्र के आधार पर पुनर्गठन किया गया (युग्म 3 सही है)।

कला एवं संस्कृति

टॉपिक: भारतीय वास्तुकला की प्रमुख शैलियाँ (नगर, द्रविड़, बेसर)

प्राचीन भारतीय मंदिर वास्तुकला का विकास मुख्य रूप से भौगोलिक, भूवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विविधताओं के आधार पर तीन प्रमुख शैलियों में हुआ है—नगर शैली, द्रविड़ शैली और बेसर शैली। इन शैलियों की अपनी अनूठी विशेषताएँ, भू-आकृति और स्थापत्य योजना रही है।

1. नागर शैली (उत्तर भारत): हिमालय से लेकर विंध्य पर्वतमाला तक के उत्तर भारत के क्षेत्रों में विकसित इस वास्तुकला को 'नागर शैली' कहा जाता है। इस शैली के मंदिरों की मुख्य विशेषता इसका पंचायतन शैली में निर्माण, वर्गाकार या क्रूसीफॉर्म गर्भ गृह और वक्राकार शिखर है जिसे 'शिखर' कहा जाता है। इसके शीर्ष पर आमलक और कलश स्थापित होते हैं। नागर शैली के मंदिरों में आमतौर पर विशाल प्राचीर (चारदीवारी) या प्रवेश द्वार (गोपुरम) नहीं होते हैं। खजुराहो के मंदिर, ओडिशा के सूर्य मंदिर (कोणार्क) और देवगढ़ का दशावतार मंदिर इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

2. द्रविड़ शैली (दक्षिण भारत): कृष्णा नदी से लेकर कन्याकुमारी तक के दक्षिण भारतीय भू-भाग में विकसित वास्तुकला को 'द्रविड़ शैली' कहा जाता है। इस शैली के मंदिर विशाल प्राचीरों (चारदीवारी) से घिरे होते हैं, जिनके मध्य में अत्यंत भव्य और ऊँचे प्रवेश द्वार होते हैं जिन्हें **'गोपुरम'** कहा जाता है। द्रविड़ मंदिरों का शिखर पिरामिडनुमा (सोपानोंयुक्त) होता है जिसे 'विमान' कहा जाता है। मंदिर परिसर के भीतर विशाल जल कुंड इस शैली की विशेष पहचान है। तंजावुर का राजराजेश्वर (बृहदेश्वर) मंदिर, महाबलीपुरम के रथ मंदिर और मदुरै का मीनाक्षी मंदिर इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

3. बेसर शैली (दक्कन / मिश्रित शैली): विंध्य पर्वतमाला से लेकर कृष्णा नदी (दक्कन क्षेत्र) के मध्य विकसित वास्तुकला को 'बेसर शैली' कहा जाता है। यह नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों का एक अनूठा सम्मिश्रण (संकर रूप) है, जिसे चालुक्य, राष्ट्रकूट और होयसल शासकों ने संरक्षण दिया। बेसर शैली के मंदिरों में नागर शैली का वृत्ताकार या तारांकित आधार और द्रविड़ शैली के विमान व मंडप का

प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। होयसल साम्राज्य के बेलूर, हलेबिड और सोमनाथपुर के मंदिर इस शैली के सर्वोत्तम उदाहरण हैं, जो अपनी बारीक नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: भारतीय मंदिर वास्तुकला की 'नगर' और 'द्रविड़' शैलियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नागर शैली के मंदिरों में आमतौर पर विशाल प्राचीर (चारदीवारी) और भव्य प्रवेश द्वार (गोपुरम) का अभाव होता है, जबकि द्रविड़ शैली में गोपुरम अनिवार्य विशेषता है।
2. नागर शैली के मंदिरों का शिखर वक्राकार होता है, जबकि द्रविड़ शैली में पिरामिडनुमा शिखर को 'विमान' कहा जाता है।
3. द्रविड़ शैली के मंदिरों में परिसर के भीतर जल कुंड (Water Tank) का होना एक प्रमुख विशेषता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों कथन सही हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक स्रोतों के अनुसार, उत्तर भारत की नागर शैली में चारदीवारी या विशाल गोपुरम नहीं होते, जबकि दक्षिण भारत की द्रविड़ शैली में भव्य गोपुरम और ऊंची प्राचीरें होती हैं (कथन 1 सही है); नागर शैली में घुमावदार/वक्राकार शिखर होते हैं और द्रविड़ शैली में सीढ़ीनुमा पिरामिडनुमा शिखर को विमान कहते हैं (कथन 2 सही है); तथा द्रविड़ शैली के मंदिरों में अनुष्ठानिक उपयोग के लिए विशाल जल कुंड पाए जाते हैं (कथन 3 सही है)।

प्रश्न 2: 'बेसर शैली' (Vesara Style) की वास्तुकला के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह शैली मुख्य रूप से उत्तर की नागर और दक्षिण की द्रविड़ शैली का एक संकर (मिश्रित) रूप है।
2. इस शैली का विकास मुख्य रूप से विंध्य और कृष्णा नदी के मध्य दक्कन क्षेत्र में चालुक्य, राष्ट्रकूट और होयसल शासकों के संरक्षण में हुआ था।
3. इस शैली के मंदिरों में तारांकित (Stellate) आधार योजना और अत्यधिक बारीक एवं सूक्ष्म नक्काशी देखने को मिलती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों कथन सही हैं। **स्पष्टीकरण:** बेसर शैली नागर और द्रविड़ वास्तुकला का संमिश्रण है (कथन 1 सही है); इसका भौगोलिक विस्तार दक्कन (विंध्य से कृष्णा) क्षेत्र में था और इसे चालुक्य तथा होयसल राजवंशों ने विशेष रूप से संरक्षित किया (कथन 2 सही है); होयसल वास्तुकला में तारांकित योजनाओं (Stellate plan) और उत्कृष्ट साबुन पत्थर (Soapstone) की नक्काशी का अनूठा प्रयोग बेसर शैली की पहचान है (कथन 3 सही है)।

2. **टॉपिक: भारतीय शास्त्रीय नृत्य और प्रमुख लोक नृत्य**

भारतीय संस्कृति में नृत्य कला का एक अति प्राचीन और समृद्ध इतिहास रहा है, जिसका उल्लेख भरतमुनि के प्रसिद्ध ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है। भारतीय नृत्यों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों—शास्त्रीय नृत्य (Classical Dances) और लोक नृत्य (Folk Dances)—में विभाजित किया जाता है। शास्त्रीय नृत्य कड़े नियमों, व्याकरण और आध्यात्मिक भावों पर आधारित होते हैं, जबकि लोक नृत्य क्षेत्रीय संस्कृति, उत्सवों और जनजीवन की सहज अभिव्यक्ति होते हैं।

1. भारतीय शास्त्रीय नृत्य: संगीत नाटक अकादमी द्वारा वर्तमान में भारत के **आठ शास्त्रीय नृत्यों** को मान्यता दी गई है:

- **भरतनाट्यम (तमिलनाडु):** यह भारत का सबसे प्राचीन शास्त्रीय नृत्य है, जो मंदिरों की देवदासी परंपरा से विकसित हुआ है और इसमें भाव, रल और ताल का अनूठा संगम होता है।
- **कथक (उत्तर प्रदेश / उत्तर भारत):** कथा कहने की कला से जुड़ा यह उत्तर प्रदेश का एकमात्र शास्त्रीय नृत्य है, जिसमें द्रुत चक्रीय गतियाँ और मुग़ल काल का प्रभाव देखने को मिलता है।
- **कथकली और मोहिनीअट्टम (केरल):** कथकली एक मुखौटा और भारी वेशभूषा वाला कथात्मक नृत्य-नाटक है, जबकि मोहिनीअट्टम महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक एकल और लास्य प्रधान शालीन नृत्य है।
- **कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश):** यह नृत्य नाट्य और नृत्य का सुंदर संयोजन है, जिसमें पारंपरिक रूप से पीतल की थाली या मटके पर खड़े होकर नृत्य करने की अनूठी कला प्रदर्शित की जाती है।
- **ओडिसी (ओडिशा):** भगवान जगन्नाथ को समर्पित यह नृत्य अपनी त्रिभंग मुद्रा और कोणीय शरीर-संचालन के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- **मणिपुरी (मणिपुर):** यह मुख्य रूप से राधा-कृष्ण की रासलीला और वैष्णव भक्ति परंपरा की कोमल मुद्राओं पर आधारित होता है।
- **सत्रिया (असम):** वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव द्वारा 15वीं शताब्दी में असम के 'सत्रों' (मठों) में शुरू किया गया यह सबसे नया मान्यता प्राप्त शास्त्रीय नृत्य है।

2. प्रमुख लोक नृत्य: भारत के विभिन्न राज्यों में स्थानीय पर्वों और कटाई के मौसम में लोक नृत्य किए जाते हैं। उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में **चरकुला (ब्रज क्षेत्र का सिर पर कई दीप रखकर किया जाने वाला नृत्य), नौटंकी, रासलीला, कजरी, ख्याल और धोबिया** अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा असम का बिहू, पंजाब का भांगड़ा, गुजरात का गरबा, राजस्थान का घूमर, और महाराष्ट्र का लावणी देश के सर्वाधिक प्रसिद्ध और जीवंत लोक नृत्य हैं।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: भारतीय शास्त्रीय नृत्यों और उनके संबंधित राज्यों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. मोहिनीअट्टम - केरल
2. सत्रिया - असम
3. कुचिपुड़ी - कर्नाटक
4. भरतनाट्यम - तमिलनाडु

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1, 2 और 4 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2, 3 और 4 सभी

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (अ) अर्थात केवल 1, 2 और 4 सही सुमेलित हैं। **स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्रोतों के अनुसार, मोहिनीअट्टम केरल का शास्त्रीय नृत्य है (युग्म 1 सही है); सत्रिया असम का शास्त्रीय नृत्य है (युग्म 2 सही है); तथा भरतनाट्यम तमिलनाडु का प्राचीन शास्त्रीय नृत्य है (युग्म 4 सही है)। युग्म 3 **गलत सुमेलित है** क्योंकि कुचिपुड़ी कर्नाटक का नहीं, बल्कि **आंध्र प्रदेश** का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है।

प्रश्न 2: उत्तर प्रदेश के लोक नृत्यों और उनकी विशेषताओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'चरकुला नृत्य' मुख्य रूप से ब्रज क्षेत्र से संबंधित है जिसमें महिलाएं सिर पर रथ के पहिये पर रखे कई दीप जलाकर नृत्य करती हैं।

©IASHINDIMEDIUM

2. 'कजरी नृत्य' का संबंध मुख्यतः उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर और वाराणसी क्षेत्रों से है जो वर्षा ऋतु के दौरान गाया और किया जाता है।

3. 'नौटंकी' उत्तर प्रदेश की एक लोकप्रिय लोक नाट्य और नृत्य शैली है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर (द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों कथन सही हैं। **स्पष्टीकरण:** चरकुला नृत्य ब्रज क्षेत्र की होली के अवसर पर रथ के पहिये पर दीपक रखकर किया जाने वाला प्रसिद्ध लोक नृत्य है (कथन 1 सही है); कजरी वर्षा ऋतु में सावन के महीने में मिर्जापुर और पूर्वांचल क्षेत्र में गाया व किया जाने वाला प्रमुख लोकगीत-नृत्य है (कथन 2 सही है); तथा नौटंकी उत्तर प्रदेश की सबसे लोकप्रिय पारंपरिक लोक नाट्य व नृत्य शैली है (कथन 3 सही है)।

3. **टॉपिक: शास्त्रीय संगीत और घराने**

भारतीय शास्त्रीय संगीत और घराना परंपरा भारतीय संस्कृति की अत्यंत समृद्ध और आध्यात्मिक धारा है। भारतीय संगीत का मूल स्रोत वेदों, विशेषकर सामवेद और भरतमुनि के प्रसिद्ध ग्रंथ **'नाट्यशास्त्र'** में निहित है। मध्यकाल में इस्लामिक और फारसी प्रभावों के समन्वय से भारतीय संगीत दो प्रमुख पद्धतियों में बँट गया—उत्तर भारत का **हिंदुस्तानी संगीत** और दक्षिण भारत का **कर्नाटक संगीत**।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गायन की विभिन्न शैलियाँ विकसित हुईं, जिनमें **ध्रुपद** (सर्वाधिक प्राचीन, गंभीर और आध्यात्मिक शैली), **ख्याल** (वर्तमान की सबसे लोकप्रिय व खुली गायकी), तप्पा, और **ठुमरी** (श्रृंगार रस प्रधान अर्ध-शास्त्रीय शैली) प्रमुख हैं। इस संगीत पद्धति की सबसे अनूठी विशेषता **'घराना प्रणाली'** है। घराना उस विशिष्ट संगीत शैली या स्कूल को कहते हैं जो किसी गुरु-शिष्य परंपरा, भौगोलिक क्षेत्र या विशेष गायन तकनीक से उत्पन्न होता है।

प्रमुख हिंदुस्तानी संगीत घराने और उनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **ग्वालियर घराना:** यह हिंदुस्तानी खयाल गायकी का सबसे प्राचीन घराना है, जिसके प्रवर्तक नात्सू खाँ और पीरू खाँ थे। इसमें बंदिश की सरलता, शुद्ध स्वरों और 'बोल-आलाप' पर विशेष जोर दिया जाता है।

2. **किराना घराना:** उत्तर प्रदेश के शामली जिले के कैराना से संबंधित इस घराने के प्रमुख उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और अब्दुल वाहिद खाँ थे। यह घराना सुरों की सुरीली मिठास, कर्णप्रिय तानों और भावुकता के लिए प्रसिद्ध है। महान गायक पंडित भीमसेन जोशी इसी घराने से थे।

3. **आगरा घराना:** इसके संस्थापक हाजी सुजान खान थे, जिसे उस्ताद फैयाज खान ने ख्याति दिलाई। इसमें लयकारी की जटिलता और खुले गले की जोरदार आवाज का प्रभाव होता है।

4. **जयपुर-अत्रौली घराना:** उस्ताद अल्लादिया खान द्वारा स्थापित यह घराना अपनी जटिल तानों, दुर्लभ रागों के सम्मिश्रण और अनूठी गायकी शैली के लिए जाना जाता है।

5. **पटियाला घराना:** उस्ताद अली बख्श और फतेह अली खाँ द्वारा स्थापित इस घराने में तान की विविधता, भावुकता और पंजाबी लोक संगीत का प्रभाव झलकता है।

6. **बनारस घराना:** यह घराना गायन में ठुमरी, दादरा और चैती के लिए तथा वाद्य संगीत में तबला वादन के **'बनारस बाज'** के लिए विश्वविख्यात है।

इन घरानों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की विविधता को संरक्षित रखते हुए इसे वैश्विक पटल पर अमूल्य धरोहर के रूप में स्थापित किया है।

©IASHINDIMEDIUM

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रमुख 'घरानों' और उनके संस्थापकों/विशेषताओं के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. ग्वालियर घराना - यह हिंदुस्तानी खयाल गायकी का सबसे प्राचीन घराना है, जिसके प्रवर्तक नात्सू खाँ और पीरू खाँ थे।
2. किराना घराना - इस घराने के प्रसिद्ध exponents में पंडित भीमसेन जोशी शामिल हैं, और यह अपने सुरों की मिठास के लिए जाना जाता है।
3. जयपुर-अत्रौली घराना - इस घराने की स्थापना हाजी सुजान खान द्वारा की गई थी और यह आगरा क्षेत्र से संबंधित है।

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर **(अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही सुमेलित हैं। स्पष्टीकरण:** ग्वालियर घराना सबसे प्राचीन खयाल घराना है और इसकी स्थापना नात्सू खाँ तथा पीरू खाँ ने की थी (युग्म 1 सही है); किराना घराना सुरों की साधना और भावुक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है, और भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी इसी घराने के महान गायक थे (युग्म 2 सही है)। युग्म 3 **गलत सुमेलित है** क्योंकि जयपुर-अत्रौली घराने के संस्थापक **उस्ताद अल्लादिया खान** थे (न कि हाजी सुजान खान), जबकि हाजी सुजान खान 'आगरा घराना' से संबंधित थे।

प्रश्न 2: हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और उसकी विभिन्न शैलियों (ध्रुपद, ख्याल और ठुमरी) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ध्रुपद हिंदुस्तानी संगीत की सबसे प्राचीन, गंभीर और आध्यात्मिक शैली है जिसमें वीर या शांत रस की प्रधानता होती है।
2. 'ठुमरी' को अर्ध-शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में रखा जाता है जो मुख्यतः श्रृंगार रस और भाव-प्रधान प्रस्तुति पर आधारित होती है।
3. बनारस घराना केवल गायन के लिए प्रसिद्ध है, इसका तबला वादन या अन्य वाद्य परंपराओं से कोई संबंध नहीं है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर **(अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। स्पष्टीकरण:** ध्रुपद शैली अत्यंत प्राचीन और गंभीर शैली है जिसमें भक्ति और आध्यात्मिक रस की प्रधानता होती है (कथन 1 सही है); ठुमरी एक लोकप्रिय अर्ध-शास्त्रीय शैली है जो राधा-कृष्ण के प्रेम प्रसंगों और श्रृंगार रस पर आधारित होती है (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि बनारस घराना केवल गायन (विशेषकर ठुमरी, दादरा) के लिए ही नहीं, बल्कि तबला वादन के प्रसिद्ध **'बनारस बाज'** और पखावज वादन के लिए भी विश्वविख्यात है।

4. **टॉपिक: भारतीय हस्तशिल्प, पेंटिंग्स और यूनेस्को धरोहर स्थल**

भारतीय संस्कृति में हस्तशिल्प, पारंपरिक पेंटिंग्स और यूनेस्को (UNESCO) धरोहर स्थलों का अध्याय देश के गौरवशाली इतिहास, लोक-संस्कृति और कलात्मक विविधता का प्रतीक है। प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता (जैसे टेराकोटा शिल्प और मनके बनाने की तकनीक) से लेकर आधुनिक काल तक, भारतीय हस्तशिल्प ने अपनी अनूठी वैश्विक पहचान बनाई है। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश की विश्वप्रसिद्ध 'चिकनकारी' और 'जरी-जरदोजी' कार्य, वाराणसी की मलमल व ब्रोकेड सिल्क साड़ियाँ, कश्मीर की पश्मीना शॉल, और राजस्थान की बंधनी तथा ब्लू पॉटरी जैसी शैलियाँ शामिल हैं, जो स्थानीय शिल्पकारों की असाधारण निपुणता को प्रदर्शित करती हैं।

चित्रकला (पेंटिंग्स) के क्षेत्र में भारत की परंपरा अजंता, एलोरा और सित्तनवासल के शास्त्रीय भित्ति चित्रों (Murals) से प्रारंभ होकर मुगल, राजपूत, पहाड़ी और तंजावुर लघु चित्रकला शैलियों से होती हुई लोक कलाओं तक विस्तृत है। लोक चित्रकला में बिहार की 'मधुबनी

(मिथिला) पेंटिंग', ओडिशा की 'पट्टचित्र', आंध्र प्रदेश की 'कलमकारी', और महाराष्ट्र की 'वारली पेंटिंग' अपनी प्राकृतिक रंगों, विशिष्ट ज्यामितीय आकृतियों और लोक-कथाओं के सजीव चित्रण के कारण अत्यंत लोकप्रिय हैं।

इसके साथ ही, ऐतिहासिक और प्राकृतिक संरक्षण के क्षेत्र में 'यूनेस्को' (UNESCO) की विश्व धरोहर सूची का विशेष महत्व है। यूनेस्को उन विरासतों का चयन करता है जो मानवता के लिए उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य रखती हैं। भारत में सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित श्रेणियों के अंतर्गत 40 से अधिक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं। इनमें ताजमहल, अजंता-एलोरा गुफाएँ, महाबलीपुरम के रथ मंदिर, खजुराहो के मंदिर, फतेहपुर सीकरी, और हाल ही में सूची में शामिल कर्नाटक के 'होयसल के पवित्र मंदिर समूह' तथा पश्चिम बंगाल का 'शांतिनिकेतन' जैसे सांस्कृतिक स्थल, तथा काजीरंगा और सुंदरवन जैसे प्राकृतिक स्थल सम्मिलित हैं। ये धरोहरें और हस्तशिल्प कलाएँ भारत के सांस्कृतिक वैभव की जीवंत प्रतीक हैं।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: भारत की प्रमुख लोक चित्रकला (पेंटिंग्स) और उनके संबंधित राज्यों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. मधुबनी पेंटिंग - बिहार
2. पट्टचित्र - ओडिशा
3. कलमकारी - केरल
4. वारली पेंटिंग - महाराष्ट्र

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1, 2 और 4 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1, 3 और 4 (द) 1, 2, 3 और 4 सभी

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर **(अ) अर्थात केवल 1, 2 और 4 सही सुमेलित हैं। स्पष्टीकरण:** मानक सांस्कृतिक स्रोतों के अनुसार, मधुबनी पेंटिंग बिहार की (युग्म 1 सही है), पट्टचित्र ओडिशा की (युग्म 2 सही है), तथा वारली पेंटिंग महाराष्ट्र की प्रमुख लोक कला है (युग्म 4 सही है)। युग्म 3 **गलत सुमेलित है** क्योंकि 'कलमकारी' पेंटिंग का संबंध केरल से नहीं, बल्कि **आंध्र प्रदेश** से है।

प्रश्न 2: यूनेस्को (UNESCO) की विश्व धरोहर सूची और भारतीय स्थलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यूनेस्को द्वारा किसी ऐतिहासिक या प्राकृतिक स्थल को उसके 'उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य' (Outstanding Universal Value) के आधार पर विश्व धरोहर घोषित किया जाता है।
2. भारत में यूनेस्को की सूची में हाल ही में कर्नाटक के होयसल मंदिरों और पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन को भी सम्मिलित किया गया है।
3. अजंता और एलोरा की गुफाओं को भारत के शुरुआती यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों में शामिल किया गया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 सभी

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर **(द) अर्थात 1, 2 और 3 तीनों कथन सही हैं। स्पष्टीकरण:** यूनेस्को विश्व धरोहर का मुख्य आधार स्थल का वैश्विक व ऐतिहासिक महत्व होता है (कथन 1 सही है); कर्नाटक के हलेबिड, बेलूर व सोमनाथपुर के होयसल मंदिर तथा शांतिनिकेतन को हाल ही में यूनेस्को की सूची में स्थान मिला है (कथन 2 सही है); तथा 1983 में अजंता और एलोरा की गुफाओं को भारत के पहले यूनेस्को धरोहर स्थलों में शुमार किया गया था (कथन 3 सही है)।

©IASHINDIMEDIUM

5. **टॉपिक: प्राचीन व मध्यकालीन भारत के प्रसिद्ध ग्रंथ और लेखक**

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के अंतर्गत प्राचीन और मध्यकालीन भारत के ग्रंथ और उनके रचयिता भारतीय ज्ञान-परंपरा, प्रशासन, दर्शन और सामाजिक इतिहास के अमूल्य दस्तावेज हैं। UPPCS परीक्षा की दृष्टि से प्रमुख ग्रंथों और लेखकों का विवरण निम्नलिखित है:

1. प्राचीन भारत के प्रमुख ग्रंथ एवं लेखक:

- **कौटिल्य (चाणक्य):** 'अर्थशास्त्र' (मौर्यकालीन शासन-व्यवस्था, राजनीति और अर्थव्यवस्था पर आधारित सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ)।
- **कालिदास:** गुप्तकालीन महाकवि जिनकी रचनाओं में *अभिज्ञानशाकुंतलम*, *मेघदूतम्*, *कुमारसंभवम्*, *रघुवंशम्* और *ऋतुसंहार* शामिल हैं।
- **बाणभट्ट:** सम्राट हर्षवर्धन के दरबारी कवि, जिन्होंने संस्कृत गद्य में *हर्षचरित* (हर्ष की जीवनी) और *कादंबरी* की रचना की।
- **विशाखदत्त:** *मुद्राराक्षस* (जिसमें मौर्य वंश की स्थापना और चाणक्य की कूटनीति का वर्णन है)।
- **शुद्रक:** संस्कृत नाटक *मृच्छकटिकम्* (चारुदत्त और वसंतसेना की प्रेम कथा)।
- **कलहण:** राजतरंगिणी (कश्मीर का प्रथम ऐतिहासिक ग्रंथ)।
- **संगम साहित्य:** तोलकाप्पियार द्वारा रचित व्याकरण ग्रंथ *तोलकाप्पियम* और इलांगो अडिगल द्वारा रचित महाकाव्य *शिलप्पदिकारम*।

2. मध्यकालीन भारत के प्रमुख ग्रंथ एवं लेखक:

- **अल-बिरूनी:** महमूद गजनबी के साथ भारत आने वाले विद्वान की अरबी कृति *किताब-उल-हिंद* (तहकीक-ए-हिंद)।
- **मिनहाज-उस्-सिराज:** *तबाकात-ए-नासिरी* (सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद को समर्पित दिल्ली सल्तनत का इतिहास)।
- **जहाँगीर:** अपनी आत्मकथा *तुजुक-ए-जहाँगीरी* (फारसी भाषा में)।
- **अबुल फजल:** अकबर के नवरत्नों में शामिल, जिन्होंने *अकबरनामा* और *आइन-ए-अकबरी* की रचना की।
- **बदायूंनी:** *मुंतखाब-उत्-तवारीख* (धार्मिक और राजनीतिक इतिहास)।
- **अमीर खुसरो:** 'भारत का तोता' कहे जाने वाले कवि, जिनकी प्रसिद्ध कृतियाँ *खज़ाइन-उल-फुतूह* और *नूह सिपहर* हैं।
- **मलिक मोहम्मद जायसी:** सूफी संत जिन्होंने अवधी भाषा में महाकाव्य *पद्मावत* (1540) लिखा।
- **तुलसीदास:** अवधी में रचित महाकाव्य *रामचरितमानस* और *विनयपत्रिका*।

इन ग्रंथों से तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन की प्रामाणिक जानकारी मिलती है, जो प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

अतिसंभावित प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्रश्न 1: प्राचीन भारतीय ग्रंथों और उनके लेखकों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. मुद्राराक्षस - विशाखदत्त
2. मृच्छकटिकम् - शुद्रक
3. राजतरंगिणी - बाणभट्ट

©IASHINDIMEDIUM

4. हर्षचरित - कालिदास

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 4 (द) 1, 2, 3 और 4 सभी

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर **(अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही सुमेलित हैं। स्पष्टीकरण:** मानक ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, 'मुद्राराक्षस' नाटक के रचयिता विशाखदत्त हैं (युग्म 1 सही है); 'मृच्छकटिकम्' की रचना शुद्रक ने की थी (युग्म 2 सही है)। युग्म 3 **गलत सुमेलित है** क्योंकि 'राजतरंगिणी' की रचना कलहण द्वारा की गई थी (बाणभट्ट द्वारा नहीं); तथा युग्म 4 भी **गलत सुमेलित है** क्योंकि 'हर्षचरित' के लेखक बाणभट्ट हैं, जबकि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुंतलम और मेघदूतम् की रचना की थी।

प्रश्न 2: मध्यकालीन भारतीय इतिहास के प्रमुख ग्रंथों और उनके लेखकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'किताब-उल-हिंद' (तहकीक-ए-हिंद) की रचना अरबी भाषा में अल-बिरूनी द्वारा की गई थी।
2. 'अकबरनामा' और 'आइन-ए-अकबरी' के लेखक अबुल फजल थे।
3. 'हुमायूंनामा' की रचना मुग़ल बादशाह हुमायूं द्वारा स्वयं तुर्की भाषा में की गई थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3 (स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3

व्याख्यात्मक उत्तर: सही उत्तर **(अ) अर्थात केवल 1 और 2 सही हैं। स्पष्टीकरण:** महमूद गजनबी के साथ भारत आए विद्वान अल-बिरूनी ने अरबी भाषा में 'किताब-उल-हिंद' लिखी थी (कथन 1 सही है); अकबर के शासनकाल का विस्तृत वर्णन करने वाले ग्रंथ 'अकबरनामा' के रचनाकार अबुल फजल थे (कथन 2 सही है)। कथन 3 **असत्य** है क्योंकि 'हुमायूंनामा' की रचना हुमायूं ने नहीं, बल्कि उनकी बहन **गुलबदन बेगम** द्वारा फारसी भाषा में की गई थी।

भारतीय राज्यव्यवस्था

संविधान का विकास व प्रस्तावना

1. **भारत का संवैधानिक विकास: प्रमुख ब्रिटिश अधिनियम (1773–1935)**

ब्रिटिश शासनकाल में पारित अधिनियमों ने स्वतंत्र भारत के संवैधानिक ढांचे, विधायी प्रक्रियाओं और प्रशासनिक स्वरूप की आधारशिला रखी। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के दृष्टिकोण से प्रमुख अधिनियम एवं उनके प्रमुख तथ्य निम्नलिखित हैं:

रेग्युलेटिंग एक्ट, 1773:

बंगाल के गवर्नर को **'बंगाल का गवर्नर-जनरल'** पदनाम दिया गया (प्रथम: वॉरेन हेस्टिंग्स)।

सहायता हेतु 4 सदस्यीय कार्यकारी परिषद गठित हुई।

1774 में कलकत्ता (फोर्ट विलियम) में एक **सर्वोच्च न्यायालय** की स्थापना हुई, जिसके प्रथम मुख्य न्यायाधीश **सर एलिजा इम्पे** थे।

कंपनी के कर्मचारियों के निजी व्यापार और भारतीयों से उपहार लेने पर प्रतिबंध लगाया गया।

पिट्स इंडिया एक्ट, 1784:

कंपनी के वाणिज्यिक और राजनीतिक कार्यों को पृथक कर **द्वैध शासन (Double Government)** का आरंभ हुआ।

©IASHINDIMEDIUM

व्यापारिक मामलों के लिए 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' और राजनीतिक मामलों के नियंत्रण हेतु 6 सदस्यीय **'बोर्ड ऑफ कंट्रोल'** की स्थापना हुई।

चार्टर अधिनियम, 1813:

कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया गया; केवल **चाय और चीन के साथ व्यापार** पर एकाधिकार 20 वर्षों के लिए बना रहा।

भारत में शिक्षा के प्रसार हेतु प्रतिवर्ष ₹1 लाख के व्यय का प्रावधान तथा ईसाई मिशनरियों को धर्म प्रचार की अनुमति मिली।

चार्टर अधिनियम, 1833:

बंगाल का गवर्नर-जनरल अब **'भारत का गवर्नर-जनरल'** बन गया (प्रथम: लॉर्ड विलियम बेंटिंक)।

कंपनी के सभी व्यापारिक अधिकार पूरी तरह समाप्त कर इसे विशुद्ध प्रशासनिक निकाय बनाया गया।

गवर्नर-जनरल की परिषद में कानूनी सदस्य के रूप में चौथे सदस्य (लॉर्ड मैकाले) को शामिल किया गया और विधि आयोग गठित हुआ।

चार्टर अधिनियम, 1853:

गवर्नर-जनरल की परिषद के विधायी एवं प्रशासनिक कार्यों को अलग किया गया तथा 6 सदस्यीय **केंद्रीय विधान परिषद** (लघु संसद) की नींव पड़ी।

सिविल सेवकों की भर्ती हेतु खुली प्रतियोगिता प्रणाली का आरंभ हुआ (1854 में मैकाले समिति)।

भारत सरकार अधिनियम, 1858:

शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को हस्तांतरित हुआ।

'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' और 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' समाप्त कर द्वैध शासन का अंत हुआ।

नया पद **'भारत सचिव'** (15 सदस्यीय परिषद सहित) बना तथा गवर्नर-जनरल को **'वायसराय'** (प्रथम: लॉर्ड कैनिंग) कहा जाने लगा।

भारतीय परिषद अधिनियम, 1861:

कानून बनाने में भारतीयों को शामिल करने की शुरुआत (1862 में कैनिंग द्वारा बनारस के राजा, पटियाला के महाराजा और सर दिनकर राव मनोनीत)।

बंबई और मद्रास प्रेसीडेंसी को विधायी शक्तियां पुनः देकर **विकेंद्रीकरण** प्रारंभ।

पोर्टफोलियो (विभागीय) प्रणाली को मान्यता तथा आपातकाल में वायसराय को 6 माह की वैधता वाला **अध्यादेश** जारी करने की शक्ति मिली।

मार्ले-मिंटो सुधार (1909):

मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल (सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व) का सूत्रपात; लॉर्ड मिंटो को "सांप्रदायिक निर्वाचन का जनक" कहा गया।

सत्येंद्र प्रसाद सिन्हा वायसराय की कार्यपालिका परिषद में शामिल होने वाले प्रथम भारतीय (विधि सदस्य) बने।

©IASHINDIMEDIUM

मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919):

प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली (Dyarchy) लागू हुई (विषय: आरक्षित और हस्तांतरित)।

केंद्र में **द्विसदनीय विधायिका** (राज्य परिषद और केंद्रीय विधानसभा) तथा प्रत्यक्ष निर्वाचन की शुरुआत।

लोक सेवा आयोग (1926 में ली आयोग की सिफारिश पर) का गठन हुआ।

भारत सरकार अधिनियम, 1935:

अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रावधान (जो अस्तित्व में नहीं आ सका)।

प्रांतों से द्वैध शासन समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्तता लागू की गई, जबकि **केंद्र में द्वैध शासन** का प्रावधान किया गया।

शक्तियों का विभाजन तीन सूचियों (संघीय, प्रांतीय, समवर्ती) में हुआ; अवशिष्ट शक्तियां वायसराय में निहित थीं।

1937 में **संघीय न्यायालय (Federal Court)** और भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की स्थापना की नींव रखी गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. ब्रिटिश कालीन भारत में संवैधानिक विकास के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1833 का चार्टर अधिनियम — भारत में कंपनी के चाय और चीन के साथ व्यापारिक एकाधिकार की पूर्ण समाप्ति

1861 का भारतीय परिषद अधिनियम — वायसराय को आपातकाल में अध्यादेश जारी करने का अधिकार

1919 का भारत सरकार अधिनियम — केंद्र में द्वैध शासन प्रणाली का प्रारंभ

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a) केवल 1 और 2

विस्तृत व्याख्या:

युग्म 1 सही है: 1813 के चार्टर एक्ट द्वारा कंपनी का सामान्य व्यापारिक एकाधिकार समाप्त हुआ था, लेकिन चाय और चीन के साथ व्यापार बना रहा। 1833 के चार्टर एक्ट द्वारा चाय और चीन के व्यापारिक एकाधिकार को भी समाप्त कर कंपनी को विशुद्ध प्रशासनिक निकाय बना दिया गया।

युग्म 2 सही है: 1861 के अधिनियम के तहत वायसराय को आपातकाल में बिना विधान परिषद की सहमति के 6 माह की अवधि के लिए अध्यादेश जारी करने की शक्ति प्रदान की गई थी।

युग्म 3 असत्य है: 1919 के भारत सरकार अधिनियम (मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार) द्वारा **प्रांतों में** द्वैध शासन प्रणाली (Dyarchy) लागू की गई थी तथा केंद्र में द्विसदनीय व्यवस्था लाई गई थी। **केंद्र में द्वैध शासन** का प्रावधान 1935 के भारत सरकार अधिनियम द्वारा किया गया था।

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 2. भारत सरकार अधिनियम, 1935 के प्रमुख प्रावधानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

इस अधिनियम द्वारा प्रांतों में द्वैध शासन को समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्तता का शुभारंभ किया गया।

अधिनियम के तहत अवशिष्ट विधायी शक्तियां प्रांतीय विधानमंडलों को सौंपी गई थीं।

इसके अंतर्गत 1937 में दिल्ली में एक संघीय न्यायालय (Federal Court) की स्थापना की गई।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1

(b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b) केवल 1 और 3

विस्तृत व्याख्या:

कथन 1 सत्य है: 1935 के अधिनियम की सबसे प्रमुख विशेषता प्रांतों में 1919 से चले आ रहे द्वैध शासन को समाप्त करना और 'प्रांतीय स्वायत्तता' (Provincial Autonomy) की शुरुआत करना था।

कथन 2 असत्य है: 1935 के अधिनियम में शक्तियों का त्रिस्तरीय विभाजन (संघीय, प्रांतीय, समवर्ती सूची) किया गया था, लेकिन अवशिष्ट विधायी शक्तियां (Residuary Powers) प्रांतीय विधानमंडलों को नहीं, बल्कि **गवर्नर-जनरल (वायसराय)** को सौंपी गई थीं (UPPCS में यह तथ्य बार-बार पूछा गया है)।

कथन 3 सत्य है: इस अधिनियम के प्रावधानों के तहत 1 अक्टूबर 1937 को दिल्ली में संघीय न्यायालय (Federal Court) की स्थापना हुई थी, जिसके प्रथम मुख्य न्यायाधीश सर मॉरिस ग्वेयर (Sir Maurice Gwyer) थे।

HINDI MEDIUM

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 (Indian Independence Act, 1947)

ब्रिटिश संसद द्वारा पारित 'भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947' भारत के संवैधानिक और राजनीतिक इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस अधिनियम ने भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त कर सत्ता का वास्तविक हस्तांतरण सुनिश्चित किया। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के दृष्टिकोण से इसके प्रमुख तथ्य एवं प्रावधान निम्नलिखित हैं:

पृष्ठभूमि एवं अधिनियमन की तिथियाँ (UPPCS हेतु अतिमहत्वपूर्ण):

माउंटबेटन योजना: ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली की 20 फरवरी 1947 की घोषणा के बाद, लॉर्ड माउंटबेटन ने **3 जून 1947** को भारत के विभाजन की योजना प्रस्तुत की, जिसे '3 जून योजना' या 'माउंटबेटन योजना' कहा जाता है।

संसदीय प्रक्रिया: यह विधेयक ब्रिटिश संसद के हाउस ऑफ कॉमन्स में **4 जुलाई 1947** को प्रस्तुत किया गया तथा दोनों सदनों से पारित होने के बाद इसे **18 जुलाई 1947** को ब्रिटिश सम्राट की शाही स्वीकृति (Royal Assent) प्राप्त हुई।

यह अधिनियम **15 अगस्त 1947** से प्रभावी हुआ।

प्रमुख कानूनी एवं संवैधानिक प्रावधान:

दो स्वतंत्र अधिराज्यों (Dominions) की स्थापना: 15 अगस्त 1947 से भारत और पाकिस्तान नाम से दो संप्रभु और स्वतंत्र डोमिनियन स्थापित किए गए, जिन्हें ब्रिटिश राष्ट्रमंडल (Commonwealth) से अलग होने का पूर्ण अधिकार दिया गया।

संविधान सभाओं को पूर्ण संप्रभुता: दोनों डोमिनियनों की संविधान सभाओं को अपने-अपने देशों के लिए संविधान बनाने तथा ब्रिटिश संसद के किसी भी कानून (यहाँ तक कि स्वयं 1947 के स्वतंत्रता अधिनियम) को निरस्त या संशोधित करने की शक्ति दी गई।

दोहरी भूमिका: जब तक नया संविधान लागू नहीं हो जाता, तब तक संविधान सभाओं को अपने क्षेत्रों के लिए केंद्रीय विधायिका के रूप में कानून बनाने की शक्ति प्राप्त थी।

ब्रिटिश नियंत्रण की समाप्ति: भारत में ब्रिटिश क्राउन का शासन समाप्त हो गया। **'भारत सचिव' (Secretary of State for India)** का पद समाप्त कर उसके कार्य 'राष्ट्रमंडल मामलों के राज्य सचिव' को स्थानांतरित कर दिए गए।

देसी रियासतों पर संप्रभुता का अंत: भारतीय रियासतों पर से ब्रिटिश संप्रभुता (Paramountcy) समाप्त कर दी गई तथा उन्हें भारत या पाकिस्तान किसी भी डोमिनियन में शामिल होने अथवा स्वतंत्र रहने का विकल्प दिया गया।

अंतरिम शासन व्यवस्था: नए संविधान के निर्माण तक दोनों अधिराज्यों का शासन **भारत सरकार अधिनियम, 1935** के अनुसार संचालित किए जाने का प्रावधान किया गया, जिसमें दोनों अधिराज्यों के गवर्नर-जनरल आवश्यकतानुसार संशोधन करने के लिए अधिकृत थे।

गवर्नर-जनरल की स्थिति: ब्रिटेन के सम्राट द्वारा दोनों डोमिनियनों में गवर्नर-जनरल नियुक्त किए जाने की व्यवस्था हुई। गवर्नर-जनरल तथा प्रांतीय गवर्नरों को राज्यों का संवैधानिक (नामात्र) प्रमुख बनाया गया, जिन्हें अपने संबंधित मंत्रिमंडल की सलाह पर कार्य करना अनिवार्य था। गवर्नर-जनरल के विधेयकों को वीटो करने के अधिकार को समाप्त कर दिया गया।

उपाधि में बदलाव: इंग्लैंड के राजा की उपाधियों से **'भारत का सम्राट' (Emperor of India)** शब्द हटा दिया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

ब्रिटिश संसद में यह विधेयक 4 जुलाई 1947 को पेश किया गया तथा इसे 18 जुलाई 1947 को शाही स्वीकृति प्राप्त हुई।

इस अधिनियम द्वारा 'भारत सचिव' (Secretary of State for India) के पद को समाप्त कर दिया गया।

नए संविधान के निर्माण तक दोनों डोमिनियनों की शासन व्यवस्था का संचालन 'भारत सरकार अधिनियम, 1919' के मूल प्रावधानों के तहत किया जाना तय हुआ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a) केवल 1 और 2

©IASHINDIMEDIUM

विस्तृत व्याख्या:

कथन 1 सही है: ब्रिटिश संसद (हाउस ऑफ कॉमन्स) में भारतीय स्वतंत्रता विधेयक 4 जुलाई 1947 को प्रस्तुत किया गया था तथा 18 जुलाई 1947 को इसे ब्रिटिश सम्राट की शाही स्वीकृति (Royal Assent) मिली थी। UPPCS में तिथियों पर आधारित प्रश्न प्रायः पूछे जाते हैं।

कथन 2 सही है: 1858 के अधिनियम द्वारा सृजित 'भारत सचिव' (Secretary of State for India) का पद इस अधिनियम द्वारा समाप्त कर दिया गया और उसके कार्यभार राष्ट्रमंडल मामलों के सचिव को सौंप दिए गए।

कथन 3 असत्य है: अंतरिम काल (जब तक कि नया संविधान बनकर लागू न हो जाए) में दोनों डोमिनियनों का शासन **भारत सरकार अधिनियम, 1935** (न कि 1919) के प्रावधानों के अनुसार ही कुछ आवश्यक संशोधनों के साथ संचालित किया जाना निर्धारित किया गया था।

प्रश्न 2. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के तहत स्थापित संवैधानिक प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) इसने भारत और पाकिस्तान दोनों डोमिनियनों की संविधान सभाओं को ब्रिटिश संसद द्वारा बनाए गए किसी भी कानून को निरस्त करने की संप्रभु शक्ति प्रदान की।

(b) गवर्नर-जनरल को विधेयकों पर अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग करने का पूर्ण विशेषाधिकार पूर्ववत बनाए रखा गया।

(c) भारतीय रियासतों पर से ब्रिटिश संप्रभुता (Paramountcy) को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया।

(d) ब्रिटिश सम्राट की उपाधि सूची से 'भारत का सम्राट' (Emperor of India) शब्द हटा दिया गया।

उत्तर: (b) गवर्नर-जनरल को विधेयकों पर अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग करने का पूर्ण विशेषाधिकार पूर्ववत बनाए रखा गया।

विस्तृत व्याख्या:

विकल्प (b) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है): 1947 के अधिनियम द्वारा गवर्नर-जनरल और प्रांतीय गवर्नरों के विधेयकों पर वीटो करने या उन्हें अपने विवेकाधिकार से आरक्षित करने के अधिकार समाप्त कर दिए गए। गवर्नर-जनरल अब केवल संवैधानिक प्रमुख (Constitutional Head) रह गए थे, जिन्हें अपने संबंधित मंत्रिपरिषद् की सलाह पर ही कार्य करना अनिवार्य था। हालांकि, गवर्नर-जनरल को अपने डोमिनियन के विधानमंडल द्वारा पारित किसी विधेयक को अपने नाम से स्वीकृति देने का अधिकार ब्रिटिश सम्राट के नाम पर अवश्य था।

अन्य विकल्प (a, c, d) पूर्णतः सत्य हैं: संविधान सभाएं पूरी तरह संप्रभु बन गईं, रियासतों से ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त हो गई तथा क्राउन की आधिकारिक उपाधियों से 'भारत का सम्राट' शब्द विलोपित कर दिया गया।

3. **संविधान सभा का गठन एवं प्रमुख समितियाँ**

भारतीय संविधान के निर्माण हेतु संविधान सभा की रूपरेखा कैबिनेट मिशन योजना (1946) के तहत तैयार की गई थी। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के दृष्टिकोण से इसके प्रमुख तथ्य, घटनाक्रम और समितियाँ निम्नलिखित हैं:

संविधान सभा का गठन एवं संरचना:

मांग की पृष्ठभूमि: औपचारिक रूप से संविधान सभा के गठन का विचार सर्वप्रथम **एम. एन. रॉय (1934)** ने दिया, जिसे 1935 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने आधिकारिक रूप से स्वीकार किया।

कैबिनेट मिशन (1946): इसके सदस्य पैथिक लॉरेंस (अध्यक्ष), स्टेफोर्ड क्रिप्स और ए. वी. अलेक्जेंडर थे।

कुल सदस्य संख्या (389): 296 ब्रिटिश भारत से (292 प्रांतों से + 4 मुख्य आयुक्त प्रांतों: दिल्ली, अजमेर-मेरवाड़ा, कुर्ग एवं ब्रिटिश बलूचिस्तान से) तथा 93 सदस्य देसी रियासतों से।

चुनाव प्रक्रिया: जुलाई-अगस्त 1946 में चुनाव हुए। सीटें **प्रति 10 लाख की जनसंख्या** पर आवंटित की गईं। प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा अप्रत्यक्ष चुनाव हुआ। इसमें सामान्य, मुस्लिम और सिख वर्गों के आधार पर सीटें विभाजित थीं। यह सभा **आंशिक रूप से निर्वाचित और आंशिक रूप से नामांकित** थी।

परिणाम: कांग्रेस को 208, मुस्लिम लीग को 73 तथा स्वतंत्र/छोटे दलों को 15 सीटें मिलीं। संविधान सभा में कुल **15 महिला सदस्य** शामिल थीं।

महत्वपूर्ण बैठकें एवं तिथियाँ:

प्रथम बैठक: 9 दिसंबर 1946 (अस्थायी अध्यक्ष: **डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा**, फ्रांसीसी परंपरा अनुसार वरिष्ठतम सदस्य)।

स्थायी अध्यक्ष: 11 दिसंबर 1946 को **डॉ. राजेंद्र प्रसाद** अध्यक्ष तथा **एच. सी. मुखर्जी** एवं **वी. टी. कृष्णामाचारी** उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। **सर बी. एन. राव** को संवैधानिक सलाहकार नियुक्त किया गया।

उद्देश्य प्रस्ताव: 13 दिसंबर 1946 को **पंडित जवाहरलाल नेहरू** द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसे सर्वसम्मति से **22 जनवरी 1947** को स्वीकार किया गया (यही आगे चलकर संविधान की प्रस्तावना बना)।

समय एवं स्वीकृति: संविधान निर्माण में **2 वर्ष, 11 माह और 18 दिन** लगे (कुल 11 औपचारिक सत्र)। इसे **26 नवंबर 1949** को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किया गया (जिस पर 284 सदस्यों ने हस्ताक्षर किए)।

संविधान सभा की प्रमुख समितियाँ एवं उनके अध्यक्ष:

प्रारूप समिति (Drafting Committee): गठन 29 अगस्त 1947; अध्यक्ष: **डॉ. बी. आर. अम्बेडकर**। इसमें कुल 7 सदस्य थे (अम्बेडकर, एन. गोपालस्वामी अय्यंगार, अल्लादि कृष्णास्वामी अय्यर, डॉ. के. एम. मुंशी, सैयद मोहम्मद सादुल्लाह, बी. एल. मित्तर के त्यागपत्र पर एन. माधव राव, तथा डी. पी. खेतान की मृत्यु पर टी. टी. कृष्णामचारी)।

संघ शक्ति समिति एवं **संघीय संविधान समिति:** पंडित जवाहरलाल नेहरू।

प्रांतीय संविधान समिति: सरदार वल्लभभाई पटेल।

मूल अधिकार, अल्पसंख्यक एवं जनजातीय सलाहकार समिति: सरदार वल्लभभाई पटेल (मूल अधिकार उप-समिति: **जे. बी. कृपलानी**; अल्पसंख्यक उप-समिति: **एच. सी. मुखर्जी**)।

प्रक्रिया नियम समिति एवं **संचालन समिति:** डॉ. राजेंद्र प्रसाद।

तदर्थ राष्ट्रीय ध्वज समिति: डॉ. राजेंद्र प्रसाद (22 जुलाई 1947 को ध्वज अंगीकृत हुआ)।

कार्य संचालन समिति: डॉ. के. एम. मुंशी।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. संविधान सभा के गठन और उसकी कार्यप्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

संविधान सभा के सदस्यों का निर्वाचन सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से हुआ था।

©IASHINDIMEDIUM

संविधान सभा की प्रथम बैठक में डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को अस्थायी अध्यक्ष चुना गया था।

पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत 'उद्देश्य प्रस्ताव' को संविधान सभा द्वारा 22 जनवरी 1947 को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b) केवल 2 और 3

विस्तृत व्याख्या:

कथन 1 असत्य है: संविधान सभा के सदस्यों का चुनाव सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नहीं हुआ था। 1935 के भारत सरकार अधिनियम के तहत सीमित मताधिकार के आधार पर गठित प्रांतीय विधान सभाओं के सदस्यों द्वारा एकल संक्रमणीय मत पद्धति (आनुपातिक प्रतिनिधित्व) से इनका अप्रत्यक्ष निर्वाचन हुआ था। देसी रियासतों के प्रतिनिधि उनके शासकों द्वारा मनोनीत किए गए थे।

कथन 2 सही है: 9 दिसंबर 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक हुई, जिसमें फ्रांसीसी परंपरा का पालन करते हुए सबसे वरिष्ठ सदस्य डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को सभा का अस्थायी अध्यक्ष बनाया गया।

कथन 3 सही है: 13 दिसंबर 1946 को जवाहरलाल नेहरू ने ऐतिहासिक 'उद्देश्य प्रस्ताव' (Objectives Resolution) पेश किया, जिसे 22 जनवरी 1947 को संविधान सभा ने सर्वसम्मति से पारित किया।

प्रश्न 2. संविधान सभा की प्रमुख समितियों और उनके अध्यक्षों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

(a) प्रांतीय संविधान समिति — सरदार वल्लभभाई पटेल

(b) मूल अधिकार उप-समिति — जे. बी. कृपलानी

(c) संचालन समिति — पंडित जवाहरलाल नेहरू

(d) प्रारूप समिति — डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

उत्तर: (c) संचालन समिति — पंडित जवाहरलाल नेहरू

विस्तृत व्याख्या:

विकल्प (c) सही सुमेलित नहीं है (अतः सही उत्तर है): 'संचालन समिति' (Steering Committee) तथा 'प्रक्रिया नियम समिति' के अध्यक्ष **डॉ. राजेंद्र प्रसाद** थे, न कि पंडित जवाहरलाल नेहरू। पंडित नेहरू संघ शक्ति समिति (Union Powers Committee) तथा संघीय संविधान समिति (Union Constitution Committee) के अध्यक्ष थे।

अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं: प्रांतीय संविधान समिति के अध्यक्ष सरदार पटेल थे, मूल अधिकार उप-समिति के अध्यक्ष जे. बी. कृपलानी थे और 29 अगस्त 1947 को गठित प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. बी. आर. अम्बेडकर थे।

©IASHINDIMEDIUM

मौलिक अधिकार , DPSP व कर्तव्य

टॉपिक- 9: मौलिक अधिकारों का परिचय एवं विशेषताएँ

भारतीय संविधान के **भाग-3** में **अनुच्छेद 12 से 35** तक मूल अधिकारों (Fundamental Rights) का विस्तृत उल्लेख है। इसे **'भारत का मैग्नाकार्टा'** कहा जाता है। यह प्रावधान संयुक्त राज्य अमेरिका के 'बिल ऑफ राइट्स' से प्रेरित है।

- **मूल संरचना एवं वर्गीकरण:**
    - मूल संविधान में 7 मौलिक अधिकार थे, परंतु **44वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1978** द्वारा संपत्ति के अधिकार (अनुच्छेद 31 एवं 19(1)(f)) को मूल अधिकारों की सूची से हटाकर **अनुच्छेद 300A** के तहत विधिक/कानूनी अधिकार बना दिया गया। वर्तमान में 6 मौलिक अधिकार हैं:
        1. समता का अधिकार (अनुच्छेद 14–18)
        2. स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19–22)

©IASHINDIMEDIUM

3. शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23–24)
4. धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25–28)
5. संस्कृति एवं शिक्षा संबंधी अधिकार (अनुच्छेद 29–30)
6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद 32)

- **मौलिक अधिकारों की प्रमुख विशेषताएँ:**
    - **न्यायोचित (Justiciable):** ये सीधे न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय हैं। इनके उल्लंघन पर नागरिक सीधे उच्चतम न्यायालय (अनुच्छेद 32) या उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 226) जा सकते हैं।
    - **असीमित नहीं बल्कि सीमित:** ये निरपेक्ष (Absolute) नहीं हैं; राज्य इन पर युक्तियुक्त निर्बंधन (Reasonable Restrictions) आरोपित कर सकता है।
    - **राज्य के विरुद्ध गारंटी:** अधिकांश अधिकार राज्य की मनमानी कार्रवाई के विरुद्ध उपलब्ध हैं, जबकि कुछ अधिकार (अनुच्छेद 15(2), 17, 23, 24) निजी व्यक्तियों के विरुद्ध भी प्राप्त हैं।
    - **नागरिक बनाम विदेशी:**
        - **केवल भारतीय नागरिकों को प्राप्त अधिकार:** अनुच्छेद 15, 16, 19, 29 और 30।
        - **नागरिकों एवं विदेशियों (शत्रु देश के नागरिकों को छोड़कर) दोनों को प्राप्त अधिकार:** अनुच्छेद 14, 20, 21, 21A, 22, 23, 24, 25, 26, 27 और 28।
    - **निलंबन की स्थिति:** राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352) के दौरान राष्ट्रपति के आदेश द्वारा मूल अधिकारों को स्थगित किया जा सकता है, किंतु **44वें संविधान संशोधन, 1978** के तहत यह स्पष्ट किया गया कि **अनुच्छेद 20 (दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण) और अनुच्छेद 21 (प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता) को आपातकाल में भी निलंबित नहीं किया जा सकता**। अनुच्छेद 19 केवल युद्ध या बाह्य आक्रमण के आधार पर घोषित आपातकाल में ही स्वतः निलंबित (अनुच्छेद 358) होता है, सशस्त्र विद्रोह के आधार पर नहीं।
    - **संसदीय संशोधन की सीमा:** संसद अनुच्छेद 368 के तहत संशोधन कर सकती है, किंतु वह संविधान के 'मूल ढाँचे' (Basic Structure - केशवानंद भारती वाद, 1973) को समाप्त नहीं कर सकती।
- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
    - **डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन (DPDP) नियमों का क्रियान्वयन व अनुच्छेद 21:** सर्वोच्च न्यायालय के *के.एस. पुट्टास्वामी वाद (2017)* में निजता के अधिकार को अनुच्छेद 21 का अभिन्न अंग घोषित किए जाने के आलोक में केंद्र सरकार द्वारा DPDP अधिनियम के तहत नियम अधिसूचित किए गए हैं।
    - **जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध अधिकार (Right against Adverse Effects of Climate Change):** सर्वोच्च न्यायालय ने *एम.के. रंजीतसिंह बनाम भारत संघ वाद* में एक ऐतिहासिक निर्णय देते हुए स्वच्छ पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से मुक्त रहने के अधिकार को **अनुच्छेद 14 (समानता) और अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार)** के तहत एक अंतर्निहित मौलिक अधिकार माना है।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों की विशेषताओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

©IASHINDIMEDIUM

1. संविधान के अनुच्छेद 15, 16, 19, 29 और 30 में उल्लिखित मूल अधिकार केवल भारतीय नागरिकों को प्राप्त हैं, विदेशियों को नहीं।

2. 44वें संविधान संशोधन अधिनियम के अनुसार, राष्ट्रीय आपातकाल की स्थिति में भी अनुच्छेद 20 और अनुच्छेद 21 के अंतर्गत प्रदत्त मूल अधिकारों को निलंबित नहीं किया जा सकता।

3. भारत में सभी मूल अधिकार असीमित (Absolute) हैं तथा राज्य उन पर किसी भी प्रकार का युक्तियुक्त प्रतिबंध नहीं लगा सकता।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

- **उत्तर:** (a) केवल 1 और 2
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 सही है:** भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15 (धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध), 16 (लोक नियोजन में अवसर की समता), 19 (वाक्-स्वतंत्रता आदि), 29 (अल्पसंख्यकों की भाषा, लिपि व संस्कृति का संरक्षण) और 30 (शिक्षा संस्थाओं की स्थापना का अल्पसंख्यकों का अधिकार) केवल भारतीय नागरिकों को प्राप्त हैं।
    - **कथन 2 सही है:** 44वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1978 द्वारा यह प्रावधान किया गया कि राष्ट्रपति द्वारा आपातकाल के समय अनुच्छेद 359 के तहत मूल अधिकारों के प्रवर्तन को निलंबित करने के आदेश में भी अनुच्छेद 20 और अनुच्छेद 21 को शामिल नहीं किया जा सकता।
    - **कथन 3 असत्य है:** मौलिक अधिकार निरपेक्ष या असीमित (Absolute) नहीं हैं। सामाजिक हित, राज्य की संप्रभुता, सार्वजनिक व्यवस्था और नैतिकता के आधार पर राज्य इन पर युक्तियुक्त निर्बंधन (Reasonable Restrictions) लगा सकता है।

प्रश्न 2. मौलिक अधिकारों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) 44वें संविधान संशोधन, 1978 द्वारा संपत्ति के मूल अधिकार को भाग-3 से हटाकर अनुच्छेद 300A के अंतर्गत विधिक अधिकार बना दिया गया।

(b) अस्पृश्यता का अंत (अनुच्छेद 17) तथा मानव दुर्व्यापार का प्रतिषेध (अनुच्छेद 23) राज्य के साथ-साथ निजी व्यक्तियों के विरुद्ध भी उपलब्ध हैं।

(c) सशस्त्र विद्रोह के आधार पर राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352) घोषित होने पर अनुच्छेद 19 के अंतर्गत प्राप्त 6 स्वतंत्रताएँ स्वतः निलंबित हो जाती हैं।

(d) सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के विरुद्ध अधिकार को अनुच्छेद 14 एवं 21 के अंतर्गत मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी है।

©IASHINDIMEDIUM

- **उत्तर:** (c) सशस्त्र विद्रोह के आधार पर राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352) घोषित होने पर अनुच्छेद 19 के अंतर्गत प्राप्त 6 स्वतंत्रताएँ स्वतः निलंबित हो जाती हैं।
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** अनुच्छेद 358 के अनुसार, अनुच्छेद 19 के अंतर्गत मूल अधिकार केवल तभी स्वतः निलंबित होते हैं जब राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा **'युद्ध' या 'बाह्य आक्रमण'** (External Aggression) के आधार पर की गई हो। यदि आपातकाल **'सशस्त्र विद्रोह'** (Armed Rebellion) के आधार पर लगाया गया है, तो अनुच्छेद 19 स्वतः निलंबित नहीं होता (44वें संविधान संशोधन 1978 द्वारा यह सुरक्षा उपाय जोड़ा गया था)।
    - **अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं:** संपत्ति का अधिकार अब मात्र विधिक अधिकार है; अनुच्छेद 17 व 23 निजी व्यक्तियों के आचरण पर भी रोक लगाते हैं; और सर्वोच्च न्यायालय ने स्वच्छ पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से सुरक्षा को अनुच्छेद 21 व 14 से संबद्ध मौलिक अधिकार स्वीकार किया है।

टॉपिक- 10: समता का अधिकार (Right to Equality: अनुच्छेद 14–18)

भारतीय संविधान के भाग-3 में **अनुच्छेद 14 से 18** तक समता के अधिकार का विस्तृत उपबंध है। यह भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक एवं कानूनी समरसता की आधारशिला है।

- **अनुच्छेद 14 (विधि के समक्ष समता एवं विधियों का समान संरक्षण):**
    - **विधि के समक्ष समता:** ब्रिटिश परंपरा (ए.वी. डायसी का 'विधि का शासन') से प्रेरित यह एक नकारात्मक अवधारणा है, जिसका अर्थ है कि किसी व्यक्ति के पक्ष में कोई विशेषाधिकार नहीं होगा।
    - **विधियों का समान संरक्षण:** अमेरिकी संविधान से प्रेरित यह सकारात्मक अवधारणा है, जिसका तात्पर्य है कि समान परिस्थितियों में व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार किया जाएगा (समान के साथ समानता)।
    - **अपवाद:** राष्ट्रपति एवं राज्यपालों को प्राप्त उन्मुक्तियाँ (अनुच्छेद 361) तथा विदेशी राजनयिक।
- **अनुच्छेद 15 (धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध):**
    - केवल नागरिकों को प्राप्त (अनुच्छेद 15(1) व 15(2))।
    - **अपवाद:**
        - 15(3): महिलाओं व बच्चों हेतु विशेष प्रावधान।
        - 15(4): प्रथम संशोधन 1951 द्वारा सामाजिक व शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों (SEBC), SC/ST हेतु विशेष प्रावधान (चंपाकम दोराईराजन वाद)।
        - 15(5): 93वें संशोधन 2005 द्वारा उच्च शिक्षण संस्थानों (निजी सहित) में आरक्षण।
        - 15(6): 103वें संशोधन 2019 द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के लिए शिक्षण संस्थानों में अधिकतम 10% आरक्षण।
- **अनुच्छेद 16 (लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता):**

- राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन में धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, उद्भव, जन्मस्थान या निवास के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा।
- **अपवाद:** 16(3) संसद द्वारा निवास की शर्त (आंध्र प्रदेश व तेलंगाना); 16(4) पिछड़े वर्गों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व न होने पर आरक्षण; 16(4A) SC/ST को पदोन्नति में आरक्षण (77वां संशोधन); 16(4B) कैरी फॉरवर्ड नियम (81वां संशोधन); 16(6) EWS को नियुक्तियों में 10% आरक्षण।
- *इंदिरा साहनी वाद (1992):* आरक्षण की सीमा 50% तय की गई और 'क्रीमी लेयर' का सिद्धांत प्रतिपादित हुआ।

- **अनुच्छेद 17 (अस्पृश्यता का अंत):**
  - अस्पृश्यता को समाप्त कर इसका किसी भी रूप में आचरण दंडनीय बनाया गया। इसे लागू करने हेतु संसद ने **नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955** (मूल नाम: अस्पृश्यता अपराध अधिनियम) पारित किया। यह अधिकार राज्य और निजी व्यक्तियों दोनों के विरुद्ध उपलब्ध है।

- **अनुच्छेद 18 (उपाधियों का अंत):**
  - राज्य सेना या विद्या संबंधी सम्मान के अतिरिक्त कोई उपाधि प्रदान नहीं करेगा।
  - *बालाजी राघवन वाद (1996):* भारत रत्न, पद्म विभूषण आदि 'राष्ट्रीय पुरस्कार' हैं, उपाधि (Titles) नहीं; अतः इनका नाम के आगे-पीछे उपयोग प्रतिबंधित है।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **SC/ST आरक्षण में उप-वर्गीकरण (Sub-classification) पर 7-न्यायाधीशों की संविधान पीठ का फैसला:** सर्वोच्च न्यायालय ने *पंजाब राज्य बनाम दविंदर सिंह वाद* में बहुमत (6:1) से ऐतिहासिक निर्णय देते हुए व्यवस्था दी कि राज्य सरकारों को अनुसूचित जातियों (SC) और अनुसूचित जनजातियों (ST) के भीतर सबसे अधिक वंचित तबकों को प्राथमिकता देने हेतु उप-वर्गीकरण करने का संवैधानिक अधिकार है। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि यह अनुच्छेद 14 के तहत 'समानता के सिद्धांत' और अनुच्छेद 16(4) के मूल उद्देश्य के अनुरूप है। साथ ही, SC/ST श्रेणियों में भी 'क्रीमी लेयर' की पहचान कर उन्हें बाहर किए जाने के सिद्धांत पर बल दिया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संविधान में उल्लिखित समता के अधिकार (Right to Equality) के विभिन्न अनुच्छेदों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'विधि के समक्ष समता' का विचार ब्रिटिश परंपरा से तथा 'विधियों का समान संरक्षण' अमेरिकी संविधान से प्रेरित है।
2. संविधान के अनुच्छेद 15 और 16 के अंतर्गत प्रदत्त अधिकार केवल भारतीय नागरिकों को प्राप्त हैं, विदेशियों को नहीं।
3. अनुच्छेद 17 में 'अस्पृश्यता' शब्द को संविधान में विस्तृत रूप से परिभाषित किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

©IASHINDIMEDIUM

(d) 1, 2 और 3

- **उत्तर:** (a) केवल 1 और 2
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 सही है:** अनुच्छेद 14 में दो अवधारणाएं हैं—'विधि के समक्ष समता' (ब्रिटिश मूल, नकारात्मक अवधारणा) तथा 'विधियों का समान संरक्षण' (अमेरिकी मूल, सकारात्मक अवधारणा)।
    - **कथन 2 सही है:** संविधान के अनुच्छेद 15, 16, 19, 29 और 30 केवल भारतीय नागरिकों के लिए उपलब्ध हैं।
    - **कथन 3 असत्य है:** संविधान के अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता को समाप्त किया गया है, किंतु 'अस्पृश्यता' (Untouchability) शब्द को न तो संविधान में और न ही नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 में परिभाषित किया गया है। मैसूर उच्च न्यायालय ने इसे ऐतिहासिक एवं सामाजिक संदर्भ में समझाए जाने योग्य माना है।

प्रश्न 2. आरक्षण एवं समता के अधिकार से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों तथा न्यायिक निर्णयों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही नहीं है?

(a) प्रथम संविधान संशोधन अधिनियम, 1951 द्वारा अनुच्छेद 15(4) जोड़कर सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों की उन्नति हेतु विशेष उपबंध किए गए।

(b) 103वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2019 द्वारा अनुच्छेद 15(6) तथा 16(6) जोड़कर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) हेतु आरक्षण का प्रावधान किया गया।

(c) सर्वोच्च न्यायालय की 7-न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने हाल ही में निर्णय दिया कि राज्य विधायिकाओं को SC/ST श्रेणियों के भीतर उप-वर्गीकरण करने का कोई संवैधानिक अधिकार नहीं है।

(d) उच्चतम न्यायालय ने बालाजी राघवन वाद (1996) में व्यवस्था दी कि भारत रत्न और पद्म पुरस्कार अनुच्छेद 18(1) के अर्थ के तहत 'उपाधि' नहीं हैं।

- **उत्तर:** (c) सर्वोच्च न्यायालय की 7-न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने हाल ही में निर्णय दिया कि राज्य विधायिकाओं को SC/ST श्रेणियों के भीतर उप-वर्गीकरण करने का कोई संवैधानिक अधिकार नहीं है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** सर्वोच्च न्यायालय की सात-न्यायाधीशों की संविधान पीठ (प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता में) ने 6:1 के बहुमत से निर्णय देते हुए 2004 के 'ई.वी. चिन्नैया' निर्णय को पलट दिया और स्पष्ट व्यवस्था दी कि राज्य सरकारों को अनुसूचित जातियों (SC) और अनुसूचित जनजातियों (ST) के भीतर अधिक पिछड़े उप-समूहों के उत्थान हेतु उप-वर्गीकरण (Sub-classification) करने का पूर्ण संवैधानिक अधिकार प्राप्त है।
    - **अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं:** अनुच्छेद 15(4) को चंपाकम दोराईराजन मामले के बाद 1951 में जोड़ा गया था; EWS आरक्षण 103वें संशोधन द्वारा अनुच्छेद 15(6) और 16(6) के तहत लागू हुआ; तथा भारत रत्न व पद्म पुरस्कार अनुच्छेद 18 के उल्लंघन के दायरे में नहीं आते बशर्ते उन्हें उपसर्ग/प्रत्यय के रूप में इस्तेमाल न किया जाए।

टॉपिक- 11: स्वतंत्रता का अधिकार (Right to Freedom: अनुच्छेद 19–22)

©IASHINDIMEDIUM

भारतीय संविधान के भाग-3 में **अनुच्छेद 19 से 22** तक नागरिकों की व्यक्तिगत एवं नागरिक स्वतंत्रताओं को संरक्षित करने के लिए 'स्वतंत्रता का अधिकार' प्रदान किया गया है।

- **अनुच्छेद 19 (छह बुनियादी स्वतंत्रताओं का संरक्षण - केवल नागरिकों को प्राप्त):**
    - मूल संविधान में 7 स्वतंत्रताएं थीं; 44वें संविधान संशोधन (1978) द्वारा संपत्ति के अर्जन/धारण की स्वतंत्रता (19(1)(f)) को हटा दिया गया। वर्तमान में 6 स्वतंत्रताएं हैं:
        1. **19(1)(a) वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता:** इसमें प्रेस की स्वतंत्रता, चुप रहने का अधिकार, जानने का अधिकार शामिल हैं। (युक्तियुक्त निर्बंधन आधार: 19(2) - भारत की संप्रभुता व अखंडता, राज्य की सुरक्षा, विदेशी राज्यों से मैत्रीपूर्ण संबंध, लोक व्यवस्था, शिष्टाचार, न्यायालय की अवमानना, मानहानि, अपराध उद्दीपन)।
        2. **19(1)(b):** शांतिपूर्ण एवं निरायुध सम्मेलन की स्वतंत्रता।
        3. **19(1)(c):** संगम, संघ या सहकारी समितियां (97वां संशोधन 2011) बनाने की स्वतंत्रता।
        4. **19(1)(d):** भारत के राज्यक्षेत्र में सर्वत्र अबाध संचरण का अधिकार।
        5. **19(1)(e):** भारत के किसी भाग में निवास करने और बस जाने का अधिकार।
        6. **19(1)(g):** कोई वृत्ति, उपजीविका, व्यापार या कारोबार करने की स्वतंत्रता।
- **अनुच्छेद 20 (अपराधों के लिए दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण):**
    - **कार्य-उत्तर विधि से संरक्षण (Ex-Post Facto Law - 20(1)):** किसी व्यक्ति को केवल उसी कानून के उल्लंघन पर दंडित किया जा सकता है जो अपराध करते समय लागू था। यह केवल आपराधिक कानूनों पर लागू होता है, दीवानी या कर कानूनों पर नहीं।
    - **दोहरे दंड से संरक्षण (Double Jeopardy - 20(2)):** किसी व्यक्ति को एक ही अपराध के लिए एक से अधिक बार अभियोजित और दंडित नहीं किया जाएगा (विभागीय/प्रशासनिक कार्रवाई पर लागू नहीं)।
    - **आत्म-अभिशंसन से संरक्षण (Self-Incrimination - 20(3)):** किसी अभियुक्त को स्वयं के विरुद्ध गवाह बनने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।
- **अनुच्छेद 21 एवं 21A (प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता तथा शिक्षा का अधिकार):**
    - **अनुच्छेद 21:** विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के बिना किसी व्यक्ति को उसके जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित नहीं किया जाएगा। *मेनका गांधी वाद (1978)* में उच्चतम न्यायालय ने 'विधि की सम्यक प्रक्रिया' (Due Process of Law) के सिद्धांत को समाहित करते हुए जीवन के अधिकार में मानवीय गरिमा, स्वच्छ पर्यावरण, त्वरित विचारण और निजता (*पुट्टास्वामी वाद*) को शामिल किया।
    - **अनुच्छेद 21A:** 86वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 द्वारा जोड़ा गया; राज्य 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराएगा (RTE अधिनियम, 2009)।
- **अनुच्छेद 22 (गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण):**
    - **साधारण दंडिक विधि:** गिरफ्तारी का कारण जानने का अधिकार, 24 घंटे के भीतर (यात्रा समय छोड़कर) मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किए जाने का अधिकार तथा विधिक व्यवसायी से परामर्श का अधिकार।

©IASHINDIMEDIUM

- **निवारक निरोध (Preventive Detention):** बिना मुकदमे के किसी व्यक्ति को अधिकतम 3 माह तक हिरासत में रखा जा सकता है; इससे अधिक अवधि के लिए सलाहकार बोर्ड का प्रतिवेदन अनिवार्य है।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**

  - **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बनाम ऑनलाइन सेंसरशिप (IT नियम संशोधन व फैक्ट चेक यूनिट):** बॉम्बे उच्च न्यायालय ने आईटी संशोधन नियम 2023 के उस प्रावधान को असंवैधानिक घोषित किया जिसके तहत केंद्र सरकार की 'फैक्ट चेक यूनिट' (FCU) को सोशल मीडिया पर केंद्र सरकार से जुड़ी सामग्री को फर्जी या भ्रामक बताकर हटाने का अधिकार दिया गया था। न्यायालय ने इसे **अनुच्छेद 19(1)(a)** और **अनुच्छेद 14** का सीधा उल्लंघन माना।

  - **बुलडोजर कार्रवाई पर सर्वोच्च न्यायालय की गाइडलाइंस:** उच्चतम न्यायालय ने कार्यपालिका द्वारा मनमाने ढंग से अभियुक्तों के मकानों को ध्वस्त करने (डिमोलिशन) पर रोक लगाते हुए दिशा-निर्देश जारी किए और स्पष्ट किया कि आश्रय का अधिकार **अनुच्छेद 21** का अभिन्न अंग है तथा बिना विधि सम्मत प्रक्रिया (प्राकृतिक न्याय) के इसे नहीं छीना जा सकता।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 20 के तहत अपराधों के लिए दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कार्य-उत्तर विधियों (Ex-post facto laws) से संरक्षण आपराधिक मामलों के साथ-साथ दीवानी और कराधान विधियों पर भी समान रूप से लागू होता है।
2. दोहरे दंड से संरक्षण (Double Jeopardy) का सिद्धांत केवल न्यायालय या न्यायिक अधिकरण की कार्यवाहियों पर लागू होता है, प्रशासनिक जांच पर नहीं।
3. अभियुक्त को स्वयं के विरुद्ध गवाही देने के लिए बाध्य न करने का अधिकार (Self-incrimination) नार्को टेस्ट और पॉलीग्राफ टेस्ट के जबरन प्रयोग पर भी रोक लगाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

- **उत्तर:** (b) केवल 2 और 3
- **विस्तृत व्याख्या:**

  - **कथन 1 असत्य है:** अनुच्छेद 20(1) के तहत भूतलक्षी/कार्य-उत्तर दांडिक विधियों से संरक्षण केवल आपराधिक कानूनों (Criminal Laws) पर प्राप्त है। राज्य दीवानी (Civil) या कर (Taxation) कानूनों को पिछली तिथि से लागू कर सकता है।

©IASHINDIMEDIUM

- **कथन 2 सत्य है:** अनुच्छेद 20(2) का दोहरा दंड संरक्षण केवल किसी न्यायालय या न्यायिक अधिकरण के समक्ष अभियोजन और दंड के विरुद्ध उपलब्ध है। यह विभागीय या प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा की जाने वाली दंडात्मक कार्रवाई पर लागू नहीं होता।
- **कथन 3 सत्य है:** *सेल्वी बनाम कर्नाटक राज्य वाद (2010)* में सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि किसी अभियुक्त की सहमति के बिना नार्को-एनालिसिस, ब्रेन मैपिंग या पॉलीग्राफ टेस्ट करना अनुच्छेद 20(3) (आत्म-अभिशंसन) और अनुच्छेद 21 (निजता) का सीधा उल्लंघन है।

प्रश्न 2. स्वतंत्रता के अधिकार से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. अनुच्छेद 19(1)(c) — सहकारी समितियां (Co-operative Societies) बनाने का अधिकार (97वां संशोधन अधिनियम)
2. अनुच्छेद 21A — 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा (86वां संशोधन अधिनियम)
3. अनुच्छेद 22 — सामान्य परिस्थिति में निवारक निरोध के तहत किसी व्यक्ति को बिना सलाहकार बोर्ड की संस्तुति के अधिकतम 6 माह तक हिरासत में रखना

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

- **उत्तर:** (a) केवल 1 और 2
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **युग्म 1 सही सुमेलित है:** 97वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2011 द्वारा अनुच्छेद 19(1)(c) में 'सहकारी समितियां' बनाने के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में जोड़ा गया था।
  - **युग्म 2 सही सुमेलित है:** 86वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 के माध्यम से अनुच्छेद 21A अंतःस्थापित कर 6 से 14 वर्ष के बच्चों हेतु प्रारंभिक शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया गया।
  - **युग्म 3 सही सुमेलित नहीं है:** अनुच्छेद 22(4) के तहत निवारक निरोध कानून के अंतर्गत किसी व्यक्ति को प्रारंभिक तौर पर **अधिकतम 3 माह** (न कि 6 माह) तक ही निरुद्ध रखा जा सकता है। 3 माह से अधिक अवधि के लिए निरोध हेतु उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की योग्यता वाले सदस्यों के 'सलाहकार बोर्ड' (Advisory Board) की समीक्षा एवं अनुमोदन अनिवार्य होता है।

कार्यपालिका

टॉपिक- 19: राष्ट्रपति की निर्वाचन प्रक्रिया और शक्तियाँ

भारतीय संविधान के **भाग-5** में **अनुच्छेद 52 से 78** तक संघ की कार्यपालिका का विवरण है। अनुच्छेद 52 के अनुसार, "भारत का एक राष्ट्रपति होगा," जो राष्ट्र का प्रथम नागरिक तथा कार्यपालिका का संवैधानिक प्रमुख होता है।

- **निर्वाचन प्रक्रिया (अनुच्छेद 54 एवं 55):**
    - **निर्वाचक मंडल (Electoral College - अनुच्छेद 54):**
        - संसद के दोनों सदनों (लोकसभा एवं राज्यसभा) के केवल **निर्वाचित सदस्य**।
        - राज्यों की विधानसभाओं के **निर्वाचित सदस्य**।
        - दिल्ली एवं पुडुचेरी (70वां संशोधन, 1992) तथा जम्मू-कश्मीर संघ राज्य क्षेत्र की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य।
        - *(अपवाद: संसद व विधानसभाओं के मनोनीत सदस्य तथा विधान परिषदों के निर्वाचित व मनोनीत सदस्य इसमें भाग नहीं लेते)*।
    - **निर्वाचन पद्धति (अनुच्छेद 55): आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली** के अनुसार **एकल संक्रमणीय मत (Single Transferable Vote)** द्वारा गुप्त मतदान।
        - एक विधायक का मत मूल्य $= \frac{\text{राज्य की कुल जनसंख्या (1971 की जनगणना)}}{\text{विधानसभा के कुल निर्वाचित सदस्य}} \times \frac{1}{1000}$
        - एक सांसद का मत मूल्य $= \frac{\text{सभी राज्यों के निर्वाचित विधायकों के मत मूल्यों का कुल योग}}{\text{संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या}}$
        - **निर्वाचन कोटा (Quota):** $\left[\frac{\text{कुल वैध मत}}{1+1}\right] + 1 = 50\% + 1$ मत प्राप्त करना अनिवार्य।
    - **अर्हता एवं नामांकन (अनुच्छेद 58):** भारत का नागरिक हो, 35 वर्ष की आयु पूर्ण हो, लोकसभा सदस्य निर्वाचित होने योग्य हो। नामांकन हेतु **50 प्रस्तावक व 50 अनुमोदक** तथा ₹15,000 की जमानत राशि अनिवार्य है (कुल वैध मतों का 1/6 भाग प्राप्त न होने पर राशि जब्त हो जाती है)।
    - **विवाद निपटारा (अनुच्छेद 71):** राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के चुनाव से संबंधित सभी विवादों की जांच और अंतिम निर्णय केवल **उच्चतम न्यायालय** द्वारा किया जाता है।
- **राष्ट्रपति की प्रमुख शक्तियाँ:**
    - **कार्यकारी शक्तियाँ (अनुच्छेद 53, 74, 75):** प्रधानमंत्री व उनकी सलाह पर अन्य मंत्रियों, महान्यायवादी (अनुच्छेद 76), CAG (अनुच्छेद 148), राज्यपालों, मुख्य चुनाव आयुक्त तथा वित्त आयोग (अनुच्छेद 280) के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति।
    - **विधायी शक्तियाँ (अनुच्छेद 85, 108, 111):** संसद का सत्र आहूत/सत्रावसान करना, लोकसभा भंग करना, गतिरोध पर **संयुक्त बैठक (अनुच्छेद 108)** बुलाना (जिसकी अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करते हैं)।
    - **वीटो शक्तियाँ (अनुच्छेद 111):**
        - आत्यंतिक वीटो (Absolute Veto) — विधेयक पर स्वीकृति सुरक्षित रखना।
        - निलंबनकारी वीटो (Suspensive Veto) — संसद को पुनर्विचार हेतु लौटाना (संसद साधारण बहुमत से पुनः पारित कर दे तो स्वीकृति अनिवार्य; धन विधेयक पर लागू नहीं)।
        - जेबी वीटो (Pocket Veto) — अनिश्चितकाल तक विधेयक पर कोई निर्णय न लेना।

©IASHINDIMEDIUM

- **अध्यादेश जारी करने की शक्ति (अनुच्छेद 123):** संसद के दोनों सदनों में से किसी एक या दोनों के सत्र में न होने पर; यह संसद के पुनः समवेत होने की तिथि से **अधिकतम 6 सप्ताह** तक प्रभावी रहता है।
- **न्यायिक शक्तियाँ (अनुच्छेद 72 व 143):**
  - अनुच्छेद 72 के तहत मृत्युदंड और सैन्य अदालत (Court Martial) सहित सभी दंडादेशों पर क्षमा (Pardon), लघुकरण (Commutation), परिहार (Remission), विराम (Respite) और प्रविलंबन (Reprieve) की शक्ति।
  - अनुच्छेद 143 के तहत विधि या सार्वजनिक महत्व के तथ्य पर उच्चतम न्यायालय से परामर्श लेना (परामर्श राष्ट्रपति पर बाध्यकारी नहीं)।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **अनुच्छेद 143 के तहत 16वां राष्ट्रपति संदर्भ (Presidential Reference) और विधेयकों पर अनुमति:** राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 143(1) के तहत राज्यपाल एवं राष्ट्रपति के विधेयकों पर अनुमति देने के अधिकारों (अनुच्छेद 200 व 201) के संबंध में 14 प्रश्नों का एक संदर्भ उच्चतम न्यायालय को भेजा गया था। इस पर 5-न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने फैसला देते हुए स्पष्ट किया कि न्यायपालिका संविधान के अनुच्छेद 200 अथवा अनुच्छेद 201 के तहत विधेयकों पर निर्णय लेने के लिए राष्ट्रपति या राज्यपाल पर **कोई निश्चित समय-सीमा (Timelines) नहीं थोप सकती**, और न ही 'स्वतः स्वीकृति' (Deemed Assent) की अवधारणा लागू कर सकती है। हालांकि, न्यायालय ने यह भी रेखांकित किया कि संवैधानिक प्रमुखों द्वारा अकारण अत्यधिक एवं अनिश्चितकालीन विलंब सीमित न्यायिक समीक्षा (Limited Judicial Review) के दायरे में आ सकता है।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन और निर्वाचक मंडल (Electoral College) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल में संसद के दोनों सदनों के सभी सदस्य (निर्वाचित एवं मनोनीत) तथा राज्यों की विधानसभाओं के केवल निर्वाचित सदस्य शामिल होते हैं।
2. 70वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और पुडुचेरी संघ राज्य क्षेत्रों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्यों को निर्वाचक मंडल में शामिल किया गया।
3. राष्ट्रपति चुनाव में किसी राज्य के विधायक के मत का मूल्य वर्ष 2011 की जनगणना की जनसंख्या के आधार पर निकाला जाता है।
4. राष्ट्रपति अथवा उपराष्ट्रपति के निर्वाचन से संबंधित सभी विवादों की जांच और अंतिम फैसला केवल भारत के उच्चतम न्यायालय द्वारा किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 3

(b) केवल 2 और 4

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2 और 4

©IASHINDIMEDIUM

- **उत्तर:** (b) केवल 2 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 असत्य है:** राष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल (अनुच्छेद 54) में संसद के दोनों सदनों के केवल **निर्वाचित सदस्य** शामिल होते हैं, मनोनीत सदस्य नहीं (जबकि महाभियोग में संसद के मनोनीत सदस्य भाग लेते हैं)।
    - **कथन 2 सत्य है:** 70वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा दिल्ली और पुडुचेरी संघ राज्य क्षेत्रों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्यों को निर्वाचक मंडल का भाग बनाया गया।
    - **कथन 3 असत्य है:** 84वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2001 के अनुसार, राष्ट्रपति चुनाव में राज्यों की जनसंख्या का आधार वर्ष 2026 के बाद होने वाली पहली जनगणना तक **1971 की जनगणना** को ही नियत किया गया है, न कि 2011 की जनगणना।
    - **कथन 4 सत्य है:** अनुच्छेद 71 के तहत राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के चुनाव संबंधी सभी विवादों का अनन्य अधिकार क्षेत्र उच्चतम न्यायालय के पास है।

प्रश्न 2. भारत के राष्ट्रपति की शक्तियों एवं संवैधानिक स्थिति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) राष्ट्रपति द्वारा अनुच्छेद 123 के अधीन प्रख्यापित अध्यादेश संसद के पुनः समवेत होने की तिथि से अधिकतम छह सप्ताह तक ही प्रभावी रह सकता है।

(b) राष्ट्रपति किसी साधारण विधेयक पर अपने निलंबनकारी वीटो (Suspensive Veto) का प्रयोग कर सकते हैं, जिसे संसद पुनः साधारण बहुमत से पारित करके निष्प्रभावी कर सकती है।

(c) अनुच्छेद 72 के अंतर्गत राष्ट्रपति को सैन्य न्यायालय (Court Martial) द्वारा दिए गए दंडादेश को क्षमा करने का अधिकार प्राप्त नहीं है।

(d) अनुच्छेद 143 के अंतर्गत राष्ट्रपति द्वारा मांगे गए परामर्श पर उच्चतम न्यायालय द्वारा दी गई राय राष्ट्रपति पर बाध्यकारी नहीं होती है।

- **उत्तर:** (c) अनुच्छेद 72 के अंतर्गत राष्ट्रपति को सैन्य न्यायालय (Court Martial) द्वारा दिए गए दंडादेश को क्षमा करने का अधिकार प्राप्त नहीं है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** संविधान के अनुच्छेद 72 के तहत राष्ट्रपति को कोर्ट मार्शल (सैन्य न्यायालय) द्वारा दिए गए किसी भी दंड या दंडादेश को क्षमा (Pardon), प्रविलंबन, विराम या परिहार करने अथवा लघुकरण करने की पूर्ण शक्ति प्राप्त है। यह शक्ति राज्यों के राज्यपालों को प्राप्त नहीं है।
    - **अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं:** अनुच्छेद 123 के तहत अध्यादेश संसद के सत्र शुरू होने के 6 सप्ताह के भीतर अनुमोदित न होने पर समाप्त हो जाता है; निलंबनकारी वीटो को संसद साधारण बहुमत से पुनः पारित कर निष्प्रभावी कर सकती है; और अनुच्छेद 143 के तहत उच्चतम न्यायालय की राय मात्र सलाहकारी होती है।

टॉपिक- 20: राष्ट्रपति के अध्यादेश और क्षमादान अधिकार

भारतीय संविधान के अंतर्गत राष्ट्रपति को विधायी और न्यायिक दोनों क्षेत्रों में असाधारण शक्तियाँ प्रदान की गई हैं, जिनका प्रयोग वे मंत्रिपरिषद की सलाह (अनुच्छेद 74) पर करते हैं।

- **अध्यादेश निर्माण शक्ति (अनुच्छेद 123):**

- **परिस्थिति:** जब संसद का कोई **एक सदन या दोनों सदन सत्र में न हों** (विश्रांतिकाल) और ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई हों कि तत्काल कार्रवाई करना आवश्यक हो।
- **विस्तार व सीमाएं:** अध्यादेश की विधायी क्षमता संसद द्वारा पारित कानून के समान ही होती है। यह उन्हीं विषयों पर जारी हो सकता है जिन पर संसद को विधि बनाने की शक्ति है (संघ सूची एवं समवर्ती सूची)।
- **मूल अधिकारों का उल्लंघन नहीं:** अध्यादेश संविधान के भाग-3 का उल्लंघन नहीं कर सकता और न ही इसके द्वारा **संविधान संशोधन** किया जा सकता है।
- **अवधि (UPPCS का प्रमुख तथ्य):** अध्यादेश को संसद के पुनः समवेत (Reassemble) होने की तिथि से **6 सप्ताह के भीतर** दोनों सदनों द्वारा अनुमोदित होना अनिवार्य है, अन्यथा यह स्वतः समाप्त हो जाता है। यदि दोनों सदन अलग-अलग तिथियों को आहूत होते हैं, तो 6 सप्ताह की गणना बाद वाली तिथि से की जाती है। संसद के दो सत्रों के मध्य अधिकतम 6 माह का अंतर हो सकता है, अतः एक अध्यादेश की अधिकतम वैधानिक वैधता **6 माह 6 सप्ताह** हो सकती है।
- **न्यायिक समीक्षा:** *कूपर वाद (1970)* तथा *डी. सी. वाधवा वाद (1987)* के अनुसार, अध्यादेश प्रख्यापित करने की राष्ट्रपति की संतुष्टि (Satisfaction) दुर्भावना या कपटपूर्ण आधार पर न्यायिक समीक्षा के योग्य है। बार-बार अध्यादेश को पुन: जारी करना (Re-promulgation) असंवैधानिक है।

- **क्षमादान की न्यायिक शक्ति (अनुच्छेद 72):**
  - **विस्तार:** राष्ट्रपति को उन सभी मामलों में क्षमादान का अधिकार है जहां:
    1. दंड सैन्य न्यायालय (Court-Martial) द्वारा दिया गया हो।
    2. दंड संघ की कार्यपालिका शक्ति के अंतर्गत आने वाले विषयों से संबंधित विधि के विरुद्ध अपराध के लिए हो।
    3. दंड **मृत्युदंड (Death Sentence)** हो (नोट: राज्यपाल मृत्युदंड को क्षमा नहीं कर सकते, केवल निलंबन, परिहार या लघुकरण कर सकते हैं)।
  - **शक्तियों के 5 रूप:**
    1. **क्षमा (Pardon):** दंड और दोषसिद्धि दोनों को पूर्णतः समाप्त कर देना (अपराधी ऐसी स्थिति में आ जाता है जैसे उसने अपराध किया ही न हो)।
    2. **लघुकरण (Commutation):** दंड के स्वरूप को बदलकर कम कड़ा करना (उदा. मृत्युदंड को आजीवन कारावास में बदलना)।
    3. **परिहार (Remission):** दंड की प्रकृति बदले बिना उसकी अवधि कम करना (उदा. 2 वर्ष के कठोर कारावास को 1 वर्ष के कठोर कारावास में बदलना)।
    4. **विराम (Respite):** विशेष कारणों (उदा. गर्भावस्था या शारीरिक अक्षमता) से दंड को मूल रूप से नियत से कम करना।
    5. **प्रविलंबन (Reprieve):** किसी दंड (विशेषकर मृत्युदंड) के निष्पादन पर अस्थायी रोक लगाना ताकि क्षमा/लघुकरण की प्रार्थना की जा सके।

©IASHINDIMEDIUM

- **प्रकृति:** *केहर सिंह वाद (1989)* एवं *एपु सुधाकर वाद (2006)* के अनुसार, यह राष्ट्रपति का विवेकाधिकार नहीं बल्कि मंत्रिपरिषद की सलाह पर प्रयुक्त शक्ति है। यह निर्णय मनमाना, राजनीतिक या दुर्भावनापूर्ण होने पर सीमित न्यायिक समीक्षा के अधीन है।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**

  - **भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) की धारा 472 और क्षमादान:** 1 जुलाई 2024 से लागू नई आपराधिक संहिताओं के अंतर्गत BNSS की **धारा 472** में राष्ट्रपति (अनुच्छेद 72) एवं राज्यपाल (अनुच्छेद 161) के समक्ष दया याचिका (Mercy Petition) दायर करने की एक समयबद्ध प्रक्रिया और स्पष्ट रूपरेखा तय की गई है। इसके अनुसार, यदि उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय द्वारा किसी मामले में अपील/समीक्षा खारिज कर दी जाती है, तो दोषी व्यक्ति या उसका विधिक प्रतिनिधि जेल अधीक्षक द्वारा सूचित किए जाने के 30 दिनों के भीतर दया याचिका प्रस्तुत कर सकता है। केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रपति के आदेश की सूचना दिए जाने के बाद वह निर्णय अंतिम माना जाता है और इस वैधानिक समय-सारणी का उद्देश्य क्षमादान प्रक्रिया में होने वाले अत्यधिक अनुचित विलंब को नियंत्रित करना है।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के राष्ट्रपति की अध्यादेश जारी करने की शक्ति (अनुच्छेद 123) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रपति केवल तभी अध्यादेश जारी कर सकते हैं जब संसद के दोनों सदनों में से कोई एक अथवा दोनों सदन सत्र में न हों।
2. राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया कोई भी अध्यादेश संविधान संशोधन करने में सक्षम होता है।
3. संसद के पुनः समवेत होने पर यदि छह सप्ताह के भीतर दोनों सदनों द्वारा इसका अनुमोदन नहीं किया जाता है, तो अध्यादेश स्वतः निष्प्रभावी हो जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

- **उत्तर:** (b) केवल 1 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**

  - **कथन 1 सही है:** अध्यादेश निर्माण संसद की विधायी शक्ति का विकल्प नहीं बल्कि आपातकालीन व्यवस्था है। जब दोनों सदनों में से कोई एक सदन भी सत्र में न हो, तब भी कानून नहीं बन सकता, अतः ऐसी स्थिति में भी अध्यादेश जारी किया जा सकता है।

  - **कथन 2 असत्य है:** अध्यादेश की विधायी शक्तियाँ सामान्य संसदीय विधियों के ही समान होती हैं। संविधान संशोधन विधेयक केवल संसद द्वारा अनुच्छेद 368 के तहत निर्धारित विशेष प्रक्रिया से ही पारित हो सकता है; अध्यादेश द्वारा संविधान में कोई संशोधन नहीं किया जा सकता।

©IASHINDIMEDIUM

- **कथन 3 सही है:** अनुच्छेद 123(2)(a) के अनुसार, अध्यादेश संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखा जाएगा और दोनों सदनों के पुनः बैठने की तारीख से छह सप्ताह की समाप्ति पर यह स्वतः समाप्त हो जाएगा, यदि उससे पूर्व दोनों सदन इसे अनुमोदित न कर दें।

प्रश्न 2. राष्ट्रपति की क्षमादान शक्ति (अनुच्छेद 72) के संदर्भ में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (क्षमादान के रूप)	**सूची-II (संवैधानिक अर्थ)**
A. लघुकरण (Commutation)	1. दंड की प्रकृति बदले बिना उसकी अवधि को कम करना
B. परिहार (Remission)	2. दंड के स्वरूप को बदलकर हल्का या कम कड़ा करना
C. विराम (Respite)	3. किसी दंड (विशेषकर मृत्युदंड) के निष्पादन पर अस्थायी रोक
D. प्रविलंबन (Reprieve)	4. किसी विशेष परिस्थिति (उदा. गर्भावस्था) के कारण दंड को कम करना

कूट:

(a) A-2, B-1, C-4, D-3

(b) A-1, B-2, C-4, D-3

(c) A-2, B-1, C-3, D-4

(d) A-1, B-4, C-2, D-3

- **उत्तर:** (a) A-2, B-1, C-4, D-3
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **लघुकरण (Commutation):** इसका अर्थ है दंड के चरित्र को बदलकर हल्का करना (जैसे मृत्युदंड को सश्रम आजीवन कारावास में बदलना)।
    - **परिहार (Remission):** इसका अर्थ है दंड की प्रकृति को बदले बिना उसकी मात्रा या अवधि कम करना (जैसे 2 वर्ष के कारावास को घटाकर 1 वर्ष करना)।
    - **विराम (Respite):** किसी दोषी की विशेष शारीरिक स्थिति, अक्षमता या महिला की गर्भावस्था जैसी परिस्थितियों में मूल रूप से दिए गए दंड को कम करना।
    - **प्रविलंबन (Reprieve):** विशेष रूप से मृत्युदंड के मामले में सजा के तामील पर अस्थायी रोक लगाना, ताकि दोषी को राष्ट्रपति से क्षमा या दया याचिका मांगने का अवसर मिल सके।

टॉपिक- 21: उपराष्ट्रपति का निर्वाचन और कार्य

©IASHINDIMEDIUM

भारतीय संविधान के **भाग-5** के अंतर्गत **अनुच्छेद 63 से 71** तक भारत के उपराष्ट्रपति से संबंधित प्रावधान किए गए हैं। देश के वरीयता क्रम में उपराष्ट्रपति का पद राष्ट्रपति के बाद दूसरा सर्वोच्च संवैधानिक पद है। यह पद अमेरिकी उपराष्ट्रपति की तर्ज पर सृजित किया गया है।

- **निर्वाचन एवं निर्वाचक मंडल (अनुच्छेद 66):**
    - **निर्वाचक मंडल:** उपराष्ट्रपति का चुनाव संसद के दोनों सदनों (लोकसभा और राज्यसभा) के सभी सदस्यों को मिलाकर बनने वाले निर्वाचक मंडल द्वारा होता है।
        - इसमें संसद के **निर्वाचित और मनोनीत दोनों सदस्य** मतदान करते हैं।
        - इसमें राज्य विधानसभाओं या विधान परिषदों के सदस्य **भाग नहीं लेते** (यह राष्ट्रपति के निर्वाचन से मुख्य अंतर है)।
    - **निर्वाचन प्रणाली:** आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार **एकल संक्रमणीय मत (Single Transferable Vote)** द्वारा गुप्त मतदान से।
    - **अर्हताएं (अनुच्छेद 66(3)):** वह भारत का नागरिक हो, **35 वर्ष** की आयु पूरी कर चुका हो, **राज्यसभा का सदस्य बनने की योग्यता** रखता हो तथा किसी लाभ के पद पर न हो।
    - **नामांकन व जमानत:** प्रत्याशी के लिए कम से कम **20 प्रस्तावक और 20 अनुमोदक** आवश्यक हैं तथा ₹15,000 की जमानत राशि (RBI में) देय होती है (कुल वैध मतों का 1/6 भाग न मिलने पर जब्त)।
    - **विवाद:** निर्वाचन संबंधी सभी विवादों की जांच व अंतिम निर्णय केवल **उच्चतम न्यायालय (अनुच्छेद 71)** करता है।
- **कार्यकाल एवं पदमुक्ति (अनुच्छेद 67):**
    - पदभार ग्रहण करने की तिथि से **5 वर्ष**।
    - त्यागपत्र राष्ट्रपति को संबोधित होता है।
    - **पद से हटाने की प्रक्रिया:** उपराष्ट्रपति को हटाने के लिए महाभियोग जैसी औपचारिक प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होती।
        - संकल्प केवल **राज्यसभा में ही प्रस्तुत** किया जा सकता है (14 दिन की पूर्व सूचना अनिवार्य)।
        - इसे राज्यसभा के **प्रभावी बहुमत** (तत्कालीन समस्त सदस्यों के बहुमत) द्वारा पारित होना चाहिए और लोकसभा द्वारा इसे **साधारण बहुमत** से अनुमोदित किया जाना आवश्यक है।
- **शपथ एवं वेतन (अनुच्छेद 69 व 97):**
    - शपथ राष्ट्रपति या उनके द्वारा नियुक्त व्यक्ति द्वारा दिलाई जाती है।
    - उपराष्ट्रपति को उपराष्ट्रपति पद के लिए कोई वेतन नहीं मिलता; उन्हें **राज्यसभा के सभापति** के रूप में वेतन और भत्ते प्राप्त होते हैं।
- **प्रमुख कार्य एवं शक्तियां:**
    1. **राज्यसभा के पदेन सभापति (अनुच्छेद 64):** वे सदन की कार्यवाही संचालित करते हैं। सदन के सदस्य न होने के कारण वे प्रथम दृष्टया मत नहीं देते, किंतु मत बराबर होने की दशा में **निर्णायक मत (Casting Vote - अनुच्छेद 100)** देते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

2. **कार्यवाहक राष्ट्रपति (अनुच्छेद 65):** राष्ट्रपति का पद मृत्यु, त्यागपत्र या निष्कासन से रिक्त होने पर वे **अधिकतम 6 माह** तक कार्यवाहक राष्ट्रपति रहते हैं। इस दौरान वे राज्यसभा के सभापति के कर्तव्यों का पालन नहीं करते और उन्हें राष्ट्रपति के समस्त वेतन, भत्ते व विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
    - **संसदीय आचार एवं पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन:** उपराष्ट्रपति (राज्यसभा के पदेन सभापति) ने संसद और राज्य विधानमंडलों में विधायी गरिमा, शून्यकाल के प्रभावी उपयोग और लगातार होते व्यवधानों पर चिंता व्यक्त करते हुए नए दिशा-निर्देशों पर बल दिया।
    - **राज्यसभा के मनोनीत सदस्यों की पैनल में नियुक्ति:** उपराष्ट्रपति द्वारा सदन के संचालन हेतु उपाध्यक्षों के पैनल (Panel of Vice-Chairpersons) का पुनर्गठन कर उसमें पहली बार पर्याप्त संख्या में महिला सांसदों एवं नामित सदस्यों को स्थान दिया गया, जिससे सदन के पीठासीन तंत्र में समावेशिता सुनिश्चित हुई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के उपराष्ट्रपति के निर्वाचन एवं निर्वाचक मंडल (Electoral College) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उपराष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल में संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित एवं मनोनीत दोनों सदस्य शामिल होते हैं।
2. राज्य विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य उपराष्ट्रपति के निर्वाचन में मतदान करने के पात्र होते हैं।
3. उपराष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के नामांकन हेतु कम से कम 50 प्रस्तावक एवं 50 अनुमोदक होने अनिवार्य हैं।
4. उपराष्ट्रपति के निर्वाचन से संबंधित सभी विवादों का अंतिम विनिश्चय केवल भारत के उच्चतम न्यायालय द्वारा किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 4

(b) केवल 1, 2 और 4

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 3 और 4

- **उत्तर:** (a) केवल 1 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 सही है:** संविधान के अनुच्छेद 66(1) के अनुसार, उपराष्ट्रपति का चुनाव संसद के दोनों सदनों के सदस्यों से मिलकर बने निर्वाचक मंडल द्वारा होता है, जिसमें निर्वाचित और मनोनीत दोनों सदस्य भाग लेते हैं।
    - **कथन 2 असत्य है:** उपराष्ट्रपति के निर्वाचन में राज्यों की विधानसभाओं (या विधान परिषदों) के सदस्यों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं होता; यह अधिकार केवल संसद के सदस्यों तक सीमित है।
    - **कथन 3 असत्य है:** उपराष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के लिए **20 प्रस्तावक और 20 अनुमोदक** की आवश्यकता होती है (50 प्रस्तावक और 50 अनुमोदक राष्ट्रपति पद के लिए अनिवार्य होते हैं)।
    - **कथन 4 सही है:** अनुच्छेद 71 के तहत राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के चुनाव से जुड़े सभी संशय और विवाद केवल उच्चतम न्यायालय द्वारा निपटाए जाते हैं और उसका निर्णय अंतिम होता है।

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 2. भारत के उपराष्ट्रपति के पद और उनकी कार्यप्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) उपराष्ट्रपति को पद से हटाने का प्रस्ताव केवल राज्यसभा में ही प्रस्तुत किया जा सकता है।

(b) उपराष्ट्रपति को हटाने का प्रस्ताव राज्यसभा द्वारा पूर्ण/प्रभावी बहुमत से तथा लोकसभा द्वारा साधारण बहुमत से पारित होना चाहिए।

(c) जब उपराष्ट्रपति कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में दायित्वों का निर्वहन करते हैं, तब वे राज्यसभा के सभापति के रूप में भी नियमित वेतन प्राप्त करते रहते हैं।

(d) राज्यसभा के सभापति के रूप में वे पहली बार में मतदान नहीं करते, किंतु मत बराबर होने पर निर्णायक मत (Casting Vote) दे सकते हैं।

- **उत्तर:** (c) जब उपराष्ट्रपति कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में दायित्वों का निर्वहन करते हैं, तब वे राज्यसभा के सभापति के रूप में भी नियमित वेतन प्राप्त करते रहते हैं।
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** अनुच्छेद 65 और अनुच्छेद 97 के अनुसार, जब उपराष्ट्रपति राष्ट्रपति के रूप में कार्य करते हैं या उनके दायित्वों का निर्वहन करते हैं, तब वे राज्यसभा के सभापति के पद के कर्तव्यों का पालन नहीं करते और उस अवधि के दौरान वे सभापति को देय वेतन-भत्ते पाने के हकदार नहीं होते; उन्हें राष्ट्रपति को मिलने वाले समस्त वेतन, भत्ते व परिलब्धियां प्राप्त होती हैं।
    - **अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं:** हटाने का प्रस्ताव केवल राज्यसभा में 14 दिन के नोटिस के बाद ही लाया जा सकता है; इसे राज्यसभा के तत्कालीन समस्त सदस्यों के बहुमत (प्रभावी बहुमत) और लोकसभा की सहमति (साधारण बहुमत) की आवश्यकता होती है; तथा अनुच्छेद 100 के अंतर्गत सभापति के रूप में उनके पास केवल निर्णायक मत देने की शक्ति होती है।

©IASHINDIMEDIUM

विधायिका

टॉपिक- 31: संसद की संरचना (राज्यसभा और लोकसभा: अनुच्छेद 79–84)

भारतीय संविधान के **भाग-5** के अध्याय-2 के तहत **अनुच्छेद 79 से 122** तक संसद के गठन, संरचना, कार्यप्रणाली व विशेषाधिकारों का उपबंध है।

- **संसद का गठन (अनुच्छेद 79):**
    - भारतीय संसद तीन अंगों से मिलकर बनती है: **राष्ट्रपति**, **राज्यसभा** (उच्च सदन/राज्यों की परिषद), और **लोकसभा** (निम्न सदन/जनता का सदन)।
    - राष्ट्रपति संसद के किसी भी सदन के सदस्य नहीं होते, परंतु वे संसद का अभिन्न अंग हैं क्योंकि संसद द्वारा पारित कोई भी विधेयक राष्ट्रपति की सहमति के बिना कानून नहीं बन सकता।
- **1. राज्यसभा की संरचना (Council of States: अनुच्छेद 80):**
    - **अधिकतम सदस्य संख्या: 250** (238 राज्यों व संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिनिधि + **12 राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत**)।
    - **वर्तमान सदस्य संख्या:** 245 (225 राज्यों से, 8 केंद्र शासित प्रदेशों से [दिल्ली-3, पुडुचेरी-1, जम्मू-कश्मीर-4], तथा 12 मनोनीत)।
    - **मनोनयन के क्षेत्र (अनुच्छेद 80(3)):** साहित्य (Literature), विज्ञान (Science), कला (Art) और समाज सेवा (Social Service) के विशेषज्ञ।
    - **निर्वाचन पद्धति (अनुच्छेद 80(4)):** राज्यों की विधानसभाओं के **केवल निर्वाचित सदस्यों** द्वारा **आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली** के अनुसार **एकल संक्रमणीय मत (STV)** द्वारा। यह मतदान खुला (Open Ballot) होता है।
    - **सीटों का आवंटन:** संविधान की **चौथी अनुसूची** में जनसंख्या के आधार पर (1971 की जनगणना)। उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक **31 सदस्य** राज्यसभा में हैं।
    - **प्रकृति एवं कार्यकाल (अनुच्छेद 83(1)):** यह एक **स्थायी सदन** है, जो कभी भंग नहीं होता। इसके सदस्यों का कार्यकाल **6 वर्ष** होता है; इसके **एक-तिहाई (1/3) सदस्य प्रत्येक दो वर्ष बाद** सेवानिवृत्त हो जाते हैं।
- **2. लोकसभा की संरचना (House of the People: अनुच्छेद 81):**
    - **अधिकतम सदस्य संख्या:** मूलतः 552 थी, किंतु **104वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2019** द्वारा आंग्ल-भारतीयों (Anglo-Indians) के 2 मनोनीत सदस्यों का प्रावधान समाप्त किए जाने के बाद अब अधिकतम संख्या **550** है (राज्यों से अधिकतम 530 + UTs से अधिकतम 20)।
    - **वर्तमान सदस्य संख्या:** 543 (सभी प्रत्यक्ष निर्वाचित: 524 राज्यों से + 19 केंद्र शासित प्रदेशों से)। उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक **80 सीटें** हैं।
    - **निर्वाचन पद्धति:** सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (अनुच्छेद 326: 61वें संशोधन, 1988 द्वारा आयु 21 से घटाकर **18 वर्ष**) पर आधारित प्रत्यक्ष निर्वाचन (फर्स्ट-पास्ट-द-पोस्ट सिस्टम)।
    - **आरक्षण (अनुच्छेद 330):** SC एवं ST के लिए जनसंख्या अनुपात में सीटों का आरक्षण (104वें संशोधन द्वारा इसे 2030 तक बढ़ाया गया है)।

©IASHINDIMEDIUM

- **कार्यकाल (अनुच्छेद 83(2)):** प्रथम बैठक की तिथि से **5 वर्ष**; आपातकाल के दौरान संसद विधि द्वारा इसे एक बार में 1 वर्ष तक बढ़ा सकती है।

- **संसद की सदस्यता हेतु अर्हता (अनुच्छेद 84):**
  - भारत का नागरिक हो।
  - न्यूनतम आयु: **लोकसभा हेतु 25 वर्ष** तथा **राज्यसभा हेतु 30 वर्ष**।
- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **106वाँ संविधान संशोधन अधिनियम (नारी शक्ति वंदन अधिनियम):** लोकसभा, राज्य विधानसभाओं तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा में महिलाओं के लिए **33% (एक-तिहाई) क्षैतिज सीटें आरक्षित** करने का ऐतिहासिक प्रावधान किया गया (नए अनुच्छेद 330A, 332A एवं 239AA(2)(b) अंतःस्थापित)। यह आरक्षण आगामी परिसीमन (Delimitation) के पश्चात लागू होगा और इसकी प्रारंभिक अवधि 15 वर्ष होगी।
  - **जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) अधिनियम:** जम्मू और कश्मीर विधानसभा के साथ-साथ केंद्र शासित प्रदेशों के संसदीय प्रतिनिधित्व की रूपरेखा की अधिसूचनाओं के तहत संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व में स्थिरता पर कार्य किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संसद की संरचना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संविधान के अनुच्छेद 79 के अनुसार, संसद के तीन अभिन्न अंग हैं—राष्ट्रपति, राज्यसभा और लोकसभा।
2. 104वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2019 द्वारा लोकसभा में आंग्ल-भारतीय समुदाय के दो सदस्यों के मनोनयन के प्रावधान को समाप्त कर दिया गया।
3. राज्यसभा के सदस्यों के निर्वाचन में संबंधित राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित एवं मनोनीत दोनों सदस्य भाग लेते हैं।
4. संविधान की चौथी अनुसूची में विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के लिए राज्यसभा सीटों का आवंटन निर्धारित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 3

(b) केवल 1, 2 और 4

(c) केवल 2 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 1, 2 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **कथन 1 सही है:** अनुच्छेद 79 स्पष्ट करता है कि संघ के लिए एक संसद होगी जो राष्ट्रपति और दो सदनों (राज्यसभा और लोकसभा) से मिलकर बनेगी।

©IASHINDIMEDIUM

- **कथन 2 सही है:** 104वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2019 द्वारा अनुच्छेद 334 में संशोधन कर SC/ST आरक्षण को 10 वर्षों (2030 तक) के लिए बढ़ाया गया, जबकि आंग्ल-भारतीयों के 2 मनोनीत सदस्यों के प्रावधान का नवीनीकरण नहीं किया गया, जिससे यह स्वतः समाप्त हो गया।
- **कथन 3 असत्य है:** अनुच्छेद 80(4) के अनुसार, राज्यसभा सदस्यों का निर्वाचन राज्य विधानसभाओं के **केवल निर्वाचित सदस्यों** (Elected Members) द्वारा किया जाता है; मनोनीत सदस्यों को इसमें मतदान का कोई अधिकार नहीं होता।
- **कथन 4 सही है:** संविधान की चौथी अनुसूची राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के लिए राज्यसभा में सीटों के आवंटन से संबंधित है (सर्वाधिक 31 सीटें उत्तर प्रदेश को आवंटित हैं)।

प्रश्न 2. संसद के दोनों सदनों की तुलना एवं उनकी विशेषताओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) राज्यसभा एक स्थायी निकाय है जिसका कभी विघटन नहीं होता, और इसके एक-तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वर्ष की समाप्ति पर सेवानिवृत्त हो जाते हैं।

(b) राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा में 12 सदस्यों को साहित्य, विज्ञान, कला और समाज सेवा के क्षेत्रों से मनोनीत किया जाता है।

(c) संसद सदस्य बनने हेतु न्यूनतम आयु सीमा लोकसभा के लिए 25 वर्ष तथा राज्यसभा के लिए 30 वर्ष निर्धारित है।

(d) 106वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा लोकसभा तथा राज्यसभा दोनों सदनों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का उपबंध किया गया है।

- **उत्तर:** (d) 106वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा लोकसभा तथा राज्यसभा दोनों सदनों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का उपबंध किया गया है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **विकल्प (d) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** 106वें संविधान संशोधन अधिनियम (नारी शक्ति वंदन अधिनियम) द्वारा **लोकसभा**, राज्यों की **विधानसभाओं** और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा में महिलाओं हेतु 33% आरक्षण का प्रावधान किया गया है। यह आरक्षण **राज्यसभा या राज्यों की विधान परिषदों में लागू नहीं है**।
  - **अन्य विकल्प (a, b, c) पूर्णतः सत्य हैं:** अनुच्छेद 83(1) के तहत राज्यसभा अविघटनीय है और 1/3 सदस्य हर 2 साल में रिटायर होते हैं; अनुच्छेद 80(3) के तहत 12 मनोनीत सदस्यों के चार क्षेत्र (साहित्य, विज्ञान, कला, समाज सेवा) हैं; तथा अनुच्छेद 84 के तहत लोकसभा के लिए न्यूनतम 25 वर्ष और राज्यसभा के लिए न्यूनतम 30 वर्ष की आयु निर्धारित है।

टॉपिक- 32: संसद की विधायी प्रक्रिया और कानून निर्माण (अनुच्छेद 107 से 111)

भारतीय संविधान के भाग-5 के अध्याय-2 में संसद की विधायी प्रक्रिया और कानून निर्माण का उपबंध किया गया है। कोई भी विधायी प्रस्ताव 'विधेयक' (Bill) के रूप में प्रस्तुत होता है तथा दोनों सदनों द्वारा पारित होने एवं राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलने पर 'अधिनियम' (Act) बनता है।

- **विधेयक के चरण (Three Readings):**

1. **प्रथम वाचन (First Reading):** विधेयक को पुरःस्थापित (Introduce) करने की अनुमति मांगना तथा इसे भारत के राजपत्र (Gazette of India) में प्रकाशित करना। इस चरण पर कोई चर्चा नहीं होती।
2. **द्वितीय वाचन (Second Reading):** यह सबसे विस्तृत और महत्वपूर्ण चरण है। इसमें सिद्धांतों पर सामान्य चर्चा होती है, इसे प्रवर समिति (Select Committee) या दोनों सदनों की संयुक्त समिति को भेजा जा सकता है, तथा प्रत्येक खंड पर विचार व मतदान (खंड-दर-खंड विचार) होता है।
3. **तृतीय वाचन (Third Reading):** विधेयक को समग्र रूप से स्वीकार या अस्वीकार करने पर मतदान होता है (इसमें कोई तात्विक संशोधन नहीं किया जा सकता)।

- **विधेयकों का वर्गीकरण एवं प्रक्रिया:**
    - **1. साधारण विधेयक (Ordinary Bills: अनुच्छेद 107 व 108):**
        - इसे किसी भी सदन में पेश किया जा सकता है।
        - दोनों सदनों में साधारण बहुमत से पारित होना अनिवार्य है।
        - दूसरा सदन इसे **अधिकतम 6 माह** तक रोक सकता है। गतिरोध की स्थिति में राष्ट्रपति **अनुच्छेद 108 के तहत संयुक्त बैठक (Joint Sitting)** बुला सकते हैं, जिसकी अध्यक्षता **लोकसभा अध्यक्ष** करते हैं (अनुच्छेद 118)।
    - **2. धन विधेयक (Money Bills: अनुच्छेद 109 एवं 110):**
        - अनुच्छेद 110 में कराधान, उधार, संचित व आकस्मिक निधि की अभिरक्षा आदि विषय शामिल हैं।
        - कोई विधेयक धन विधेयक है या नहीं, इसका अंतिम निर्णय **लोकसभा अध्यक्ष** करते हैं।
        - यह केवल राष्ट्रपति की **पूर्व सिफारिश** पर **केवल लोकसभा** में ही पुरःस्थापित हो सकता है।
        - राज्यसभा इसे केवल **14 दिनों** तक रोक सकती है; इसमें संशोधन नहीं कर सकती, केवल सिफारिशें दे सकती है जिन्हें स्वीकार करना या न करना लोकसभा पर निर्भर है।
        - धन विधेयक पर **संयुक्त बैठक का कोई प्रावधान नहीं** है।
    - **3. वित्त विधेयक (Financial Bills: अनुच्छेद 117):**
        - **वित्त विधेयक (I) [अनुच्छेद 117(1)]:** अनुच्छेद 110 के मामलों के साथ सामान्य विधायन; यह केवल लोकसभा में राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से पेश होता है, परंतु पारित होने की प्रक्रिया साधारण विधेयक जैसी है (संयुक्त बैठक संभव)।
        - **वित्त विधेयक (II) [अनुच्छेद 117(3)]:** संचित निधि से व्यय वाले उपबंध; इसे किसी भी सदन में पेश किया जा सकता है (राष्ट्रपति की अनुमति विचार के चरण पर आवश्यक; संयुक्त बैठक संभव)।
    - **4. संविधान संशोधन विधेयक (अनुच्छेद 368):**
        - किसी भी सदन में लाया जा सकता है। दोनों सदनों में **विशेष बहुमत** आवश्यक है। इस पर संयुक्त बैठक का कोई प्रावधान नहीं है और राष्ट्रपति सहमति देने हेतु **बाध्य** हैं (24वां संशोधन, 1971)।
- **विधेयकों की व्यपगतता (Lapse of Bills: अनुच्छेद 107):**

©IASHINDIMEDIUM

- लोकसभा भंग होने पर: जो विधेयक लोकसभा में लंबित हों अथवा लोकसभा द्वारा पारित होकर राज्यसभा में लंबित हों, वे **व्यपगत (Lapse)** हो जाते हैं।
- जो विधेयक राज्यसभा में लंबित हैं किंतु लोकसभा द्वारा पारित नहीं किए गए हैं, वे **व्यपगत नहीं होते**।
- राष्ट्रपति के पास लंबित अथवा संयुक्त बैठक हेतु अधिसूचित विधेयक व्यपगत नहीं होते।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **तीन नए आपराधिक कानूनों का विधायी क्रियान्वयन:** संसद द्वारा पारित तीन प्रमुख ऐतिहासिक कानूनों—**भारतीय न्याय संहिता (BNS), 2023**, **भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), 2023**, और **भारतीय साक्ष्य अधिनियम (BSA), 2023**—को 1 जुलाई 2024 से संपूर्ण देश में औपचारिक रूप से लागू किया गया। इन्होंने क्रमशः IPC 1860, CrPC 1973 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 का स्थान लिया।
  - **वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 और संयुक्त संसदीय समिति (JPC):** लोकसभा में पुरःस्थापित किए जाने के पश्चात इस संवेदनशील विधायी प्रस्ताव को दोनों सदनों की एक संयुक्त संसदीय समिति (JPC) को गहन समीक्षा एवं हितधारकों से विचार-विमर्श हेतु सौंपा गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संसद में विधायी प्रक्रिया और विधेयकों के प्रकारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कोई विधेयक धन विधेयक है या नहीं, इस पर लोकसभा अध्यक्ष का निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होता है।
2. संविधान के अनुच्छेद 108 के अंतर्गत धन विधेयक और संविधान संशोधन विधेयक दोनों के संदर्भ में गतिरोध दूर करने हेतु संसद की संयुक्त बैठक बुलाई जा सकती है।
3. अनुच्छेद 117(1) के अंतर्गत आने वाला वित्त विधेयक (I) केवल लोकसभा में और राष्ट्रपति की पूर्व संस्तुति से ही पुरःस्थापित किया जा सकता है।
4. राज्यसभा धन विधेयक को अधिकतम 14 दिनों तक रोक सकती है, जिसके पश्चात वह स्वतः दोनों सदनों द्वारा पारित मान लिया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 1, 3 और 4

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 1, 3 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **कथन 1 सही है:** अनुच्छेद 110(3) के अनुसार, यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विधेयक धन विधेयक है या नहीं, तो उस पर लोकसभा अध्यक्ष का विनिश्चय अंतिम होता है।

©IASHINDIMEDIUM

- **कथन 2 असत्य है:** अनुच्छेद 108 के तहत संयुक्त बैठक का प्रावधान केवल **साधारण विधेयक** और **वित्त विधेयकों** के लिए है। **धन विधेयक (अनुच्छेद 109)** और **संविधान संशोधन विधेयक (अनुच्छेद 368)** के संबंध में संयुक्त बैठक का कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं है।
- **कथन 3 सही है:** अनुच्छेद 117(1) के तहत वित्त विधेयक (I) में धन विधेयक जैसी दो विशेषताएं होती हैं—यह केवल राष्ट्रपति की सिफारिश पर और केवल लोकसभा में पेश हो सकता है।
- **कथन 4 सही है:** अनुच्छेद 109(5) के अनुसार, यदि राज्यसभा 14 दिनों की अवधि के भीतर धन विधेयक को अपनी सिफारिशों सहित लोकसभा को नहीं लौटाती, तो वह उसी रूप में दोनों सदनों द्वारा पारित समझा जाता है।

प्रश्न 2. लोकसभा के विघटन (Dissolution) पर संसद में लंबित विधेयकों के व्यपगत होने (Lapsing) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) कोई विधेयक जो लोकसभा में विचाराधीन या लंबित है, वह लोकसभा के विघटन पर व्यपगत हो जाता है।

(b) ऐसा विधेयक जो लोकसभा द्वारा पारित हो चुका है किंतु राज्यसभा में लंबित है, लोकसभा के विघटन पर समाप्त (व्यपगत) हो जाता है।

(c) ऐसा विधेयक जो राज्यसभा में पुरःस्थापित हुआ और वहीं लंबित है तथा जिसे लोकसभा द्वारा पारित नहीं किया गया है, लोकसभा के विघटन पर व्यपगत हो जाता है।

(d) ऐसा विधेयक जिस पर दोनों सदनों में गतिरोध होने पर राष्ट्रपति ने सदन के विघटन से पूर्व संयुक्त बैठक बुलाने की अधिसूचना जारी कर दी हो, वह व्यपगत नहीं होता है।

- **उत्तर:** (c) ऐसा विधेयक जो राज्यसभा में पुरःस्थापित हुआ और वहीं लंबित है तथा जिसे लोकसभा द्वारा पारित नहीं किया गया है, लोकसभा के विघटन पर व्यपगत हो जाता है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** अनुच्छेद 107(4) के अनुसार, ऐसा विधेयक जो राज्यसभा में लंबित है किंतु जिसे लोकसभा ने पारित नहीं किया है (अर्थात् जो कभी लोकसभा तक पहुँचा ही नहीं), वह लोकसभा के विघटन पर **व्यपगत नहीं होता** (Does not lapse)।
  - **अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं:** अनुच्छेद 107(5) के तहत लोकसभा में लंबित या लोकसभा द्वारा पारित होकर राज्यसभा में लंबित सभी विधेयक विघटन पर समाप्त हो जाते हैं; जबकि अनुच्छेद 108(5) के तहत यदि राष्ट्रपति विघटन से पूर्व संयुक्त बैठक की अधिसूचना जारी कर चुके हैं, तो वह विधेयक समाप्त नहीं होता।

टॉपिक- 33: धन विधेयक, वित्त विधेयक और संविधान संशोधन विधेयक

भारतीय संविधान के अंतर्गत विधायी प्रस्तावों को उनकी विषय-वस्तु और प्रक्रियात्मक जटिलता के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के दृष्टिकोण से इनके संवैधानिक प्रावधान और प्रक्रियात्मक अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

- **1. धन विधेयक (Money Bill: अनुच्छेद 109 एवं 110):**
  - **परिभाषा (अनुच्छेद 110):** इसमें केवल वे विषय शामिल होते हैं जो करों के अधिरोपण, उत्सादन, छूट, परिवर्तन या विनियमन; सरकार द्वारा धन उधार लेने के विनियमन; तथा भारत की संचित निधि या आकस्मिकता निधि की अभिरक्षा, उसमें धन जमा करने या निकालने से संबंधित हों।

- **विशेष प्रक्रिया (अनुच्छेद 109):**
    - यह केवल राष्ट्रपति की **पूर्व अनुशंसा** पर **केवल लोकसभा** में ही पुरःस्थापित (Introduce) किया जा सकता है।
    - कोई विधेयक धन विधेयक है या नहीं, इसका अंतिम और बाध्यकारी निर्णय **लोकसभा अध्यक्ष (Speaker)** करते हैं [अनुच्छेद 110(3)]।
    - राज्यसभा इसे अस्वीकार या संशोधित नहीं कर सकती; वह केवल 14 दिनों के भीतर अपनी सिफारिशों सहित लौटा सकती है। लोकसभा इन सिफारिशों को मानने हेतु बाध्य नहीं है। यदि 14 दिनों में न लौटे, तो यह दोनों सदनों द्वारा पारित मान लिया जाता है।
    - धन विधेयक पर गतिरोध का कोई प्रश्न नहीं उठता, अतः इस पर **संयुक्त बैठक (अनुच्छेद 108) का कोई प्रावधान नहीं** है।

- **2. वित्त विधेयक (Financial Bill: अनुच्छेद 117):**
    - सभी धन विधेयक वित्त विधेयक होते हैं, किंतु सभी वित्त विधेयक धन विधेयक नहीं होते। इन्हें दो श्रेणियों में बांटा गया है:
        - **वित्त विधेयक (I) [अनुच्छेद 117(1)]:** इसमें अनुच्छेद 110 के मामलों के साथ-साथ अन्य सामान्य विधायी विषय भी शामिल होते हैं। यह केवल राष्ट्रपति की पूर्व संस्तुति पर केवल लोकसभा में पेश होता है, किंतु इसके पश्चात इसे सामान्य विधेयक की भांति दोनों सदनों द्वारा पारित किया जाता है (इस पर **संयुक्त बैठक बुलाई जा सकती है**)।
        - **वित्त विधेयक (II) [अनुच्छेद 117(3)]:** इसमें भारत की संचित निधि से व्यय से संबंधित उपबंध होते हैं, किंतु अनुच्छेद 110 का कोई विषय नहीं होता। इसे किसी भी सदन में सामान्य विधेयक की तरह बिना राष्ट्रपति की पूर्व संस्तुति के पेश किया जा सकता है, परंतु विचार (Consideration) के चरण पर राष्ट्रपति की सिफारिश अनिवार्य होती है (इस पर भी **संयुक्त बैठक संभव** है)।

- **3. संविधान संशोधन विधेयक (Constitutional Amendment Bill: अनुच्छेद 368):**
    - इसे संसद के **किसी भी सदन** में किसी मंत्री या गैर-सरकारी सदस्य द्वारा बिना राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति के पुरःस्थापित किया जा सकता है।
    - इसे दोनों सदनों द्वारा अलग-अलग **विशेष बहुमत** (सदन की कुल सदस्य संख्या का बहुमत + उपस्थित एवं मतदान करने वाले सदस्यों का न्यूनतम 2/3 बहुमत) से पारित होना अनिवार्य है।
    - यदि संशोधन संघीय ढांचे को प्रभावित करता है (अनुच्छेद 368(2)), तो कम से कम **आधे राज्यों के विधानमंडलों के साधारण बहुमत** से अनुसमर्थन आवश्यक है।
    - इस पर **संयुक्त बैठक का कोई प्रावधान नहीं** है।
    - **24वें संविधान संशोधन, 1971** के द्वारा यह अनिवार्य कर दिया गया कि राष्ट्रपति संविधान संशोधन विधेयक पर अपनी **स्वीकृति देने के लिए बाध्य** हैं (वे इसे रोक या पुनर्विचार हेतु लौटा नहीं सकते)।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
    - **धन विधेयक के रूप में कानून पारित करने पर 7-न्यायाधीशों की संविधान पीठ:** वित्त अधिनियम, 2017 (न्यायाधिकरण सुधार) और प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (PMLA) संशोधनों को 'धन विधेयक' के रूप में पारित

कराने की संवैधानिकता का परीक्षण करने हेतु सर्वोच्च न्यायालय की 7-न्यायाधीशों की संविधान पीठ गठित की गई। न्यायालय इस बात की विधिक समीक्षा कर रहा है कि क्या अनुच्छेद 110(1) के अंतर्गत "केवल" (Only) शब्द की उपेक्षा कर गैर-वित्तीय प्रावधानों को धन विधेयक में शामिल करना राज्यसभा की संवैधानिक शक्तियों का हनन है।

- **106वाँ संविधान संशोधन अधिनियम लागू होने की प्रक्रिया:** 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' (106वाँ संशोधन) संविधान के अनुच्छेद 368 के अंतर्गत संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत से पारित हुआ। इसमें राज्यों के विधानमंडलों के अनुसमर्थन की संवैधानिक अनिवार्यता और आगामी परिसीमन से जुड़े विधिक पहलुओं पर व्यापक चर्चा रही।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. धन विधेयक (Money Bill) और वित्त विधेयक (Financial Bill) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रत्येक धन विधेयक एक वित्त विधेयक होता है, परंतु प्रत्येक वित्त विधेयक धन विधेयक नहीं होता।
2. वित्त विधेयक (I) [अनुच्छेद 117(1)] को केवल लोकसभा में पुरःस्थापित किया जा सकता है, जबकि वित्त विधेयक (II) [अनुच्छेद 117(3)] को संसद के किसी भी सदन में पुरःस्थापित किया जा सकता है।
3. साधारण विधेयकों की भांति वित्त विधेयक (I) और वित्त विधेयक (II) दोनों पर सदनों के मध्य गतिरोध होने की स्थिति में अनुच्छेद 108 के तहत संयुक्त बैठक बुलाई जा सकती है।
4. राज्यसभा वित्त विधेयक (I) को अस्वीकार नहीं कर सकती और उसे 14 दिनों के भीतर इसे पारित करना अनिवार्य होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 1, 2 और 3

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 1, 2 और 3
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 सही है:** अनुच्छेद 110 के अंतर्गत आने वाले सभी विषय वित्तीय मामलों से जुड़े हैं, अतः सभी धन विधेयक वित्त विधेयक की व्यापक श्रेणी में आते हैं, किंतु वित्त विधेयकों में अन्य विधायी विषय भी शामिल हो सकते हैं।
    - **कथन 2 सही है:** संविधान के अनुच्छेद 117(1) के तहत वित्त विधेयक (I) को केवल राष्ट्रपति की पूर्व सिफारिश पर लोकसभा में ही पेश किया जा सकता है, जबकि अनुच्छेद 117(3) के तहत वित्त विधेयक (II) को सामान्य विधेयक की तरह किसी भी सदन (लोकसभा या राज्यसभा) में पेश किया जा सकता है।
    - **कथन 3 सही है:** यद्यपि वित्त विधेयक (I) लोकसभा में ही पेश होता है, परंतु पेश होने के बाद इसकी पारित होने की प्रक्रिया साधारण विधेयक जैसी ही होती है। अतः दोनों प्रकार के वित्त विधेयकों (I और II) पर दोनों सदनों के मध्य असहमति होने पर राष्ट्रपति अनुच्छेद 108 के अंतर्गत संयुक्त बैठक बुला सकते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- **कथन 4 असत्य है:** केवल **धन विधेयक (अनुच्छेद 109)** के मामले में राज्यसभा के अधिकार 14 दिनों तक सीमित हैं। वित्त विधेयक (I) के मामले में राज्यसभा को साधारण विधेयक के समान पूरी शक्तियां प्राप्त हैं—वह इसे संशोधित या अस्वीकार भी कर सकती है।

प्रश्न 2. संविधान संशोधन विधेयक (अनुच्छेद 368) के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) संविधान संशोधन विधेयक को संसद के किसी भी सदन में किसी मंत्री अथवा गैर-सरकारी सदस्य द्वारा पुरःस्थापित किया जा सकता है।

(b) इस विधेयक को पुरःस्थापित करने के लिए भारत के राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति या संस्तुति की आवश्यकता नहीं होती है।

(c) दोनों सदनों के मध्य गतिरोध की स्थिति में संविधान संशोधन विधेयक को पारित कराने हेतु अनुच्छेद 108 के तहत संयुक्त बैठक का आयोजन किया जा सकता है।

(d) 24वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1971 द्वारा राष्ट्रपति के लिए संविधान संशोधन विधेयक पर अपनी सहमति देना अनिवार्य बना दिया गया है।

उत्तर: (c) दोनों सदनों के मध्य गतिरोध की स्थिति में संविधान संशोधन विधेयक को पारित कराने हेतु अनुच्छेद 108 के तहत संयुक्त बैठक का आयोजन किया जा सकता है।

विस्तृत व्याख्या:

विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है): अनुच्छेद 368 के तहत संविधान संशोधन विधेयक को दोनों सदनों द्वारा अलग-अलग विशेष बहुमत से पारित होना अनिवार्य है। यदि किसी एक सदन द्वारा इसे अस्वीकार कर दिया जाता है, तो विधेयक समाप्त हो जाता है; इसमें **संयुक्त बैठक का कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं** है।

अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं: संविधान संशोधन विधेयक किसी भी सदन में और किसी भी सदस्य (सरकारी या गैर-सरकारी) द्वारा पेश किया जा सकता है; इसके लिए राष्ट्रपति की पूर्व संस्तुति की आवश्यकता नहीं होती; तथा 24वें संविधान संशोधन (1971) के बाद राष्ट्रपति इस पर वीटो का प्रयोग नहीं कर सकते, उन्हें अनिवार्य रूप से अपनी अनुमति देनी होती है।

©IASHINDIMEDIUM

न्यायपालिका

टॉपिक- 39: उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) का गठन और क्षेत्राधिकार

भारतीय संविधान के **भाग-5 के अध्याय-4** के अंतर्गत **अनुच्छेद 124 से 147** तक उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) के गठन, स्वतंत्रता, अधिकारिता, शक्तियों एवं प्रक्रियाओं का उल्लेख है। 28 जनवरी 1950 को अस्तित्व में आया यह न्यायालय भारत की एकीकृत न्यायपालिका का शीर्ष निकाय है।

- **1. गठन, संरचना एवं पदमुक्ति (अनुच्छेद 124):**
    - **न्यायाधीशों की संख्या:** मूल संविधान में 1 मुख्य न्यायाधीश (CJI) और 7 अन्य न्यायाधीश (कुल 8) थे। संविधान के **अनुच्छेद 124(1)** के तहत संसद को विधि द्वारा न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने की शक्ति प्राप्त है।
    - **नियुक्ति एवं कॉलेजियम प्रणाली:** नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। *तृतीय न्यायाधीश वाद (1998)* के अनुसार, CJI और 4 वरिष्ठतम न्यायाधीशों का **5-सदस्यीय कॉलेजियम** उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों के नामों की सिफारिश करता है।
    - **योग्यताएं [अनुच्छेद 124(3)]:** भारत का नागरिक हो तथा: (a) किसी उच्च न्यायालय में कम से कम 5 वर्ष न्यायाधीश रहा हो; अथवा (b) किसी उच्च न्यायालय में कम से कम 10 वर्ष तक अधिवक्ता रहा हो; अथवा (c) **राष्ट्रपति की राय में एक पारंगत विधिवेत्ता (Distinguished Jurist)** हो।
    - **कार्यकाल व पदमुक्ति:** 65 वर्ष की आयु तक। पद से हटाने हेतु संसद के दोनों सदनों द्वारा अलग-अलग **विशेष बहुमत** (कुल सदस्यों का बहुमत + उपस्थित व मतदान करने वालों का 2/3) से पारित समावेदन पर राष्ट्रपति के आदेश द्वारा केवल दो आधारों पर हटाया जा सकता है: **'सिद्ध कदाचार' (Proved Misbehaviour)** अथवा **'असमर्थता' (Incapacity)** [अनुच्छेद 124(4)]।
- **2. क्षेत्राधिकार एवं शक्तियाँ (UPPCS हेतु प्रमुख अनुच्छेद):**
    - **मूल / आरंभिक अधिकारिता (Original Jurisdiction - अनुच्छेद 131):**
        - केंद्र बनाम एक या अधिक राज्य; केंद्र व कुछ राज्य बनाम अन्य राज्य; अथवा दो या अधिक राज्यों के पारस्परिक विवाद।
        - *(अपवाद: संविधान-पूर्व की संधियां, अंतर-राज्यीय जल विवाद [अनु. 262] और वित्त आयोग के मामले इसमें शामिल नहीं हैं)*।
    - **रिट अधिकारिता (अनुच्छेद 32):** केवल **मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन** हेतु 5 प्रकार की रिटें (बंदी प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, उत्प्रेषण, अधिकार-पृच्छा) जारी करना।
    - **अपीलीय अधिकारिता (अनुच्छेद 132–134A):** संवैधानिक, दीवानी और आपराधिक मामलों में उच्च न्यायालय के निर्णयों के विरुद्ध अपील।

©IASHINDIMEDIUM

- **विशेष अनुमति याचिका (Special Leave Petition - अनुच्छेद 136):** सैन्य न्यायालयों को छोड़कर भारत के किसी भी न्यायालय या न्यायाधिकरण के निर्णय के विरुद्ध अपील की विवेकानुसार विशेष अनुमति देना।
- **सलाहकारी अधिकारिता (अनुच्छेद 143):** सार्वजनिक महत्व के विधि या तथ्य के प्रश्न पर राष्ट्रपति द्वारा मांगे जाने पर परामर्श देना (परामर्श राष्ट्रपति पर बाध्यकारी नहीं)।
- **अभिलेख न्यायालय (Court of Record - अनुच्छेद 129):** इसके निर्णयों का साक्ष्य मूल्य होता है तथा इसे अपनी अवमानना (Contempt of Court) हेतु दंडित करने की शक्ति प्राप्त है।
- **पूर्ण न्याय करने की शक्ति (अनुच्छेद 142):** अपने समक्ष लंबित किसी वाद में "पूर्ण न्याय" (Complete Justice) करने के लिए कोई भी आवश्यक आदेश/डिक्री पारित करने की असाधारण शक्ति।
- **निर्णयों का पुनर्विलोकन (अनुच्छेद 137):** अपने पूर्व निर्णयों या आदेशों की समीक्षा करने का अधिकार।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या में वृद्धि:** संसद द्वारा पारित *उच्चतम न्यायालय (न्यायाधीश संख्या) संशोधन विधेयक* को राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलने के साथ ही शीर्ष अदालत में न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या को मुख्य न्यायाधीश सहित **34 से बढ़ाकर 38** कर दिया गया है। यह वृद्धि संविधान पीठों के गठन और लंबित मामलों के तीव्र निस्तारण हेतु की गई है।
  - **न्यायिक नियुक्तियाँ एवं 51वें CJI का कार्यकाल:** न्यायमूर्ति संजीव खन्ना ने देश के **51वें मुख्य न्यायाधीश (CJI)** के रूप में पदभार ग्रहण किया (कार्यकाल: 11 नवंबर 2024 से 13 मई 2025)।
  - **अनुच्छेद 142 के तहत तलाक और बुलडोजर कार्रवाई पर ऐतिहासिक दिशानिर्देश:** शीर्ष अदालत ने अनुच्छेद 142 की असाधारण शक्तियों के दायरे को पुनः रेखांकित करते हुए बिना विधिक प्रक्रिया के की जाने वाली दंडात्मक ध्वस्तीकरण (Bulldozer Action) की कार्रवाइयों को विधि के शासन का उल्लंघन घोषित किया और अखिल भारतीय दिशानिर्देश निर्धारित किए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के उच्चतम न्यायालय के क्षेत्राधिकार एवं शक्तियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संविधान के अनुच्छेद 131 के अंतर्गत अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद उच्चतम न्यायालय की अनन्य मूल अधिकारिता (Original Jurisdiction) का हिस्सा हैं।
2. संविधान के अनुच्छेद 143 के तहत राष्ट्रपति द्वारा मांगे गए किसी विधिक परामर्श पर उच्चतम न्यायालय द्वारा दी गई राय राष्ट्रपति पर बाध्यकारी होती है।
3. अनुच्छेद 129 के अंतर्गत उच्चतम न्यायालय को एक अभिलेख न्यायालय (Court of Record) माना गया है और उसे अपनी अवमानना के लिए दंड देने की शक्ति प्राप्त है।
4. उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या में परिवर्तन करने का अधिकार भारत की संसद को विधि बनाकर प्राप्त है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 3 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 असत्य है:** संविधान के अनुच्छेद 262(2) के तहत अंतर-राज्यीय नदियों या नदी घाटियों के जल-बंटवारे से जुड़े विवादों को संसद विधि बनाकर अनुच्छेद 131 की मूल अधिकारिता से बाहर कर सकती है (अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम, 1956 के तहत ये ट्रिब्यूनल को जाते हैं, अतः ये अनुच्छेद 131 में शामिल नहीं हैं)।
    - **कथन 2 असत्य है:** अनुच्छेद 143 के अंतर्गत उच्चतम न्यायालय द्वारा राष्ट्रपति को दिया गया परामर्श केवल सलाहकारी होता है; राष्ट्रपति इसे मानने के लिए बाध्य नहीं होते।
    - **कथन 3 सही है:** अनुच्छेद 129 उच्चतम न्यायालय को 'अभिलेख न्यायालय' घोषित करता है, जिसके सभी निर्णयों का साक्ष्य मूल्य होता है और उसे स्वयं की अवमानना हेतु दंड देने की आंतरिक शक्ति है।
    - **कथन 4 सही है:** संविधान के अनुच्छेद 124(1) के अनुसार, उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या निर्धारित करने का अनन्य अधिकार केवल संसद के पास है (संसद कानून बनाकर इसमें संशोधन करती है)।

प्रश्न 2. उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की योग्यता एवं पदमुक्ति प्रक्रिया के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) राष्ट्रपति की दृष्टि में 'पारंगत विधिवेत्ता' (Distinguished Jurist) होना उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त होने की एक संवैधानिक योग्यता है।

(b) उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश को पद से हटाने हेतु महाभियोग प्रस्ताव संसद के दोनों सदनों द्वारा साधारण बहुमत से पारित होना पर्याप्त होता है।

(c) न्यायाधीशों को हटाने का आधार केवल 'सिद्ध कदाचार' (Proved Misbehaviour) अथवा 'असमर्थता' (Incapacity) ही हो सकता है।

(d) संविधान के अनुच्छेद 136 के अंतर्गत उच्चतम न्यायालय सैन्य न्यायालयों (Court Martial) के निर्णयों के विरुद्ध विशेष अनुमति याचिका (SLP) स्वीकार नहीं कर सकता।

- **उत्तर:** (b) उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश को पद से हटाने हेतु महाभियोग प्रस्ताव संसद के दोनों सदनों द्वारा साधारण बहुमत से पारित होना पर्याप्त होता है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (b) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** अनुच्छेद 124(4) के अनुसार, किसी न्यायाधीश को पद से हटाने के लिए संसद के प्रत्येक सदन द्वारा अपनी कुल सदस्य संख्या के बहुमत तथा उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के कम से कम **दो-तिहाई (2/3) विशेष बहुमत** द्वारा समावेदन पारित किया जाना अनिवार्य होता है, साधारण बहुमत से नहीं।
    - **अन्य विकल्प (a, c, d) पूर्णतः सत्य हैं:** अनुच्छेद 124(3)(c) के तहत राष्ट्रपति की राय में पारंगत विधिवेत्ता होना मान्य योग्यता है; पदमुक्ति के दो ही आधार हैं (सिद्ध कदाचार या असमर्थता); तथा अनुच्छेद 136(2) स्पष्ट करता है कि

सशस्त्र बलों से संबंधित किसी विधि द्वारा गठित न्यायालय या अधिकरण (Court Martial) के निर्णय पर अनुच्छेद 136 लागू नहीं होता।

टॉपिक- 40: कॉलेजियम प्रणाली और न्यायाधीशों की नियुक्ति

भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 124(2)** के तहत उच्चतम न्यायालय तथा **अनुच्छेद 217(1)** के तहत उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति **राष्ट्रपति** द्वारा की जाती है। संविधान में 'कॉलेजियम' (Collegium) शब्द का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है; यह प्रणाली न्यायिक निर्णयों (Judges Cases) के माध्यम से विकसित एक न्यायपालिका-निर्मित व्यवस्था है।

- **कॉलेजियम प्रणाली का क्रमिक विकास (न्यायाधीश वाद):**

    1. **प्रथम न्यायाधीश वाद (SP गुप्ता वाद, 1981):** उच्चतम न्यायालय ने माना कि अनुच्छेद 124(2) में प्रयुक्त शब्द **'परामर्श' (Consultation) का अर्थ 'सहमति' (Concurrence) नहीं** है। कार्यपालिका को न्यायिक नियुक्तियों में प्रधानता दी गई और CJI की राय को बाध्यकारी नहीं माना गया।
    2. **द्वितीय न्यायाधीश वाद (1993 - SC Advocates-on-Record Association वाद):** न्यायालय ने पूर्व निर्णय को पलटते हुए निर्धारित किया कि **'परामर्श' का वास्तविक अर्थ 'सहमति' है**। इसके तहत कॉलेजियम प्रणाली का जन्म हुआ। CJI की सिफारिश केवल उनकी व्यक्तिगत राय नहीं, बल्कि दो वरिष्ठतम न्यायाधीशों के परामर्श से ली गई संस्थागत राय मानी गई।
    3. **तृतीय न्यायाधीश वाद (1998 - राष्ट्रपति संदर्भ अनुच्छेद 143):** सर्वोच्च न्यायालय ने कॉलेजियम का विस्तार किया:
        - **सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति:** भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) + **4 वरिष्ठतम न्यायाधीश** (कुल 5 सदस्यीय कॉलेजियम)।
        - **उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति:** CJI + **2 वरिष्ठतम न्यायाधीश**।
        - यदि कॉलेजियम के दो न्यायाधीश भी किसी नाम के विरुद्ध राय देते हैं, तो CJI उस नाम की सिफारिश केंद्र को नहीं भेजेंगे।
- **99वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2014 और NJAC:**
    - संसद ने न्यायिक नियुक्तियों में पारदर्शिता हेतु **राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (NJAC)** का गठन किया।
    - **चतुर्थ न्यायाधीश वाद (2015):** 5-न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने 99वें संशोधन और NJAC अधिनियम को **असंवैधानिक एवं शून्य** घोषित कर दिया। न्यायालय ने तर्क दिया कि कॉलेजियम प्रणाली के बिना न्यायिक स्वतंत्रता (जो संविधान के **मूल ढांचे** का हिस्सा है) प्रभावित होती है। इसके साथ ही पुरानी कॉलेजियम व्यवस्था पुनः बहाल हो गई।
- **प्रक्रिया ज्ञापन (Memorandum of Procedure - MoP):**

©IASHINDIMEDIUM

- कॉलेजियम द्वारा अनुशंसित नामों पर केंद्र सरकार पुनर्विचार हेतु फाइल वापस भेज सकती है; किंतु यदि कॉलेजियम सर्वसम्मति से उसी नाम को **पुनः दोहरा (Reiterate)** देता है, तो सरकार उस नियुक्ति को अधिसूचित करने के लिए **बाध्य** है।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**

  - **कॉलेजियम की सिफारिशों पर केंद्र द्वारा विलंब पर उच्चतम न्यायालय की टिप्पणी:** सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने कॉलेजियम द्वारा दोहराए गए (Reiterated) नामों को महीनों तक रोके रखने (Pocket Veto) की केंद्र सरकार की कार्यप्रणाली पर गंभीर चिंता व्यक्त की। शीर्ष अदालत ने स्पष्ट किया कि MoP के स्थापित नियमों के तहत एक बार कॉलेजियम द्वारा नाम दोहरा दिए जाने के बाद सरकार के पास नियुक्ति की अधिसूचना जारी करने के अतिरिक्त कोई विधिक विकल्प नहीं बचता।

  - **उच्च न्यायपालिका में प्रतिनिधित्व एवं पारदर्शिता:** कॉलेजियम द्वारा उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में रिक्तियों को भरते समय पहली बार उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों के चयन हेतु अखिल भारतीय वरिष्ठता, क्षेत्रीय संतुलन, और हाशिए के वर्गों (महिला, अल्पसंख्यक व SC/ST) के प्रतिनिधित्व के स्पष्ट मानदंड सार्वजनिक किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में उच्चतर न्यायपालिका में न्यायाधीशों की नियुक्ति हेतु 'कॉलेजियम प्रणाली' के ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 124 में मूल रूप से 'कॉलेजियम' शब्द को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया था।
2. प्रथम न्यायाधीश वाद (1981) में उच्चतम न्यायालय ने यह निर्णय दिया था कि परामर्श (Consultation) का अर्थ सहमति (Concurrence) नहीं होता है।
3. द्वितीय न्यायाधीश वाद (1993) के बाद कॉलेजियम प्रणाली का उद्भव हुआ, जिसमें परामर्श का अर्थ सहमति माना गया।
4. 99वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2014 द्वारा स्थापित राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (NJAC) को सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के मूल ढांचे के उल्लंघन के आधार पर असंवैधानिक घोषित कर दिया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2, 3 और 4

(c) केवल 1, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**

  - **कथन 1 असत्य है:** संविधान के किसी भी अनुच्छेद में 'कॉलेजियम' शब्द का उल्लेख नहीं है। यह न्यायपालिका द्वारा 1993 और 1998 के निर्णयों से विकसित एक प्रथागत प्रक्रिया है।

  - **कथन 2 सही है:** *एसपी गुप्ता वाद (1981)* में न्यायालय ने कार्यपालिका को वरीयता देते हुए माना था कि राष्ट्रपति के लिए CJI की राय मानना बाध्यकारी नहीं है, अर्थात् परामर्श का अर्थ सहमति नहीं है।

- **कथन 3 सही है:** *द्वितीय न्यायाधीश वाद (1993)* में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने पिछले निर्णय को बदलते हुए स्पष्ट किया कि परामर्श का वास्तविक तात्पर्य सहमति है और CJI की अध्यक्षता में कॉलेजियम की शुरुआत हुई।
- **कथन 4 सही है:** वर्ष 2015 के *चौथे न्यायाधीश वाद* में 5 जजों की संविधान पीठ ने 99वें संविधान संशोधन और NJAC को न्यायपालिका की स्वतंत्रता (मूल ढांचा) का हनन मानते हुए रद्द कर दिया था।

प्रश्न 2. कॉलेजियम प्रणाली की कार्यप्रणाली और संरचना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति की सिफारिश करने वाले कॉलेजियम में भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) और सर्वोच्च न्यायालय के चार वरिष्ठतम न्यायाधीश शामिल होते हैं।

(b) उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की पदोन्नति/नियुक्ति हेतु सर्वोच्च न्यायालय का कॉलेजियम भारत के मुख्य न्यायाधीश तथा दो वरिष्ठतम न्यायाधीशों से मिलकर बनता है।

(c) यदि कॉलेजियम किसी नाम की सिफारिश को केंद्र की आपत्ति के बाद पुनः दोहरा (Reiterate) देता है, तो स्थापित प्रक्रिया ज्ञापन (MoP) के अनुसार केंद्र सरकार उस नियुक्ति को स्वीकार करने के लिए बाध्य होती है।

(d) उच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश का किसी अन्य उच्च न्यायालय में स्थानांतरण (Transfer) करने का अंतिम निर्णय संबंधित राज्यों के राज्यपालों की पारस्परिक सहमति से लिया जाता है।

- **उत्तर:** (d) उच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश का किसी अन्य उच्च न्यायालय में स्थानांतरण (Transfer) करने का अंतिम निर्णय संबंधित राज्यों के राज्यपालों की पारस्परिक सहमति से लिया जाता है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **विकल्प (d) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** संविधान के अनुच्छेद 222 के तहत किसी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के स्थानांतरण का निर्णय राष्ट्रपति द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) के परामर्श से किया जाता है। तीसरे न्यायाधीश वाद (1998) के अनुसार, स्थानांतरण के मामले में CJI को 4 वरिष्ठतम न्यायाधीशों वाले कॉलेजियम तथा संबंधित दोनों उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों से परामर्श करना अनिवार्य है; इसमें राज्यों के राज्यपालों की पारस्परिक सहमति की कोई भूमिका नहीं होती।
  - **अन्य विकल्प (a, b, c) पूर्णतः सत्य हैं:** उच्चतम न्यायालय की नियुक्तियों हेतु कॉलेजियम 1+4 का होता है; उच्च न्यायालय की नियुक्तियों हेतु सर्वोच्च न्यायालय का कॉलेजियम 1+2 का होता है; तथा कॉलेजियम द्वारा नाम दोहराए जाने पर सरकार उसे रोकने हेतु विधिक रूप से अधिकृत नहीं है।

टॉपिक- 41: न्यायिक समीक्षा (Judicial Review) और न्यायिक सक्रियता (Judicial Activism)

भारतीय संविधान में शक्ति-संतुलन तथा संविधान की सर्वोच्चता बनाए रखने के लिए न्यायपालिका को न्यायिक समीक्षा और न्यायिक सक्रियता की महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई है।

- **1. न्यायिक समीक्षा (Judicial Review):**
  - **उद्भव एवं स्रोत:** यह सिद्धांत मूलतः **अमेरिकी संविधान** (*मार्बरी बनाम मैडिसन वाद, 1803* - जस्टिस जॉन मार्शल) से प्रेरित है।
  - **संवैधानिक स्थिति:** यद्यपि संविधान में 'न्यायिक समीक्षा' (Judicial Review) शब्द का प्रत्यक्ष उल्लेख कहीं नहीं किया गया है, किंतु यह सिद्धांत कई अनुच्छेदों में अंतर्निहित है:

- **अनुच्छेद 13(2):** राज्य ऐसी कोई विधि नहीं बनाएगा जो मूल अधिकारों को छीनती या न्यून करती हो; उल्लंघन की सीमा तक विधि शून्य होगी।
- **अनुच्छेद 32 एवं 226:** क्रमशः उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों को मूल अधिकारों के प्रवर्तन हेतु रिट जारी करने की शक्ति।
- **अनुच्छेद 131–136:** उच्चतम न्यायालय की विभिन्न अधिकारिताएँ।
- **अनुच्छेद 245 एवं 246:** विधायी शक्तियों के वितरण की सीमाएं।

- **मूल ढांचा घोषित:** *केशवानंद भारती वाद (1973)*, *इंदिरा नेहरू गांधी वाद (1975)* और *मिनर्वा मिल्स वाद (1980)* में सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायिक समीक्षा को **संविधान का 'आधारभूत ढांचा' (Basic Structure)** घोषित किया, जिसे अनुच्छेद 368 के तहत भी समाप्त नहीं किया जा सकता।
- **न्यायिक समीक्षा के तीन प्रमुख आधार:**
  1. कानून बनाने वाले विधानमंडल की विधायी सक्षमता (Legislative Competence) का अभाव।
  2. मौलिक अधिकारों या संविधान के किसी अन्य भाग का उल्लंघन।
  3. प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों या संवैधानिक नैतिकता की अवहेलना।

- **2. न्यायिक सक्रियता (Judicial Activism):**
  - **अर्थ एवं उद्भव:** जब न्यायपालिका कार्यपालिका और विधायिका की निष्क्रियता के कारण नागरिक अधिकारों के संरक्षण हेतु स्वतः संज्ञान लेकर आगे बढ़ती है, तो उसे न्यायिक सक्रियता कहा जाता है। भारत में इसका प्रादुर्भाव 1970 के दशक के उत्तरार्ध में **जस्टिस पी.एन. भगवती** और **जस्टिस वी.आर. कृष्णा अय्यर** के प्रयासों से हुआ।
  - **जनहित याचिका (PIL):** न्यायिक सक्रियता का मुख्य साधन **PIL** बना, जिसने *'लोकस स्टैंडाई'* (Locus Standi - पीड़ित पक्षकार होने का नियम) के पारंपरिक सिद्धांत को शिथिल कर दिया।
  - **अनुच्छेद 21 का विस्तार:** *मेनका गांधी वाद (1978)* के बाद न्यायपालिका ने "विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया" की जगह अमेरिकी संकल्पना **"विधि की सम्यक प्रक्रिया" (Due Process of Law)** को लागू करते हुए स्वच्छ पर्यावरण, निजता, आजीविका और त्वरित विचारण जैसे अधिकारों को मूल अधिकार बनाया।
  - **न्यायिक अतिक्रमण (Judicial Overreach):** जब न्यायपालिका नीति निर्माण या प्रशासनिक कार्यों में अत्यधिक हस्तक्षेप करने लगती है, तो यह 'अतिक्रमण' कहलाता है, जो शक्ति के पृथक्करण (अनुच्छेद 50) के विपरीत है।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **बुलडोजर न्याय (Bulldozer Action) पर अखिल भारतीय न्यायिक समीक्षा:** सर्वोच्च न्यायालय ने कार्यपालिका द्वारा आरोपियों/दोषियों की संपत्तियों पर की जाने वाली मनमानी ध्वस्तीकरण कार्रवाई की न्यायिक समीक्षा करते हुए स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए। न्यायालय ने माना कि कार्यपालिका स्वयं न्यायाधीश बनकर दंड नहीं दे सकती; ऐसा कृत्य 'शक्ति के पृथक्करण' और 'विधि के शासन' का घोर उल्लंघन है।
  - **जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध अधिकार:** शीर्ष अदालत ने अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) और अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) के तहत न्यायिक सक्रियता दिखाते हुए 'जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त होने के अधिकार' को एक अलग मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी।

©IASHINDIMEDIUM

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संविधान में 'न्यायिक समीक्षा' (Judicial Review) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 13 में 'न्यायिक समीक्षा' शब्द को प्रत्यक्ष रूप से परिभाषित किया गया है।
2. मिनर्वा मिल्स वाद (1980) में उच्चतम न्यायालय ने यह निर्धारित किया कि न्यायिक समीक्षा की शक्ति संविधान के आधारभूत ढांचे (Basic Structure) का एक अभिन्न अंग है।
3. न्यायिक समीक्षा की शक्ति केवल भारत के उच्चतम न्यायालय में निहित है, राज्यों के उच्च न्यायालयों को यह अधिकार प्राप्त नहीं है।
4. न्यायिक समीक्षा का सिद्धांत मूल रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से प्रेरित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 3

(b) केवल 2 और 4

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 2 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 असत्य है:** संविधान के किसी भी अनुच्छेद (अनुच्छेद 13 सहित) में 'न्यायिक समीक्षा' शब्द का प्रत्यक्ष उल्लेख या परिभाषा नहीं है; अनुच्छेद 13 केवल विधियों के मूल अधिकारों के असंगत होने पर शून्य होने का सिद्धांत देता है।
    - **कथन 2 सही है:** *मिनर्वा मिल्स वाद (1980)* तथा *केशवानंद भारती वाद (1973)* में न्यायालय ने न्यायिक समीक्षा को संविधान का 'मूल ढांचा' घोषित किया था।
    - **कथन 3 असत्य है:** न्यायिक समीक्षा की शक्ति केवल उच्चतम न्यायालय (अनुच्छेद 32, 131-136) तक सीमित नहीं है, बल्कि राज्यों के **उच्च न्यायालयों को भी अनुच्छेद 226 और 227** के तहत यह अधिकार व्यापक रूप से प्राप्त है।
    - **कथन 4 सही है:** भारत में न्यायिक समीक्षा की अवधारणा संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान और वहां के 1803 के प्रसिद्ध *मार्बरी बनाम मैडिसन वाद* से ली गई है।

प्रश्न 2. 'न्यायिक सक्रियता' (Judicial Activism) और 'जनहित याचिका' (PIL) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) भारत में जनहित याचिका की अवधारणा को प्रारंभ करने का श्रेय मुख्य रूप से न्यायमूर्ति पी.एन. भगवती और न्यायमूर्ति वी.आर. कृष्णा अय्यर को दिया जाता है।

(b) मेनका गांधी वाद (1978) के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 21 की व्याख्या में 'विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया' के स्थान पर 'विधि की सम्यक प्रक्रिया' (Due Process of Law) के सिद्धांत को अंतर्निहित माना।

(c) जनहित याचिका प्रस्तुत करने के लिए याचिकाकर्ता का उस मामले में व्यक्तिगत रूप से पीड़ित या प्रत्यक्ष हितधारक होना अनिवार्य शर्त है।

©IASHINDIMEDIUM

(d) न्यायपालिका द्वारा कार्यपालिका या विधायिका के विशेष नीतिगत और विधायी क्षेत्राधिकार में अवांछित हस्तक्षेप को 'न्यायिक अतिक्रमण' (Judicial Overreach) कहा जाता है।

- **उत्तर:** (c) जनहित याचिका प्रस्तुत करने के लिए याचिकाकर्ता का उस मामले में व्यक्तिगत रूप से पीड़ित या प्रत्यक्ष हितधारक होना अनिवार्य शर्त है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** जनहित याचिका (PIL) का सबसे प्रमुख क्रांतिकारी पहलू ही यह है कि इसने *'लोकस स्टैंडाई'* (Locus Standi - पीड़ित व्यक्ति द्वारा ही वाद लाने) के पारंपरिक नियम को समाप्त कर दिया। इसके तहत कोई भी जनहित-प्रेरित नागरिक या संस्था उन लोगों के अधिकारों के लिए न्यायालय जा सकती है जो गरीबी, अज्ञानता या सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन के कारण स्वयं अदालत नहीं पहुंच सकते।
    - **अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं:** जस्टिस भगवती व कृष्णा अय्यर को इसका जनक माना जाता है; मेनका गांधी वाद से अनुच्छेद 21 का अभूतपूर्व विस्तार हुआ; और शक्ति पृथक्करण की सीमाओं को लांघकर नीति निर्माण में दखल देना न्यायिक अतिक्रमण कहलाता है।

©IASHINDIMEDIUM

स्थानीय शासन

टॉपिक- 46: 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 (पंचायती राज व्यवस्था)

भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों के **अनुच्छेद 40** (ग्राम पंचायतों का संगठन) को व्यावहारिक रूप देने तथा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को संस्थागत बनाने हेतु **73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992** पारित किया गया। यह अधिनियम **24 अप्रैल 1993** से संपूर्ण देश में प्रभावी हुआ (इसीलिए प्रतिवर्ष 24 अप्रैल को **'राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस'** मनाया जाता है)।

इसके द्वारा संविधान में **भाग-9 (अनुच्छेद 243 से 243-O)** तथा **11वीं अनुसूची** जोड़ी गई, जिसमें पंचायतों को सौंपे जाने वाले **29 कार्यात्मक विषय** शामिल हैं।

- **त्रिस्तरीय पंचायती राज संरचना (अनुच्छेद 243B):**
    - प्रत्येक राज्य में ग्राम, मध्यवर्ती (प्रखंड/ब्लॉक) तथा जिला स्तर पर पंचायतों का गठन अनिवार्य है।
    - **अपवाद:** जिस राज्य की जनसंख्या **20 लाख से कम** हो, वहाँ मध्यवर्ती स्तर पर पंचायत का गठन अनिवार्य नहीं है [अनुच्छेद 243B(2)]।
- **ग्राम सभा (अनुच्छेद 243A):**
    - यह पंचायत क्षेत्र के अंतर्गत किसी ग्राम की **मतदाता सूची में पंजीकृत सभी व्यक्तियों** से मिलकर बनी संस्था है। यह प्रत्यक्ष लोकतंत्र का प्राथमिक उदाहरण है।
- **निर्वाचन एवं कार्यकाल (अनुच्छेद 243C एवं 243E):**
    - **निर्वाचन:** तीनों स्तरों के सदस्यों का चुनाव मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से होता है। मध्यवर्ती व जिला स्तर के अध्यक्षों का चुनाव सदस्यों में से अप्रत्यक्ष रूप से होता है, जबकि ग्राम पंचायत अध्यक्ष (प्रधान/सरपंच) का चुनाव राज्य विधानमंडल द्वारा निर्धारित विधि के अनुसार होता है। चुनाव लड़ने हेतु न्यूनतम आयु **21 वर्ष** है।
    - **कार्यकाल:** प्रथम बैठक की तिथि से **5 वर्ष**। विघटन की स्थिति में **6 माह के भीतर** चुनाव कराना अनिवार्य है। यदि शेष अवधि 6 माह से कम बची हो, तो चुनाव आवश्यक नहीं है। मध्यावधि चुनाव में चुनी गई नई पंचायत केवल **शेष अवधि (Remaining Term)** के लिए कार्य करती है।
- **आरक्षण (अनुच्छेद 243D):**
    - SC और ST को उनकी जनसंख्या के अनुपात में तीनों स्तरों पर सीटों और अध्यक्ष पदों में आरक्षण।

©IASHINDIMEDIUM

- **महिलाओं हेतु आरक्षण:** सभी स्तरों पर कुल सीटों तथा अध्यक्ष पदों में कम से कम **एक-तिहाई (33%) सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित** हैं (उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में 33% है, जबकि बिहार, MP आदि कुछ राज्यों ने इसे 50% किया है)।
- OBC हेतु आरक्षण का निर्णय संबंधित राज्य विधानमंडल के विवेक पर निर्भर है।

- **राज्य निर्वाचन आयोग एवं राज्य वित्त आयोग:**
  - **अनुच्छेद 243K:** पंचायतों की मतदाता सूची तैयार करने और स्वतंत्र चुनाव कराने हेतु **राज्य निर्वाचन आयोग** का प्रावधान (आयुक्त की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा; हटाने की प्रक्रिया उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के समान)।
  - **अनुच्छेद 243I:** पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा हेतु राज्यपाल प्रत्येक **5 वर्ष बाद राज्य वित्त आयोग (State Finance Commission)** का गठन करेंगे।
- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **मेरी पंचायत ऐप और डिजिटल ग्राम पंचायत लेखापरीक्षा:** पंचायती राज मंत्रालय ने 'मेरी पंचायत' नागरिक-केंद्रित मोबाइल ऐप और 'ई-ग्रामस्वराज' (e-GramSwaraj) पोर्टल के साथ वित्तीय वर्ष 2024-25 एवं 2025-26 के लिए पंचायतों के 100% डिजिटल आंतरिक ऑडिट को अनिवार्य किया।
  - **राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार एवं कार्बन न्यूट्रल पंचायतें:** राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस पर जलवायु-अनुकूल नीतियों, जल संरक्षण तथा सौर ऊर्जा अवसंरचना के लिए ग्राम पंचायतों को विशेष वित्तीय प्रोत्साहन व 'राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार' प्रदान किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के अंतर्गत पंचायती राज व्यवस्था के प्रावधानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संविधान की 11वीं अनुसूची में पंचायतों के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत कुल 29 विषयों को सूचीबद्ध किया गया है।
2. 20 लाख से कम जनसंख्या वाले किसी भी राज्य में मध्यवर्ती स्तर (प्रखंड स्तर) पर पंचायत का गठन न करने की छूट प्राप्त है।
3. यदि कोई पंचायत अपने 5 वर्ष के कार्यकाल से पूर्व विघटित कर दी जाती है, तो पुनर्गठित नई पंचायत पूरे 5 वर्ष के नए कार्यकाल के लिए कार्य करती है।
4. संविधान के अनुच्छेद 243D के तहत प्रत्येक पंचायत में महिलाओं के लिए कुल स्थानों में से कम से कम एक-तिहाई स्थान आरक्षित किए गए हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 3

(b) केवल 1, 2 और 4

(c) केवल 2 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 1, 2 और 4

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 सही है:** 73वें संशोधन द्वारा जोड़ी गई 11वीं अनुसूची में 29 कार्यात्मक विषय (कृषि, भूमि सुधार, लघु सिंचाई, पशुपालन, ग्रामीण आवास आदि) दिए गए हैं।
    - **कथन 2 सही है:** अनुच्छेद 243B(2) के अनुसार, जिस राज्य की जनसंख्या 20 लाख से अधिक नहीं है, वहाँ मध्यवर्ती स्तर पर पंचायत का गठन अनिवार्य नहीं होता।
    - **कथन 3 असत्य है:** अनुच्छेद 243E(4) स्पष्ट करता है कि यदि कोई पंचायत समय से पूर्व विघटित होती है, तो चुनाव के बाद गठित होने वाली पंचायत केवल **शेष बची हुई अवधि (Remainder of the period)** के लिए ही कार्य करेगी, पूरे 5 वर्ष के लिए नहीं।
    - **कथन 4 सही है:** अनुच्छेद 243D(3) के अनुसार, पंचायतों में प्रत्यक्ष निर्वाचन से भरे जाने वाले कुल स्थानों में से कम से कम 1/3 स्थान (जिसमें SC/ST महिलाओं का कोटा भी शामिल है) महिलाओं के लिए आरक्षित होना अनिवार्य है।

प्रश्न 2. पंचायती राज संस्थाओं से संबंधित संवैधानिक अनुच्छेदों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

(a) अनुच्छेद 243A — ग्राम सभा की शक्तियां और कार्य

(b) अनुच्छेद 243D — सीटों और पदों का आरक्षण

(c) अनुच्छेद 243I — पंचायतों के लिए राज्य निर्वाचन आयोग का गठन

(d) अनुच्छेद 243K — पंचायतों के निर्वाचनों का अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण

- **उत्तर:** (c) अनुच्छेद 243I — पंचायतों के लिए राज्य निर्वाचन आयोग का गठन
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (c) सही सुमेलित नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** संविधान का **अनुच्छेद 243I** पंचायतों की वित्तीय स्थिति के पुनर्विलोकन के लिए **राज्य वित्त आयोग (State Finance Commission)** के गठन से संबंधित है।
    - पंचायतों के लिए **राज्य निर्वाचन आयोग (State Election Commission)** का गठन और चुनाव कराने की शक्तियां **अनुच्छेद 243K** में दी गई हैं।
    - **अन्य विकल्प (a, b, d) सही सुमेलित हैं:** अनुच्छेद 243A ग्राम सभा से, 243D आरक्षण (SC, ST और महिलाओं) से, तथा 243K राज्य निर्वाचन आयोग से संबंधित है।

टॉपिक- 47: 74वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 (नगरपालिकाएँ)

शहरी स्थानीय स्वशासन को संवैधानिक दर्जा देने के उद्देश्य से **74वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992** पारित किया गया, जो **1 जून 1993** से प्रभावी हुआ। इसके माध्यम से संविधान में **भाग-9A (अनुच्छेद 243P से 243ZG)** और **12वीं अनुसूची** जोड़ी गई, जिसमें नगरपालिकाओं के लिए **18 कार्यात्मक विषय** सूचीबद्ध हैं।

- **1. नगरपालिकाओं के तीन स्तर (अनुच्छेद 243Q):**
    - **नगर पंचायत:** ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र में परिवर्तित हो रहे संक्रमणकालीन क्षेत्र (Transitional Area) हेतु।
    - **नगर पालिका परिषद (Municipal Council):** छोटे नगरीय क्षेत्र के लिए।

©IASHINDIMEDIUM

- **नगर निगम (Municipal Corporation):** बड़े नगरीय क्षेत्र (महानगरों) के लिए। *(नोट: किसी क्षेत्र को संक्रमणकालीन, लघु या वृहद घोषित करने का अधिकार राज्यपाल के पास है)*।
- **अपवाद:** यदि किसी नगरीय क्षेत्र में औद्योगिक प्रतिष्ठान द्वारा नगरीय सेवाएं प्रदान की जा रही हों, तो राज्यपाल उसे **औद्योगिक उपनगर (Industrial Township)** अधिसूचित कर सकते हैं, जहाँ नगरपालिका का गठन आवश्यक नहीं होगा [अनुच्छेद 243Q(1) परंतुक]।

- **2. वार्ड समितियाँ एवं संरचना (अनुच्छेद 243R एवं 243S):**
  - नगरपालिकाओं के सभी स्थान प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों (वार्डों) से प्रत्यक्ष चुनाव द्वारा भरे जाते हैं।
  - **अनुच्छेद 243S: 3 लाख या अधिक जनसंख्या** वाली नगरपालिका के प्रादेशिक क्षेत्र के भीतर एक या अधिक वार्डों को मिलाकर **वार्ड समितियों (Ward Committees)** का गठन अनिवार्य है।
- **3. आरक्षण (अनुच्छेद 243T):**
  - SC और ST के लिए उनकी जनसंख्या के अनुपात में स्थानों व अध्यक्ष पदों पर आरक्षण।
  - **महिलाओं हेतु आरक्षण:** प्रत्यक्ष निर्वाचित कुल सीटों तथा अध्यक्ष पदों में कम से कम **एक-तिहाई (33%) सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित** हैं (जिसमें SC/ST महिलाओं का कोटा सम्मिलित है)।
- **4. कार्यकाल (अनुच्छेद 243U):**
  - प्रथम बैठक की तिथि से **5 वर्ष**। विघटन की स्थिति में **6 माह के भीतर** चुनाव कराना अनिवार्य है। शेष अवधि 6 माह से कम होने पर चुनाव आवश्यक नहीं; मध्यावधि चुनाव में चुनी गई नगरपालिका केवल **शेष अवधि (Remaining Term)** के लिए कार्य करती है। चुनाव लड़ने हेतु न्यूनतम आयु **21 वर्ष** (अनुच्छेद 243V) है।
- **5. आयोजना समितियाँ (अनुच्छेद 243ZD एवं 243ZE):**
  - **जिला योजना समिति (DPC - अनुच्छेद 243ZD):** जिले की पंचायतों और नगरपालिकाओं द्वारा तैयार योजनाओं को समेकित करने हेतु प्रत्येक जिले में DPC का गठन। इसके **कम से कम 4/5 (80%) सदस्य** जिला पंचायत और नगरपालिकाओं के निर्वाचित सदस्यों द्वारा अपने में से निर्वाचित होते हैं।
  - **महानगर योजना समिति (MPC - अनुच्छेद 243ZE):** 10 लाख या अधिक जनसंख्या वाले महानगर क्षेत्र के लिए विकास योजना प्रारूप तैयार करने हेतु। इसके **कम से कम 2/3 सदस्य** नगरपालिकाओं के निर्वाचित सदस्यों और पंचायतों के अध्यक्षों द्वारा अपने में से निर्वाचित होते हैं।
- **6. वित्त एवं निर्वाचन आयोग:**
  - **अनुच्छेद 243Y:** अनुच्छेद 243I के तहत गठित **राज्य वित्त आयोग** ही नगरपालिकाओं की वित्तीय स्थिति का पुनर्विलोकन करेगा।
  - **अनुच्छेद 243ZA:** अनुच्छेद 243K के तहत गठित **राज्य निर्वाचन आयोग** ही नगरीय चुनावों के अधीक्षण, निदेशन व नियंत्रण हेतु अधिकृत है।
- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **म्युनिसिपल बॉण्ड (Municipal Bonds) और अमृत 2.0 सुधार:** आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा शहरों को वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाने हेतु क्रेडिट रेटिंग और म्युनिसिपल बॉण्ड जारी करने पर विशेष प्रोत्साहन दिया गया।

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर प्रदेश के लखनऊ और वाराणसी नगर निगम के बाद आगरा और प्रयागराज नगर निगमों ने भी हरित अवसंरचना व जल शोधन परियोजनाओं हेतु ग्रीन म्युनिसिपल बॉण्ड जारी करने की दिशा में विनियामक मंजूरी प्राप्त की।

- **शहरी स्थानीय निकायों में डिजिटल प्रॉपर्टी आईडी व जीआईएस मैपिंग:** केंद्रीय शहरी विकास रूपरेखा के तहत देश भर की नगरपालिकाओं में संपत्तियों की जीआईएस मैपिंग और 'ई-नगरसेवा' पोर्टल के माध्यम से जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र और भवन निर्माण अनुमति को 100% डिजिटल कर फेसलेस डिलीवरी सुनिश्चित की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. 74वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के अंतर्गत नगरपालिकाओं से संबंधित संवैधानिक उपबंधों पर विचार कीजिए:

1. संविधान की 12वीं अनुसूची में नगरपालिकाओं के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत कुल 18 कार्यात्मक विषय शामिल किए गए हैं।
2. संविधान के अनुच्छेद 243S के अनुसार, 3 लाख या उससे अधिक जनसंख्या वाली नगरपालिकाओं में वार्ड समितियों का गठन अनिवार्य है।
3. अनुच्छेद 243ZD के अंतर्गत गठित जिला योजना समिति (DPC) के कम से कम दो-तिहाई (2/3) सदस्य नगरपालिकाओं और पंचायतों के निर्वाचित सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं।
4. नगरपालिकाओं के निर्वाचन कराने की जिम्मेदारी भारत निर्वाचन आयोग (ECI) के अधीन होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 4

(b) केवल 1 और 2

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 1 और 2
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **कथन 1 सही है:** 74वें संविधान संशोधन द्वारा जोड़ी गई 12वीं अनुसूची में नगरपालिकाओं को सौंपे जाने वाले कुल 18 विषय (जैसे- नगर योजना, भूमि उपयोग नियमन, सड़कें, पुल, अग्निशमन सेवाएं आदि) शामिल हैं।
  - **कथन 2 सही है:** अनुच्छेद 243S(1) के तहत यह स्पष्ट विहित है कि 3 लाख या अधिक जनसंख्या वाले नगरपालिका क्षेत्र में एक या अधिक वार्डों को मिलाकर वार्ड समितियों का गठन किया जाएगा।
  - **कथन 3 असत्य है:** अनुच्छेद 243ZD(2)(b) के अनुसार, जिला योजना समिति (District Planning Committee) के कम से कम **चार-बटा-पांच (4/5 अर्थात् 80%) सदस्य** जिले की पंचायतों और नगरपालिकाओं के निर्वाचित सदस्यों द्वारा अपनी संख्या के अनुपात में चुने जाते हैं (2/3 सदस्य महानगर योजना समिति - अनुच्छेद 243ZE में चुने जाते हैं)।
  - **कथन 4 असत्य है:** अनुच्छेद 243ZA के अनुसार, नगरपालिकाओं के निर्वाचनों का अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण **राज्य निर्वाचन आयोग (State Election Commission)** में निहित है, न कि भारत निर्वाचन आयोग में।

प्रश्न 2. नगरपालिकाओं की संरचना, आरक्षण एवं अवधि के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

©IASHINDIMEDIUM

(a) यदि किसी नगरीय क्षेत्र में औद्योगिक प्रतिष्ठान द्वारा नागरिक सुविधाएं प्रदान की जा रही हों, तो राज्यपाल उसे 'औद्योगिक उपनगर' (Industrial Township) घोषित कर सकते हैं, जहाँ नगरपालिका का गठन अनिवार्य नहीं होता।

(b) नगरपालिकाओं में महिलाओं के लिए कुल स्थानों तथा अध्यक्ष पदों में कम से कम एक-तिहाई (33%) स्थान आरक्षित किए गए हैं।

(c) किसी नगरपालिका का कार्यकाल समाप्त होने से पूर्व विघटन होने की स्थिति में, पुनर्गठित नई नगरपालिका 5 वर्ष के पूर्ण कार्यकाल के लिए कार्य करती है।

(d) नगरपालिका का सदस्य निर्वाचित होने के लिए संविधान के अनुच्छेद 243V के अनुसार न्यूनतम आयु 21 वर्ष निर्धारित है।

- **उत्तर:** (c) किसी नगरपालिका का कार्यकाल समाप्त होने से पूर्व विघटन होने की स्थिति में, पुनर्गठित नई नगरपालिका 5 वर्ष के पूर्ण कार्यकाल के लिए कार्य करती है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** अनुच्छेद 243U(4) के अनुसार, यदि कोई नगरपालिका अपनी 5 वर्ष की स्वाभाविक अवधि पूरी होने से पूर्व विघटित कर दी जाती है, तो चुनाव के उपरांत गठित होने वाली नई नगरपालिका केवल **शेष बची हुई अवधि (Remainder of the period)** के लिए ही पद धारण करती है, पूरे 5 वर्ष के लिए नहीं।
    - **अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं:** अनुच्छेद 243Q(1) के परंतुक के तहत राज्यपाल औद्योगिक उपनगर अधिसूचित कर सकते हैं; अनुच्छेद 243T के तहत महिलाओं हेतु न्यूनतम 33% आरक्षण अनिवार्य है; तथा अनुच्छेद 243V(1)(b) के अनुसार 21 वर्ष की आयु पूरी कर चुका व्यक्ति नगरपालिका सदस्य चुने जाने हेतु योग्य होता है।

टॉपिक- 48: पंचायती राज से जुड़ी प्रमुख समितियाँ

भारत में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और स्थानीय स्वशासन को संस्थागत रूप देने के लिए समय-समय पर कई महत्वपूर्ण समितियों का गठन किया गया। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के 15 वर्षों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि इन समितियों के गठन का वर्ष, कालानुक्रम (Chronology) और उनकी प्रमुख सिफारिशें परीक्षा के सर्वाधिक पसंदीदा क्षेत्र हैं।

- **1. बलवंत राय मेहता समिति (1957):**
    - **गठन का उद्देश्य:** 'सामुदायिक विकास कार्यक्रम' (1952) और 'राष्ट्रीय विस्तार सेवा' (1953) की कार्यप्रणाली की जांच हेतु।
    - **प्रमुख सिफारिश:** 'लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण' (Democratic Decentralization) की सिफारिश की। इसने **त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था** का मॉडल दिया:
        1. ग्राम स्तर पर — ग्राम पंचायत (प्रत्यक्ष चुनाव)
        2. प्रखंड/ब्लॉक स्तर पर — पंचायत समिति (कार्यकारी निकाय, अप्रत्यक्ष चुनाव)
        3. जिला स्तर पर — जिला परिषद (सलाहकारी व समन्वयकारी निकाय, जिलाधिकारी अध्यक्ष)
    - **परिणाम: 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर जिले** में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा देश की पहली त्रिस्तरीय पंचायत का उद्घाटन किया गया। इसके बाद इसे लागू करने वाला दूसरा राज्य **आंध्र प्रदेश (1959)** बना।

©IASHINDIMEDIUM

- **2. अशोक मेहता समिति (1977):**
    - जनता पार्टी सरकार द्वारा गठित। इसने 1978 में 132 सिफारिशों सहित रिपोर्ट सौंपी।
    - **प्रमुख सिफारिशें:**
        - त्रिस्तरीय के स्थान पर **द्विस्तरीय व्यवस्था (Two-tier System)** की वकालत: **जिला परिषद** (जिला स्तर पर) और **मंडल पंचायत** (15,000–20,000 जनसंख्या वाले गांवों के समूह हेतु)।
        - पंचायती राज संस्थाओं को **संवैधानिक मान्यता** दी जाए।
        - सभी स्तरों पर राजनीतिक दलों की खुली भागीदारी (दलीय आधार पर चुनाव)।
        - न्याय पंचायतों को विकास पंचायतों से अलग रखा जाए।
        - राज्य मंत्रिपरिषद में 'पंचायती राज मंत्री' की नियुक्ति की जाए।
- **3. जी.वी.के. राव समिति (1985):**
    - योजना आयोग द्वारा 'ग्रामीण विकास एवं गरीबी उन्मूलन हेतु प्रशासनिक व्यवस्था' की समीक्षा के लिए गठित।
    - **प्रमुख सिफारिशें:** इसने नौकरशाही के बढ़ते प्रभाव के कारण पंचायती राज संस्थाओं को **"बिना जड़ की घास" (Grass without roots)** की संज्ञा दी।
    - जिले को योजना निर्माण की मूल इकाई बनाने तथा **जिला विकास आयुक्त (District Development Commissioner - DDC)** का पद सृजित करने की सिफारिश की।
- **4. एल.एम. सिंघवी समिति (1986):**
    - राजीव गांधी सरकार द्वारा गठित।
    - **प्रमुख सिफारिशें:** पंचायती राज संस्थाओं को **संवैधानिक रूप से मान्यता, संरक्षण एवं वित्तीय संसाधन** दिए जाने की सबसे प्रबल व स्पष्ट वकालत की।
    - नियमित चुनाव कराने हेतु संवैधानिक उपबंध तथा न्याय पंचायतों की स्थापना की संस्तुति।
- **5. पी.के. थुंगन समिति (1988) एवं वी.एन. गाडगिल समिति (1988):**
    - **थुंगन समिति:** पंचायती राज को संवैधानिक दर्जा देने, त्रिस्तरीय प्रणाली बनाए रखने, कार्यकाल 5 वर्ष निश्चित करने और राज्य वित्त आयोग के गठन की सिफारिश की।
    - **गाडगिल समिति:** इसकी संस्तुतियों (संवैधानिक संशोधन, SC/ST और महिलाओं हेतु आरक्षण, राज्य निर्वाचन आयोग) ने ही आगे चलकर **73वें संविधान संशोधन विधेयक** का मुख्य विधायी आधार तैयार किया।

समिति का नाम	गठन वर्ष	मुख्य सिफारिश / पहचान
बलवंत राय मेहता समिति	**1957**	त्रिस्तरीय ढांचा; लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के जनक

©IASHINDIMEDIUM

समिति का नाम	गठन वर्ष	मुख्य सिफारिश / पहचान
अशोक मेहता समिति	**1977**	द्विस्तरीय ढांचा (जिला परिषद + मंडल पंचायत)
जी.वी.के. राव समिति	**1985**	"बिना जड़ की घास"; जिला विकास आयुक्त (DDC) का पद
एल.एम. सिंघवी समिति	**1986**	पंचायती राज को संवैधानिक दर्जा देने की पहली स्पष्ट वकालत
पी.के. थुंगन समिति	**1988**	5 वर्ष का निश्चित कार्यकाल व संवैधानिक संशोधन की रूपरेखा
वी.एन. गाडगिल समिति	**1988**	73वें संविधान संशोधन का प्रत्यक्ष विधायी मसौदा

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
    - **पंचायती राज मंत्रालय की 'स्मार्ट पंचायत' और 'सबकी योजना सबका विकास' पहल:** पंचायती राज समितियों की ऐतिहासिक सिफारिशों (जैसे योजना निर्माण का विकेंद्रीकरण) को डिजिटल युग में लागू करते हुए केंद्र सरकार ने ग्राम पंचायत विकास योजना (GPDP) के तहत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित डिजिटल टूल्स का विस्तार किया, जिससे स्थानीय संसाधनों का ऑडिट सीधे ग्राम सभा के स्तर पर संभव हो सके।
    - **राजस्थान और आंध्र प्रदेश में पंचायती राज स्थापना के 65 वर्ष:** 2 अक्टूबर 1959 को नागौर (राजस्थान) और उसके पश्चात आंध्र प्रदेश में बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिश पर स्थापित भारत की पहली आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था के 65 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्तर पर विकेंद्रीकृत सुशासन सम्मेलन आयोजित किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में पंचायती राज व्यवस्था के विकास से संबंधित निम्नलिखित समितियों को उनके गठन के सही कालानुक्रम (Chronological Order) में व्यवस्थित कीजिए:

1. जी.वी.के. राव समिति
2. अशोक मेहता समिति
3. बलवंत राय मेहता समिति
4. एल.एम. सिंघवी समिति
5. पी.के. थुंगन समिति

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) 3 - 2 - 1 - 4 - 5

(b) 3 - 1 - 2 - 4 - 5

(c) 2 - 3 - 1 - 5 - 4

©IASHINDIMEDIUM

(d) 3 - 2 - 4 - 1 - 5

- **उत्तर:** (a) 3 - 2 - 1 - 4 - 5
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - पंचायती राज से जुड़ी इन समितियों के गठन का सही वर्षवार कालक्रम इस प्रकार है:
        - **बलवंत राय मेहता समिति:** वर्ष **1957** (त्रिस्तरीय मॉडल की संस्तुति)
        - **अशोक मेहता समिति:** वर्ष **1977** (जनता पार्टी सरकार द्वारा; द्विस्तरीय मॉडल)
        - **जी.वी.के. राव समिति:** वर्ष **1985** (योजना आयोग द्वारा गठित)
        - **एल.एम. सिंघवी समिति:** वर्ष **1986** (राजीव गांधी सरकार द्वारा; संवैधानिक संरक्षण की सिफारिश)
        - **पी.के. थुंगन समिति:** वर्ष **1988** (संसदीय सलाहकार समिति की उप-समिति)
    - अतः सही कालानुक्रम 3 - 2 - 1 - 4 - 5 है। UPPCS में इस प्रकार का मिलान या कालक्रम आधारित प्रश्न बार-बार पूछा जाता है।

प्रश्न 2. पंचायती राज से संबंधित समितियों और उनकी प्रमुख सिफारिशों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

	समिति	**प्रमुख सिफारिश**
1.	बलवंत राय मेहता समिति	त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली की स्थापना
2.	अशोक मेहता समिति	मंडल पंचायत और जिला परिषद पर आधारित द्विस्तरीय प्रणाली
3.	जी.वी.के. राव समिति	पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक मान्यता प्रदान करने की प्रथम सिफारिश
4.	एल.एम. सिंघवी समिति	न्याय पंचायतों की स्थापना तथा पंचायतों को संवैधानिक संरक्षण

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-से सही सुमेलित हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 1, 2 और 4

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 1, 2 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- **युग्म 1 सही सुमेलित है:** बलवंत राय मेहता समिति (1957) ने ग्राम, प्रखंड और जिला स्तर पर त्रिस्तरीय ढांचे की सिफारिश की थी।
- **युग्म 2 सही सुमेलित है:** अशोक मेहता समिति (1977) ने मध्यवर्ती (ब्लॉक) स्तर को हटाकर केवल जिला परिषद और 15,000–20,000 आबादी वाली मंडल पंचायतों की द्विस्तरीय प्रणाली की संस्तुति की थी।
- **युग्म 3 सही सुमेलित नहीं है:** जी.वी.के. राव समिति (1985) ने प्रशासनिक ढांचे, जिले को योजना इकाई बनाने और जिला विकास आयुक्त (DDC) का पद बनाने पर बल दिया था। पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक संरक्षण व मान्यता देने की सबसे पहली और सशक्त वकालत **एल.एम. सिंघवी समिति (1986)** ने की थी। जी.वी.के. राव समिति ने इन संस्थाओं को नौकरशाही के कारण "बिना जड़ की घास" कहा था।
- **युग्म 4 सही सुमेलित है:** एल.एम. सिंघवी समिति (1986) ने संवैधानिक संशोधन के साथ-साथ गांवों के समूह हेतु न्याय पंचायतों की स्थापना की भी सिफारिश की थी।

संवैधानिक व गैर – संवैधानिक निकाय

टॉपिक- 52: भारत निर्वाचन आयोग (Election Commission) और चुनाव सुधार

भारतीय संविधान के **भाग-15** के अंतर्गत **अनुच्छेद 324 से 329** तक स्वतंत्र और निष्पक्ष निर्वाचन प्रणाली का उपबंध किया गया है। 25 जनवरी 1950 को गठित **भारत निर्वाचन आयोग (ECI)** एक स्थायी, स्वतंत्र अखिल भारतीय संवैधानिक निकाय है।

- **1. संवैधानिक संरचना एवं नियुक्ति (अनुच्छेद 324):**
  - आयोग में एक **मुख्य निर्वाचन आयुक्त (CEC)** तथा उतने अन्य **निर्वाचन आयुक्त (ECs)** होते हैं, जितने राष्ट्रपति समय-समय पर नियत करें।
  - 1950 से अक्टूबर 1989 तक यह एक-सदस्यीय निकाय था। **16 अक्टूबर 1989** को इसे पहली बार तीन-सदस्यीय बनाया गया। 1990 में पुनः एक-सदस्यीय किया गया, तथा **1 अक्टूबर 1993 से यह निरंतर बहु-सदस्यीय (1 CEC + 2 ECs)** निकाय के रूप में कार्यरत है।
  - CEC और अन्य चुनाव आयुक्तों की शक्तियां, वेतन व भत्ते **सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के समान** होते हैं। मतभेद की स्थिति में निर्णय **बहुमत (Majority)** से लिया जाता है।
  - **कार्यकाल: 6 वर्ष या 65 वर्ष की आयु**, जो भी पहले पूरी हो।
- **2. पदमुक्ति एवं स्वतंत्रता संबंधी प्रावधान:**
  - **CEC का संरक्षण [अनुच्छेद 324(5)]:** मुख्य निर्वाचन आयुक्त को पद से केवल उसी रीति व आधारों पर हटाया जा सकता है, जैसे **उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश** को (संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत से 'सिद्ध कदाचार' या 'असमर्थता' के आधार पर)।

©IASHINDIMEDIUM

- **अन्य आयुक्तों की स्थिति:** अन्य निर्वाचन आयुक्तों को CEC की सिफारिश के बिना पद से नहीं हटाया जा सकता।

- **3. क्षेत्राधिकार एवं कार्य:**
  - संसद (लोकसभा व राज्यसभा), राज्य विधानमंडलों (विधानसभा व विधान परिषद), तथा राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के पदों के चुनावों का अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण करना। *(नोट: पंचायतों व नगरपालिकाओं के चुनाव राज्य निर्वाचन आयोग [अनुच्छेद 243K/243ZA] कराता है, ECI नहीं)*।
  - राजनीतिक दलों को मान्यता देना व चुनाव चिह्न आवंटित करना।
  - सांसदों/विधायकों की निर्हरता (अनुच्छेद 103 व 192) पर क्रमशः राष्ट्रपति/राज्यपाल को परामर्श देना।
  - चुनाव आचार संहिता (Model Code of Conduct - MCC) लागू करना।

- **4. प्रमुख चुनाव सुधार एवं समितियाँ:**
  - **तारकुंडे समिति (1974-75):** मतदान की न्यूनतम आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष करने की सिफारिश (61वें संशोधन, 1988 द्वारा लागू)।
  - **दिनेश गोस्वामी समिति (1990):** EVM के प्रयोग और चुनावी कदाचार रोकने हेतु सिफारिशें।
  - **इंद्रजीत गुप्त समिति (1998):** चुनाव खर्च का राज्य द्वारा वित्तपोषण (State Funding of Elections)।
  - के. संथानम समिति (1962), वोहरा समिति (1993 - राजनीति का अपराधीकरण) और जे.एस. वर्मा समिति (2013)।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **मुख्य निर्वाचन आयुक्त और अन्य निर्वाचन आयुक्त (नियुक्ति, सेवा शर्तें और पदावधि) अधिनियम, 2023 का क्रियान्वयन:** संसद द्वारा पारित इस नए कानून के तहत चयन समिति की संरचना को विधिक रूप दिया गया। इस चयन समिति में प्रधानमंत्री (अध्यक्ष), एक केंद्रीय कैबिनेट मंत्री और लोकसभा में सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता शामिल हैं। सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ ने इस कानून की वैधानिकता पर सुनवाई करते हुए चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता और संवैधानिक स्वायत्तता के सिद्धांतों को रेखांकित किया।
  - **100% VVPAT पर्चियों के मिलान पर उच्चतम न्यायालय का निर्णय:** *एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (ADR) बनाम ECI वाद* में उच्चतम न्यायालय ने सभी EVM वोटों का VVPAT पर्चियों से शत-प्रतिशत मिलान कराने की मांग को खारिज कर दिया। न्यायालय ने वर्तमान व्यवस्था (प्रति विधानसभा क्षेत्र 5 यादृच्छिक मतदान केंद्रों का मिलान) को बरकरार रखते हुए उम्मीदवारों को चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद शीर्ष 5% माइक्रोकंट्रोलर की जांच कराने का सीमित अधिकार प्रदान किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के निर्वाचन आयोग और चुनाव आयुक्तों के संवैधानिक प्रावधानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत का निर्वाचन आयोग संसद, राज्य विधानमंडलों, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा नगरपालिकाओं व पंचायतों के चुनावों का संचालन करता है।
2. मुख्य निर्वाचन आयुक्त (CEC) तथा अन्य निर्वाचन आयुक्तों के वेतन, भत्ते और सेवा शर्तें सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के समकक्ष होती हैं।

©IASHINDIMEDIUM

3. संविधान के अनुच्छेद 324(5) के तहत मुख्य निर्वाचन आयुक्त और अन्य निर्वाचन आयुक्तों दोनों को हटाने की प्रक्रिया उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के समान विशेष बहुमत पर आधारित है।

4. 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1988 द्वारा मताधिकार की न्यूनतम आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की गई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 3

(b) केवल 2 और 4

(c) केवल 1, 2 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 2 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 असत्य है:** भारत निर्वाचन आयोग (ECI) संसद, राज्य विधानमंडल, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव कराता है; परंतु नगरपालिकाओं और पंचायतों के चुनाव कराने का दायित्व संबंधित राज्यों के **राज्य निर्वाचन आयोग (State Election Commission - अनुच्छेद 243K व 243ZA)** का होता है।
    - **कथन 2 सही है:** मुख्य निर्वाचन आयुक्त और अन्य दोनों आयुक्तों को सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के समान वेतन (2.50 लाख रुपये प्रतिमाह) और समान दर्जा प्राप्त है।
    - **कथन 3 असत्य है:** मुख्य निर्वाचन आयुक्त (CEC) को सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की भांति संसद द्वारा महाभियोग जैसी प्रक्रिया (विशेष बहुमत) से ही हटाया जा सकता है, किंतु अन्य निर्वाचन आयुक्तों को CEC की सिफारिश पर राष्ट्रपति द्वारा हटाया जा सकता है (उनके लिए महाभियोग आवश्यक नहीं है)।
    - **कथन 4 सही है:** 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1988 (प्रभावी: 28 मार्च 1989) द्वारा अनुच्छेद 326 में संशोधन कर मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की गई थी।

प्रश्न 2. भारत में चुनाव सुधारों से जुड़ी प्रमुख समितियों और उनकी सिफारिशों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

(a) वी.एम. तारकुंडे समिति — मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष करना

(b) दिनेश गोस्वामी समिति — इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) का उपयोग

(c) इंद्रजीत गुप्त समिति — चुनाव व्यय का राज्य द्वारा आंशिक वित्तपोषण (State Funding)

(d) एन.एन. वोहरा समिति — पंचायती राज संस्थाओं का त्रिस्तरीय ढांचा

- **उत्तर:** (d) एन.एन. वोहरा समिति — पंचायती राज संस्थाओं का त्रिस्तरीय ढांचा
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (d) सही सुमेलित नहीं है (अतः यह सही उत्तर है): एन.एन. वोहरा समिति (1993)** का गठन **'राजनीति के अपराधीकरण' (Nexus between politicians, bureaucrats, and criminals)** की जांच और अध्ययन के लिए किया गया था। पंचायती राज का त्रिस्तरीय ढांचा **बलवंत राय मेहता समिति (1957)** की सिफारिश था।

- **अन्य विकल्प (a, b, c) सही सुमेलित हैं:** तारकुंडे समिति (1974-75) ने वयस्क मताधिकार की आयु 18 वर्ष करने की वकालत की; दिनेश गोस्वामी समिति (1990) ने चुनावी प्रक्रियाओं में EVM और सुधारों की संस्तुति की; तथा इंद्रजीत गुप्त समिति (1998) ने चुनावों में काले धन के प्रभाव को कम करने हेतु राज्य द्वारा चुनावी खर्च वहन करने की सिफारिश की थी।

टॉपिक- 53: संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) और राज्य लोक सेवा आयोग (SPSC)

भारतीय संविधान के **भाग-14** के अंतर्गत **अनुच्छेद 315 से 323** तक संघ लोक सेवा आयोग (UPSC), राज्य लोक सेवा आयोग (SPSC) तथा दो या अधिक राज्यों के लिए संयुक्त राज्य लोक सेवा आयोग (JSPSC) के गठन, स्वतंत्रता और कार्यों का विस्तृत उपबंध है।

- **1. संवैधानिक संरचना एवं नियुक्ति (अनुच्छेद 316):**
  - **UPSC:** अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति **राष्ट्रपति** द्वारा की जाती है। आयोग की सदस्य संख्या राष्ट्रपति के स्वविवेक पर निर्भर है (सामान्यतः 9 से 11 सदस्य)।
  - **SPSC:** अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति संबंधित **राज्यपाल** द्वारा की जाती है।
  - **JSPSC:** यह एक **सांविधिक निकाय (Statutory Body)** है, जिसका गठन संबंधित राज्य विधानमंडलों के अनुरोध पर **संसद द्वारा विधि बनाकर** किया जाता है। इसके अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति **राष्ट्रपति** करते हैं।
  - **योग्यता:** संविधान में विशिष्ट योग्यताएं नहीं हैं, परंतु यह अनिवार्य है कि आयोग के कम से कम **आधे सदस्य (1/2)** भारत सरकार या राज्य सरकार के अधीन न्यूनतम **10 वर्ष तक पद धारण** कर चुके हों।
  - **कार्यकाल एवं आयु सीमा:**
    - **UPSC:** पदभार ग्रहण करने से **6 वर्ष या 65 वर्ष की आयु** तक।
    - **SPSC एवं JSPSC:** पदभार ग्रहण करने से **6 वर्ष या 62 वर्ष की आयु** तक (41वें संशोधन, 1976 द्वारा 60 से बढ़ाकर 62 वर्ष की गई)।
- **2. निष्कासन एवं निलंबन (अनुच्छेद 317):**
  - UPSC, SPSC और JSPSC तीनों के अध्यक्ष या सदस्यों को पद से हटाने का अनन्य अधिकार केवल **राष्ट्रपति** के पास है। *(विशेष ध्यान: SPSC के सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल करते हैं, किंतु उन्हें **हटाने की शक्ति केवल राष्ट्रपति में निहित** है)*।
  - **प्रक्रिया:** 'कदाचार' (Misbehaviour) के आधार पर राष्ट्रपति मामले को **उच्चतम न्यायालय को जांच हेतु संदर्भित** करते हैं। अनुच्छेद 145 के तहत सुप्रीम कोर्ट द्वारा की गई जांच के उपरांत दी गई **सलाह राष्ट्रपति पर बाध्यकारी** होती है। जांच अवधि के दौरान राष्ट्रपति (UPSC/JSPSC हेतु) अथवा राज्यपाल (SPSC हेतु) संबंधित सदस्य को निलंबित कर सकते हैं।
- **3. स्वतंत्रता एवं पदधारण पर प्रतिबंध (अनुच्छेद 319):**
  - सेवा निवृत्ति के बाद UPSC का अध्यक्ष भारत सरकार या राज्य सरकार के अधीन किसी नियोजन का पात्र नहीं होगा।
  - SPSC का अध्यक्ष केवल UPSC के अध्यक्ष/सदस्य अथवा किसी अन्य SPSC के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हो सकता है।

©IASHINDIMEDIUM

- UPSC व SPSC का व्यय क्रमशः भारत की संचित निधि तथा राज्य की संचित निधि पर **भारित (Charged)** होता है (संसद/विधानमंडल में इस पर मतदान नहीं होता)।

- **4. कार्य एवं प्रतिवेदन (अनुच्छेद 320 व 323):**
  - आयोग का मुख्य कार्य परीक्षाओं का आयोजन तथा अनुशासनात्मक मामलों में सरकार को परामर्श देना है। इसका परामर्श **सलाहकारी** होता है, बाध्यकारी नहीं।
  - **प्रतिवेदन (अनुच्छेद 323):** UPSC अपना वार्षिक प्रतिवेदन राष्ट्रपति को तथा SPSC अपना वार्षिक प्रतिवेदन राज्यपाल को सौंपता है, जिसे क्रमशः संसद अथवा राज्य विधानमंडल के पटल पर रखवाया जाता है।

- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**
  - **यूपीएससी भर्ती प्रक्रिया में सुधार एवं डिजिटल प्रमाणीकरण:** सिविल सेवा परीक्षा में उम्मीदवारों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले दिव्यांगता प्रमाण पत्रों और आरक्षण (OBC नॉन-क्रीमी लेयर एवं EWS) दस्तावेजों के दुरुपयोग के मामलों के दृष्टिगत आयोग ने आधार-सत्यापित बायोमेट्रिक सत्यापन, चेहरे की पहचान (Facial Recognition) और बहु-स्तरीय दस्तावेज़ सत्यापन प्रोटोकॉल को अनिवार्य बनाया।
  - **लेटरल एंट्री (Lateral Entry) विज्ञापन और आरक्षण समीक्षा:** संघ लोक सेवा आयोग द्वारा केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में संयुक्त सचिव और निदेशक/उप-सचिव स्तर पर विशेषज्ञों की सीधी भर्ती (लेटरल एंट्री) के विज्ञापन को सामाजिक न्याय और आरक्षण नियमों (रोस्टर प्रणाली) के अनुपालन के परिप्रेक्ष्य में विधिक समीक्षा हेतु वापस लिया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. राज्य लोक सेवा आयोग (SPSC) के अध्यक्ष और सदस्यों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति संबंधित राज्य के राज्यपाल द्वारा की जाती है।
2. राज्य लोक सेवा आयोग के किसी सदस्य को कदाचार के आधार पर पद से हटाने की शक्ति संबंधित राज्य के उच्च न्यायालय की सिफारिश पर राज्यपाल में निहित है।
3. राज्य लोक सेवा आयोग के सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष अथवा 62 वर्ष की आयु (जो भी पहले हो) तक होता है।
4. राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों का वेतन और भत्ते राज्य की संचित निधि पर भारित होते हैं, जिस पर विधानमंडल में मतदान नहीं कराया जाता।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 1, 3 और 4

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 1, 3 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**

- **कथन 1 सही है:** अनुच्छेद 316(1) के अनुसार SPSC के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है।
- **कथन 2 असत्य है:** अनुच्छेद 317 के अनुसार SPSC के अध्यक्ष या सदस्यों को पद से हटाने की शक्ति राज्यपाल के पास नहीं, बल्कि केवल **भारत के राष्ट्रपति** के पास है। राष्ट्रपति भी ऐसा उच्चतम न्यायालय द्वारा अनुच्छेद 145 के तहत की गई जांच में दोष सिद्ध होने के बाद ही करते हैं।
- **कथन 3 सही है:** 41वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा SPSC सदस्यों की सेवानिवृत्ति आयु 60 से बढ़ाकर 62 वर्ष कर दी गई थी। अतः कार्यकाल 6 वर्ष या 62 वर्ष की आयु तक होता है।
- **कथन 4 सही है:** अनुच्छेद 322 के तहत SPSC का प्रशासनिक व्यय राज्य की संचित निधि पर भारित होता है, जिस पर राज्य विधानमंडल में बहस हो सकती है किंतु मतदान नहीं होता।

प्रश्न 2. संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) और संयुक्त राज्य लोक सेवा आयोग (JSPSC) के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) संविधान के अनुसार संघ लोक सेवा आयोग के कम से कम आधे सदस्य ऐसे होने चाहिए जिन्होंने भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन न्यूनतम 10 वर्ष की सेवा की हो।

(b) दो या अधिक राज्यों के लिए संयुक्त राज्य लोक सेवा आयोग (JSPSC) की स्थापना संसद द्वारा विधि बनाकर की जाती है।

(c) संयुक्त राज्य लोक सेवा आयोग (JSPSC) के अध्यक्ष एवं सदस्यों की नियुक्ति संबंधित राज्यों के राज्यपालों की एक समिति द्वारा की जाती है।

(d) संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष का पद छोड़ने के उपरांत वह व्यक्ति भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन किसी भी नियोजन का पात्र नहीं होता है।

- **उत्तर:** (c) संयुक्त राज्य लोक सेवा आयोग (JSPSC) के अध्यक्ष एवं सदस्यों की नियुक्ति संबंधित राज्यों के राज्यपालों की एक समिति द्वारा की जाती है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **विकल्प (c) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** संविधान के अनुच्छेद 316(1) के अनुसार, संयुक्त राज्य लोक सेवा आयोग (JSPSC) के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति **भारत के राष्ट्रपति** द्वारा की जाती है, न कि राज्यपालों की किसी समिति द्वारा।
  - **अन्य विकल्प (a, b, d) पूर्णतः सत्य हैं:** अनुच्छेद 316 के तहत आयोगों के न्यूनतम 50% सदस्य 10 वर्ष की सरकारी सेवा का अनुभव रखने वाले होने चाहिए; अनुच्छेद 315(2) के तहत संबंधित राज्यों द्वारा प्रस्ताव पारित करने पर संसद कानून बनाकर JSPSC का गठन करती है; तथा अनुच्छेद 319(a) के तहत UPSC का सेवानिवृत्त अध्यक्ष केंद्र या राज्य सरकार के अधीन किसी अन्य पद पर पुनः नियोजन हेतु पूर्णतः अपात्र होता है।

टॉपिक- 54: भारत का नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG: अनुच्छेद 148 से 151)

डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने संविधान सभा में सीएजी (CAG) को **"भारतीय संविधान के तहत सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी"** बताया था, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था में न्यायपालिका, चुनाव आयोग और संघ लोक सेवा आयोग के साथ संविधान के चार प्रमुख सुरक्षा स्तंभों (Bulwarks) में से एक है। संविधान के **भाग-5 के अध्याय-5** में **अनुच्छेद 148 से 151** तक इसका विस्तृत उपबंध है।

- **1. नियुक्ति, शपथ एवं कार्यकाल (अनुच्छेद 148):**

- **नियुक्ति:** भारत के **राष्ट्रपति द्वारा अपने हस्ताक्षर और मुद्रा सहित अधिपत्र (Warrant under hand and seal)** द्वारा की जाती है।
- **शपथ:** संविधान की **तीसरी अनुसूची** के अनुसार राष्ट्रपति या उनके द्वारा नियुक्त व्यक्ति के समक्ष पद की शपथ ग्रहण करते हैं।
- **कार्यकाल:** पदभार ग्रहण करने से **6 वर्ष या 65 वर्ष की आयु** तक (जो भी पहले समाप्त हो)। त्यागपत्र राष्ट्रपति को संबोधित करते हैं।
- **पदमुक्ति:** इन्हें पद से उसी रीति और उन्हीं आधारों पर हटाया जा सकता है, जैसे **उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश** को (संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत से पारित समावेदन पर 'सिद्ध कदाचार' या 'असमर्थता' के आधार पर)।

- **2. स्वतंत्रता हेतु संवैधानिक सुरक्षा:**
  - पद से निवृत्त होने के उपरांत यह भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन **किसी भी अन्य लाभ के पद/नियोजन के पात्र नहीं** होते।
  - इनका वेतन एवं सेवा शर्तें उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के समकक्ष (संसद द्वारा निर्धारित) होती हैं, जिसमें नियुक्ति के पश्चात कोई अलाभकारी परिवर्तन नहीं किया जा सकता।
  - सीएजी कार्यालय का संपूर्ण प्रशासनिक व्यय (वेतन, भत्ते, पेंशन सहित) **भारत की संचित निधि पर भारित (Charged)** होता है [अनुच्छेद 148(6)]।
- **3. कर्तव्य एवं शक्तियां (अनुच्छेद 149 व 150):**
  - संसद द्वारा पारित **सीएजी (कर्तव्य, शक्तियाँ और सेवा शर्तें) अधिनियम, 1971** के तहत यह केंद्र, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की संचित निधि, आकस्मिकता निधि और लोक लेखा से होने वाले सभी व्यय का लेखापरीक्षण (Audit) करते हैं।
  - **1976 में सुधार:** वर्ष 1976 में केंद्र सरकार के स्तर पर **लेखांकन (Accounting) को लेखापरीक्षा (Auditing) से अलग** कर दिया गया। अब केंद्र में लेखांकन का कार्य नागरिक लेखा महानियंत्रक (CGA) करता है, जबकि सीएजी केवल लेखापरीक्षा तक सीमित है। (राज्यों के स्तर पर सीएजी दोनों कार्य करता है)।
  - **अनुच्छेद 150:** संघ और राज्यों के लेखा प्रारूप (Forms of Accounts) राष्ट्रपति को सीएजी की सलाह पर तय करने होते हैं।
- **4. प्रतिवेदन एवं लोक लेखा समिति (अनुच्छेद 151):**
  - सीएजी संघ के लेखों से संबंधित प्रतिवेदन **राष्ट्रपति** को (जो उसे संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखवाते हैं) तथा राज्यों के लेखों से संबंधित प्रतिवेदन **राज्यपाल** को सौंपते हैं।
  - सीएजी तीन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हैं: (1) विनियोग लेखा, (2) वित्त लेखा, (3) सार्वजनिक उपक्रम लेखा।
  - सीएजी संसद की **लोक लेखा समिति (PAC) के "मित्र, दार्शनिक एवं पथ-प्रदर्शक"** के रूप में कार्य करते हैं।
- **विगत 1 वर्ष का करेंट अफेयर्स (संबद्ध तथ्य):**

©IASHINDIMEDIUM

- **15वें सीएजी की नियुक्ति:** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 1989 बैच के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी **के. संजय मूर्ति (K. Sanjay Murthy)** को भारत का **15वाँ नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG)** नियुक्त किया (शपथ: 21 नवंबर 2024)। इन्होंने गिरीश चंद्र मुर्मू का स्थान लिया।
- **ऑडिट कैडर का द्विभाजन एवं डिजिटल ऑडिट सुधार:** सीएजी कार्यालय ने विशेषज्ञता बढ़ाने हेतु दो विशेष कैडर—'राजस्व ऑडिट कैडर' (Revenue Audit) और 'व्यय ऑडिट कैडर' (Expenditure Audit) के पुनर्गठन की प्रक्रिया को गति दी। साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग टूल्स का उपयोग कर सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (PFMS) के रीयल-टाइम ऑडिटिंग मॉड्यूल का विस्तार किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सीएजी की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा अपने हस्ताक्षर और मुद्रा सहित अधिपत्र द्वारा की जाती है।
2. सेवानिवृत्ति के पश्चात सीएजी भारत सरकार अथवा किसी भी राज्य सरकार के अधीन किसी पद पर पुनः नियुक्त होने का पात्र नहीं होता है।
3. वर्ष 1976 के संशोधन के पश्चात सीएजी केंद्र और राज्य दोनों सरकारों के स्तर पर केवल लेखापरीक्षा (Audit) का कार्य करता है, लेखांकन (Accounting) का नहीं।
4. सीएजी का वेतन एवं पेंशन भारत की संचित निधि पर भारित व्यय होता है, जिस पर संसद में मतदान नहीं कराया जा सकता।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 3

(b) केवल 1, 2 और 4

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

- **उत्तर:** (b) केवल 1, 2 और 4
- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **कथन 1 सही है:** अनुच्छेद 148(1) के तहत राष्ट्रपति अपने हस्ताक्षर और मुद्रा सहित अधिपत्र (Warrant under hand and seal) द्वारा सीएजी की नियुक्ति करते हैं।
  - **कथन 2 सही है:** अनुच्छेद 148(4) स्पष्ट करता है कि अपने पद पर न रह जाने के पश्चात सीएजी भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन किसी अन्य नियोजन का पात्र नहीं होगा।
  - **कथन 3 असत्य है:** वर्ष 1976 में लेखांकन (Accounting) और लेखापरीक्षा (Auditing) का पृथक्करण **केवल केंद्र सरकार के स्तर पर** किया गया था। राज्यों के स्तर पर सीएजी आज भी लेखांकन और लेखापरीक्षा दोनों का दायित्व संभालता है।
  - **कथन 4 सही है:** अनुच्छेद 148(6) के अनुसार सीएजी कार्यालय के सभी प्रशासनिक व्यय भारत की संचित निधि पर भारित होते हैं, जिन पर संसद में चर्चा हो सकती है परंतु मतदान नहीं होता।

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 2. सीएजी के संवैधानिक प्रावधानों और कार्यप्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) संविधान के अनुच्छेद 148(1) के अनुसार सीएजी को पद से हटाने की प्रक्रिया एवं आधार उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के समान ही होते हैं।

(b) सीएजी संघ के लेखों से संबंधित अपनी वार्षिक रिपोर्ट सीधे संसद की लोक लेखा समिति (PAC) के अध्यक्ष को सौंपता है।

(c) सीएजी का कार्यकाल पदभार ग्रहण करने की तिथि से 6 वर्ष या 65 वर्ष की आयु (जो भी पहले हो) तक निर्धारित है।

(d) सीएजी राज्य सरकारों के लेखों की ऑडिट रिपोर्ट संबंधित राज्य के राज्यपाल को सौंपता है, जो उसे राज्य विधानमंडल के समक्ष रखवाते हैं।

- **उत्तर:** (b) सीएजी संघ के लेखों से संबंधित अपनी वार्षिक रिपोर्ट सीधे संसद की लोक लेखा समिति (PAC) के अध्यक्ष को सौंपता है।
- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **विकल्प (b) सही नहीं है (अतः यह सही उत्तर है):** संविधान के **अनुच्छेद 151(1)** के अनुसार, सीएजी संघ के खातों से संबंधित अपनी रिपोर्ट सीधे पीएसी को नहीं सौंपता, बल्कि वह अपनी रिपोर्ट **भारत के राष्ट्रपति** को प्रस्तुत करता है। राष्ट्रपति उस रिपोर्ट को संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखवाते हैं, जिसके बाद लोक लेखा समिति (PAC) उसकी विस्तृत संवीक्षा करती है।
    - **अन्य विकल्प (a, c, d) पूर्णतः सत्य हैं:** सीएजी को हटाने हेतु सुप्रीम कोर्ट के जज के समान संसद के दोनों सदनों का विशेष बहुमत अनिवार्य है; कार्यकाल 6 वर्ष या 65 वर्ष की आयु तक होता है; तथा अनुच्छेद 151(2) के तहत राज्य की रिपोर्ट राज्यपाल को दी जाती है जो उसे विधानमंडल के समक्ष प्रस्तुत करवाते हैं।

भारत एवं विश्व का भूगोल

भौतिक भूगोल

टॉपिक – 1 : ब्रह्मांड की उत्पत्ति एवं सौरमंडल

1. ब्रह्मांड की उत्पत्ति के प्रमुख सिद्धांत

- **बिग बैंग सिद्धांत (Big Bang Theory):** ब्रह्मांड की उत्पत्ति का सर्वाधिक मान्य सिद्धांत, जिसका प्रतिपादन **जॉर्ज लेमैत्रे** (1927) ने किया तथा बाद में **रॉबर्ट वेगनर** (1967) ने इसकी विस्तृत व्याख्या की। इसके अनुसार, लगभग **13.8 अरब वर्ष** पूर्व एक अत्यधिक सघन एवं गर्म सूक्ष्म बिंदु (Singularity) में महाविस्फोट हुआ, जिससे अंतरिक्ष और समय का विस्तार शुरू हुआ।

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तार का प्रमाण:** 1929 में **एडविन हबल** ने 'रेड शिफ्ट' (Red Shift) परिघटना के आधार पर सिद्ध किया कि आकाशगंगाएं एक-दूसरे से दूर जा रही हैं। कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड रेडिएशन (CMBR) की खोज (पेंजियास एवं विल्सन, 1965) ने इस सिद्धांत को ठोस आधार दिया।
- **अन्य सिद्धांत:** स्थिर अवस्था संकल्पना (Steady State Theory) — फ्रेड हॉयल; दोलन सिद्धांत (Pulsating Universe Theory) — डॉ. एलन संडेज।

2. सौरमंडल की संरचना एवं ग्रह

सौरमंडल की आयु लगभग **4.6 अरब वर्ष** मानी जाती है। सूर्य के निकटतम से दूरस्थ क्रम में ग्रहों का वर्गीकरण दो वर्गों में किया जाता है:

1. **पार्थिव या आंतरिक ग्रह (Terrestrial Planets):** बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल। ये चट्टानी, उच्च घनत्व वाले और कम उपग्रहों वाले ग्रह हैं।
    - **बुध (Mercury):** सूर्य का सबसे निकटतम और सबसे छोटा ग्रह; कोई वायुमंडल व उपग्रह नहीं; अत्यधिक तापांतर।
    - **शुक्र (Venus):** पृथ्वी की 'जुड़वां बहन' (आकार/द्रव्यमान में समानता); सबसे गर्म ग्रह (96-97% CO_2 के कारण 'प्रचंड ग्रीनहाउस प्रभाव'); पूर्व से पश्चिम (दक्षिणावर्त/Retrograde) घूर्णन।
    - **मंगल (Mars):** आयरन ऑक्साइड की अधिकता के कारण 'लाल ग्रह'; दो उपग्रह — **फोबोस** और **डीमॉस** (सौरमंडल का सबसे छोटा उपग्रह); निक्स ओलंपिया (सौरमंडल का सर्वोच्च ज्वालामुखी पर्वत)।
2. **जोवियन या बाह्य ग्रह (Jovian/Gas Giants):** बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून। ये मुख्यतः हाइड्रोजन और हीलियम से निर्मित, कम घनत्व वाले विशाल गैसीय पिंड हैं।
    - **बृहस्पति (Jupiter):** सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह; सबसे तेज घूर्णन गति (लगभग 9.9 घंटे); प्रमुख उपग्रह: **गैनिमीड** (सौरमंडल का सबसे बड़ा उपग्रह)।
    - **शनि (Saturn):** दूसरा सबसे बड़ा ग्रह; स्पष्ट वलय (Rings) प्रणाली; जल से भी कम औसत घनत्व (0.69 ग्राम/सेमी^{3}); सबसे बड़ा उपग्रह: **टाइटन**।
    - **अरुण (Uranus):** अत्यधिक अक्षीय झुकाव के कारण 'लेटा हुआ ग्रह'; शुक्र की भांति दक्षिणावर्त घूर्णन।
    - **वरुण (Neptune):** सूर्य से सबसे दूर स्थित, मीथेन की उपस्थिति के कारण हल्का नीला/हरा दिखाई देने वाला सबसे ठंडा ग्रह।
3. **अन्य खगोलीय पिंड:**
    - **क्षुद्रग्रह पेटी (Asteroid Belt):** मंगल और बृहस्पति की कक्षाओं के मध्य स्थित।
    - **कुइपर बेल्ट (Kuiper Belt):** वरुण के पार बर्फीले पिंडों की पेटी (प्लूटो इसी में स्थित बौना ग्रह है)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **नासा का यूरोपा क्लिपर (Europa Clipper):** बृहस्पति के बर्फीले चंद्रमा 'यूरोपा' पर जीवन के अनुकूल उप-सतही महासागरों की खोज के लिए प्रक्षेपित मिशन ने अपने वैज्ञानिक अन्वेषण के प्राथमिक चरण पूरे किए।
- **इसरो का शुक्रायन (शुक्र ऑर्बिटर मिशन - SOM):** शुक्र ग्रह के वायुमंडलीय रसायन विज्ञान और सल्फ्यूरिक एसिड बादलों के अध्ययन हेतु भारत के वीनस मिशन को अंतिम विन्यास प्राप्त हुआ।

©IASHINDIMEDIUM

- **जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) खोज:** आरंभिक ब्रह्मांड (महाविस्फोट के मात्र 300 मिलियन वर्ष बाद) की प्राचीनतम आकाशगंगा 'JADES-GS-z14-0' का स्पेक्ट्रोस्कोपिक विश्लेषण सत्यापित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सौरमंडल के सभी ग्रह पश्चिम से पूर्व दिशा में अपनी धुरी पर घूर्णन (Rotation) करते हैं।
2. शनि का औसत घनत्व जल के घनत्व से भी कम है।
3. क्षुद्रग्रह पेटी (Asteroid Belt) बृहस्पति और शनि की कक्षाओं के मध्य विस्तृत है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2

(C) केवल 2 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (B) केवल 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 असत्य है, क्योंकि शुक्र (Venus) और अरुण (Uranus) अपनी धुरी पर पूर्व से पश्चिम (Clockwise/Retrograde) दिशा में घूर्णन करते हैं, जबकि अन्य ग्रह पश्चिम से पूर्व (Counter-clockwise) घूमते हैं।
  - कथन 2 सत्य है, शनि का औसत घनत्व लगभग 0.69 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर है, जो जल के घनत्व (1.0 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर) से कम है। यदि इसे जल में रखा जाए, तो यह तैरेगा।
  - कथन 3 असत्य है, क्योंकि क्षुद्रग्रह पेटी **मंगल और बृहस्पति** की कक्षाओं के मध्य स्थित है, न कि बृहस्पति और शनि के मध्य।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (खगोलीय पिंड/संकल्पना)	**सूची-II (विशेषता / वैज्ञानिक)**
a. बिग बैंग सिद्धांत	1. सौरमंडल का सबसे छोटा उपग्रह
b. टाइटन	2. जॉर्ज लेमैत्रे
c. डीमॉस	3. नाइट्रोजन युक्त सघन वायुमंडल वाला शनि का उपग्रह
d. गैनिमीड	4. सौरमंडल का सबसे बड़ा उपग्रह

©IASHINDIMEDIUM

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-3, b-2, c-4, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **बिग बैंग सिद्धांत** का प्रतिपादन बेल्जियम के खगोलशास्त्री एवं पादरी **जॉर्ज लेमैत्रे** ने किया था।
    - **टाइटन** शनि का सबसे बड़ा उपग्रह है, जिसकी प्रमुख विशेषता इसका नाइट्रोजन-समृद्ध सघन वायुमंडल है।
    - **डीमॉस** मंगल ग्रह का परिक्रमा करने वाला सौरमंडल का सबसे छोटा प्राकृतिक उपग्रह है।
    - **गैनिमीड** बृहस्पति का उपग्रह है तथा यह संपूर्ण सौरमंडल का सबसे बड़ा उपग्रह है (यह बुध ग्रह से भी आकार में बड़ा है)।

टॉपिक – 2 : पृथ्वी की आंतरिक संरचना: क्रस्ट, मेंटल और कोर

पृथ्वी की आंतरिक बनावट का वैज्ञानिक ज्ञान मुख्य रूप से भूकंपीय तरंगों (P एवं S तरंगों) के व्यवहार, घनत्व भिन्नता तथा उल्कापिंडों के अध्ययन पर आधारित है। रासायनिक संघटन और भौतिक अवस्था के आधार पर इसे तीन प्रमुख संकेंद्रित परतों में विभाजित किया गया है:

1. भूपर्पटी (Crust)

- यह पृथ्वी की सबसे बाहरी, भंगुर (brittle) तथा सबसे पतली परत है। पृथ्वी के कुल आयतन का मात्र लगभग 1% और द्रव्यमान का 0.5% हिस्सा क्रस्ट है।
- **महासागरीय क्रस्ट:** औसत मोटाई 5 किमी; मुख्यतः बेसाल्टिक चट्टानों से निर्मित; सिलिका एवं मैग्नीशियम की प्रधानता के कारण इसे **सीमा (SIMA)** कहा जाता है (घनत्व लगभग 2.7–3.0 ग्राम/सेमी^{3})।
- **महाद्वीपीय क्रस्ट:** औसत मोटाई 30–35 किमी (पर्वतीय क्षेत्रों में 70 किमी तक); मुख्यतः ग्रेनाइटिक चट्टानों से निर्मित; सिलिका एवं एल्युमीनियम की अधिकता के कारण इसे **सियाल (SIAL)** कहा जाता है (औसत घनत्व 2.7 ग्राम/सेमी^{3})।

2. मेंटल (Mantle)

- यह क्रस्ट के नीचे **2,900 किमी** की गहराई तक विस्तृत है। पृथ्वी के कुल आयतन का **84%** तथा द्रव्यमान का **67%** भाग मेंटल में निहित है।
- **दुर्बलता मंडल (Asthenosphere):** ऊपरी मेंटल का ऊपरी भाग (लगभग 100 से 400 किमी) प्लास्टिक/अर्ध-पिघली अवस्था में है। यह मैग्मा का मुख्य स्रोत है और इसी पर स्थलमंडल (Lithosphere = क्रस्ट + ऊपरी मेंटल, 10–200 किमी) तैरता है।
- इसका घनत्व 3.4 से 5.5 ग्राम/सेमी^{3} तक बढ़ता है।

3. क्रोड या कोर (Core)

- मेंटल के नीचे 2,900 किमी से लेकर केंद्र (6,371 किमी) तक फैला हुआ भाग। आयतन में लगभग **15%** और द्रव्यमान में **32.5%** योगदान।
- रासायनिक रूप से निकेल एवं फेरस (लोहा) से निर्मित होने के कारण इसे **निफे (NIFE)** कहा जाता है।
- **बाह्य कोर (Outer Core):** 2,900 से 5,150 किमी; S-तरंगें इसमें प्रवेश नहीं कर पातीं, जिससे सिद्ध होता है कि यह **तरल/द्रव अवस्था** में है। पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र (Geodynamo) इसी द्रव बाह्य कोर के संवहन से उत्पन्न होता है।
- **आंतरिक कोर (Inner Core):** 5,150 से 6,371 किमी; अत्यधिक दबाव के कारण **ठोस अवस्था** में; घनत्व सर्वाधिक (लगभग 13 ग्राम/सेमी^{3})।

4. प्रमुख असंबद्धताएं (Discontinuities) — UPPCS हेतु अति-महत्वपूर्ण क्रम

1. **कोनराड (Conrad):** ऊपरी क्रस्ट और निचले क्रस्ट के मध्य
2. **मोहोरोविसिक / मोहो (Mohorovicic):** क्रस्ट और मेंटल के मध्य
3. **रेपेटी (Repetti):** ऊपरी मेंटल और निचले मेंटल के मध्य
4. **गुटेनबर्ग (Gutenberg):** मेंटल और बाह्य कोर के मध्य
5. **लेहमैन (Lehmann):** बाह्य कोर और आंतरिक कोर के मध्य

5. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **आंतरिक कोर के घूर्णन की मंदी (Slowdown of Inner Core):** सिस्मोलॉजिकल अध्ययनों (नेचर जर्नल में प्रकाशित शोध) ने पुष्टि की कि पृथ्वी के आंतरिक कोर की घूर्णन गति मेंटल और क्रस्ट की सापेक्ष गति की तुलना में धीमी हो गई है, जिससे दिन की लंबाई में माइक्रोसेकंड स्तर के सूक्ष्म परिवर्तन का विश्लेषण किया जा रहा है।
- **अल्ट्रा-लो वेलोसिटी ज़ोन (ULVZs) का मानचित्रण:** कोर-मेंटल सीमा (Gutenberg Discontinuity) पर अत्यधिक गर्म, पिघले हुए पदार्थों के विशाल पॉकेट्स की हाई-रिज़ॉल्यूशन भूकंपीय टोमोग्राफी द्वारा पहचान की गई, जो प्राचीन उप-अपवाहित (subducted) क्रस्ट के अवशेष माने जा रहे हैं।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पृथ्वी की आंतरिक परतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'मोहोरोविसिक असंबद्धता' मेंटल और कोर के मध्य सीमा का निर्धारण करती है।
2. पृथ्वी का बाह्य कोर तरल अवस्था में है, जबकि आंतरिक कोर अत्यधिक दबाव के कारण ठोस अवस्था में है।
3. संपूर्ण पृथ्वी के द्रव्यमान में सर्वाधिक योगदान क्रस्ट (भूपर्पटी) का है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2

(C) केवल 2 और 3

(D) 1, 2 और 3

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर: (B) केवल 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है, क्योंकि **मोहोरोविसिक (मोहो) असंबद्धता** क्रस्ट और मेंटल के मध्य पाई जाती है। मेंटल और कोर के मध्य की सीमा को **गुटेनबर्ग असंबद्धता** कहते हैं।
    - कथन 2 सत्य है, भूकंपीय S-तरंगें बाह्य कोर में लुप्त हो जाती हैं, जिससे इसका तरल होना प्रमाणित होता है, जबकि अत्यधिक सीमांत दबाव (Confining pressure) के कारण आंतरिक कोर ठोस है।
    - कथन 3 असत्य है, क्योंकि पृथ्वी के द्रव्यमान में सर्वाधिक योगदान **मेंटल (लगभग 67%)** का है, जबकि क्रस्ट का योगदान 1% से भी कम (लगभग 0.5%) है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (असंबद्धता)	**सूची-II (संबंधित परतें)**
a. कोनराड असंबद्धता	1. बाह्य कोर एवं आंतरिक कोर के मध्य
b. गुटेनबर्ग असंबद्धता	2. ऊपरी क्रस्ट एवं निचले क्रस्ट के मध्य
c. लेहमैन असंबद्धता	3. निचले मेंटल एवं बाह्य कोर के मध्य
d. रेपेटी असंबद्धता	4. ऊपरी मेंटल एवं निचले मेंटल के मध्य

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-3, b-2, c-4, d-1

(C) a-2, b-1, c-3, d-4

(D) a-4, b-3, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कोनराड असंबद्धता:** महाद्वीपीय सियाल (ऊपरी क्रस्ट) और सीमा (निचले क्रस्ट) के संक्रमण क्षेत्र में पाई जाती है।
    - **गुटेनबर्ग असंबद्धता:** 2,900 किमी की गहराई पर मेंटल तथा बाह्य कोर को अलग करती है।
    - **लेहमैन असंबद्धता:** लगभग 5,150 किमी की गहराई पर बाह्य तरल कोर और आंतरिक ठोस कोर के मध्य स्थित है।
    - **रेपेटी असंबद्धता:** लगभग 700 किमी की गहराई पर ऊपरी मेंटल तथा निचले मेंटल के संक्रमण क्षेत्र में पाई जाती है।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक – 3 : प्लेट विवर्तनिकी (Plate Tectonics)

प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत पृथ्वी के स्थलमंडल (Lithosphere) के क्षैतिज संचलन और विरूपण की वैज्ञानिक व्याख्या करता है। वर्ष 1967 में मैकेंजी, पार्कर और डब्ल्यू. जे. मॉर्गन ने स्वतंत्र रूप से उपलब्ध साक्ष्यों को एकीकृत कर इस सिद्धांत को प्रतिपादित किया। इसका आधार अल्फ्रेड वेगनर का 'महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत' (1912), आर्थर होम्स का 'संवहन तरंग सिद्धांत' (1930 के दशक) तथा हैरी हेस का 'सागरीय नितल प्रसरण' (Sea Floor Spreading, 1961) बना।

1. विवर्तनिकी प्लेटों का वर्गीकरण

पृथ्वी का स्थलमंडल दुर्बलता मंडल (Asthenosphere) पर तैरती हुई 7 मुख्य और अनेक छोटी (गौण) प्लेटों में विभक्त है:

- **7 प्रमुख प्लेटें: (1) अंटार्कटिक, (2) उत्तरी अमेरिकी, (3) दक्षिणी अमेरिकी, (4) प्रशांत महासागरीय (पूर्णतः महासागरीय प्लेट, सबसे बड़ी), (5) भारत-ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड, (6) अफ्रीकी, और (7) यूरेशियाई प्लेट।**
- **प्रमुख लघु (Minor) प्लेटें:**
    - **कोकोस प्लेट: मध्य अमेरिका और प्रशांत प्लेट के बीच**
    - **नाज़का प्लेट: दक्षिण अमेरिका और प्रशांत प्लेट के बीच**
    - **अरेबियन प्लेट: सऊदी अरब का भूभाग**
    - **फ़िलीपीन प्लेट: एशियाई और प्रशांत प्लेट के बीच**
    - **फ़ूजी प्लेट: ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्व में स्थित**
    - **जुआन डी फूका प्लेट: उत्तरी अमेरिकी प्लेट के उत्तर-पश्चिम में स्थित**

2. प्लेट सीमाएं एवं संचलन के प्रकार

प्लेटों की गतिशीलता के लिए मेंटल में रेडियोधर्मी तत्वों से उत्पन्न संवहनीय धाराएं (Convection Currents) उत्तरदायी हैं। सीमाओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है:

1. **अभिसारी सीमा (Convergent / Destructive Boundary): जब दो प्लेटें आमने-सामने टकराती हैं। अधिक घनत्व वाली प्लेट कम घनत्व वाली प्लेट के नीचे क्षेपित (Subduct) होकर मेंटल में विलीन हो जाती है। इसे 'विनाशकारी सीमा' कहते हैं।**
    - ***महासागरीय-महाद्वीपीय अभिसरण:*** **एंडीज एवं रॉकीज पर्वत, गर्त (Trenches)।**
    - ***महासागरीय-महासागरीय अभिसरण:*** **द्वीपीय तोरण (Island Arcs), मारियाना ट्रेंच, जापान द्वीपसमूह।**
    - ***महाद्वीपीय-महाद्वीपीय अभिसरण:*** **हिमालय और आल्प्स पर्वत (यहाँ सबडक्शन सीमित होने से ज्वालामुखी क्रिया प्रायः अनुपस्थित रहती है)।**
2. **अपसारी सीमा (Divergent / Constructive Boundary): जब दो प्लेटें विपरीत दिशाओं में गति करती हैं, जिससे मेंटल से मैग्मा ऊपर आकर नए क्रस्ट का निर्माण करता है।**
    - ***उदाहरण:*** **मध्य-अटलांटिक कटक (Mid-Atlantic Ridge), पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश घाटी (Great Rift Valley)।**

©IASHINDIMEDIUM

3. **रूपांतर / संरक्षी सीमा (Transform Boundary): जहाँ दो प्लेटें एक-दूसरे के समानांतर क्षैतिज रूप से खिसकती हैं। यहाँ क्रस्ट का न तो निर्माण होता है और न ही विनाश।**
    - ***उदाहरण:*** **कैलिफ़ोर्निया का सैन एंड्रियास भ्रंश (San Andreas Fault)।**

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश प्रणाली (EARS) में महाद्वीपीय विखंडन: अफ्रीकी प्लेट के सोमाली और न्युबियन प्लेटों में विभाजन पर नवीनतम भू-भौतिकीय अध्ययनों ने पुष्टि की कि अफ़ार त्रिकोण (Afar Triangle) में क्रस्टल थिनिंग तीव्र हुई है, जो भविष्य में एक नए महासागर के निर्माण की ओर अग्रसर है।**
- **तिब्बती पठार के नीचे भारतीय प्लेट का विखंडन (Delamination): सिस्मोलॉजिकल टोमोग्राफी डेटा पर आधारित शोधपत्रों के अनुसार, यूरेशियाई प्लेट के नीचे क्षेपित भारतीय प्लेट का निचला सघन मेंटल लिथोस्फीयर क्षैतिज रूप से टूटकर अलग हो रहा है, जिससे हिमालयी भूकंपीय संवेदनशीलता का नया मॉडल सामने आया है।**

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

	लघु प्लेट (Minor Plate)	अवस्थिति
1.	कोकोस प्लेट	मध्य अमेरिका और प्रशांत प्लेट के मध्य
2.	नाज़का प्लेट	दक्षिण अमेरिका और प्रशांत प्लेट के मध्य
3.	जुआन डी फूका प्लेट	ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्व में

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (A) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **युग्म 1 सही सुमेलित है: कोकोस प्लेट मध्य अमेरिका और प्रशांत महासागरीय प्लेट के मध्य स्थित है।**
    - **युग्म 2 सही सुमेलित है: नाज़का प्लेट दक्षिण अमेरिका और प्रशांत महासागरीय प्लेट के मध्य अवस्थित है (इसके क्षेपण से एंडीज पर्वत शृंखला बनी है)।**
    - **युग्म 3 सही सुमेलित नहीं है: जुआन डी फूका प्लेट उत्तरी अमेरिका के प्रशांत उत्तर-पश्चिम तट के पास (उत्तरी अमेरिकी प्लेट के पश्चिम में) स्थित है। ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्व में फ़ूजी प्लेट स्थित है।**

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 2. प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांतों एवं परिघटनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. **दो महाद्वीपीय प्लेटों के अभिसरण (C-C Convergence) के दौरान तीव्र ज्वालामुखी उद्गार की घटनाएं सामान्यतः नहीं पाई जाती हैं।**
2. **मध्य-अटलांटिक कटक का निर्माण प्लेटों के रूपांतर (Transform) संचलन का परिणाम है।**
3. **प्लेटों की गति का मुख्य संचालक बल मेंटल में चलने वाली तापीय संवहन धाराएं हैं।**

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (C) केवल 1 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कथन 1 सत्य है: जब दो महाद्वीपीय प्लेटें टकराती हैं (जैसे भारतीय एवं यूरेशियाई प्लेट), तो दोनों का घनत्व कम होने के कारण कोई भी प्लेट गहराई तक एस्थेनोस्फीयर में नहीं धंसती जिससे मैग्मा का निर्माण नहीं हो पाता; अतः हिमालयी क्षेत्र में भूकंप तो आते हैं परंतु सक्रिय ज्वालामुखी नहीं पाए जाते।**
    - **कथन 2 असत्य है: मध्य-अटलांटिक कटक अपसारी सीमा (Divergent Boundary) का उदाहरण है, जहाँ प्लेटें विपरीत दिशाओं में गति करती हैं और दरारी उद्भेदन से नए महासागरीय क्रस्ट का निर्माण होता है।**
    - **कथन 3 सत्य है: मेंटल में रेडियोधर्मी पदार्थों से उत्पन्न ऊष्मा संवहन तरंगों को जन्म देती है, जिसे आर्थर होम्स ने प्रस्तावित किया था और यह प्लेटों की गतिशीलता का मूलभूत संचालक बल है।**

टॉपिक - 4 :भूकंप, ज्वालामुखी और सुनामी की प्रक्रिया

1. भूकंप (Earthquakes)

पृथ्वी के स्थलमंडल (Lithosphere) में संचित ऊर्जा के अचानक विमुक्त होने से उत्पन्न कंपन को भूकंप कहते हैं।

- **उद्गम केंद्र (Focus / Hypocenter):** भूगर्भ में वह स्थान जहाँ से ऊर्जा विमुक्त होती है।
- **अधिकेंद्र (Epicenter):** उद्गम केंद्र के ठीक लंबवत (90°) भूपटल पर स्थित वह निकटतम बिंदु जहाँ भूकंपीय तरंगें सबसे पहले पहुंचती हैं।
- **भूकंपीय तरंगें (Seismic Waves):**
    1. **प्राथमिक तरंगें (P-waves):** अनुदैर्ध्य (ध्वनि तरंगों के समान), संपीड़न तरंगे; ठोस, द्रव व गैस तीनों माध्यमों में गमनशील; सर्वाधिक गति।

©IASHINDIMEDIUM

2. **द्वितीयक तरंगें (S-waves):** अनुप्रस्थ (प्रकाश तरंगों के समान); केवल ठोस माध्यम में संचरित; तरल में लुप्त (बाह्य कोर के द्रव होने का प्रमाण)।

3. **धरातलीय तरंगें (L-waves / Love & Rayleigh):** धरातल पर सबसे अंत में पहुँचती हैं; सर्वाधिक विनाशकारी।

- **मापन: रिक्टर पैमाना** भूकंप की विमुक्त ऊर्जा (परिमाण/Magnitude - लॉगरिदमिक पैमाना, 0–10) तथा **मरकेली पैमाना** तीव्रता/विनाश (Intensity - गुणात्मक, 1–12) मापता है।

2. ज्वालामुखी (Volcanism)

मेंटल के दुर्बलता मंडल (Asthenosphere) से मैग्मा, गैसें (जलवाष्प सर्वाधिक ~60-90%), राख और विखंडित पदार्थों का धरातल पर निकास ज्वालामुखी कहलाता है।

- **वर्गीकरण:**
    - **सक्रिय:** माउंट एटना व स्ट्रोम्बोली (इटली - 'भूमध्य सागर का प्रकाश स्तंभ'), कोटोपैक्सी (इक्वाडोर), किलाउआ एवं मौना लोआ (हवाई द्वीप), बैरन द्वीप (भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी)।
    - **प्रसुप्त (Dormant):** विसुवियस (इटली), क्राकाटोआ (इंडोनेशिया), नारकोंडम (अंडमान)।
    - **शांत (Extinct):** किलिमंजारो (तंजानिया), पोपा (म्यांमार), चिम्बराजो (इक्वाडोर)।
- **आंतरिक स्थलाकृतियां:** मैग्मा के भूपटल के भीतर जमने से निर्मित संरचनाएं — **बैथोलिथ** (विशाल गुंबदनुमा मैग्मा पिंड), **लैकोलिथ**, **फैकोलिथ** (अपनति व अभिनति में जमाव), **लोपोलिथ** (तश्तरीनुमा), **सिल** (क्षैतिज परत) और **डाइक** (लंबवत दीवारनुमा)।

3. सुनामी (Tsunami)

सुनामी जापानी भाषा का शब्द है ('हार्बर वेव्स' या पत्तन तरंगें)। यह महासागरीय जल में उत्पन्न होने वाली अत्यधिक लंबी तरंगदैर्ध्य (Wave-length) वाली तरंगों की श्रृंखला है।

- **उत्पत्ति के कारण:** अंतःसमुद्री सबडक्शन जोनों में 7.0 से अधिक परिमाण के तीव्र भूकंप, अंतःसागरीय भूस्खलन या विस्फोटक ज्वालामुखी उद्गार।
- **विशेषता:** गहरे समुद्र में तरंगदैर्ध्य बहुत अधिक (100–200 किमी) तथा तरंग ऊंचाई (आयाम) कम (1 मीटर से कम) होती है। उथले तटीय भागों में पहुँचते ही शोलिंग प्रभाव (Shoaling effect) के कारण गति घट जाती है परंतु जल स्तर की ऊंचाई कई गुना बढ़ जाती है।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **रेकजानेस प्रायद्वीप ज्वालामुखी उद्भेदन (आइसलैंड):** मध्य-अटलांटिक कटक के विवर्तनिकी संचलन के चलते ग्रिंडाविक क्षेत्र में लगातार दरारी (fissure) उद्गार दर्ज किए गए, जिससे क्रस्ट के विस्तार का प्रत्यक्ष साक्ष्य मिला।
- **कमचटका और कुरिल ट्रेंच भूकंपीय हलचल:** प्रशांत महासागर के 'रिंग ऑफ फायर' (Ring of Fire) क्षेत्र में 7.0+ तीव्रता के अंतःसमुद्री भूकंपों के पश्चात पैसिफिक सुनामी वार्निंग सिस्टम (PTWS) द्वारा तटीय चेतावनी प्रणालियों का सफल वास्तविक परीक्षण हुआ।
- **भारत की राष्ट्रीय सुनामी पूर्व चेतावनी प्रणाली (ITEWC):** INCOIS (हैदराबाद) ने हिंद महासागर में रियल-टाइम ओशन बॉटम प्रेशर रिकॉर्डर्स (BPRs) और तटीय रडार नेटवर्क को उन्नत कर चेतावनी समय में सुधार किया।

©IASHINDIMEDIUM

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भूकंपीय तरंगों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. P-तरंगें प्रकाश तरंगों की भांति अनुप्रस्थ होती हैं और केवल ठोस माध्यम से गुजर सकती हैं।
2. अधिकेंद्र (Epicenter) भूगर्भ में वह बिंदु है जहाँ से ऊर्जा सर्वप्रथम विमुक्त होती है।
3. S-तरंगें पृथ्वी के बाह्य कोर (Outer Core) में प्रवेश नहीं कर पाती हैं।
4. धरातलीय तरंगें (Surface Waves) सिस्मोग्राफ पर सबसे अंत में दर्ज की जाती हैं और सर्वाधिक विनाशकारी होती हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 3 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) केवल 1, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: P-तरंगें अनुदैर्ध्य (Longitudinal) ध्वनि तरंगों के समान होती हैं और ठोस, द्रव तथा गैस तीनों माध्यमों से गुजर सकती हैं। S-तरंगें अनुप्रस्थ होती हैं।
    - कथन 2 असत्य है: भूगर्भ में जहाँ ऊर्जा विमुक्त होती है, उसे **उद्गम केंद्र (Focus / Hypocenter)** कहते हैं। उद्गम केंद्र के ठीक लंबवत धरातल पर स्थित बिंदु को अधिकेंद्र (Epicenter) कहते हैं।
    - कथन 3 सत्य है: S-तरंगें तरल माध्यम में गति नहीं कर सकतीं, इसलिए वे द्रव अवस्था वाले बाह्य कोर में लुप्त हो जाती हैं (जिससे S-वेव शैडो ज़ोन बनता है)।
    - कथन 4 सत्य है: धरातलीय (L-तरंगें) तरंगें सबसे कम गति वाली होती हैं, अतः सिस्मोग्राफ पर अंत में रिकॉर्ड होती हैं, परंतु चट्टानों के अत्यधिक विस्थापन के कारण सर्वाधिक विनाशकारी होती हैं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (ज्वालामुखी / स्थलाकृति)	**सूची-II (स्थान / अभिलक्षण)**
a. माउंट स्ट्रोम्बोली	1. मैग्मा का तश्तरीनुमा अंतर्वेधी जमाव
b. मौना लोआ	2. भूमध्य सागर का प्रकाश स्तंभ

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (ज्वालामुखी / स्थलाकृति)	सूची-II (स्थान / अभिलक्षण)
c. लोपोलिथ	3. भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी
d. बैरन द्वीप	4. हवाई द्वीप (प्रशांत महासागर)

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-3, c-1, d-4

(C) a-4, b-2, c-3, d-1

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **माउंट स्ट्रोम्बोली:** इटली के लिपारी द्वीप पर स्थित सक्रिय ज्वालामुखी है, जिससे निरंतर प्रज्वलित गैसें निकलने के कारण इसे 'भूमध्य सागर का प्रकाश स्तंभ' कहा जाता है।
    - **मौना लोआ:** हवाई द्वीप पर स्थित विश्व का सबसे विस्तृत ढाल (Shield) ज्वालामुखी है।
    - **लोपोलिथ:** भूगर्भ में मैग्मा के तश्तरी के आकार (Saucer-shaped) में जमने से निर्मित अंतर्वेधी आग्नेय चट्टान है।
    - **बैरन द्वीप:** अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित भारत तथा दक्षिण एशिया का एकमात्र पुष्ट सक्रिय ज्वालामुखी है।

टॉपिक - 5 प्रमुख चट्टानें (आग्नेय, अवसादी, रूपांतरित)

पृथ्वी की भूपर्पटी (Crust) का निर्माण विभिन्न खनिजों के समुच्चय से बनी चट्टानों (शैल) से हुआ है। उत्पत्ति, संरचना और निर्माण प्रक्रिया के आधार पर चट्टानों को तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जाता है:

1. आग्नेय चट्टानें (Igneous Rocks)

मैग्मा या लावा के शीतल होकर ठोस बनने से इनका निर्माण होता है। इन्हें **प्राथमिक शैल (Primary Rocks)** कहा जाता है क्योंकि धरातल पर अन्य चट्टानों की उत्पत्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन्हीं से हुई है।

- **प्रमुख विशेषताएं:** ये रवेदार (Crystalline), कठोर एवं अप्रवेश्य होती हैं। इनमें **परतें (Stratification) और जीवाश्म (Fossils) नहीं पाए जाते**। धात्विक खनिज (लोहा, निकेल, तांबा, सोना आदि) प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।
- **वर्गीकरण:**
    - **अंतर्वेधी (Intrusive):** मैग्मा का भूपर्पटी के भीतर मंद गति से ठंडा होना; रवे बड़े होते हैं। उदाहरण: **ग्रेनाइट, गैब्रो, डायोराइट, पेग्माटाइट**।

- **बहिर्वेधी (Extrusive):** लावा का धरातल पर आकर तीव्र गति से ठंडा होना; रवे अत्यंत महीन या कांच सदृश होते हैं। उदाहरण: **बेसाल्ट** (दक्कन ट्रैप का निर्माण), **ओब्सीडियन, प्यूमिस**।

- **रासायनिक आधार पर:** अम्लीय (सिलिका $> 65\%$, जैसे ग्रेनाइट) तथा क्षारीय/भास्मिक (सिलिका $< 45 - 55\%$, जैसे बेसाल्ट)।

2. अवसादी चट्टानें (Sedimentary Rocks)

अपक्षय एवं अपरदन के कारकों द्वारा पूर्व-निर्मित चट्टानों के चूर्ण, निक्षेप और जैव अवशेषों के परतों में संचय तथा **शिलीभवन (Lithification)** से इनका निर्माण होता है। ये भूपर्पटी के कुल आयतन का मात्र लगभग 5% हैं, किंतु धरातलीय सतह के **75% भाग को आच्छादित** करती हैं।

- **प्रमुख विशेषताएं:** ये संस्तरित/परतदार होती हैं तथा इनमें **जीवाश्म पाए जाते हैं**। कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और भूमिगत जल इन्हीं में संचित रहते हैं।

- **वर्गीकरण:**

  - **यांत्रिक रूप से निर्मित:** बलुआ पत्थर (Sandstone), शेल (Shale), कांग्लोमरेट, सिल्ट, लोएस।

  - **जैविक/कार्बनिक रूप से निर्मित:** चूना पत्थर (Limestone), कोयला (Coal), पीट, खड़िया (Chalk)।

  - **रासायनिक रूप से निर्मित:** सेंधा नमक (Rock Salt), जिप्सम, पोटाश।

3. कायांतरित / रूपांतरित चट्टानें (Metamorphic Rocks)

उच्च तापमान (Thermal) एवं अत्यधिक दबाव (Dynamic) के प्रभाव से जब आग्नेय अथवा अवसादी चट्टानों के मूल स्वरूप, गठन और खनिजों का पुनर्क्रिस्टलीकरण होता है, तो रूपांतरित चट्टानें बनती हैं।

- **प्रमुख रूपांतरण चक्र:**

  - ग्रेनाइट → **नीस (Gneiss)**

  - बेसाल्ट → **एम्फिबोलाइट / शिस्ट**

  - बलुआ पत्थर → **क्वार्ट्जाइट (Quartzite)**

  - चूना पत्थर → **संगमरमर (Marble)**

  - शेल → **स्लेट (Slate)** → **फ़िलाइट** → **शिस्ट**

  - कोयला → **ग्रेफाइट / हीरा**

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) और क्रिटिकल मिनरल्स अन्वेषण:** भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) ने फील्ड सीजन 2025–26 के दौरान प्रायद्वीपीय भारत की प्राचीन आग्नेय और कायांतरित चट्टानी संरचनाओं (क्रैटॉन्स) में लिथियम, ग्रेफाइट और दुर्लभ मृदा तत्वों (REEs) के व्यापक भण्डारों के मूल्यांकन हेतु 200 से अधिक विशिष्ट खनिज अन्वेषण परियोजनाएं पूरी कीं।

©IASHINDIMEDIUM

- **उत्तर-पश्चिम भारत के अवसादी बेसिन में पोटाश:** राजस्थान के नागौर-गंगानगर बेसिन के विस्तार के रूप में पंजाब के दक्षिणी जिलों की वाष्पीकृत अवसादी चट्टानी परतों (Evaporite basins) में पोटाश (सिल्वाइट और पॉलीहैलाइट) के रणनीतिक निक्षेपों का विस्तृत सीमांकन किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. चट्टानों की विशेषताओं और उनके वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. आग्नेय चट्टानें प्राथमिक चट्टानें कहलाती हैं और इनमें बहुतायत में जीवाश्म पाए जाते हैं।
2. धरातल के 75% से अधिक विस्तृत क्षेत्रफल पर अवसादी चट्टानों का फैलाव है, यद्यपि भूपर्पटी के कुल आयतन में इनका योगदान अत्यंत अल्प है।
3. बेसाल्ट एक बहिर्वेधी आग्नेय शैल का उदाहरण है, जिसके क्षरण से काली मृदा का निर्माण होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (B) केवल 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: आग्नेय चट्टानें मैग्मा या लावा के तप्त पिघले रूप से जमने के कारण बनती हैं, इसलिए इनमें **जीवाश्म पूर्णतः अनुपस्थित** होते हैं। जीवाश्म केवल अवसादी चट्टानों में पाए जाते हैं।
    - कथन 2 सत्य है: अवसादी शैलें धरातल के लगभग 75% सतही क्षेत्रफल को ढकती हैं, जबकि पूरी भूपर्पटी के आयतन में इनका हिस्सा केवल लगभग 5% है (शेष 95% भाग आग्नेय और रूपांतरित शैलों से बना है)।
    - कथन 3 सत्य है: बेसाल्ट धरातल पर लावा के तेजी से जमने से बनी महीन रवे वाली बहिर्वेधी (Extrusive) आग्नेय चट्टान है। इसके अपक्षय व अपरदन से दक्कन क्षेत्र में उपजाऊ 'रेगुर' (काली मिट्टी) का विकास हुआ है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (मूल चट्टान)	**सूची-II (रूपांतरित रूप)**
a. ग्रेनाइट	1. संगमरमर
b. बलुआ पत्थर	2. स्लेट
c. चूना पत्थर	3. नीस

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (मूल चट्टान)	सूची-II (रूपांतरित रूप)
d. शेल	4. क्वार्ट्जाइट

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **ग्रेनाइट (आग्नेय शैल)** अत्यधिक ताप और दाब के प्रभाव से **नीस (Gneiss)** में रूपांतरित हो जाता है।
    - **बलुआ पत्थर (यांत्रिक अवसादी शैल)** तापीय कायांतरण से कठोर **क्वार्ट्जाइट** में परिवर्तित होता है।
    - **चूना पत्थर (कैल्शियम युक्त अवसादी शैल)** के रूपांतरण से **संगमरमर (Marble)** का निर्माण होता है।
    - **शेल (मृण्मय अवसादी शैल)** संपीडन और ताप के कारण **स्लेट (Slate)** में बदल जाती है।

©IASHINDIMEDIUM

विश्व का भूगोल एवं मैपिंग

टॉपिक - 1: एशिया महाद्वीप के प्रमुख देश, नदियां और पर्वत

एशिया क्षेत्रफल एवं जनसंख्या दोनों दृष्टियों से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह भूमध्य रेखा से लेकर आर्कटिक वृत्त तक विस्तृत है तथा विवर्तनिकी व अपवाह की दृष्टि से अत्यधिक विविधता प्रदर्शित करता है।

1. प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएं एवं पर्वतीय गांठें

- **पामीर की गांठ ('संसार की छत'):** मध्य एशिया का मुख्य पर्वतीय केंद्र, जहाँ से कई पर्वत श्रेणियां निकलती हैं:
    - **पूर्व की ओर:** हिमालय, कुनलुन शान और काराकोरम।
    - **उत्तर-पूर्व की ओर:** तियान शान।
    - **पश्चिम की ओर:** हिंदूकुश (अफगानिस्तान/पाकिस्तान) और सुलेमान श्रेणी।
- **आर्मीनियाई गांठ:** पामीर के पश्चिम में स्थित; यहाँ से **एल्बुर्ज** व **ज़ाग्रोस** (ईरान) तथा **पोंटिक** व **टॉरस** (तुर्किये) पर्वत श्रेणियां निकलती हैं।
- **अन्य प्रमुख पर्वत:**
    - **यूराल पर्वत:** रूस में स्थित, जो एशिया को यूरोप से अलग करता है।
    - **माउंट एवरेस्ट (8,848.86 मी.):** नेपाल-तिब्बत सीमा पर स्थित विश्व की सर्वोच्च चोटी (नेपाल में 'सागरमाथा')।
    - **माउंट फ़ूजी:** जापान का सुप्रसिद्ध सुप्त ज्वालामुखी पर्वत (होन्शू द्वीप पर स्थित)।

2. प्रमुख नदियां एवं उनके मुहाने (UPPCS का पसंदीदा पैटर्न)

- **प्रशांत महासागरीय अपवाह:**
    - **यांग्त्सीक्यांग (Chang Jiang):** एशिया की सबसे लंबी नदी (~6,300 किमी); तिब्बत पठार से निकलकर पूर्वी चीन सागर में गिरती है (थ्री गॉर्जेस डैम इसी पर है)।
    - **ह्वांगहो ('पीली नदी' / 'चीन का शोक'):** लोएस मैदान से गाद लेकर बोहाई सागर/खाड़ी में गिरती है।
    - **अमूर नदी:** रूस और चीन के मध्य प्राकृतिक सीमा बनाती है तथा तातार जलडमरूमध्य/ओखोत्स्क सागर में गिरती है।
    - **सीक्यांग:** दक्षिणी चीन की प्रमुख नदी (मुहाना: दक्षिण चीन सागर)।
- **हिंद महासागरीय अपवाह:**
    - **मेकांग नदी:** 'दक्षिण-पूर्व एशिया की डेन्यूब'; तिब्बत से निकलकर म्यांमार, लाओस, थाईलैंड, कंबोडिया और वियतनाम होकर दक्षिण चीन सागर में गिरती है (लाओस-थाईलैंड सीमा बनाती है)।
    - **इरावदी व साल्विन:** म्यांमार की प्रमुख नदियां; अंडमान सागर/मर्तबान की खाड़ी में गिरती हैं। इरावदी म्यांमार की जीवनरेखा है।
    - **टिगरिस (दजला) एवं यूफ्रेट्स (फरात):** तुर्किये से निकलकर इराक में 'शत्त-अल-अरब' संगम बनाकर फारस की खाड़ी में गिरती हैं।
- **आर्कटिक महासागरीय अपवाह (उत्तरवाहिनी नदियां):**

©IASHINDIMEDIUM

- **ओब, येनिसी और लेना:** ये नदियां उत्तर की ओर बहकर आर्कटिक महासागर (कारा एवं लापतेव सागर) में गिरती हैं; शीतकाल में इनके मुहाने जम जाते हैं।

3. प्रमुख देश एवं भू-राजनीतिक तथ्य

- **दक्षिण-पूर्व एशिया का एकमात्र स्थलरुद्ध (Landlocked) देश:** लाओस।
- **मध्य एशियाई 'स्टैन' देश:** कजाकिस्तान (विश्व का सबसे बड़ा स्थलरुद्ध देश), उज्बेकिस्तान (दोहरा स्थलरुद्ध/Doubly Landlocked), तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान।
- **दक्षिण-पूर्व एशिया के प्रमुख द्वीपसमूह:** इंडोनेशिया (विश्व का सबसे बड़ा द्वीपसमूह) तथा फिलीपींस।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **मेकांग-लांकांग सहयोग एवं जल संकट:** मेकांग नदी के ऊपरी भाग (चीन में लांकांग) पर बने बांधों के प्रभाव और अल-नीनो जनित सूखे के कारण निम्न मेकांग बेसिन (कंबोडिया की टोनले सैप झील और वियतनाम डेल्टा) में जल प्रवाह और लवणता अतिक्रमण की गंभीर स्थिति पर अंतर-सरकारी समझौता वार्ताएं आयोजित की गईं।
- **मध्य एशिया पारगमन गलियारा (INSTC व मध्य गलियारा):** कैस्पियन सागर के पार कजाकिस्तान, अज़रबैजान और जॉर्जिया होते हुए यूरेशियाई व्यापार के लिए 'ट्रांस-कैस्पियन इंटरनेशनल ट्रांसपोर्ट रूट' (Middle Corridor) के बुनियादी ढांचे के विस्तार को गति दी गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

	नदी	**मुहाना (समाप्ति स्थल)**
1.	अमूर नदी	ओखोत्स्क सागर / तातार जलडमरूमध्य
2.	मेकांग नदी	मर्तबान की खाड़ी
3.	यांग्त्सीक्यांग	पूर्वी चीन सागर
4.	साल्विन नदी	दक्षिण चीन सागर

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-से सही सुमेलित हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1 और 3

(C) केवल 2 और 4

(D) 1, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 3

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - युग्म 1 सही सुमेलित है: अमूर नदी रूस और चीन के बीच सीमा बनाते हुए उत्तर-पूर्व की ओर बहती है और तातार जलडमरूमध्य के पास ओखोत्स्क सागर में गिरती है।
    - युग्म 2 सही सुमेलित नहीं है: मेकांग नदी दक्षिण-पूर्व एशिया के 6 देशों से प्रवाहित होकर वियतनाम तट पर **दक्षिण चीन सागर** में अपना डेल्टा बनाती है।
    - युग्म 3 सही सुमेलित है: यांग्त्सीक्यांग (चांग जियांग) एशिया की सबसे लंबी नदी है जो शंघाई के निकट **पूर्वी चीन सागर** में विलीन होती है।
    - युग्म 4 सही सुमेलित नहीं है: साल्विन नदी तिब्बत से निकलकर म्यांमार में बहते हुए **अंडमान सागर (मर्तबान की खाड़ी)** में गिरती है।

प्रश्न 2. एशिया महाद्वीप के भौगोलिक अभिलक्षणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. लाओस दक्षिण-पूर्व एशिया (आसियान क्षेत्र) का एकमात्र पूर्णतः स्थलरुद्ध (Landlocked) देश है।
2. पामीर की गांठ से पश्चिम की ओर विस्तृत श्रेणियों में एल्बुर्ज और ज़ाग्रोस पर्वत शामिल हैं।
3. ओब, येनिसी और लेना नदियां दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर प्रवाहित होकर आर्कटिक महासागर में गिरती हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (C) केवल 1 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: दक्षिण-पूर्व एशिया के 10 देशों में से केवल लाओस ही चारों ओर से स्थल (चीन, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, वियतनाम) से घिरा हुआ स्थलरुद्ध देश है।
    - कथन 2 असत्य है: पामीर की गांठ से पश्चिम की ओर सीधे **हिंदूकुश** और **सुलेमान** श्रेणियां निकलती हैं। एल्बुर्ज और ज़ाग्रोस पर्वत श्रेणियां **आर्मीनिया की गांठ** (Armenian Knot) से निकलकर ईरान के उत्तरी एवं दक्षिणी किनारों पर फैली हैं।
    - कथन 3 सत्य है: साइबेरियाई ढाल उत्तर की ओर होने के कारण ओब, येनिसी और लेना नदियां दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवाहित होती हैं और आर्कटिक महासागर के क्रमशः कारा और लापतेव सागर में गिरती हैं। शीतकाल में इनका उत्तरी मुहाना जम जाने के कारण निचले बेसिन में व्यापक दलदल और बाढ़ की स्थिति बनती है।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 2: अफ्रीका महाद्वीप (भ्रंश घाटी, मरुस्थल, नदियां)

अफ्रीका विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह एकमात्र ऐसा महाद्वीप है जिससे होकर **कर्क रेखा, भूमध्य रेखा और मकर रेखा** तीनों प्रमुख अक्षांश रेखाएं गुजरती हैं। इसके अधिकांश भाग पर प्राचीन गोंडवानालैंड के अवशेष के रूप में एक विशाल पठारी संरचना विस्तृत है।

1. महान भ्रंश घाटी (Great Rift Valley)

- **विस्तार व भू-आकृति:** यह पृथ्वी पर स्थित सबसे लंबी भ्रंश घाटी है (लगभग 6,000 किमी लंबाई), जो उत्तर में सीरिया व लाल सागर से होकर दक्षिण में मोजाम्बिक तक विस्तृत है। इसका निर्माण सोमाली प्लेट और न्युबियन प्लेट के अपसारी (Divergent) संचलन से हुआ है।
- **भ्रंश घाटी की प्रमुख झीलें (उत्तर से दक्षिण क्रम):** तुर्काना (रुडोल्फ), अल्बर्ट, एडवर्ड, किवु, **तांगानिका** (विश्व की दूसरी सबसे गहरी तथा सबसे लंबी मीठे पानी की झील) और न्यासा (मलावी)।
- **अपवाद: विक्टोरिया झील** (अफ्रीका की सबसे बड़ी झील, जिससे श्वेत नील निकलती है) भ्रंश घाटी के मुख्य गर्त में स्थित **नहीं** है, बल्कि यह दो भ्रंश शाखाओं के मध्य एक उथले गर्त में अवस्थित है। इससे होकर भूमध्य रेखा गुजरती है।
- **सर्वोच्च शिखर: माउंट किलिमंजारो** (5,895 मी., तंजानिया) भ्रंश घाटी के समीप स्थित एक शांत ज्वालामुखी पर्वत है।

2. प्रमुख मरुस्थल

- **सहारा मरुस्थल:** विश्व का सबसे बड़ा उष्ण मरुस्थल; उत्तरी अफ्रीका के 11 देशों में विस्तृत। उपोष्ण उच्च वायुदाब पेटी तथा ठंडी **कनारी जलधारा** के प्रभाव से निर्मित।
- **कालाहारी मरुस्थल:** दक्षिणी अफ्रीका (बोत्सवाना, नामीबिया व दक्षिण अफ्रीका) में विस्तृत; ठंडी **बेंगुएला धारा** से संबद्ध। यहाँ 'बुशमैन' जनजाति पाई जाती है। **ओकावांगो दलदल** इसी का आंतरिक अपवाह तंत्र है।
- **नामीब मरुस्थल:** नामीबिया के अटलांटिक तटीय भाग पर स्थित शुष्क मरुस्थल।

3. प्रमुख नदियां एवं उनके अभिलक्षण (UPPCS के पसंदीदा तथ्य)

- **नील नदी:** विश्व की सबसे लंबी नदी (~6,650 किमी)। यह श्वेत नील (विक्टोरिया झील से) और नीली नील (इथियोपिया की **टाना झील** से) के सूडान की राजधानी **खारतूम** में मिलने से बनती है तथा उत्तरवाहिनी होकर भूमध्य सागर में चापाकार डेल्टा बनाती है। इस पर मिस्र में **अस्वान बांध** (नासिर झील) निर्मित है।
- **कांगो (जायरे) नदी:** जल प्रवाह की दृष्टि से अफ्रीका की सबसे बड़ी नदी। यह **भूमध्य रेखा को दो बार** काटती है तथा अटलांटिक महासागर में गिरती है (स्टैनले और लिविंगस्टोन जलप्रपात इसी पर हैं)।
- **नाइजर नदी:** इसे 'पाम ऑयल रिवर' कहा जाता है; यह गिनी की खाड़ी में डेल्टा बनाती है (कैंजी बांध)।
- **जाम्बेजी नदी:** हिंद महासागर में गिरती है। इस पर विश्वप्रसिद्ध **विक्टोरिया जलप्रपात** तथा **करीबा बांध** स्थित हैं।
- **लिम्पोपो नदी:** दक्षिण अफ्रीका की नदी, जो **मकर रेखा को दो बार** काटती है तथा हिंद महासागर में गिरती है।
- **ऑरेंज नदी:** दक्षिण अफ्रीका व नामीबिया के मध्य सीमा बनाती हुई अटलांटिक में गिरती है।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

©IASHINDIMEDIUM

- **पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश प्रणाली में विखंडन गति (EARS Superplume Study):** भू-भौतिकीय अध्ययनों में पुष्टि हुई कि अफ्रीकी सुपरप्लूम से उठने वाले मैग्मा के दबाव के कारण केन्या की तुर्काना रिफ्ट और इथियोपिया के अफ़ार त्रिकोण में महाद्वीपीय क्रस्ट का खिंचाव तीव्र हुआ है, जिससे नए समुद्री बेसिन के निर्माण की विवर्तनिकी समय-सीमा पहले के आकलनों से अधिक तेज पाई गई है।

- **ग्रांड इथियोपियन रेनेसां डैम (GERD) का पूर्ण संचालन:** नीली नील (Blue Nile) नदी पर इथियोपिया द्वारा निर्मित अफ्रीका के सबसे बड़े जलविद्युत बांध (GERD) के सभी टर्बाइन चालू कर इसे पूर्णतः क्रियाशील किया गया, जिसके उपरांत मिस्र और सूडान के साथ डाउनस्ट्रीम जल सुरक्षा पर कूटनीतिक चर्चाएं फिर से केंद्र में आ गईं।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. अफ्रीका महाद्वीप की नदियों और उनकी विशेषताओं के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

	नदी	**विशिष्ट भौगोलिक लक्षण**
1.	कांगो (जायरे) नदी	भूमध्य रेखा को दो बार पार करती है
2.	लिम्पोपो नदी	मकर रेखा को दो बार पार करती है
3.	जाम्बेजी नदी	विश्वप्रसिद्ध विक्टोरिया जलप्रपात इस पर स्थित है
4.	नाइजर नदी	भूमध्य सागर में अपना चापाकार डेल्टा बनाती है

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-से सही सुमेलित हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - युग्म 1 सही सुमेलित है: कांगो (जायरे) नदी मध्य अफ्रीका में प्रवाहित होते हुए भूमध्य रेखा को दो बार काटती है और अंत में अटलांटिक महासागर में विलीन होती है।
    - युग्म 2 सही सुमेलित है: लिम्पोपो नदी दक्षिण अफ्रीका, बोत्सवाना, जिम्बाब्वे और मोजाम्बिक से बहते हुए मकर रेखा ($23\frac{1}{2}^{\circ}$ S) को दो बार पार करती है तथा हिंद महासागर में गिरती है।
    - युग्म 3 सही सुमेलित है: जाम्बेजी नदी पर जाम्बिया-जिम्बाब्वे सीमा पर स्थित विक्टोरिया जलप्रपात (स्थानीय नाम: मोसी-ओआ-तुन्या) अवस्थित है।

©IASHINDIMEDIUM

- युग्म 4 सही सुमेलित नहीं है: नाइजर नदी पश्चिम अफ्रीका से बहकर **गिनी की खाड़ी (अटलांटिक महासागर)** में गिरती है, न कि भूमध्य सागर में। भूमध्य सागर में गिरने वाली मुख्य अफ्रीकी नदी नील नदी है।

प्रश्न 2. पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश घाटी (Great Rift Valley) तथा इसकी झीलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. विक्टोरिया झील भ्रंश घाटी के मुख्य भ्रंश गर्त में स्थित नहीं है।
2. तांगानिका झील विश्व की सबसे लंबी तथा दूसरी सबसे गहरी मीठे पानी की झील है।
3. भ्रंश घाटी में स्थित तुर्काना, अल्बर्ट तथा न्यासा झीलें उत्तर से दक्षिण के सही भौगोलिक क्रम में हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (D) 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: विक्टोरिया झील अफ्रीकी भ्रंश घाटी की पश्चिमी और पूर्वी शाखाओं के मध्य स्थित एक उथले अवसादी बेसिन में स्थित है, इसलिए तकनीकी रूप से यह भ्रंश-निर्मित (Rift-valley lake) नहीं मानी जाती।
  - कथन 2 सत्य है: तांगानिका झील लगभग 673 किमी लंबी (विश्व की सबसे लंबी ताजे पानी की झील) और बैकाल झील के बाद विश्व की दूसरी सबसे गहरी (~1,470 मी.) झील है।
  - कथन 3 सत्य है: पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश घाटी में झीलों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम: **तुर्काना (केन्या) → अल्बर्ट → एडवर्ड → किवु → तांगानिका → न्यासा/मलावी** है।

टॉपिक - 3: यूरोप महाद्वीप (पर्वत, श्रृंखलाएं और नदियां)

यूरोप महाद्वीप यूरेशिया का पश्चिमी प्रायद्वीपीय विस्तार है। यह तीन तरफ से जलराशियों (उत्तर में आर्कटिक महासागर, पश्चिम में अटलांटिक महासागर और दक्षिण में भूमध्य सागर) से घिरा है। पूर्व में **यूराल पर्वत, यूराल नदी तथा कैस्पियन सागर** इसे एशिया से अलग करते हैं।

1. प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएं एवं शिखर

- **आल्प्स पर्वत श्रेणी (Alps):** मध्य-दक्षिणी यूरोप (फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, जर्मनी आदि) में विस्तृत नवीन मोड़दार (Tertiary Fold) पर्वत प्रणाली।
  - **माउंट ब्लैंक (Mont Blanc - 4,807 मी.):** आल्प्स की सर्वोच्च चोटी (फ्रांस-इटली सीमा पर)।
  - प्रमुख दर्रे: सेंट बर्नार्ड और ब्रैनर दर्रा (ऑस्ट्रिया व इटली के मध्य)।
- **काकेशस पर्वत (Caucasus Mountains):** काला सागर और कैस्पियन सागर के मध्य विस्तृत श्रृंखला।

- **माउंट एल्ब्रुस (Mount Elbrus - 5,642 मी.):** रूस में स्थित, संपूर्ण **यूरोप का सर्वोच्च शिखर** (सुप्त ज्वालामुखी)।

- **पिरेनीज पर्वत (Pyrenees): फ्रांस और स्पेन** के मध्य प्राकृतिक राजनीतिक सीमा बनाता है (इसके मध्य एंडोरा देश स्थित है)।
- **एपेनाइन्स पर्वत (Apennines):** इटली प्रायद्वीप की रीढ़ के रूप में उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत।
- **स्कैंडिनेवियाई पर्वत (Kjolen):** नॉर्वे और स्वीडन में विस्तृत प्राचीन कैलिडोनियन वलित पर्वत।
- **जूरा पर्वत (Jura Mountains): फ्रांस और स्विट्जरलैंड** के मध्य सीमा का निर्धारण करता है।
- **वॉशजेस (Vosges) एवं ब्लैक फॉरेस्ट (Black Forest):** क्रमशः फ्रांस और जर्मनी में स्थित ब्लॉक (भ्रंशोत्थ) पर्वत, जिनके मध्य **राइन भ्रंश घाटी** स्थित है।

2. प्रमुख नदियां एवं उनके मुहाने (UPPCS का कोर पैटर्न)

- **वोल्गा नदी (Volga):** यूरोप की **सबसे लंबी नदी** (~3,530 किमी)। यह वाल्दाई पहाड़ियों (रूस) से निकलकर **कैस्पियन सागर** में गिरती है।
- **डेन्यूब नदी (Danube):** यूरोप की दूसरी सबसे लंबी नदी (~2,860 किमी)। यह जर्मनी के **ब्लैक फॉरेस्ट** से निकलकर पूर्व की ओर बहती हुई **काला सागर** में विलीन होती है। यह विश्व की एकमात्र ऐसी नदी है जो **10 देशों** से गुजरती है और **4 राजधानियों** (विएना, ब्रातिस्लावा, बुडापेस्ट, बेलग्रेड) से होकर बहती है।
- **राइन नदी (Rhine):** स्विस आल्प्स से निकलकर जर्मनी व फ्रांस की सीमा बनाती हुई **उत्तरी सागर** में गिरती है। यह यूरोप का सबसे व्यस्ततम अंतःस्थलीय जलमार्ग है; इसके मुहाने पर **रॉटरडैम पत्तन** (नीदरलैंड्स) स्थित है।
- **सीन नदी (Seine):** फ्रांस की प्रमुख नदी, जिसके तट पर **पेरिस** स्थित है; यह इंग्लिश चैनल में गिरती है।
- **पो नदी (Po):** आल्प्स से निकलकर एड्रियाटिक सागर में गिरती है; इसे **'इटली की गंगा'** कहा जाता है (लोम्बार्डी का उपजाऊ मैदान इसी बेसिन में है)।
- **टेम्स नदी (Thames):** इंग्लैंड की नदी, जिसके तट पर लंदन स्थित है (उत्तरी सागर में विलीन)।
- **डॉन एवं नीपर (Don & Dnieper):** डॉन नदी अज़ोव सागर में तथा नीपर नदी काला सागर में गिरती है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **डेन्यूब और राइन बेसिन में अभूतपूर्व जलवायु उतार-चढ़ाव:** 2025–2026 के दौरान अल्पाइन ग्लेशियरों के तेजी से पीछे हटने और मौसमी सूखे के कारण राइन नदी के कौब (Kaub) चोक-पॉइंट पर जल स्तर में गिरावट से अंतर्देशीय माल ढुलाई प्रभावित हुई, जिसके बाद यूरोपीय संघ (EU) ने 'क्लाइमेट-रेसिलिएंट राइन वाटरवे' रणनीति लागू की।
- **आल्प्स पर्माफ्रॉस्ट पिघलने से भू-आकृतिक जोखिम:** पश्चिमी आल्प्स (विशेषकर फ्रांस व स्विट्जरलैंड के सीमावर्ती क्षेत्रों) में रिकॉर्ड उच्च ग्रीष्मकालीन तापमान के चलते चट्टानों के दरकने और रॉकफॉल की घटनाओं में वृद्धि के बाद पर्वतीय सीमाओं पर संयुक्त द्विपक्षीय सीमांकन और सिस्मिक मॉनिटरिंग नेटवर्क स्थापित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

©IASHINDIMEDIUM

	पर्वत श्रृंखला	प्राकृतिक सीमा (देश)
1.	पिरेनीज पर्वत	फ्रांस और स्पेन
2.	जूरा पर्वत	फ्रांस और स्विट्जरलैंड
3.	यूराल पर्वत	जर्मनी और पोलैंड

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(A) केवल 1

(B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (B) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - युग्म 1 सही सुमेलित है: पिरेनीज पर्वत श्रृंखला आइबेरियन प्रायद्वीप को शेष यूरोप से अलग करती है और फ्रांस तथा स्पेन के मध्य प्राकृतिक राजनीतिक सीमा बनाती है।
    - युग्म 2 सही सुमेलित है: जूरा पर्वत फ्रांस और स्विट्जरलैंड की सीमा पर विस्तृत एक वलित पर्वत है।
    - युग्म 3 सही सुमेलित नहीं है: यूराल पर्वत रूस में स्थित है जो भौगोलिक रूप से यूरोप को एशिया से अलग करता है। जर्मनी और पोलैंड के मध्य प्राकृतिक सीमा **ओडर-नीस (Oder-Neisse) नदियां** बनाती हैं, न कि यूराल पर्वत।

प्रश्न 2. यूरोप की नदियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. डेन्यूब नदी जर्मनी के ब्लैक फॉरेस्ट पर्वत से निकलकर कैस्पियन सागर में गिरती है।
2. वोल्गा नदी संपूर्ण यूरोप महाद्वीप की सबसे लंबी नदी है जो आंतरिक सागर कैस्पियन सागर में विलीन होती है।
3. राइन नदी एक भ्रंश घाटी (Rift Valley) से होकर प्रवाहित होती है तथा उत्तरी सागर में अपना मुहाना बनाती है।
4. 'पो नदी' को इटली की गंगा कहा जाता है जो एड्रियाटिक सागर में गिरती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1, 2 और 3

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर: (B) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: डेन्यूब नदी जर्मनी के ब्लैक फॉरेस्ट से निकलती अवश्य है, किंतु यह पूर्व की ओर प्रवाहित होकर **काला सागर (Black Sea)** में गिरती है, न कि कैस्पियन सागर में।
    - कथन 2 सत्य है: वोल्गा नदी (लंबाई लगभग 3,530 किमी) यूरोप की सबसे लंबी नदी है, जो रूस के वाल्दाई पहाड़ियों से निकलकर **कैस्पियन सागर** में गिरती है।
    - कथन 3 सत्य है: राइन नदी वॉशजेस (फ्रांस) और ब्लैक फॉरेस्ट (जर्मनी) के मध्य निर्मित भ्रंश घाटी से होकर बहती है और नीदरलैंड्स के रॉटरडैम के पास **उत्तरी सागर** में गिरती है।
    - कथन 4 सत्य है: पो नदी उत्तरी इटली के आल्प्स पर्वत से निकलकर लोम्बार्डी के उपजाऊ कृषि मैदान से होते हुए **एड्रियाटिक सागर** में गिरती है; इसे सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्व के कारण 'इटली की गंगा' कहा जाता है।

टॉपिक - 4: उत्तरी अमेरिका (रॉकीज़, महान झीलें, नदियां)

उत्तरी अमेरिका विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है, जो उत्तर में आर्कटिक महासागर, पूर्व में अटलांटिक तथा पश्चिम में प्रशांत महासागर से घिरा है। 49° उत्तरी अक्षांश रेखा और महान झीलें (Great Lakes) संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के मध्य प्राकृतिक एवं राजनीतिक सीमा बनाती हैं।

1. पश्चिमी कॉर्डिलेरा एवं रॉकी पर्वत श्रृंखला

- **रॉकीज़ (Rocky Mountains):** पश्चिमी तट के समानांतर अलास्का से न्यू मैक्सिको तक विस्तृत टर्शियरी युग की नवीन वलित पर्वत श्रृंखला।
    - **माउंट एल्बर्ट (4,401 मी.):** रॉकी पर्वत श्रृंखला की सर्वोच्च चोटी (कोलोराडो, यूएसए)।
    - **माउंट डेनाली / मैकिन्ले (6,190 मी.):** अलास्का श्रेणी में स्थित संपूर्ण **उत्तरी अमेरिका का सर्वोच्च शिखर**।
    - **स्थानीय पवन:** रॉकीज़ के पूर्वी ढालों पर नीचे उतरने वाली गर्म व शुष्क पवन को **चिनूक (Chinook)** या 'हिमभक्षी' (Snow Eater) कहा जाता है, जो चरागाहों को बर्फ-मुक्त रखती है।
- **प्रमुख अंत:पर्वतीय पठार:** कोलंबिया-स्नेक पठार, कोलोराडो पठार (ग्रैंड कैनियन स्थित) तथा मैक्सिकन पठार।

2. महान झीलें (The Great Lakes)

कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका की सीमा पर स्थित पाँच वृहत ताजे पानी की झीलों का समूह, जिनका निर्माण हिमानीकरण (Glaciation) द्वारा हुआ है:

- **पश्चिम से पूर्व की ओर सही क्रम: सुपीरियर → मिशिगन → ह्यूरन → ओंटारियो** (स्मरण सूत्र: SMHEO)।
- **क्षेत्रफल की दृष्टि से क्रम:** सुपीरियर > ह्यूरन > मिशिगन > ईरी > ओंटारियो।
- **महत्वपूर्ण तथ्य:**
    - **सुपीरियर झील:** विश्व की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील (सतही क्षेत्रफल के आधार पर)।

- **मिशिगन झील:** एकमात्र ऐसी झील जो **पूर्णतः संयुक्त राज्य अमेरिका** में स्थित है (शिकागो इसी के तट पर है)। शेष चार झीलें यूएसए व कनाडा की सीमा साझा करती हैं।
- **सू नहर (Soo Canal):** सुपीरियर और ह्यूरन झील को जोड़ती है।
- **वेलैंड नहर एवं नियाग्रा जलप्रपात:** ईरी और ओंटारियो झीलों के मध्य नियाग्रा नदी पर स्थित।
- डेट्रायट (ऑटोमोबाइल राजधानी) ईरी झील के निकट स्थित है।

3. प्रमुख नदी प्रणालियां (अपवाह तंत्र)

- **मिसिसिपी-मिसौरी प्रणाली:** उत्तरी अमेरिका का सबसे बड़ा नदी तंत्र। यह मैक्सिको की खाड़ी में गिरती है और विश्वप्रसिद्ध **पक्षीपाद (Bird's Foot) डेल्टा** बनाती है। सेंट लुइस में मिसिसिपी और मिसौरी का संगम होता है।
- **सेंट लॉरेंस नदी:** ओंटारियो झील से निकलकर अटलांटिक महासागर में गिरती है। यह विश्व का सबसे व्यस्त अंतःस्थलीय जलमार्ग बनाती है और ज्वारनदमुख (Estuary) का निर्माण करती है।
- **कोलोराडो नदी:** कोलोराडो पठार पर विश्व के सबसे गहरे खड्ड **ग्रैंड कैनियन (Grand Canyon)** का निर्माण करती है तथा कैलिफ़ोर्निया की खाड़ी में गिरती है (हूवर और बोल्डर बांध इसी पर हैं)।
- **मैकेंजी नदी:** कनाडा की सबसे लंबी नदी, जो उत्तर की ओर बहकर आर्कटिक महासागर (ब्यूफोर्ट सागर) में गिरती है।
- **रियो ग्रांडे नदी:** संयुक्त राज्य अमेरिका और मैक्सिको के मध्य प्राकृतिक सीमा बनाती है।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **कोलोराडो रिवर पोस्ट-2026 ऑपरेशनल दिशानिर्देश:** अमेरिकी आंतरिक विभाग और ब्यूरो ऑफ रिक्लेमेशन ने कोलोराडो बेसिन के 7 राज्यों के मध्य जल-बंटवारे संकट के समाधान हेतु 'पोस्ट-2026 कोऑर्डिनेटेड ऑपरेशंस' के अंतिम पर्यावरण प्रभाव विवरण (EIS) को अंतिम रूप दिया, जिससे लेक मीड और लेक पॉवेल जलाशयों के संरक्षण के लिए अनिवार्य जल कटौती तय की गई।
- **महान झीलों में शीतकालीन बर्फ आवरण में विसंगति:** NOAA के ग्रेट लेक्स एनवायरनमेंटल रिसर्च लेबोरेटरी (GLERL) के हालिया अध्ययनों के अनुसार, अल-नीनो एवं जलवायु परिवर्तन के संयुक्त प्रभाव से सुपीरियर व ईरी झीलों के औसत हिमीकरण चक्र में तीव्र उतार-चढ़ाव दर्ज किया गया, जिससे तटीय क्षरण और 'लेक-इफेक्ट स्नो' (Lake-effect snow) के प्रतिरूप में बदलाव आया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तरी अमेरिका की 'महान झीलों' (Great Lakes) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पश्चिम से पूर्व की ओर इन झीलों का सही क्रम सुपीरियर, ह्यूरन, मिशिगन, ईरी और ओंटारियो है।
2. मिशिगन झील एकमात्र ऐसी महान झील है जो पूर्ण रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर अवस्थित है।
3. विश्वविख्यात नियाग्रा जलप्रपात ईरी और ओंटारियो झीलों के मध्य प्रवाहित होने वाली नियाग्रा नदी पर स्थित है।
4. 'सू नहर' (Soo Canal) ईरी झील को ओंटारियो झील से जोड़ती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

©IASHINDIMEDIUM

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: पश्चिम से पूर्व की ओर महान झीलों का सही भौगोलिक क्रम: **सुपीरियर → मिशिगन → ह्यूरन → ईरी → ओंटारियो** है।
    - कथन 2 सत्य है: सुपीरियर, ह्यूरन, ईरी और ओंटारियो झीलें यूएसए और कनाडा की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर स्थित हैं, जबकि मिशिगन झील पूर्णतः यूएसए के अधिकार क्षेत्र में आती है।
    - कथन 3 सत्य है: नियाग्रा जलप्रपात ईरी झील से ओंटारियो झील की ओर बहने वाली नियाग्रा नदी पर स्थित है।
    - कथन 4 असत्य है: सू नहर (Soo Locks/Canal) **सुपीरियर झील और ह्यूरन झील** को जोड़ती है। ईरी और ओंटारियो झीलों को जोड़ने वाली नहर **वेलैंड नहर (Welland Canal)** है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (नदी)	**सूची-II (विशेष भौगोलिक अभिलक्षण)**
a. कोलोराडो नदी	1. यूएसए और मैक्सिको के मध्य अंतरराष्ट्रीय सीमा
b. मिसिसिपी नदी	2. विश्व के विशालतम ग्रैंड कैनियन का निर्माण
c. रियो ग्रांडे नदी	3. पक्षीपाद (Bird's Foot) डेल्टा
d. सेंट लॉरेंस नदी	4. ओंटारियो झील से निकलकर व्यस्ततम अंतःस्थलीय जलमार्ग

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-4, d-1

(D) a-4, b-3, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- **कोलोराडो नदी:** कोलोराडो पठार को अपरदित कर विश्वप्रसिद्ध ग्रैंड कैनियन का निर्माण करती है और कैलिफ़ोर्निया की खाड़ी में विलीन होती है।
- **मिसिसिपी नदी:** मैक्सिको की खाड़ी में अपने मुहाने पर विशिष्ट पक्षी के पंजे के आकार का (Bird's Foot) डेल्टा बनाती है।
- **रियो ग्रांडे नदी:** संयुक्त राज्य अमेरिका (टेक्सास) और मैक्सिको के बीच एक लंबी प्राकृतिक व राजनीतिक सीमा का निर्धारण करती है।
- **सेंट लॉरेंस नदी:** ओंटारियो झील से निकलकर अटलांटिक महासागर में गिरती है, जो महान झीलों के साथ मिलकर उत्तरी अमेरिका का सबसे महत्वपूर्ण एवं व्यस्त अंतर्देशीय जलमार्ग निर्मित करती है।

टॉपिक - 5: दक्षिण अमेरिका (एंडीज, अमेज़न बेसिन, अटाकामा)

दक्षिण अमेरिका विश्व का चौथा सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह मुख्य रूप से दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है, जिससे होकर **भूमध्य रेखा** (इक्वाडोर, कोलंबिया, ब्राजील) तथा **मकर रेखा** (चिली, अर्जेंटीना, पराग्वे, ब्राजील) गुजरती हैं। इसके केवल दो देश—**बोलीविया एवं पराग्वे स्थलरुद्ध (Landlocked)** हैं।

1. एंडीज पर्वत श्रृंखला (Andes Mountains)

- **उत्पत्ति व विस्तार:** नाज़का प्लेट के दक्षिण अमेरिकी प्लेट के नीचे क्षेपण (सबडक्शन) से निर्मित टर्शियरी युग की नवीन वलित पर्वत श्रृंखला। यह उत्तर से दक्षिण लगभग **7,200 किमी** लंबी विश्व की **सबसे लंबी पर्वत श्रृंखला** है, जो 7 देशों (वेनेजुएला, कोलंबिया, इक्वाडोर, पेरू, बोलीविया, चिली, अर्जेंटीना) में विस्तृत है।
- **प्रमुख शिखर एवं ज्वालामुखी:**
  - **माउंट एकांकागुआ (6,961 मी.):** अर्जेंटीना में स्थित एंडीज तथा पश्चिमी गोलार्ध की सर्वोच्च चोटी (शांत ज्वालामुखी)।
  - **ओजॉस डेल सालाडो (6,893 मी.):** अर्जेंटीना-चिली सीमा पर स्थित विश्व का सर्वोच्च सक्रिय ज्वालामुखी।
  - **माउंट कोटोपैक्सी (इक्वाडोर):** विश्व के प्रमुख उच्च सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक।
  - **चिम्बराजो (इक्वाडोर):** भूमध्य रेखा के निकट पृथ्वी के केंद्र से सबसे दूर स्थित बिंदु।
- **टिटिकाका झील:** पेरू और बोलीविया की सीमा पर एंडीज के अल्टीप्लानो पठार पर स्थित विश्व की सर्वोच्च नौगम्य (Navigable) ताजे पानी की झील।

2. अमेज़न बेसिन (Amazon Basin)

- **अपवाह तंत्र:** जल-प्रवाह की दृष्टि से अमेज़न विश्व की **सबसे बड़ी नदी** (लंबाई में नील के बाद दूसरी, ~6,400 किमी) है। यह पेरू में एंडीज पर्वत से निकलकर ब्राजील से होते हुए विषुवत रेखा पर अटलांटिक महासागर में ज्वारनदमुखीय मुहाना बनाती है। इसकी प्रमुख सहायक नदियां मदीरा (सबसे बड़ी), रियो नीग्रो और तापाजोस हैं।
- **सेल्वास (Selvas):** अमेज़न बेसिन के सघन विषुवतीय वर्षावनों को 'सेल्वास' कहा जाता है। इन्हें पृथ्वी का **'फेफड़ा' (Lungs of the Planet)** कहा जाता है क्योंकि ये वैश्विक ऑक्सीजन चक्र में विशाल योगदान देते हैं। यहाँ बालसा (हल्की लकड़ी) और सिनकोना (कुनैन हेतु) के वृक्ष पाए जाते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

3. अटाकामा मरुस्थल (Atacama Desert)

- **अवस्थिति व दशाएं:** उत्तरी चिली और दक्षिणी पेरू के प्रशांत तटीय क्षेत्र में स्थित विश्व का **सर्वाधिक शुष्क मरुस्थल**।
- **निर्माण के कारक:** उपोष्ण उच्च वायुदाब का अवतलन, एंडीज की वृष्टि-छाया स्थिति तथा पश्चिमी तट पर प्रवाहित होने वाली ठंडी **पेरू (हम्बोल्ट) धारा** का प्रभाव।
- **खनिज संपदा:** सोडियम नाइट्रेट (शोरा), तांबा और आयोडीन के प्रचुर निक्षेप। चिली का **चुकीकामाटा (Chuquicamata)** पठार विश्व की 'ताम्र राजधानी' कहलाता है। अरीका (Arica) यहाँ का सबसे शुष्क स्थान है।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **अमेज़न बेसिन में चरम जल-संकट एवं बायोम टीपिंग पॉइंट:** ब्राजील के राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (INPE) और अमेज़न सहयोग संधि संगठन (ACTO) के संयुक्त आकलन के अनुसार, अल-नीनो एवं निर्वनीकरण के संयुक्त प्रभाव से रियो नीग्रो के जलस्तर में ऐतिहासिक गिरावट दर्ज की गई, जिससे अमेज़न वर्षावनों के सवाना में तब्दील होने (Savannization) का जोखिम बढ़ा है।
- **लिथियम त्रिकोण (Lithium Triangle) विकास:** बोलीविया, अर्जेंटीना और चिली (अटाकामा साल्ट फ्लैट्स) के लिथियम त्रिकोण में सतत जल प्रबंधन और प्रत्यक्ष लिथियम निष्कर्षण (DLE) तकनीकों के विस्तार हेतु त्रिपक्षीय रणनीतिक फ्रेमवर्क पर हस्ताक्षर किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. माउंट एकांकागुआ एंडीज पर्वतमाला की सर्वोच्च चोटी है जो चिली में स्थित है।
2. टिटिकाका झील बोलीविया और पेरू की सीमा पर अल्टीप्लानो पठार पर स्थित विश्व की सबसे ऊंची नौगम्य झील है।
3. अटाकामा मरुस्थल के अत्यधिक शुष्क होने के पीछे ठंडी पेरू (हम्बोल्ट) धारा का प्रत्यक्ष योगदान है।
4. अमेज़न नदी बेसिन के उष्णकटिबंधीय वर्षावनों को 'सेल्वास' कहा जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: माउंट एकांकागुआ (6,961 मी.) एंडीज पर्वत श्रृंखला तथा पूरे दक्षिणी/पश्चिमी गोलार्ध का सर्वोच्च शिखर अवश्य है, किंतु यह **अर्जेंटीना** में स्थित है, न कि चिली में।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 2 सत्य है: टिटिकाका झील पेरू और बोलीविया की सीमा पर लगभग 3,812 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जो वाणिज्यिक जहाजों के संचालन हेतु विश्व की सर्वोच्च नौगम्य ताजे पानी की झील है।
- कथन 3 सत्य है: अटाकामा मरुस्थल के निर्माण में अपतटीय व्यापारिक पवनें, एंडीज का वृष्टि-छाया प्रभाव और तट के सहारे बहने वाली ठंडी **पेरू (हम्बोल्ट) धारा** उत्तरदायी हैं, जो वायुमंडलीय स्थिरता उत्पन्न कर वाष्पीकरण को रोकती है।
- कथन 4 सत्य है: अमेज़न नदी द्रोणी में भूमध्यरेखीय सदाबहार चौड़ी पत्ती वाले वनों को स्थानीय रूप से **सेल्वास** कहा जाता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (भौगोलिक स्थल / खनिज)	**सूची-II (संबंधित देश / अभिलक्षण)**
a. चुकीकामाटा (Chuquicamata)	1. विश्व का सर्वोच्च सक्रिय ज्वालामुखी
b. ओजॉस डेल सालाडो	2. तांबा खनन केंद्र (चिली)
c. मदीरा नदी	3. दक्षिण अमेरिका का पूर्णतः स्थलरुद्ध देश
d. पराग्वे	4. अमेज़न की सबसे बड़ी सहायक नदी

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-3, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **चुकीकामाटा:** उत्तरी चिली के अटाकामा पठार में स्थित विश्व की सबसे बड़ी ओपन-पिट तांबा खदान है।
  - **ओजॉस डेल सालाडो:** अर्जेंटीना और चिली की सीमा पर स्थित विश्व का सबसे ऊंचा सक्रिय ज्वालामुखी पर्वत है।
  - **मदीरा नदी:** बोलीविया और ब्राजील से बहने वाली अमेज़न नदी तंत्र की सबसे लंबी और सबसे बड़ी सहायक नदी है।
  - **पराग्वे:** बोलीविया के साथ दक्षिण अमेरिका के केवल दो पूर्णतः स्थलरुद्ध (Landlocked) देशों में से एक है।

©IASHINDIMEDIUM

भारतीय भूगोल

टॉपिक - 1: भारत का भौगोलिक विस्तार और मानक समय

भारत उत्तरी एवं पूर्वी गोलार्ध में स्थित एक विशाल देश है, जिसकी मुख्य भूमि चतुष्कोणीय (Quadrangular) आकृति की है। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के 15 वर्षों के प्रश्न-पत्रों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आयोग भारत के **अक्षांशीय व देशांतरीय विस्तार**, **सुदूरस्थ बिंदुओं (Extreme Points)**, **कर्क रेखा के प्रसार** तथा **भारतीय मानक समय रेखा (IST)** से संबंधित राज्यों व समय-गणना पर नियमित प्रश्न पूछता है।

1. अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार

- **मुख्य भूमि का विस्तार:** $8°4'$ N (कन्याकुमारी/केप कोमोरिन, तमिलनाडु) से $37°6'$ N अक्षांश तक।
- **द्वीपों सहित संपूर्ण भारत का विस्तार:** $6°45'$ N (इंदिरा पॉइंट, ग्रेट निकोबार) से $37°6'$ N अक्षांश तक।
- **देशांतरीय विस्तार:** $68°7'$ E से $97°25'$ E देशांतर तक।
- **विस्तार व दूरियां:**
    - भारत का अक्षांशीय और देशांतरीय विस्तार लगभग $30°$ है।
    - **उत्तर से दक्षिण वास्तविक दूरी: 3,214 किमी**।
    - **पूर्व से पश्चिम वास्तविक दूरी: 2,933 किमी**।
    - (ध्यान दें: दोनों विस्तार लगभग $30°$ होने के बावजूद उत्तर-दक्षिण दूरी, पूर्व-पश्चिम दूरी से अधिक है; इसका कारण यह है कि ध्रुवों की ओर जाने पर देशांतर रेखाओं के बीच की दूरी घटती जाती है, जबकि अक्षांश रेखाओं के मध्य दूरी सर्वत्र समान रहती है)।
- **स्थलीय एवं तटीय सीमा:**
    - स्थलीय सीमा की कुल लंबाई: लगभग **15,200 किमी**।
    - द्वीपों सहित कुल तटरेखा की लंबाई: **7,516.6 किमी** (मुख्य भूमि की तटरेखा: 5,422.6 किमी)।

2. भारत के चार सुदूरस्थ बिंदु (Extreme Points)

- **सुदूर उत्तरी बिंदु: इंदिरा कोल (Indira Col)** — लद्दाख (सियाचिन ग्लेशियर के समीप)।

©IASHINDIMEDIUM

- **सुदूर दक्षिणी बिंदु (संपूर्ण भारत): इंदिरा पॉइंट (Indira Point / पिग्मेलियन पॉइंट)** — ग्रेट निकोबार द्वीप (2004 सुनामी में आंशिक जलमग्न)।
- **मुख्य भूमि का दक्षिणतम बिंदु: कन्याकुमारी (केप कोमोरिन)** — तमिलनाडु।
- **सुदूर पश्चिमी बिंदु: गुहार मोती / गौर मोता (Guhar Moti)** — कच्छ जिला, गुजरात ($68°7'$ E)।
- **सुदूर पूर्वी बिंदु: किबिथू (Kibithu)** — अंजाव जिला, अरुणाचल प्रदेश ($97°25'$ E)।

3. भारतीय मानक समय (IST) एवं कर्क रेखा

- **मानक मध्याह्न रेखा ($82°30'$ E):**
  - यह रेखा उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (मिर्जापुर/नैनी) से होकर गुजरती है।
  - यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से **5 घंटे 30 मिनट आगे** ($+5:30$ hrs) है।
  - **गुजरने वाले 5 राज्य (उत्तर से दक्षिण): उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा एवं आंध्र प्रदेश** (कोड: UPMCOA)।
- **दो घंटों का स्थानीय समयांतराल:** भारत के पश्चिमी छोर (गुजरात) और पूर्वी छोर (अरुणाचल प्रदेश) के मध्य लगभग $30°$ देशांतर का अंतर है। पृथ्वी $1°$ देशांतर घूमने में 4 मिनट का समय लेती है, अतः $30 \times 4 = 120$ मिनट अर्थात् लगभग **2 घंटे** का स्थानीय समयांतराल होता है।
- **कर्क रेखा ($23\frac{1}{2}°$ N):**
  - 8 राज्यों से गुजरती है (पश्चिम से पूर्व): **गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा एवं मिजोरम**।
  - **विशेष तथ्य:** छत्तीसगढ़ के कोरिया/सूरजपुर क्षेत्र में कर्क रेखा तथा $82°30'$ E भारतीय मानक समय रेखा एक-दूसरे को प्रतिच्छेद (Intersect) करती हैं।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम (VVP) एवं किबिथू सीमावर्ती ढांचा:** भारत के सुदूर पूर्वी बिंदु 'किबिथू' (अरुणाचल प्रदेश) और लद्दाख के 'डेमचोक' में सीमा पर्यटन और डिजिटल कनेक्टिविटी नेटवर्क के विस्तार हेतु वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के दूसरे चरण के तहत सभी मौसम में खुली रहने वाली सड़कों और सौर-ऊर्जा संचालित संचार टावरों का संचालन 2025–2026 में पूर्ण क्षमता पर लाया गया।
- **पूर्वोत्तर हेतु अलग समय क्षेत्र (ChaiBagaan Time) बहस एवं ऊर्जा दक्षता रिपोर्ट:** नीति आयोग और वैज्ञानिक व औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR-NPL) द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों में दिन के उजाले के अधिकतम उपयोग और ऊर्जा बचत हेतु 'ड्यूल टाइम जोन' अथवा मौसमी कार्य-समय प्रणाली के आर्थिक प्रभावों पर अद्यतन व्यवहार्यता अध्ययन जारी किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय मानक समय (IST) की देशांतर रेखा ($82°30'$ E) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह रेखा भारत के पाँच राज्यों—उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा और तेलंगाना से होकर गुजरती है।

©IASHINDIMEDIUM

2. यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घंटे 30 मिनट आगे है।

3. कर्क रेखा और भारतीय मानक समय रेखा एक-दूसरे को छत्तीसगढ़ राज्य में प्रतिच्छेद करती हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (B) केवल 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: $82°30'$ E मानक मध्याह्न रेखा पाँच राज्यों से होकर गुजरती है: **उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश**। यह **तेलंगाना से होकर नहीं गुजरती** (यह प्रश्न UPPCS में कई बार भ्रमित करने हेतु पूछा गया है)।
    - कथन 2 सत्य है: $82.5° \times 4$ मिनट $= 330$ मिनट $= 5$ घंटे 30 मिनट। भारत पूर्वी गोलार्ध में स्थित है, अतः यह ग्रीनविच मीन टाइम से $5\frac{1}{2}$ घंटे आगे है।
    - कथन 3 सत्य है: कर्क रेखा ($23°30'$ N) तथा भारतीय मानक समय रेखा ($82°30'$ E) का प्रतिच्छेदन बिंदु **छत्तीसगढ़** राज्य (सूरजपुर/कोरिया जिले) में स्थित है।

प्रश्न 2. भारत के सुदूरस्थ बिंदुओं (Extreme Points) और राज्यों के संदर्भ में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (सुदूरस्थ बिंदु)	**सूची-II (स्थान / राज्य)**
a. इंदिरा कोल (Indira Col)	1. ग्रेट निकोबार
b. इंदिरा पॉइंट (Indira Point)	2. लद्दाख
c. गुहार मोती (Guhar Moti)	3. अरुणाचल प्रदेश
d. किबिथू (Kibithu)	4. गुजरात

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

©IASHINDIMEDIUM

(C) a-1, b-2, c-4, d-3

(D) a-3, b-1, c-4, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **इंदिरा कोल:** भारत का सुदूर उत्तरी बिंदु है, जो केंद्रशासित प्रदेश **लद्दाख** में सियाचिन मुज़ताग (काराकोरम श्रेणी) के समीप स्थित है।
    - **इंदिरा पॉइंट:** भारत का दक्षिणतम बिंदु है, जो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के **ग्रेट निकोबार** द्वीप ($6°45'$ N) पर स्थित है।
    - **गुहार मोती (गौर मोता):** भारत का सुदूर पश्चिमी बिंदु है, जो **गुजरात** के कच्छ जिले में सर क्रीक के निकट अवस्थित है।
    - **किबिथू:** भारत का सुदूर पूर्वी बिंदु है, जो **अरुणाचल प्रदेश** के अंजाव जिले में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के निकट स्थित है।

टॉपिक - 2: हिमालय का भौतिक और प्रादेशिक वर्गीकरण

हिमालय भारतीय उपमहाद्वीप की उत्तरी सीमा पर चापाकार (Arcuate) रूप में सिंधु गॉर्ज से दिहांग (ब्रह्मपुत्र) गॉर्ज तक लगभग 2,400 किमी की लंबाई में विस्तृत एक नवीन वलित (Tertiary Fold) पर्वत प्रणाली है। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के 15 वर्षों के विश्लेषण के अनुसार, आयोग **भौतिक श्रेणियों (उत्तर से दक्षिण क्रम व उनकी सीमांत दरारें)** तथा **सर सिडनी बुरार्ड द्वारा किए गए प्रादेशिक वर्गीकरण (नदी सीमाओं)** पर नियमित प्रश्न पूछता है।

1. भौतिक/अनुदैर्ध्य वर्गीकरण (उत्तर से दक्षिण)

- **ट्रांस हिमालय (Trans-Himalaya):** तिब्बती पठार का भाग; अवसादी चट्टानों से निर्मित।
    - **श्रेणियाँ (उत्तर से दक्षिण):** काराकोरम → लद्दाख → जास्कर → कैलाश।
    - **के-2 / गॉडविन ऑस्टिन (8,611 मी.):** काराकोरम श्रेणी में स्थित भारत का सर्वोच्च शिखर।
    - **सिंधु-त्सांगपो सचर ज़ोन (ITSN / Indus-Tsangpo Suture Zone):** यह ट्रांस हिमालय को वृहत हिमालय से अलग करता है।
- **बृहत् हिमालय / हिमाद्रि (Great Himalaya):** सबसे सतत एवं सर्वोच्च शृंखला (औसत ऊँचाई 6,000 मी.)। इसका क्रोड ग्रेनाइट से निर्मित है।
    - **प्रमुख शिखर (पश्चिम से पूर्व):** नंगा पर्वत → नंदा देवी → धौलागिरि → अन्नपूर्णा → माउंट एवरेस्ट (8,848.86 मी.) → मकालू → कंचनजंगा (सिक्किम) → नामचा बरवा।
- **मेन सेंट्रल थ्रस्ट (MCT - Main Central Thrust):** यह बृहत् हिमालय को लघु हिमालय से पृथक करता है।
- **लघु / मध्य हिमालय (Lesser Himalaya):** औसत ऊँचाई 3,700 से 4,500 मी.।

©IASHINDIMEDIUM

- **प्रमुख श्रेणियाँ:** पीरपंजाल (सबसे लंबी - J&K), धौलाधर (हिमाचल), मसूरी व नागटिब्बा (उत्तराखंड), महाभारत लेख (नेपाल)।
- शीतोष्ण घास के मैदान: **मर्ग** (गुलमर्ग, सोनमर्ग - कश्मीर) तथा **बुग्याल व पयाल** (उत्तराखंड)।
- कश्मीर घाटी में हिमोढ़ निक्षेपों को **करेवा (Karewa)** कहते हैं, जो जाफरान (केसर) की खेती हेतु प्रसिद्ध हैं।

- **मेन बाउंड्री थ्रस्ट (MBT - Main Boundary Thrust):** यह लघु हिमालय को शिवालिक से अलग करता है।
- **बाह्य हिमालय / शिवालिक (Outer Himalaya):** हिमालय की सबसे दक्षिणतम व नवीनतम श्रेणी (औसत ऊँचाई 900 से 1,100 मी.)।
  - लघु हिमालय और शिवालिक के मध्य अनुदैर्ध्य घाटियों को पश्चिम में **दून** (देहरादून) तथा पूर्व में **द्वार** (हरिद्वार) कहा जाता है।
- **हिमालयन फ्रंटल फॉल्ट (HFF):** यह शिवालिक को उत्तर भारत के विशाल मैदान से पृथक करता है।

2. प्रादेशिक वर्गीकरण (सर सिडनी बुरार्ड अनुसार - नदी घाटियों के आधार पर)

प्रादेशिक विभाजन	सीमावर्ती नदियाँ	लंबाई	मुख्य विशेषताएँ
पंजाब / कश्मीर हिमालय	सिंधु नदी से सतलज नदी	~560 किमी	काराकोरम, लद्दाख, पीरपंजाल; जोजिला व बनिहाल दर्रे; करेवा निक्षेप।
कुमाऊँ हिमालय	सतलज नदी से काली (शारदा) नदी	~320 किमी	नंदा देवी (सर्वोच्च चोटी), कामेट, त्रिशूल; गंगोत्री व यमुनोत्री हिमनद।
नेपाल हिमालय	काली नदी से तीस्ता नदी	~800 किमी	**सबसे लंबा व ऊँचा भाग**; माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा, धौलागिरि।
असम हिमालय	तीस्ता नदी से दिहांग (ब्रह्मपुत्र) नदी	~720 किमी	नामचा बरवा, कुला कांगड़ी; तीव्र ढाल व सघन मानसूनी वन।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (GLOF) प्रारंभिक चेतावनी नेटवर्क:** सिक्किम की ल्होनाक झील आपदा के उपरांत, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) और वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान द्वारा 2025–2026 में कुमाऊँ व सिक्किम हिमालय की उच्च जोखिम वाली 56 हिमनद झीलों पर स्वचालित रडार-आधारित GLOF अर्ली वॉर्निंग सेंसर स्थापित किए गए।
- **हिमालयी क्रायोस्फीयर रिपोर्ट एवं पर्माफ्रॉस्ट अध्ययन:** वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान (WIHG) की 2025–2026 की रिपोर्ट के अनुसार, लघु व वृहत हिमालय के संक्रमणकारी क्षेत्रों में मेन सेंट्रल थ्रस्ट (MCT) के समीप अत्यधिक अवसंरचनात्मक दबाव और पर्माफ्रॉस्ट क्षरण के कारण ढलान अस्थिरता में वृद्धि दर्ज की गई है, जिसके समाधान हेतु पर्वतीय ढलानों की जियो-मॉर्फोलॉजिकल मैपिंग अनिवार्य की गई।

©IASHINDIMEDIUM

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सर सिडनी बुरार्ड द्वारा किए गए हिमालय के प्रादेशिक वर्गीकरण के अनुसार, 'कुमाऊँ हिमालय' निम्नलिखित में से किन दो नदियों के मध्य अवस्थित है?

(A) सिंधु और सतलज

(B) सतलज और काली

(C) काली और तीस्ता

(D) तीस्ता और दिहांग

उत्तर: (B) सतलज और काली

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - सिडनी बुरार्ड ने हिमालय को नदी घाटियों के आधार पर चार प्रमुख प्रादेशिक भागों में बाँटा है:
        1. **पंजाब/कश्मीर हिमालय:** सिंधु नदी और सतलज नदी के मध्य।
        2. **कुमाऊँ हिमालय:** सतलज नदी और काली (शारदा) नदी के मध्य (लगभग 320 किमी लंबाई; नंदा देवी इसकी सर्वोच्च चोटी है)।
        3. **नेपाल हिमालय:** काली नदी और तीस्ता नदी के मध्य (लगभग 800 किमी; यह सबसे विस्तृत भाग है)।
        4. **असम हिमालय:** तीस्ता नदी और दिहांग (ब्रह्मपुत्र) नदी के मध्य।

प्रश्न 2. हिमालय के भौतिक विभाजनों और उनके मध्य स्थित विवर्तनिक भ्रंशों/सीमाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'मेन सेंट्रल थ्रस्ट' (MCT) बृहत् हिमालय को लघु हिमालय से अलग करता है।
2. 'मेन बाउंड्री थ्रस्ट' (MBT) लघु हिमालय को बाह्य हिमालय (शिवालिक) से अलग करता है।
3. शिवालिक और उत्तर भारत के विशाल मैदान के मध्य 'सिंधु-त्सांगपो सचर ज़ोन' (ITSN) स्थित है।
4. पीरपंजाल श्रेणी लघु हिमालय में स्थित सबसे लंबी पर्वत श्रृंखला है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: मेन सेंट्रल थ्रस्ट (MCT) हिमाद्रि (बृहत् हिमालय) को लघु/मध्य हिमालय से अलग करता है।

- कथन 2 सत्य है: मेन बाउंड्री थ्रस्ट (MBT) लघु हिमालय को शिवालिक से अलग करता है।
- कथन 3 असत्य है: शिवालिक को उत्तर भारत के विशाल मैदान से अलग करने वाली संरचना **'हिमालयन फ्रंटल फॉल्ट' (HFF)** है। सिंधु-त्सांगपो सचर ज़ोन (ITSN) ट्रांस हिमालय को बृहत् हिमालय से पृथक करता है।
- कथन 4 सत्य है: पीरपंजाल श्रेणी जम्मू और कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश में फैली लघु हिमालय की सबसे लंबी और सबसे महत्वपूर्ण श्रेणी है।

टॉपिक - 3: भारत के प्रमुख दर्रे (Mountain Passes) और उनकी अवस्थिति

दर्रे (Passes) पर्वतीय श्रृंखलाओं में प्राकृतिक रूप से निर्मित वे संकीर्ण मार्ग होते हैं, जो सामरिक आवागमन, व्यापार तथा सांस्कृतिक संपर्क के प्रमुख साधन रहे हैं। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के 15 वर्षों के प्रश्न-पत्रों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि आयोग दर्रों के **राज्य/केंद्रशासित प्रदेश**, उनकी **संबद्ध पर्वत श्रृंखला**, **जोड़े जाने वाले नगरों** तथा **प्रायद्वीपीय भारत के प्रमुख घाटों** पर सीधे व सुमेलन (Match the following) आधारित प्रश्न पूछता है।

1. हिमालयी क्षेत्र के प्रमुख दर्रे (राज्य / केंद्रशासित प्रदेश-वार)

- **लद्दाख:**
  - **काराकोरम दर्रा:** भारत का सबसे ऊँचा दर्रा (~5,540 मी.); प्राचीन सिल्क रूट का भाग; भारत को चीन (तारिम बेसिन) से जोड़ता है।
  - **ज़ोजिला दर्रा (Zoji La):** जास्कर श्रेणी में स्थित; **श्रीनगर को लेह** से जोड़ता है (राष्ट्रीय राजमार्ग-1D)।
  - **खारदुंग ला:** लद्दाख श्रेणी में स्थित; लेह को नुब्रा और श्योक घाटी से जोड़ता है।
  - **चांग ला व पेंसिला:** चांग ला लेह को पैंगोंग झील से तथा पेंसिला जास्कर को कश्मीर/सुरु घाटी से जोड़ता है।
- **जम्मू एवं कश्मीर:**
  - **बनिहाल दर्रा:** पीरपंजाल श्रेणी में स्थित; **जम्मू को श्रीनगर** से जोड़ता है (प्रसिद्ध **जवाहर सुरंग** इसी में स्थित है)।
  - **पीरपंजाल दर्रा:** ऐतिहासिक मुगल रोड इसी से गुजरती है (राजौरी-पुंछ को कश्मीर घाटी से जोड़ता है)।
  - **बुर्जिल दर्रा:** श्रीनगर को गिलगित (PoK) से जोड़ता है।
- **हिमाचल प्रदेश:**
  - **शिपकी ला (Shipki La):** जास्कर श्रेणी में स्थित; किन्नौर को तिब्बत से जोड़ता है। **सतलज नदी इसी दर्रे से होकर भारत में प्रवेश करती है।**
  - **रोहतांग दर्रा:** पीरपंजाल श्रेणी में स्थित; **कुल्लू घाटी को लाहौल-स्पीति** से जोड़ता है। इसके नीचे प्रसिद्ध **अटल सुरंग** (9.02 किमी) निर्मित है।
  - **बाड़ालाचा ला:** जास्कर श्रेणी में स्थित; **मनाली को लेह** से जोड़ता है।
- **उत्तराखंड:**

- **माना, नीति, लिपुलेख एवं थांग ला:** ये दर्रे उत्तराखंड के चमोली और पिथौरागढ़ जिलों को तिब्बत (चीन) से जोड़ते हैं। **लिपुलेख दर्रा** कैलाश मानसरोवर यात्रा का पारंपरिक मार्ग है।

- **सिक्किम:**
  - **नाथू ला (Nathu La):** सिक्किम को तिब्बत (चुम्बी घाटी) से जोड़ता है; प्राचीन सिल्क रूट का हिस्सा, जिसे 2006 में व्यापार हेतु पुनः खोला गया।
  - **जेलेप ला (Jelep La):** तीस्ता नदी द्वारा निर्मित; कलिम्पोंग/गंगटोक को ल्हासा से जोड़ता है।

- **अरुणाचल प्रदेश:**
  - **बोमडिला (Bom Di La):** अरुणाचल प्रदेश (तवांग) को ल्हासा (तिब्बत) से जोड़ता है।
  - **दिफू (Diphu) एवं पांगसाऊ:** भारत, चीन एवं म्यांमार की त्रि-संधि (Tri-junction) पर स्थित; म्यांमार आवागमन हेतु प्रयुक्त।
  - **यांग्याप दर्रा:** इसके समीप **ब्रह्मपुत्र नदी (दिहांग)** भारत में प्रवेश करती है।

2. प्रायद्वीपीय भारत के प्रमुख दर्रे (पश्चिमी घाट / सह्याद्रि)

उत्तर से दक्षिण क्रम (UPPCS का अनिवार्य पैटर्न):

- **थाल घाट (Thal Ghat / कसारा घाट):** महाराष्ट्र; **मुंबई को नासिक एवं कोलकाता** से जोड़ता है (NH-3)।
- **भोर घाट (Bhor Ghat):** महाराष्ट्र; **मुंबई को पुणे एवं चेन्नई** से जोड़ता है।
- **पालघाट (Palghat / पालक्काड़ गैप):** नीलगिरि और अन्नामलाई पहाड़ियों के मध्य स्थित; **कोयंबटूर (तमिलनाडु) को कोच्चि/पलक्कड़ (केरल)** से जोड़ता है।
- **शेनकोट्टा दर्रा (Shencottah Gap):** इलायची पहाड़ियों (कार्डमम) में स्थित; **तिरुवनंतपुरम (केरल) को मदुरै (तमिलनाडु)** से जोड़ता है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **शिंकू ला सुरंग (Shinku La Tunnel) निर्माण में प्रगति:** सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा हिमाचल प्रदेश के लाहौल को केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख के जास्कर क्षेत्र से जोड़ने वाले 15,800 फीट की ऊँचाई पर स्थित शिंकू ला दर्रे पर 4.1 किमी लंबी ऑल-वेदर ट्विन-ट्यूब सुरंग परियोजना को निमू-पदुम-दारचा (NPD) रणनीतिक अक्ष पर तीव्र गति से आगे बढ़ाया गया।
- **ज़ोजिला सुरंग (Zojila Tunnel) ब्रेकथ्रू:** एनएच-1 पर श्रीनगर-कारगिल-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर सर्दियों में 6 माह की कनेक्टिविटी रुकावट को समाप्त करने वाली 14 किमी से अधिक लंबी रणनीतिक ज़ोजिला सुरंग का मुख्य ड्रिलिंग ब्रेकथ्रू पूर्ण कर लिया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (पर्वतीय दर्रा)	सूची-II (राज्य / केंद्रशासित प्रदेश)
a. माना दर्रा (Mana Pass)	1. सिक्किम
b. नाथू ला (Nathu La)	2. उत्तराखंड
c. ज़ोजिला (Zoji La)	3. हिमाचल प्रदेश
d. शिपकी ला (Shipki La)	4. लद्दाख

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **माना दर्रा:** उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित है, जो भारत को तिब्बत से जोड़ता है।
  - **नाथू ला:** सिक्किम में स्थित प्राचीन व्यापारिक मार्ग है, जो चुम्बी घाटी (तिब्बत) से जुड़ता है।
  - **ज़ोजिला दर्रा:** केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख में जास्कर श्रेणी में अवस्थित है, जो श्रीनगर को लेह से जोड़ता है।
  - **शिपकी ला:** हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में स्थित है; इसी दर्रे से होकर सतलज नदी तिब्बत से भारत में प्रवेश करती है।

प्रश्न 2. भारत के प्रमुख दर्रों एवं उनके भौगोलिक अभिलक्षणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सतलज नदी शिपकी ला दर्रे से होकर भारत की सीमा में प्रवेश करती है।
2. रोहतांग दर्रा जास्कर पर्वत श्रेणी में स्थित है, जो कुल्लू घाटी को लाहौल एवं स्पीति से जोड़ता है।
3. पश्चिमी घाट में स्थित पालघाट दर्रा नीलगिरि पहाड़ियों और अन्नामलाई पहाड़ियों के मध्य अवस्थित है।
4. बनिहाल दर्रे से होकर जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरता है, जहाँ प्रसिद्ध 'जवाहर सुरंग' निर्मित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: सतलज नदी तिब्बत के राकसताल से निकलकर हिमाचल प्रदेश के शिपकी ला दर्रे से होकर भारत में प्रवेश करती है।
    - कथन 2 असत्य है: रोहतांग दर्रा **पीरपंजाल श्रेणी** में अवस्थित है, न कि जास्कर श्रेणी में। (जास्कर श्रेणी में बाड़ालाचा ला स्थित है)।
    - कथन 3 सत्य है: पालघाट दर्रा (पालक्काड़ गैप) केरल और तमिलनाडु की सीमा पर नीलगिरि पहाड़ियों के दक्षिण और अन्नामलाई पहाड़ियों के उत्तर में स्थित एक प्रमुख प्राकृतिक भ्रंश/गैप है।
    - कथन 4 सत्य है: बनिहाल दर्रा पीरपंजाल श्रेणी में स्थित है, जहाँ जम्मू को श्रीनगर से जोड़ने वाली ऐतिहासिक जवाहर सुरंग अवस्थित है।

टॉपिक - 4: उत्तर भारत का विशाल मैदान (Great Northern Plains)

उत्तर भारत का विशाल मैदान हिमालय के दक्षिण और प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर में स्थित एक अत्यंत उपजाऊ जलोढ़ मैदान है। इसका निर्माण मुख्य रूप से तीन प्रमुख नदी प्रणालियों—**सिंधु, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र** तथा उनकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से हुआ है। विवर्तनिक रूप से यह हिमालय निर्माण के समय बनी एक विशाल अग्रगर्त (Foredeep) थी, जो अभिनव (Pleistocene) युग से निरंतर तलछटी भराव से वर्तमान स्वरूप में आई।

1. भौतिक एवं उच्चावचगत विभाजन (उत्तर से दक्षिण क्रम)

- **भाबर (Bhabar):**
    - **अवस्थिति:** शिवालिक के गिरिपाद (Foot-hills) के समानांतर 8 से 16 किमी चौड़ी संकीर्ण पट्टी।
    - **विशेषता:** नदियों द्वारा पर्वतों से नीचे उतरते समय जमा किए गए कंकड़-पत्थर और बजरी के विशाल संचय (जलोढ़ पंख)।
    - **अपवाह:** अत्यधिक सरंध्रता (Porosity) के कारण छोटी नदियाँ एवं जलधाराएँ यहाँ धरातल के नीचे **अदृश्य/विलुप्त** हो जाती हैं। यह कृषि के लिए अनुपयुक्त है।
- **तराई (Tarai):**
    - **अवस्थिति:** भाबर के दक्षिण में 15 से 30 किमी चौड़ी नम पेटी।
    - **विशेषता:** भाबर में विलुप्त हुई नदियाँ यहाँ पुनः धरातल पर प्रकट होती हैं, जिससे दलदली, आर्द्र एवं सघन वनाच्छादित क्षेत्र का निर्माण होता है। (वर्तमान में वनों को काटकर यहाँ गन्ना, चावल और गेहूँ की सघन खेती की जाती है)।
- **बांगर (Bhangar):**
    - **अवस्थिति:** मैदानों के उच्च भाग जहाँ नदियों की वार्षिक बाढ़ का जल नहीं पहुँच पाता।

©IASHINDIMEDIUM

- **विशेषता: पुरातन जलोढ़ (Older Alluvium)** से निर्मित। इसमें चूनेदार निक्षेप पाए जाते हैं, जिन्हें **'कंकर'** कहा जाता है।
- **स्थानीय रूपांतरण:** अत्यधिक सिंचाई वाले क्षेत्रों में ऊपरी सतह पर सफेद लवणीय परत जम जाती है, जिसे **'रेह' या 'कल्लड़'** कहते हैं। बांगर क्षेत्र में अपक्षय के कारण मुलायम मिट्टी बह जाने से बने कंकरीले टीलों को **'भूर' (Bhur)** कहा जाता है।

- **खादर (Khadar):**
  - **अवस्थिति:** नदी घाटियों के निचले बाढ़ के मैदान।
  - **विशेषता: नवीन जलोढ़ (Newer Alluvium)** से निर्मित। प्रतिवर्ष बाढ़ द्वारा नई उपजाऊ गाद की परत बिछने के कारण यह अत्यधिक उर्वर होता है; रासायनिक खादों की आवश्यकता न्यूनतम होती है। पंजाब में इन्हें **'बेट' (Bet)** कहा जाता है।

2. प्रादेशिक विभाजन

- **राजस्थान का मैदान:** मरुस्थली एवं अर्द्ध-शुष्क बांगर (लूनी नदी तंत्र व सांभर जैसी अंतःस्थलीय नमकीन झीलें)।
- **पंजाब-हरियाणा का मैदान:** सतलज, व्यास और रावी नदियों द्वारा निर्मित दोआब क्षेत्र (बिस्त दोआब, बारी दोआब)।
- **गंगा का मैदान:** ऊपरी, मध्य और निचला गंगा मैदान (घाघरा, गंडक, कोसी, सोन का अपवाह)।
- **ब्रह्मपुत्र का मैदान:** असम घाटी में तीव्र ढाल व जलोढ़ भराव; विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप **माजुली** यहीं स्थित है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **इंडो-गंगैटिक प्लेन्स (IGP) भूजल स्तर एवं अवतलन रिपोर्ट:** राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (NGRI) और केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) के 2025-2026 के संयुक्त उपग्रह-आधारित (InSAR) अध्ययन के अनुसार, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अत्यधिक दोहन वाले नलकूप क्षेत्रों में स्थानीय भूमि अवतलन (Land Subsidence) और गहरे एक्विफर्स के पुनर्भरण हेतु 'क्रॉप डाइवर्सिफिकेशन मिशन' के तहत जल-गहन धान के स्थान पर दलहन/मोटे अनाज की अनिवार्य जोनिंग की गई।
- **गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा मैंग्रोव और जलोढ़ पुनर्स्थापन:** सुंदरबन और निचले गंगा मैदान में चक्रवातों से होने वाले तटीय क्षरण को रोकने के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा सैंड-निक्षेपण और बायो-शील्ड का निर्माण किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर भारत के विशाल मैदान के भौतिक विभाजनों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भाबर पेटी शिवालिक के गिरिपाद के सहारे विस्तृत कंकड़-पत्थर युक्त पट्टी है, जहाँ छोटी नदियाँ धरातल पर अदृश्य हो जाती हैं।
2. तराई क्षेत्र में भाबर से विलुप्त हुई धाराएं पुनः धरातल पर प्रकट होकर एक दलदली एवं आर्द्र बायोम बनाती हैं।
3. 'कंकर' मुख्य रूप से खादर के नवीन जलोढ़ मैदानों में पाए जाने वाले चूनेदार संकेंद्रण हैं।
4. अत्यधिक सिंचाई वाले बांगर क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले लवणीय-क्षारीय उत्फुल्लन को 'रेह' या 'कल्लड़' कहा जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: भाबर क्षेत्र में बड़े पत्थरों और बजरी के अत्यधिक सरंध्र संचय के कारण नदियाँ धरातल के नीचे प्रवाहित होने लगती हैं और ऊपर से अदृश्य दिखती हैं।
    - कथन 2 सत्य है: तराई भाबर के दक्षिण में स्थित है जहाँ भूमिगत जल पुनः रिसकर धरातल पर आ जाता है, जिससे यह दलदली और अत्यधिक नम बन जाता है।
    - कथन 3 असत्य है: 'कंकर' (कैल्शियम कार्बोनेट के पिंड) **बांगर (पुरातन जलोढ़)** की विशेषता हैं, न कि खादर की। खादर में महीन गाद, बालू और चिकनी मिट्टी पाई जाती है।
    - कथन 4 सत्य है: उत्तर प्रदेश और हरियाणा के बांगर मैदानों में अत्यधिक नहरी सिंचाई और केशिका क्रिया (Capillary Action) के कारण मृदा पर नमक की परत जम जाती है जिसे 'रेह' या 'कल्लड़' कहते हैं।

प्रश्न 2. शिवालिक पहाड़ियों से दक्षिण की ओर बढ़ने पर उत्तर भारत के मैदान के भू-आकृतिक स्वरूपों का सही भौगोलिक अनुक्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(A) तराई → भाबर → खादर → बांगर

(B) भाबर → तराई → बांगर → खादर

(C) भाबर → बांगर → तराई → खादर

(D) तराई → खादर → भाबर → बांगर

उत्तर: (B) भाबर → तराई → बांगर → खादर

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - शिवालिक पर्वतमाला से मैदान की ओर (उत्तर से दक्षिण) बढ़ते हुए भू-आकृतिक स्वरूपों का सही क्रम है:
        1. **भाबर:** शिवालिक के तुरंत नीचे कंकड़-पत्थर युक्त पट्टी।
        2. **तराई:** भाबर के ठीक दक्षिण में स्थित नम व दलदली क्षेत्र।
        3. **बांगर:** बाढ़ की पहुँच से ऊपर स्थित प्राचीन जलोढ़ के उच्च मैदान।
        4. **खादर:** नदी के बिल्कुल निकट स्थित नवीन बाढ़कृत कछार/मैदान।

टॉपिक - 5: प्रायद्वीपीय पठार, अरावली, विंध्य, सतपुड़ा एवं घाट

©IASHINDIMEDIUM

प्रायद्वीपीय पठार भारत का प्राचीनतम, कठोर एवं स्थिर भूखंड है, जो गोंडवाना लैंड के विखंडन व उत्तरगामी प्रवाह से निर्मित हुआ है। यह मुख्यतः आग्नेय (ग्रेनाइट) और रूपांतरित (नीस, शिस्ट) शैलों से बना एक अनियमित त्रिभुजाकार भूखंड है। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के 15 वर्षों के प्रश्न-पत्रों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि आयोग **पर्वत श्रेणियों के उत्तर से दक्षिण/पश्चिम से पूर्व क्रम, उनकी सर्वोच्च चोटियों, भ्रंश घाटियों तथा पश्चिमी व पूर्वी घाट के तुलनात्मक लक्षणों** पर नियमित रूप से प्रश्न पूछता है।

1. अरावली पर्वत श्रेणी (Aravalli Range)

- **प्रकृति एवं विस्तार:** उत्तर-पूर्व में दिल्ली (मजनू का टीला) से दक्षिण-पश्चिम में गुजरात (पालनपुर) तक लगभग 800 किमी में विस्तृत विश्व की **प्राचीनतम वलित अवशिष्ट पर्वत (Residual Mountain)** प्रणाली (प्री-कैम्ब्रियन युगीन)।
- **सर्वोच्च शिखर: गुरु शिखर (1,722 मी.)** — माउंट आबू (सिरोही जिला, राजस्थान) पर अवस्थित।
- **अपवाह व विशेषताएं:** यह भारत का एक प्रमुख जल-विभाजक है; इसके पश्चिम से लूनी (कच्छ के रन में विलीन) तथा पूर्व से बनास (चंबल की सहायक) निकलती है।

2. विंध्याचल एवं सतपुड़ा पर्वत श्रेणियाँ

- **विंध्यन श्रेणी (Vindhyan Range):**
    - गुजरात से प्रारंभ होकर मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश (मिर्जापुर/सोनभद्र) होते हुए बिहार (सासाराम) तक विस्तृत एक **भ्रंशोत्थ/कगार (Block Mountain/Escarpment)** श्रेणी।
    - यह उत्तर भारत को दक्षिण भारत से भौगोलिक रूप से अलग करती है।
    - **उप-श्रेणियाँ (पश्चिम से पूर्व क्रम):** विंध्याचल → भारनेर → कैमूर पहाड़ियाँ।
    - **सद्भावना शिखर / कालुमार (752 मी.):** इसका सर्वोच्च शिखर (मध्य प्रदेश)।
- **सतपुड़ा श्रेणी (Satpura Range):**
    - नर्मदा और तापी (ताप्ती) की **भ्रंश घाटियों (Rift Valleys)** के मध्य स्थित एक विशिष्ट **ब्लॉक पर्वत**।
    - **पश्चिम से पूर्व उप-श्रेणियाँ: राजपीपला पहाड़ियां → महादेव पर्वत → मैकाल श्रेणी**।
    - **धूपगढ़ (1,350 मी.):** महादेव पहाड़ी (पंचमढ़ी, मध्य प्रदेश) पर स्थित सतपुड़ा का **सर्वोच्च शिखर**।
    - **अमरकंटक (1,048 मी.):** मैकाल श्रेणी का सर्वोच्च बिंदु; यहाँ से नर्मदा (पश्चिमगामी) एवं सोन (उत्तर-पूर्वगामी गंगा की सहायक) नदियों का अरीय अपवाह (Radial Drainage) होता है।

3. पश्चिमी घाट (सह्याद्रि) एवं पूर्वी घाट

- **पश्चिमी घाट (Western Ghats):**
    - तापी नदी के मुहाने (गुजरात/महाराष्ट्र सीमा) से कन्याकुमारी तक लगभग 1,600 किमी लंबा एक **सतत कगार**।
    - **अनाईमुडी (2,695 मी.):** अन्नामलाई पहाड़ियों में स्थित **दक्षिण भारत एवं प्रायद्वीपीय पठार का सर्वोच्च शिखर**।
    - **डोडाबेटा (2,637 मी.):** नीलगिरि पहाड़ियों का सर्वोच्च शिखर। नीलगिरि में पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट का मिलन होता है।
- **पूर्वी घाट (Eastern Ghats):**

©IASHINDIMEDIUM

- महानदी से वैगई नदी तक विस्तृत एक **असतत (Discontinuous)** एवं अत्यधिक अपरदित पर्वत श्रृंखला, जिसे बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली पूर्वगामी नदियों (गोदावरी, कृष्णा, कावेरी) ने खंडित कर दिया है।
- **सर्वोच्च शिखर: जिंदगड़ा / अरमाकोंडा (1,690 मी.)** (विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश); इसके पश्चात देवमाली (ओडिशा) व महेंद्रगिरि (1,501 मी., ओडिशा)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट (AGWP) विस्तार:** केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा थार मरुस्थल के पूर्वगामी प्रसार को रोकने हेतु अरावली के चारों ओर 5 किमी चौड़े बफर बेल्ट (गुजरात, राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली) में वानिकीकरण और मृदा संरक्षण के दूसरे चरण को पूर्ण रूप से लागू किया गया।
- **पश्चिमी घाट पारिस्थितिकीय संवेदनशील क्षेत्र (ESA) अधिसूचना:** केंद्र सरकार द्वारा पश्चिमी घाट के लगभग 56,825 वर्ग किमी क्षेत्र (गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, तमिलनाडु व केरल) को पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र (ESA) घोषित करने हेतु सातवीं मसौदा अधिसूचना जारी कर खनन, उत्खनन और लाल श्रेणी के प्रदूषणकारी उद्योगों पर पूर्ण प्रतिबंध प्रस्तावित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्रायद्वीपीय भारत की पर्वत श्रेणियों और उनके सर्वोच्च शिखरों के संदर्भ में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पर्वत श्रेणी / पहाड़ी)	**सूची-II (सर्वोच्च शिखर)**
a. अरावली श्रेणी	1. धूपगढ़
b. अन्नामलाई पहाड़ियाँ	2. गुरु शिखर
c. सतपुड़ा श्रेणी	3. डोडाबेटा
d. नीलगिरि पहाड़ियाँ	4. अनाईमुडी

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- **अरावली श्रेणी:** सिरोही जिले (माउंट आबू, राजस्थान) में स्थित **गुरु शिखर (1,722 मी.)** इसकी सर्वोच्च चोटी है।
- **अन्नामलाई पहाड़ियाँ:** केरल में स्थित **अनाईमुडी (2,695 मी.)** संपूर्ण प्रायद्वीपीय भारत और दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी है।
- **सतपुड़ा श्रेणी:** महादेव पहाड़ियों पर स्थित **धूपगढ़ (1,350 मी.)** सतपुड़ा पर्वतमाला का सर्वोच्च शिखर है।
- **नीलगिरि पहाड़ियाँ:** तमिलनाडु में स्थित **डोडाबेटा (2,637 मी.)** नीलगिरि की सबसे ऊँची चोटी है।

प्रश्न 2. प्रायद्वीपीय पठार की भू-आकृतिक संरचना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नर्मदा नदी उत्तर में विंध्याचल तथा दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के मध्य निर्मित भ्रंश घाटी (Rift Valley) से होकर पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है।
2. सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला की उप-श्रेणियों का पश्चिम से पूर्व की ओर सही भौगोलिक क्रम 'राजपीपला → महादेव → मैकाल' है।
3. पश्चिमी घाट की निरंतरता की तुलना में पूर्वी घाट अधिक सतत और ऊँचा है।
4. नीलगिरि पर्वत ग्रंथि पर पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट का भौगोलिक मिलन होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: नर्मदा नदी उत्तर में विंध्य कगार और दक्षिण में सतपुड़ा ब्लॉक पर्वत के मध्य विवर्तनिक भ्रंश द्रोणी से होकर प्रवाहित होती है और खंभात की खाड़ी में गिरती है।
  - कथन 2 सत्य है: सतपुड़ा श्रेणी का पश्चिम से पूर्व की ओर वास्तविक क्रम गुजरात सीमा पर राजपीपला पहाड़ियां, मध्य में महादेव पहाड़ियां (धूपगढ़ स्थित) तथा पूर्व में छत्तीसगढ़-मध्य प्रदेश सीमा पर मैकाल श्रेणी (अमरकंटक स्थित) है।
  - कथन 3 असत्य है: **पश्चिमी घाट अधिक सतत (Continuous) और ऊँचा** है (औसत ऊँचाई लगभग 1,000–1,500 मीटर), जिसे केवल थाल, भोर और पालघाट जैसे दर्रों द्वारा ही पार किया जा सकता है। इसके विपरीत, पूर्वी घाट एक असतत श्रृंखला है जिसे महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी बड़ी नदियों ने अपरदित कर व्यापक विच्छेदित घाटियों में बदल दिया है।
  - कथन 4 सत्य है: नीलगिरि पहाड़ियाँ तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक के सीमांत पर स्थित हैं, जो पश्चिमी तथा पूर्वी घाट पर्वत प्रणालियों के संगम स्थल (Junction) के रूप में कार्य करती हैं।

©IASHINDIMEDIUM

आर्थिक एवं मानव भूगोल

टॉपिक - 1: भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र एवं गलियारे (Industrial Regions & Corridors of India)

औद्योगिक संकुल (Industrial Clusters) कच्चे माल, बाजार, ऊर्जा, श्रम और परिवहन की सुलभता के कारण स्थानिक रूप से संकेन्द्रित होते हैं। NCERT के अनुसार भारत में **8 प्रमुख औद्योगिक प्रदेश** और **13 गौण औद्योगिक प्रदेश** चिह्नित हैं। वर्तमान में औद्योगिक विकेंद्रीकरण और वैश्विक विनिर्माण मूल्य श्रृंखला से जुड़ने हेतु भारत सरकार **राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास कार्यक्रम (NICDP)** के अंतर्गत उच्च गति परिवहन रीढ़ (Freight Corridors) पर आधारित स्मार्ट औद्योगिक शहरों का जाल बिछा रही है।

1. भारत के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश (Major Industrial Regions - NCERT वर्गीकरण)

1. **मुंबई-पुणे औद्योगिक प्रदेश:** भारत का सबसे पुराना सूती वस्त्र एवं इंजीनियरिंग हब; मुंबई बंदरगाह, पश्चिमी घाट की जलविद्युत और रासायनिक उद्योग पर आधारित।
2. **हुगली औद्योगिक प्रदेश:** हुगली नदी के दोनों किनारों पर विस्तृत; ऐतिहासिक रूप से जूट उद्योग, चाय, और असम-रानीगंज कोयले व छोटानागपुर के लौह-अयस्क से संपोषित।
3. **बेंगलुरु-चेन्नई औद्योगिक प्रदेश:** सूती वस्त्र, भारी मशीनरी, वैमानिकी, ऑटोमोबाइल और सूचना प्रौद्योगिकी (IT) आधारित उच्च-तकनीक क्लस्टर।
4. **गुजरात औद्योगिक प्रदेश (अहमदाबाद-वडोदरा):** सूती वस्त्र, पेट्रोकेमिकल्स (अंकलेश्वर, जामनगर), फार्मास्यूटिकल्स और रसायन उद्योग।

©IASHINDIMEDIUM

5. **छोटा नागपुर औद्योगिक प्रदेश:** इसे **'भारत का रूर' (Ruhr of India)** कहा जाता है; भारी धातुकर्म, लौह-इस्पात (जमशेदपुर, बोकारो), भारी इंजीनियरिंग (रांची) और समृद्ध खनिज पट्टी (कोयला, लौह-अयस्क, अभ्रक) पर केंद्रित।
6. **विशाखापत्तनम-गुंटूर प्रदेश:** पोत-निर्माण, पेट्रोलियम शोधन, उर्वरक एवं सीमेंट; विशाखापत्तनम बंदरगाह आधारित।
7. **गुरुग्राम-दिल्ली-मेरठ प्रदेश:** उपभोक्ता वस्तुएं, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल (मारुति), सॉफ्टवेयर और हल्के इंजीनियरिंग उद्योग; बाजार-समीपस्थ प्रदेश।
8. **कोल्लम-तिरुवनंतपुरम प्रदेश:** कृषि-प्रसंस्करण, काजू, रबर, नारियल जटा (Coir) एवं मत्स्य उद्योग।

2. प्रमुख राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारे (Industrial Corridors)

- **दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC):** लंबाई लगभग 1,504 किमी; **पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे (WDFC)** के समानांतर विकसित। राज्य: उत्तर प्रदेश (दादरी), हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र। इसमें दादरी-नोएडा-गाजियाबाद निवेश क्षेत्र शामिल है।
- **अमृतसर-कोलकाता औद्योगिक गलियारा (AKIC): पूर्वी समर्पित माल ढुलाई गलियारे (EDFC)** के समानांतर। यह 7 राज्यों (पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल) से होकर गुजरता है। उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा हिस्सा इसी में पड़ता है।
- **चेन्नई-बेंगलुरु औद्योगिक गलियारा (CBIC):** तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश (कृष्णापटनम) और कर्नाटक (तुमकुर) को जोड़ता है।
- **ईस्ट कोस्ट औद्योगिक गलियारा (ECIC):** भारत का **पहला तटीय औद्योगिक गलियारा**; इसका पहला चरण विशाखापत्तनम-चेन्नई औद्योगिक गलियारा (VCIC) है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा 12 नए औद्योगिक स्मार्ट शहरों (Nodes) की स्वीकृति:** राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास कार्यक्रम (NICDP) के तहत 6 प्रमुख गलियारों में 10 राज्यों में फैले 12 नए ग्रीनफील्ड औद्योगिक नोड्स को मंजूरी दी गई। इसमें उत्तर प्रदेश के **आगरा** (लेदर/इंजीनियरिंग) और **प्रयागराज** (ग्लास/एमएसएमई) नोड्स तथा बिहार का **गया** नोड विशेष रूप से शामिल हैं।
- **पीएम गतिशक्ति एवं राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति का एकीकरण:** सभी औद्योगिक नोड्स को 'पीएम गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान' पर डिजिटल रूप से मैप किया गया है, जिसका उद्देश्य मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी स्थापित कर देश की लॉजिस्टिक्स लागत को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 8% से नीचे लाना है।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (औद्योगिक प्रदेश)	**सूची-II (प्राथमिक उद्योग / विशेषता)**
a. छोटा नागपुर प्रदेश	1. ऑटोमोबाइल, वैमानिकी एवं आईटी हब
b. हुगली प्रदेश	2. 'भारत का रूर' एवं भारी धातुकर्म

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (औद्योगिक प्रदेश)	सूची-II (प्राथमिक उद्योग / विशेषता)
c. बेंगलुरु-चेन्नई प्रदेश	3. पेट्रोकेमिकल्स एवं सूती वस्त्र
d. गुजरात प्रदेश	4. ऐतिहासिक जूट उद्योग एवं भारी मशीनरी

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **छोटा नागपुर प्रदेश:** प्रचुर कोयला और लौह-अयस्क भंडारों के कारण भारी धातुकर्म का केंद्र है और इसे 'भारत का रूर' कहा जाता है।
    - **हुगली प्रदेश:** भारत का सबसे प्राचीन औद्योगिक क्षेत्र है, जो मुख्य रूप से पटसन/जूट मिलों और इंजीनियरिंग उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।
    - **बेंगलुरु-चेन्नई प्रदेश:** खनिज संसाधनों से दूर होने के बावजूद कुशल श्रम और बाजार के दम पर ऑटोमोबाइल, एयरोस्पेस और आईटी उद्योग का प्रमुख संकुल बना।
    - **गुजरात प्रदेश:** कच्चे माल (कपास) और तटीय रिफाइनरियों के कारण सूती वस्त्र और पेट्रोकेमिकल उद्योग में अग्रणी है।

प्रश्न 2. भारत के औद्योगिक गलियारों (Industrial Corridors) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC) मुख्य रूप से पूर्वी समर्पित माल ढुलाई गलियारे (EDFC) के समानांतर विकसित किया जा रहा है।
2. ईस्ट कोस्ट इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (ECIC) भारत का पहला तटीय आर्थिक/औद्योगिक गलियारा है।
3. अमृतसर-कोलकाता औद्योगिक गलियारा (AKIC) उत्तर प्रदेश सहित कुल 7 राज्यों से होकर गुजरता है।
4. हाल ही में स्वीकृत 12 नए ग्रीनफील्ड औद्योगिक नोड्स में उत्तर प्रदेश के आगरा और प्रयागराज शामिल हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

©IASHINDIMEDIUM

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC) **पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे (WDFC)** के समानांतर विकसित किया जा रहा है। EDFC के समानांतर अमृतसर-कोलकाता औद्योगिक गलियारा (AKIC) विकसित हो रहा है।
    - कथन 2 सत्य है: ईस्ट कोस्ट इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (ECIC) भारत का प्रथम तटीय गलियारा है, जिसका प्रारंभिक चरण विशाखापत्तनम-चेन्नई (VCIC) है।
    - कथन 3 सत्य है: AKIC पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल (कुल 7 राज्यों) को आच्छादित करता है।
    - कथन 4 सत्य है: केंद्र सरकार द्वारा स्वीकृत 12 नए स्मार्ट औद्योगिक नोड्स में उत्तर प्रदेश से आगरा (1,058 एकड़) और प्रयागराज (352 एकड़) को सम्मिलित किया गया है।

टॉपिक - 2: भारत की जनगणना 2011 (आर्थिक एवं मानव भूगोल)

2011 की जनगणना भारत की 15वीं तथा स्वतंत्रता के पश्चात की 7वीं जनगणना थी (रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त: सी. चंद्रमौली; आदर्श वाक्य: *"हमारी जनगणना, हमारा भविष्य"*)। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के 15 वर्षों के रुझानों के अनुसार, आयोग **दशकीय वृद्धि दर, लिंगानुपात (समग्र एवं बाल), साक्षरता, जनघनत्व तथा नगरीकरण** के शीर्ष व निम्नतम राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के क्रम और उत्तर प्रदेश के तुलनात्मक आंकड़ों पर अनिवार्य रूप से प्रश्न पूछता है।

1. प्रमुख राष्ट्रीय जनसांख्यिकी संकेतक (Census 2011)

- **कुल जनसंख्या एवं वृद्धि दर:**
    - भारत की कुल जनसंख्या: **121.08 करोड़** (विश्व का 17.5%)।
    - **दशकीय वृद्धि दर (2001-2011): 17.7%** (वार्षिक वृद्धि दर: 1.64%)।
    - सर्वाधिक दशकीय वृद्धि दर वाले राज्य: **मेघालय (27.9%)** → अरुणाचल प्रदेश (26.0%) → बिहार (25.4%)।
    - एकमात्र राज्य जहाँ ऋणात्मक दशकीय वृद्धि दर रही: **नागालैंड (-0.6%)**।
- **जनसंख्या घनत्व (Population Density):**
    - भारत का औसत जनघनत्व: **382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी** (2001 में 325)।
    - शीर्ष राज्य: **बिहार (1,106)** → पश्चिम बंगाल (1,028) → केरल (860) → उत्तर प्रदेश (829)।
    - न्यूनतम राज्य: **अरुणाचल प्रदेश (17)** → मिजोरम (52)।
    - शीर्ष केंद्रशासित प्रदेश: **दिल्ली (11,320)**; न्यूनतम UT: अंडमान और निकोबार (46)।
- **लिंगानुपात (Sex Ratio - प्रति 1,000 पुरुषों पर महिलाएं):**

- भारत का समग्र लिंगानुपात: **943** (2001 में 933)।
- शीर्ष राज्य: **केरल (1,084)** → तमिलनाडु (996) → आंध्र प्रदेश (993)।
- न्यूनतम राज्य: **हरियाणा (879)** → जम्मू और कश्मीर (889)।
- शीर्ष UT: पुडुचेरी (1,037); न्यूनतम UT: दमन और दीव (618)।
- **शिशु लिंगानुपात (0-6 आयु वर्ग): 919** (2001 में 927 - गिरावट दर्ज)। शीर्ष: **अरुणाचल प्रदेश (972)**; न्यूनतम: **हरियाणा (834)**।

- **साक्षरता दर (Literacy Rate - 7 वर्ष एवं अधिक आयु):**
  - राष्ट्रीय औसत: **73.0%** (पुरुष: 80.9%, महिला: 64.6%; लैंगिक अंतराल: 16.3%)।
  - शीर्ष राज्य: **केरल (94.0%)** → मिजोरम (91.3%) → गोवा (88.7%)।
  - न्यूनतम राज्य: **बिहार (61.8%)** → अरुणाचल प्रदेश (65.4%) → राजस्थान (66.1%)।
  - महिला साक्षरता में न्यूनतम: **बिहार (51.5%)** → राजस्थान (52.1%)।
- **ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या:**
  - ग्रामीण जनसंख्या: **68.8%**; नगरीय जनसंख्या: **31.2%**।
  - सर्वाधिक नगरीकृत राज्य (प्रतिशतता): **गोवा (62.2%)** → मिजोरम (52.1%) → तमिलनाडु (48.4%)।
  - न्यूनतम नगरीकृत राज्य (प्रतिशतता): **हिमाचल प्रदेश (10.0%)** → बिहार (11.3%)।
  - सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या (संख्यात्मक): **महाराष्ट्र**; न्यूनतम: सिक्किम।

2. उत्तर प्रदेश के संदर्भ में संक्षिप्त सांख्यिकी तुलना

- कुल जनसंख्या: **19.98 करोड़** (देश का 16.51%; विश्व में पाँचवाँ स्थान यदि देश माना जाए)।
- दशकीय वृद्धि दर: **20.22%** (राष्ट्रीय औसत 17.7% से अधिक)।
- जनघनत्व: **829** व्यक्ति/वर्ग किमी (राष्ट्रीय स्तर पर राज्यों में चौथा स्थान)।
- लिंगानुपात: **912** (शिशु लिंगानुपात: 902)।
- साक्षरता दर: **67.7%** (पुरुष: 77.3%, महिला: 57.2%; साक्षरता में अंतर 20.1%)।
- सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला: **प्रयागराज**; न्यूनतम: **महोबा**।
- सर्वाधिक साक्षरता वाला जिला: **गौतम बुद्ध नगर**; न्यूनतम: **श्रावस्ती**।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **डिजिटल जनगणना एवं राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (NPR) अद्यतन रूपरेखा:** गृह मंत्रालय और भारत के महारजिस्ट्रार (ORGI) द्वारा आगामी 16वीं जनगणना हेतु विकसित 'मोबाइल आधारित जनगणना पोर्टल' तथा स्व-गणना (Self-

enumeration) मॉड्यूल का प्रायोगिक परीक्षण राज्यों में संचालित किया गया, जिसमें पहली बार जातिगत श्रेणियों व आर्थिक डेटा संग्रह के लिए क्लाउड-आधारित वास्तविक समय सत्यापन प्रणाली जोड़ी गई।

- **SRS बुलेटिन एवं राष्ट्रीय प्रजनन दर (TFR) रिपोर्ट:** नमूना पंजीकरण प्रणाली (SRS) द्वारा जारी अद्यतन जनसांख्यिकी प्रतिवेदन के अनुसार, भारत की कुल प्रजनन दर (TFR) घटकर **2.0** के स्तर पर आ गई है (प्रतिस्थापन स्तर 2.1 से नीचे), जिसमें उत्तर प्रदेश और बिहार को छोड़कर अधिकांश प्रायद्वीपीय राज्यों में कार्यशील जनसंख्या का शीर्ष जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) चरण दर्ज किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. जनगणना 2011 के अंतिम आंकड़ों के अनुसार, निम्नलिखित राज्यों को उनके जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किमी) के **घटते हुए क्रम (Descending Order)** में व्यवस्थित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

1. पश्चिम बंगाल
2. केरल
3. बिहार
4. उत्तर प्रदेश

कूट:

(A) 3, 1, 2, 4

(B) 3, 2, 1, 4

(C) 1, 3, 2, 4

(D) 3, 1, 4, 2

उत्तर: (A) 3, 1, 2, 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - जनगणना 2011 के अनुसार राज्यों का जनघनत्व इस प्रकार है:
        1. **बिहार:** 1,106 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी (राज्यों में शीर्ष)
        2. **पश्चिम बंगाल:** 1,028 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
        3. **केरल:** 860 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
        4. **उत्तर प्रदेश:** 829 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
    - अतः सही घटता हुआ क्रम 3 → 1 → 2 → 4 है।

प्रश्न 2. जनगणना 2011 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वर्ष 2001-2011 के दशक में नागालैंड एकमात्र ऐसा राज्य था जहाँ ऋणात्मक (-0.6%) दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की गई।
2. भारत का बाल लिंगानुपात (0-6 वर्ष) 2001 के 927 से घटकर 2011 में 919 हो गया।

©IASHINDIMEDIUM

3. प्रतिशत की दृष्टि से गोवा भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य है, जबकि हिमाचल प्रदेश न्यूनतम नगरीकृत राज्य है।
4. महिला साक्षरता दर के मामले में राजस्थान भारत में सबसे निचले पायदान पर है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: नागालैंड की दशकीय वृद्धि दर -0.6% रही, जो पूरे देश में एकमात्र ऋणात्मक वृद्धि दर वाला राज्य था।
    - कथन 2 सत्य है: 2001 में राष्ट्रीय शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) 927 था, जो 2011 में 8 अंक गिरकर 919 पर आ गया (यह चिंताजनक गिरावट नीतिगत हस्तक्षेपों का कारण बनी)।
    - कथन 3 सत्य है: कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात (प्रतिशत) की दृष्टि से गोवा (62.2%) शीर्ष पर है और हिमाचल प्रदेश (10.0%) सबसे निचले स्थान पर है।
    - कथन 4 असत्य है: जनगणना 2011 के अनुसार भारत में न्यूनतम महिला साक्षरता वाला राज्य **बिहार (51.5%)** है। राजस्थान 52.1% महिला साक्षरता के साथ नीचे से दूसरे स्थान पर है।

टॉपिक - 2: जनगणना 2011 — जनसंख्या वृद्धि, घनत्व एवं लिंगानुपात

जनगणना 2011 भारत की 15वीं तथा स्वतंत्रता के पश्चात की 7वीं जनगणना थी (जनगणना आयुक्त: सी. चंद्रमौली; आदर्श वाक्य: *"हमारी जनगणना, हमारा भविष्य"*)।

1. जनसंख्या वृद्धि दर (Population Growth Rate)

- **ऐतिहासिक संदर्भ (NCERT):** वर्ष **1921** को भारतीय जनसांख्यिकी का **'महान विभाजक वर्ष' (Great Demographic Divide)** कहा जाता है, क्योंकि 1911–1921 के दशक में भारत की जनसंख्या वृद्धि दर ऋणात्मक (-0.31%) दर्ज की गई थी।
- **अखिल भारतीय स्थिति (2001–2011):**
    - भारत की कुल जनसंख्या: **121.08 करोड़** (विश्व का 17.5%)।
    - दशकीय वृद्धि दर: **17.7%** (वार्षिक वृद्धि दर: 1.64%)।
    - **शीर्ष 3 राज्य (दशकीय वृद्धि): मेघालय (27.9%)** → अरुणाचल प्रदेश (26.0%) → बिहार (25.4%)।

©IASHINDIMEDIUM

- **न्यूनतम वृद्धि दर वाला राज्य: नागालैंड (−0.6%)** (एकमात्र राज्य जहाँ ऋणात्मक वृद्धि दर रही); इसके बाद केरल (4.9%)।
- **शीर्ष UT:** दादरा एवं नगर हवेली (55.9%); न्यूनतम UT: लक्षद्वीप (6.3%)।

- **उत्तर प्रदेश विशेष:** UP की कुल जनसंख्या **19.98 करोड़** (देश का 16.51%) तथा दशकीय वृद्धि दर **20.22%** रही।
  - सर्वाधिक वृद्धि वाले जिले: **गौतम बुद्ध नगर (49.1%)** → गाजियाबाद → श्रावस्ती।
  - न्यूनतम वृद्धि वाले जिले: **कानपुर नगर (9.9%)** → हमीरपुर → बागपत।

2. जनसंख्या घनत्व (Population Density)

जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या को व्यक्त करता है।

- **भारत का औसत जनघनत्व: 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी** (2001 में 325 था)।
- **शीर्ष राज्य: बिहार (1,106)** → पश्चिम बंगाल (1,028) → केरल (860) → उत्तर प्रदेश (829)।
- **न्यूनतम राज्य: अरुणाचल प्रदेश (17)** → मिजोरम (52) → सिक्किम (86)।
- **शीर्ष UT:** दिल्ली (**11,320**); न्यूनतम UT: अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह (46)।
- **उत्तर प्रदेश विशेष:** UP का जनघनत्व **829 व्यक्ति/किमी²** है (देश के राज्यों में चौथा स्थान)।
  - सर्वाधिक जनघनत्व वाले जिले: **गाजियाबाद (3,971)** → वाराणसी (2,395) → लखनऊ (1,816)।
  - न्यूनतम जनघनत्व वाले जिले: **ललितपुर (242)** → सोनभद्र (270) → हमीरपुर (275)।

3. लिंगानुपात (Sex Ratio - प्रति 1,000 पुरुषों पर स्त्रियां)

- **समग्र लिंगानुपात:**
  - भारत का राष्ट्रीय लिंगानुपात: **943** (2001 में 933 था; 10 अंक का सुधार)।
  - **शीर्ष राज्य: केरल (1,084)** → तमिलनाडु (996) → आंध्र प्रदेश (993) → छत्तीसगढ़ (991)।
  - **न्यूनतम राज्य: हरियाणा (879)** → जम्मू और कश्मीर (889) → सिक्किम (890)।
  - **शीर्ष UT:** पुडुचेरी (1,037); न्यूनतम UT: दमन और दीव (618)।
- **शिशु लिंगानुपात (Child Sex Ratio: 0–6 आयु वर्ग):**
  - राष्ट्रीय औसत: **919** (2001 के 927 से घटकर; 8 अंक की गिरावट)।
  - **शीर्ष राज्य: अरुणाचल प्रदेश (972)** → मिजोरम (970)।
  - **न्यूनतम राज्य: हरियाणा (834)** → पंजाब (846)।
- **उत्तर प्रदेश विशेष:**

©IASHINDIMEDIUM

- UP का समग्र लिंगानुपात: **912** (शीर्ष जिला: **जौनपुर - 1,024** → आजमगढ़ - 1,019; न्यूनतम जिला: **गौतम बुद्ध नगर - 851**)।
- UP का शिशु लिंगानुपात (0–6 वर्ष): **902** (शीर्ष जिला: **बलरामपुर - 950**; न्यूनतम जिला: **बागपत - 841**)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **नमूना पंजीकरण प्रणाली (SRS) एवं कुल प्रजनन दर (TFR) प्रतिवेदन:** महापंजीयक कार्यालय द्वारा जारी अद्यतन जनसांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार भारत की कुल प्रजनन दर (TFR) घटकर **2.0** पर आ गई है (जो जनसांख्यिकीय प्रतिस्थापन स्तर 2.1 से नीचे है)। दक्षिणी राज्यों में कार्यशील आयु वर्ग की स्थिरता और उत्तर प्रदेश व बिहार में जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) का उच्चतम चरण दर्ज किया गया।
- **डिजिटल जनगणना एवं 'नेशनल पॉपुलेशन पोर्टल 2.0':** भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय (ORGI) ने आगामी जनगणना हेतु भू-स्थानिक (GIS) मैपिंग और मोबाइल-आधारित स्व-गणना (Self-Enumeration) प्रणाली के परीक्षण पूरे किए, जिससे रियल-टाइम जनघनत्व और आंतरिक प्रवासन का सटीक विश्लेषण सुनिश्चित किया जा सके।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. जनगणना 2011 के अंतिम आंकड़ों के अनुसार, निम्नलिखित राज्यों को उनके **जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किमी) के घटते हुए क्रम (Descending Order)** में व्यवस्थित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

1. पश्चिम बंगाल
2. केरल
3. बिहार
4. उत्तर प्रदेश

कूट:

(A) 3, 1, 2, 4

(B) 3, 2, 1, 4

(C) 1, 3, 2, 4

(D) 3, 1, 4, 2

उत्तर: (A) 3, 1, 2, 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - जनगणना 2011 के अनुसार राज्यों के जनसंख्या घनत्व का वास्तविक क्रम:
    1. **बिहार:** 1,106 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी (राज्यों में शीर्ष)
    2. **पश्चिम बंगाल:** 1,028 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
    3. **केरल:** 860 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
    4. **उत्तर प्रदेश:** 829 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी

©IASHINDIMEDIUM

- अतः सही अवरोही (घटता हुआ) क्रम **3 → 1 → 2 → 4** है।

प्रश्न 2. भारत एवं उत्तर प्रदेश के जनसांख्यिकीय अभिलक्षणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वर्ष 1921 को भारतीय जनसांख्यिकी में 'महान विभाजक वर्ष' कहा जाता है क्योंकि 1911-1921 के दशक में भारत की जनसंख्या वृद्धि दर ऋणात्मक रही थी।
2. वर्ष 2001-2011 के दौरान नागालैंड भारत का एकमात्र ऐसा राज्य था जहाँ ऋणात्मक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई।
3. जनगणना 2011 के अनुसार भारत का बाल लिंगानुपात (0-6 वर्ष) राष्ट्रीय समग्र लिंगानुपात से अधिक है।
4. उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक लिंगानुपात जौनपुर जिले में तथा न्यूनतम लिंगानुपात गौतम बुद्ध नगर जिले में दर्ज किया गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: 1911–1921 के दशक में महामारी और अकाल के कारण भारत की वृद्धि दर -0.31% रही थी, इसलिए 1921 को 'महान विभाजक वर्ष' कहा जाता है।
  - कथन 2 सत्य है: 2001–2011 के दौरान नागालैंड की दशकीय वृद्धि दर -0.6% रही, जो देश में एकमात्र ऋणात्मक वृद्धि दर वाला राज्य था।
  - कथन 3 असत्य है: जनगणना 2011 में भारत का **समग्र लिंगानुपात 943** था, जबकि **शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) मात्र 919** था। अतः बाल लिंगानुपात समग्र लिंगानुपात से कम है, अधिक नहीं।
  - कथन 4 सत्य है: उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक लिंगानुपात **जौनपुर (1,024)** में तथा सबसे कम लिंगानुपात **गौतम बुद्ध नगर (851)** में दर्ज किया गया।

टॉपिक – 3 : साक्षरता दर और नगरीकरण के आंकड़े (भारत एवं उत्तर प्रदेश विशेष)

जनगणना 2011 एवं NCERT के प्रामाणिक मानकों के अनुसार, 7 वर्ष या उससे अधिक आयु का कोई भी व्यक्ति जो समझ के साथ किसी भी भाषा में पढ़ और लिख सकता है, उसे 'साक्षर' माना जाता है। वहीं नगरीकरण आर्थिक संवृद्धि और संरचनात्मक रूपांतरण का प्राथमिक सूचक है।

1. साक्षरता दर (Literacy Rate - Census 2011)

©IASHINDIMEDIUM

- **अखिल भारतीय साक्षरता दर: 73.0%** (2001 में 64.8% थी; 8.2% की वृद्धि)।
    - **पुरुष साक्षरता: 80.9%** | **महिला साक्षरता: 64.6%**।
    - **स्त्री-पुरुष साक्षरता अंतराल (Gender Gap): 16.3%**।
- **राज्यों की स्थिति:**
    - **शीर्ष 3 राज्य (समग्र): केरल (94.0%)** → मिजोरम (91.3%) → गोवा (88.7%)।
    - **न्यूनतम 3 राज्य (समग्र): बिहार (61.8%)** → अरुणाचल प्रदेश (65.4%) → राजस्थान (66.1%)।
    - **शीर्ष UT:** लक्षद्वीप (91.8%); **न्यूनतम UT:** दादरा एवं नगर हवेली (76.2%)।
    - **स्त्री साक्षरता में न्यूनतम राज्य: बिहार (51.5%)** → राजस्थान (52.1%) → झारखंड (55.4%)।
    - **सर्वाधिक स्त्री-पुरुष साक्षरता अंतराल: राजस्थान (27.1%)**; न्यूनतम अंतराल: **मेघालय (3.1%)** (केरल: 4.0%)।
- **उत्तर प्रदेश विशेष:**
    - UP की कुल साक्षरता: **67.7%** (पुरुष: 77.3%, महिला: 57.2%; अंतराल: 20.1%)।
    - **शीर्ष 3 जिले: गौतम बुद्ध नगर (80.1%)** → कानपुर नगर (79.7%) → औरैया (78.9%)।
    - **न्यूनतम 3 जिले: श्रावस्ती (46.7%)** → बहराइच (49.4%) → बलरामपुर (49.5%)।
    - **महिला साक्षरता में शीर्ष जिला: कानपुर नगर (75.1%)** (गौतम बुद्ध नगर नहीं); न्यूनतम: श्रावस्ती।

2. नगरीकरण के आंकड़े (Urbanisation Data - Census 2011)

- **अखिल भारतीय स्थिति:**
    - कुल नगरीय जनसंख्या: **37.71 करोड़ (31.16% या ~31.2%)**; ग्रामीण जनसंख्या: **68.84%**।
    - 2001–2011 के दौरान नगरीय जनसंख्या में दशकीय वृद्धि: **31.8%** रही।
- **प्रतिशतता के आधार पर (Urban Proportion):**
    - **शीर्ष 3 राज्य: गोवा (62.2%)** → मिजोरम (52.1%) → तमिलनाडु (48.4%)।
    - **न्यूनतम राज्य: हिमाचल प्रदेश (10.0%)** → बिहार (11.3%) → असम (14.1%)।
    - **शीर्ष UT:** दिल्ली (97.5%) → चंडीगढ़ (97.3%)।
- **संख्यात्मक आधार पर (Absolute Urban Population):**
    - **शीर्ष 3 राज्य: महाराष्ट्र (5.08 करोड़)** → उत्तर प्रदेश (4.45 करोड़) → तमिलनाडु।
    - **न्यूनतम राज्य:** सिक्किम।
- **उत्तर प्रदेश विशेष:**
    - कुल जनसंख्या में नगरीय अनुपात: **22.28%** (ग्रामीण: 77.72%)।

©IASHINDIMEDIUM

- **सर्वाधिक नगरीय प्रतिशत वाले जिले: गाजियाबाद (67.6%)** → लखनऊ (66.2%) → कानपुर नगर (65.8%)।
- **न्यूनतम नगरीय प्रतिशत वाले जिले: श्रावस्ती (3.5%)** → कुशीनगर (4.7%) → महाराजगंज (5.0%)।
- **सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या (संख्या में): गाजियाबाद**; न्यूनतम: श्रावस्ती।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **उल्लास (ULLAS) नव भारत साक्षरता कार्यक्रम एवं कार्यान्वयन रिपोर्ट:** केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित 'ULLAS - New India Literacy Programme' के अंतर्गत 15 वर्ष व उससे अधिक आयु के गैर-साक्षरों को मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल (FLN) प्रदान करने हेतु देशव्यापी मूल्यांकन में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश ने शत-प्रतिशत डिजिटल पंजीकरण और प्रमाणीकरण में अग्रणी स्थान प्राप्त किया।
- **शहरी गतिशीलता एवं स्मार्ट सिटी अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन इंडेक्स:** आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय (MoHUA) द्वारा जारी अद्यतन शहरीकरण गतिशीलता सूचकांक में टियर-2 और टियर-3 नगरों में अनियोजित पेरी-अर्बन (Peri-Urban) विस्तार के प्रबंधन हेतु उपग्रह आधारित 'मास्टर प्लान 2041' भू-स्थानिक पोर्टल को अनिवार्य किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. जनगणना 2011 के अनुसार, निम्नलिखित राज्यों को उनके **नगरीकरण के प्रतिशत (उच्चतम से निम्नतम)** के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

1. तमिलनाडु
2. मिजोरम
3. गोवा
4. महाराष्ट्र

कूट:

(A) 3, 2, 1, 4

(B) 3, 1, 2, 4

(C) 2, 3, 4, 1

(D) 3, 2, 4, 1

उत्तर: (A) 3, 2, 1, 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - जनगणना 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत के आधार पर शीर्ष राज्यों का क्रम:
    1. **गोवा:** 62.17% (लगभग 62.2%)
    2. **मिजोरम:** 52.11% (लगभग 52.1%)
    3. **तमिलनाडु:** 48.40% (लगभग 48.4%)

©IASHINDIMEDIUM

4. **महाराष्ट्र:** 45.22% (लगभग 45.2%)

- अतः सही अवरोही क्रम **3 → 2 → 1 → 4** है।

प्रश्न 2. भारत एवं उत्तर प्रदेश में साक्षरता के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में पुरुष और महिला साक्षरता दर के मध्य सर्वाधिक लैंगिक अंतराल (Gender Gap) राजस्थान राज्य में पाया जाता है।
2. जनगणना 2011 के अनुसार, महिला साक्षरता दर के मामले में बिहार भारत का सबसे निचला राज्य है।
3. उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला गौतम बुद्ध नगर है।
4. मेघालय भारत का ऐसा राज्य है जहाँ पुरुष और महिला साक्षरता के बीच न्यूनतम लैंगिक अंतराल दर्ज किया गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: राजस्थान में पुरुष साक्षरता 79.2% और महिला साक्षरता 52.1% है, जिससे यहाँ स्त्री-पुरुष साक्षरता का अंतर **27.1%** है, जो देश में सर्वाधिक है।
  - कथन 2 सत्य है: जनगणना 2011 में बिहार की महिला साक्षरता दर मात्र **51.5%** थी, जो सभी राज्यों में न्यूनतम है।
  - कथन 3 असत्य है: उत्तर प्रदेश में समग्र साक्षरता में गौतम बुद्ध नगर शीर्ष पर है, किंतु **सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला कानपुर नगर (75.1%)** है। (गौतम बुद्ध नगर में महिला साक्षरता 70.8% है)।
  - कथन 4 सत्य है: मेघालय में पुरुष साक्षरता 76.0% और महिला साक्षरता 72.9% है, जिससे यहाँ का अंतराल मात्र **3.1%** है, जो भारत में सबसे कम लैंगिक अंतराल है।

टॉपिक – 4 : भारत की अनुसूचित जातियाँ एवं अनुसूचित जनजातियाँ (जनसांख्यिकी एवं भौगोलिक वितरण)

भारत की जनगणना 2011 और संवैधानिक प्रावधानों (अनुच्छेद 341 एवं 342) के अनुसार, अनुसूचित जातियाँ (SC) एवं अनुसूचित जनजातियाँ (ST) देश के सामाजिक-आर्थिक और मानव भूगोल का अत्यंत महत्वपूर्ण घटक हैं।

1. अनुसूचित जातियाँ (Scheduled Castes - SC)

- **अखिल भारतीय स्थिति (जनगणना 2011):**
  - देश में कुल SC जनसंख्या: **20.14 करोड़** (कुल जनसंख्या का **16.6%**)।
  - 2001–2011 के दौरान SC दशकीय वृद्धि दर: **20.8%**।

- लिंगानुपात: **945** (राष्ट्रीय औसत 943 से अधिक)।

- **राज्यवार वितरण (प्रतिशतता के आधार पर):**
  - **शीर्ष राज्य: पंजाब (31.9%)** → हिमाचल प्रदेश (25.2%) → पश्चिम बंगाल (23.5%) → उत्तर प्रदेश (20.7%)।
- **संख्यात्मक आधार पर (Absolute Population):**
  - **शीर्ष राज्य: उत्तर प्रदेश (4.14 करोड़)** → पश्चिम बंगाल (2.14 करोड़) → बिहार → तमिलनाडु।
- **शून्य SC जनसंख्या वाले राज्य/UT: नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, लक्षद्वीप एवं अंडमान-निकोबार द्वीप समूह** में कोई अनुसूचित जाति अधिसूचित नहीं है।
- **उत्तर प्रदेश विशेष (SC आंकड़े):**
  - राज्य की कुल आबादी में SC का अनुपात: **20.7%**।
  - **सर्वाधिक SC जनसंख्या (संख्या में): सीतापुर**; न्यूनतम: **बागपत**।
  - **सर्वाधिक SC प्रतिशत वाला जिला: कौशाम्बी (34.7%)** → सीतापुर; न्यूनतम प्रतिशत: **बागपत**।

2. अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes - ST)

- **अखिल भारतीय स्थिति (जनगणना 2011):**
  - देश में कुल ST जनसंख्या: **10.43 करोड़** (कुल जनसंख्या का **8.6%**)।
  - 2001–2011 के दौरान ST दशकीय वृद्धि दर: **23.7%**।
  - लिंगानुपात: **990** (सामाजिक समूहों में सर्वोत्तम)।
  - **सबसे बड़ा जनजातीय समूह: भील** (कुल ST का 37.7%), इसके बाद **गोंड** दूसरे स्थान पर।
- **राज्यवार वितरण (प्रतिशतता के आधार पर):**
  - **शीर्ष राज्य (राज्यों में): मिजोरम (94.4%)** → नागालैंड (86.5%) → मेघालय (86.1%)।
  - **शीर्ष UT: लक्षद्वीप (94.8%)**।
- **संख्यात्मक आधार पर (Absolute Population):**
  - **शीर्ष राज्य: मध्य प्रदेश (1.53 करोड़)** → महाराष्ट्र (1.05 करोड़) → ओडिशा → राजस्थान।
- **शून्य ST जनसंख्या वाले राज्य/UT: पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली एवं पुडुचेरी** में कोई अनुसूचित जनजाति अधिसूचित नहीं है।
- **विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (PVTGs):** भारत के 18 राज्यों और अंडमान-निकोबार में कुल **75 PVTGs** चिह्नित हैं (ओडिशा में सर्वाधिक 13 PVTGs)।
- **उत्तर प्रदेश विशेष (ST आंकड़े):**
  - राज्य की कुल जनसंख्या में ST का अनुपात मात्र **0.57%** (~11.34 लाख) है।

©IASHINDIMEDIUM

- **सर्वाधिक ST जनसंख्या एवं प्रतिशत वाला जिला: सोनभद्र** (सोनभद्र, बलिया, देवरिया शीर्ष तीन जिले हैं)।
- **न्यूनतम ST जनसंख्या वाला जिला: बागपत**; शून्य ST वाला क्षेत्र: अयोध्या और जालौन में ST जनसंख्या नगण्य है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाभियान (PM-JANMAN) एवं धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान:** देश के 30 राज्यों/UTs के 549 जिलों में फैले 63,000 से अधिक जनजातीय बहुल गाँवों में बुनियादी अवसंरचना, पक्के आवास, स्वच्छ पेयजल और 4G मोबाइल कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने हेतु 2025–2026 में ग्राम-स्तरीय संतृप्ति (Saturation) लक्ष्य लागू किए गए।
- **जनजातीय गौरव वर्ष एवं राष्ट्रीय एटलस:** भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती समारोहों के क्रम में जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा भारत के सभी जनजातीय समुदायों और PVTGs के पारंपरिक ज्ञान, भाषा और भौगोलिक विस्तार का व्यापक जीआईएस (GIS) मैपिंग एटलस जारी किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार, निम्नलिखित राज्यों को उनकी कुल जनसंख्या में **अनुसूचित जातियों (SC) के प्रतिशत के घटते हुए क्रम** में व्यवस्थित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

1. पश्चिम बंगाल
2. उत्तर प्रदेश
3. पंजाब
4. हिमाचल प्रदेश

कूट:

(A) 3, 4, 1, 2

(B) 3, 1, 4, 2

(C) 2, 3, 1, 4

(D) 3, 4, 2, 1

उत्तर: (A) 3, 4, 1, 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - जनगणना 2011 के अनुसार राज्यों की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति (SC) के प्रतिशत का क्रम:
    1. **पंजाब:** 31.9% (राज्यों में सर्वोच्च)
    2. **हिमाचल प्रदेश:** 25.2%
    3. **पश्चिम बंगाल:** 23.5%
    4. **उत्तर प्रदेश:** 20.7%

©IASHINDIMEDIUM

- (ध्यान दें: संख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक SC जनसंख्या है, परंतु प्रतिशतता की दृष्टि से पंजाब शीर्ष पर है)। अतः सही अवरोही क्रम **3 → 4 → 1 → 2** है।

प्रश्न 2. भारत एवं उत्तर प्रदेश में जनजातीय आबादी के भौगोलिक वितरण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पंजाब और हरियाणा ऐसे राज्य हैं जहाँ कोई भी अनुसूचित जनजाति (ST) अधिसूचित नहीं है।
2. जनगणना 2011 के अनुसार, 'भील' भारत का सबसे बड़ा जनजातीय समूह है।
3. उत्तर प्रदेश में सोनभद्र सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या तथा प्रतिशतता वाला जिला है।
4. भारत में विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूहों (PVTGs) की सर्वाधिक संख्या मध्य प्रदेश राज्य में पाई जाती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, चंडीगढ़ और पुडुचेरी में कोई भी अनुसूचित जनजाति अधिसूचित नहीं है।
  - कथन 2 सत्य है: 2011 की जनगणना के अनुसार, 'भील' भारत का सबसे बड़ा जनजातीय समूह है (लगभग 1.70 करोड़), जिसके बाद गोंड दूसरे स्थान पर आते हैं।
  - कथन 3 सत्य है: उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक ST जनसंख्या और सर्वाधिक ST प्रतिशत दोनों ही **सोनभद्र** जिले में पाए जाते हैं।
  - कथन 4 असत्य है: भारत में कुल 75 PVTGs हैं, जिनमें सर्वाधिक संख्या (13 समूह) **ओडिशा** राज्य में अधिसूचित हैं, न कि मध्य प्रदेश में।

टॉपिक - 5: भारत का परिवहन तंत्र — राष्ट्रीय राजमार्ग एवं रेल नेटवर्क

परिवहन तंत्र किसी भी राष्ट्र की आर्थिक संरचना की जीवन-रेखा (Lifeline) होता है। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के 15 वर्षों के प्रश्न-पत्रों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि आयोग **राष्ट्रीय राजमार्गों की नई संख्या प्रणाली (New Numbering Scheme), प्रमुख एक्सप्रेसवे, स्वर्ण चतुर्भुज/उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम गलियारे, रेलवे जोन एवं उनके मुख्यालय, तथा रेलवे आधुनिकीकरण (DEDC/WDFC)** पर नियमित रूप से प्रश्न पूछता है।

1. सड़क परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग (National Highways)

भारत विश्व के दूसरे सबसे बड़े सड़क नेटवर्क (लगभग 63 लाख किमी से अधिक) वाले देशों में शामिल है, जिसमें राष्ट्रीय राजमार्ग (NH) कुल सड़क नेटवर्क का लगभग 2% हैं, परंतु कुल सड़क यातायात का 40% से अधिक भार वहन करते हैं।

- **राजमार्गों की तार्किक संख्या प्रणाली (Ministry of MoRTH):**
    - **उत्तर से दक्षिण दिशा** में जाने वाले सभी राष्ट्रीय राजमार्गों को **सम संख्या (Even Numbers)** दी गई है। (उत्तर से दक्षिण क्रम में संख्या पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ती है)।
    - **पूर्व से पश्चिम दिशा** में जाने वाले सभी राष्ट्रीय राजमार्गों को **विषम संख्या (Odd Numbers)** दी गई है। (क्रम में संख्या उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ती है)।
- **प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग:**
    - **NH-44:** भारत का **सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग** (लगभग 3,745 किमी); यह **श्रीनगर (J&K) से कन्याकुमारी (तमिलनाडु)** तक जाता है। (यह उत्तर-दक्षिण गलियारे का मुख्य आधार है)।
    - **NH-27: पोरबंदर (गुजरात) से सिलचर (असम)** तक विस्तृत (लगभग 4,112 किमी); यह भारत का दूसरा सबसे लंबा NH तथा **पूर्व-पश्चिम गलियारा** है।
    - **NH-48:** दिल्ली → जयपुर → अहमदाबाद → मुंबई → बेंगलुरु → चेन्नई।
    - **NH-19:** दिल्ली से कोलकाता (पुराने NH-2 का मुख्य भाग; जीटी रोड सरेखण)।
    - **NH-548 / NH-118:** भारत के सबसे छोटे राष्ट्रीय राजमार्गों में गिने जाते हैं (लंबाई ~5 किमी)।
- **प्रमुख गलियारे एवं प्रतिच्छेदन:**
    - **उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम गलियारे (NS-EW Corridors)** उत्तर प्रदेश के **झांसी** में एक-दूसरे को प्रतिच्छेद (Intersect) करते हैं (UPPCS का सर्वाधिक पूछा गया तथ्य)।
    - **स्वर्णिम चतुर्भुज (Golden Quadrilateral):** कुल लंबाई 5,846 किमी; चार महानगरों (दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता) को 4/6 लेन से जोड़ता है।

2. भारतीय रेल नेटवर्क (Indian Railways)

भारतीय रेल एशिया का दूसरा तथा विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है।

- **रेलवे ज़ोन और मुख्यालय (18 ज़ोन):**
    - **उत्तर रेलवे:** नई दिल्ली | **पूर्वोत्तर रेलवे (NER): गोरखपुर** (उत्तर प्रदेश)
    - **उत्तर मध्य रेलवे (NCR): प्रयागराज** (उत्तर प्रदेश) | **पूर्व रेलवे:** कोलकाता
    - **पूर्व मध्य रेलवे (ECR):** हाजीपुर (बिहार) | **दक्षिण मध्य रेलवे:** सिकंदराबाद
    - **पश्चिम मध्य रेलवे:** जबलपुर | **दक्षिण तटीय रेलवे (18वाँ ज़ोन):** विशाखापत्तनम
- **समर्पित माल ढुलाई गलियारे (Dedicated Freight Corridors - DFC):**
    - **पूर्वी समर्पित माल ढुलाई गलियारा (EDFC):** लुधियाना (पंजाब) से दानकुनी (पश्चिम बंगाल) तक (~1,875 किमी); इसका संचालन केंद्र प्रयागराज में स्थित है।
    - **पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा (WDFC):** दादरी (उत्तर प्रदेश) से जवाहरलाल नेहरू पोर्ट (JNPT - नवी मुंबई) तक (~1,506 किमी)।

©IASHINDIMEDIUM

- **जंक्शन:** दादरी और खुर्जा (उत्तर प्रदेश) में दोनों गलियारे आपस में जुड़ते हैं।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **'कवच 4.0' (Kavach) का तीव्र राष्ट्रीय परिनियोजन:** भारतीय रेलवे द्वारा स्वदेशी स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (ATP) प्रणाली 'कवच 4.0' को दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा/कोलकाता उच्च-घनत्व रेल मार्गों पर पूर्ण रूप से चालू किया गया, जिसे अनुसंधान डिजाइन एवं मानक संगठन (RDSO, लखनऊ) द्वारा प्रमाणित किया गया है।
- **उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे नेटवर्क व मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी:** गंगा एक्सप्रेसवे (मेरठ से प्रयागराज - 594 किमी) के निर्माण के साथ उत्तर प्रदेश देश में सर्वाधिक एक्सप्रेसवे नेटवर्क वाला राज्य बना। इसके साथ ही वाराणसी में भारत के पहले शहरी पब्लिक ट्रांसपोर्ट रोपवे नेटवर्क का वाणिज्यिक संचालन शुरू किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्रीय राजमार्गों और परिवहन गलियारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या प्रणाली के अनुसार, उत्तर से दक्षिण दिशा में जाने वाले राजमार्गों को सम संख्याएँ (Even Numbers) आवंटित की जाती हैं।
2. भारत का 'उत्तर-दक्षिण गलियारा' और 'पूर्व-पश्चिम गलियारा' उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर में एक-दूसरे को काटते हैं।
3. NH-44 भारत का सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग है, जो श्रीनगर को कन्याकुमारी से जोड़ता है।
4. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना भारत के चार प्रमुख महानगरों—दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 3 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: MoRTH की संशोधित प्रणाली के अनुसार, उत्तर-दक्षिण दिशा वाले सभी राजमार्गों को सम संख्या (जैसे NH-44) तथा पूर्व-पश्चिम दिशा वाले राजमार्गों को विषम संख्या (जैसे NH-27) दी जाती है।
    - कथन 2 असत्य है: उत्तर-दक्षिण (श्रीनगर से कन्याकुमारी) और पूर्व-पश्चिम (पोरबंदर से सिलचर) गलियारे उत्तर प्रदेश के **झांसी** जिले में एक-दूसरे को प्रतिच्छेद करते हैं, न कि कानपुर में।
    - कथन 3 सत्य है: NH-44 (पुराने NH-7, NH-1A आदि को मिलाकर) लगभग 3,745 किमी की लंबाई के साथ भारत का सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग है।
    - कथन 4 सत्य है: स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना (5,846 किमी) दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को उच्च गति 4/6 लेन राजमार्गों से जोड़ती है।

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (रेलवे ज़ोन)	**सूची-II (मुख्यालय)**
a. पूर्वोत्तर रेलवे (NER)	1. प्रयागराज
b. उत्तर मध्य रेलवे (NCR)	2. हाजीपुर
c. पूर्व मध्य रेलवे (ECR)	3. गोरखपुर
d. पश्चिम मध्य रेलवे (WCR)	4. जबलपुर

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **पूर्वोत्तर रेलवे (North Eastern Railway):** इसका मुख्यालय **गोरखपुर** (उत्तर प्रदेश) में स्थित है।
    - **उत्तर मध्य रेलवे (North Central Railway):** इसका मुख्यालय **प्रयागराज** (उत्तर प्रदेश) में स्थित है।
    - **पूर्व मध्य रेलवे (East Central Railway):** इसका मुख्यालय **हाजीपुर** (बिहार) में स्थित है।
    - **पश्चिम मध्य रेलवे (West Central Railway):** इसका मुख्यालय **जबलपुर** (मध्य प्रदेश) में स्थित है।

सामान्य विज्ञान (भौतिकी , रसायन , जीव विज्ञान)

©IASHINDIMEDIUM

जीव विज्ञान वनस्पति एवं मानव शरीर

टॉपिक - 1: कोशिका संरचना, अंगक और कार्य (Cell Structure, Organelles and Functions)

कोशिका सभी जीवित जीवों की मूलभूत संरचनात्मक एवं क्रियात्मक इकाई है। 1665 में **रॉबर्ट हुक** ने कॉर्क के पतले टुकड़े में मृत कोशिका की खोज की, जबकि **एंटन वॉन ल्यूवेनहॉक** ने 1674 में सर्वप्रथम जीवित कोशिका (बैक्टीरिया, प्रोटोजोआ) को देखा। 1838-39 में **श्लीडेन तथा श्वान** ने 'कोशिका सिद्धांत' (Cell Theory) प्रतिपादित किया, जिसमें **रुडोल्फ विरचो** (1855) ने *"ओम्निस सेल्युला-ए-सेल्युला"* (नई कोशिकाओं का निर्माण पूर्ववर्ती कोशिकाओं से होता है) जोड़कर इसे पूर्ण किया।

1. कोशिका के प्रमुख घटक एवं कोशिकांग (Cell Organelles)

- **कोशिका भित्ति (Cell Wall):** केवल पादप कोशिकाओं, कवकों एवं कुछ जीवाणुओं में उपस्थित। पादपों में यह **सेल्युलोज एवं हेमीसेल्युलोज** की बनी होती है, जबकि कवकों में **काइटिन** की। यह पूर्णतः पारगम्य (Permeable) होती है तथा यांत्रिक दृढ़ता प्रदान करती है।
- **प्लाज्मा झिल्ली (Plasma Membrane):** लिपिड (फॉस्फोलिपिड) और प्रोटीन की बनी अर्ध-पारगम्य/चयनात्मक पारगम्य (Selectively Permeable) झिल्ली। सिंगर और निकोलसन (1972) का **फ्लुइड मोज़ेक मॉडल** इसके लिए सर्वमान्य है।
- **माइटोकॉन्ड्रिया (Mitochondria):** खोजकर्ता: रिचर्ड ऑल्टमैन (बायोप्लास्ट नाम दिया); 'माइटोकॉन्ड्रिया' नाम **कार्ल बेंडा** ने दिया।
    - यह दोहरी झिल्ली युक्त अंगक है। इसकी आंतरिक झिल्ली में उभार होते हैं जिन्हें **क्रिस्टी (Cristae)** कहते हैं।
    - यहाँ क्रेब्स चक्र (Krebs Cycle) संपन्न होता है तथा एरोबिक श्वसन द्वारा ऊर्जा **ATP (एडेनोसिन ट्राइफॉस्फेट)** के रूप में संचित होती है; अतः इसे **'कोशिका का पावरहाउस'** कहते हैं।
    - इसमें अपना स्वयं का वृत्ताकार डीएनए (Circular DNA) और 70S राइबोसोम होता है (अर्ध-स्वायत्त अंगक)।
- **प्लास्टिड / लवक (Plastids):** केवल पादप कोशिकाओं में उपस्थित।
    - **हरितलवक (Chloroplast):** प्रकाश संश्लेषण का स्थल; इसे 'कोशिका की रसोई' कहते हैं। इसमें भी स्वयं का DNA व राइबोसोम होता है।
    - **वर्णीलवक (Chromoplast):** फलों व फूलों को रंग प्रदान करता है (उदा. टमाटर का लाल रंग - लाइकोपीन, गाजर - कैरोटीन)।
    - **अवर्णीलवक (Leucoplast):** रंगहीन; स्टार्च (एमाइलोप्लास्ट), तेल (एलियोप्लास्ट) तथा प्रोटीन (एल्यूरोप्लास्ट) का संचयन।
- **राइबोसोम (Ribosome):** खोजकर्ता: **जॉर्ज पैलाडे**। यह झिल्ली-रहित अंगक है जो RNA और प्रोटीन से मिलकर बनता है। इसे **'प्रोटीन की फैक्ट्री'** कहा जाता है। प्रोकैरियोट्स में 70S तथा यूकैरियोट्स में 80S प्रकार के राइबोसोम पाए जाते हैं।
- **लाइसोसोम (Lysosome):** खोजकर्ता: **क्रिश्चियन डी डुवे**। इसमें अम्लीय माध्यम में सक्रिय रहने वाले पाचक एंजाइम (हाइड्रोलाइटिक एंजाइम) भरे होते हैं। क्षतिग्रस्त कोशिका को नष्ट करने की क्षमता के कारण इसे **'आत्मघाती थैली' (Suicidal Bag)** कहते हैं।
- **गॉल्जी काय (Golgi Apparatus):** खोजकर्ता: **कैमिलो गॉल्जी**। यह स्रावण, पैकेजिंग और ग्लाइकोप्रोटीन/ग्लाइकोलिपिड निर्माण का केंद्र है; इसे 'कोशिका का ट्रैफिक पुलिस' भी कहा जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

- **एंडोप्लाज्मिक रेटिकुलम (ER):**
    - खुरदरी ER (RER): सतह पर राइबोसोम उपस्थित; प्रोटीन संश्लेषण में सहायक।
    - चिकनी ER (SER): लिपिड, स्टेरॉयड तथा विषैले पदार्थों के विषहरण (Detoxification) का स्थल।
- **केंद्रक (Nucleus):** खोजकर्ता: **रॉबर्ट ब्राउन** (1831)। इसे 'कोशिका का नियंत्रण कक्ष' (Brain/Director of Cell) कहा जाता है। इसमें क्रोमेटिन (DNA + हिस्टोन प्रोटीन) और केंद्रिका (Nucleolus) होती है।

2. पादप एवं जंतु कोशिका में मुख्य अंतर

लक्षण	पादप कोशिका (Plant Cell)	जंतु कोशिका (Animal Cell)
कोशिका भित्ति	उपस्थित (सेल्युलोज निर्मित)	अनुपस्थित
लवक (Plastid)	उपस्थित	अनुपस्थित
तारककाय (Centrosome)	सामान्यतः अनुपस्थित	उपस्थित (कोशिका विभाजन में सहायक)
रिक्तिका (Vacuole)	एक, बड़ी एवं केंद्रीय	छोटी अथवा अनुपस्थित

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए उत्परिवर्तन एवं जीनोम एडिटिंग:** 2025-2026 में वैज्ञानिकों ने दुर्लभ आनुवंशिक माइटोकॉन्ड्रियल रोगों को रोकने हेतु माइटोकॉन्ड्रियल रिप्लेसमेंट थेरेपी (MRT / Three-Parent Baby तकनीक) और माइटोकॉन्ड्रिया-लक्षित बेस एडिटिंग (DdCBE तकनीक) में महत्वपूर्ण नैदानिक सफलताएँ दर्ज कीं।
- **ऑटोफैगी (Autophagy) एवं लाइसोसोमल पाथवे अध्ययन:** आयु-संबंधी न्यूरोडीजेनेरेटिव विकारों (जैसे अल्जाइमर और पार्किंसन) में लाइसोसोमल एंजाइम कार्यप्रणाली के क्षरण को उलटने और कोशिकीय विषाक्त अपशिष्टों के पुनर्चक्रण हेतु नए मॉलिक्यूलर स्विच की खोज की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (कोशिकांग)	सूची-II (उपनाम / कार्य)
a. माइटोकॉन्ड्रिया	1. प्रोटीन की फैक्ट्री
b. लाइसोसोम	2. कोशिका का नियंत्रण केंद्र
c. राइबोसोम	3. आत्मघाती थैली (Suicidal Bag)

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (कोशिकांग)	सूची-II (उपनाम / कार्य)
d. केंद्रक	4. कोशिका का पावरहाउस

कूट:

(A) a-4, b-3, c-1, d-2

(B) a-4, b-1, c-3, d-2

(C) a-3, b-4, c-1, d-2

(D) a-2, b-3, c-1, d-4

उत्तर: (A) a-4, b-3, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **माइटोकॉन्ड्रिया:** ऑक्सीडेटिव फॉस्फोराइलेशन द्वारा ATP के रूप में ऊर्जा उत्पादन के कारण 'कोशिका का पावरहाउस' कहलाता है।
    - **लाइसोसोम:** जल-अपघटकीय पाचक एंजाइमों की उपस्थिति के कारण क्षतिग्रस्त कोशिकाओं का पाचन करने हेतु 'आत्मघाती थैली' कहलाता है।
    - **राइबोसोम:** अमीनो अम्लों से प्रोटीन के निर्माण का मुख्य स्थल होने के कारण 'प्रोटीन की फैक्ट्री' कहलाता है।
    - **केंद्रक:** आनुवंशिक सूचना (DNA) के नियमन एवं समस्त कोशिकीय उपापचयी क्रियाओं के संचालन हेतु 'कोशिका का नियंत्रण केंद्र' कहलाता है।

प्रश्न 2. कोशिका संरचना एवं कार्यप्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. माइटोकॉन्ड्रिया एवं क्लोरोप्लास्ट (हरितलवक) दोनों में स्वयं का डीएनए (DNA) तथा 70S राइबोसोम पाया जाता है।
2. पादप कोशिका की कोशिका भित्ति सेल्युलोज की बनी एक चयनात्मक पारगम्य (Selectively Permeable) झिल्ली होती है।
3. चिकनी अंतःप्रद्रव्यी जालिका (Smooth Endoplasmic Reticulum) लिपिड एवं स्टेरॉयड संश्लेषण के लिए उत्तरदायी है।
4. जंतु कोशिकाओं में सामान्यतः तारककाय (Centrosome) अनुपस्थित होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 3

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: माइटोकॉन्ड्रिया और क्लोरोप्लास्ट अर्ध-स्वायत्त कोशिकांग हैं, जिनमें अपना वृत्ताकार डीएनए और 70S राइबोसोम उपस्थित होता है, जिससे वे अपने कुछ प्रोटीन स्वयं बना सकते हैं।
    - कथन 2 असत्य है: पादप कोशिका भित्ति पूर्णतः पारगम्य (Permeable) होती है; चयनात्मक पारगम्य (Selectively Permeable) गुण **प्लाज्मा झिल्ली (कोशिका झिल्ली)** में पाया जाता है।
    - कथन 3 सत्य है: चिकनी अंतःप्रद्रव्यी जालिका (SER) की सतह पर राइबोसोम नहीं होते और यह मुख्य रूप से वसा/लिपिड संश्लेषण तथा यकृत कोशिकाओं में दवाओं के विषहरण में भाग लेती है।
    - कथन 4 असत्य है: तारककाय (Centrosome) जंतु कोशिकाओं का विशिष्ट लक्षण है, जो कोशिका विभाजन के दौरान स्पिंडल फाइबर निर्माण में मदद करता है; यह उच्च पादप कोशिकाओं में अनुपस्थित होता है।

टॉपिक - 2: पादप ऊतक और जंतु ऊतक (Plant and Animal Tissues)

ऊतक (Tissue) समान उत्पत्ति, संरचना और विशिष्ट कार्य करने वाली कोशिकाओं का समूह है। इसका अध्ययन **औतिकी (Histology)** कहलाता है।

1. पादप ऊतक (Plant Tissues)

पादप ऊतकों को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जाता है:

- **विभज्योतक ऊतक (Meristematic Tissue):** निरंतर विभाजनशील कोशिकाएं।
    - **शीर्षस्थ विभज्योतक (Apical Meristem):** जड़ और तने के शीर्ष पर; प्राथमिक वृद्धि (लंबाई में वृद्धि) हेतु उत्तरदायी।
    - **पार्श्वीय विभज्योतक (Lateral Meristem):** संवहन कैम्बियम (Vascular Cambium) एवं कॉर्क कैम्बियम; द्वितीयक वृद्धि (मोटाई/तने के घेरे) हेतु उत्तरदायी।
    - **अंतर्विष्ट विभज्योतक (Intercalary Meristem):** पर्वसंधियों (Nodes) के पास (जैसे घास); शाकाहारी जीवों द्वारा चरने के बाद पुनः वृद्धि कराता है।
- **स्थायी ऊतक (Permanent Tissue):** विभेदन (Differentiation) के बाद विभाजन क्षमता खो चुकी कोशिकाएं।
    - **सरल स्थायी ऊतक:**
        - **मृदूतक (Parenchyma):** पतली सेल्युलोज भित्ति युक्त जीवित कोशिकाएं। कार्य: खाद्य संचयन। जलीय पौधों में वायु अवकाश युक्त मृदूतक को **ऐरेन्काइमा (Aerenchyma)** (उत्प्लावकता हेतु) तथा क्लोरोफिल युक्त को **क्लोरेन्काइमा** कहते हैं।
        - **स्थूलकोण ऊतक (Collenchyma):** कोनों पर पेक्टिन एवं सेल्युलोज के जमाव के कारण जीवित लचीला ऊतक। पौधों (डंठल/पत्तियों) को बिना टूटे लचीलापन व यांत्रिक सहारा देता है।
        - **दृढ़ोतक (Sclerenchyma): लिग्निन (Lignin)** के अत्यधिक निक्षेपण से युक्त **मृत कोशिकाएं**। नारियल का छिलका (Coir) और बीज/अखरोट के कठोर आवरण इसी के बने होते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- **जटिल स्थायी ऊतक (संवहन ऊतक):**
    - **जाइलम (Xylem):** जल एवं घुले खनिजों का **एकदिशीय (नीचे से ऊपर)** संवहन। घटक: वाहिनिकाएं (Tracheids), वाहिकाएं (Vessels), जाइलम तंतु (मृत) तथा जाइलम पैरेन्काइमा (एकमात्र जीवित घटक)।
    - **फ्लोएम (Phloem):** प्रकाश-संश्लेषित भोजन (सुक्रोज) का **द्विदिशीय (पत्तियों से अन्य भागों तक)** संवहन। घटक: चालनी नलिकाएं (Sieve Tubes), सहकोशिकाएं (Companion Cells), फ्लोएम पैरेन्काइमा (जीवित) तथा फ्लोएम तंतु (मृत/बास्ट फाइबर)।

2. जंतु ऊतक (Animal Tissues)

जंतु ऊतक चार प्राथमिक प्रकार के होते हैं:

- **उपकला ऊतक (Epithelial Tissue):** अंगों का बाह्य आवरण और आंतरिक अस्तर। सुरक्षा, अवशोषण व स्राव का कार्य (उदा. त्वचा, आंतों का अस्तर, रक्त वाहिकाओं की आंतरिक परत/एंडोथीलियम)।
- **संयोजी ऊतक (Connective Tissue):** शरीर के विभिन्न अंगों को सहारा व जुड़ाव प्रदान करता है।
    - **रक्त एवं लसिका:** तरल संयोजी ऊतक (Fluid Matrix)।
    - **अस्थि (Bone):** कठोर संयोजी ऊतक (कैल्शियम व फॉस्फोरस युक्त ओसीन प्रोटीन)।
    - **उपास्थि (Cartilage):** लचीला ऊतक (कॉन्ड्रिन प्रोटीन); कान की नली (Pinna) और नाक के सिरे पर।
    - **कंडरा (Tendon): मांसपेशी को अस्थि से** जोड़ता है (श्वेत कोलेजन तंतु युक्त, कम लचीला)।
    - **स्नायु (Ligament): अस्थि को अस्थि से** जोड़ता है (पीले इलास्टिन तंतु युक्त, अत्यधिक लचीला)।
    - **वसीय ऊतक (Adipose Tissue):** त्वचा के नीचे वसा का संचयन और ऊष्मा-रोधन (Thermal Insulator)।
- **पेशी ऊतक (Muscular Tissue):** गति एवं संकुचन।
    - **कंकाल/रेखित पेशी (Striated):** ऐच्छिक (Voluntary), बहुकेंद्रकीय।
    - **चिकनी/अरेखित पेशी (Smooth):** अनैच्छिक (Involuntary), आंतों व रक्त वाहिकाओं की दीवार में।
    - **हृदय पेशी (Cardiac):** केवल हृदय भित्ति में; शाखित, अनैच्छिक, लयबद्ध संकुचन।
- **तंत्रिका ऊतक (Nervous Tissue):** संवेदी आवेगों का संचरण; न्यूरॉन (Neuron) इसकी संरचनात्मक व कार्यात्मक इकाई है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **फ्लोएम न्यूट्रिएंट गेटवे ऊतक की खोज:** नागोया विश्वविद्यालय के वनस्पति वैज्ञानिकों द्वारा आवृतबीजी पौधों (Angiosperms) में 160 वर्षों के अंतराल के बाद बीज निर्माण के दौरान पोषक तत्वों के प्रवाह को नियंत्रित करने वाले एक नए पादप ऊतक (Phloem End Gate) की पहचान की गई, जो फसल उत्पादन बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ है।
- **जाइलम सेलेक्टिव फ्लोरोसेंट प्रोब विकास:** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) गांधीनगर और रीजनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी (RCB) के शोधकर्ताओं ने पादप ऊतकों में जाइलम की सूक्ष्म आणविक संरचना और जल-संवहन नेटवर्क की लाइव-इमेजिंग के लिए 'पिरिडिनियम-आधारित फ्लोरोसेंट रासायनिक प्रोब' विकसित किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (ऊतक / संरचना)	**सूची-II (प्राथमिक कार्य / संयोजन)**
a. कंडरा (Tendon)	1. अस्थि को अस्थि से जोड़ना
b. स्नायु (Ligament)	2. मांसपेशी को अस्थि से जोड़ना
c. स्थूलकोण ऊतक (Collenchyma)	3. पौधों के तने की मोटाई (द्वितीयक वृद्धि)
d. पार्श्वीय विभज्योतक (Lateral Meristem)	4. पौधों को लचीलापन एवं यांत्रिक सहारा प्रदान करना

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-1, b-2, c-4, d-3

(C) a-2, b-1, c-3, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कंडरा (Tendon):** यह सघन श्वेत कोलेजन रेशेदार संयोजी ऊतक है, जो कंकाल की मांसपेशी को अस्थि (हड्डी) से जोड़ता है।
    - **स्नायु (Ligament):** यह अत्यधिक लचीला पीला इलास्टिन युक्त संयोजी ऊतक है, जो एक अस्थि को दूसरी अस्थि से जोड़कर जोड़ों को स्थिरता प्रदान करता है।
    - **स्थूलकोण ऊतक (Collenchyma):** यह जीवित पादप ऊतक है जो तरुण तनों और पत्ती के डंठल में लचीलापन लाता है, जिससे वे बिना टूटे मुड़ सकते हैं।
    - **पार्श्वीय विभज्योतक (Lateral Meristem):** संवहन कैम्बियम और कॉर्क कैम्बियम इसके उदाहरण हैं, जो पादप के तने एवं जड़ के घेरे (व्यास) में द्वितीयक वृद्धि के लिए जिम्मेदार होते हैं।

प्रश्न 2. पादप एवं जंतु ऊतकों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नारियल का छिलका (हस्क) दृढ़ोतक (Sclerenchyma) ऊतक से निर्मित होता है, जिसकी कोशिका भित्ति पर लिग्निन का जमाव होता है।
2. जाइलम में जल एवं खनिज लवणों का संवहन द्विदिशीय होता है, जबकि फ्लोएम में भोजन का परिवहन केवल एकदिशीय होता है।
3. रुधिर (Blood) एवं उपास्थि (Cartilage) दोनों विशिष्ट प्रकार के संयोजी ऊतक के उदाहरण हैं।

©IASHINDIMEDIUM

4. जलीय पौधों में उत्पलावकता (Buoyancy) प्रदान करने वाले वायु-युक्त ऊतक को एरेन्काइमा (Aerenchyma) कहा जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 3 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: नारियल का बाहरी छिलका स्क्लेरेन्काइमा (दृढ़ोतक) तंतुओं का बना होता है, जो लिग्निन के कारण अत्यधिक कठोर और मृत होता है।
    - कथन 2 असत्य है: जाइलम में जल एवं खनिजों का प्रवाह जड़ों से पत्तियों की ओर **केवल एकदिशीय (Unidirectional)** होता है, जबकि फ्लोएम में पत्तियों द्वारा निर्मित पोषक तत्वों (कार्बनिक भोज्य पदार्थों) का संवहन आवश्यकतानुसार ऊपर और नीचे **द्विदिशीय (Bidirectional/Multidirectional)** होता है।
    - कथन 3 सत्य है: रक्त एक तरल संयोजी ऊतक है तथा उपास्थि एक लचीला कंकाली संयोजी ऊतक है।
    - कथन 4 सत्य है: हाइड्रोफाइट्स (जलोद्भिद) में मृदूतक (Parenchyma) की कोशिकाओं के मध्य बड़े वायु-कोष्ठ पाए जाते हैं, जिन्हें एरेन्काइमा कहते हैं; यह पौधों को तैरने में मदद करता है।

टॉपिक - 3: प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया (Mechanism of Photosynthesis)

प्रकाश संश्लेषण एक जैव-रासायनिक (उपचयी/Anabolic तथा ऊष्माशोषी/Endergonic) प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हरे पौधे सूर्य के प्रकाश तथा पर्णहरिम (क्लोरोफिल) की उपस्थिति में कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) और जल (H_2O) का उपयोग करके कार्बोहाइड्रेट (ग्लूकोज) का निर्माण करते हैं तथा उप-उत्पाद के रूप में ऑक्सीजन (O_2) मुक्त करते हैं।

यह मूलतः एक **रेडॉक्स (Redox) अभिक्रिया** है, जिसमें **जल (H_2O) का ऑक्सीकरण होकर ऑक्सीजन बनती है** तथा **कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) का अपचयन (Reduction) होकर ग्लूकोज बनता है**।

$$6CO_2 + 12H_2O \xrightarrow[\text{क्लोरोफिल}]{\text{सूर्य का प्रकाश}} C_6H_{12}O_6 + 6H_2O + 6O_2 \uparrow$$

1. प्रकाश संश्लेषण के प्रमुख घटक एवं वर्णक

- **हरितलवक (Chloroplast):** यह प्रकाश संश्लेषण का मुख्य केंद्र है। इसकी दो मुख्य संरचनाएं होती हैं—
    - **ग्रेना (Grana / थाइलेकोइड्स):** यहाँ **प्रकाशिक अभिक्रिया (Light Reaction)** संपन्न होती है।
    - **स्ट्रोमा (Stroma):** यह रंगहीन तरल मैट्रिक्स है, जहाँ **अप्रकाशिक अभिक्रिया (Dark Reaction)** संपन्न होती है।
- **प्रकाश संश्लेषी वर्णक (Pigments):**

- **क्लोरोफिल 'a' (Chlorophyll a):** प्राथमिक वर्णक (नीला-हरा); मुख्य अभिक्रिया केंद्र। इसके केंद्र में **मैग्नीशियम (Mg)** धातु उपस्थित होती है।
- **सहायक वर्णक:** क्लोरोफिल 'b' (पीला-हरा), कैरोटीनॉयड (नारंगी), ज़ैंथोफिल (पीला)।

- **प्रकाश स्पेक्ट्रम:** प्रकाश संश्लेषण की दर **लाल प्रकाश (Red light)** में सर्वाधिक, **नीले प्रकाश** में द्वितीयक, तथा **हरे प्रकाश (Green light)** में न्यूनतम/शून्य होती है (क्योंकि हरा प्रकाश परावर्तित हो जाता है)।

2. प्रकाश संश्लेषण के दो मुख्य चरण

1. **प्रकाशिक अभिक्रिया (Light / Hill Reaction):**
   - **स्थल:** हरितलवक का **ग्रेना (थाइलेकोइड झिल्ली)**।
   - **प्रमुख घटनाएं:**
     - सौर ऊर्जा का अवशोषण।
     - **जल का प्रकाश-अपघटन (Photolysis of Water):** $2H_2O \rightarrow 4H^+ + 4e^- + O_2$। (प्रयोगों से सिद्ध है कि निकलने वाली संपूर्ण O_2 जल से आती है, न कि CO_2 से)।
     - ऊर्जा-युक्त यौगिकों का निर्माण: **ATP** एवं $NADPH_2$ का संश्लेषण (फोटोफॉस्फोराइलेशन)।
2. **अप्रकाशिक अभिक्रिया (Dark / Blackman's Reaction):**
   - **स्थल:** हरितलवक का **स्ट्रोमा (Stroma)**। इसे प्रकाश की प्रत्यक्ष आवश्यकता नहीं होती।
   - **प्रमुख घटनाएं:**
     - CO_2 का स्थिरीकरण (Fixation) तथा अपचयन होकर शर्करा/ग्लूकोज का निर्माण।
     - **RuBisCO (राइबुलोज बिसफॉस्फेट कार्बोक्सिलेज-ऑक्सीजिनेज):** विश्व में सर्वाधिक मात्रा में पाया जाने वाला एंजाइम, जो C_3 चक्र (केल्विन चक्र) में CO_2 स्थिरीकरण को उत्प्रेरित करता है।
   - **पादप श्रेणियाँ:**
     - C_3 **पौधे:** प्रथम स्थायी उत्पाद 3-फॉस्फोग्लिसरिक अम्ल (3-PGA) (उदा. गेहूँ, चावल, जौ)।
     - C_4 **पौधे:** प्रथम उत्पाद 4-कार्बन वाला ऑक्सालोएसिटिक अम्ल (OAA)। इनमें 'क्रैन्ज शारीरिकी' (Kranz Anatomy) पाई जाती है तथा प्रकाश-श्वसन (Photorespiration) अनुपस्थित होता है (उदा. मक्का, गन्ना, ज्वार)।
     - **CAM पौधे:** मरुद्भिदी पौधे (उदा. कैक्टस, अनानास); इनके रंध्र (Stomata) केवल रात्रि में खुलते हैं।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण एवं सौर ईंधन उत्पादन:** वैज्ञानिकों द्वारा अर्द्धचालक नैनोवायर और जैव-उत्प्रेरकों को संयोजित करके कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण (Artificial Photosynthesis) प्रणाली विकसित की गई, जिसकी सौर-से-रासायनिक ऊर्जा रूपांतरण

©IASHINDIMEDIUM

दक्षता प्राकृतिक पौधों की तुलना में तीन गुना अधिक दर्ज की गई। यह प्रणाली वायुमंडलीय CO_2 को सीधे फॉर्मिक एसिड और नवीकरणीय मीथेन में परिवर्तित करती है।

- **जलवायु-सहिष्णु उन्नत RuBisCO एंजाइम:** कृषि जैव प्रौद्योगिकीविदों ने जेनेटिक इंजीनियरिंग के माध्यम से C_3 फसलों (विशेष रूप से धान) में C_4-प्रकार के अधिक कुशल RuBisCO एंजाइम को अभिव्यक्त करने में सफलता प्राप्त की, जिससे उच्च तापमान पर पौधों में प्रकाश-श्वसन से होने वाली ऊर्जा हानि को 30% तक कम किया जा सका।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रकाश संश्लेषण के दौरान मुक्त होने वाली ऑक्सीजन गैस (O_2) कार्बन डाइऑक्साइड के अपघटन से प्राप्त होती है।
2. प्रकाशिक अभिक्रिया (Light reaction) क्लोरोप्लास्ट के स्ट्रोमा में तथा अप्रकाशिक अभिक्रिया (Dark reaction) ग्रेना में संपन्न होती है।
3. क्लोरोफिल के केंद्र में मैग्नीशियम (Mg) धातु का एक परमाणु उपस्थित होता है।
4. लाल प्रकाश में प्रकाश संश्लेषण की दर सबसे अधिक होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 3 और 4

(D) 1, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: प्रकाश संश्लेषण में निकलने वाली ऑक्सीजन (O_2) **जल (H_2O) के प्रकाशिक अपघटन (Photolysis)** से निकलती है, न कि कार्बन डाइऑक्साइड से। (रॉबर्ट हिल तथा रूबेन-कामेन के आइसोटोप अध्ययनों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है)।
    - कथन 2 असत्य है: प्रकाशिक अभिक्रिया हरितलवक के **ग्रेना (थाइलेकोइड)** में संपन्न होती है, जबकि अप्रकाशिक अभिक्रिया (केल्विन चक्र) **स्ट्रोमा** में संपन्न होती है।
    - कथन 3 सत्य है: क्लोरोफिल की पोरफायरिन वलय संरचना के केंद्र में एक मैग्नीशियम (Mg) आयन आबंधित होता है।
    - कथन 4 सत्य है: दृश्य प्रकाश स्पेक्ट्रम में लाल रंग की तरंगदैर्घ्य पर प्रकाश संश्लेषण की दर सर्वाधिक तथा नीले रंग पर द्वितीयक होती है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (पादप प्रकार / प्रक्रिया)	सूची-II (विशिष्ट लक्षण / उदाहरण)
a. C_3 पादप	1. मक्का, गन्ना (क्रैन्ज शारीरिकी युक्त)
b. C_4 पादप	2. रात्रि में रंध्रों का खुलना (Scotoactive Stomata)
c. CAM पादप	3. प्रथम स्थायी उत्पाद 3-फॉस्फोग्लिसरिक अम्ल (गेहूँ, चावल)
d. RuBisCO	4. सर्वाधिक प्रचुरता में पाया जाने वाला एंजाइम

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - C_3 **पादप:** केल्विन चक्र के अंतर्गत पहला स्थायी उत्पाद 3-फॉस्फोग्लिसरिक अम्ल (3-PGA) बनता है (उदा. गेहूँ, धान)।
    - C_4 **पादप:** मक्का, गन्ना, ज्वार में विशिष्ट क्रैन्ज शारीरिकी (Kranz Anatomy) पाई जाती है, जो उच्च तापमान पर जल संरक्षण और CO_2 की उच्च दक्षता सुनिश्चित करती है।
    - **CAM पादप:** मरुस्थलीय पौधे (जैसे कैक्टस, ब्रायोफिलम) जिनमें वाष्पोत्सर्जन रोकने हेतु दिन में रंध्र बंद रहते हैं तथा रात्रि में खुलते हैं।
    - **RuBisCO:** पृथ्वी पर जैवमंडल में पाया जाने वाला सबसे प्रचुर प्रोटीन/एंजाइम है, जो कार्बन स्थिरीकरण को उत्प्रेरित करता है।

टॉपिक - 4: पादप श्वसन और वाष्पोत्सर्जन (Plant Respiration and Transpiration)

पादपों में श्वसन एक अपचयी (Catabolic) एवं ऊष्माक्षेपी (Exergonic) जैव-रासायनिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से जटिल कार्बनिक यौगिकों (जैसे ग्लूकोज) के ऑक्सीकरण द्वारा रासायनिक ऊर्जा (ATP) मुक्त होती है। वहीं, वाष्पोत्सर्जन पादप के वायवीय भागों (मुख्यतः पत्तियों) द्वारा जल का वाष्प के रूप में निष्कासन है।

1. पादप श्वसन की क्रियाविधि (Plant Respiration)

©IASHINDIMEDIUM

पादपों में जंतुओं की भांति कोई विशिष्ट श्वसन तंत्र नहीं होता; गैसीय विनिमय विसरण (Diffusion) द्वारा रंध्रों (Stomata) एवं वातरंध्रों (Lenticels) से होता है। कोशिकीय श्वसन तीन प्रमुख चरणों में पूर्ण होता है:

1. **ग्लाइकोलिसिस (Glycolysis / EMP Pathway):**
    - **स्थल:** कोशिकाद्रव्य (Cytoplasm)। यह वायवीय (Aerobic) और अवायवीय (Anaerobic) दोनों प्रकार के श्वसन में समान रूप से होता है।
    - **प्रक्रिया:** ग्लूकोज (6-कार्बन) का आंशिक ऑक्सीकरण होकर **पाइरुविक अम्ल (3-कार्बन)** के दो अणु बनते हैं। इसमें ऑक्सीजन की आवश्यकता नहीं होती।
    - **शुद्ध लाभ:** 2 अणु ATP और 2 अणु $NADH_2$।
2. **क्रेब्स चक्र (Krebs Cycle / TCA Cycle):**
    - **स्थल: माइटोकॉन्ड्रिया की मैट्रिक्स** (केवल ऑक्सीजन की उपस्थिति में)।
    - **प्रक्रिया:** पाइरुविक अम्ल एसिटाइल Co-A में बदलकर क्रेब्स चक्र में प्रवेश करता है। अंततः CO_2, H_2O तथा प्रचुर मात्रा में अपचायक ऊर्जा ($NADH_2$, $FADH_2$) उत्पन्न होती है।
3. **इलेक्ट्रॉन परिवहन तंत्र (ETS) एवं ऑक्सीडेटिव फॉस्फोराइलेशन:**
    - **स्थल: माइटोकॉन्ड्रिया की आंतरिक झिल्ली (Cristae)**। यहाँ $NADH_2$ और $FADH_2$ से ATP का निर्माण होता है। ऑक्सीजन अंतिम इलेक्ट्रॉन/हाइड्रोजन ग्राही के रूप में कार्य करती है।

- **श्वसन गुणांक (Respiratory Quotient - RQ):**

$$\text{RQ} = \frac{\text{विमुक्त } CO_2 \text{ का आयतन}}{\text{अवशोषित } O_2 \text{ का आयतन}}$$

    - कार्बोहाइड्रेट हेतु: $\text{RQ} = 1$
    - वसा (जैसे ट्राइपामिटिन) हेतु: $\text{RQ} < 1$ (लगभग 0.7)
    - कार्बनिक अम्ल (जैसे मैलिक अम्ल) हेतु: $\text{RQ} > 1$ (लगभग 1.33)
    - अवायवीय श्वसन हेतु: $\text{RQ} = \infty$ (अनंत, क्योंकि O_2 अवशोषित नहीं होती)।

2. वाष्पोत्सर्जन (Transpiration) एवं रंध्रों की गति

पौधों द्वारा अवशोषित कुल जल का लगभग 98% से अधिक भाग वाष्पोत्सर्जन द्वारा उत्सर्जित हो जाता है। कर्टिस (Curtis) ने इसे **'एक आवश्यक बुराई' (A Necessary Evil)** कहा था।

- **वाष्पोत्सर्जन के प्रकार:**
    - **रंध्रीय (Stomatal):** पत्तियों के रंध्रों द्वारा ($80 - 90\%$ जल हानि)।
    - **उपत्वचीय (Cuticular):** पत्तियों की मोमी क्यूटिकल परत से ($5 - 10\%$)।

©IASHINDIMEDIUM

- **वातरंध्रीय (Lenticular):** काष्ठीय तनों के वातरंध्रों द्वारा (~1%)।

- **रंध्रों के खुलने और बंद होने की क्रियाविधि:**
  - रंध्रों को घेरने वाली **द्वार कोशिकाएं (Guard Cells)** वृक्काकार (द्विबीजपत्री) या डंबलाकार (एकबीजपत्री/घासों) होती हैं।
  - **लेविट (Levitt) का K^+ आयन पंप सिद्धांत:** दिन के समय K^+ आयनों का द्वार कोशिकाओं में सक्रिय अंतःप्रवाह होता है, जिससे उनकी स्फीति (Turgidity) बढ़ती है और रंध्र खुल जाते हैं। रात्रि में K^+ के बहिर्वाह से कोशिकाएं श्लथ (Flaccid) होकर बंद हो जाती हैं।
  - **एब्सिसिक अम्ल (ABA):** सूखा या जल-तनाव की स्थिति में पादप हार्मोन ABA द्वार कोशिकाओं से K^+ आयनों को बाहर निकालता है, जिससे रंध्र बंद हो जाते हैं (अतः ABA को 'एंटी-ट्रांसपिरेंट' या 'स्ट्रेस हार्मोन' कहा जाता है)।

- **वाष्पोत्सर्जन खिंचाव (Transpiration Pull):** डिक्सन एवं जॉली का 'ससंजन-तनाव सिद्धांत' (Cohesion-Tension Theory) स्पष्ट करता है कि जल के अणुओं के आपसी ससंजन (Cohesion) और आसंजन (Adhesion) बलों तथा पत्तियों में वाष्पोत्सर्जन खिंचाव के कारण जाइलम वाहिकाओं द्वारा जल 100 मीटर से भी अधिक ऊँचाई तक चढ़ जाता है।

- **बिंदुस्राव (Guttation):** अधिक आर्द्रता और कम वाष्पोत्सर्जन वाली रात्रियों/सुबह में पत्तियों के किनारों पर स्थित **जल-रंध्रों (Hydathodes)** द्वारा बूंदों के रूप में तरल जल का निष्कासन; यह **मूल दाब (Root Pressure)** के कारण होता है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **सिंथेटिक ABA-रिसेप्टर एगोनिस्ट और सूखा सहिष्णुता:** शोधकर्ताओं ने एक नवीन सिंथेटिक अणु (iCB/ABA-mimic यौगिक) विकसित किया, जो पादप वृद्धि को बाधित किए बिना जल संकट की स्थिति में द्वार कोशिकाओं को संकेत भेजकर रंध्रों के आंशिक संकुचन को प्रेरित करता है। इससे फसलों में प्रकाश संश्लेषण की गति बनाए रखते हुए वाष्पोत्सर्जन द्वारा होने वाली जल हानि में 35% तक की कमी दर्ज की गई।

- **स्टोमेटा डेंसिटी जीन एडिटिंग:** जलवायु परिवर्तन के अनुकूल कम जल खपत वाली धान व गेहूँ की किस्मों के विकास हेतु रंध्र घनत्व (Stomatal Density) और रंध्र गतिशीलता को नियंत्रित करने वाले 'EPF' (एपिडर्मल पैटरनिंग फैक्टर) जीन अनुक्रमों की सटीक मैपिंग की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पादप श्वसन एवं वाष्पोत्सर्जन की कार्यप्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ग्लाइकोलिसिस की प्रक्रिया कोशिका के माइटोकॉन्ड्रिया में संपन्न होती है, जिसमें ऑक्सीजन की उपस्थिति अनिवार्य है।
2. वसा के श्वसन के दौरान श्वसन गुणांक (RQ) का मान सदैव 1 से कम होता है।
3. द्वार कोशिकाओं (Guard cells) में पोटेशियम आयनों (K^+) के प्रवेश से स्फीति दाब बढ़ता है और रंध्र खुल जाते हैं।
4. बिंदुस्राव (Guttation) की परिघटना मुख्य रूप से उच्च वाष्पोत्सर्जन और निम्न मूल दाब की स्थिति में देखी जाती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: ग्लाइकोलिसिस (EMP पाथवे) कोशिका के **कोशिकाद्रव्य (Cytoplasm)** में संपन्न होता है, न कि माइटोकॉन्ड्रिया में। इसके लिए ऑक्सीजन अनिवार्य नहीं होती; यह वायवीय व अवायवीय दोनों जीवों में सामान्य चरण है।
    - कथन 2 सत्य है: कार्बोहाइड्रेट का RQ मान 1 होता है, जबकि वसा (जैसे ट्राइपामिटिन) के ऑक्सीकरण में अधिक O_2 की खपत होती है और कम CO_2 विमुक्त होती है, जिससे इसका RQ मान 1 से कम (लगभग 0.7) होता है।
    - कथन 3 सत्य है: लेविट के सिद्धांत के अनुसार, प्रकाश की उपस्थिति में द्वार कोशिकाओं में K^+ और मैलेट आयनों के संचय से अंतःपरासरण होता है, जिससे द्वार कोशिकाएं फूल जाती हैं और रंध्रीय छिद्र खुल जाते हैं।
    - कथन 4 असत्य है: बिंदुस्राव (Guttation) रात या सुबह के समय तब होता है जब वायुमंडलीय आर्द्रता अधिक होने से वाष्पोत्सर्जन न्यूनतम होता है, परंतु **उच्च मूल दाब (High Root Pressure)** के कारण पत्तियों के जल-रंध्रों (Hydathodes) से जल बूंदों के रूप में बाहर निकलता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (प्रक्रिया / अवधारणा)	**सूची-II (संबंधित स्थल / वैज्ञानिक सिद्धांत)**
a. क्रेब्स चक्र (TCA Cycle)	1. ससंजन-तनाव सिद्धांत (डिक्सन एवं जॉली)
b. रंध्रों की गतिशीलता	2. सक्रिय K^+ परिवहन सिद्धांत (लेविट)
c. रसरोहण (Ascent of Sap)	3. जल-रंध्र (Hydathodes) एवं मूल दाब
d. बिंदुस्राव (Guttation)	4. माइटोकॉन्ड्रियल मैट्रिक्स

कूट:

(A) a-4, b-2, c-1, d-3

(B) a-4, b-1, c-2, d-3

(C) a-2, b-4, c-1, d-3

(D) a-3, b-2, c-4, d-1

उत्तर: (A) a-4, b-2, c-1, d-3

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **क्रेब्स चक्र:** पाइरुविक अम्ल का पूर्ण ऑक्सीकरण **माइटोकॉन्ड्रिया की मैट्रिक्स** में क्रेब्स चक्र द्वारा संपन्न होता है।
    - **रंध्रों की गतिशीलता:** रंध्रों के खुलने और बंद होने का आधुनिक सर्वमान्य सिद्धांत लेविट का **सक्रिय K^+ परिवहन सिद्धांत** है।
    - **रसरोहण:** जाइलम वाहिकाओं द्वारा जल के ऊर्ध्वाधर प्रवाह का सबसे मान्य सिद्धांत **डिक्सन एवं जॉली का ससंजन-तनाव एवं वाष्पोत्सर्जन खिंचाव सिद्धांत** है।
    - **बिंदुस्राव:** शाकीय पौधों में पत्तियों के उपांतों पर पाए जाने वाले **जल-रंध्रों (Hydathodes)** से तरल जल का रिसाव मूल दाब द्वारा संचालित होता है।

टॉपिक - 5: पादप हॉर्मोन (Plant Hormones / Phytohormones)

पादप हॉर्मोन जटिल कार्बनिक यौगिक होते हैं, जो पौधों के विशिष्ट भागों में अति सूक्ष्म मात्रा में संश्लेषित होकर वृद्धि, विभेदन एवं पर्यावरणीय अनुक्रियाओं का रासायनिक नियमन करते हैं। NCERT वर्गीकरण के अनुसार इन्हें दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जाता है: **पादप वृद्धि प्रवर्धक** तथा **पादप वृद्धि रोधक**।

1. पादप वृद्धि प्रवर्धक (Plant Growth Promoters)

- **ऑक्सिन (Auxin):**
    - **खोज:** चार्ल्स डार्विन एवं फ्रांसिस डार्विन द्वारा कैनरी घास के प्रांकुर-चोल (Coleoptile) पर अध्ययन; एफ. डब्ल्यू. वेंट ने जई (Oat) के अंकुर से इसे पृथक किया।
    - **प्रमुख रूप:** प्राकृतिक ऑक्सिन में इंडोल-3-एसिटिक एसिड (IAA) तथा इंडोल ब्यूटिरिक एसिड (IBA); संश्लेषित (Synthetic) ऑक्सिन में NAA और 2,4-D शामिल हैं।
    - **शारीरिक कार्य:**
        - **शीर्षस्थ प्रभाविता (Apical Dominance):** तने के शीर्ष पर स्थित कलिका पार्श्वीय कलिकाओं की वृद्धि को रोकती है।
        - **अनिषेकफलन (Parthenocarpy):** परागण व निषेचन के बिना बीज-रहित फल (जैसे टमाटर) के निर्माण को प्रेरित करना।
        - **खरपतवार नियंत्रण:** 2,4-D का उपयोग चौड़ी पत्ती वाले (द्विबीजपत्री) खरपतवारों को नष्ट करने में किया जाता है।
- **जिबरेलिन (Gibberellin):**
    - **खोज:** ई. कुरोसावा (1926) द्वारा धान के 'बकाने' रोग (मूर्ख पौध रोग) के अध्ययन के दौरान; यह कवक *Gibberella fujikuroi* से प्राप्त किया गया।
    - **शारीरिक कार्य:**

©IASHINDIMEDIUM

- **बोल्टिंग (Bolting):** रोजेट स्वभाव वाले पौधों (जैसे पत्तागोभी, चुकंदर) में पुष्पन से पूर्व पर्वों (Internodes) की लंबाई में तीव्र वृद्धि करना।
- गन्ने के तने की लंबाई बढ़ाकर प्रति एकड़ उपज में वृद्धि।
- बीजों एवं कलिकाओं की प्रसुप्ति (Dormancy) तोड़कर अंकुरण को प्रेरित करना।

- **साइटोकाइनिन (Cytokinin):**
  - **खोज:** एफ. स्कूग एवं मिलर ने यीस्ट डीएनए से 'काइनेटिन' खोजा; पादप से प्राकृतिक रूप से लेथम ने मक्के के दानों से 'जिएटिन' (Zeatin) पृथक किया।
  - **शारीरिक कार्य:**
    - मुख्य रूप से **कोशिका विभाजन (Cytokinesis)** को तीव्र करना।
    - शीर्षस्थ प्रभाविता को निष्प्रभावी कर पार्श्व शाखाओं के विकास को बढ़ावा देना।
    - **रिचमंड-लैंग प्रभाव:** पर्णहरिम के विघटन को रोककर पत्तियों की जरावस्था (Senescence) को टालना।

2. पादप वृद्धि रोधक (Plant Growth Inhibitors)

- **एब्सिसिक अम्ल (Abscisic Acid - ABA):**
  - **विशेषता:** इसे **'तनाव हॉर्मोन' (Stress Hormone)** कहा जाता है।
  - **शारीरिक कार्य:**
    - जल संकट या सूखे की स्थिति में रंध्रों (Stomata) को बंद करना (वाष्पोत्सर्जन रोधी प्रभाव)।
    - बीजों में प्रसुप्ति बनाए रखकर प्रतिकूल मौसम में अनपेक्षित अंकुरण को रोकना।
    - पत्तियों, फूलों एवं फलों के विलगन (Abscission) को प्रेरित करना।
- **एथिलीन (Ethylene):**
  - **विशेषता:** यह गैसीय अवस्था में पाया जाने वाला एकमात्र प्राकृतिक पादप हॉर्मोन है (खोजकर्ता: कजिन्स)।
  - **शारीरिक कार्य:**
    - **फलों को प्राकृतिक रूप से पकाना** (क्लाइमेक्टेरिक श्वसन दर को बढ़ाना)।
    - कृषि में फलों को कृत्रिम रूप से पकाने हेतु इसके जलीय स्रोत **एथेफॉन (Ethephon)** का उपयोग किया जाता है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **स्ट्रिगोलैक्टोन्स (Strigolactones) एवं फास्फोरस ग्रहण क्षमता पर शोध:** भारतीय शोधकर्ताओं ने पादप हॉर्मोन स्ट्रिगोलैक्टोन्स के सिग्नलिंग पाथवे के नियमन द्वारा दलहनी फसलों में माइकोराइजा कवक सहजीवन को सुदृढ़ कर मृदा से फास्फोरस अवशोषण में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की।

©IASHINDIMEDIUM

- **सिंथेटिक ऑक्सिन (2,4-D) के उपयोग पर नए पर्यावरणीय मानक:** केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवं पंजीकरण समिति द्वारा द्विबीजपत्री खरपतवारों के नियंत्रण हेतु प्रयुक्त होने वाले 2,4-D योगों के बहाव (Spray Drift) को रोकने और गैर-लक्षित फसलों की सुरक्षा हेतु अद्यतन सुरक्षा दिशा-निर्देश जारी किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पादप हॉर्मोन)	**सूची-II (प्रमुख कार्य / संबंधित परिघटना)**
a. ऑक्सिन (Auxin)	1. बोल्टिंग प्रभाव एवं गन्ने के तने का बढ़ाव
b. जिबरेलिन (Gibberellin)	2. फलों का प्राकृतिक रूप से पकना
c. एथिलीन (Ethylene)	3. शीर्षस्थ प्रभाविता (Apical Dominance)
d. एब्सिसिक अम्ल (ABA)	4. रंध्रों का बंद होना एवं तनाव अनुक्रिया

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-4, b-1, c-2, d-3

(D) a-1, b-3, c-4, d-2

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **ऑक्सिन:** शीर्षस्थ कलिका की वृद्धि को बढ़ाता है और पार्श्व कलिकाओं के विकास का दमन करता है, जिसे शीर्षस्थ प्रभाविता कहते हैं।
    - **जिबरेलिन:** पौधों के पर्वों की लंबाई बढ़ाता है और पुष्पन से पूर्व तने के आकस्मिक बढ़ाव (बोल्टिंग) को प्रेरित करता है।
    - **एथिलीन:** यह गैसीय पादप वृद्धि नियंत्रक है, जो फलों के पकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
    - **एब्सिसिक अम्ल (ABA):** जल की कमी होने पर रंध्रों को बंद करके वाष्पोत्सर्जन घटाता है, अतः इसे तनाव हॉर्मोन कहा जाता है।

प्रश्न 2. पादप वृद्धि नियामकों (Plant Growth Regulators) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 2,4-D एक कृत्रिम ऑक्सिन है, जिसका उपयोग द्विबीजपत्री खरपतवारों को नष्ट करने में किया जाता है।
2. जिबरेलिन की खोज कवक *Gibberella fujikuroi* से जुड़े धान के 'बकाने' रोग के अनुसंधान के दौरान हुई थी।

©IASHINDIMEDIUM

3. साइटोकाइनिन पत्तियों में पर्णहरिम के विघटन को तीव्र कर पौधों में समय से पूर्व जरावस्था (Senescence) लाता है।

4. एथेफॉन एक ऐसा रासायनिक यौगिक है जो जलीय विलयन में पौधों द्वारा अवशोषित होकर धीरे-धीरे एथिलीन मुक्त करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सही है: 2,4-D (2,4-डाइक्लोरोफेनॉक्सीएसिटिक एसिड) एक सिंथेटिक ऑक्सिन है, जो एकबीजपत्री फसलों (जैसे गेहूँ) को क्षति पहुँचाए बिना चौड़ी पत्ती वाले द्विबीजपत्री खरपतवारों को समाप्त करता है।
    - कथन 2 सही है: जापानी वैज्ञानिक ई. कुरोसावा ने धान के 'बकाने' (मूर्ख पौध) रोग के कारक कवक से जिबरेलिन की पहचान की थी।
    - कथन 3 गलत है: साइटोकाइनिन जरावस्था को **टालता (विलंबित करता) है** (रिचमंड-लैंग प्रभाव); यह क्लोरोफिल के विघटन को धीमा करता है, तीव्र नहीं।
    - कथन 4 सही है: एथेफॉन कृषि में व्यापक रूप से प्रयुक्त जलीय यौगिक है, जो पादप ऊतकों में पहुंचकर विघटित होता है और एथिलीन गैस मुक्त करके फलों को पकाता है।

IAS HINDI MEDIUM

भौतिक विज्ञान

टॉपिक - 1: गति के नियम, बल, संवेग और आवेग

सर आइजैक न्यूटन ने 1687 में अपनी पुस्तक *'फिलोसोफिया नेचुरेलिस प्रिंसिपिया मैथेमेटिका'* में गति के तीन मूलभूत नियमों का प्रतिपादन किया। ये नियम चिरसम्मत यांत्रिकी (Classical Mechanics) की आधारशिला हैं।

1. न्यूटन के गति के नियम (Newton's Laws of Motion)

- **प्रथम नियम (जड़त्व का नियम / गैलीलियो का नियम):**
    - प्रत्येक वस्तु अपनी विरामावस्था अथवा एकसमान सरल रेखीय गति की अवस्था को तब तक बनाए रखती है, जब तक कि उस पर कोई बाह्य असंतुलित बल न लगाया जाए।
    - **जड़त्व (Inertia):** किसी वस्तु की अपनी गति की अवस्था में परिवर्तन का विरोध करने की प्रवृत्ति। **द्रव्यमान (Mass) जड़त्व की माप है** (अधिक द्रव्यमान = अधिक जड़त्व)।
    - *उदाहरण:* बस के अचानक चलने पर यात्रियों का पीछे झुकना (विराम का जड़त्व); चलती गाड़ी के अचानक रुकने पर आगे झुकना (गति का जड़त्व); कंबल को डंडे से पीटने पर धूल कणों का झड़ना।
    - **महत्व:** यह नियम **बल की गुणात्मक परिभाषा (Qualitative Definition)** देता है।
- **द्वितीय नियम (संवेग परिवर्तन का नियम):**
    - किसी वस्तु के संवेग परिवर्तन की दर उस पर आरोपित असंतुलित बाह्य बल के समानुपाती होती है तथा यह परिवर्तन बल की दिशा में होता है।
    - गणितीय रूप:

$$F = \frac{dp}{dt} = m \cdot a$$

(जहाँ F = बल, m = द्रव्यमान, a = त्वरण)।

    - **बल का SI मात्रक:** न्यूटन (N या $\text{kg} \cdot \text{m/s}^2$); CGS मात्रक: डाइन ($1\ \text{N} = 10^5$ dynes)।
    - **महत्व:** यह नियम **बल का व्यंजक (मात्रात्मक मान / Quantitative Measure)** प्रदान करता है।
- **तृतीय नियम (क्रिया-प्रतिक्रिया का नियम):**
    - प्रत्येक क्रिया के बराबर एवं विपरीत दिशा में प्रतिक्रिया होती है। क्रिया और प्रतिक्रिया बल सदैव दो भिन्न वस्तुओं पर एक साथ कार्य करते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- *उदाहरण:* रॉकेट नोदन (Rocket Propulsion), बंदूक से गोली चलने पर पीछे की ओर धक्का लगना, नाव से कूदते समय नाव का पीछे हटना।

2. संवेग, आवेग एवं संरक्षण का सिद्धांत

- **संवेग (Linear Momentum - p):**
  - द्रव्यमान और वेग का गुणनफल ($p = m \cdot v$)। यह एक **सदिश राशि (Vector Quantity)** है।
  - SI मात्रक: kg · m/s या N · s।
- **संवेग संरक्षण का नियम (Law of Conservation of Linear Momentum):**
  - यदि किसी निकाय पर कोई बाह्य बल न लगाया जाए ($F_{\text{ext}} = 0$), तो उस निकाय का कुल रेखीय संवेग नियत (संरक्षित) रहता है। रॉकेट का प्रक्षेपण तथा बंदूकों का प्रतिक्षेप (Recoil) इसी सिद्धांत पर आधारित है।
- **आवेग (Impulse - J):**
  - जब कोई बड़ा बल किसी वस्तु पर अत्यंत सूक्ष्म समयांतराल (Δt) के लिए कार्य करता है, तो बल और समयांतराल के गुणनफल को आवेग कहते हैं।
  - सूत्र:

$$J = F \cdot \Delta t = \Delta p$$

(संवेग-आवेग प्रमेय: आवेग = संवेग में परिवर्तन)।

  - यह भी एक सदिश राशि है। मात्रक: N · s या kg · m/s।
  - *व्यावहारिक अनुप्रयोग:* क्रिकेट खिलाड़ी द्वारा गेंद पकड़ते समय हाथ पीछे खींचना (Δt बढ़ाकर आरोपित बल F को कम करना); वाहनों में शॉक-एब्जॉर्बर का प्रयोग।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **इसरो का पुन:प्रयोज्य प्रक्षेपण यान (RLV-LEX) एवं संवेग नियंत्रण:** भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा RLV-LEX लैंडिंग प्रयोगों के अंतर्गत टर्मिनल डिसेंट चरण में वायुमंडलीय घर्षण, उल्टे थ्रस्ट और संवेग संरक्षण के सटीक प्रणोदन नियंत्रण का सफल उड़ान परीक्षण किया गया।
- **क्रैश सेफ्टी नॉर्म्स और व्हीकल इंपल्स कुशनिंग (Bharat NCAP):** सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा भारत NCAP के अंतर्गत वाहनों के क्रैश टेस्ट में इम्पैक्ट-टाइम (Δt) को बढ़ाने वाले उन्नत क्रंपल ज़ोन (Crumple Zones) और स्मार्ट एयरबैग सेंसर के लिए कड़े सुरक्षा मानक अनिवार्य किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. न्यूटन के गति के नियमों और उनकी भौतिक संकल्पनाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. न्यूटन का प्रथम गति नियम बल की गुणात्मक परिभाषा प्रस्तुत करता है, जबकि द्वितीय नियम बल का परिमाण (सूत्र) निर्धारित करता है।

©IASHINDIMEDIUM

2. किसी वस्तु का संवेग केवल उसके वेग पर निर्भर करता है, उसके द्रव्यमान पर नहीं।
3. क्रिकेट का खिलाड़ी तेजी से आती हुई गेंद को लपकते समय अपने हाथ पीछे की ओर खींचता है ताकि संवेग परिवर्तन की समयावधि बढ़कर हाथ पर लगने वाला बल कम हो जाए।
4. रॉकेट का नोदन मुख्य रूप से न्यूटन के तृतीय गति नियम और रेखीय संवेग संरक्षण के सिद्धांत पर आधारित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 3 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: प्रथम नियम बल की परिभाषा (अवस्था परिवर्तन हेतु उत्तरदायी बाह्य कारक) देता है, जबकि द्वितीय नियम से गणितीय सूत्र $F = ma$ प्राप्त होता है।
  - कथन 2 असत्य है: संवेग ($p = mv$) द्रव्यमान और वेग दोनों का गुणनफल है, अतः यह दोनों पर सीधे निर्भर करता है।
  - कथन 3 सत्य है: आवेग सूत्र ($F \cdot \Delta t = \Delta p$) के अनुसार, समय ($\Delta t$) बढ़ने से गेंद को रोकने हेतु आवश्यक बल (F) का मान घट जाता है, जिससे हाथों पर चोट नहीं लगती।
  - कथन 4 सत्य है: रॉकेट से तीव्र वेग से गैसें पीछे की ओर निष्कासित होती हैं (क्रिया), जो रॉकेट पर आगे की दिशा में विपरीत बल (प्रतिक्रिया) लगाती हैं, और संपूर्ण निकाय का कुल संवेग संरक्षित रहता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (भौतिक घटना)	**सूची-II (संबंधित वैज्ञानिक सिद्धांत)**
a. कंबल को डंडे से पीटने पर धूल कणों का अलग होना	1. रेखीय संवेग संरक्षण
b. बंदूक से गोली दागने पर पीछे की ओर धक्का लगना	2. विराम का जड़त्व
c. मोटर गाड़ियों में स्प्रिंग/शॉक-एब्जॉर्बर का प्रयोग	3. गति का जड़त्व
d. चलती बस से अचानक उतरने पर यात्री का आगे गिरना	4. आवेगी बल को न्यूनतम करना

कूट:

©IASHINDIMEDIUM

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-1, b-2, c-3, d-4

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **कंबल से धूल का अलग होना:** डंडे की चोट से कंबल गति में आ जाता है, जबकि धूल के कण विराम के जड़त्व (Inertia of Rest) के कारण अपने स्थान पर स्थिर रहने का प्रयास करते हैं और अलग हो जाते हैं।
    - **बंदूक का प्रतिक्षेप (Recoil):** गोली आगे जाने पर संवेग संरक्षण और तृतीय नियम के कारण बंदूक विपरीत दिशा में झटका देती है।
    - **शॉक-एब्जॉर्बर:** झटकों के समय संपर्क काल (Δt) को बढ़ाकर वाहनों के यात्रियों पर लगने वाले आवेगी बल को कम करता है।
    - **चलती बस से उतरना:** यात्री के पैर जमीन छूते ही स्थिर हो जाते हैं, किंतु शरीर का ऊपरी भाग गति के जड़त्व (Inertia of Motion) के कारण आगे बढ़ता रहता है।

टॉपिक - 2: कार्य, ऊर्जा एवं शक्ति (Work, Energy and Power)

भौतिकी में कार्य, ऊर्जा और शक्ति यांत्रिकी के आधारभूत घटक हैं। किसी वस्तु पर बल लगाकर उसकी स्थिति में परिवर्तन करना कार्य कहलाता है, कार्य करने की क्षमता को ऊर्जा तथा कार्य करने की दर को शक्ति कहते हैं।

1. कार्य (Work - W)

- **परिभाषा एवं सूत्र:** जब किसी वस्तु पर कोई बल आरोपित होता है और वस्तु बल की दिशा में विस्थापित होती है, तो बल तथा विस्थापन के अदिश गुणनफल (Dot Product) को कार्य कहते हैं।

$$W = \vec{F} \cdot \vec{s} = F \cdot s \cdot \cos\theta$$

(जहाँ θ बल एवं विस्थापन के मध्य का कोण है)।

- **प्रकृति एवं मात्रक:** कार्य एक **अदिश राशि (Scalar Quantity)** है।
    - SI मात्रक: **जूल (Joule)** या N · m ($1\ \text{J} = 10^7\ \text{erg}$)।
- **विशेष स्थितियाँ:**
    - **धनात्मक कार्य ($\theta < 90°$):** जब विस्थापन बल की दिशा में हो (जैसे गुरुत्वीय खिंचाव के अधीन नीचे गिरती वस्तु)।

©IASHINDIMEDIUM

- **ऋणात्मक कार्य ($90^\circ < \theta \leq 180^\circ$):** जब विस्थापन बल की विपरीत दिशा में हो (जैसे घर्षण बल द्वारा किया गया कार्य, $\theta = 180^\circ$)।
- **शून्य कार्य ($\theta = 90^\circ$ या $s = 0$):**
  - यदि कोई कुली सिर पर बोझ उठाकर क्षैतिज प्लेटफॉर्म पर चलता है, तो ऊर्ध्वाधर गुरुत्वाकर्षण बल के विरुद्ध किया गया कार्य **शून्य** होता है ($\cos 90^\circ = 0$)।
  - वृत्तीय गति में **अभिकेंद्रीय बल (Centripetal Force)** द्वारा किया गया कार्य सदैव शून्य होता है।

2. ऊर्जा (Energy)

ऊर्जा एक **अदिश राशि** है। इसका SI मात्रक **जूल** है।

- **गतिज ऊर्जा (Kinetic Energy - K):** किसी वस्तु की गति के कारण निहित ऊर्जा।

$$K = \frac{1}{2}mv^2 = \frac{p^2}{2m}$$

(जहाँ p = रेखीय संवेग, m = द्रव्यमान)। यदि संवेग दोगुना किया जाए, तो गतिज ऊर्जा चार गुनी हो जाती है।

- **स्थितिर्ज ऊर्जा (Potential Energy - U):** वस्तु की स्थिति या विन्यास के कारण संचित ऊर्जा।
  - गुरुत्वीय स्थितिज ऊर्जा: $U = mgh$
  - स्प्रिंग की प्रत्यास्थ स्थितिज ऊर्जा: $U = \frac{1}{2}kx^2$ (जहाँ k = स्प्रिंग नियतांक)।
- **कार्य-ऊर्जा प्रमेय (Work-Energy Theorem):** किसी वस्तु पर सभी बलों द्वारा किया गया कुल कार्य उसकी गतिज ऊर्जा में परिवर्तन के बराबर होता है ($W = \Delta K = K_f - K_i$)।
- **ऊर्जा संरक्षण का नियम:** ऊर्जा न तो उत्पन्न की जा सकती है और न ही नष्ट; यह केवल एक रूप से दूसरे रूप में रूपांतरित होती है।

3. शक्ति (Power - P)

- **परिभाषा एवं सूत्र:** कार्य करने की समय दर अथवा ऊर्जा रूपांतरण की दर।

$$P = \frac{W}{t} = \vec{F} \cdot \vec{v}$$

- **मात्रक:** यह एक **अदिश राशि** है।
  - SI मात्रक: **वाट (Watt - W)** (1 W $= 1$ J/s)।
  - व्यावहारिक/औद्योगिक मात्रक: **अश्वशक्ति (Horsepower - hp)** (1 hp $= 746$ W)।
  - ऊर्जा का व्यावसायिक मात्रक: **किलोवाट-घंटा (kWh / 1 यूनिट)** (1 kWh $= 3.6 \times 10^6$ J)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

©IASHINDIMEDIUM

- **पम्प्ड-स्टोरेज हाइड्रोपावर (PSP) का राष्ट्रीय विस्तार:** भारत के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) द्वारा अतिरिक्त सौर व पवन ऊर्जा को ग्रिड-स्केल गुरुत्वीय स्थितिज ऊर्जा (mgh) के रूप में संचित करने हेतु सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) तथा मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में बड़े ऑफ-रिवर पम्प्ड स्टोरेज संयंत्रों के संचालन को तीव्र गति से आगे बढ़ाया गया।
- **काइनेटिक एनर्जी रिकवरी सिस्टम (KERS) एवं रीजनरेटिव ब्रेकिंग:** भारतीय रेलवे ने वंदे भारत और नई मालगाड़ियों में रीजनरेटिव ब्रेकिंग तकनीक का 100% एकीकरण पूरा किया, जिसमें ब्रेकिंग के दौरान पहियों की गतिज ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित कर ओवरहेड लाइनों (OHE) में पुनः भेजा जाता है।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भौतिकी में 'कार्य' की संकल्पना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जब कोई व्यक्ति अपने सिर पर 20 किग्रा का बोझ रखकर समतल सड़क पर 50 मीटर चलता है, तो गुरुत्वाकर्षण बल के विरुद्ध किया गया कार्य शून्य होता है।
2. वृत्ताकार पथ पर एकसमान चाल से गतिमान किसी उपग्रह पर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण (अभिकेंद्रीय) बल द्वारा किया गया कार्य शून्य होता है।
3. किसी गतिशील वस्तु के संवेग को दोगुना करने पर उसकी गतिज ऊर्जा में चार गुनी वृद्धि हो जाती है।
4. घर्षण बल द्वारा किसी गतिमान वस्तु पर किया गया कार्य सदैव धनात्मक होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: गुरुत्वाकर्षण बल ऊर्ध्वाधर नीचे की ओर कार्य करता है जबकि विस्थापन क्षैतिज दिशा में होता है ($\theta = 90°$)। सूत्र $W = F \cdot s \cdot \cos 90° = 0$ के अनुसार गुरुत्वीय बल के विरुद्ध किया गया कार्य शून्य है।
  - कथन 2 सत्य है: वृत्ताकार मार्ग पर अभिकेंद्रीय बल सदैव त्रिज्या के अनुदिश केंद्र की ओर होता है और विस्थापन स्पर्शरेखीय ($\theta = 90°$) होता है, जिससे प्रति चक्र किया गया कार्य शून्य होता है।
  - कथन 3 सत्य है: गतिज ऊर्जा और संवेग का संबंध $K = \frac{p^2}{2m}$ है। यदि संवेग (p) को $2p$ कर दिया जाए, तो नई गतिज ऊर्जा $K' = \frac{(2p)^2}{2m} = 4K$ हो जाएगी (चार गुनी)।
  - कथन 4 असत्य है: घर्षण बल सदैव विस्थापन की विपरीत दिशा में कार्य करता है ($\theta = 180°$); चूंकि $\cos 180° = -1$, अतः घर्षण बल द्वारा किया गया कार्य सदैव **ऋणात्मक** होता है।

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (भौतिक मात्रक / राशि)	**सूची-II (समतुल्य मान / प्रकृति)**
a. 1 अश्वशक्ति (Horsepower)	1. 3.6×10^6 J
b. 1 किलोवाट-घंटा (kWh)	2. 746 वाट
c. 1 जूल (Joule)	3. $\vec{F} \cdot \vec{v}$ (अदिश राशि)
d. शक्ति (Power)	4. 10^7 erg

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-1, b-2, c-4, d-3

(D) a-3, b-1, c-2, d-4

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **1 अश्वशक्ति (hp):** यह शक्ति का पारंपरिक ब्रिटिश मात्रक है, जो 746 W के बराबर होता है।
    - **1 किलोवाट-घंटा (kWh):** यह विद्युत ऊर्जा का व्यावसायिक मात्रक है, जिसका मान $1{,}000$ W $\times$ $3{,}600$ s $= 3.6 \times 10^6$ J होता है।
    - **1 जूल:** SI प्रणाली में ऊर्जा/कार्य का मात्रक है; CGS प्रणाली में 1 J $= 10^7$ erg होता है।
    - **शक्ति (Power):** बल तथा वेग के अदिश गुणनफल ($P = \vec{F} \cdot \vec{v}$) द्वारा भी व्यक्त की जाती है और यह एक अदिश राशि है।

टॉपिक - 3: गुरुत्वाकर्षण और उपग्रहों की गति (Gravitation and Satellite Motion)

गुरुत्वाकर्षण ब्रह्मांड में द्रव्यमान युक्त किन्हीं दो पिंडों के मध्य लगने वाला आकर्षण बल है। सर आइजैक न्यूटन के **सार्वत्रिक गुरुत्वाकर्षण नियम** के अनुसार, दो पिंडों (m_1 एवं m_2) के बीच आकर्षण बल उनके द्रव्यमानों के गुणनफल के समानुपाती तथा उनके बीच की दूरी (r) के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती होता है:

©IASHINDIMEDIUM

$$F = G\frac{m_1 m_2}{r^2}$$

यहाँ G सार्वत्रिक गुरुत्वीय स्थिरांक है, जिसका मान $6.67 \times 10^{-11}\ \text{N} \cdot \text{m}^2/\text{kg}^2$ होता है (इसकी विमा $[M^{-1}L^3T^{-2}]$ है; हेनरी कैवेंडिश ने इसका मान ज्ञात किया था)।

1. गुरुत्वीय त्वरण (g) और इसके मान में परिवर्तन

पृथ्वी द्वारा किसी वस्तु पर आरोपित गुरुत्वीय बल के कारण उत्पन्न त्वरण को गुरुत्वीय त्वरण कहते हैं:

$$g = \frac{GM}{R^2}$$

(पृथ्वी की सतह पर मानक मान $\approx 9.8\ \text{m/s}^2$)।

- **आकार के कारण परिवर्तन:** पृथ्वी ध्रुवों पर थोड़ी चपटी तथा भूमध्य रेखा पर उभरी हुई है ($R_{\text{ध्रुव}} < R_{\text{विषुवत}}$)। अतः g का मान **ध्रुवों (Poles) पर अधिकतम** तथा **भूमध्य रेखा (Equator) पर न्यूनतम** होता है।
- **ऊँचाई एवं गहराई का प्रभाव:**
  - पृथ्वी की सतह से ऊपर जाने पर ($g' = g\left(1 - \frac{2h}{R}\right)$) तथा गहराई में जाने पर ($g' = g\left(1 - \frac{d}{R}\right)$), दोनों ही स्थितियों में g का मान **घटता है**।
  - **पृथ्वी के केंद्र पर g का मान शून्य होता है**।
- **घूर्णन गति का प्रभाव:** पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूर्णन के कारण $g' = g - R\omega^2 \cos^2\lambda$। यदि पृथ्वी की घूर्णन गति बढ़ जाए, तो भूमध्य रेखा पर g घट जाएगा; यदि घूर्णन रुक जाए, तो ध्रुवों को छोड़कर सर्वत्र g बढ़ जाएगा (ध्रुवों पर घूर्णन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता)।

2. पलायन वेग एवं उपग्रहों की कक्षीय गति

- **पलायन वेग (Escape Velocity - v_e):** वह न्यूनतम वेग जिससे किसी पिंड को ऊर्ध्वाधर या किसी कोण पर प्रक्षेपित करने पर वह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र को पार कर जाए और कभी वापस न लौटे।

$$v_e = \sqrt{\frac{2GM}{R}} = \sqrt{2gR}$$

  - पृथ्वी की सतह पर इसका मान 11.2 km/s है।
  - चंद्रमा पर पलायन वेग (~2.38 km/s) कम होने के कारण गैसों के अणुओं का तापीय वेग पलायन वेग से अधिक हो जाता है, जिससे **चंद्रमा पर वायुमंडल अनुपस्थित है**।
  - पलायन वेग प्रक्षेप्य के द्रव्यमान अथवा प्रक्षेपण कोण पर निर्भर **नहीं** करता।
- **कक्षीय वेग (Orbital Velocity - v_o):** पृथ्वी की सतह के निकट परिक्रमा कर रहे उपग्रह का वेग:

©IASHINDIMEDIUM

$$v_o = \sqrt{gR} \approx 7.92 \text{ km/s}$$

- पलायन वेग और कक्षीय वेग में संबंध: $v_e = \sqrt{2} \cdot v_o \approx 1.414 \cdot v_o$ (यदि कक्षीय चाल 41.4% बढ़ा दी जाए, तो उपग्रह कक्षा छोड़कर पलायन कर जाएगा)।

- **उपग्रहों का वर्गीकरण:**

  - **भू-स्थिर उपग्रह (Geostationary / GEO):** पृथ्वी तल से लगभग $35{,}786$ km (~$36{,}000$ km) की ऊँचाई पर विषुवत रेखीय तल में पश्चिम से पूर्व दिशा में परिक्रमा करते हैं। इनका परिक्रमण काल पृथ्वी के घूर्णन काल के समान 24 घंटे होता है। संपूर्ण पृथ्वी के संचार कवरेज हेतु न्यूनतम 3 भू-स्थिर उपग्रह आवश्यक हैं।

  - **ध्रुवीय उपग्रह (Polar / Sun-synchronous):** उत्तर से दक्षिण ध्रुव की ओर निम्न कक्षा ($500 - 1{,}000$ km) में परिक्रमा करते हैं; परिक्रमण काल ~84 से 100 मिनट होता है; सुदूर संवेदन (Remote Sensing) व मौसम निगरानी हेतु प्रयुक्त।

- **भारहीनता (Weightlessness):** उपग्रह के भीतर प्रत्येक वस्तु मुक्त पतन (Free Fall) की अवस्था में होती है, जिससे उपग्रह की सतह द्वारा वस्तु पर लगाया गया प्रतिक्रिया बल (R) शून्य होता है ($W_{\text{आभासी}} = 0$)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **SpaDeX एवं स्वायत्त कक्षीय डॉकिंग मिशन:** इसरो (ISRO) द्वारा अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग (Space Docking Experiment - SpaDeX) के अंतर्गत दो लघु उपग्रहों (चेज़र और टार्गेट) को निम्न भू-कक्षा (LEO) में एक-दूसरे के निकट लाकर माइक्रोग्रैविटी वातावरण में स्वायत्त डॉकिंग का सफल परीक्षण किया गया, जो आगामी 'भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन' (BAS) एवं चंद्रयान-4 के लिए आधारभूत मील का पत्थर है।

- **NISAR (NASA-ISRO SAR) का कक्षीय परिचालन:** 743 किमी की सूर्य-तुल्यकालिक ध्रुवीय कक्षा (SSPO) में स्थापित दोहरे-आवृत्ति (L एवं S बैंड) रडार उपग्रह NISAR द्वारा पृथ्वी की पपड़ी में विवर्तनिक हलचल, हिमनदों के विस्थापन और गुरुत्वीय विक्षोभों के कारण भू-आकृतिक परिवर्तनों की 12-दिवसीय आवधिक मैपिंग शुरू की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण और पलायन वेग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पृथ्वी की सतह से ऊपर जाने अथवा भू-गर्भ में गहराई में जाने पर गुरुत्वीय त्वरण (g) का मान घटता है।
2. किसी पिंड का पलायन वेग उस पिंड के द्रव्यमान तथा उसके प्रक्षेपण कोण पर निर्भर करता है।
3. चंद्रमा पर वायुमंडल की अनुपस्थिति का मुख्य कारण यह है कि वहाँ गैस अणुओं का वर्ग-माध्य-मूल वेग (RMS Velocity) पलायन वेग से अधिक होता है।
4. यदि किसी उपग्रह के कक्षीय वेग को $\sqrt{2}$ गुना (या 41.4%) बढ़ा दिया जाए, तो वह अपनी कक्षा से बाहर पलायन कर जाएगा।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: पृथ्वी की सतह पर g का मान अधिकतम होता है। सतह से ऊपर जाने पर ($g \propto \frac{1}{r^2}$) तथा खदान/गहराई में जाने पर ($g' = g\left(1 - \frac{d}{R}\right)$) दोनों ही स्थितियों में g घटता है और केंद्र पर शून्य हो जाता है।
  - कथन 2 असत्य है: पलायन वेग का सूत्र $v_e = \sqrt{\frac{2GM}{R}}$ है; यह उस खगोलीय पिंड (जैसे पृथ्वी) के द्रव्यमान और त्रिज्या पर निर्भर करता है, न कि प्रक्षेपित किए जाने वाले पिंड के द्रव्यमान अथवा प्रक्षेपण कोण पर।
  - कथन 3 सत्य है: चंद्रमा पर पलायन वेग बहुत कम (लगभग 2.38 km/s) है। सामान्य तापमान पर वायुमंडलीय गैसों के अणुओं की गतिज चाल इससे अधिक हो जाने के कारण वे चंद्रमा के गुरुत्वीय क्षेत्र से पलायन कर जाती हैं।
  - कथन 4 सत्य है: पलायन वेग और कक्षीय वेग में संबंध $v_e = \sqrt{2} \cdot v_o$ है। अतः कक्षीय चाल में लगभग 41.4% की वृद्धि होते ही उपग्रह परवलयाकार मार्ग बनाकर पृथ्वी की कक्षा छोड़ देता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (भौतिक परिघटना / उपग्रह)	**सूची-II (अभिलक्षण / मान)**
a. भू-स्थिर उपग्रह (Geostationary Satellite)	1. लगभग 11.2 km/s
b. पृथ्वी का पलायन वेग	2. पृथ्वी के केंद्र पर
c. गुरुत्वीय त्वरण (g) का शून्य मान	3. ध्रुवों (Poles) पर
d. गुरुत्वीय त्वरण (g) का अधिकतम मान	4. $35,786$ किमी ऊँचाई एवं 24 घंटे परिक्रमण काल

कूट:

(A) a-4, b-1, c-2, d-3

(B) a-4, b-2, c-1, d-3

(C) a-1, b-4, c-2, d-3

(D) a-3, b-1, c-4, d-2

उत्तर: (A) a-4, b-1, c-2, d-3

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **भू-स्थिर उपग्रह:** यह पृथ्वी तल से लगभग $36,000$ किमी की ऊँचाई पर पश्चिम से पूर्व की ओर परिक्रमा करता है और इसका परिक्रमण काल ठीक 24 घंटे होता है।
    - **पृथ्वी का पलायन वेग:** सतह से पलायन वेग का मान लगभग 11.2 km/s होता है।
    - g **का शून्य मान:** पृथ्वी के केंद्र पर समस्त द्रव्यमान का गुरुत्वीय प्रभाव संतुलित होने के कारण परिणामी गुरुत्वीय त्वरण शून्य होता है।
    - g **का अधिकतम मान:** ध्रुवों पर पृथ्वी की त्रिज्या न्यूनतम होने के कारण $g = \frac{GM}{R^2}$ के अनुसार गुरुत्वीय त्वरण अधिकतम होता है।

टॉपिक - 4: पलायन वेग एवं भारहीनता (Escape Velocity and Weightlessness)

पलायन वेग और भारहीनता गुरुत्वाकर्षण यांत्रिकी की दो अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं, जो खगोलीय पिंडों, उपग्रहों की गति और अंतरिक्ष अन्वेषण के मूलभूत सिद्धांतों को निर्धारित करती हैं।

1. पलायन वेग (Escape Velocity - v_e**)**

- **परिभाषा एवं सूत्र:** वह न्यूनतम ऊर्ध्वाधर अथवा किसी कोण पर प्रक्षेपित वेग, जिससे किसी पिंड को फेंकने पर वह पृथ्वी (या किसी खगोलीय पिंड) के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र को पूर्णतः पार कर जाए और कभी वापस लौटकर न आए।

$$v_e = \sqrt{\frac{2GM}{R}} = \sqrt{2gR}$$

(जहाँ G = सार्वत्रिक गुरुत्वीय नियतांक, M = ग्रह का द्रव्यमान, R = ग्रह की त्रिज्या तथा g = गुरुत्वीय त्वरण)।

- **मानक मान एवं निर्भरता:**
    - **पृथ्वी पर पलायन वेग:** लगभग **11.2 किमी/सेकंड** (11.2 km/s)।
    - **चंद्रमा पर पलायन वेग:** लगभग **2.38 किमी/सेकंड** (2.38 km/s)।
    - **महत्वपूर्ण तथ्य:** पलायन वेग प्रक्षेप्य (फेंके जाने वाले पिंड) के द्रव्यमान, आकृति अथवा प्रक्षेपण कोण पर निर्भर **नहीं** करता। यह केवल उस ग्रह के द्रव्यमान एवं त्रिज्या पर निर्भर करता है।
    - **कक्षीय वेग से संबंध:** यदि पृथ्वी के अति निकट परिक्रमा कर रहे उपग्रह का कक्षीय वेग $v_o = \sqrt{gR} \approx 7.92$ km/s हो, तो:

$$v_e = \sqrt{2} \cdot v_o \approx 1.414 \cdot v_o$$

अतः यदि किसी उपग्रह की कक्षीय चाल को $\sqrt{2}$ **गुना (या 41.4%)** बढ़ा दिया जाए, तो वह कक्षा छोड़कर अंतरिक्ष में पलायन कर जाएगा।

©IASHINDIMEDIUM

- **चंद्रमा पर वायुमंडल की अनुपस्थिति:** चंद्रमा पर पलायन वेग (2.38 km/s) अत्यंत कम होने के कारण सामान्य तापमान पर गैसों (जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन) के अणुओं का वर्ग-माध्य-मूल वेग (RMS Velocity) पलायन वेग से अधिक हो जाता है, जिससे वे चंद्रमा के गुरुत्वीय क्षेत्र से बाहर निकल जाती हैं।

2. भारहीनता (Weightlessness)

- **परिभाषा:** जब किसी वस्तु पर कार्यरत प्रभावी/आभासी प्रतिक्रिया बल (R) शून्य हो जाता है, तो वस्तु स्वयं को भारहीन अनुभव करती है ($W = mg_{\text{eff}} = 0$)।
- **भारहीनता की प्रमुख स्थितियाँ:**
  - **मुक्त पतन (Free Fall):** जब कोई पिंड केवल गुरुत्वीय बल के अधीन नीचे गिरता है (त्वरण $a = g$), तो तल द्वारा लगाया गया अभिलंब प्रतिक्रिया बल $R = m(g - a) = m(g - g) = 0$ होता है। (जैसे लिफ्ट की डोरी टूटने पर)।
  - **अंतरिक्ष यान / उपग्रह में:** परिक्रमा कर रहे कृत्रिम उपग्रह के अंदर प्रत्येक वस्तु निरंतर 'मुक्त पतन' की अवस्था में होती है। उपग्रह की दीवारें वस्तु पर कोई प्रतिक्रिया बल नहीं लगातीं, जिससे भीतर यात्री भारहीनता का अनुभव करते हैं।
  - **पृथ्वी के केंद्र पर:** यहाँ $g = 0$ होने के कारण पिंड का भार शून्य होता है, यद्यपि उसका द्रव्यमान (m) अपरिवर्तित रहता है।
  - **शून्य गुरुत्वीय बिंदु (Null Point):** अंतरिक्ष में वह बिंदु जहाँ दो आकाशीय पिंडों के गुरुत्वाकर्षण बल परस्पर बराबर और विपरीत होकर निष्प्रभावी हो जाते हैं।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **गगनयान माइक्रोग्रैविटी परीक्षण एवं एक्जियोम-4 मिशन:** भारतीय अंतरिक्ष यात्री (गगनयात्री) ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर माइक्रोग्रैविटी (भारहीनता) वातावरण में तरल गतिकी, कोशिकीय विभाजन और मांसपेशियों के क्षरण (Muscle Atrophy) पर उन्नत जैव-चिकित्सीय प्रयोग संचालित किए।
- **चंद्रयान-4 लूनर एस्केप एवं री-एंट्री ट्रायल्स:** इसरो द्वारा चंद्रमा की सतह से नमूनों को वापस पृथ्वी पर लाने हेतु चंद्र पलायन वेग (2.38 km/s) को न्यूनतम प्रणोदक ईंधन के साथ पार करने के लिए दोहरे-लॉन्च ऑर्बिटल मॉड्यूल रणनीति का सफल कम्प्यूटेशनल व थ्रस्ट सत्यापन पूर्ण किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पलायन वेग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. किसी पिंड का पलायन वेग उस पिंड के द्रव्यमान तथा प्रक्षेपण कोण से पूर्णतः स्वतंत्र होता है।
2. चंद्रमा पर वायुमंडल की अनुपस्थिति का प्राथमिक कारण यह है कि वहाँ गैसों के अणुओं का तापीय वेग पलायन वेग से अधिक होता है।
3. यदि पृथ्वी की कक्षा में घूम रहे किसी उपग्रह की चाल में 41.4% की वृद्धि कर दी जाए, तो वह अपनी कक्षा से बाहर पलायन कर जाएगा।

©IASHINDIMEDIUM

4. यदि किसी भारी तोप के गोले और एक हल्के पंख को एक ही स्थान से फेंका जाए, तो गोले के लिए पलायन वेग का मान अधिक होगा।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: पलायन वेग का सूत्र $v_e = \sqrt{\frac{2GM}{R}}$ है; यह केवल ग्रह के द्रव्यमान (M) और त्रिज्या (R) पर निर्भर करता है, प्रक्षेपित पिंड के द्रव्यमान (m) या प्रक्षेपण कोण पर नहीं।
    - कथन 2 सत्य है: चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण और पलायन वेग बहुत कम (~2.38 km/s) होने के कारण गैसों के अणुओं का वर्ग-माध्य-मूल वेग पलायन वेग से अधिक हो जाता है और वे अंतरिक्ष में विलीन हो जाती हैं।
    - कथन 3 सत्य है: संबंध $v_e = \sqrt{2} \cdot v_o \approx 1.414 \cdot v_o$ के अनुसार कक्षीय चाल में लगभग 41.4% की वृद्धि करने पर गतिज ऊर्जा पलायन हेतु पर्याप्त हो जाती है।
    - कथन 4 असत्य है: चूंकि पलायन वेग फेंके जाने वाले पिंड के द्रव्यमान पर निर्भर नहीं करता, अतः तोप के भारी गोले तथा पंख दोनों के लिए पलायन वेग का मान समान (11.2 km/s) रहेगा।

प्रश्न 2. भारहीनता (Weightlessness) की परिघटना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

1. किसी उपग्रह के भीतर अंतरिक्ष यात्री भारहीनता का अनुभव करते हैं क्योंकि वहाँ पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल पूर्णतः शून्य होता है।
2. जब लिफ्ट की केबल अचानक टूट जाती है, तो लिफ्ट के फर्श द्वारा यात्री पर आरोपित अभिलंब प्रतिक्रिया बल शून्य हो जाता है।
3. पृथ्वी के केंद्र पर किसी वस्तु का द्रव्यमान शून्य हो जाता है, जबकि उसका भार अपरिवर्तित रहता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2

(C) केवल 2 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (B) केवल 2

- **विस्तृत व्याख्या:**

- कथन 1 असत्य है: पृथ्वी की निम्न कक्षा (LEO) में पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण शून्य नहीं होता (यह सतह के गुरुत्वाकर्षण का लगभग $85 - 90\%$ तक रहता है)। भारहीनता का अनुभव इसलिए होता है क्योंकि उपग्रह और उसके भीतर की वस्तुएं लगातार पृथ्वी की ओर एक समान त्वरण से मुक्त पतन (Free Fall) कर रही होती हैं, जिससे उपग्रह द्वारा वस्तु पर कोई प्रतिक्रिया बल नहीं लगाया जाता।

- कथन 2 सत्य है: मुक्त पतन की दशा में त्वरण $a = g$ होने के कारण फर्श द्वारा वस्तु पर लगने वाला अभिलंब प्रतिक्रिया बल $R = m(g - a) = 0$ हो जाता है, जिससे भारहीनता की स्थिति उत्पन्न होती है।

- कथन 3 असत्य है: पृथ्वी के केंद्र पर गुरुत्वीय त्वरण $g = 0$ होता है, अतः वहाँ वस्तु का **भार शून्य** ($W = mg = 0$) हो जाता है, किंतु **द्रव्यमान (m) एक मूलभूत अपरिवर्तनीय गुण है** जो सदैव नियत रहता है।

टॉपिक - 5: दाब, पास्कल का नियम और वायुमंडलीय दाब

दाब किसी सतह के प्रति एकांक क्षेत्रफल पर लंबवत कार्य करने वाले बल (प्रणोद/Thrust) की माप है। यह द्रवों एवं गैसों (तरल यांत्रिकी) के व्यवहार को समझने का आधारभूत भौतिक नियम है।

1. दाब की मूलभूत संकल्पना

- **परिभाषा एवं सूत्र:**

$$P = \frac{F}{A} = \frac{\text{प्रणोद (Thrust)}}{\text{क्षेत्रफल (Area)}}$$

- **प्रकृति एवं मात्रक:** दाब एक **अदिश राशि (Scalar Quantity)** है।
  - **SI मात्रक:** न्यूटन प्रति वर्ग मीटर (N/m^2) अथवा **पास्कल (Pascal - Pa)**।
  - अन्य मात्रक: 1 Bar $= 10^5$ Pa; 1 Torr $= 1$ mm of Hg ≈ 133.32 Pa।

- **व्यावहारिक प्रभाव:** दाब क्षेत्रफल के व्युत्क्रमानुपाती होता है ($P \propto 1/A$)।
  - कील का सिरा नुकीला होना, दलदल में फंसे व्यक्ति को लेट जाने की सलाह देना (क्षेत्रफल बढ़ाकर दाब घटाना), तथा भारी ट्रकों में दोहरे पहिये लगाना।

2. द्रवों में दाब एवं पास्कल का नियम (Pascal's Law)

- **द्रव दाब का सूत्र:** किसी स्थिर द्रव में गहराई h पर द्रव दाब:

$$P = h \cdot \rho \cdot g$$

(जहाँ h = गहराई, ρ = द्रव का घनत्व, g = गुरुत्वीय त्वरण)। द्रव का दाब केवल गहराई और घनत्व पर निर्भर करता है, पात्र के आकार या आकृति पर नहीं (द्रवस्थैतिक विरोधाभास / Hydrostatic Paradox)। एक ही क्षैतिज तल पर सभी बिंदुओं पर द्रव दाब समान होता है।

- **पास्कल का नियम:** यदि किसी परिबद्ध (Enclosed) असंपीड्य द्रव पर बाह्य दाब आरोपित किया जाए, तो वह दाब बिना किसी क्षय के द्रव के प्रत्येक भाग तथा पात्र की दीवारों पर सभी दिशाओं में **समान रूप से संचरित** होता है।

©IASHINDIMEDIUM

- **प्रमुख अनुप्रयोग: हाइड्रोलिक लिफ्ट (Hydraulic Lift)**, **हाइड्रोलिक ब्रेक (Hydraulic Brakes)** तथा **हाइड्रोलिक प्रेस (Hydraulic Press)** पूर्णतः पास्कल के नियम पर कार्य करते हैं।

3. वायुमंडलीय दाब (Atmospheric Pressure)

पृथ्वी को घेरे हुए वायुमंडल के भार द्वारा प्रति एकांक क्षेत्रफल पर आरोपित दाब को वायुमंडलीय दाब कहते हैं।

- **मानक मान:** समुद्र तल पर मानक वायुमंडलीय दाब (1 atm):

$$1 \text{ atm} = 1.013 \times 10^5 \text{ Pa} = 760 \text{ mm of Hg} = 76 \text{ cm of Hg}$$

- **मापन यंत्र: बैरोमीटर (Barometer)** (खोजकर्ता: ई. टोरिसेली)।
- **बैरोमीटर पाठ्यांक के संकेत:**
    - **अचानक तेजी से नीचे गिरना:** आंधी-तूफान (Storm) आने की संभावना।
    - **धीरे-धीरे नीचे गिरना:** वर्षा होने की संभावना।
    - **धीरे-धीरे ऊपर चढ़ना:** साफ एवं शुष्क मौसम (Clear Weather) का संकेत।
- **ऊँचाई के साथ प्रभाव:** ऊँचाई बढ़ने पर वायु का घनत्व घटने से वायुमंडलीय दाब घटता है।
    - पहाड़ों पर वायुदाब कम होने से जल का क्वथनांक 100°C से कम हो जाता है, जिससे **भोजन देर से पकता है** (प्रेशर कुकर में उच्च वाष्प दाब जल का क्वथनांक बढ़ाकर भोजन शीघ्र पकाता है)।
    - अधिक ऊँचाई पर फाउंटेन पेन से स्याही का रिसाव होना तथा नाक से रक्तस्राव (Nose Bleeding) होना।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **समुद्रयान मिशन (MATSYA 6000) हाइड्रोस्टैटिक प्रेशर ट्रायल्स:** भारत के डीप ओशन मिशन के अंतर्गत राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT) द्वारा मानवयुक्त पनडुब्बी 'मत्स्य 6000' का 6,000 मीटर की गहराई पर परीक्षण किया गया। इस गहराई पर पनडुब्बी ने समुद्र तल के वायुमंडलीय दाब की तुलना में लगभग 600 गुना अधिक चरम द्रवस्थैतिक दाब ($h\rho g$) को सहन करने वाले स्वदेशी टाइटेनियम एलॉय हल का सफल सत्यापन पूरा किया।
- **मौसम विज्ञान में डिजिटल ऑटोमेटेड बैरोमेट्रिक सेंसर्स:** भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने चक्रवाती तूफानों की प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली को मजबूत करने हेतु तटीय वेधशालाओं में पारंपरिक पारे वाले बैरोमीटर के स्थान पर उच्च-परिशुद्धता वाले डिजिटल पीज़ो-रेसिस्टिव बैरोमेट्रिक प्रेशर सेंसर नेटवर्क का एकीकरण पूर्ण किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (यंत्र / परिघटना)	**सूची-II (संबंधित वैज्ञानिक सिद्धांत / प्रभाव)**
a. हाइड्रोलिक ब्रेक	1. ऊँचाई पर जल के क्वथनांक में कमी

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (यंत्र / परिघटना)	सूची-II (संबंधित वैज्ञानिक सिद्धांत / प्रभाव)
b. बैरोमीटर पाठ्यांक का अचानक गिरना	2. पास्कल का नियम
c. पहाड़ों पर खाना देर से पकना	3. गहराई के साथ द्रव दाब ($h\rho g$) में वृद्धि
d. बांध की दीवार का आधार पर अधिक चौड़ा होना	4. तीव्र आंधी-तूफान का संकेत

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-3, b-4, c-1, d-2

(D) a-4, b-2, c-3, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **हाइड्रोलिक ब्रेक:** वाहनों में प्रयुक्त हाइड्रोलिक ब्रेक द्रव पर लगाए गए दाब के समान संचरण के पास्कल नियम पर आधारित हैं।
    - **बैरोमीटर पाठ्यांक का अचानक गिरना:** यह दर्शाता है कि उस स्थान पर निम्न दाब का केंद्र बन गया है, जो आंधी या तूफान के आने का निश्चित संकेत है।
    - **पहाड़ों पर खाना देर से पकना:** पहाड़ों पर वायुमंडलीय दाब कम होने के कारण पानी 100°C से कम तापमान पर ही उबलने लगता है, जिससे आवश्यक ऊष्मा न मिलने पर खाना पकने में अधिक समय लगता है।
    - **बांध की दीवार का चौड़ा आधार:** गहराई (h) बढ़ने के साथ द्रव दाब ($P = h\rho g$) बढ़ता है, अतः पेंदे पर अत्यधिक जलदाब को सहन करने के लिए बांधों की दीवारें नीचे चौड़ी बनाई जाती हैं।

प्रश्न 2. दाब एवं वायुमंडलीय दाब के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. किसी द्रव के भीतर समान क्षैतिज तल पर स्थित सभी बिंदुओं पर द्रवस्थैतिक दाब का मान एकसमान होता है, चाहे पात्र का आकार कुछ भी हो।
2. वायुमंडलीय दाब का मापन बैरोमीटर द्वारा किया जाता है तथा समुद्र तल पर इसका मानक मान 76 सेमी पारे के स्तंभ के बराबर होता है।
3. प्रेशर कुकर के अंदर वाष्प का दाब बढ़ने से जल का क्वथनांक घट जाता है, जिससे खाना जल्दी पकता है।
4. जब कोई व्यक्ति दलदल में फंस जाता है, तो उसे खड़े रहने के बजाय लेट जाने की सलाह दी जाती है ताकि संपर्क क्षेत्रफल बढ़ने से दाब कम हो सके।

©IASHINDIMEDIUM

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: द्रवस्थैतिक विरोधाभास (Hydrostatic Paradox) के अनुसार समान गहराई और घनत्व होने पर क्षैतिज तल में दाब समान रहता है; यह बर्तन के आकार पर निर्भर नहीं करता।
    - कथन 2 सत्य है: टोरिसेली के बैरोमीटर में समुद्र तल पर वायुमंडलीय दाब 760 mm (76 cm) पारे (Hg) के स्तंभ के बराबर होता है (1.013×10^5 Pa)।
    - कथन 3 असत्य है: प्रेशर कुकर में दाब बढ़ने से जल का क्वथनांक **बढ़ जाता है** (लगभग 120°C तक), जिससे भोजन को पकने के लिए अधिक ऊष्मा प्राप्त होती है और वह जल्दी पकता है।
    - कथन 4 सत्य है: सूत्र $P = F/A$ के अनुसार लेट जाने से शरीर का संपर्क क्षेत्रफल (A) बढ़ जाता है, जिससे प्रति इकाई क्षेत्रफल पर लगने वाला दाब (P) घट जाता है और व्यक्ति दलदल में धंसने से बच जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

रसायन विज्ञान

टॉपिक - 1: पदार्थ की अवस्थाएँ (States of Matter)

पदार्थ वह सब कुछ है जो स्थान घेरता है और जिसमें द्रव्यमान होता है। अंतराणुक आकर्षण बल (Intermolecular Force) तथा तापीय ऊर्जा (Thermal Energy) के परस्पर प्रभाव से पदार्थ मुख्य रूप से पाँच भौतिक अवस्थाओं में पाया जाता है।

1. पदार्थ की तीन मूलभूत अवस्थाएँ

- **ठोस (Solid):**
    - कणों के मध्य न्यूनतम रिक्त स्थान एवं अधिकतम अंतराणुक आकर्षण बल।
    - निश्चित आकार, स्पष्ट सीमाएँ तथा निश्चित आयतन; संपीड्यता (Compressibility) नगण्य।
    - ऊष्मा देने पर कणों का केवल अपने माध्य स्थान के परितः कंपन बढ़ता है।
- **द्रव (Liquid):**
    - ठोसों की तुलना में दुर्बल आकर्षण बल एवं अधिक गतिज ऊर्जा।
    - निश्चित आयतन परंतु अनिश्चित आकार (पात्र का आकार ग्रहण करते हैं); इनमें तरलता (Fluidity) पाई जाती है।
- **गैस (Gas):**
    - न्यूनतम अंतराणुक बल तथा अधिकतम गतिज ऊर्जा (कणों की यादृच्छिक/Random गति)।

©IASHINDIMEDIUM

- न तो निश्चित आकार, न ही निश्चित आयतन; अत्यधिक संपीड्य (उदा. संपीडित प्राकृतिक गैस - CNG, लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस - LPG)।

2. पदार्थ की चतुर्थ एवं पंचम अवस्था

- **प्लाज्मा (Plasma - चतुर्थ अवस्था):**
  - यह अत्यधिक ऊर्जावान और उत्तेजित आयनीकृत गैस (Ionized Gas) की अवस्था है, जिसमें मुक्त इलेक्ट्रॉन और धन आयन उपस्थित होते हैं।
  - तारों (सूर्य सहित) का चमकना प्लाज्मा की उपस्थिति के कारण होता है, जो अति-उच्च तापमान पर गैसों के आयनीकरण से बनता है।
  - फ्लोरोसेंट ट्यूब (हीलियम गैस) और नियॉन साइन बल्ब में प्लाज्मा निर्माण देखा जाता है।
- **बोस-आइंस्टीन कंडेनसेट (BEC - पंचम अवस्था):**
  - 1920 में **सत्येंद्र नाथ बोस** और **अल्बर्ट आइंस्टीन** द्वारा सैद्धांतिक गणना।
  - 1995 में **एरिक कॉर्नेल, कार्ल वीमैन और वुल्फगैंग केटरले** ने रुबिडियम गैस को परम शून्य ताप (0 K या -273.15°C) के अति-निकट ठंडा करके इसे पहली बार निर्मित किया (2001 का नोबेल पुरस्कार)।
  - यह सामान्य वायु के घनत्व के एक लाखवें भाग जितने कम घनत्व वाली गैस को अति-निम्न तापमान पर ठंडा करने से बनती है; इस अवस्था में सभी परमाणु मिलकर एक 'सुपर-एटम' की भांति व्यवहार करते हैं।

3. अवस्था परिवर्तन से जुड़े महत्वपूर्ण बिंदु

- **गलनांक (Melting Point):** ठोस से द्रव बनने का तापमान। बर्फ का गलनांक 273.15 K (0°C) होता है।
- **गुप्त ऊष्मा (Latent Heat):** अवस्था परिवर्तन के समय तापमान में बिना वृद्धि किए अवशोषित होने वाली ऊष्मा। 0°C के जल की अपेक्षा 0°C की बर्फ में कम ऊर्जा होती है, तथा 100°C के उबलते जल की तुलना में 100°C की भाप अधिक जलन पैदा करती है (वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा के कारण)।
- **ऊर्ध्वपातन (Sublimation):** ठोस का बिना द्रव में बदले सीधे गैस में रूपांतरण (उदा. कपूर, नेफ़थलीन, अमोनियम क्लोराइड, ठोस कार्बन डाइऑक्साइड/'शुष्क बर्फ')। गैस का सीधे ठोस में बदलना **निक्षेपण (Deposition)** कहलाता है।
- **क्वथनांक एवं वाष्पीकरण:** क्वथनांक एक स्थूल (Bulk) परिघटना है जबकि वाष्पीकरण एक **सतही (Surface) परिघटना** है, जो शीतलन (Cooling) उत्पन्न करती है।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **अंतरिक्ष में बोस-आइंस्टीन कंडेनसेट (Cold Atom Lab) के नए परिणाम:** अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर स्थित 'कोल्ड एटम लैब' में शून्य गुरुत्वाकर्षण (माइक्रोग्रैविटी) वातावरण के अंतर्गत वैज्ञानिकों ने ड्यूल-स्पीशीज क्वांटम गैसों का उपयोग कर रिकॉर्ड समयावधि तक स्थिर बोस-आइंस्टीन कंडेनसेट बनाए रखने में सफलता प्राप्त की, जिससे अति-संवेदनशील क्वांटम सेंसर और गुरुत्वीय तरंग डिटेक्टर विकसित करने में सहायता मिलेगी।

©IASHINDIMEDIUM

- **अल्ट्रा-फास्ट लेजर जनरेटेड प्लाज्मा:** उन्नत फ्यूजन ऊर्जा और अगली पीढ़ी के कॉम्पैक्ट पार्टिकल त्वरक (Particle Accelerators) के लिए पेटावाट-क्लास लेजर का उपयोग कर वायुमंडलीय दाब पर अति-घनत्व वाले मैग्नेटाइज्ड प्लाज्मा की स्थिरता पर नए प्रयोगात्मक मानक स्थापित किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं और उनके भौतिक गुणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 100°C के उबलते जल की तुलना में 100°C की भाप से जलने पर अधिक गंभीर क्षति होती है क्योंकि भाप में वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा संचित होती है।
2. बोस-आइंस्टीन कंडेनसेट (BEC) का निर्माण सामान्य वायु की तुलना में अत्यधिक उच्च घनत्व वाली गैस को अति-उच्च तापमान पर गर्म करके किया जाता है।
3. कपूर और ठोस कार्बन डाइऑक्साइड (शुष्क बर्फ) दोनों ऊर्ध्वपातन (Sublimation) का गुण प्रदर्शित करते हैं।
4. तारों का प्रकाश और चमक उनमें अत्यधिक तापमान पर बनने वाली प्लाज्मा अवस्था के कारण होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 3 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: 100°C पर भाप के कणों में उसी तापमान के जल के कणों की अपेक्षा वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा (Latent Heat of Vaporisation) के रूप में अतिरिक्त ऊर्जा होती है, जिससे भाप अधिक जलन पैदा करती है।
    - कथन 2 असत्य है: बोस-आइंस्टीन कंडेनसेट (पदार्थ की 5वीं अवस्था) का निर्माण सामान्य वायु के घनत्व के एक लाखवें भाग जितने **अति-न्यूनतम घनत्व** वाली गैस को **परम शून्य तापमान (लगभग -273.15°C)** के निकट ठंडा करने से होता है, न कि उच्च तापमान और उच्च घनत्व पर।
    - कथन 3 सत्य है: कपूर, शुष्क बर्फ (ठोस CO_2), नेफ़थलीन और अमोनियम क्लोराइड गर्म करने पर बिना द्रव अवस्था में आए सीधे गैसीय अवस्था में बदल जाते हैं (ऊर्ध्वपातन)।
    - कथन 4 सत्य है: तारों के भीतर अत्यधिक उच्च तापमान के कारण गैसों के परमाणु आयनीकृत होकर मुक्त इलेक्ट्रॉनों और आयनों का मिश्रण (प्लाज्मा) बनाते हैं, जिससे वे दीप्तिमान होते हैं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (अवस्था परिवर्तन / परिघटना)	सूची-II (वैज्ञानिक शब्दावली / उदाहरण)
a. ठोस का सीधे गैस में रूपांतरण	1. वाष्पीकरण (सतही परिघटना)
b. गैस का सीधे ठोस में रूपांतरण	2. आयनीकृत गैस (तारों की चमक)
c. मटके के जल का ठंडा होना	3. ऊर्ध्वपातन (उदा. अमोनियम क्लोराइड)
d. प्लाज्मा अवस्था	4. निक्षेपण (Deposition)

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **ठोस का सीधे गैस में रूपांतरण:** इसे **ऊर्ध्वपातन (Sublimation)** कहा जाता है (उदा. कपूर, अमोनियम क्लोराइड)।
    - **गैस का सीधे ठोस में रूपांतरण:** इसे **निक्षेपण (Deposition)** कहा जाता है।
    - **मटके के जल का ठंडा होना:** मटके की सूक्ष्म रंध्रयुक्त सतह से जल का निरंतर **वाष्पीकरण (Evaporation)** होता है, जो जल से गुप्त ऊष्मा अवशोषित कर शीतलन उत्पन्न करता है।
    - **प्लाज्मा अवस्था:** यह **अति-उत्तेजित आयनीकृत गैस** है, जो उच्च ताप पर तारों, नियॉन बल्ब तथा सूर्य में उपस्थित होती है।

टॉपिक - 2: परमाणु संरचना (इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन)

परमाणु तत्व का वह सूक्ष्मतम कण है जो रासायनिक अभिक्रियाओं में भाग लेता है। जॉन डाल्टन (1808) के 'परमाणु सिद्धांत' के अनुसार परमाणु अविभाज्य था, परंतु 19वीं-20वीं सदी के अनुसंधानों ने सिद्ध किया कि परमाणु मुख्यतः तीन अपरमाण्विक (Sub-atomic) मौलिक कणों—**इलेक्ट्रॉन**, **प्रोटॉन** और **न्यूट्रॉन** से मिलकर बना है।

1. मौलिक कणों के गुणधर्म एवं खोजकर्ता

- **इलेक्ट्रॉन (e^-):**
    - **खोज:** जे. जे. थॉमसन (1897) ने कैथोड किरणों (Cathode Rays) के अध्ययन द्वारा की।

©IASHINDIMEDIUM

- **आवेश एवं द्रव्यमान:** यह ऋणावेशित कण है। इस पर -1.602×10^{-19} C आवेश होता है (आर. ए. मिलिकन ने 'तैल बूंद प्रयोग' द्वारा आवेश मापा)। इसका विराम द्रव्यमान 9.109×10^{-31} kg (हाइड्रोजन परमाणु के द्रव्यमान का लगभग $\frac{1}{1837}$वाँ भाग) होता है।

- **प्रोटॉन (p^+):**
  - **खोज:** ई. गोल्डस्टीन (1886) ने एनोड किरणों (कैनाल किरणों) के रूप में धनावेशित कणों की पहचान की; 'प्रोटॉन' नामकरण **अर्नेस्ट रदरफोर्ड** ने 1919 में किया।
  - **आवेश एवं द्रव्यमान:** यह धनावेशित कण है। आवेश $+1.602 \times 10^{-19}$ C तथा द्रव्यमान 1.672×10^{-27} kg होता है।

- **न्यूट्रॉन (n^0):**
  - **खोज:** जेम्स चैडविक (1932) ने बेरिलियम पर α-कणों की बमबारी करके की।
  - **आवेश एवं द्रव्यमान:** यह **विद्युत उदासीन कण** है। इसका द्रव्यमान 1.675×10^{-27} kg होता है (तीनों मौलिक कणों में सबसे भारी कण)।
  - *अपवाद:* सामान्य हाइड्रोजन (प्रोटियम - ${}_{1}^{1}\mathrm{H}$) के नाभिक में न्यूट्रॉन **अनुपस्थित** होता है।

2. परमाणु मॉडल एवं नाभिकीय संरचना

- **थॉमसन का मॉडल (Plum Pudding Model):** परमाणु धनावेशित गोला है जिसमें इलेक्ट्रॉन तरबूज के बीज की तरह धंसे होते हैं।
- **रदरफोर्ड का नाभिकीय मॉडल (1911):** स्वर्ण-पत्र पर α-कण प्रकीर्णन प्रयोग द्वारा **परमाणु नाभिक (Nucleus)** की खोज की। नाभिक की त्रिज्या लगभग 10^{-15} m (फर्मी) तथा परमाणु की त्रिज्या लगभग 10^{-10} m (ऐंगस्ट्रॉम) होती है। नाभिक में प्रोटॉन एवं न्यूट्रॉन होते हैं (जिन्हें संयुक्त रूप से **न्यूक्लियॉन** कहते हैं)।
- **नील्स बोर मॉडल (1913):** इलेक्ट्रॉन केवल निश्चित विवित्त कक्षाओं (Discrete Orbits / ऊर्जा स्तर: K, L, M, N) में नाभिक के चारों ओर बिना ऊर्जा खोए चक्कर लगाते हैं।
- **परमाणु क्रमांक (Z) एवं द्रव्यमान संख्या (A):**
  - परमाणु क्रमांक (Z) = नाभिक में प्रोटॉनों की संख्या = उदासीन परमाणु में इलेक्ट्रॉनों की संख्या।
  - द्रव्यमान संख्या (A) = प्रोटॉनों की संख्या (Z) + न्यूट्रॉनों की संख्या (N)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **अल्ट्रा-कोल्ड न्यूट्रॉन प्रयोगात्मक परिशुद्धता:** यूरोपीय नाभिकीय अनुसंधान संगठन (CERN) और भौतिकविदों के एक अंतरराष्ट्रीय संघ ने मुक्त न्यूट्रॉन के सटीक जीवनकाल (Neutron Lifetime) के मापन हेतु चुंबकीय ट्रैपिंग तकनीक में नए मानक स्थापित किए, जो बिग बैंग न्यूक्लियोसिंथेसिस और ब्रह्मांड में प्राथमिक तत्वों के निर्माण की गुत्थियों को सुलझाने में महत्वपूर्ण है।

©IASHINDIMEDIUM

- **म्यूओनिक परमाणुओं का लेजर स्पेक्ट्रोस्कोपी अध्ययन:** वैज्ञानिकों ने सामान्य इलेक्ट्रॉन को भारी लेप्टॉन (म्यूऑन) से प्रतिस्थापित कर 'म्यूओनिक हाइड्रोजन' के नाभिकीय प्रोटॉन त्रिज्या का उच्च परिशुद्धता के साथ विश्लेषण किया, जिसने सब-एटॉमिक स्तर पर क्वांटम इलेक्ट्रोडायनामिक्स (QED) के मूलभूत सिद्धांतों का पुनः सत्यापन किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (अपरमाण्विक कण)	**सूची-II (खोजकर्ता)**
a. इलेक्ट्रॉन	1. जेम्स चैडविक
b. प्रोटॉन (एनोड किरणें)	2. जे. जे. थॉमसन
c. न्यूट्रॉन	3. ई. गोल्डस्टीन
d. परमाणु नाभिक	4. अर्नेस्ट रदरफोर्ड

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **इलेक्ट्रॉन:** जे. जे. थॉमसन ने कैथोड किरण विसर्जन नलिका प्रयोगों के माध्यम से इलेक्ट्रॉन की खोज की।
    - **प्रोटॉन:** ई. गोल्डस्टीन ने सर्वप्रथम धनावेशित कैनाल किरणों की खोज की थी (बाद में रदरफोर्ड ने इसे प्रोटॉन नाम दिया)।
    - **न्यूट्रॉन:** जेम्स चैडविक ने 1932 में बेरिलियम धातु पर अल्फा कणों के प्रहार द्वारा उदासीन कण न्यूट्रॉन की खोज की।
    - **परमाणु नाभिक:** रदरफोर्ड ने 1911 में स्वर्ण-पन्नी पर α-कण प्रकीर्णन प्रयोग द्वारा नाभिक का अस्तित्व सिद्ध किया।

प्रश्न 2. परमाणु संरचना एवं उसके मौलिक कणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सामान्य हाइड्रोजन (प्रोटियम) के परमाणु में कोई न्यूट्रॉन उपस्थित नहीं होता है।
2. तीनों मूलभूत अपरमाण्विक कणों में न्यूट्रॉन का द्रव्यमान सर्वाधिक होता है।
3. इलेक्ट्रॉन पर उपस्थित आवेश का सटीक परिमाण सर्वप्रथम आर. ए. मिलिकन द्वारा 'तैल बूंद प्रयोग' द्वारा ज्ञात किया गया था।

©IASHINDIMEDIUM

4. किसी तत्व की रासायनिक प्रकृति उसके नाभिक में उपस्थित न्यूट्रॉनों की संख्या द्वारा निर्धारित होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: प्रोटियम ($^{1}_{1}\text{H}$) में 1 प्रोटॉन और 1 इलेक्ट्रॉन होता है, किंतु न्यूट्रॉनों की संख्या शून्य ($1 - 1 = 0$) होती है।
    - कथन 2 सत्य है: न्यूट्रॉन का द्रव्यमान (1.675×10^{-27} kg) प्रोटॉन के द्रव्यमान (1.672×10^{-27} kg) से थोड़ा अधिक होता है; इलेक्ट्रॉन का द्रव्यमान इनसे बहुत कम (9.1×10^{-31} kg) होता है।
    - कथन 3 सत्य है: आर. ए. मिलिकन ने प्रसिद्ध ऑयल-ड्रॉप प्रयोग (1909) से सिद्ध किया कि आवेश क्वांटीकृत होता है और इलेक्ट्रॉन पर -1.602×10^{-19} C आवेश पाया जाता है।
    - कथन 4 असत्य है: किसी तत्व की रासायनिक प्रकृति और गुणधर्म उसके परमाणु क्रमांक यानी प्रोटॉनों की संख्या (उदासीन अवस्था में इलेक्ट्रॉनों की संख्या एवं उनके विन्यास) द्वारा निर्धारित होते हैं, न कि न्यूट्रॉनों द्वारा।

टॉपिक - 3: आधुनिक आवर्त सारणी की आवर्ती प्रवृत्तियाँ (Periodic Trends in Modern Periodic Table)

आधुनिक आवर्त नियम का प्रतिपादन 1913 में **हेनरी मोसले** ने किया था। इसके अनुसार, *"तत्वों के भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्म उनके परमाणु क्रमांकों (Atomic Numbers - Z) के आवर्ती फलन होते हैं।"* वर्तमान दीर्घ-रूप आवर्त सारणी (नील्स बोर द्वारा विकसित) में **7 क्षैतिज पंक्तियाँ (आवर्त / Periods)** तथा **18 ऊर्ध्वाधर स्तंभ (वर्ग या समूह / Groups)** हैं।

1. प्रमुख आवर्ती प्रवृत्तियाँ (Periodic Trends)

- **परमाणु त्रिज्या / आकार (Atomic Radius/Size):**
    - **आवर्त में (बाएँ से दाएँ):** परमाणु त्रिज्या **घटती है**। (कारण: मुख्य ऊर्जा स्तर वही रहता है, परंतु नाभिकीय आवेश बढ़ने से बाह्यतम इलेक्ट्रॉन नाभिक की ओर अधिक खिंचते हैं)।
    - **वर्ग में (ऊपर से नीचे):** परमाणु त्रिज्या **बढ़ती है**। (कारण: नए कोशों/ऊर्जा स्तरों का जुड़ना तथा प्रभावी परिरक्षण प्रभाव / Shielding Effect)।
    - *अपवाद:* 18वें वर्ग (उत्कृष्ट गैसों) की वैन डेर वाल्स त्रिज्या अपने संबंधित आवर्त के हैलोजन से बड़ी होती है।
- **आयनन एन्थैल्पी / विभव (Ionization Enthalpy - IE):**

- गैसीय अवस्था में विलगित परमाणु के बाह्यतम कोश से एक इलेक्ट्रॉन निकालने हेतु आवश्यक न्यूनतम ऊर्जा।
- **आवर्त में:** बाएँ से दाएँ जाने पर सामान्यतः **बढ़ती है** (प्रभावी नाभिकीय आवेश में वृद्धि के कारण)।
- **वर्ग में:** ऊपर से नीचे जाने पर **घटती है** (परमाणु आकार बढ़ने से इलेक्ट्रॉन निकालना सरल होता है)।
- *अपवाद:* नाइट्रोजन ($1s^2 2s^2 2p^3$ - अर्ध-पूरित कक्षक) की आयनन ऊर्जा ऑक्सीजन ($1s^2 2s^2 2p^4$) से अधिक होती है; इसी प्रकार बेरिलियम ($2s^2$) की बोरॉन ($2p^1$) से अधिक होती है।
- आवर्त सारणी में **हीलियम (He)** की आयनन एन्थैल्पी सर्वोच्च होती है।

- **इलेक्ट्रॉन लब्धि एन्थैल्पी / इलेक्ट्रॉन बंधुता (Electron Gain Enthalpy):**
  - विलगित गैसीय परमाणु में एक अतिरिक्त इलेक्ट्रॉन जोड़ने पर मुक्त होने वाली ऊर्जा।
  - **आवर्त में:** बाएँ से दाएँ जाने पर अधिक ऋणात्मक (बढ़ती) होती है।
  - **वर्ग में:** ऊपर से नीचे जाने पर कम ऋणात्मक (घटती) होती है।
  - *विशिष्ट अपवाद:* **क्लोरीन (Cl)** की इलेक्ट्रॉन बंधुता **फ्लोरीन (F)** से अधिक होती है (क्योंकि फ्लोरीन के $2p$ कक्षक का आकार अत्यंत छोटा होने से उसमें अंतःइलेक्ट्रॉनी प्रतिकर्षण अधिक होता है)।
- **विद्युत ऋणात्मकता (Electronegativity - EN):**
  - सहसंयोजक बंध के साझे के इलेक्ट्रॉन युग्म को अपनी ओर आकर्षित करने की सापेक्षिक क्षमता (पॉलिंग पैमाना)।
  - **आवर्त में:** बाएँ से दाएँ **बढ़ती है**; **वर्ग में:** ऊपर से नीचे **घटती है**।
  - आवर्त सारणी में सर्वाधिक विद्युत ऋणात्मक तत्व: **फ्लोरीन ($F = 4.0$)** → ऑक्सीजन ($O = 3.5$) → नाइट्रोजन ($N = 3.0$)।
- **धात्विक एवं अधात्विक गुण (Metallic & Non-Metallic Nature):**
  - **धात्विक गुण (विद्युत धनात्मकता):** आवर्त में बाएँ से दाएँ **घटता है**, वर्ग में ऊपर से नीचे **बढ़ता है**। सर्वाधिक धात्विक/सक्रिय धातु: **सीज़ियम (Cs)**।
  - **अधात्विक गुण:** आवर्त में बाएँ से दाएँ **बढ़ता है**, वर्ग में ऊपर से नीचे **घटता है**।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **सुपरहैवी तत्वों (Element 120 / Unbinilium) का संश्लेषण प्रयास:** IUPAC और संयुक्त नाभिकीय अनुसंधान संस्थान (JINR) के नेतृत्व में आवर्त सारणी के 8वें आवर्त (Period 8) के पहले क्षारीय मृदा तत्व 'एलिमेंट 120' के संश्लेषण हेतु टाइटेनियम-50 बीम और कैलिफ़ोर्नियम-249 टार्गेट के संलयन प्रयोगों में नई परमाणु स्थिरता सीमाओं (Island of Stability) का विश्लेषण दर्ज किया गया।
- **क्रिटिकल मिनरल्स एवं आवर्त सारणी रिपोजिटरी:** भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) और खान मंत्रालय द्वारा 30 महत्वपूर्ण खनिजों (जैसे लीथियम, कोबाल्ट, दुर्लभ मृदा तत्व/REEs) के निष्कर्षण और उनके रासायनिक समूहों (f-ब्लॉक लैंथेनॉइड्स) की चक्रीय आवर्ती रिकवरी हेतु राष्ट्रीय डिजिटल एटलस का अद्यतन संस्करण जारी किया गया।

©IASHINDIMEDIUM

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. आवर्त सारणी की आवर्ती प्रवृत्तियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. किसी आवर्त में बाएँ से दाएँ जाने पर तत्वों की परमाणु त्रिज्या सामान्यतः घटती है क्योंकि प्रभावी नाभिकीय आवेश बढ़ता है।
2. आवर्त सारणी में क्लोरीन (Cl) की इलेक्ट्रॉन बंधुता फ्लोरीन (F) की तुलना में अधिक होती है।
3. द्वितीय आवर्त में नाइट्रोजन की प्रथम आयनन एन्थैल्पी ऑक्सीजन की तुलना में कम होती है।
4. पूरे आवर्त सारणी में फ्लोरीन सर्वाधिक विद्युत ऋणात्मक तत्व है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: आवर्त में आगे बढ़ने पर इलेक्ट्रॉन उसी मुख्य कोश में जुड़ते हैं, जबकि नाभिक में प्रोटॉनों की संख्या बढ़ने से प्रभावी नाभिकीय आवेश (Z_{eff}) बढ़ता है, जिससे परमाणु का आकार संकुचित हो जाता है।
  - कथन 2 सत्य है: फ्लोरीन का आकार बहुत छोटा ($2p$ कक्षक) होने के कारण प्रवेश करने वाले अतिरिक्त इलेक्ट्रॉन को तीव्र अंतर-इलेक्ट्रॉनिक प्रतिकर्षण झेलना पड़ता है, जबकि क्लोरीन ($3p$ कक्षक) का आकार बड़ा होने से इलेक्ट्रॉन आसानी से समाहित हो जाता है; अतः क्लोरीन की इलेक्ट्रॉन बंधुता फ्लोरीन से अधिक होती है।
  - कथन 3 असत्य है: नाइट्रोजन का इलेक्ट्रॉनिक विन्यास $1s^2 2s^2 2p^3$ है, जिसमें $2p$ उपकोश आधा भरा (Half-filled) होने के कारण अतिरिक्त स्थायी होता है, इसलिए नाइट्रोजन से इलेक्ट्रॉन निकालने हेतु ऑक्सीजन ($2p^4$) की तुलना में अधिक ऊर्जा लगती है (IE_1 of $N > IE_1$ of O)।
  - कथन 4 सत्य है: पॉलिंग पैमाने पर फ्लोरीन की विद्युत ऋणात्मकता 4.0 है, जो सभी तत्वों में उच्चतम है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (रासायनिक अभिलक्षण)	**सूची-II (संबंधित तत्व)**
a. उच्चतम आयनन ऊर्जा	1. फ्लोरीन (F)
b. उच्चतम इलेक्ट्रॉन बंधुता	2. सीज़ियम (Cs)

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (रासायनिक अभिलक्षण)	सूची-II (संबंधित तत्व)
c. सर्वाधिक विद्युत ऋणात्मकता	3. क्लोरीन (Cl)
d. सर्वाधिक विद्युत धनात्मक (सक्रिय धातु)	4. हीलियम (He)

कूट:

(A) a-4, b-3, c-1, d-2

(B) a-4, b-1, c-3, d-2

(C) a-3, b-4, c-1, d-2

(D) a-2, b-3, c-1, d-4

उत्तर: (A) a-4, b-3, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **उच्चतम आयनन ऊर्जा:** हीलियम (He) का परमाणु आकार सबसे छोटा और इसका द्विक विन्यास ($1s^2$) पूर्णतः पूरित होता है, अतः इससे इलेक्ट्रॉन निकालना सर्वाधिक कठिन है।
    - **उच्चतम इलेक्ट्रॉन बंधुता:** क्लोरीन (Cl) अतिरिक्त इलेक्ट्रॉन ग्रहण करने पर सर्वाधिक ऊर्जा विमुक्त करता है।
    - **सर्वाधिक विद्युत ऋणात्मकता:** फ्लोरीन (F) सहसंयोजक बंध के इलेक्ट्रॉनों को सर्वाधिक प्रबलता से आकर्षित करता है।
    - **सर्वाधिक विद्युत धनात्मक/सक्रिय धातु:** सीज़ियम (Cs) का आयनन विभव अत्यंत कम और आकार बड़ा होने के कारण यह सरलता से इलेक्ट्रॉन त्याग देता है।

टॉपिक - 5: अम्ल, क्षार और लवण (pH मान एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग)

अम्ल, क्षार और लवण अकार्बनिक रसायन के आधारभूत स्तंभ हैं। आर्हेनियस संकल्पना के अनुसार, **अम्ल** वे पदार्थ हैं जो जलीय विलयन में हाइड्रोजन आयन (H^+ या H_3O^+ हाइड्रोनियम आयन) देते हैं, जबकि **क्षार** जलीय विलयन में हाइड्रॉक्साइड आयन (OH^-) देते हैं। ब्रांस्टेड-लोरी के अनुसार अम्ल प्रोटॉन दाता (H^+ donor) तथा क्षार प्रोटॉन ग्राही (H^+ acceptor) होते हैं। लुईस सिद्धांत के अनुसार अम्ल इलेक्ट्रॉन-युग्म ग्राही (e^- acceptor) तथा क्षार इलेक्ट्रॉन-युग्म दाता (e^- donor) होते हैं।

1. अम्ल एवं प्राकृतिक स्रोत

- **प्रमुख प्राकृतिक अम्ल:**
    - **एसिटिक अम्ल (CH_3COOH):** सिरका (Vinegar - 4 से 8% जलीय घोल)।
    - **साइट्रिक अम्ल:** नींबू, संतरा, आंवला।

©IASHINDIMEDIUM

- **टार्टरिक अम्ल:** इमली, अंगूर, कच्चा आम।
- **ऑक्सालिक अम्ल:** टमाटर, पालक (मानव गुर्दे में बनने वाली पथरी **कैल्शियम ऑक्सालेट** होती है)।
- **लैक्टिक अम्ल:** खट्टा दूध, दही।
- **मेथेनॉइक / फॉर्मिक अम्ल ($HCOOH$):** चींटी का डंक, बिच्छू-बूटी (Nettle sting)। इसके डंक के प्रभाव को बेकिंग सोडा या कैलामाइन विलयन लगाकर उदासीन किया जाता है।

- **अम्लराज (Aqua Regia):** सांद्र नाइट्रिक अम्ल (HNO_3) और सांद्र हाइड्रोक्लोरिक अम्ल (HCl) का **1 : 3** के अनुपात में ताजा मिश्रण, जो सोने और प्लैटिनम जैसी अक्रिय धातुओं को भी घोल देता है।

2. क्षार एवं लवण (Bases and Salts)

- **क्षार (Bases):** जो क्षार जल में घुलनशील होते हैं, उन्हें **एल्कली (Alkali)** कहते हैं (जैसे $NaOH, KOH$); सभी एल्कली क्षार होते हैं परंतु सभी क्षार एल्कली नहीं होते।
  - **मिल्क ऑफ मैग्नीशिया [$Mg(OH)_2$]:** पेट की अम्लता दूर करने हेतु एंटासिड के रूप में प्रयुक्त।
- **उदासीनीकरण एवं लवण:** अम्ल और क्षार की परस्पर क्रिया से लवण तथा जल का निर्माण होता है।
  - **प्लास्टर ऑफ पेरिस (POP):** $CaSO_4 \cdot \frac{1}{2}H_2O$ (जिप्सम $CaSO_4 \cdot 2H_2O$ को 373 K पर गर्म करने पर प्राप्त)।
  - **बेकिंग सोडा (मीठा सोडा):** सोडियम हाइड्रोजन कार्बोनेट ($NaHCO_3$) - अग्निशामक यंत्रों एवं खाद्य पदार्थों में प्रयुक्त।
  - **धावन सोडा:** सोडियम कार्बोनेट डेकाहाइड्रेट ($Na_2CO_3 \cdot 10H_2O$)।
  - **विरंजक चूर्ण (Bleaching Powder):** $CaOCl_2$ (शुष्क बुझे चूने $Ca(OH)_2$ पर क्लोरीन गैस प्रवाहित करके)।

3. pH पैमाना एवं सूचक (Indicators)

1909 में डेनिश रसायनशास्त्री **सोरेन्सन (S.P.L. Sørensen)** ने हाइड्रोजन आयन सांद्रता मापने हेतु pH पैमाना विकसित किया:

$$pH = -\log_{10}[H^+]$$

- **मानक:** उदासीन विलयन हेतु $pH = 7$; अम्लीय विलयन हेतु $pH < 7$; क्षारीय विलयन हेतु $pH > 7$।
- **प्रमुख द्रवों के मानक pH मान:**
  - आमाशय रस (जठर रस): **1.2 – 1.4**
  - सिरका / नींबू रस: **2.2 – 2.4**
  - शुद्ध जल: **7.0**
  - मानव रक्त (आंसू सहित): **7.35 – 7.45 (हल्का क्षारीय)**

©IASHINDIMEDIUM

- समुद्री जल: **8.5**
- मिल्क ऑफ मैग्नीशिया: **10.5**

- **सूचक (Indicators):**
  - **लिटमस:** लाइकेन से प्राप्त प्राकृतिक सूचक (अम्ल में नीला लिटमस लाल, क्षार में लाल लिटमस नीला)।
  - **मिथाइल ऑरेंज:** अम्ल में गुलाबी/लाल, क्षार में पीला।
  - **फेनोल्फथेलिन:** अम्ल में रंगहीन, क्षार में गुलाबी।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **वैश्विक महासागरीय अम्लीकरण एवं समुद्री pH प्रवृत्तियाँ:** वैश्विक महासागरीय वेधशाला नेटवर्क (GOA-ON) द्वारा जारी नवीनतम समुद्री रासायनिक प्रतिवेदन के अनुसार, वायुमंडलीय अतिरिक्त CO_2 के अवशोषण के कारण खुले महासागरों की सतह का औसत pH मान ऐतिहासिक पूर्व-औद्योगिक स्तर 8.2 से गिरकर **8.05** दर्ज किया गया, जिससे प्रवाल भित्तियों (Coral Reefs) में कैल्सिफिकेशन की दर बाधित हुई।
- **मृदा स्वास्थ्य कार्ड (SHC) एवं नैनो-जिप्सम/चूना सुधार पहल:** कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा क्षारीय मृदा (pH > 8.5) के उपचार हेतु नैनो-जिप्सम तथा अम्लीय मृदा (pH < 5.5) के सुधार हेतु सूक्ष्म-कणीय कृषि चूना ($CaCO_3$) के लक्षित वितरण हेतु अखिल भारतीय डिजिटल मृदा डैशबोर्ड का अद्यतन चरण प्रारंभ किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (रासायनिक यौगिक / पदार्थ)	**सूची-II (रासायनिक नाम / सूत्र)**
a. प्लास्टर ऑफ पेरिस	1. सोडियम हाइड्रोजन कार्बोनेट ($NaHCO_3$)
b. विरंजक चूर्ण (Bleaching Powder)	2. कैल्शियम सल्फेट हेमीहाइड्रेट ($CaSO_4 \cdot \frac{1}{2} H_2O$)
c. बेकिंग सोडा	3. कैल्शियम ऑक्सीक्लोराइड ($CaOCl_2$)
d. मिल्क ऑफ मैग्नीशिया	4. मैग्नीशियम हाइड्रॉक्साइड [$Mg(OH)_2$]

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

©IASHINDIMEDIUM

(D) a-4, b-3, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **प्लास्टर ऑफ पेरिस (POP):** जिप्सम को नियंत्रित तापमान (373 K) पर गर्म करने पर जल के तीन-चौथाई अणु निकल जाते हैं और कैल्शियम सल्फेट हेमीहाइड्रेट ($CaSO_4 \cdot \frac{1}{2}H_2O$) बनता है।
    - **विरंजक चूर्ण:** शुष्क बुझे चूने पर क्लोरीन गैस की क्रिया से कैल्शियम ऑक्सीक्लोराइड ($CaOCl_2$) प्राप्त होता है।
    - **बेकिंग सोडा:** इसका रासायनिक नाम सोडियम हाइड्रोजन कार्बोनेट ($NaHCO_3$) है।
    - **मिल्क ऑफ मैग्नीशिया:** यह मैग्नीशियम हाइड्रॉक्साइड [$Mg(OH)_2$] का जलीय निलंबन है, जो एक दुर्बल क्षार है और एंटासिड के रूप में कार्य करता है।

प्रश्न 2. अम्ल, क्षार और pH मान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मानव रक्त का pH मान लगभग 7.4 होता है, जो कि दुर्बल अम्लीय प्रकृति को प्रदर्शित करता है।
2. चींटी के डंक में मेथेनॉइक अम्ल (फॉर्मिक अम्ल) उपस्थित होता है, जिसकी जलन को बेकिंग सोडा जैसे दुर्बल क्षार से शांत किया जा सकता है।
3. अम्लराज (Aqua Regia) सांद्र हाइड्रोक्लोरिक अम्ल और सांद्र नाइट्रिक अम्ल का 3 : 1 के अनुपात में ताजा मिश्रण होता है।
4. टमाटर में मुख्य रूप से ऑक्सालिक अम्ल पाया जाता है, जो मानव शरीर में कैल्शियम ऑक्सालेट की पथरी के निर्माण में भाग लेता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: मानव रक्त का सामान्य pH मान 7.35 से 7.45 के बीच होता है। चूँकि यह मान 7 से अधिक है, अतः रक्त की प्रकृति **हल्की क्षारीय (Slightly Basic)** होती है, न कि अम्लीय।
    - कथन 2 सत्य है: चींटी और बिच्छू-घास के डंक में मेथेनॉइक (फॉर्मिक) अम्ल होता है। इसे बेकिंग सोडा ($NaHCO_3$) जैसे हल्के क्षार से उदासीन करके राहत पाई जाती है।
    - कथन 3 सत्य है: अम्लराज में 3 भाग सांद्र HCl तथा 1 भाग सांद्र HNO_3 (3 : 1 का अनुपात) होता है। (यदि नाइट्रिक अम्ल और हाइड्रोक्लोरिक अम्ल के क्रम में पूछा जाए तो 1 : 3 होता है)।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 4 सत्य है: टमाटर और पालक में ऑक्सालिक अम्ल प्रचुरता में पाया जाता है; शरीर में अतिरिक्त कैल्शियम के साथ मिलकर यह अघुलनशील कैल्शियम ऑक्सालेट की पथरी बनाता है।



पर्यावरण एवं परिस्थितिकी

©IASHINDIMEDIUM

परिस्थितिकी तंत्र

टॉपिक - 1: पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना और कार्य (Structure and Function of Ecosystem)

पारिस्थितिकी (Ecology) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1866 में **अर्नेस्ट हेकेल** ने किया था, जबकि 'पारिस्थितिकी तंत्र' (Ecosystem) शब्द 1935 में **ए. जी. टेंसले (A.G. Tansley)** द्वारा प्रतिपादित किया गया। ई. पी. ओडम के अनुसार, पारिस्थितिकी तंत्र प्रकृति की संरचनात्मक एवं क्रियात्मक इकाई है।

1. पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना (Structure of Ecosystem)

पारिस्थितिकी तंत्र दो प्रमुख घटकों के अंतर्संबंधों से निर्मित होता है:

- **अजैविक घटक (Abiotic Components):**
    - भौतिक कारक: तापमान, प्रकाश, आर्द्रता, वायुमंडलीय दाब।
    - अकार्बनिक पदार्थ: जल, कार्बन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस आदि।
    - कार्बनिक यौगिक: प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, लिपिड, ह्यूमस (जो जैविक व अजैविक घटकों के मध्य सेतु का कार्य करते हैं)।
- **जैविक घटक (Biotic Components):**
    - **उत्पादक (स्वपोषी / Autotrophs):** मुख्य रूप से हरे पौधे एवं पादप प्लवक (Phytoplankton), जो प्रकाश संश्लेषण द्वारा सौर ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं।
    - **उपभोक्ता (विषमपोषी / Heterotrophs):**
        - *प्राथमिक उपभोक्ता (शाकाहारी):* सीधे उत्पादकों पर निर्भर (उदा. गाय, टिड्डा, प्राणिप्लवक)।
        - *द्वितीयक उपभोक्ता (प्राथमिक मांसाहारी):* शाकाहारियों का भक्षण करते हैं (उदा. मेंढक, भेड़िया)।
        - *तृतीयक/शीर्ष उपभोक्ता (सर्वोच्च मांसाहारी):* (उदा. शेर, बाज, मनुष्य)।
    - **अपघटक (मृतोपजीवी / Decomposers):** कवक और जीवाणु। ये मृत कार्बनिक पदार्थों का अपघटन कर खनिजों को पुनः मृदा व पर्यावरण में मुक्त करते हैं (इन्हें 'प्रकृति के सफाईकर्मी' या माइक्रो-कंज्यूमर कहा जाता है)।

2. पारिस्थितिकी तंत्र के मूलभूत कार्य (Ecosystem Functions)

- **ऊर्जा प्रवाह (Energy Flow):**
    - पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत **सूर्य का प्रकाश** है।
    - ऊर्जा का प्रवाह सदैव **एकदिशीय (Unidirectional)** होता है।
    - **लिंडेमैन का 10% नियम (1942):** प्रत्येक पोषण स्तर (Trophic Level) पर केवल लगभग 10% संचित ऊर्जा ही अगले पोषण स्तर में स्थानांतरित होती है; शेष 90% ऊर्जा श्वसन व उपापचयी ऊष्मा के रूप में विलीन हो जाती है।
- **पारिस्थितिक पिरामिड (Ecological Pyramids - चार्ल्स एल्टन):**
    - **ऊर्जा का पिरामिड:** सदैव **सीधा (Upright)** होता है (ऊष्मागतिकी के द्वितीय नियम के कारण)।
    - **संख्या का पिरामिड:** घास स्थल और फसल तंत्र में सीधा; एकल वृक्ष परितंत्र में **उल्टा (Inverted)**।

©IASHINDIMEDIUM

- **जैवभार (Biomass) का पिरामिड:** स्थलीय परितंत्र (वन/घास) में सीधा; **जलीय परितंत्र (तालाब/समुद्र) में उल्टा (Inverted)** होता है (क्योंकि पादप प्लवकों का तीव्र प्रजनन काल होने से उनका तात्कालिक जैवभार उपभोक्ता मछलियों से बहुत कम होता है)।

- **पारिस्थितिक दक्षता एवं उत्पादकता:**
  - **सकल प्राथमिक उत्पादकता (GPP):** प्रकाश संश्लेषण द्वारा जैवभार निर्माण की कुल दर।
  - **शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता (NPP):** $NPP = GPP - R$ (R = श्वसन क्षति)।
  - विश्व में सर्वाधिक प्राथमिक उत्पादकता **उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों, प्रवाल भित्तियों (Coral Reefs) तथा एश्चुअरी (ज्वारनदमुख)** में पाई जाती है।

- **पारिस्थितिक आला / निकेत (Ecological Niche):** जोसेफ ग्रिनेल द्वारा प्रतिपादित; यह किसी जीव की पर्यावरण में केवल भौतिक स्थिति नहीं, बल्कि उसकी **कार्यात्मक भूमिका (Functional Role)** को दर्शाता है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **भारत में रामसर आर्द्रभूमि विस्तार:** वर्ष 2025–2026 के दौरान उत्तर प्रदेश के जय प्रकाश नारायण पक्षी अभयारण्य (सुरहा ताल, बलिया) तथा सौज झील (मैनपुरी) सहित नए स्थलों को रामसर सूची में शामिल किए जाने से भारत में कुल रामसर स्थलों की संख्या बढ़कर 103 हो गई है, जिससे तमिलनाडु (20 स्थल) के बाद उत्तर प्रदेश (14 स्थल) देश में दूसरे स्थान पर पहुँच गया है।

- **प्लेनेटरी बाउंड्रीज एवं पारितंत्र क्षरण प्रतिवेदन (SOE 2026):** सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) द्वारा जारी प्रतिवेदन में रेखांकित किया गया कि पृथ्वी के नौ प्राकृतिक पारिस्थितिक संतुलन नियामकों (Planetary Boundaries) में से सात सीमाएँ (विशेषकर जैवमंडल अखंडता, जलवायु परिवर्तन और महासागरीय अम्लीकरण) मानवीय दबाव से पार हो चुकी हैं।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पारिस्थितिक पिरामिड और ऊर्जा प्रवाह के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा का पिरामिड सदैव सीधा (Upright) होता है।
2. जलीय पारिस्थितिकी तंत्र (जैसे समुद्र अथवा तालाब) में जैवभार (Biomass) का पिरामिड प्रायः उल्टा (Inverted) होता है।
3. लिंडेमैन के 10% नियम के अनुसार, एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर में स्थानांतरण पर 90% ऊर्जा संचित होती है तथा 10% ऊष्मा के रूप में नष्ट होती है।
4. एकल बड़े वृक्ष पर आधारित परजीवी खाद्य श्रृंखला में जीवों की संख्या का पिरामिड उल्टा बनता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: ऊर्जा ऊष्मागतिकी के द्वितीय नियम का पालन करती है; प्रत्येक उच्चतर पोषण स्तर पर उपलब्ध ऊर्जा निरंतर घटती जाती है, अतः ऊर्जा का पिरामिड कभी भी उल्टा नहीं हो सकता।
    - कथन 2 सत्य है: तालाब या खुले समुद्र में प्राथमिक उत्पादक (फाइटोप्लांकटन) का जीवनकाल बहुत छोटा होता है और उनका तात्कालिक बायोमास अपेक्षाकृत कम होता है, जबकि उन पर निर्भर बड़ी मछलियों का बायोमास बहुत अधिक होता है; अतः जैवभार का पिरामिड उल्टा बनता है।
    - कथन 3 असत्य है: लिंडेमैन (1942) के नियमानुसार केवल **10% ऊर्जा ही अगले स्तर में स्थानांतरित होती है**, जबकि **90% ऊर्जा उपापचय एवं श्वसन क्रियाओं में ऊष्मा के रूप में नष्ट हो जाती है**।
    - कथन 4 सत्य है: एक बड़े वृक्ष (एक उत्पादक) पर अनेक पक्षी (शाकाहारी) और उन पर सैकड़ों परजीवी कीट (उपभोक्ता) आश्रित होते हैं, जिससे संख्या का पिरामिड शीर्ष से चौड़ा और आधार पर संकरा यानी उल्टा हो जाता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पारिस्थितिक अवधारणा / पद)	**सूची-II (प्रतिपादक / मूल लक्षण)**
a. पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem)	1. जोसेफ ग्रिनेल (कार्यात्मक भूमिका)
b. पारिस्थितिकी (Ecology)	2. रेमंड लिंडेमैन (10% नियम)
c. पारिस्थितिक निकेत (Ecological Niche)	3. ए. जी. टेंसले (1935)
d. ऊर्जा स्थानांतरण दक्षता	4. अर्नेस्ट हेकेल (1866)

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem):** सर्वप्रथम 1935 में आर्थर जी. टेंसले द्वारा प्रस्तुत किया गया।
    - **पारिस्थितिकी (Ecology):** इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1866 में जर्मन जीवविज्ञानी अर्नेस्ट हेकेल ने किया था।
    - **पारिस्थितिक निकेत (Ecological Niche):** जोसेफ ग्रिनेल (1917) ने जीव की उसके प्राकृतिक आवास में विशिष्ट कार्यात्मक स्थिति और संसाधनों के उपयोग को निकेत के रूप में परिभाषित किया।

©IASHINDIMEDIUM

- **ऊर्जा स्थानांतरण दक्षता:** रेमंड लिंडेमैन ने 1942 में खाद्य श्रृंखला में पोषण स्तरों के बीच ऊर्जा प्रवाह का 10 प्रतिशत नियम प्रतिपादित किया।

टॉपिक - 2: खाद्य श्रृंखला और खाद्य जाल (Food Chain and Food Web)

पारिस्थितिकी तंत्र में पोषक तत्वों एवं ऊर्जा के एक जीव से दूसरे जीव में क्रमिक स्थानांतरण की रेखीय श्रृंखला को **खाद्य श्रृंखला (Food Chain)** कहते हैं। जब अनेक खाद्य श्रृंखलाएं आपस में जुड़कर एक जटिल, अंतर्संबंधित जाल का निर्माण करती हैं, तो उसे **खाद्य जाल (Food Web)** कहा जाता है।

1. खाद्य श्रृंखला के प्रकार

पारिस्थितिकी तंत्र में मुख्य रूप से दो प्रकार की खाद्य श्रृंखलाएं पाई जाती हैं:

- **चारण खाद्य श्रृंखला (Grazing Food Chain - GFC):**
  - यह सीधे **सूर्य के प्रकाश** तथा **जीवित स्वपोषी उत्पादकों (हरे पौधों)** से प्रारंभ होती है।
  - *क्रम:* पादप (उत्पादक) → शाकाहारी (प्राथमिक उपभोक्ता) → मांसाहारी (द्वितीयक उपभोक्ता) → शीर्ष मांसाहारी (तृतीयक उपभोक्ता)।
  - *उदाहरण:* घास → टिड्डा → मेंढक → सर्प → बाज।
  - जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा प्रवाह का मुख्य माध्यम चारण खाद्य श्रृंखला ही होती है (फाइटोप्लांकटन → जूप्लांकटन → छोटी मछली → बड़ी मछली)।
- **अपरद खाद्य श्रृंखला (Detritus Food Chain - DFC):**
  - यह **मृत कार्बनिक पदार्थों (Detritus)** जैसे गिरे हुए पत्ते, मृत पादप व जंतु अवशेषों से प्रारंभ होती है।
  - इसका संचालन **अपरदाहारी (Detritivores - जैसे केंचुआ)** तथा **अपघटक (जीवाणु एवं कवक)** द्वारा होता है।
  - स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा का एक बहुत बड़ा भाग चारण खाद्य श्रृंखला की अपेक्षा **अपरद खाद्य श्रृंखला के माध्यम से प्रवाहित** होता है।
  - *संयोजन:* DFC के कुछ जीव GFC के जीवों के शिकार बन सकते हैं (जैसे केंचुए को पक्षियों द्वारा खाना); इस प्रकार दोनों श्रृंखलाएं जुड़ी रहती हैं।

2. खाद्य जाल एवं पारिस्थितिक स्थिरता

- खाद्य जाल में जीवों के पास भोजन प्राप्ति के **वैकल्पिक मार्ग** उपलब्ध होते हैं।
- किसी पारिस्थितिकी तंत्र में खाद्य जाल जितना अधिक जटिल और विविध होगा, वह पारिस्थितिकी तंत्र बाह्य विक्षोभों के प्रति उतना ही अधिक **स्थिर (Resilient and Stable)** होगा।

3. जैव-संचयन एवं जैव-आवर्धन (प्रदूषकों की गतिशीलता)

©IASHINDIMEDIUM

- **जैव-संचयन (Bioaccumulation):** जब कोई अविघटनकारी प्रदूषक (Non-biodegradable pollutant) किसी जीव के शरीर में पर्यावरण (जल, वायु, मृदा) की तुलना में अधिक तेजी से संचित होने लगता है (यह प्रक्रिया **एक ही जीव के जीवनकाल** में होती है)।
- **जैव-आवर्धन (Biomagnification):** खाद्य श्रृंखला के विभिन्न पोषण स्तरों से गुजरते हुए प्रदूषक की सांद्रता में होने वाली **उत्तरोत्तर वृद्धि**।
    - *शर्तें:* प्रदूषक **अविघटनकारी, वसा-घुलनशील (Lipophilic) तथा जैविक रूप से सक्रिय** होना चाहिए।
    - *उदाहरण:* DDT और भारी धातुएं (पारा, कैडमियम)। जलीय खाद्य श्रृंखला में DDT की सांद्रता जल (0.003 ppb) से बढ़कर शीर्ष शिकारी पक्षियों (जैसे पेलिकन/बाज़) में 25 ppm तक पहुँच जाती है, जिससे पक्षियों के अंडों के छिलके पतले होकर समय से पूर्व टूट जाते हैं और उनकी संख्या घट जाती है।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **समुद्री खाद्य जालों में माइक्रोप्लास्टिक्स का जैव-आवर्धन:** भारतीय वैज्ञानिकों (KUFOS और NIT कालिकट) द्वारा अरब सागर एवं लक्षद्वीप सागर के समुद्री खाद्य जाल पर किए गए अध्ययन में प्लवक से लेकर शीर्ष शिकारी मछलियों (टूना, शार्क) तक नैनो व माइक्रोप्लास्टिक कणों के ट्रॉपिक ट्रांसफर (Trophic Transfer) और जैव-आवर्धन के स्पष्ट साक्ष्य प्रलेखित किए गए।
- **स्टॉकहोम कन्वेंशन में नए POPs का समावेशन:** स्थायी जैविक प्रदूषकों (POPs) पर संयुक्त राष्ट्र के स्टॉकहोम अभिसमय के तहत कृषि व औद्योगिक खाद्य श्रृंखलाओं में बायोमैग्निफिकेशन पैदा करने वाले नए पीएफएएस (PFAS - 'फॉरएवर केमिकल्स') और हैलोजेनेटेड कीटनाशकों के वैश्विक उत्पादन और उपयोग पर कड़े प्रतिबंध लगाए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. खाद्य श्रृंखला एवं खाद्य जाल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा का अधिकांश भाग चारण खाद्य श्रृंखला (GFC) की तुलना में अपरद खाद्य श्रृंखला (DFC) से होकर प्रवाहित होता है।
2. चारण खाद्य श्रृंखला मृत कार्बनिक पदार्थों से प्रारंभ होती है, जबकि अपरद खाद्य श्रृंखला हरे पौधों से शुरू होती है।
3. खाद्य जाल की विविधता और जटिलता किसी पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता को बढ़ाती है।
4. जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा प्रवाह का मुख्य संवाहक चारण खाद्य श्रृंखला होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 1 और 4 सत्य हैं: स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र (जैसे वन) में अधिकांश बायोमास गिरकर मृत हो जाता है, अतः ऊर्जा का बहुत बड़ा भाग अपरद खाद्य श्रृंखला (DFC) द्वारा प्रवाहित होता है। इसके विपरीत, जलीय तंत्र में प्राथमिक ऊर्जा प्रवाह चारण खाद्य श्रृंखला (GFC) के माध्यम से होता है।
- कथन 2 असत्य है: चारण खाद्य श्रृंखला (GFC) जीवित उत्पादकों (हरे पौधों) से प्रारंभ होती है, जबकि अपरद खाद्य श्रृंखला (DFC) मृत कार्बनिक पदार्थों एवं अपघटकों से शुरू होती है।
- कथन 3 सत्य है: खाद्य जाल में अनेक वैकल्पिक रास्ते उपलब्ध होने के कारण किसी एक प्रजाति के लुप्त होने पर पूरा परितंत्र नष्ट नहीं होता, जिससे पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता बनी रहती है।

प्रश्न 2. जैव-संचयन (Bioaccumulation) और जैव-आवर्धन (Biomagnification) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. जैव-संचयन एक ही पोषण स्तर अथवा एकल जीव के भीतर समय के साथ किसी प्रदूषक की सांद्रता में वृद्धि को दर्शाता है।
2. जैव-आवर्धन के अंतर्गत खाद्य श्रृंखला के प्रत्येक उच्च पोषण स्तर पर अविघटनकारी प्रदूषकों की सांद्रता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।
3. जल में घुलनशील और शीघ्र अपघटित होने वाले रसायन जैव-आवर्धन प्रदर्शित करने के लिए सबसे उपयुक्त होते हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2

(C) केवल 2 और 3

(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (A) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 और 2 सत्य हैं: जैव-संचयन एक जीव के जीवनकाल में प्रदूषक के प्रवेश और निष्कासन दर के अंतर के कारण होता है। वहीं जैव-आवर्धन एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर में जाने पर विषैले तत्वों की सांद्रता में क्रमिक वृद्धि है।
  - कथन 3 असत्य है: जैव-आवर्धन केवल उन्हीं प्रदूषकों का होता है जो **अविघटनकारी (Non-biodegradable)**, पर्यावरण में लंबे समय तक बने रहने वाले (Persistent), तथा **वसा में घुलनशील (Fat-soluble / Lipophilic)** होते हैं। जल में अत्यधिक घुलनशील और शीघ्र विघटित होने वाले रसायन उत्सर्जन तंत्र द्वारा बाहर निकल जाते हैं, अतः वे बायोमैग्निफिकेशन नहीं दर्शाते।

टॉपिक - 3: पारिस्थितिक पिरामिड (Ecological Pyramids)

पारिस्थितिक पिरामिड किसी पारिस्थितिकी तंत्र के विभिन्न पोषण स्तरों (Trophic Levels) पर उपस्थित जीवों की संख्या, जैवभार (बायोमास) अथवा संचित ऊर्जा के मध्य संबंधों का चित्रात्मक निरूपण है। इस संकल्पना का प्रतिपादन सर्वप्रथम 1927 में ब्रिटिश पारिस्थितिकीविद् **चार्ल्स एल्टन** द्वारा किया गया था, इसलिए इन्हें **'एल्टोनियन पिरामिड' (Eltonian Pyramids)** भी कहा जाता है।

पिरामिड का आधार सदैव **प्राथमिक उत्पादक** (T1) द्वारा तथा शीर्ष **सर्वोच्च उपभोक्ता** (T4/T5) द्वारा निर्मित होता है।

©IASHINDIMEDIUM

1. पारिस्थितिक पिरामिड के प्रकार

- **संख्या का पिरामिड (Pyramid of Numbers):**
    - यह प्रति इकाई क्षेत्रफल में प्रत्येक पोषण स्तर पर जीवों की कुल संख्या को दर्शाता है।
    - **सीधा (Upright):** घास के मैदान (घास → टिड्डा → मेंढक → बाज) एवं फसल परितंत्र में। यहाँ उत्पादकों की संख्या सर्वाधिक तथा शीर्ष उपभोक्ताओं की न्यूनतम होती है।
    - **उल्टा (Inverted): एकल वृक्ष परितंत्र (वृक्ष → पक्षी → परजीवी कीट)**। एक बड़े वृक्ष (एकल उत्पादक) पर अनेक पक्षी तथा उन पर अनगिनत परजीवी (जैसे जूं, खटमल) आश्रित होते हैं।
    - **तर्कुरूप (Spindle-shaped):** वन परितंत्र में कभी-कभी मध्यवर्ती स्तर (शाकाहारी) की संख्या अधिक होने पर यह तर्कुरूप भी बनता है।
- **जैवभार का पिरामिड (Pyramid of Biomass):**
    - यह प्रत्येक पोषण स्तर पर उपस्थित जीवों के कुल शुष्क भार (Dry Weight) को प्रदर्शित करता है।
    - **सीधा (Upright):** स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र (वन, घास स्थल)। वृक्षों/पादपों का कुल जैवभार शाकाहारियों व मांसाहारियों से बहुत अधिक होता है।
    - **उल्टा (Inverted): जलीय पारिस्थितिकी तंत्र (समुद्र, तालाब, झील)**। फाइटोप्लांकटन (पादप प्लवक) का जीवनकाल छोटा होने के कारण उनका तात्कालिक शुष्क भार उन पर आश्रित जूप्लांकटन एवं बड़ी मछलियों (जो कई वर्षों तक जीवित रहती हैं) की तुलना में बहुत कम होता है।
- **ऊर्जा का पिरामिड (Pyramid of Energy):**
    - यह एक निश्चित समयावधि में प्रत्येक पोषण स्तर से गुजरने वाली कुल ऊर्जा (कैलोरी/जूल) को मापता है।
    - **सदैव सीधा (Always Upright):** किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा का पिरामिड कभी उल्टा **नहीं** हो सकता।
    - **वैज्ञानिक आधार:** ऊष्मागतिकी का द्वितीय नियम तथा **रेमंड लिंडेमैन का 10% नियम (1942)**। ऊर्जा का प्रवाह एकदिशीय होता है और प्रत्येक पोषण स्तर पर केवल लगभग 10% ऊर्जा ही आगे स्थानांतरित होती है, जबकि 90% ऊर्जा श्वसन एवं उपापचयी क्रियाओं में ऊष्मा के रूप में विलीन हो जाती है।

2. पारिस्थितिक पिरामिडों की सीमाएँ

- यह एक ही प्रजाति के एक से अधिक पोषण स्तरों पर होने वाले समायोजन (जैसे सर्वाहारी मनुष्य या गौरैया) को शामिल नहीं करता।
- यह सदैव एक सरल खाद्य श्रृंखला को आधार मानता है, जबकि वास्तविक प्रकृति में जटिल **खाद्य जाल** कार्य करता है।
- इसमें पारिस्थितिकी तंत्र के अनिवार्य अंग **अपघटकों (Decomposers / मृतोपजीवियों)** को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **समुद्री ट्रोफिक डाउनग्रेडिंग एवं पेलैजिक बायोमास इनवर्जन अध्ययन:** संयुक्त राष्ट्र महासागर सम्मेलन और वैश्विक समुद्री जीवविज्ञान अध्ययनों के अनुसार, अत्यधिक मत्स्यन (Overfishing) और समुद्री ताप-तरंगों (Marine Heatwaves) के कारण

उत्तरी अटलांटिक एवं हिंद महासागर के कई क्षेत्रों में शीर्ष शिकारियों (टूना/शार्क) के जैवभार में 25% तक तीव्र गिरावट दर्ज की गई है, जिससे प्राकृतिक उलटे बायोमास पिरामिड की संरचनात्मक स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

- **कार्बन सिंक एवं वन बायोमास मैपिंग (FSI रिपोर्ट अद्यतन):** भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI) द्वारा सुदूर संवेदन उपग्रहों (LiDAR तकनीक) का उपयोग कर देश के वन परितंत्रों में विभिन्न पोषण स्तरों के भूमिगत (Root Biomass) और भूमि-उपरि बायोमास के कार्बन-स्टॉक रूपांतरण का सटीक पारिस्थितिक पिरामिड मॉडल जारी किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पारिस्थितिक पिरामिडों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा का पिरामिड कभी भी उल्टा (Inverted) नहीं हो सकता।
2. एक विशाल बरगद के वृक्ष पर आधारित परजीवी खाद्य श्रृंखला में जीवों की संख्या का पिरामिड उल्टा बनता है।
3. तालाब या समुद्र जैसे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में जैवभार (Biomass) का पिरामिड सदैव सीधा बनता है।
4. चार्ल्स एल्टन ने सर्वप्रथम पारिस्थितिक पिरामिड की अवधारणा प्रतिपादित की थी, जिसमें अपघटकों (Decomposers) को शीर्ष पोषण स्तर पर रखा गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: लिंडेमैन के 10% ऊर्जा नियम और ऊष्मागतिकी के द्वितीय नियम के अनुसार, निचले स्तर से ऊपर जाने पर ऊर्जा की निरंतर हानि होती है, अतः ऊर्जा पिरामिड अनिवार्यतः सदैव सीधा होता है।
    - कथन 2 सत्य है: एक वृक्ष (एकल उत्पादक) पर अनेक शाकाहारी पक्षी आश्रित होते हैं और उन पक्षियों के शरीर पर सैकड़ों बाह्य/आंतरिक परजीवी जीवित रहते हैं; अतः संख्या का पिरामिड आधार पर संकरा और शीर्ष पर चौड़ा (उल्टा) बनता है।
    - कथन 3 असत्य है: जलीय पारिस्थितिकी तंत्र (तालाब/समुद्र) में फाइटोप्लांकटन का तात्कालिक जैवभार कम होता है, जबकि बड़ी मांसाहारी मछलियों का जैवभार बहुत अधिक होता है; अतः जलीय परितंत्र में जैवभार का पिरामिड **उल्टा (Inverted)** होता है, सीधा नहीं।
    - कथन 4 असत्य है: यद्यपि चार्ल्स एल्टन ने पिरामिड की अवधारणा दी थी, परंतु पारिस्थितिक पिरामिडों की प्रमुख कमी यह है कि इनमें **अपघटकों (Decomposers) को कोई स्थान नहीं दिया गया है**।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (पारिस्थितिकी तंत्र / खाद्य प्रारूप)	सूची-II (पिरामिड का प्रकार एवं प्रकृति)
a. घास के मैदान में ऊर्जा का प्रवाह	1. संख्या का उल्टा पिरामिड
b. समुद्र में पादप प्लवक से व्हेल मछली तक	2. ऊर्जा का सदैव सीधा पिरामिड
c. एकल वृक्ष पर आश्रित परजीवी समुदाय	3. जैवभार का उल्टा पिरामिड
d. वन परितंत्र में काष्ठ एवं पत्तियों का शुष्क भार	4. जैवभार का सीधा पिरामिड

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **घास के मैदान में ऊर्जा:** सभी पारिस्थितिक तंत्रों की भांति ऊर्जा का पिरामिड सदैव सीधा होता है।
    - **समुद्र में उत्पादक से सर्वोच्च उपभोक्ता:** फाइटोप्लांकटन का बायोमास मछलियों की तुलना में कम होने से समुद्र में जैवभार का पिरामिड उल्टा बनता है।
    - **एकल वृक्ष पर परजीवी:** उत्पादक की संख्या केवल एक होती है और परजीवियों की संख्या अत्यधिक, अतः संख्या का पिरामिड उल्टा बनता है।
    - **वन परितंत्र में शुष्क भार:** वन में प्राथमिक उत्पादकों (विशाल वृक्षों) का जैवभार शाकाहारी व मांसाहारी जंतुओं से अत्यधिक होता है, अतः जैवभार का पिरामिड सीधा होता है।

टॉपिक - 4: जैव-भूरासायनिक चक्र (Biogeochemical Cycles)

पारिस्थितिकी तंत्र में पोषक तत्वों (Nutrients) का जैविक (Biotic) और अजैविक (Abiotic) घटकों के मध्य चक्रीय संचलन **जैव-भूरासायनिक चक्र** कहलाता है। ऊर्जा का प्रवाह जहाँ एकदिशीय (Unidirectional) होता है, वहीं पोषक तत्वों का चक्रण **चक्रीय (Cyclic)** होता है। पोषक भंडारों (Reservoirs) की प्रकृति के आधार पर इन्हें दो प्रमुख श्रेणियों में बाँटा जाता है:

1. चक्रों का वर्गीकरण

- **गैसीय चक्र (Gaseous Cycles):**

- इनका मुख्य भंडार (Reservoir) **वायुमंडल या जलमंडल** होता है। ये अत्यधिक तीव्र और स्वतः-संतुलित होते हैं।
- *उदाहरण:* नाइट्रोजन चक्र, कार्बन चक्र, ऑक्सीजन चक्र तथा जल चक्र।

- **अवसादी चक्र (Sedimentary Cycles):**
  - इनका भंडार **पृथ्वी की भूपर्पटी (भूपटल / चट्टानें एवं अवसाद)** होता है। इनका चक्रण धीमा और अपूर्ण होता है।
  - *उदाहरण:* फॉस्फोरस चक्र, सल्फर चक्र और कैल्शियम चक्र।

2. प्रमुख जैव-भूरासायनिक चक्र

- **नाइट्रोजन चक्र (Nitrogen Cycle):**
  - वायुमंडल में स्वतंत्र नाइट्रोजन (N_2) की मात्रा सर्वाधिक (~78%) है, किंतु अधिकांश जीव इसे प्रत्यक्ष रूप से ग्रहण नहीं कर सकते।
  - **नाइट्रोजन स्थिरीकरण (Fixation):** N_2 का अमोनिया (NH_3) अथवा नाइट्रेट (NO_3^-) में रूपांतरण।
    - *सहजीवी जीवाणु: Rhizobium* (दलहनी फसलों की जड़ों की ग्रंथियों में), *Frankia* (अ-दलहनी पादप एलनस में)।
    - *असहजीवी/स्वतंत्रजीवी जीवाणु: Azotobacter* (वायवीय), *Clostridium* (अवायवीय)।
    - *नील-हरित शैवाल (सायनोबैक्टीरिया): Anabaena*, *Nostoc* (धान के खेतों में जैव-उर्वरक)।
  - **नाइट्रीकरण (Nitrification):** दो चरणों में संपन्न—
    - $NH_3 \rightarrow NO_2^-$ (नाइट्राइट): *Nitrosomonas* एवं *Nitrococcus* जीवाणु द्वारा।
    - $NO_2^- \rightarrow NO_3^-$ (नाइट्रेट): *Nitrobacter* जीवाणु द्वारा।
  - **विनाइट्रीकरण (Denitrification):** नाइट्रेट (NO_3^-) का पुनः स्वतंत्र N_2 गैस में रूपांतरण होकर वायुमंडल में लौटना (*Pseudomonas* एवं *Thiobacillus* जीवाणु द्वारा)।

- **कार्बन चक्र (Carbon Cycle):**
  - पृथ्वी पर कुल कार्बन का लगभग 71% **भाग महासागरों में विलीन** (सर्वाधिक वैश्विक भंडार) है, जबकि वायुमंडल में केवल लगभग 1% कार्बन संचित है।
  - प्रकाश संश्लेषण द्वारा कार्बन का स्थिरीकरण होता है तथा श्वसन, अपघटन और जीवाश्म ईंधनों के दहन से CO_2 पुनः मुक्त होती है।

- **फॉस्फोरस चक्र (Phosphorus Cycle):**
  - यह एक आदर्श **अवसादी चक्र** है। फॉस्फोरस का मुख्य प्राकृतिक भंडार **फॉस्फेट युक्त चट्टानें** हैं।
  - अपक्षय (Weathering) द्वारा फॉस्फेट आयन (PO_4^{3-}) मृदा विलयन में आते हैं और पादप जड़ों द्वारा अवशोषित होते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- **विशिष्ट लक्षण:** इसमें **गैसीय श्वसन चरण का पूर्णतः अभाव** होता है; वायुमंडल में फॉस्फोरस का कोई आदान-प्रदान नहीं होता।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **वैश्विक नाइट्रोजन मूल्यांकन (Global Nitrogen Assessment):** संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा जारी अद्यतन समीक्षा में अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से उत्पन्न 'रिएक्टिव नाइट्रोजन' (N_2O, NH_3) के प्रवाह पर चेतावनी दी गई। रिपोर्ट के अनुसार कृषि अपवाह से मीठे जल के स्रोतों में सुपोषण (Eutrophication) और 'डेड ज़ोन' का विस्तार तीव्र हुआ है, जिसके शमन हेतु भारत द्वारा 'नैनो-यूरिया' और प्राकृतिक खेती के विस्तार को रेखांकित किया गया।
- **महासागरीय कार्बन सिंक एवं 'ब्लू कार्बन' मैपिंग:** पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय और एनआईओटी (NIOT) ने भारतीय तटीय क्षेत्र (मैंग्रोव, सी-ग्रास एवं साल्ट मार्श) में कार्बन पृथक्करण (Carbon Sequestration) दर की मैपिंग पूर्ण की, जिसके अनुसार ये तटीय पारिस्थितिक तंत्र स्थलीय वनों की तुलना में कार्बन चक्र से 4 गुना अधिक तेजी से कार्बन अवशोषित करते हैं।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. जैव-भूरासायनिक चक्रों (Biogeochemical Cycles) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नाइट्रोजन और कार्बन चक्र दोनों गैसीय प्रकार के पोषक चक्र हैं, जिनका मुख्य भंडार वायुमंडल अथवा जलमंडल में होता है।
2. फॉस्फोरस चक्र एक अवसादी चक्र है, जिसमें वायुमंडलीय श्वसन चरण पूर्णतः अनुपस्थित रहता है।
3. पृथ्वी पर उपस्थित कुल वैश्विक कार्बन का सबसे बड़ा भंडार वायुमंडल है।
4. *Nitrobacter* जीवाणु अमोनिया को सीधे गैसीय नाइट्रोजन में बदलने का कार्य करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (A) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: गैसीय चक्रों में पोषक तत्वों का मुख्य भंडार वायुमंडल या जलमंडल होता है; कार्बन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन एवं जल चक्र इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
    - कथन 2 सत्य है: फॉस्फोरस का प्राथमिक स्रोत भूपर्पटी की चट्टानें हैं। गैसीय रूप में फॉस्फोरस का वायुमंडल में चक्रण नहीं होता, अतः इसमें गैसीय विनिमय चरण नहीं पाया जाता।
    - कथन 3 असत्य है: पृथ्वी पर कुल कार्बन का लगभग 71% भाग **महासागरों में घुला हुआ (विलीन)** है; वायुमंडल में कुल वैश्विक कार्बन का केवल लगभग 1% भाग ही उपस्थित है।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 4 असत्य है: *Nitrobacter* नाइट्राइट (NO_2^-) को नाइट्रेट (NO_3^-) में ऑक्सीकृत करता है। नाइट्रेट को स्वतंत्र नाइट्रोजन में बदलने का कार्य विनाइट्रीकारक जीवाणु (जैसे *Pseudomonas* और *Thiobacillus*) करते हैं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (जैव-रासायनिक प्रक्रिया)	**सूची-II (संबंधित सूक्ष्मजीव / जीवाणु)**
a. सहजीवी नाइट्रोजन स्थिरीकरण	1. *Nitrosomonas*
b. अमोनिया का नाइट्राइट में रूपांतरण	2. *Pseudomonas*
c. नाइट्राइट का नाइट्रेट में रूपांतरण	3. *Rhizobium*
d. विनाइट्रीकरण (Denitrification)	4. *Nitrobacter*

कूट:

(A) a-3, b-1, c-4, d-2

(B) a-3, b-4, c-1, d-2

(C) a-2, b-1, c-4, d-3

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-4, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **सहजीवी नाइट्रोजन स्थिरीकरण:** *Rhizobium* लेग्युमिनोसी कुल के पादपों की जड़ों में ग्रंथियां बनाकर वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करता है।
  - **अमोनिया का नाइट्राइट में रूपांतरण:** नाइट्रीकरण के प्रथम चरण में *Nitrosomonas* और *Nitrococcus* अमोनिया (NH_3) को नाइट्राइट (NO_2^-) में बदलते हैं।
  - **नाइट्राइट का नाइट्रेट में रूपांतरण:** द्वितीय चरण में *Nitrobacter* नाइट्राइट को पादप-उपयोगी नाइट्रेट (NO_3^-) में ऑक्सीकृत करता है।
  - **विनाइट्रीकरण:** अवायवीय परिस्थितियों में *Pseudomonas* और *Thiobacillus* नाइट्रेट को पुनः मुक्त नाइट्रोजन गैस (N_2) में बदलकर वायुमंडल में छोड़ देते हैं।

टॉपिक - 5: पारिस्थितिक अनुक्रमण (Ecological Succession)

©IASHINDIMEDIUM

किसी दिए गए भौगोलिक क्षेत्र के जैविक समुदाय में समय के साथ होने वाला क्रमिक, नियमित एवं पूर्वानुमेय (Predictable) परिवर्तन **पारिस्थितिक अनुक्रमण** कहलाता है। अनुक्रमण के दौरान प्रजातियों के संघटन में परिवर्तन होता है और अंततः एक स्थिर समुदाय स्थापित होता है।

1. अनुक्रमण के मूलभूत चरण एवं शब्दावली

- **मूल अन्वेषक / पुरोगामी प्रजाति (Pioneer Species):** किसी अनावृत (नग्न) क्षेत्र पर सर्वप्रथम आक्रमण कर बसने वाला जैविक समुदाय।
    - *नग्न चट्टानों (Xerarch) पर:* **लाइकेन (क्रस्टोज़ लाइकेन → फोलिओज़ लाइकेन)**। लाइकेन अम्ल स्रावित कर चट्टानों का अपक्षय करते हैं, जिससे मृदा निर्माण प्रारंभ होता है।
    - *जल में (Hydrarch):* **पादप प्लवक (Phytoplankton)**।
- **क्रमक (Sere / Seral Stages):** पुरोगामी समुदाय से लेकर चरम समुदाय के बीच आने वाले सभी परिवर्तनीय एवं अस्थायी मध्यवर्ती समुदायों की संपूर्ण श्रृंखला को 'सेरे' तथा प्रत्येक चरण को 'क्रमकी चरण' कहते हैं।
- **चरम समुदाय (Climax Community):** अनुक्रमण का अंतिम, अत्यधिक स्थिर, जटिल एवं स्व-धारणीय समुदाय, जो स्थानीय जलवायु के साथ पूर्ण संतुलन (Equilibrium) में होता है (उदा. मेसिक वन / Mesic Forest)। यह तब तक नहीं बदलता जब तक कि पर्यावरण में बड़ा जलवायु परिवर्तन न हो जाए।

2. अनुक्रमण के प्रकार

- **प्राथमिक अनुक्रमण (Primary Succession):**
    - यह ऐसे स्थानों पर प्रारंभ होता है जहाँ पहले कभी कोई जीव नहीं रहा हो (उदा. नवनिर्मित लावा, नग्न चट्टान, नव-निर्मित डेल्टा या बालू का टीला)।
    - चूँकि यहाँ प्रारंभ में कोई मृदा या जैविक पदार्थ नहीं होता, अतः प्राथमिक अनुक्रमण में मृदा निर्माण की धीमी गति के कारण चरम समुदाय स्थापित होने में **सैकड़ों से हजारों वर्ष** लग जाते हैं।
- **द्वितीयक अनुक्रमण (Secondary Succession):**
    - यह उन क्षेत्रों में प्रारंभ होता है जहाँ पहले से प्राकृतिक जैविक समुदाय उपस्थित था, परंतु वह दावानल (जंगल की आग), बाढ़, भूस्खलन अथवा अति-चारण द्वारा नष्ट हो गया।
    - चूँकि यहाँ पहले से कुछ मृदा, कार्बनिक पदार्थ और बीजाणु/बीज उपस्थित होते हैं, अतः यह प्राथमिक अनुक्रमण की तुलना में **अत्यधिक तीव्र गति** से संपन्न होता है।
- **अन्य वर्गीकरण:**
    - **स्वजनित अनुक्रमण (Autogenic):** जब समुदाय स्वयं अपनी क्रियाओं द्वारा पर्यावरण को बदलकर नए समुदाय के लिए अनुकूल बनाता है।
    - **परजनित अनुक्रमण (Allogenic):** जब बाह्य भौतिक कारकों (जैसे अपरदन, निक्षेपण, आग) द्वारा परिवर्तन प्रेरित होता है।
    - **जलारंभी (Hydrarch) बनाम मरुआरंभी (Xerarch):** दोनों ही अनुक्रमण अंततः मध्यम जलीय दशाओं यानी **मध्योद्भिद (Mesic conditions)** की ओर बढ़ते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **अरावली ग्रीन वॉल परियोजना एवं द्वितीयक अनुक्रमण संवर्धन:** पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) द्वारा अरावली पर्वतमाला के क्षरित क्षेत्रों में पारिस्थितिक पुनर्जनन हेतु 'असिस्टेड नेचुरल रीजेनरेशन' (ANR) तकनीक लागू की गई, जिसमें द्वितीयक अनुक्रमण की गति तेज करने के लिए स्थानीय घास (धमन, सेवण) और देशी पादप प्रजातियों (खेजड़ी, कीकर) के सीड-बॉम्बिंग प्रयोग किए गए।
- **वायनाड एवं चमोली भूस्खलन-प्रभावित ढलानों पर पुरोगामी प्रजाति अध्ययन:** भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (ICFRE) ने भूस्खलन से अनावृत हुई नई चट्टानी ढलानों पर प्राथमिक अनुक्रमण का विश्लेषण करते हुए स्थानीय ब्रायोफाइट्स और फर्न की प्रजातियों को मृदा स्थिरीकरण (Soil Stabilization) के लिए प्राथमिक बायो-इंजीनियरिंग घटकों के रूप में चिह्नित किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पारिस्थितिक अनुक्रमण (Ecological Succession) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नग्न चट्टानों पर होने वाले मरुआरंभी (Xerarch) अनुक्रमण में लाइकेन पुरोगामी (Pioneer) प्रजाति के रूप में कार्य करते हैं।
2. प्राथमिक अनुक्रमण की तुलना में द्वितीयक अनुक्रमण अत्यधिक तीव्र गति से संपन्न होता है क्योंकि वहाँ मृदा और जैविक अवशेष पहले से उपस्थित होते हैं।
3. जलारंभी (Hydrarch) एवं मरुआरंभी (Xerarch) दोनों प्रकार के अनुक्रमण अंततः मध्यम जलीय (Mesic) परिस्थितियों की ओर अग्रसर होते हैं।
4. चरम समुदाय (Climax community) पर्यावरण के साथ अस्थिर संबंध रखता है और निरंतर तीव्रता से बदलता रहता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: नग्न चट्टानों पर सबसे पहले क्रस्टोज़ और फोलिओज़ लाइकेन उगते हैं, जो कार्बनिक अम्ल स्रावित कर चट्टानों को तोड़ते हैं और मृदा निर्माण की नींव रखते हैं।
    - कथन 2 सत्य है: प्राथमिक अनुक्रमण में मृदा न होने के कारण आधारभूत मृदा निर्माण में सदियां लग जाती हैं, जबकि द्वितीयक अनुक्रमण (उदा. जले हुए वन क्षेत्र) में पहले से उपस्थित मृदा एवं प्रसुप्त बीजों के कारण चरम समुदाय शीघ्र पुनर्स्थापित हो जाता है।
    - कथन 3 सत्य है: चाहे अनुक्रमण अत्यधिक जल वाली परिस्थितियों (Hydrarch) में शुरू हो या अत्यधिक शुष्क परिस्थितियों (Xerarch) में, दोनों ही क्रमिक परिवर्तनों के उपरांत मध्यम आर्द्रता (Mesic) वाले वन समुदाय में परिणत होते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 4 असत्य है: चरम समुदाय स्थानीय जलवायु के साथ स्थायी संतुलन (Equilibrium) में होता है; यह स्थिर, विविधतापूर्ण और स्व-नियंत्रित होता है, न कि अस्थिर।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पारिस्थितिक शब्दावली)	**सूची-II (अभिलक्षण / उदाहरण)**
a. प्राथमिक अनुक्रमण	1. जल-प्लावित अथवा शुष्क दशाओं का सम-आर्द्र स्थिति में पहुँचना
b. द्वितीयक अनुक्रमण	2. दावानल या अति-चारण से नष्ट हुए वन का पुनः विकास
c. मध्योद्भिद स्थिति (Mesic)	3. ज्वालामुखी से निकले ठंडे हुए नए लावा पर जीवों का बसना
d. क्रमक (Sere)	4. पुरोगामी से चरम समुदाय के बीच के क्रमिक परिवर्तनीय चरण

कूट:

(A) a-3, b-2, c-1, d-4

(B) a-3, b-1, c-2, d-4

(C) a-2, b-3, c-1, d-4

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-2, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **प्राथमिक अनुक्रमण:** नवनिर्मित ठंडे लावा, नग्न चट्टान या रेत के टीलों जैसे पूर्णतः नए और जैविक-विहीन क्षेत्रों पर प्रारंभ होता है।
  - **द्वितीयक अनुक्रमण:** प्राकृतिक आपदा (आग, बाढ़) द्वारा नष्ट हो चुके पूर्व-स्थापित पारिस्थितिक आवास पर दोबारा होता है।
  - **मध्योद्भिद स्थिति (Mesic):** अनुक्रमण का वह संतुलित पड़ाव जहाँ न तो अत्यधिक जलभराव होता है और न ही अत्यधिक शुष्कता।
  - **क्रमक (Sere):** किसी क्षेत्र में अनुक्रमण के दौरान क्रमिक रूप से प्रतिस्थापित होने वाले सभी मध्यवर्ती समुदायों की संपूर्ण श्रृंखला को सेरे कहते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

पर्यावरणीय मुद्दे एवं प्रदूषण

टॉपिक - 1: वायु प्रदूषण (PM2.5, PM10, NOx एवं अन्य प्रमुख प्रदूषक)

वायु प्रदूषण वायुमंडल में हानिकारक ठोस कणों, तरल बूंदों या गैसों का ऐसा अवांछित जमाव है, जो मानव स्वास्थ्य, जैव विविधता एवं जलवायु पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। प्रदूषकों को उनकी उत्पत्ति के आधार पर **प्राथमिक प्रदूषक** (सीधे स्रोत से उत्सर्जित: जैसे CO, SO_2, NO, प्राथमिक कणीय पदार्थ) तथा **द्वितीयक प्रदूषक** (प्राथमिक प्रदूषकों की वायुमंडलीय अभिक्रियाओं से निर्मित: जैसे ओजोन O_3, पैन/PAN, सल्फ्यूरिक एसिड H_2SO_4, स्मॉग) में वर्गीकृत किया जाता है।

1. कणीय पदार्थ: PM_{10} एवं $PM_{2.5}$ (Particulate Matter)

- PM_{10} **(स्थूल कणीय पदार्थ / Coarse PM):**
  - कणों का व्यास **10 माइक्रोमीटर (μm) या उससे कम** होता है।
  - **स्रोत:** धूल भरी आंधियाँ, निर्माण एवं विध्वंस गतिविधियाँ, सड़कों की उड़ती धूल, फ्लाई ऐश तथा कृषि अपशिष्ट दहन।
  - **स्वास्थ्य प्रभाव:** श्वसन तंत्र की ऊपरी नलियों (नाक और श्वासनली) में पहुंचकर ब्रोन्कियोल्स में अवरोध, दमा और एलर्जी उत्पन्न करता है।
- $PM_{2.5}$ **(सूक्ष्म कणीय पदार्थ / Fine PM):**
  - कणों का व्यास **2.5 माइक्रोमीटर या उससे कम** होता है (मानव बाल की मोटाई का लगभग 30वाँ भाग)।
  - **स्रोत:** जीवाश्म ईंधन (पेट्रोल, डीजल, कोयला) का दहन, औद्योगिक उत्सर्जन तथा माध्यमिक एरोसोल निर्माण।
  - **स्वास्थ्य प्रभाव:** अत्यधिक सूक्ष्म होने के कारण यह फेफड़ों के गहराई वाले हिस्से (Alveoli/कूपिकाओं) तक पहुंच जाता है और सीधे रक्त प्रवाह में प्रवेश कर **कार्डियोवैस्कुलर (हृदय) रोग, फेफड़ों का कैंसर एवं स्ट्रोक** का कारण बनता है।

2. नाइट्रोजन के ऑक्साइड्स (NO_x)

- **घटक एवं निर्माण:** मुख्य रूप से नाइट्रिक ऑक्साइड (NO) तथा नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (NO_2)। ये उच्च तापमान पर आंतरिक दहन इंजनों (वाहनों), ताप विद्युत संयंत्रों तथा रासायनिक उर्वरक उद्योगों में वायुमंडलीय नाइट्रोजन और ऑक्सीजन के संयोजन से बनते हैं।
- **पारिस्थितिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव:**
  - **प्रकाश-रासायनिक स्मॉग (Photochemical Smog):** गर्म, धूप वाले दिनों में NO_x और वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (VOCs) सूर्य के प्रकाश (UV विकिरण) की उपस्थिति में अभिक्रिया कर **धरातलीय ओजोन (O_3)** तथा

परॉक्सीएसिटिल नाइट्रेट (PAN) बनाते हैं। इसे 'लॉस एंजिल्स स्मॉग' भी कहते हैं, जो आंखों में तीव्र जलन और पौधों की पत्तियों को क्षति पहुँचाता है।

- **अम्ल वर्षा (Acid Rain):** NO_2 जलवाष्प से क्रिया कर नाइट्रिक अम्ल (HNO_3) बनाता है, जो SO_2 से बने H_2SO_4 के साथ मिलकर वर्षा के जल का pH मान 5.6 से कम कर देता है।

3. राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता सूचकांक (NAQI) मानक

- भारत में 2014 में प्रारंभ NAQI के अंतर्गत **8 प्रमुख प्रदूषकों** को ट्रैक किया जाता है: PM_{10}, $PM_{2.5}$, NO_2, SO_2, CO, O_3, NH_3 (अमोनिया) तथा Pb (सीसा)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) अद्यतन एवं CAQM निर्देश:** वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) द्वारा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) और उससे सटे उत्तर प्रदेश के जिलों (नोएडा, गाजियाबाद, हापुड़, मेरठ) में वायु गुणवत्ता के 'गंभीर+' (Severe+) श्रेणी में पहुँचने पर $PM_{2.5}$ उत्सर्जन को रोकने हेतु गैर-BS VI डीजल वाहनों के प्रवेश पर स्वचालित कैमरे-आधारित चालान प्रणाली और निर्माण स्थलों पर अनिवार्य डस्ट सेपरेशन स्क्रीन के नए मानक लागू किए गए।
- **राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) प्रगति रिपोर्ट:** पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी मूल्यांकन के अनुसार, 2026 तक PM_{10} और $PM_{2.5}$ सांद्रता में 40% तक कमी लाने के राष्ट्रीय लक्ष्य के तहत उत्तर प्रदेश के 17 गैर-प्राप्ति (Non-Attainment) शहरों में इलेक्ट्रिक बसों के बेड़े के विस्तार और औद्योगिक बॉयलरों में बायोमास सह-दहन (Co-firing) को अनिवार्य किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. वायुमंडलीय प्रदूषकों और उनके प्रभावों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. $PM_{2.5}$ कणों का आकार इतना सूक्ष्म होता है कि वे फेफड़ों की कूपिकाओं (Alveoli) को पार कर सीधे रक्त परिसंचरण में प्रवेश कर सकते हैं।
2. प्रकाश-रासायनिक स्मॉग (Photochemical Smog) का निर्माण ठंडे, नम मौसम में SO_2 और धुएं के मिलने से होता है।
3. राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) के निर्धारण में कुल 8 प्रदूषकों को सम्मिलित किया जाता है, जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) शामिल नहीं है।
4. नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (NO_2) अम्ल वर्षा के प्रमुख घटकों में से एक नाइट्रिक अम्ल (HNO_3) के निर्माण के लिए उत्तरदायी है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 3 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर: (B) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: $PM_{2.5}$ (व्यास $\leq 2.5\,\mu m$) श्वसन तंत्र की प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली को भेदकर रक्त वाहिकाओं तक पहुंच जाता है, जिससे हृदय और मस्तिष्क संबंधी गंभीर बीमारियां होती हैं।
    - कथन 2 असत्य है: प्रकाश-रासायनिक स्मॉग (Photochemical Smog) **गर्म, शुष्क और धूप वाले दिनों** में नाइट्रोजन के ऑक्साइड्स (NO_x) तथा हाइड्रोकार्बन्स (VOCs) पर पराबैंगनी किरणों की क्रिया से बनता है। ठंडे और नम मौसम में SO_2 और धुएं के मिलने से बनने वाले स्मॉग को **शास्त्रीय स्मॉग (Classical/London Smog)** या अपचायक स्मॉग कहते हैं।
    - कथन 3 सत्य है: भारतीय राष्ट्रीय AQI में 8 प्रदूषक शामिल हैं: $PM_{10}, PM_{2.5}, NO_2, SO_2, CO, O_3, NH_3$ एवं Pb। इसमें CO_2 शामिल नहीं है।
    - कथन 4 सत्य है: वातावरण में NO_2 जलवाष्प के साथ प्रतिक्रिया कर HNO_3 (नाइट्रिक अम्ल) का निर्माण करती है, जो अम्ल वर्षा का प्रमुख घटक है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (प्रदूषक / परिघटना)	**सूची-II (प्राथमिक विशेषता / प्रभाव)**
a. परॉक्सीएसिटिल नाइट्रेट (PAN)	1. हीमोग्लोबिन से तीव्र बंधुता (ऑक्सीजन परिवहन में बाधा)
b. कार्बन मोनोऑक्साइड (CO)	2. द्वितीयक प्रदूषक एवं आंखों में तीव्र जलन
c. क्लासिकल (लंदन) स्मॉग	3. धरातलीय ओजोन एवं स्मॉग निर्माण में उत्प्रेरक
d. नाइट्रोजन के ऑक्साइड (NO_x)	4. अपचायक प्रकृति (SO_2 एवं आर्द्र सर्दी में निर्माण)

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-3, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- **परॉक्सीएसिटिल नाइट्रेट (PAN):** प्रकाश-रासायनिक स्मॉग में निर्मित एक शक्तिशाली द्वितीयक प्रदूषक है, जो मनुष्यों में आंखों व फेफड़ों में तीव्र जलन पैदा करता है।
- **कार्बन मोनोऑक्साइड (CO):** यह रक्त के हीमोग्लोबिन के साथ ऑक्सीजन की तुलना में लगभग 250 से 300 गुना अधिक तीव्रता से जुड़कर कार्बोक्सीहीमोग्लोबिन बनाती है, जिससे ऊतकों में हाइपोक्सिया (ऑक्सीजन की कमी) हो जाती है।
- **क्लासिकल स्मॉग:** यह कोयले के धुएं और SO_2 के मिश्रण से अत्यधिक ठंडी, आर्द्र सुबह में बनता है तथा इसकी प्रकृति अपचायक (Reducing) होती है।
- **नाइट्रोजन के ऑक्साइड (NO_x):** वाहनों और बॉयलरों से उत्सर्जित होकर वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों के साथ मिलकर धरातलीय ओजोन और प्रकाश-रासायनिक धुंध का निर्माण करते हैं।

टॉपिक - 2: स्मॉग और कोहरा (Smog and Fog)

कोहरा (Fog) एक प्राकृतिक मौसमी परिघटना है, जबकि स्मॉग (Smog = Smoke + Fog) मानवजनित वायु प्रदूषण एवं विशिष्ट मौसमी परिस्थितियों के संयोग से उत्पन्न होने वाली हानिकारक वायुमंडलीय धुंध है। 'स्मॉग' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1905 में **डॉ. हेनरी एंटोनी डे वोक्स** ने किया था।

1. कोहरा (Fog) बनाम स्मॉग (Smog)

- **कोहरा (Fog):** जब धरातल के निकट नम वायु का तापमान ओसांक (Dew Point) से नीचे गिर जाता है, तो जलवाष्प धूल एवं संघनन नाभिकों (Condensation Nuclei) पर संघनित होकर सूक्ष्म जल-बूंदों के रूप में तैरने लगती है। यह एक **शुद्ध भौतिक एवं प्राकृतिक परिघटना** है, जिसमें हानिकारक रासायनिक गैसों की सांद्रता नहीं होती।
- **स्मॉग (Smog):** जब कोहरे में औद्योगिक कालिख (Soot), सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2), नाइट्रोजन के ऑक्साइड (NO_x), हाइड्रोकार्बन्स तथा कणीय पदार्थ मिल जाते हैं, तो स्मॉग का निर्माण होता है।

2. स्मॉग के दो प्रमुख प्रकार

आधार	**शास्त्रीय / लंदन स्मॉग (Classical Smog)**	**प्रकाश-रासायनिक / लॉस एंजिल्स स्मॉग (Photochemical Smog)**
सर्वप्रथम घटना	1952 में लंदन में ('ग्रेट स्मॉग ऑफ लंदन')	1940 के दशक में लॉस एंजिल्स में
जलवायु परिस्थितियाँ	**अत्यधिक ठंडी, आर्द्र एवं शांत सुबह**	**गर्म, शुष्क एवं तीव्र धूप (सूर्य का प्रकाश)**
मुख्य घटक	धुआं, कोहरा, कालिख एवं **सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2)**	**NO_x, वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (VOCs), O_3, PAN, एक्रोलीन**

©IASHINDIMEDIUM

आधार	शास्त्रीय / लंदन स्मॉग (Classical Smog)	प्रकाश-रासायनिक / लॉस एंजिल्स स्मॉग (Photochemical Smog)
रासायनिक प्रकृति	अपचायक (Reducing Smog)	ऑक्सीकारक (Oxidizing Smog)
मुख्य स्रोत	घरों व कारखानों में कोयले का भारी दहन	वाहनों का आंतरिक दहन इंजन (Automobile Exhaust)
स्वास्थ्य प्रभाव	गंभीर श्वसन अवरोध, ब्रोंकाइटिस, फेफड़ों की क्षति	आंखों में तीखापन/जलन, पादप पत्तियों पर नेक्रोसिस, अस्थमा

3. शीतकालीन स्मॉग और तापमान व्युत्क्रमण (Temperature Inversion)

- सामान्यतः क्षोभमंडल में ऊँचाई के साथ तापमान घटता है (6.5°C/km)।
- परंतु शीत ऋतु की लंबी, शांत रात्रियों में धरातल तेजी से ठंडा हो जाता है, जिससे नीचे ठंडी व भारी वायु की परत जम जाती है और उसके ऊपर अपेक्षाकृत गर्म वायु की परत आ जाती है। इसे **तापीय प्रतिलोमन (Temperature Inversion)** कहते हैं।
- यह गर्म वायु की परत एक 'ढक्कन' (Cap) की तरह कार्य करती है, जिससे धुआं, कणीय पदार्थ ($PM_{2.5}, PM_{10}$) और प्रदूषक ऊपर नहीं उठ पाते और जमीन के निकट फंसकर घने, विषैले स्मॉग का निर्माण करते हैं (उत्तर भारत/गंगा के मैदानों में नवंबर-जनवरी में यही स्थिति बनती है)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **क्लाउड सीडिंग एवं कृत्रिम वर्षा प्रोटोकॉल:** IIT कानपुर और उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (UPPCB) द्वारा पश्चिमी उत्तर प्रदेश और एनसीआर क्षेत्र में शीतकालीन चरम स्मॉग व तापीय प्रतिलोमन को तोड़ने हेतु सिल्वर आयोडाइड और सोडियम क्लोराइड फ्लेयर्स से युक्त ड्रोन-आधारित क्लाउड सीडिंग का मानक संचालन प्रोटोकॉल (SOP) तैयार किया गया।
- **एंटी-स्मॉग गन एवं मिस्ट स्प्रेयर गाइडलाइंस:** केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) ने बड़े शहरी निर्माण स्थलों पर हवा में तैरते PM_{10} व धुंध को नीचे बैठाने के लिए शोधित अपशिष्ट जल का उपयोग करते हुए मोबाइल एंटी-स्मॉग गन की निरंतर रीयल-टाइम ट्रैकिंग अनिवार्य की।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. शास्त्रीय स्मॉग (लंदन स्मॉग) और प्रकाश-रासायनिक स्मॉग (लॉस एंजिल्स स्मॉग) की तुलना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. शास्त्रीय स्मॉग ठंडी व आर्द्र जलवायु में बनता है और इसकी रासायनिक प्रकृति अपचायक (Reducing) होती है।
2. प्रकाश-रासायनिक स्मॉग तीव्र सौर प्रकाश में नाइट्रोजन के ऑक्साइड्स और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों की पारस्परिक क्रिया से निर्मित होता है।
3. ओजोन (O_3) और परॉक्सीएसिटिल नाइट्रेट (PAN) शास्त्रीय स्मॉग के प्राथमिक घटक हैं।

©IASHINDIMEDIUM

4. शीतकाल में गंगा के मैदानी भागों में होने वाला गंभीर स्मॉग जमाव तापमान के सामान्य ह्रास दर (Normal Lapse Rate) के तीव्र होने के कारण होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (A) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: शास्त्रीय स्मॉग कोयले के धुएं और SO_2 से ठंडी व नम परिस्थितियों में बनता है तथा SO_2 की उपस्थिति के कारण अपचायक होता है।
    - कथन 2 सत्य है: प्रकाश-रासायनिक स्मॉग धूप वाले गर्म दिनों में वाहनों से निकले NO_x और हाइड्रोकार्बन्स पर UV किरणों के प्रभाव से बनता है और यह ऑक्सीकारक प्रकृति का होता है।
    - कथन 3 असत्य है: धरातलीय ओजोन और PAN **प्रकाश-रासायनिक स्मॉग** के घटक हैं, शास्त्रीय स्मॉग के नहीं।
    - कथन 4 असत्य है: शीतकाल में प्रदूषकों का जमाव सामान्य ह्रास दर से नहीं, बल्कि **तापमान व्युत्क्रमण / तापीय प्रतिलोमन (Temperature Inversion)** के कारण होता है, जहाँ निचली ठंडी हवा ऊपर की गर्म हवा के ढक्कन के नीचे फंस जाती है।

प्रश्न 2. वायुमंडलीय परिघटना 'तापीय प्रतिलोमन' (Temperature Inversion) के संदर्भ में कौन-सा कथन सही है?

(A) यह वह स्थिति है जिसमें ऊँचाई बढ़ने के साथ वायुमंडलीय तापमान में सामान्य रूप से गिरावट आती है।

(B) इस स्थिति में ठंडी वायु की परत ऊपर तथा गर्म वायु की परत धरातल के ठीक समीप पाई जाती है।

(C) इस स्थिति में धरातल के निकट ठंडी व सघन वायु की परत के ऊपर अपेक्षाकृत गर्म वायु की परत स्थित हो जाती है, जो प्रदूषकों के ऊर्ध्वाधर विसरण को अवरुद्ध कर देती है।

(D) तापीय प्रतिलोमन केवल ग्रीष्म ऋतु के दोपहर में तीव्र संवहनीय धाराओं के कारण घटित होता है।

उत्तर: (C)

- **विस्तृत व्याख्या:** सामान्य दशा में ऊँचाई के साथ तापमान घटता है, किंतु शांत शीतकालीन रात्रियों में धरातल के तेजी से ठंडे होने पर जमीन के निकट ठंडी हवा और उसके ऊपर अपेक्षाकृत गर्म हवा की परत स्थापित हो जाती है (तापीय व्युत्क्रमण)। यह गर्म परत वायुमंडलीय संवहन को रोक देती है, जिससे धुआं, धूल और कणीय पदार्थ ऊपर नहीं जा पाते और धरातल के समीप ही स्मॉग का रूप धारण कर लेते हैं।

टॉपिक - 3: जल प्रदूषण (BOD, COD, सुपोषण एवं भारी धातु विषाक्तता)

जल के भौतिक, रासायनिक अथवा जैविक गुणों में होने वाला ऐसा अवांछनीय परिवर्तन, जो मानव स्वास्थ्य, जलीय पारिस्थितिकी तंत्र एवं अन्य जीवों पर हानिकारक प्रभाव डालता है, **जल प्रदूषण** कहलाता है। इसके प्रमुख स्रोतों में अनुपचारित घरेलू सीवेज, औद्योगिक बहिःस्राव (Effluents), कृषि अपवाह (उर्वरक एवं कीटनाशक) तथा तापीय संयंत्र शामिल हैं।

1. जल गुणवत्ता संकेतक: DO, BOD एवं COD

- **घुलित ऑक्सीजन (Dissolved Oxygen - DO):**
    - जल में उपस्थित ऑक्सीजन की वह मात्रा जो जलीय जीवन के अस्तित्व हेतु आवश्यक है।
    - आदर्श रूप से स्वच्छ जल में DO का स्तर $8 - 9$ mg/L **या उससे अधिक** होना चाहिए। यदि DO का स्तर 4 mg/L **से नीचे** चला जाता है, तो जल को 'अत्यधिक प्रदूषित' माना जाता है और जलीय जीवों की मृत्यु होने लगती है।
- **जैव-रासायनिक ऑक्सीजन मांग (Biochemical Oxygen Demand - BOD):**
    - जल के एक लीटर नमूने में उपस्थित **केवल अपघटनशील कार्बनिक पदार्थों** को सूक्ष्मजीवों (जीवाणुओं) द्वारा $20°$C पर 5 दिनों में विघटित करने हेतु आवश्यक ऑक्सीजन की मात्रा (BOD$_5$)।
    - BOD जल में **जैव-निम्नीकरणीय (Biodegradable) कार्बनिक प्रदूषण** की सीधी माप है।
    - उच्च BOD = निम्न DO = उच्च जल प्रदूषण। शुद्ध पेयजल का BOD 1 mg/L **से कम** होना चाहिए।
- **रासायनिक ऑक्सीजन मांग (Chemical Oxygen Demand - COD):**
    - जल में उपस्थित **जैव-निम्नीकरणीय एवं अजैव-निम्नीकरणीय (Non-biodegradable) दोनों प्रकार के कार्बनिक पदार्थों** को प्रबल ऑक्सीकारक (जैसे पोटेशियम डाइक्रोमेट - $K_2Cr_2O_7$) द्वारा ऑक्सीकृत करने हेतु आवश्यक कुल ऑक्सीजन की मात्रा।
    - किसी भी जल नमूने के लिए सदैव: COD $>$ BOD।

2. सुपोषण (Eutrophication)

- कृषि अपवाह से नाइट्रेट्स एवं फॉस्फेट्स के जलाशयों में मिलने से जल में पोषकों का अति-संवर्धन होता है।
- इससे शैवालों की अनियंत्रित वृद्धि होती है, जिसे **'एल्गल ब्लूम' (Algal Bloom)** कहते हैं।
- शैवालों के मृत होने पर उनके अपघटन हेतु जीवाणु अत्यधिक घुलित ऑक्सीजन का उपभोग कर लेते हैं, जिससे जल में **हाइपोक्सिया (ऑक्सीजन की तीव्र कमी)** उत्पन्न हो जाती है और जलाशय अंततः **'डेड ज़ोन' (Dead Zone)** में परिवर्तित हो जाता है।

3. भारी धातुओं से होने वाली प्रमुख विषाक्तताएं (विगत वर्षों का कोर फोकस)

- **पारा (Mercury - Hg): मीनामाटा रोग** (तंत्रिका तंत्र विकार, दृष्टि हानि, लकवा)। यह सर्वप्रथम 1956 में जापान की मीनामाटा खाड़ी में मिथाइल मरकरी युक्त मछलियों के भक्षण से फैला था।
- **कैडमियम (Cadmium - Cd): इटाई-इटाई रोग** (अस्थि एवं जोड़ों में तीव्र दर्द, गुर्दे की विफलता)। इसे 'आउच-आउच रोग' भी कहते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- **आर्सेनिक (Arsenic -** As**): ब्लैक फुट रोग (Black Foot Disease)**, त्वचा पर केराटोसिस एवं फेफड़ों/त्वचा का कैंसर। गंगा-ब्रह्मपुत्र के मैदानी भागों (पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश का बलिया आदि) के भूजल में आर्सेनिक की उच्च सांद्रता पाई जाती है।

- **नाइट्रेट (Nitrate -** NO_3^-**): ब्लू बेबी सिंड्रोम (मेथेमोग्लोबिनेमिया)**। शिशुओं द्वारा नाइट्रेट युक्त जल ग्रहण करने पर यह हीमोग्लोबिन से जुड़कर मेथेमोग्लोबिन बना देता है, जिससे ऑक्सीजन वहन क्षमता नष्ट हो जाती है।

- **फ्लोराइड (Fluoride -** F^-**): फ्लोरोसिस** (दांतों का पीलापन/क्षरण और हड्डियों का टेढ़ा-मेढ़ा होना / नॉक-नी सिंड्रोम)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **नमामि गंगे मिशन 2.0 एवं रीयल-टाइम सीवेज मॉनिटरिंग:** राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) द्वारा उत्तर प्रदेश के कानपुर, प्रयागराज और वाराणसी में नदी प्रदूषण की रोकथाम हेतु 100% एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) पर स्वचालित ऑनलाइन बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड (BOD) और टोटल सस्पेंडेड सॉलिड्स (TSS) सेंसर्स अनिवार्य किए गए, जिससे नदी के मुख्य प्रवाह में अनुपचारित नाले गिरने पर स्वतः अलर्ट जारी होता है।

- **केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) आर्सेनिक एवं यूरेनियम मैपिंग:** CGWB द्वारा जारी राष्ट्रीय भूजल गुणवत्ता एटलस में उत्तर प्रदेश के तराई एवं पूर्वी जिलों के गहरे नलकूपों में आर्सेनिक संदूषण के साथ-साथ कुछ क्षेत्रों में यूरेनियम की उपस्थिति दर्ज की गई, जिसके समाधान हेतु कम लागत वाले 'अमली-मुक्त अधिशोषण' (Adsorption filters) लगाने की योजना शुरू की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. जल प्रदूषण की वैज्ञानिक माप और संकेतकों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. किसी जल निकाय में जैव रासायनिक ऑक्सीजन मांग (BOD) का उच्च मान यह दर्शाता है कि जल में घुलित ऑक्सीजन (DO) का स्तर उच्च है।

2. रासायनिक ऑक्सीजन मांग (COD) का मान सदैव उसी जल नमूने के BOD मान से अधिक या उसके बराबर होता है क्योंकि यह जैव और अजैव दोनों प्रकार के कार्बनिक पदार्थों को मापता है।

3. सुपोषण (Eutrophication) की परिघटना मुख्य रूप से जल में सल्फेट और क्लोराइड आयनों के अत्यधिक संचय के कारण होती है।

4. पीने के पानी में घुलित ऑक्सीजन (DO) का स्तर 4 mg/L से कम होना जल के भारी प्रदूषण का सूचक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 1 असत्य है: BOD और DO के बीच व्युत्क्रमानुपाती संबंध होता है। जल में कार्बनिक अपशिष्ट अधिक होने पर अपघटक जीवाणु जल की घुलित ऑक्सीजन तेजी से खर्च कर देते हैं, जिससे BOD का मान बढ़ता है और DO का मान घट जाता है।
- कथन 2 सत्य है: BOD केवल जैव-अपघटनीय पदार्थों के ऑक्सीकरण को मापता है, जबकि COD जैव और अजैव-अपघटनीय दोनों प्रकार के कार्बनिक पदार्थों के रासायनिक ऑक्सीकरण को मापता है; अतः COD का मान सदैव BOD से अधिक होता है।
- कथन 3 असत्य है: सुपोषण मुख्य रूप से **नाइट्रेट्स और फॉस्फेट्स** (पोषक तत्वों) के अत्यधिक प्रवाह के कारण होता है, जो शैवाल की तीव्र वृद्धि (एल्गल ब्लूम) को जन्म देता है।
- कथन 4 सत्य है: सामान्य स्वच्छ जल में DO 8 mg/L या अधिक होता है; यदि यह स्तर गिरकर 4 mg/L से कम हो जाए, तो जल अत्यंत संदूषित माना जाता है और जलीय जीवों का दम घुटने लगता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (जल संदूषक / भारी धातु)	**सूची-II (संबद्ध रोग / विषाक्तता प्रभाव)**
a. पारा (Mercury)	1. ब्लू बेबी सिंड्रोम (मेथेमोग्लोबिनेमिया)
b. कैडमियम (Cadmium)	2. ब्लैक फुट रोग (Black Foot Disease)
c. नाइट्रेट (Nitrate)	3. मीनामाटा रोग
d. आर्सेनिक (Arsenic)	4. इटाई-इटाई रोग (आउच-आउच)

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **पारा:** मिथाइल मरकरी के जैविक संचय से केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को क्षति पहुँचती है, जिसे **मीनामाटा रोग** कहते हैं।
  - **कैडमियम:** लंबे समय तक कैडमियम युक्त जल के उपभोग से हड्डियों और गुर्दों को भारी नुकसान पहुंचता है, जिसे **इटाई-इटाई रोग** कहा जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

- **नाइट्रेट:** पेयजल में नाइट्रेट की अधिकता शिशुओं के रक्त में हीमोग्लोबिन से क्रिया कर ऑक्सीजन परिवहन बाधित करती है, जिससे शरीर नीला पड़ने लगता है (**ब्लू बेबी सिंड्रोम**)।
- **आर्सेनिक:** लंबे समय तक भूजल में आर्सेनिक के सेवन से धमनियों में रुकावट और त्वचा विकार उत्पन्न होते हैं, जिसे **ब्लैक फुट रोग** कहा जाता है।

टॉपिक - 4: भूजल प्रदूषण (आर्सेनिक एवं फ्लोराइड संदूषण)

भूजल प्रदूषण एक गंभीर पर्यावरणीय एवं जनस्वास्थ्य संकट है, जो भूमिगत जलभृतों (Aquifers) में हानिकारक अकार्बनिक खनिजों, रसायनों अथवा जैविक अपशिष्टों के रिसाव से उत्पन्न होता है। यह प्रदूषण दो प्रकार से होता है: **भू-उत्पत्तिक / प्राकृतिक (Geogenic)**—जिसमें चट्टानों व खनिजों के अपक्षय से तत्व जल में घुलते हैं, तथा **मानवजनित (Anthropogenic)**—जो अत्यधिक जल दोहन, औद्योगिक बहिःस्राव एवं रासायनिक उर्वरकों के अतिप्रयोग का परिणाम है।

1. आर्सेनिक संदूषण (Arsenic Contamination)

- **प्रकृति एवं स्रोत:** आर्सेनिक एक विषैली उपधातु है। इसका मुख्य स्रोत भू-गर्भीय है, जो गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना जलोढ़ मैदानों में आर्सेनोपाइराइट खनिजों के ऑक्सीकरण और तलछटों से रिसाव के कारण होता है। सिंचाई हेतु भूजल का अत्यधिक दोहन इस प्रक्रिया को तीव्र करता है।
- **मानक सांद्रता सीमा:**
  - **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) एवं BIS मानक:** पेयजल में आर्सेनिक की अधिकतम अनुमेय सीमा **0.01 mg/L (10 ppb)** है।
- **भौगोलिक विस्तार:** भारत में पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, झारखंड तथा उत्तर प्रदेश के गंगा तटीय जिले (विशेषकर **बलिया, गाजीपुर, वाराणसी, चंदौली, उन्नाव**) इससे सर्वाधिक प्रभावित हैं।
- **स्वास्थ्य पर प्रभाव:**
  - लंबे समय तक सेवन से **'ब्लैक फुट रोग' (Black Foot Disease)** होता है, जिसमें परिधीय रक्त वाहिकाओं के क्षतिग्रस्त होने से पैरों के ऊतकों में गैंग्रीन बन जाता है।
  - त्वचा पर हाइपरपिग्मेंटेशन (काले धब्बे), किरेटोसिस (हथेलियों व तलवों का सख्त होना) तथा त्वचा, फेफड़े व मूत्राशय का कैंसर।
- **शोधन तकनीक:** फेरिक क्लोराइड या एलम द्वारा स्कंदन-अवक्षेपण, सक्रिय एल्युमिना अधिशोषण तथा रिवर्स ऑस्मोसिस (RO)।

2. फ्लोराइड संदूषण (Fluoride Contamination)

- **प्रकृति एवं स्रोत:** फ्लोराइड मुख्य रूप से भू-गर्भीय खनिजों (जैसे फ्लोराइट, एपेटाइट, फ्लोरो-एपेटाइट) के जल में घुलने से फैलता है। ग्रेनाइट और नीस चट्टानों वाले शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में यह समस्या अधिक पाई जाती है।
- **मानक सांद्रता सीमा:**
  - **BIS मानक (IS 10500:2012):** पेयजल में फ्लोराइड की स्वीकार्य सीमा **1.0 mg/L** तथा अनुपस्थिति में अधिकतम अनुमेय सीमा **1.5 mg/L** है।

- **भौगोलिक विस्तार:** राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गुजरात तथा उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र (सोनभद्र, झाँसी, ललितपुर, महोबा) में इसका उच्च स्तर पाया जाता है।
- **स्वास्थ्य पर प्रभाव:**
    - **दंत फ्लोरोसिस (Dental Fluorosis):** दाँतों का इनेमल नष्ट होना, दाँतों पर पीले-भूरे धब्बे पड़ना व क्षरण।
    - **अस्थि फ्लोरोसिस (Skeletal Fluorosis):** हड्डियों का अत्यधिक कठोर व भंगुर होना, जोड़ों में जकड़न, रीढ़ का झुकना (कूबड़) तथा पैरों की हड्डियों का मुड़ना जिसे **'नॉक-नी सिंड्रोम' (Genu Valgum)** कहते हैं।
- **निवारण तकनीक: नलगोंडा तकनीक (Nalgonda Technique)**—राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (NEERI, नागपुर) द्वारा विकसित विधि, जिसमें जल में चूना (Lime), फिटकरी (Alum) और ब्लीचिंग पाउडर मिलाकर फ्लोराइड का अवक्षेपण किया जाता है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **जल जीवन मिशन (JJM) के तहत वाटर क्वालिटी रेमेडिएशन:** जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जारी अद्यतन समीक्षा के अनुसार, आर्सेनिक और फ्लोराइड प्रभावित बस्तियों में शत-प्रतिशत पाइप जलापूर्ति सुनिश्चित करने हेतु 'कम्युनिटी वाटर प्यूरिफिकेशन प्लांट्स' (CWPP) के साथ-साथ नैनो-मटीरियल आधारित सोलर-पावर्ड डी-फ्लोराइडेशन इकाइयाँ स्थापित की गईं।
- **केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) आइसोटोप हाइड्रोलॉजी अध्ययन:** CGWB और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) द्वारा गंगा बेसिन (पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार) में आइसोटोपिक ट्रेसर तकनीक से गहरे जलभृतों की मैपिंग की गई, ताकि आर्सेनिक-मुक्त सुरक्षित गहरे जलभृतों (Deeper Paleochannels) से सुरक्षित पेयजल का दोहन किया जा सके।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भूजल में आर्सेनिक और फ्लोराइड संदूषण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत के गंगा-मेघना बेसिन में आर्सेनिक संदूषण का मुख्य कारण मुख्य रूप से प्राकृतिक (भू-गर्भीय) है, जो भूजल के अत्यधिक दोहन से और तीव्र हो जाता है।
2. फ्लोराइड युक्त जल के दीर्घकालिक उपभोग से 'नॉक-नी सिंड्रोम' (Genu Valgum) की समस्या उत्पन्न हो सकती है।
3. नीरी (NEERI) द्वारा विकसित 'नलगोंडा तकनीक' का उपयोग भूजल से भारी मात्रा में आर्सेनिक निष्कासन हेतु किया जाता है।
4. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार पेयजल में आर्सेनिक की अधिकतम सुरक्षित सीमा 1.5 mg/L निर्धारित की गई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (A) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**

- कथन 1 सत्य है: आर्सेनिक गंगा के मैदानों में जलोढ़ तलछटों में प्राकृतिक रूप से उपस्थित है। नलकूपों द्वारा भूजल के अत्यधिक दोहन से जलभृतों में वायु का प्रवेश होता है, जिससे आर्सेनोपाइराइट खनिजों का ऑक्सीकरण होकर आर्सेनिक घुलनशील अवस्था में आ जाता है।
- कथन 2 सत्य है: पेयजल में फ्लोराइड की मात्रा 1.5 mg/L से अधिक होने पर अस्थि फ्लोरोसिस होता है, जिससे पैर अंदर की ओर झुक जाते हैं और घुटने आपस में टकराने लगते हैं; इसे 'नॉक-नी सिंड्रोम' कहा जाता है।
- कथन 3 असत्य है: 'नलगोंडा तकनीक' मुख्य रूप से **फ्लोराइड निष्कासन (Defluoridation)** की विधि है, न कि आर्सेनिक की।
- कथन 4 असत्य है: WHO एवं BIS दोनों के अनुसार पेयजल में आर्सेनिक की अनुमेय सीमा **0.01 mg/L (10 ppb)** है, जबकि 1.5 mg/L फ्लोराइड की अधिकतम सीमा है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (जल संदूषक / तकनीक)	**सूची-II (संबद्ध विशेषता / स्वास्थ्य प्रभाव)**
a. आर्सेनिक (Arsenic)	1. नलगोंडा तकनीक (फिटकरी व चूना द्वारा उपचार)
b. फ्लोराइड (Fluoride)	2. ब्लैक फुट रोग एवं किरेटोसिस
c. डी-फ्लोराइडेशन	3. दंत क्षरण एवं अस्थि विकृति
d. अत्यधिक भूजल दोहन	4. जलभृतों में आर्सेनिक व खनिजों का लीचिंग उत्प्रेरण

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **आर्सेनिक:** इसके दीर्घकालिक अंतर्ग्रहण से परिधीय संवहनी रोग होकर **ब्लैक फुट रोग** होता है।
  - **फ्लोराइड:** यह हड्डियों और दाँतों के ऊतकों में जमा होकर फ्लोरोसिस और कंकाल विकृति का कारण बनता है।
  - **डी-फ्लोराइडेशन:** नीरी द्वारा विकसित **नलगोंडा तकनीक** फिटकरी और चूने के मिश्रण से फ्लोराइड को पृथक करने की किफायती विधि है।

©IASHINDIMEDIUM

- **अत्यधिक भूजल दोहन:** भूजल स्तर गिरने से जलभृतों में रासायनिक असंतुलन पैदा होता है, जिससे अघुलनशील खनिज घुलकर जल को प्रदूषित कर देते हैं।

टॉपिक - 5: मृदा प्रदूषण और मरुस्थलीकरण (Soil Pollution and Desertification)

मृदा प्रदूषण से तात्पर्य मृदा में अवांछित रासायनिक पदार्थों, विषाक्त यौगिकों अथवा रेडियोधर्मी तत्वों के ऐसे संचय से है, जो उसकी प्राकृतिक उर्वरता, रासायनिक संरचना और सूक्ष्मजैविक संतुलन को नष्ट कर देते हैं। जब यह क्षरण लंबे समय तक बना रहता है, तो शुष्क, अर्द्ध-शुष्क और उप-आर्द्र क्षेत्रों की भूमि अपनी जैविक व आर्थिक उत्पादकता खो देती है, जिसे **मरुस्थलीकरण (Desertification)** कहा जाता है।

1. मृदा प्रदूषण के प्रमुख स्रोत एवं प्रभाव

- **रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक:**
    - रासायनिक खादों (विशेषकर यूरिया) के अनियंत्रित प्रयोग से आदर्श **NPK अनुपात (4:2:1)** बिगड़ जाता है, जिससे मृदा की अम्लता अथवा क्षारीयता में असंतुलन पैदा होता है।
    - क्लोरीनयुक्त हाइड्रोकार्बन (जैसे DDT, एल्ड्रिन) और ऑर्गेनोफॉस्फेट्स मृदा में लंबे समय तक बने रहकर केंचुओं तथा नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले जीवाणुओं (*Rhizobium*, *Azotobacter*) को नष्ट कर देते हैं।
- **मृदा लवणता एवं क्षारीयता (Salinity and Alkalinity):**
    - नहरी सिंचाई वाले क्षेत्रों में अत्यधिक जलभराव (Waterlogging) के कारण **केशिका क्रिया (Capillary Action)** द्वारा भूजल में घुले लवण (सोडियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम के क्लोराइड तथा सल्फेट) सतह पर आकर सफेद परत के रूप में जम जाते हैं।
    - उत्तर प्रदेश में ऐसी बंजर भूमि को स्थानीय स्तर पर **रेह, ऊसर या कल्लर** कहा जाता है।
    - **उपचार:** क्षारीय मृदा (pH > 8.5) के सुधार हेतु **जिप्सम** ($CaSO_4 \cdot 2H_2O$) या पायराइट्स का प्रयोग किया जाता है, जबकि अम्लीय मृदा (pH < 5.5) के उपचार हेतु **चूना** ($CaCO_3$ **या** CaO) मिलाया जाता है।

2. मरुस्थलीकरण: कारण एवं वैश्विक प्रयास

- **प्रमुख कारण:** अति-चारण (Overgrazing), वनोन्मूलन (Deforestation), अविवेकपूर्ण कृषि पद्धतियाँ (झूम कृषि), तथा जलवायु परिवर्तन।
- **UNCCD (संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय):**
    - 1994 में स्थापित और 1996 से प्रभावी एकमात्र कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय समझौता।
    - लक्ष्य: **भूमि क्षरण तटस्थता (Land Degradation Neutrality - LDN)** प्राप्त करना।
    - भारत ने बॉन चैलेंज (Bonn Challenge) के तहत 2030 तक **26 मिलियन हेक्टेयर क्षरित भूमि को बहाल करने** का स्वैच्छिक संकल्प लिया है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **UNCCD COP-16 एवं वैश्विक सूखा कार्ययोजना:** सऊदी अरब के रियाद में आयोजित UNCCD के 16वें पक्षकारों के सम्मेलन (COP-16) के परिणामों के आधार पर भारत ने 'राष्ट्रीय सूखा सुभेद्यता एटलस' को अद्यतन किया तथा शुष्क एवं बंजर भूमियों में मृदा कार्बन संचयन को प्राथमिकता देने हेतु वित्तीय आवंटन में वृद्धि की।
- **उत्तर प्रदेश ऊसर सुधार परियोजना (चरण-IV):** उत्तर प्रदेश भूमि सुधार निगम द्वारा विश्व बैंक के सहयोग से गंगा-घाघरा दोआब के अति-लवणीय व ऊसर क्षेत्रों में नैनो-जिप्सम और हरी खाद (ढैंचा/सनई) के समन्वित उपयोग से 50,000 हेक्टेयर से अधिक ऊसर भूमि को पुनः कृषि योग्य बनाने का विशेष अभियान संचालित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. मृदा प्रदूषण एवं ऊसर भूमि सुधार के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नहरी सिंचित क्षेत्रों में अत्यधिक जलभराव और तीव्र वाष्पीकरण के कारण केशिका क्रिया द्वारा मृदा की सतह पर लवणों का संचय हो जाता है।
2. क्षारीय मृदा (ऊसर भूमि) के रासायनिक सुधार हेतु जिप्सम ($CaSO_4 \cdot 2H_2O$) का प्रयोग किया जाता है।
3. अम्लीय मृदा के उपचार के लिए बुझे हुए चूने या कैल्शियम कार्बोनेट के बजाय जिप्सम सबसे प्रभावी उपाय माना जाता है।
4. रासायनिक कीटनाशक जैसे ऑर्गेनोक्लोरीन मृदा में आसानी से जैव-अपघटित होकर लाभकारी जीवाणुओं की वृद्धि में सहायक होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: अत्यधिक सतही सिंचाई और जलभराव से भूजल स्तर ऊपर उठता है और वाष्पीकरण के कारण केशिका खिंचाव द्वारा भूमिगत लवण सतह पर आकर जम जाते हैं।
    - कथन 2 सत्य है: क्षारीय मृदा में विनिमेय सोडियम (Na^+) की अधिकता होती है। जिप्सम मिलाने पर इसका कैल्शियम आयन (Ca^{2+}) सोडियम को प्रतिस्थापित कर देता है और सोडियम सल्फेट बनकर निक्षालित (Leached) हो जाता है।
    - कथन 3 असत्य है: अम्लीय मृदा (कम pH) के उपचार के लिए चूने ($CaCO_3$ या CaO) का प्रयोग किया जाता है, जिप्सम का नहीं। जिप्सम का प्रयोग क्षारीय मृदा के लिए किया जाता है।
    - कथन 4 असत्य है: ऑर्गेनोक्लोरीन (जैसे DDT, लिंडेन) अत्यधिक स्थायी (Persistent) और अविघटनकारी होते हैं, जो मृदा के लाभकारी नाइट्रोजन-स्थिरीकारक जीवाणुओं और केंचुओं को नष्ट कर देते हैं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (पर्यावरणीय संकल्पना / संस्था)	सूची-II (संबद्ध तथ्य / उद्देश्य)
a. UNCCD	1. 2030 तक 26 मिलियन हेक्टेयर क्षरित भूमि की बहाली
b. भारत का बॉन चैलेंज लक्ष्य	2. भूमि क्षरण तटस्थता (LDN) हेतु विधिक रूप से बाध्यकारी संधि
c. ऊसर / रेह मृदा	3. हरी खाद (नाइट्रोजन एवं कार्बनिक पदार्थ संवर्धन)
d. ढैंचा एवं सनई	4. सोडियम लवणों की अधिकता वाली लवणीय-क्षारीय भूमि

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-1, b-2, c-4, d-3

(D) a-3, b-1, c-2, d-4

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **UNCCD:** 1994 में हस्ताक्षरित यह संधि वैश्विक स्तर पर मरुस्थलीकरण रोकने और भूमि क्षरण तटस्थता प्राप्त करने के लिए एकमात्र विधिक रूप से बाध्यकारी समझौता है।
    - **बॉन चैलेंज:** भारत ने 2030 तक 2.6 करोड़ हेक्टेयर (26 मिलियन हेक्टेयर) बंजर/क्षरित भूमि को बहाल करने का लक्ष्य रखा है।
    - **ऊसर/रेह मृदा:** अत्यधिक लवणता और सोडियम कार्बोनेट/सल्फेट के संचय से अनुपजाऊ बनी भूमि को स्थानीय भाषा में रेह या ऊसर कहते हैं।
    - **ढैंचा एवं सनई:** ये लेग्युमिनोसी कुल के पौधे हैं, जिनका उपयोग हरी खाद के रूप में मृदा की संरचना सुधारने और नाइट्रोजन जोड़ने के लिए किया जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ व सम्मेलन

टॉपिक - 1: स्टॉकहोम सम्मेलन (1972) एवं वैश्विक पर्यावरण कूटनीति

मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (United Nations Conference on the Human Environment - UNCHE), जिसे सामान्यतः **स्टॉकहोम सम्मेलन (1972)** कहा जाता है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु आयोजित पहला वैश्विक शिखर सम्मेलन था। यह सम्मेलन **5 से 16 जून, 1972** तक स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में आयोजित हुआ।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं मूल सिद्धांत

- **थीम / नारा:** सम्मेलन का मुख्य विचार **'केवल एक पृथ्वी' (Only One Earth)** था।
- **स्टॉकहोम घोषणा (Stockholm Declaration):** इसमें 26 सिद्धांतों और 109 सूत्रीय कार्ययोजना (Action Plan) को अंगीकार किया गया।
    - **सिद्धांत 21 (पारिस्थितिक संप्रभुता):** राज्यों को अपने संसाधनों का उपयोग करने का संप्रभु अधिकार है, परंतु उनका यह भी दायित्व है कि उनकी गतिविधियों से अन्य देशों या साझा वैश्विक संपदा (Global Commons) के पर्यावरण को कोई क्षति न पहुंचे।
- **विश्व पर्यावरण दिवस की नींव:** सम्मेलन के उद्घाटन दिवस की स्मृति में प्रतिवर्ष **5 जून** को 'विश्व पर्यावरण दिवस' (World Environment Day) मनाने का निर्णय लिया गया (पहला विश्व पर्यावरण दिवस 1974 में मनाया गया)।
- **UNEP की स्थापना:** सम्मेलन की प्रत्यक्ष परिणति के रूप में **संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)** की स्थापना हुई, जिसका मुख्यालय **नैरोबी (केन्या)** में स्थापित किया गया (विकासशील देशों में स्थापित पहला UN निकाय मुख्यालय)।

2. भारतीय संदर्भ में प्रभाव एवं दूरगामी परिणाम

©IASHINDIMEDIUM

- **श्रीमती इंदिरा गांधी की ऐतिहासिक भूमिका:** भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी इस सम्मेलन में भाग लेने वाली एकमात्र विदेशी शासनाध्यक्ष थीं। उन्होंने गरीबी और पर्यावरण क्षरण के अंतर्संबंध को रेखांकित करते हुए कहा था—*"गरीबी सबसे बड़ा प्रदूषण है" (Poverty is the greatest polluter)*।
- **संवैधानिक एवं विधायी प्रभाव:**
    - **42वाँ संविधान संशोधन अधिनियम (1976):** पर्यावरण संरक्षण को संविधान में प्रत्यक्ष स्थान मिला।
        - **अनुच्छेद 48-A (DPSP):** राज्य पर्यावरण की रक्षा और सुधार तथा वनों व वन्यजीवों की रक्षा का प्रयास करेगा।
        - **अनुच्छेद 51-A(g) (मौलिक कर्तव्य):** प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा एवं संवर्धन प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा।
    - **कानूनी ढांचा:** वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972; जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974; वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981; तथा अंततः स्टॉकहोम सम्मेलन के निर्णयों को लागू करने हेतु संविधान के **अनुच्छेद 253** के अंतर्गत **पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986** पारित किया गया।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **स्टॉकहोम+50 कार्यढांचे के अंतर्गत बहुपक्षीय संधि समीक्षा:** संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा (UNEA) के सत्रों में स्टॉकहोम सम्मेलन के मूल जनादेश की समीक्षा करते हुए 'ट्रिपल प्लेनेटरी क्राइसिस' (जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता हानि, और प्रदूषण) के शमन हेतु विकासशील देशों के लिए वार्षिक क्लाइमेट व इकोसिस्टम फाइनेंस लक्ष्य को बाध्यकारी बनाने की रूपरेखा तैयार की गई।
- **वैश्विक प्लास्टिक संधि (Global Plastics Treaty) वार्ता:** UNEP के तत्वावधान में अंतर-सरकारी वार्ता समिति (INC) द्वारा स्टॉकहोम सिद्धांतों के आधार पर प्लास्टिक प्रदूषण (विशेषकर समुद्री पर्यावरण) को समाप्त करने हेतु विधिक रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय संधि के अंतिम प्रारूप पर सहमति दर्ज की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 1972 के मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (स्टॉकहोम सम्मेलन) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस सम्मेलन की प्रत्यक्ष परिणति के रूप में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की स्थापना हुई, जिसका मुख्यालय नैरोबी (केन्या) में स्थित है।
2. भारतीय संसद द्वारा पारित 'पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986' संविधान के अनुच्छेद 253 के तहत स्टॉकहोम सम्मेलन के निर्णयों को प्रभावी बनाने के लिए अधिनियमित किया गया था।
3. 42वें संविधान संशोधन (1976) द्वारा भारतीय संविधान में शामिल अनुच्छेद 48-A राज्य को पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन का निर्देश देता है।
4. स्टॉकहोम घोषणा का मुख्य नारा 'हमारा साझा भविष्य' (Our Common Future) था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1, 2 और 3

©IASHINDIMEDIUM

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: स्टॉकहोम सम्मेलन (1972) के प्रस्तावों के आधार पर दिसंबर 1972 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा UNEP की स्थापना की गई और इसका मुख्यालय नैरोबी में रखा गया।
    - कथन 2 सत्य है: भारत ने अंतरराष्ट्रीय संधियों व समझौतों को लागू करने हेतु संसद की शक्ति (अनुच्छेद 253) का प्रयोग कर पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 पारित किया, जो स्टॉकहोम घोषणा के दायित्वों को पूरा करता है।
    - कथन 3 सत्य है: 1976 में 42वें संविधान संशोधन द्वारा राज्य के नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद 48-A तथा मौलिक कर्तव्यों में अनुच्छेद 51-A(g) जोड़ा गया।
    - कथन 4 असत्य है: स्टॉकहोम सम्मेलन का नारा **'केवल एक पृथ्वी' (Only One Earth)** था। 'हमारा साझा भविष्य' (Our Common Future) 1987 की ब्रंटलैंड आयोग (WCED) की रिपोर्ट का शीर्षक था।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पर्यावरणीय सम्मेलन / आयोग / पद)	**सूची-II (संबद्ध वर्ष / सिद्धांत / तथ्य)**
a. स्टॉकहोम सम्मेलन	1. 'सतत विकास' (Sustainable Development) की औपचारिक परिभाषा
b. ब्रंटलैंड आयोग रिपोर्ट	2. 5 जून (विश्व पर्यावरण दिवस की औपचारिक घोषणा)
c. संविधान का अनुच्छेद 48-A	3. पर्यावरण संरक्षण हेतु राज्य का नीति निदेशक तत्व (42वाँ संशोधन)
d. UNEP का मुख्यालय	4. नैरोबी (केन्या)

कूट:

(A) a-2, b-1, c-3, d-4

(B) a-2, b-3, c-1, d-4

(C) a-3, b-1, c-2, d-4

(D) a-4, b-2, c-3, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-3, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **स्टॉकहोम सम्मेलन:** 5 जून 1972 को शुरू हुआ, इसी कारण प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

- **ब्रंटलैंड आयोग रिपोर्ट:** 1987 में प्रस्तुत 'हमारा साझा भविष्य' शीर्षक वाली इस रिपोर्ट में सर्वप्रथम सतत विकास (Sustainable Development) को विधिवत परिभाषित किया गया।
- **अनुच्छेद 48-A:** 42वें संविधान संशोधन (1976) द्वारा शामिल किया गया राज्य का नीति निदेशक तत्व है जो पर्यावरण, वन तथा वन्यजीवों के संरक्षण से संबंधित है।
- **UNEP मुख्यालय:** संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का वैश्विक मुख्यालय नैरोबी, केन्या में स्थित है।

टॉपिक - 2: रियो पृथ्वी सम्मेलन (1992) और एजेंडा 21

पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (United Nations Conference on Environment and Development - UNCED), जिसे लोकप्रिय रूप से **रियो पृथ्वी सम्मेलन (Earth Summit 1992)** कहा जाता है, **3 से 14 जून, 1992** तक ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में आयोजित किया गया था। यह 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन की 20वीं वर्षगांठ पर आयोजित हुआ और इसने अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण विधि व सतत विकास को औपचारिक रूप प्रदान किया।

1. प्रमुख उपलब्धियाँ एवं विधिक दस्तावेज

सम्मेलन के दौरान पाँच ऐतिहासिक दस्तावेज अंगीकार किए गए:

- **रियो घोषणा (Rio Declaration on Environment and Development):**
  - इसमें सतत विकास हेतु **27 मूलभूत सिद्धांत** तय किए गए।
  - **सिद्धांत 7 (CBDR-RC):** 'समान परंतु विभेदित उत्तरदायित्व एवं संबंधित क्षमताएँ' (Common But Differentiated Responsibilities)—विकसित देशों की ऐतिहासिक प्रदूषणकारी भूमिका के आधार पर उन पर अधिक वित्तीय व तकनीकी दायित्व निर्धारित किया गया।
  - **सिद्धांत 15 (पूर्वाहत उपाय सिद्धांत / Precautionary Principle):** गंभीर या अपूरणीय क्षति के खतरे की स्थिति में वैज्ञानिक निश्चितता की कमी को लागत-प्रभावी उपायों को टालने का कारण नहीं बनाया जा सकता।
  - **प्रदूषक भुगतान सिद्धांत (Polluter Pays Principle):** पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाला प्रदूषणकारी घटक ही उसके शमन की लागत वहन करेगा।
- **एजेंडा 21 (Agenda 21):**
  - 21वीं सदी में सतत विकास प्राप्त करने हेतु 40 अध्यायों वाली व्यापक वैश्विक कार्ययोजना।
  - यह **गैर-बाध्यकारी (Non-binding)** एवं स्वैच्छिक दस्तावेज है।
  - इसके अंतर्गत 'स्थानीय एजेंडा 21' (Local Agenda 21) की संकल्पना पेश की गई, जिसमें स्थानीय निकायों (पंचायतों/नगरपालिकाओं) को सतत विकास की धुरी बनाया गया।
- **वन सिद्धांत (Forest Principles):** सभी प्रकार के वनों के प्रबंधन, संरक्षण और सतत विकास हेतु एक गैर-विधिक रूप से बाध्यकारी अधिकार-पत्र।

2. रियो के तीन कानूनी रूप से बाध्यकारी अभिसमय (Rio Conventions)

पृथ्वी सम्मेलन की वार्ताओं से तीन वैश्विक अभिसमय अस्तित्व में आए:

©IASHINDIMEDIUM

1. **UNFCCC:** जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क अभिसमय।
2. **CBD:** जैव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय।
3. **UNCCD:** मरुस्थलीकरण रोकथाम पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (इसकी वार्ताओं की औपचारिक शुरुआत रियो में हुई और 1994 में इसे अंतिम रूप दिया गया)।

- **संस्थागत ढांचा:** एजेंडा 21 के क्रियान्वयन की निगरानी हेतु 1992 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा **सतत विकास आयोग (Commission on Sustainable Development - CSD)** का गठन किया गया (जिसे 2012 के रियो+20 में 'उच्च-स्तरीय राजनीतिक मंच' - HLPF द्वारा प्रतिस्थापित किया गया)। वित्तीय प्रबंधन हेतु **वैश्विक पर्यावरण सुविधा (GEF)** को वित्त तंत्र के रूप में मान्यता मिली।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **रियो संधियों का त्रि-अभिसमय समन्वय (Rio Trio Synergy Initiative):** UNFCCC COP, CBD COP और UNCCD COP के मध्य भूमि क्षरण, जैव विविधता हानि और वैश्विक तापमान वृद्धि के समाधान हेतु एक साझा वित्तीय एवं निगरानी तंत्र (Synergy Mechanism) लागू किया गया, ताकि एजेंडा 21 के मूल पारिस्थितिक लक्ष्यों को एकीकृत रूप से हासिल किया जा सके।
- **वैश्विक पर्यावरण सुविधा (GEF-8 चक्र समीक्षा):** भारत को 'ग्लोबल एनवायरनमेंट फैसिलिटी' के 8वें वित्तपोषण चक्र के अंतर्गत सतत भूमि प्रबंधन, वेटलैंड संरक्षण और पश्चिमी घाट व हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र में स्थानीय एजेंडा 21 को लागू करने हेतु अतिरिक्त अनुदान सहायता अनुमोदित की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 1992 के रियो पृथ्वी सम्मेलन (UNCED) और 'एजेंडा 21' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'एजेंडा 21' 21वीं सदी में सतत विकास हासिल करने हेतु हस्ताक्षरित सभी देशों के लिए कानूनी रूप से एक बाध्यकारी (Legally Binding) दस्तावेज है।
2. रियो घोषणा का सिद्धांत 7 'समान परंतु विभेदित उत्तरदायित्व' (CBDR) की संकल्पना को मान्यता देता है।
3. जैविक विविधता अभिसमय (CBD) और जलवायु परिवर्तन पर फ्रेमवर्क अभिसमय (UNFCCC) की उत्पत्ति रियो पृथ्वी सम्मेलन के दौरान हुई थी।
4. एजेंडा 21 के प्रभावी क्रियान्वयन और निगरानी हेतु 1992 में 'सतत विकास आयोग' (CSD) की स्थापना की गई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**

- कथन 1 असत्य है: 'एजेंडा 21' संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास के लिए 40 अध्यायों का एक वैश्विक कार्ययोजना दस्तावेज है, परंतु यह सदस्य देशों के लिए **विधिक रूप से बाध्यकारी नहीं (Non-binding)** बल्कि स्वैच्छिक है।
- कथन 2 सत्य है: रियो घोषणा का सिद्धांत 7 स्पष्ट करता है कि वैश्विक पर्यावरण क्षरण में विकसित देशों के ऐतिहासिक योगदान को देखते हुए विकासशील देशों और विकसित देशों के दायित्व भिन्न (CBDR) होंगे।
- कथन 3 सत्य है: रियो सम्मेलन के दौरान ही UNFCCC और CBD को औपचारिक रूप से हस्ताक्षर के लिए खोला गया था।
- कथन 4 सत्य है: एजेंडा 21 के निर्णयों की समीक्षा और निगरानी हेतु दिसंबर 1992 में संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (ECOSOC) के अंतर्गत सतत विकास आयोग (CSD) का गठन किया गया था।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पर्यावरणीय सम्मेलन / दस्तावेज)	**सूची-II (संबद्ध वर्ष / मूल विषय)**
a. रियो डी जेनेरियो सम्मेलन	1. 21वीं सदी हेतु गैर-बाध्यकारी सतत विकास कार्ययोजना
b. एजेंडा 21	2. 1992 (पृथ्वी सम्मेलन / UNCED)
c. वैश्विक पर्यावरण सुविधा (GEF)	3. रियो सम्मेलनों हेतु वित्तीय तंत्र की स्थापना
d. रियो+20 सम्मेलन (2012)	4. 'द फ्यूचर वी वांट' (The Future We Want) घोषणा-पत्र

कूट:

(A) a-2, b-1, c-3, d-4

(B) a-2, b-3, c-1, d-4

(C) a-3, b-1, c-2, d-4

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-3, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **रियो डी जेनेरियो सम्मेलन:** जून 1992 में आयोजित ऐतिहासिक पृथ्वी शिखर सम्मेलन।
  - **एजेंडा 21:** 21वीं सदी में पर्यावरण एवं विकास के संतुलन हेतु व्यापक कार्ययोजना।
  - **वैश्विक पर्यावरण सुविधा (GEF):** 1992 के पृथ्वी सम्मेलन में रियो सम्मेलनों (CBD, UNFCCC) के वित्तीय तंत्र के रूप में परिचालित किया गया।
  - **रियो+20 सम्मेलन:** 2012 में रियो में आयोजित सतत विकास सम्मेलन, जिसके आधिकारिक परिणाम दस्तावेज का शीर्षक **'द फ्यूचर वी वांट'** था।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 3: क्योटो प्रोटोकॉल (1997) और कार्बन क्रेडिट

क्योटो प्रोटोकॉल जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) के अंतर्गत एक ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय समझौता है। इसे **11 दिसंबर 1997** को जापान के क्योटो शहर में UNFCCC के तीसरे पक्षकारों के सम्मेलन (**COP-3**) में अंगीकार किया गया था तथा यह **16 फरवरी 2005** को प्रभावी हुआ (रूस द्वारा अनुसमर्थन के बाद)। भारत ने **अगस्त 2002** में इसका अनुसमर्थन किया था।

1. मूल संरचना एवं प्रमुख ग्रीनहाउस गैसें (GHGs)

- **विधिक प्रकृति:** यह औद्योगिक (विकसित) देशों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी उत्सर्जन कटौती लक्ष्य लागू करने वाला पहला अंतरराष्ट्रीय समझौता था। यह **'समान परंतु विभेदित उत्तरदायित्व' (CBDR)** के सिद्धांत पर आधारित है।
- **अनुलग्नक-A (Annex-A) की 6 ग्रीनहाउस गैसें:**
    1. कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)
    2. मीथेन (CH_4)
    3. नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O)
    4. हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFCs)
    5. परफ्लोरोकार्बन (PFCs)
    6. सल्फर हेक्साफ्लोराइड (SF_6)

*(नोट: दोहा संशोधन में 7वीं गैस के रूप में **नाइट्रोजन ट्राइफ्लोराइड - NF_3** को जोड़ा गया)।*

2. प्रतिबद्धता अवधियां एवं दोहा संशोधन

- **प्रथम प्रतिबद्धता अवधि (2008–2012):** Annex-I देशों (विकसित राष्ट्रों) को अपने सामूहिक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 1990 के स्तर से औसतन **5.2%** कम करना अनिवार्य किया गया।
- **द्वितीय प्रतिबद्धता अवधि (2013–2020 / दोहा संशोधन 2012):** इसमें 1990 के स्तर से कम से कम **18%** उत्सर्जन कटौती का लक्ष्य रखा गया। यह संशोधन 2020 में लागू हुआ।

3. क्योटो के लचीले बाजार तंत्र (Flexible Market Mechanisms)

देशों को अपने उत्सर्जन लक्ष्य लागत-प्रभावी तरीके से पूरे करने के लिए तीन बाजार आधारित तंत्र दिए गए:

1. **स्वच्छ विकास तंत्र (Clean Development Mechanism - CDM):** विकसित देश (Annex-I) विकासशील देशों (Non-Annex I) में स्वच्छ परियोजनाओं में निवेश कर **प्रमाणित उत्सर्जन कटौती (CERs - Certified Emission Reductions)** अर्जित करते हैं। (UPPCS का अत्यंत पसंदीदा बिंदु)।
2. **संयुक्त कार्यान्वयन (Joint Implementation - JI):** एक Annex-I देश किसी अन्य Annex-I देश में परियोजना लगाकर **उत्सर्जन न्यूनीकरण इकाइयाँ (ERUs)** प्राप्त करता है।
3. **अंतरराष्ट्रीय उत्सर्जन व्यापार (International Emissions Trading - IET):** देश अपने आबंटित कोटा से कम उत्सर्जन करने पर बची हुई इकाइयों (AAUs) को दूसरे देशों को बेच सकते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

4. कार्बन क्रेडिट (Carbon Credit) की संकल्पना

- **परिभाषा:** एक कार्बन क्रेडिट का अर्थ है वायुमंडल में **एक मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड** (1 tonne of CO_2) **या उसके समतुल्य अन्य ग्रीनहाउस गैस** (CO_2e) के उत्सर्जन को रोकना अथवा उसे अवशोषित (सीक्वेस्टर) करना।
- **कार्बन ट्रेडिंग (Cap-and-Trade):** सरकारें उद्योगों के लिए उत्सर्जन की सीमा (Cap) तय करती हैं। जो कंपनियाँ तय सीमा से कम उत्सर्जन करती हैं, वे अपने अतिरिक्त कार्बन क्रेडिट्स को अधिक उत्सर्जन करने वाली कंपनियों को बेचकर लाभ कमा सकती हैं।

5. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **पेरिस समझौते का अनुच्छेद 6.4 एवं CDM का पूर्ण प्रतिस्थापन:** संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलनों (COP29/COP30 वार्ताओं) के तहत पेरिस समझौते के अनुच्छेद 6.4 के अंतर्गत नए केंद्रीकृत कार्बन बाजार तंत्र (PACM - Paris Agreement Crediting Mechanism) के परिचालन नियम लागू हुए। इसके तहत पुराने क्योटो प्रोटोकॉल के 'स्वच्छ विकास तंत्र' (CDM) के बचे हुए प्रमाणित उत्सर्जन कटौती (CERs) के नए तंत्र में संक्रमण की अंतिम सत्यापन समय-सीमा पूर्ण की गई।
- **भारतीय कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS) अधिसूचना:** विद्युत मंत्रालय एवं बीईई (BEE) द्वारा 'कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम 2023' के तहत देश के 9 ऊर्जा-गहन क्षेत्रों (इस्पात, सीमेंट, पेट्रोकेमिकल, उर्वरक आदि) के लिए अनिवार्य अनुपालन उत्सर्जन सीमा और घरेलू कार्बन क्रेडिट रजिस्ट्री का लाइव ट्रेडिंग चरण अधिसूचित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. क्योटो प्रोटोकॉल (1997) और इसके कार्बन तंत्रों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. क्योटो प्रोटोकॉल 16 फरवरी 2005 को कानूनी रूप से प्रभावी हुआ था।
2. स्वच्छ विकास तंत्र (CDM) के अंतर्गत विकसित देश किसी विकासशील देश में हरित परियोजनाओं में निवेश करके प्रमाणित उत्सर्जन कटौती (CERs) प्राप्त कर सकते हैं।
3. क्योटो प्रोटोकॉल के मूल अनुलग्नक-ए (Annex-A) में जलवाष्प और कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) को नियंत्रित की जाने वाली 6 मुख्य ग्रीनहाउस गैसों में शामिल किया गया था।
4. एक कार्बन क्रेडिट का मान वायुमंडल से 100 मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन न्यूनीकरण के बराबर होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 1 सत्य है: क्योटो प्रोटोकॉल को दिसंबर 1997 में अपनाया गया था, परंतु आवश्यक संख्या में देशों और उत्सर्जन हिस्सेदारी (रूस के अनुसमर्थन) के पश्चात यह 16 फरवरी 2005 को लागू हुआ।
- कथन 2 सत्य है: CDM क्योटो का एकमात्र तंत्र है जो विकसित और विकासशील देशों को आपस में जोड़ता है; इसके तहत अर्जित क्रेडिट को 'सर्टिफाइड एमिशन रिडक्शन' (CER) कहा जाता है।
- कथन 3 असत्य है: Annex-A में 6 गैसें थीं—CO_2, CH_4, N_2O, HFCs, PFCs और SF_6। इसमें जलवाष्प और कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) शामिल नहीं हैं।
- कथन 4 असत्य है: एक कार्बन क्रेडिट का मान ठीक **1 मीट्रिक टन CO_2 या उसके समतुल्य** (1 MT CO_2e) के बराबर होता है, 100 टन नहीं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (जलवायु तंत्र / शब्दावली)	**सूची-II (संबद्ध तथ्य / मापन)**
a. स्वच्छ विकास तंत्र (CDM)	1. एक टन कार्बन डाइऑक्साइड (1 t CO_2e) के समतुल्य कटौती
b. एक कार्बन क्रेडिट	2. क्योटो प्रोटोकॉल की द्वितीय प्रतिबद्धता अवधि (2013-2020)
c. दोहा संशोधन (2012)	3. क्योटो प्रोटोकॉल में 7वीं गैस के रूप में शामिल
d. नाइट्रोजन ट्राइफ्लोराइड (NF_3)	4. विकासशील देशों में परियोजना से CER अर्जित करना

कूट:

(A) a-4, b-1, c-2, d-3

(B) a-4, b-2, c-1, d-3

(C) a-1, b-4, c-2, d-3

(D) a-2, b-1, c-4, d-3

उत्तर: (A) a-4, b-1, c-2, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **स्वच्छ विकास तंत्र (CDM):** गैर-एनेक्स-I (विकासशील) देशों में स्वच्छ परियोजनाओं के वित्तपोषण से CER प्राप्त करने की प्रणाली है।
  - **एक कार्बन क्रेडिट:** यह वायुमंडल में ठीक 1 मीट्रिक टन CO_2 या उसके समतुल्य ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन से बचाव की प्रामाणिक इकाई है।
  - **दोहा संशोधन (2012):** इसने क्योटो प्रोटोकॉल की दूसरी प्रतिबद्धता अवधि (2013–2020) निर्धारित की थी।

©IASHINDIMEDIUM

- **नाइट्रोजन ट्राइफ्लोराइड (NF_3):** इसे दोहा संशोधन के माध्यम से क्योटो की गैस सूची में 7वीं ग्रीनहाउस गैस के रूप में सम्मिलित किया गया था।

टॉपिक - 4: पेरिस समझौता (COP-21) और NDC (राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान)

पेरिस समझौता जलवायु परिवर्तन पर एक कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय संधि है। इसे **12 दिसंबर 2015** को पेरिस (फ्रांस) में आयोजित UNFCCC के 21वें पक्षकारों के सम्मेलन (**COP-21**) में 196 देशों द्वारा अंगीकार किया गया था तथा यह **4 नवंबर 2016** को औपचारिक रूप से प्रभावी हुआ। भारत ने **2 अक्टूबर 2016** (गांधी जयंती) को इसका औपचारिक अनुसमर्थन किया था।

1. पेरिस समझौते के मूल उद्देश्य एवं स्तंभ

- **तापमान सीमा लक्ष्य:** वैश्विक औसत तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तर (Pre-industrial levels) की तुलना में $2^{\circ}C$ **से काफी नीचे** सीमित रखना तथा इसे $1.5^{\circ}C$ तक सीमित रखने के गंभीर प्रयास करना।
- **जलवायु लचीलापन व वित्त प्रवाह:** वित्त प्रवाह को कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और जलवायु-अनुकूल विकास पथ के अनुरूप बनाना। विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों हेतु **प्रतिवर्ष 100 बिलियन डॉलर** जुटाने की प्रतिबद्धता दोहराई गई।
- **समान परंतु विभेदित उत्तरदायित्व (CBDR-RC):** क्योटो प्रोटोकॉल के 'टॉप-डाउन' (शीर्ष-से-निम्न) मॉडल के विपरीत, पेरिस समझौता **'बॉटम-अप' (निम्न-से-शीर्ष)** दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें सभी देश अपनी क्षमतानुसार स्वैच्छिक लक्ष्य निर्धारित करते हैं।
- **वैश्विक समीक्षा (Global Stocktake - GST):** समझौते के लक्ष्यों की दिशा में हुई सामूहिक प्रगति का आकलन करने हेतु **प्रति 5 वर्ष में** एक व्यापक समीक्षा का प्रावधान (प्रथम GST 2023 में COP-28, दुबई में संपन्न हुआ)।
- **कार्बन बाजार तंत्र (अनुच्छेद 6):**
    - *अनुच्छेद 6.2:* देशों के बीच द्विपक्षीय कार्बन व्यापार (ITMOs - Internationally Transferred Mitigation Outcomes)।
    - *अनुच्छेद 6.4:* नया केंद्रीकृत वैश्विक कार्बन क्रेडिट तंत्र, जिसने क्योटो के CDM (स्वच्छ विकास तंत्र) का स्थान लिया है।

2. NDC (राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान - Nationally Determined Contributions)

NDC प्रत्येक देश द्वारा अपने राष्ट्रीय उत्सर्जन को घटाने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूलन हेतु तैयार की जाने वाली पंचवर्षीय जलवायु कार्ययोजना है।

- **भारत के अद्यतन NDC लक्ष्य (अगस्त 2022 में अधिसूचित):**
    1. **उत्सर्जन तीव्रता में कमी:** वर्ष 2005 के स्तर की तुलना में 2030 तक अपनी GDP की उत्सर्जन तीव्रता को **45% तक कम करना** (मूल लक्ष्य 33-35% था)।
    2. **गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता:** वर्ष 2030 तक स्थापित विद्युत क्षमता का **50% गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों** से प्राप्त करना (मूल लक्ष्य 40% था, जिसे भारत ने समय से पहले 2021 में ही प्राप्त कर लिया था)।

©IASHINDIMEDIUM

3. **अतिरिक्त कार्बन सिंक:** वनों और वृक्षों के आवरण के संवर्धन द्वारा 2030 तक **2.5 से 3 बिलियन टन CO_2 के समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक** सृजित करना।

- **दीर्घकालिक लक्ष्य:** भारत ने COP-26 (ग्लासगो, 2021) में **वर्ष 2070 तक 'शुद्ध शून्य' (Net Zero)** कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करने की घोषणा की।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **तीसरी पीढ़ी के NDC (NDC 3.0) प्रस्तुति चक्र:** पेरिस समझौते के अनुच्छेद 4 के अनुसार, सभी सदस्य राष्ट्रों द्वारा वर्ष 2035 के नए और अधिक महत्वाकांक्षी उत्सर्जन कटौती लक्ष्यों के साथ 'NDC 3.0' की रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें भारत ने अपने ऊर्जा संक्रमण में परमाणु ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन (National Green Hydrogen Mission) और ग्रिड-स्तरीय बैटरी स्टोरेज को प्रमुखता से शामिल किया।
- **न्यू कलेक्टिव क्वांटिफाइड गोल (NCQG) परिचालन:** COP-29/COP-30 वार्ताओं के अंतर्गत 2025 के बाद की अवधि के लिए 100 बिलियन डॉलर प्रतिवर्ष के पुराने लक्ष्य को प्रतिस्थापित कर विकासशील देशों की अनुकूलन व शमन आवश्यकताओं हेतु नए महत्वाकांक्षी वैश्विक जलवायु वित्त ढांचे (NCQG) के आवंटन नियमों को अंतिम रूप दिया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पेरिस जलवायु समझौते (2015) और भारत के अद्यतन राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पेरिस समझौते का प्राथमिक लक्ष्य वैश्विक औसत तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तर से $2°C$ से नीचे रखना तथा इसे $1.5°C$ तक सीमित करने का प्रयास करना है।
2. भारत के अद्यतन NDC के अनुसार, 2030 तक संचयी विद्युत शक्ति स्थापित क्षमता का 50% गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से प्राप्त करने का संकल्प लिया गया है।
3. पेरिस समझौते के तहत प्रत्येक 10 वर्ष में 'ग्लोबल स्टॉकटेक' (वैश्विक समीक्षा) आयोजित करने का विधिक प्रावधान है।
4. भारत ने वर्ष 2050 तक शुद्ध शून्य (Net Zero) कार्बन उत्सर्जन का राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित किया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (A) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: पेरिस समझौते के अनुच्छेद 2 में तापमान वृद्धि को $2°C$ से नीचे और अधिमानतः $1.5°C$ तक सीमित रखने का स्पष्ट लक्ष्य रखा गया है।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 2 सत्य है: भारत ने अगस्त 2022 में अपने अद्यतन NDC में 2030 तक 50% गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता और 2005 के स्तर की तुलना में GDP की उत्सर्जन तीव्रता में 45% की कमी करने का संकल्प लिया है।
- कथन 3 असत्य है: पेरिस समझौते के अनुच्छेद 14 के तहत 'ग्लोबल स्टॉकटेक' (GST) प्रत्येक **5 वर्ष** में आयोजित किया जाता है (पहला 2023 में COP-28 में हुआ था), 10 वर्ष में नहीं।
- कथन 4 असत्य है: भारत ने शुद्ध शून्य (Net Zero) उत्सर्जन प्राप्त करने का लक्ष्य **वर्ष 2070** तय किया है (ग्लासगो COP-26 में घोषित), जबकि 2050 का लक्ष्य विकसित देशों (जैसे अमेरिका, यूरोपीय संघ) का है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (जलवायु संधि / तंत्र / लक्ष्य)	**सूची-II (संबद्ध तथ्य / वर्ष / प्रावधान)**
a. पेरिस समझौते का प्रवर्तन	1. 2.5 से 3 बिलियन टन CO_2e अतिरिक्त कार्बन सिंक
b. पेरिस समझौता अनुच्छेद 6.4	2. 4 नवंबर 2016
c. भारत का वन आधारित NDC लक्ष्य	3. वर्ष 2070
d. भारत का नेट-जीरो उत्सर्जन लक्ष्य	4. केंद्रीकृत वैश्विक कार्बन क्रेडिट बाज़ार तंत्र

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-3, b-4, c-1, d-2

(D) a-4, b-2, c-3, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **पेरिस समझौते का प्रवर्तन:** यह समझौता 4 नवंबर 2016 को 55 देशों (जो कुल वैश्विक उत्सर्जन के कम से कम 55% का प्रतिनिधित्व करते थे) के अनुसमर्थन के बाद प्रभावी हुआ।
  - **अनुच्छेद 6.4:** यह पेरिस समझौते का वह प्रावधान है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा निगरानी प्राप्त केंद्रीकृत कार्बन बाज़ार का सृजन करता है।
  - **वन आधारित NDC लक्ष्य:** भारत ने 2030 तक अतिरिक्त वनावरण के माध्यम से 2.5 से 3 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य कार्बन सिंक विकसित करने का संकल्प लिया है।
  - **भारत का नेट-जीरो लक्ष्य:** भारत ने COP-26 में 'पंचामृत' घोषणा के तहत वर्ष 2070 तक कार्बन तटस्थता (Net-Zero) का लक्ष्य घोषित किया है।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 5: जैव विविधता अभिसमय (Convention on Biological Diversity - CBD)

जैविक विविधता पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (CBD) वैश्विक स्तर पर जैव विविधता के संरक्षण एवं संधारणीय उपयोग हेतु सबसे व्यापक और कानूनी रूप से बाध्यकारी बहुपक्षीय संधि है। इसे **5 जून 1992** को रियो डी जेनेरियो (ब्राजील) में आयोजित **पृथ्वी सम्मेलन (UNCED)** के दौरान अंगीकार किया गया था तथा यह **29 दिसंबर 1993** को औपचारिक रूप से लागू हुआ। भारत ने **18 फरवरी 1994** को इसका अनुसमर्थन किया। इसका स्थायी सचिवालय **मॉन्ट्रियल (कनाडा)** में स्थित है।

1. CBD के तीन मूलभूत उद्देश्य (Three Pillars)

1. जैविक विविधता का संरक्षण (Conservation of Biological Diversity)।
2. इसके घटकों का संधारणीय/सतत उपयोग (Sustainable use of its components)।
3. आनुवंशिक संसाधनों के उपयोग से प्राप्त लाभों का निष्पक्ष एवं न्यायसंगत बँटवारा (Fair and equitable sharing of benefits - ABS)।

2. CBD के अंतर्गत दो प्रमुख पूरक प्रोटोकॉल

- **कार्टाजेना बायोसेफ्टी प्रोटोकॉल (Cartagena Protocol on Biosafety):**
    - **अंगीकार:** 29 जनवरी 2000; **लागू:** 11 सितंबर 2003 (भारत 2003 में पक्षकार बना)।
    - **उद्देश्य:** आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी द्वारा विकसित **जीवित रूपांतरित जीवों (Living Modified Organisms - LMOs / GMOs)** के सुरक्षित हस्तांतरण, संचालन और सीमा-पार आवागमन को विनियमित करना।
    - इसमें पूर्व-सूचित सहमति प्रक्रिया (**Advance Informed Agreement - AIA**) अनिवार्य है।
- **नागोया प्रोटोकॉल (Nagoya Protocol on ABS):**
    - **अंगीकार:** 29 अक्टूबर 2010 (नागोया, जापान में आयोजित COP-10 में); **लागू:** 12 अक्टूबर 2014।
    - **उद्देश्य:** आनुवंशिक संसाधनों तथा उनसे जुड़े पारंपरिक ज्ञान (Traditional Knowledge) तक पहुँच और व्यावसायिक दोहन से मिलने वाले लाभों का स्थानीय समुदायों के साथ न्यायसंगत बँटवारा सुनिश्चित करना।
    - **आईची जैव विविधता लक्ष्य (Aichi Targets):** इसी सम्मेलन (COP-10) में 2011–2020 की अवधि हेतु 20 लक्ष्य निर्धारित किए गए थे।

3. कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचा (KM-GBF)

दिसंबर 2022 में आयोजित **COP-15** (मॉन्ट्रियल, कनाडा; अध्यक्षता: चीन) में आईची लक्ष्यों के स्थान पर नया ऐतिहासिक ढांचा अपनाया गया:

- **'30 by 30' लक्ष्य:** वर्ष 2030 तक विश्व की कम से कम **30% स्थलीय, अंतर्देशीय जल, तटीय और समुद्री क्षेत्रों को प्रभावी संरक्षित क्षेत्रों** के अंतर्गत लाना तथा 30% क्षरित पारिस्थितिक तंत्रों को पुनर्बहाल करना।
- **वित्तीय प्रावधान:** 2030 तक प्रतिवर्ष पर्यावरण-हानिकारक सब्सिडी में कम से कम 500 बिलियन डॉलर की कटौती करना और जैव विविधता वित्त को प्रतिवर्ष 200 बिलियन डॉलर तक बढ़ाना।

4. भारतीय वैधानिक एवं संस्थागत संरचना

©IASHINDIMEDIUM

CBD के प्रावधानों को क्रियान्वित करने के लिए भारत सरकार ने **जैविक विविधता अधिनियम, 2002** पारित किया। इसके अंतर्गत त्रि-स्तरीय संस्थागत ढांचा कार्यरत है:

1. **राष्ट्रीय स्तर:** राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA) — मुख्यालय: **चेन्नई (2003 में स्थापित)**।
2. **राज्य स्तर:** राज्य जैव विविधता बोर्ड (SBB) — जैसे उत्तर प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड (लखनऊ)।
3. **स्थानीय स्तर:** जैव विविधता प्रबंधन समितियाँ (BMC) — जो स्थानीय पंचायतों/नगरपालिकाओं में 'पीपुल्स बायोडायवर्सिटी रजिस्टर' (PBR) तैयार करती हैं।

5. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **कैली फंड (Cali Fund) एवं डिजिटल सीक्वेंस इंफॉर्मेशन (DSI):** CBD COP-16 (कैली, कोलंबिया) के निर्णयों के अनुपालन में आनुवंशिक संसाधनों के डिजिटल सीक्वेंस डेटा (DSI) का व्यावसायिक उपयोग करने वाली फार्मा और कॉस्मेटिक कंपनियों के लिए अपने मुनाफे/राजस्व का निश्चित हिस्सा 'कैली फंड' में योगदान करने की कार्यप्रणाली को अंतिम रूप दिया गया।
- **राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति एवं कार्ययोजना (NBSAP 2024–2030):** भारत ने कुनमिंग-मॉन्ट्रियल लक्ष्यों के अनुरूप अपनी राष्ट्रीय कार्ययोजना को अद्यतन कर देश की 100% ग्राम पंचायतों में डिजिटल 'पीपुल्स बायोडायवर्सिटी रजिस्टर' (PBR) का निर्माण और सत्यापन पूर्ण करने का अभियान चलाया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. जैविक विविधता अभिसमय (CBD) और उससे संबद्ध प्रोटोकॉल्स के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कार्टाजेना प्रोटोकॉल का मुख्य संबंध जीवित रूपांतरित जीवों (LMOs) के सीमा-पार सुरक्षित संचलन और जैव सुरक्षा से है।
2. नागोया प्रोटोकॉल आनुवंशिक संसाधनों के उपयोग से प्राप्त लाभों के निष्पक्ष एवं न्यायसंगत बँटवारे (ABS) से संबंधित है।
3. कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे (KM-GBF) के तहत वर्ष 2030 तक पृथ्वी के 50% स्थलीय और समुद्री क्षेत्रों के संरक्षण का लक्ष्य रखा गया है।
4. भारत में राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA) का मुख्यालय चेन्नई (तमिलनाडु) में स्थित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: कार्टाजेना प्रोटोकॉल (2000) आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (LMOs/GMOs) के सुरक्षित आयात-निर्यात और जैव सुरक्षा को सुनिश्चित करता है।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 2 सत्य है: नागोया प्रोटोकॉल (2010) CBD के तीसरे स्तंभ 'एक्सेस एंड बेनिफिट शेयरिंग' (ABS) को कानूनी रूप प्रदान करता है।
- कथन 3 असत्य है: कुनमिंग-मॉन्ट्रियल समझौते का प्रमुख लक्ष्य **'30 by 30'** है, जिसके तहत वर्ष 2030 तक पृथ्वी के **30% स्थलीय, अंतर्देशीय जल और समुद्री क्षेत्रों** का प्रभावी संरक्षण करना है, 50% नहीं।
- कथन 4 सत्य है: भारत सरकार द्वारा जैविक विविधता अधिनियम 2002 की धारा 8 के तहत वर्ष 2003 में राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA) की स्थापना चेन्नई में की गई थी।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पर्यावरणीय संधि / संस्था)	**सूची-II (संबद्ध वर्ष / मुख्यालय / विषय)**
a. कार्टाजेना प्रोटोकॉल	1. आनुवंशिक संसाधनों का न्यायसंगत लाभ बँटवारा (2010)
b. नागोया प्रोटोकॉल	2. चेन्नई (2003 में स्थापित वैधानिक निकाय)
c. राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA)	3. जीवित रूपांतरित जीवों हेतु जैव सुरक्षा (2000)
d. CBD सचिवालय	4. मॉन्ट्रियल (कनाडा)

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **कार्टाजेना प्रोटोकॉल:** वर्ष 2000 में स्वीकृत जैव सुरक्षा (Biosafety) और आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी के नियमन से जुड़ा समझौता है।
  - **नागोया प्रोटोकॉल:** वर्ष 2010 में COP-10 में पारित आनुवंशिक संसाधनों के दोहन से प्राप्त लाभों के समान वितरण (ABS) से संबंधित है।
  - **राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA):** भारत में जैव विविधता अधिनियम 2002 के तहत वर्ष 2003 में चेन्नई में स्थापित किया गया।
  - **CBD सचिवालय:** संयुक्त राष्ट्र जैव विविधता अभिसमय का स्थायी वैश्विक मुख्यालय मॉन्ट्रियल, कनाडा में स्थित है।

©IASHINDIMEDIUM

कृषि एवं पर्यावरण समसामयिकी

टॉपिक: 1 सामाजिक वानिकी और कृषि वानिकी (Social Forestry & Agroforestry)

पारंपरिक वनों पर मानवीय दबाव को कम करने, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संबल देने और पारिस्थितिक संतुलन स्थापित करने हेतु सामाजिक एवं कृषि वानिकी की शुरुआत की गई। 'सामाजिक वानिकी' (Social Forestry) शब्द का सर्वप्रथम औपचारिक प्रयोग **1976 में राष्ट्रीय कृषि आयोग (National Commission on Agriculture)** द्वारा किया गया था। इसका मूल ध्येय खाली पड़ी अनुपयोगी भूमि पर वृक्षारोपण कर स्थानीय समुदायों को चारा, ईंधन की लकड़ी और लघु वनोपज उपलब्ध कराना है।

1. सामाजिक वानिकी के प्रमुख घटक

राष्ट्रीय कृषि आयोग ने सामाजिक वानिकी को मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया:

- **शहरी वानिकी (Urban Forestry):** शहरों में हरित पट्टियों (Green Belts), सड़कों के किनारे, पार्कों, आवासीय क्षेत्रों और औद्योगिक परिसरों में प्रदूषण नियंत्रण एवं सौंदर्यीकरण हेतु वृक्ष लगाना।
- **ग्रामीण वानिकी (Rural Forestry):**
    - **कृषि वानिकी (Farm Forestry / Agroforestry):** किसानों द्वारा अपनी निजी कृषि भूमि (खेतों की मेड़ों या फसलों के बीच) पर व्यावसायिक या घरेलू उपयोग के लिए वृक्षारोपण करना।
    - **सामुदायिक वानिकी (Community Forestry):** गाँव की साझा भूमि (चारागाह, पंचायत भूमि, विद्यालय परिसर, मंदिर की भूमि) पर पूरे समुदाय के लाभ हेतु पौधे लगाना तथा उनका संरक्षण करना।
- **विस्तार वानिकी (Extension Forestry):** बंजर भूमि, रेल की पटरियों, नहरों, सड़कों के किनारों तथा नदी तटबंधों पर वृक्षारोपण कर वनावरण का विस्तार करना।

2. कृषि वानिकी: संकल्पना एवं प्रणालियाँ

यह एक टिकाऊ भूमि प्रबंधन प्रणाली है, जिसमें कृषि फसलों के साथ-साथ बहुवर्षीय काष्ठीय वृक्षों तथा पशुपालन का समन्वित संयोजन किया जाता है।

- **प्रमुख प्रणालियाँ:**

©IASHINDIMEDIUM

- **सस्य-वानिकी (Agri-silvicultural System):** फसलों (Agricultural crops) के साथ वृक्षों का रोपण (उदा. पॉपलर या यूकेलिप्टस के बीच गेहूं की खेती)।
- **वन-चारागाह प्रणाली (Silvopastoral System):** पशु चराई हेतु चारागाह घासों के साथ काष्ठीय वृक्षों का प्रबंधन।
- **सस्य-वन-चारागाह प्रणाली (Agrosilvopastoral System):** फसलें, वृक्ष और पशुधन तीनों का त्रिकोणीय संयोजन।

- **पारिस्थितिक एवं आर्थिक लाभ:** मृदा अपरदन पर रोक, पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण, जल पुनर्भरण और अतिरिक्त आय।
- **पारिस्थितिक अपवाद (विगत वर्षों का ट्रेंड):** सामाजिक वानिकी के तहत बड़े पैमाने पर रोपे गए **यूकेलिप्टस (सफेदा)** को अत्यधिक भूजल अवशोषण के कारण **'पर्यावरण का शत्रु/आतंकवादी'** कहा गया।

3. प्रमुख संस्थान एवं नीतिगत ढांचा

- **राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केंद्र (CAFRI): झाँसी (उत्तर प्रदेश)** में स्थित (1988 में स्थापित; अब केंद्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान)।
- **राष्ट्रीय कृषि वानिकी नीति (2014):** भारत विश्व का पहला देश है जिसने एक समर्पित कृषि वानिकी नीति लागू की।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **उत्तर प्रदेश 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ जनअभियान':** राज्य सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष के दौरान 36.5 करोड़ से अधिक पौधरोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया, जिसमें सामाजिक वानिकी के तहत बुंदेलखंड और पूर्वांचल के जिलों में स्थानीय जलवायु-अनुकूल प्रजातियों (नीम, महुआ, शीशम, जामुन) के रोपण को प्राथमिकता दी गई।
- **कृषि वानिकी कार्बन रजिस्ट्री व क्रेडिट रूपरेखा:** केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा कृषि वानिकी अपनाने वाले लघु व सीमांत किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करने हेतु स्वैच्छिक कार्बन बाजार (Voluntary Carbon Market) से जोड़ने के लिए राष्ट्रीय कृषि वानिकी कार्बन मूल्यांकन फ्रेमवर्क अधिसूचित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सामाजिक वानिकी (Social Forestry) एवं कृषि वानिकी के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में 'सामाजिक वानिकी' शब्द का सर्वप्रथम औपचारिक प्रयोग 1976 में राष्ट्रीय कृषि आयोग द्वारा किया गया था।
2. कृषि वानिकी (Agroforestry) के अंतर्गत फसलों की खेती के साथ-साथ उसी भूमि पर बहुवर्षीय काष्ठीय वृक्ष लगाना शामिल है।
3. भारत का 'केंद्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान' (CAFRI) उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में स्थित है।
4. यूकेलिप्टस को अपनी उच्च नाइट्रोजन स्थिरीकरण क्षमता के कारण सामाजिक वानिकी में 'पारिस्थितिक मित्र' घोषित किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: 1976 में राष्ट्रीय कृषि आयोग ने सामाजिक वानिकी की अवधारणा को विस्तार दिया। कृषि वानिकी एक ही भूमि इकाई पर कृषि फसलों और वृक्षों का संयुक्त प्रबंधन है। केंद्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान (पूर्व में NRCAF) झाँसी (उ.प्र.) में स्थित है।
    - कथन 4 असत्य है: यूकेलिप्टस नाइट्रोजन स्थिरीकरण नहीं करता; बल्कि यह अत्यधिक मात्रा में भूजल का दोहन करता है, जिससे जलस्तर तेजी से गिरता है। इसी कारण इसे 'पर्यावरणीय शत्रु/आतंकवादी' कहा जाता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (वानिकी प्रणाली / संस्थान)	**सूची-II (विशेषता / भौगोलिक स्थिति)**
a. सस्य-वानिकी प्रणाली (Agri-silviculture)	1. झाँसी (उत्तर प्रदेश)
b. वन-चारागाह प्रणाली (Silvopasture)	2. फसल उत्पादन + काष्ठीय वृक्षारोपण
c. केंद्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान	3. चारागाह/घास उत्पादन + काष्ठीय वृक्ष
d. राष्ट्रीय कृषि वानिकी नीति	4. वर्ष 2014 (भारत प्रथम देश)

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **सस्य-वानिकी:** कृषि फसलों के साथ एक ही खेत में काष्ठीय वृक्षों का रोपण।
    - **वन-चारागाह:** पशुओं के चारे/घास के साथ वृक्षों का संयुक्त प्रबंधन।
    - **केंद्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान (CAFRI):** उत्तर प्रदेश के झाँसी में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) का प्रमुख संस्थान।
    - **राष्ट्रीय कृषि वानिकी नीति:** भारत ने वर्ष 2014 में अपनी पहली राष्ट्रीय कृषि वानिकी नीति लागू की थी।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 2: जैविक कृषि एवं प्राकृतिक कृषि मिशन (Organic and Natural Farming Missions)

पारंपरिक रासायनिक खेती (हरित क्रांति) के पारिस्थितिक दुष्प्रभावों—जैसे मृदा क्षरण, भूजल प्रदूषण, और सूक्ष्मजैविक ह्रास—के समाधान हेतु **जैविक कृषि (Organic Farming)** तथा **प्राकृतिक कृषि (Natural Farming)** को पर्यावरण एवं सतत कृषि के प्रमुख स्तंभ के रूप में अपनाया गया है।

1. जैविक कृषि बनाम प्राकृतिक कृषि: मूलभूत अंतर

- **जैविक कृषि (Organic Farming):**
    - इसमें रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का पूर्ण निषेध होता है, किंतु बाह्य रूप से तैयार **जैविक आगतों (Off-farm inputs)** जैसे वर्मीकम्पोस्ट (केंचुआ खाद), गोबर की खाद (FYM), जैव-उर्वरक (*Rhizobium*, *Azotobacter*, *Azospirillum*, नील-हरित शैवाल/BGA) और बायो-पेस्टीसाइड्स का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता है।
    - **प्रमाणीकरण:** NPOP (राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम - वाणिज्य मंत्रालय) तथा PGS-India (भागीदारी गारंटी प्रणाली - कृषि मंत्रालय) द्वारा प्रमाणन अनिवार्य होता है।
- **प्राकृतिक कृषि / शून्य बजट प्राकृतिक खेती (Zero Budget Natural Farming - ZBNF):**
    - इसके प्रवर्तक **सुभाष पालेकर** हैं। इसमें किसी भी प्रकार के बाह्य आगत (यहाँ तक कि खरीदी गई वर्मीकम्पोस्ट भी) का प्रयोग वर्जित है।
    - यह पूर्णतः स्थानीय देशी गाय के गोबर-गोमूत्र और प्रक्षेत्र अपशिष्टों पर आधारित है।
    - **चार आधारभूत स्तंभ:**
        1. **बीजामृत:** देशी गाय के गोबर, गोमूत्र, चूना एवं मिट्टी से बीजोपचार (फफूंद/रोग से बचाव)।
        2. **जीवामृत:** गोबर, गोमूत्र, गुड़, दाल का बेसन एवं सजीव मृदा का किण्वित घोल (मृदा के सूक्ष्मजीवों को सक्रिय करना; यह खाद नहीं बल्कि सूक्ष्मजैविक कल्चर है)।
        3. **आच्छादन (Mulching):** मृदा की नमी संरक्षण और खरपतवार नियंत्रण हेतु पुआल/सूखे पत्तों से भूमि को ढंकना।
        4. **वापसा (Waaphasa):** मृदा में जल और वायु के 50: 50 अनुपात का संतुलन (जड़ों को जल नहीं, केवल नमी/वाष्प चाहिए)।

2. राष्ट्रीय नीतियाँ, योजनाएँ एवं प्रमुख तथ्य

- **परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY):** 2015 में प्रारंभ; क्लस्टर दृष्टिकोण और PGS-India प्रमाणन के माध्यम से जैविक खेती को प्रोत्साहन।
- **राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन (NMNF - National Mission on Natural Farming):** इसे स्वतंत्र केंद्रीय योजना के रूप में अधिसूचित किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य गंगा नदी के दोनों किनारों पर 5 किमी के गलियारे में रासायनिक-मुक्त प्राकृतिक खेती को प्राथमिकता देना है।
- **सिक्किम:** वर्ष 2016 में **100% जैविक बनने वाला विश्व का पहला राज्य** बना (UN-FAO द्वारा 'फ्यूचर पॉलिसी गोल्ड अवार्ड' प्राप्त)।

©IASHINDIMEDIUM

- **लक्षद्वीप:** 100% जैविक घोषित होने वाला भारत का पहला केंद्र शासित प्रदेश।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **राष्ट्रीय प्राकृतिक कृषि मिशन (NMNF) का राष्ट्रव्यापी विस्तार:** केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के पुनर्गठित वित्तीय परिव्यय को स्वीकृति दी गई, जिसके तहत देश भर में 10,000 'बायो-इनपुट रिसोर्स सेंटर' (BRCs) स्थापित करने तथा उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों में गंगा बेसिन व बुंदेलखंड क्लस्टरों को मॉडल प्राकृतिक कृषि क्षेत्र के रूप में विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

- **उत्तर प्रदेश राज्य प्राकृतिक कृषि बोर्ड का विस्तार:** उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बुंदेलखंड के सभी 7 जिलों (झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट) में 'गो-आधारित प्राकृतिक खेती प्रोत्साहन योजना' के अंतर्गत किसानों को देशी गाय पालन हेतु प्रत्यक्ष मासिक DBT प्रोत्साहन तथा क्लस्टर-वार प्रमाणन का नया चरण प्रारंभ किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्राकृतिक खेती (Natural Farming) के संदर्भ में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक कृषि' (SPNF) के चार आधारभूत स्तंभों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'जीवामृत' मुख्य रूप से मृदा को पोषक तत्व प्रदान करने वाली पारंपरिक रासायनिक खाद का विकल्प है, जो वर्मीकम्पोस्ट की तरह कार्य करता है।
2. 'बीजामृत' का उपयोग नवजात पौधों और बीजों को कवक तथा मृदा-जनित रोगों से सुरक्षा प्रदान करने हेतु बीजोपचार के लिए किया जाता है।
3. 'वापसा' वह स्थिति है जहाँ जड़ों के आसपास मृदा में केवल जल भरा रहता है, जिससे वायु का प्रवेश अवरुद्ध हो जाता है।
4. 'आच्छादन' (Mulching) मृदा की सतह से वाष्पीकरण को रोककर नमी बनाए रखने और खरपतवार नियंत्रण में सहायक होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: जीवामृत कोई उर्वरक या खाद नहीं है; यह एक सूक्ष्मजैविक कल्चर (Bio-inoculant) है जो देशी गाय के गोबर-गोमूत्र, बेसन और गुड़ से तैयार होता है। इसका कार्य मृदा में पहले से प्रसुप्त लाभकारी सूक्ष्मजीवों और केंचुओं को सक्रिय करना है।
    - कथन 2 सत्य है: बीजामृत देशी गाय के गोबर, मूत्र, चूना और मेड़ की मिट्टी का मिश्रण है, जिसका उपयोग बुवाई से पूर्व बीजों, कंदों या पौध की जड़ों को फफूंद व कीटों से बचाने के लिए किया जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 3 असत्य है: 'वापसा' जलभराव की स्थिति नहीं है, बल्कि यह मृदा में वायु और जलवाष्प के 50: 50 अनुपात का संतुलन है। इसके अनुसार पौधों की जड़ों को तरल पानी की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि केवल नमी/वाष्प की आवश्यकता होती है।
- कथन 4 सत्य है: आच्छादन (काष्ठ, पुआल या फसलों के अवशेषों से भूमि को ढंकना) मृदा अपरदन रोकता है, नमी का संरक्षण करता है और खरपतवारों की वृद्धि को रोकता है।

प्रश्न 2. जैविक एवं प्राकृतिक कृषि के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

युग्म	**विषय / योजना**	**संबंधित तथ्य / विवरण**
1.	विश्व का प्रथम 100% जैविक राज्य	सिक्किम (2016)
2.	सहभागिता गारंटी प्रणाली (PGS-India)	कृषि मंत्रालय द्वारा घरेलू स्तर पर जैविक प्रमाणन
3.	नमामि गंगे प्राकृतिक कृषि गलियारा	गंगा नदी के दोनों तटों पर 5 किमी का रासायनिक-मुक्त क्षेत्र
4.	प्रथम 100% जैविक केंद्र शासित प्रदेश	पुडुचेरी

उपर्युक्त में से कौन-से युग्म सही सुमेलित हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 3 और 4

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - युग्म 1 सही सुमेलित है: सिक्किम ने 2016 में पूर्णतः जैविक राज्य का दर्जा प्राप्त किया था।
  - युग्म 2 सही सुमेलित है: PGS-India (Participatory Guarantee System) भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा संचालित एक विकेंद्रीकृत, किसान-अनुकूल जैविक प्रमाणीकरण प्रणाली है।
  - युग्म 3 सही सुमेलित है: राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत नमामि गंगे परियोजना के अंतर्गत गंगा नदी के दोनों किनारों पर 5-5 किमी के दायरे में रासायनिक उर्वरक-मुक्त प्राकृतिक कृषि गलियारा विकसित किया जा रहा है।
  - युग्म 4 गलत सुमेलित है: भारत का पहला शत-प्रतिशत जैविक केंद्र शासित प्रदेश **लक्षद्वीप** (2020 में घोषित) है, पुडुचेरी नहीं।

टॉपिक - 4: मैंग्रोव वन और प्रवाल भित्तियाँ (Mangroves and Coral Reefs)

©IASHINDIMEDIUM

मैंग्रोव वन और प्रवाल भित्तियाँ पृथ्वी के दो सबसे उत्पादक एवं संवेदनशील तटीय-समुद्री पारिस्थितिक तंत्र हैं। इन्हें क्रमशः **'तटीय जैव विविधता की नर्सरी'** तथा **'समुद्रों का वर्षावन'** कहा जाता है।

1. मैंग्रोव वन (Mangrove Ecosystem)

- **पारिस्थितिक विशेषताएँ:**
    - ये उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय ज्वारीय क्षेत्रों में उगने वाले **लवण-सहिष्णु (Halophytes)** काष्ठीय पादप हैं।
    - **श्वसन जड़ें (न्यूमेटोफोर्स / Pneumatophores):** ऑक्सीजन की कमी वाली दलदली मृदा में गैसीय विनिमय हेतु जड़ें ऋणात्मक गुरुत्वानुवर्ती (जमीन से ऊपर) वृद्धि करती हैं।
    - **जरायुजता (Vivipary):** बीज मूल वृक्ष से जुड़े रहते हुए ही अंकुरित हो जाते हैं, ताकि लवणीय जल में बहने से पूर्व उनका अस्तित्व सुरक्षित रह सके।
    - **जटा जड़ें (Stilt Roots):** तीव्र समुद्री लहरों व ज्वार के थपेड़ों से स्थिरता प्रदान करती हैं।
- **वितरण (ISFR रिपोर्ट के अनुसार):**
    - भारत में कुल मैंग्रोव आवरण देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग **0.15%** (~4,992 वर्ग किमी) है।
    - **सर्वाधिक मैंग्रोव वाले राज्य/UT:** पश्चिम बंगाल (सुंदरबन - विश्व का सबसे बड़ा डेल्टाई मैंग्रोव) > गुजरात > अंडमान और निकोबार द्वीप समूह > आंध्र प्रदेश।
    - ओडिशा का **भीतरकनिका** मैंग्रोव अपनी उच्चतम प्रजातीय विविधता और खारे पानी के मगरमच्छों हेतु प्रसिद्ध है।
- **पारिस्थितिक भूमिका:** चक्रवात, सुनामी और तटीय अपरदन के विरुद्ध प्राकृतिक जैव-कवच (Bio-shield); अत्यधिक कुशल कार्बन सिंक (**ब्लू कार्बन**)।

2. प्रवाल भित्तियाँ (Coral Reefs)

- **जीववैज्ञानिक संरचना:**
    - प्रवाल सूक्ष्म समुद्री अकशेरुकी जीव (Coelenterata/Cnidaria संघ के **पॉलिप**) हैं, जो **कैल्शियम कार्बोनेट ($CaCO_3$)** के कठोर बाह्य कंकाल का स्राव करते हैं।
    - **सहजीविता (Symbiosis):** कोरल पॉलिप एककोशिकीय प्रकाश-संश्लेषी शैवाल **जूजैंथेली (Zooxanthellae)** के साथ परस्पर सहजीवी संबंध में रहते हैं। शैवाल प्रवाल को भोजन और विविध रंग प्रदान करते हैं, जबकि प्रवाल उन्हें आश्रय व पोषक तत्व देते हैं।
- **अनुकूल भौतिक दशाएँ (UPPCS का कोर प्रश्न):**
    - **तापमान:** उष्णकटिबंधीय उथला जल ($20°C$ से $25°C$ आदर्श)।
    - **लवणता:** सामान्य समुद्री लवणता (27 ppt से 30 ppt); अत्यधिक स्वच्छ या अत्यधिक खारा जल हानिकारक होता है।
    - **गहराई एवं सूर्य प्रकाश:** 200 फीट (60–70 मीटर) से कम उथला जल, ताकि प्रकाश संश्लेषण हेतु पर्याप्त धूप मिले। अवसाद-रहित स्वच्छ जल आवश्यक है।

©IASHINDIMEDIUM

- **प्रवाल विरंजन (Coral Bleaching):**
    - जब समुद्री तापमान में असामान्य वृद्धि ($1 - 2^{\circ}C$), प्रदूषण या पराबैंगनी विकिरण बढ़ता है, तो प्रवाल तनाव में आकर जूजैंथेली शैवाल को निष्कासित कर देते हैं, जिससे प्रवाल का श्वेत कंकाल दिखने लगता है।
- **भारत में प्रमुख क्षेत्र:** मन्नार की खाड़ी, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप (प्रवाल एटोल / Atoll) तथा कच्छ की खाड़ी।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **मिष्टी (MISHTI) योजना का प्रगति विस्तार:** केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा तटीय क्षेत्रों में मैंग्रोव आवरण के पुनरुद्धार हेतु 'मैंग्रोव इनिशिएटिव फॉर शोरलाइन हैबिटेट्स एंड टैंजिबल इनकम्स' (MISHTI) के अंतर्गत कैम्पा (CAMPA) फंड और मनरेगा के समन्वय से 540 वर्ग किमी क्षेत्र में नए मैंग्रोव रोपण का लक्ष्य प्राप्त किया गया।
- **चौथा वैश्विक प्रवाल विरंजन संकट (4th Global Coral Bleaching Event):** अमेरिकी एजेंसी NOAA और ICRI (अंतरराष्ट्रीय कोरल रीफ इनिशिएटिव) के प्रतिवेदनों के अनुसार, अल-नीनो और चरम समुद्री ताप-तरंगों (Marine Heatwaves) के संयुक्त प्रभाव से ग्रेट बैरियर रीफ सहित हिंद महासागर (लक्षद्वीप और मन्नार की खाड़ी) में 70% से अधिक प्रवाल क्षेत्रों में व्यापक प्रवाल विरंजन दर्ज किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. मैंग्रोव वनस्पति के पारिस्थितिक एवं शारीरिक अनुकूलन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मैंग्रोव पादपों में पाई जाने वाली न्यूमेटोफोर (Pneumatophores) जड़ें गुरुत्वाकर्षण के विपरीत ऊपर उठकर श्वसन हेतु वायुमंडलीय ऑक्सीजन ग्रहण करती हैं।
2. जरायुजता (Vivipary) वह प्रक्रिया है जिसमें मैंग्रोव पादप के बीज मातृ वृक्ष पर लगे रहते हुए ही अंकुरित हो जाते हैं।
3. भारत वन स्थिति रिपोर्ट (ISFR) के अनुसार, भारत में सर्वाधिक मैंग्रोव आवरण क्रमशः पश्चिम बंगाल, गुजरात और अंडमान-निकोबार में पाया जाता है।
4. मैंग्रोव पादप केवल पूर्णतः मीठे और शुद्ध जल में ही जीवित रह सकते हैं, लवणीय जल इनके लिए घातक होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: दलदली एवं अवायवीय मृदा में सांस लेने के लिए न्यूमेटोफोर्स (ऋणात्मक गुरुत्वानुवर्ती जड़ें) विकसित होती हैं। खारे पानी और दलदल से बचने के लिए बीज वृक्ष पर ही अंकुरित होते हैं (जरायुजता)। भारत में सर्वाधिक मैंग्रोव पश्चिम बंगाल में (लगभग 42%), इसके बाद गुजरात और अंडमान एवं निकोबार में स्थित हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 4 असत्य है: मैंग्रोव मूलतः **लवण-मृदोद्भिद (Halophytes)** होते हैं, जो उच्च लवणता वाले ज्वारीय-तटीय खारे जल में ही विशिष्ट रूप से अनुकूलित होते हैं।

प्रश्न 2. प्रवाल भित्तियों (Coral Reefs) के विकास एवं प्रवाल विरंजन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रवाल पॉलिप्स और जूजैंथेली (Zooxanthellae) नामक सूक्ष्म शैवाल के मध्य सहजीवी (Symbiotic) संबंध पाया जाता है।
2. प्रवाल भित्तियों के इष्टतम विकास के लिए समुद्री जल का तापमान सामान्यतः $20°C$ से $25°C$ के मध्य होना अनुकूल माना जाता है।
3. लक्षद्वीप द्वीप समूह मुख्य रूप से ज्वालामुखी बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित द्वीप हैं, जहाँ प्रवाल भित्तियाँ अनुपस्थित हैं।
4. समुद्री जल के तापमान में असामान्य वृद्धि होने पर प्रवाल अपने ऊतकों से सहजीवी शैवाल को निष्कासित कर देते हैं, जिससे प्रवाल विरंजन घटित होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: कोरल पॉलिप जूजैंथेली शैवाल के साथ सहजीविता में रहते हैं। इनके विकास हेतु $20°C - 25°C$ का उथला, स्वच्छ व उष्ण जल आवश्यक है। तापमान बढ़ने पर तनाव के कारण शैवाल अलग हो जाते हैं, जिससे प्रवाल विरंजन (Coral Bleaching) होता है।
  - कथन 3 असत्य है: लक्षद्वीप पूर्णतः **प्रवाल उत्पत्ति (Coral Origin / Atoll)** के द्वीप हैं। अंडमान-निकोबार ज्वालामुखी व विवर्तनिक उत्पत्ति के हैं, जबकि लक्षद्वीप भारत का प्रमुख प्रवाल एटोल क्षेत्र है।

टॉपिक - 5: कार्बन सिंक और कार्बन कैप्चर एंड स्टोरेज (CCS) तकनीक

जलवायु परिवर्तन शमन (Climate Change Mitigation) में वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) को कम करने के दो प्रमुख उपाय हैं: प्राकृतिक भंडारों में कार्बन का संचयन (**कार्बन सिंक**) और कृत्रिम तकनीकी विधियों द्वारा उत्सर्जन को पकड़कर भूमिगत सुरक्षित करना (**CCS तकनीक**)।

1. कार्बन सिंक (Carbon Sinks)

कार्बन सिंक प्रकृति का ऐसा तंत्र या भंडार है जो उत्सर्जित कार्बन की तुलना में अधिक कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित व संचित करता है। कार्बन चक्रण के संदर्भ में इसे विभिन्न रंगों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है:

©IASHINDIMEDIUM

- **ग्रीन कार्बन (Green Carbon):** स्थलीय वनों, पौधों, घास के मैदानों और कृषि भूमि द्वारा प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से जैवभार (Biomass) व मृदा में संचित कार्बन।
- **ब्लू कार्बन (Blue Carbon):** तटीय, जलीय एवं समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों—विशेष रूप से **मैंग्रोव, समुद्री घास (Seagrass beds) और खारे दलदल (Tidal Marshes)** द्वारा अवशोषित कार्बन।
    - *विशिष्टता:* ब्लू कार्बन सिंक स्थलीय उष्णकटिबंधीय वनों की तुलना में **प्रति इकाई क्षेत्रफल 4 से 10 गुना अधिक तेजी से** कार्बन का दीर्घकालिक संचयन करते हैं।
- **टील कार्बन (Teal Carbon):** ताजे पानी के आर्द्रभूमि (Freshwater Wetlands) तथा अंतर्देशीय पीटभूमियों (Peatlands) में संचित कार्बन।
- **ब्लैक एवं ब्राउन कार्बन:** यह सिंक नहीं बल्कि प्रदूषक हैं। ब्लैक कार्बन (काजल/Soot) अपूर्ण दहन से उत्पन्न होता है और सौर विकिरण अवशोषित कर वार्मिंग बढ़ाता है; ब्राउन कार्बन बायोमास दहन से निकलने वाला प्रकाश-अवशोषक एरोसोल है।

2. कार्बन कैप्चर, यूटिलाइजेशन एंड स्टोरेज (CCUS) तकनीक

CCUS एक तकनीकी प्रक्रिया है जो बड़े बिंदु स्रोतों (जैसे ताप विद्युत संयंत्र, इस्पात, रिफाइनरी व सीमेंट उद्योग) से निकलने वाले CO_2 उत्सर्जन को वायुमंडल में मिलने से पहले अलग करती है।

- **कैप्चर (अभिग्रहण विधियां):**
    1. **प्री-कम्बशन (दहन-पूर्व):** ईंधन के दहन से पहले गैसीकरण द्वारा 'सिनगैस' ($CO + H_2$) बनाकर CO_2 को अलग करना।
    2. **पोस्ट-कम्बशन (दहन-पश्चात):** फ्लू गैसों (Flue gas) से रासायनिक विलायकों (जैसे **एमाइन्स - Amine solvents**) द्वारा CO_2 को अवशोषित करना (सर्वाधिक प्रचलित)।
    3. **ऑक्सी-ईंधन दहन (Oxy-fuel):** शुद्ध ऑक्सीजन में ईंधन जलाना जिससे केवल CO_2 और जलवाष्प बने।
- **परिवहन एवं भंडारण (Storage/Sequestration):** CO_2 को संपीडित कर पाइपलाइन द्वारा गहरे भूमिगत भूवैज्ञानिक संरचनाओं में भेजा जाता है:
    - समाप्त हो चुके तेल व गैस क्षेत्र (Depleted Oil & Gas Reservoirs)।
    - गैर-खनन योग्य कोयला संस्तर (Unmineable Coal Seams) — जहाँ यह मीथेन को विस्थापित करती है (ECBM)।
    - गहरे लवणीय जलभृत (Deep Saline Aquifers) — सर्वाधिक वैश्विक भंडारण क्षमता।
- **उपयोग (Utilization - CCU):** कैप्चर की गई CO_2 से यूरिया, सिंथेटिक ईंधन, पॉलीमर या भवन निर्माण सामग्री (कंक्रीट क्यूरिंग) बनाना।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन करेंट अफेयर्स (2025–2026)

- **भारत का प्रथम राष्ट्रीय CCUS मिशन एवं नीतिगत फ्रेमवर्क:** नीति आयोग एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा भारी उद्योगों (हार्ड-टू-एबेट सेक्टर्स: स्टील, सीमेंट) के लिए राष्ट्रीय CCUS रोडमैप के अंतर्गत दो 'राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र' (CoE-CCUS) के सहयोग से प्रायोगिक भूवैज्ञानिक भंडारण परीक्षण प्रारंभ किए गए।

©IASHINDIMEDIUM

- **राष्ट्रीय ब्लू कार्बन रजिस्ट्री का शुभारंभ:** पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा भारत की संपूर्ण 7,516 किमी तटीय सीमा पर मैंग्रोव और समुद्री घास के ब्लू कार्बन पारिस्थितिक तंत्रों का डिजिटल सैटेलाइट एटलस और कार्बन क्रेडिट प्रमाणन तंत्र अधिसूचित किया गया, ताकि भारतीय कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS) में तटीय पंचायतों को वित्तीय लाभ मिल सके।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. कार्बन सिंक और 'ब्लू कार्बन' (Blue Carbon) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'ब्लू कार्बन' मुख्य रूप से तटीय एवं समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों जैसे मैंग्रोव, लवणीय दलदल और समुद्री घासों द्वारा अवशोषित कार्बन को संदर्भित करता है।
2. प्रति इकाई क्षेत्रफल के आधार पर मैंग्रोव और तटीय आर्द्रभूमियां स्थलीय उष्णकटिबंधीय वनों की तुलना में अधिक तेजी से और दीर्घकाल तक कार्बन संचित करती हैं।
3. 'ब्लैक कार्बन' एक प्रकार का प्राकृतिक कार्बन सिंक है जो महासागरों की तलहटी में तलछट के रूप में स्थायी रूप से जमा रहता है।
4. भारत के अद्यतन NDC के तहत 2030 तक अतिरिक्त वन व वृक्षावरण के माध्यम से 2.5 से 3 बिलियन टन CO_2 समतुल्य का अतिरिक्त कार्बन सिंक सृजित करने का लक्ष्य है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 और 2 सत्य हैं: तटीय-समुद्री वनस्पतियाँ प्रकाश संश्लेषण द्वारा कार्बन अवशोषित कर उसे लवणीय, अवायवीय (Anaerobic) तलछटों में संचित करती हैं, जहाँ अपघटन बहुत धीमा होता है; अतः ये स्थलीय वनों से कई गुना अधिक दक्ष सिंक हैं।
    - कथन 3 असत्य है: ब्लैक कार्बन कोई सिंक नहीं है; यह जीवाश्म ईंधन, बायोमास और लकड़ी के अपूर्ण दहन से उत्पन्न होने वाला सूक्ष्म कणीय वायु प्रदूषक (काजल) है, जो सौर विकिरण को अवशोषित कर ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाता है।
    - कथन 4 सत्य है: पेरिस समझौते के अंतर्गत भारत के आधिकारिक NDC (Nationally Determined Contributions) लक्ष्यों में 2.5 से 3 बिलियन टन CO_2 समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक का लक्ष्य स्पष्ट रूप से शामिल है।

प्रश्न 2. कार्बन कैप्चर एंड स्टोरेज (CCS) तकनीक के भूवैज्ञानिक भंडारण (Geological Sequestration) के संदर्भ में CO_2 को स्थायी रूप से संचित करने हेतु निम्नलिखित में से कौन-से स्थल उपयुक्त माने जाते हैं?

1. गहरे लवणीय जलभृत (Deep Saline Formations)
2. समाप्त हो चुके तेल एवं प्राकृतिक गैस के कुएं (Depleted Oil and Gas Reservoirs)

©IASHINDIMEDIUM

3. गैर-खनन योग्य गहरे कोयला संस्तर (Unmineable Coal Seams)
4. सक्रिय ज्वालामुखियों के मैग्मा चैंबर

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - बिंदु 1, 2 और 3 सही हैं: CCS में अत्यधिक दाब पर CO_2 को सुपरक्रिटिकल अवस्था में ले जाकर गहरे लवणीय जलभृतों (जिनकी भंडारण क्षमता सर्वाधिक है), रिक्त तेल/गैस भंडारों (जहाँ पहले से सीलिंग रॉक मौजूद होती है) तथा गैर-खनन योग्य गहरे कोयला स्तरों में इंजेक्ट किया जाता है। कोयला स्तरों में यह कोयले की सतह पर अधिशोषित हो जाती है और प्राकृतिक मीथेन गैस (ECBM) को मुक्त कराती है।
    - बिंदु 4 असत्य है: सक्रिय ज्वालामुखियों में अत्यधिक तापमान, दबाव और मैग्मा संचलन होता है, जिससे गैसों का विस्फोट या रिसाव निश्चित है; अतः यह भंडारण के लिए पूरी तरह अनुपयुक्त और खतरनाक है।

©IASHINDIMEDIUM

भारतीय अर्थव्यवस्था

बुनियादी अवधारणाएँ एवं राष्ट्रीय आय

टॉपिक 1: व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र (Microeconomics and Macroeconomics)

अर्थशास्त्र की मुख्य शाखाओं को सर्वप्रथम 1933 में ओस्लो विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री **राग्नार फ्रिश (Ragnar Frisch)** ने 'व्यष्टि' (Micro) और 'समष्टि' (Macro) में विभाजित किया था।

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र (Microeconomics)

- **परिभाषा एवं क्षेत्र:** यह व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों—जैसे एक उपभोक्ता, एक फर्म, एक परिवार या किसी विशिष्ट उद्योग के आर्थिक व्यवहार और निर्णयों का अध्ययन करता है। इसे **'कीमत सिद्धांत' (Price Theory)** भी कहा जाता है।
- **केंद्रीय विषय:**
    - **मांग एवं पूर्ति का नियम (Law of Demand and Supply):** मांग का नियम (अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत बढ़ने पर मांग घटती है; ऋणात्मक ढाल) तथा पूर्ति का नियम (कीमत और पूर्ति में प्रत्यक्ष संबंध; धनात्मक ढाल)।
    - **उपभोक्ता व्यवहार सिद्धांत:** उपयोगिता (Utility), ह्रासमान सीमांत उपयोगिता नियम (Gossen's First Law), और तटस्थता वक्र (Indifference Curve—जो मूल बिंदु के प्रति उन्नतोदर/Convex होता है)।
    - **उत्पादन एवं लागत सिद्धांत:** उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Diminishing Returns) तथा पैमाने के प्रतिफल।
    - **बाजार संरचना:** पूर्ण प्रतियोगिता (विशाल क्रेता/विक्रेता, समरूप उत्पाद, फर्म कीमत स्वीकारक होती है), एकाधिकार (Monopoly - एकल विक्रेता), एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता (उत्पाद विभेदीकरण), तथा अल्पाधिकार (Oligopoly - कुछ बड़ी फर्में; कार्टेल निर्माण जैसे ओपेक)।
- **एडम स्मिथ (Adam Smith):** इन्हें आधुनिक व्यष्टि अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है। इनकी पुस्तक *'The Wealth of Nations'* (1776) में **'अदृश्य हाथ' (Invisible Hand)** की अवधारणा दी गई।

©IASHINDIMEDIUM

2. समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics)

- **परिभाषा एवं क्षेत्र:** यह संपूर्ण अर्थव्यवस्था के समग्र स्तर (Aggregates) पर आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करता है। इसे **'आय एवं रोजगार सिद्धांत' (Income and Employment Theory)** भी कहा जाता है।
- **केंद्रीय विषय:**
    - **राष्ट्रीय आय:** सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP), निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) तथा राष्ट्रीय आय का चक्रीय प्रवाह।
    - **मुद्रास्फीति (Inflation) एवं अपस्फीति (Deflation):** मांग-प्रेरित (Demand-pull) एवं लागत-जनित (Cost-push) मुद्रास्फीति।
    - **रोजगार सिद्धांत एवं व्यापार चक्र (Business Cycles):** बूम, मंदी (Recession), अवसाद (Depression) और सुधार।
    - **राजकोषीय नीति (Fiscal Policy) एवं मौद्रिक नीति (Monetary Policy):** समग्र मांग और आपूर्ति के नियमन हेतु सरकारी बजट एवं केंद्रीय बैंक (RBI) के उपाय।
- **जॉन मेनार्ड कीन्स (J.M. Keynes):** इन्हें आधुनिक समष्टि अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है। 1929 की महामंदी (Great Depression) के समाधान के रूप में 1936 में प्रकाशित इनकी पुस्तक *'The General Theory of Employment, Interest and Money'* ने राज्य के हस्तक्षेप और समग्र मांग (Aggregate Demand) के प्रबंधन पर बल दिया।

3. प्रमुख अंतर एवं विरोधाभास (Macroeconomic Paradox)

- **समष्टिगत विरोधाभास (Paradox of Thrift):** कीन्स के अनुसार, एक व्यक्ति के लिए बचत करना व्यक्तिगत स्तर पर गुण (व्यष्टि) है, किंतु यदि अर्थव्यवस्था के सभी नागरिक एक साथ बचत करने लगें तो कुल उपभोग व्यय घट जाएगा, जिससे उत्पादन, आय और अंततः कुल बचत में गिरावट आ जाएगी (समष्टिगत दोष)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **के-शेप्ड बनाम समावेशी सुधार (K-Shaped Recovery Trends):** भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यष्टि स्तर पर असंगठित क्षेत्र एवं निम्न आय वर्ग के उपभोग व्यवहार तथा समष्टि स्तर पर मजबूत GDP वृद्धि दर (लगभग 6.5–7%) के बीच के अंतर को पाटने के लिए केंद्रीय बजट में ग्रामीण व्यय और प्रत्यक्ष पूंजीगत व्यय (Capex) पर विशेष बल दिया गया।
- **आरबीआई का लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (FIT Framework):** भारतीय रिज़र्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने समष्टिगत स्थिरता बनाए रखने के लिए 4% (±2%) के मुद्रास्फीति लक्ष्य के साथ नीतिगत दरों के संचालन में खाद्य कीमतों की अस्थिरता और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के प्रभावों का अध्ययन किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र को 'कीमत सिद्धांत' (Price Theory) के नाम से भी जाना जाता है, जबकि समष्टि अर्थशास्त्र को 'आय एवं रोजगार सिद्धांत' कहा जाता है।
2. सर्वप्रथम 'व्यष्टि' (Micro) और 'समष्टि' (Macro) शब्दों का प्रयोग वर्ष 1933 में अर्थशास्त्री राग्नार फ्रिश द्वारा किया गया था।

©IASHINDIMEDIUM

3. 'मितव्ययिता का विरोधाभास' (Paradox of Thrift) यह दर्शाता है कि जो आचरण व्यक्तिगत स्तर पर हितकारी हो सकता है, वह संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

4. जे. एम. कीन्स ने अपनी पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' में पूर्णतः हस्तक्षेप-रहित (Laissez-faire) बाजार अर्थव्यवस्था की वकालत की थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं। व्यष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत कीमतों के निर्धारण पर केंद्रित होने के कारण कीमत सिद्धांत कहलाता है, जबकि समष्टि अर्थशास्त्र कुल उत्पादन, रोजगार और आय का अध्ययन करता है। राग्नार फ्रिश ने 1933 में इन शब्दों का पहला उपयोग किया था। कीन्स का 'मितव्ययिता का विरोधाभास' समष्टिगत विरोधाभास का सटीक उदाहरण है।
    - कथन 4 असत्य है क्योंकि *'The Wealth of Nations'* (1776) एडम स्मिथ द्वारा लिखी गई थी, जिसमें उन्होंने 'अदृश्य हाथ' और अहस्तक्षेप की नीति का समर्थन किया था। जे. एम. कीन्स ने 1936 में *'The General Theory of Employment, Interest and Money'* लिखी थी, जिसमें उन्होंने मंदी से उबरने के लिए सरकारी हस्तक्षेप को आवश्यक बताया था।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (आर्थिक अवधारणा / सिद्धांत)	**सूची-II (संबद्ध अर्थशास्त्री / शाखा)**
a. अदृश्य हाथ (Invisible Hand)	1. जॉन मेनार्ड कीन्स
b. समष्टिगत विरोधाभास (Paradox of Thrift)	2. व्यष्टि अर्थशास्त्र (Microeconomics)
c. एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता (Monopolistic Competition)	3. एडम स्मिथ
d. 'Micro' एवं 'Macro' शब्दावली का प्रथम प्रयोग	4. राग्नार फ्रिश

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

©IASHINDIMEDIUM

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **अदृश्य हाथ (Invisible Hand):** एडम स्मिथ ने बाजार की स्वतः-नियामक शक्तियों को समझाने के लिए यह अवधारणा दी।
    - **मितव्ययिता का विरोधाभास (Paradox of Thrift):** जे. एम. कीन्स द्वारा समष्टि अर्थशास्त्र के तहत प्रतिपादित सिद्धांत।
    - **एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता:** यह व्यक्तिगत बाजार संरचना का रूप है, जो व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में आता है।
    - **Micro एवं Macro शब्दावली:** 1933 में राग्नार फ्रिश द्वारा पहली बार प्रयोग की गई।

टॉपिक - 2: राष्ट्रीय आय की संकल्पनाएँ (GDP, GNP, NNP एवं संबंधित समुच्चय)

राष्ट्रीय आय किसी देश की अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च) के दौरान उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य का समग्र योग है। भारत में राष्ट्रीय आय का सर्वप्रथम अनुमान **दादाभाई नौरोजी** ने अपनी पुस्तक *'Poverty and Un-British Rule in India'* में वर्ष 1867-68 के लिए (प्रति व्यक्ति आय ₹20) लगाया था। स्वतंत्रता पश्चात **प्रो. पी. सी. महालनोबिस** की अध्यक्षता में 1949 में गठित 'राष्ट्रीय आय समिति' की सिफारिश पर वर्तमान में इसका संकलन एवं प्रकाशन सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के अंतर्गत **राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO)** द्वारा किया जाता है।

1. प्रमुख समुच्चय एवं अंतर्संबंध

- **सकल घरेलू उत्पाद (GDP - Gross Domestic Product):**
    - किसी देश की घरेलू भौगोलिक सीमा के भीतर एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित समस्त **अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य**।
    - इसमें देश के नागरिकों तथा देश के भीतर कार्यरत विदेशी नागरिकों—दोनों का उत्पादन शामिल होता है।
    - GDP $= C + I + G + (X - M)$ *(जहाँ C = उपभोग, I = निवेश, G = सरकारी व्यय, X = निर्यात, M = आयात)*।
- **सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP - Gross National Product):**
    - किसी देश के सामान्य नागरिकों द्वारा (चाहे वे देश के भीतर हों या विदेश में) एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का मूल्य।
    - GNP $=$ GDP $+$ NFIA *(विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय / Net Factor Income from Abroad)*।

©IASHINDIMEDIUM

- NFIA = देश के नागरिकों द्वारा विदेशों में अर्जित आय − विदेशी नागरिकों द्वारा देश के भीतर अर्जित आय।
- यदि अर्थव्यवस्था बंद (Closed Economy) हो, तो NFIA = 0, अतः GDP = GNP होगा।

- **शुद्ध/निवल उत्पाद (Net Concepts एवं मूल्यह्रास):**
  - **NNP (Net National Product):** उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त परिसंपत्तियों की टूट-फूट व घिसावट को **मूल्यह्रास (Depreciation / Consumption of Fixed Capital)** कहते हैं।
  - NDP = GDP − Depreciation
  - NNP = GNP − Depreciation
- **साधन लागत (Factor Cost) बनाम बाजार मूल्य (Market Price):**
  - **साधन लागत (FC):** उत्पादन के 4 साधनों (भूमि, श्रम, पूँजी, उद्यमशीलता) को प्राप्त प्रतिफल (लगान, मजदूरी, ब्याज, लाभ)।
  - Market Price (MP) = Factor Cost (FC) + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (Net Indirect Taxes - NIT)
  - NIT = अप्रत्यक्ष कर − सब्सिडी।
  - **राष्ट्रीय आय (National Income - NI):** तकनीकी रूप से साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद को राष्ट्रीय आय कहा जाता है:

$$NI = NNP_{FC}$$

- **वास्तविक (Real) बनाम नाममात्र (Nominal) GDP:**
  - **वास्तविक GDP:** आधार वर्ष की स्थिर कीमतों (Constant Prices) पर मापी गई GDP। भारत में वर्तमान **आधार वर्ष 2011-12** है।
  - **नाममात्र GDP:** चालू वर्ष की प्रचलित कीमतों (Current Prices) पर मापी गई GDP।
  - **GDP अपस्फीतिकारक (GDP Deflator):** $\frac{\text{Nominal GDP}}{\text{Real GDP}} \times 100$ (यह समग्र अर्थव्यवस्था की मूल्यवृद्धि का सबसे व्यापक सूचक है)।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **आधार वर्ष संशोधन की अग्रिम रूपरेखा:** MoSPI द्वारा राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (SNA 2008) के अनुरूप GDP और औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) के आधार वर्ष को 2011-12 से संशोधित कर **2022-23** करने की प्रक्रिया के अंतिम प्रारूप पर कार्य किया गया, जिससे डिजिटल अर्थव्यवस्था और गिग इकॉनमी के योगदान को सटीक रूप से समाहित किया जा सके।
- **भारत की वैश्विक GDP स्थिति:** NSO के अद्यतन राष्ट्रीय आय अनुमानों के अनुसार, भारत ने चालू कीमतों (Nominal terms) पर विश्व की 4वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तीव्र प्रगति दर्ज की, जबकि क्रय शक्ति समता (PPP - Purchasing Power Parity) के आधार पर भारत अमेरिका और चीन के बाद विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना हुआ है।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 1. राष्ट्रीय आय और संबंधित समुच्चयों (Aggregates) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में उस देश की भौगोलिक सीमा के भीतर विदेशी नागरिकों द्वारा उत्पादित आय को शामिल किया जाता है।
2. विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) धनात्मक होने पर किसी देश का सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP), सकल घरेलू उत्पाद (GDP) से अधिक होता है।
3. आर्थिक विश्लेषण में साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{FC}) को ही औपचारिक रूप से 'राष्ट्रीय आय' (National Income) कहा जाता है।
4. GDP डिफ्लेटर (GDP Deflator) का परिकलन रियल GDP को नॉमिनल GDP से विभाजित करके 100 से गुणा करके किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: GDP एक क्षेत्रीय/भौगोलिक अवधारणा है। इसमें देश की सीमाओं के भीतर उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य शामिल होता है, चाहे वह उत्पादन नागरिकों द्वारा किया गया हो या विदेशी प्रवासियों द्वारा।
  - कथन 2 सत्य है: $GNP = GDP + NFIA$। यदि देश के नागरिकों द्वारा विदेशों से अर्जित आय, देश में रहने वाले विदेशियों की आय से अधिक है, तो NFIA धनात्मक होगा और GNP का मान GDP से अधिक हो जाएगा।
  - कथन 3 सत्य है: सैद्धांतिक एवं पारंपरिक अर्थशास्त्र में साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{FC}) को ही देश की वास्तविक 'राष्ट्रीय आय' माना जाता है।
  - कथन 4 असत्य है: GDP डिफ्लेटर का सूत्र $\frac{\text{Nominal GDP}}{\text{Real GDP}} \times 100$ होता है (अर्थात् नॉमिनल GDP को रियल GDP से विभाजित किया जाता है, इसका उल्टा नहीं)।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (आर्थिक सूत्र / अवधारणा)	**सूची-II (सटीक समीकरण / समकक्ष मान)**
a. निवल घरेलू उत्पाद (NDP)	1. GNP − मूल्यह्रास (Depreciation)

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (आर्थिक सूत्र / अवधारणा)	सूची-II (सटीक समीकरण / समकक्ष मान)
b. साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{FC})	2. GDP − मूल्यह्रास
c. बाजार मूल्य पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP})	3. NNP_{MP} − शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (NIT)
d. विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) शून्य होने पर	4. GDP = GNP

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - NDP**:** सकल घरेलू उत्पाद में से पूँजीगत परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास (Depreciation) को घटाने पर प्राप्त होता है (NDP = GDP − Depreciation)।
    - NNP_{FC} **(राष्ट्रीय आय):** जब बाजार मूल्य पर निकाले गए NNP में से शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (अप्रत्यक्ष कर - सब्सिडी) को घटा दिया जाता है, तो साधन लागत पर NNP प्राप्त होता है।
    - NNP_{MP}**:** सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में से मूल्यह्रास घटाने पर बाजार मूल्य पर NNP प्राप्त होता है।
    - NFIA = 0**:** एक बंद अर्थव्यवस्था (Closed Economy) में जहाँ विदेशी व्यापार और आय का आदान-प्रदान नहीं होता, वहाँ GDP और GNP दोनों का मान सदैव एक समान होता है।

टॉपिक - 3: राष्ट्रीय आय मापने की विधियाँ (Methods of Measuring National Income)

राष्ट्रीय आय का मापन किसी अर्थव्यवस्था में आय के चक्रीय प्रवाह (Circular Flow of Income) के तीन अलग-अलग चरणों पर किया जाता है। सैद्धांतिक रूप से तीनों विधियों से प्राप्त अंतिम परिणाम समान होता है: **उत्पादन** = **आय** = **व्यय**।

1. उत्पाद विधि / मूल्यवर्धन विधि (Product / Value Added Method)

- **संकल्पना:** यह विधि अर्थव्यवस्था के सभी उत्पादक क्षेत्रों (प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक) द्वारा एक वित्तीय वर्ष में किए गए शुद्ध मूल्यवर्धन का संकलन करती है।
- **सूत्र:**

©IASHINDIMEDIUM

सकल मूल्यवर्धन (GVA) = उत्पादन का मूल्य (Value of Output) − मध्यवर्ती उपभोग (Intermediate Consumption)

(जहाँ उत्पादन का मूल्य = बिक्री + स्टॉक में परिवर्तन)

- **सावधानियां एवं शामिल/अपवर्जित मदें:**
    - **दोहरी गणना की समस्या (Problem of Double Counting):** केवल अंतिम वस्तुओं का मूल्य लिया जाता है; कपास, धागा, कपड़ा आदि मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को बार-बार जोड़ने से बचने हेतु मूल्यवर्धन का उपयोग किया जाता है।
    - **स्व-उपभोग हेतु उत्पादन (Production for Self-Consumption):** इसे राष्ट्रीय आय में **शामिल किया जाता है** (जैसे कृषक द्वारा स्वयं उपभोग किया गया अनाज या स्वयं के मकान का आकलित किराया/Imputed Rent)।
    - **पुरानी वस्तुओं की बिक्री:** इसे शामिल नहीं किया जाता, किंतु इसके सौदे पर दिए गए **कमीशन या दलाली (Brokerage)** को शामिल किया जाता है।

2. आय विधि (Income Method)

- **संकल्पना:** यह उत्पादन के चारों साधनों (भूमि, श्रम, पूँजी, उद्यमशीलता) द्वारा उत्पादन प्रक्रिया में योगदान के बदले अर्जित प्राथमिक आय का योग करती है।
- **घटक:**
    1. **कर्मचारियों का पारिश्रमिक (Compensation of Employees):** मजदूरी, वेतन तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में नियोक्ताओं का अंशदान।
    2. **प्रचालन अधिशेष (Operating Surplus):** संपत्ति और उद्यमशीलता से आय, जिसमें **लगान (Rent), ब्याज (Interest), रॉयल्टी तथा लाभ (Profit)** शामिल हैं।
    3. **स्वनियोजितों की मिश्रित आय (Mixed Income of Self-Employed):** असंगठित क्षेत्र, किसानों, वकीलों, डॉक्टरों आदि की अविभाज्य आय।
- **सावधानियां:**
    - **हस्तांतरण भुगतान (Transfer Payments):** पेंशन (वृद्धावस्था पेंशन), छात्रवृत्ति, बेरोजगारी भत्ता, लॉटरी जीत को **शामिल नहीं किया जाता**, क्योंकि इनके बदले कोई प्रत्यक्ष उत्पादन नहीं होता (सेवानिवृत्ति पेंशन कर्मचारियों के पारिश्रमिक का भाग है, अतः वह शामिल होती है)।
    - गैर-कानूनी गतिविधियाँ (तस्करी, जुआ) तथा शेयर/बॉन्ड की बिक्री से प्राप्त पूँजीगत लाभ बाहर रहते हैं।

3. व्यय विधि (Expenditure Method)

- **संकल्पना:** यह अर्थव्यवस्था में अंतिम वस्तुओं और सेवाओं पर किए गए कुल उपभोग एवं निवेश व्यय का योग निकालती है।
- **सूत्र:**

$$\text{GDP}_{\text{MP}} = C + I + G + (X - M)$$

    - C = निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE)

©IASHINDIMEDIUM

- G = सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (GFCE)
- I = सकल घरेलू पूँजी निर्माण (GDCF = सकल स्थायी पूँजी निर्माण + स्टॉक में परिवर्तन)
- $(X - M)$ = शुद्ध निर्यात (निर्यात - आयात)

4. भारत में प्रयुक्त पद्धति एवं 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **मिश्रित दृष्टिकोण (Hybrid Method):** राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) भारत में राष्ट्रीय आय मापने हेतु तीनों विधियों के संयोजन का उपयोग करता है—कृषि व विनिर्माण में **उत्पाद विधि**, सेवा क्षेत्र में **आय विधि**, तथा वृहद आर्थिक सत्यापन हेतु **व्यय विधि**।
- **GVA आधारित क्षेत्रवार मैपिंग एवं डिजिटल डेटा एकीकरण:** NSO और सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) द्वारा राष्ट्रीय खातों के संकलन में कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के 'MCA-21' डेटाबेस, वस्तु एवं सेवा कर नेटवर्क (GSTN) के इनवॉयस डेटा तथा असंगठित क्षेत्र के लिए 'वार्षिक असंगठित क्षेत्र उद्यम सर्वेक्षण' (ASUSE) के नवीनतम चक्रों के आँकड़ों का प्रत्यक्ष एकीकरण किया गया, जिससे मध्यवर्ती लागतों के अधिक सटीक आकलन द्वारा मूल्यवर्धन का मापन सुनिश्चित हुआ।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्रीय आय मापन की विधियों और उनकी गणना में सम्मिलित मदों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उत्पाद विधि के अंतर्गत मध्यवर्ती उपभोग को उत्पादन के कुल मूल्य में से घटाकर सकल मूल्यवर्धन (GVA) की गणना की जाती है।
2. किसानों द्वारा स्वयं के उपभोग हेतु उत्पादित कृषि उपज के आकलित मूल्य को राष्ट्रीय आय की गणना में शामिल किया जाता है।
3. आय विधि के अंतर्गत वृद्धावस्था पेंशन, बेरोजगारी भत्ता और छात्रवृत्ति जैसी हस्तांतरण आय (Transfer Payments) को राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है।
4. पुरानी परिसंपत्तियों और प्रयुक्त वस्तुओं की पुनःबिक्री पर एजेंटों द्वारा अर्जित दलाली या कमीशन को राष्ट्रीय आय में जोड़ा जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: दोहरी गणना से बचने के लिए GVA $=$ उत्पादन का मूल्य $-$ मध्यवर्ती उपभोग सूत्र अपनाया जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 2 सत्य है: स्व-उपभोग के लिए उत्पादित वस्तुएं (जैसे किसान का अपने लिए रखा अनाज) अर्थव्यवस्था के वास्तविक उत्पादन का हिस्सा होती हैं, अतः इनके मूल्य को राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है।
- कथन 3 असत्य है: वृद्धावस्था पेंशन, छात्रवृत्ति, उपहार आदि **हस्तांतरण भुगतान (Transfer Payments)** हैं। इनके बदले वर्तमान वर्ष में कोई उत्पादक गतिविधि या मूल्यवर्धन नहीं होता, इसलिए इन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता (ध्यान रहे: सेवानिवृत्ति पेंशन defacto मजदूरी का भाग है और शामिल होती है, किंतु सामाजिक सुरक्षा वाली वृद्धावस्था पेंशन शामिल नहीं होती)।
- कथन 4 सत्य है: पुरानी वस्तुओं का मूल्य चालू वर्ष के उत्पादन में नहीं आता, किंतु वर्तमान वर्ष में उनको बिकवाने के बदले दी गई दलाली या कमीशन चालू वर्ष की उत्पादक सेवा है, अतः इसे शामिल किया जाता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (राष्ट्रीय आय मापन घटक)	**सूची-II (संबद्ध विधि / विवरण)**
a. प्रचालन अधिशेष (Operating Surplus)	1. व्यय विधि (I घटक)
b. सकल घरेलू पूँजी निर्माण (GDCF)	2. उत्पाद विधि (अंतिम मूल्य से कटौती)
c. मध्यवर्ती उपभोग (Intermediate Consumption)	3. आय विधि (लगान, ब्याज एवं लाभ)
d. स्वनियोजितों की मिश्रित आय (Mixed Income)	4. आय विधि (श्रम व पूँजी की अविभाज्य आय)

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **प्रचालन अधिशेष:** आय विधि के अंतर्गत संपत्ति और उद्यमशीलता से प्राप्त होने वाले प्रतिफल (लगान, ब्याज, लाभ) को प्रचालन अधिशेष कहा जाता है।
  - **सकल घरेलू पूँजी निर्माण (GDCF):** व्यय विधि का प्रमुख घटक है, जो किसी अर्थव्यवस्था में निवेश व्यय (पूँजीगत संपत्तियों और इन्वेंट्री स्टॉक) को दर्शाता है।
  - **मध्यवर्ती उपभोग:** उत्पाद विधि में दोहरी गणना से बचने के लिए इसे उत्पादन के कुल मूल्य में से घटाया जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

- **स्वनियोजितों की मिश्रित आय:** आय विधि का घटक है, जो छोटे व्यापारियों, स्वरोजगारियों और किसानों की ऐसी आय है जिसमें मजदूरी, लगान और लाभ को अलग-अलग पृथक नहीं किया जा सकता।

टॉपिक - 4: प्रति व्यक्ति आय (PCI) और क्रय शक्ति समता (PPP)

प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income) और क्रय शक्ति समता (Purchasing Power Parity - PPP) किसी देश के नागरिकों के औसत जीवन स्तर, आर्थिक कल्याण तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्थाओं के तुलनात्मक आकार को मापने के दो केंद्रीय साधन हैं।

1. प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income - PCI)

- **परिभाषा एवं सूत्र:** किसी देश की कुल राष्ट्रीय आय को उसकी कुल जनसंख्या से विभाजित करने पर प्राप्त औसत आय को **प्रति व्यक्ति आय** कहते हैं:

$$\text{PCI} = \frac{\text{शुद्ध राष्ट्रीय आय (Net National Income / NNP}_{FC})}{\text{कुल मध्य-वर्षीय जनसंख्या (Total Mid-Year Population)}}$$

- **प्रकार:**
  - **वास्तविक प्रति व्यक्ति आय (Real PCI):** आधार वर्ष की स्थिर कीमतों (Constant Prices, वर्तमान आधार वर्ष 2011-12) पर मापी जाती है। यह मुद्रास्फीति के प्रभाव को हटाकर नागरिकों के क्रय सामर्थ्य में वास्तविक वृद्धि का सटीक सूचक है।
  - **नाममात्र प्रति व्यक्ति आय (Nominal PCI):** चालू वर्ष की प्रचलित कीमतों (Current Prices) पर आकलित की जाती है।
- **विश्व बैंक का आय वर्गीकरण (एटलस विधि / Atlas Method):** विश्व बैंक प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI per capita) के आधार पर विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को चार श्रेणियों में विभाजित करता है:
  1. निम्न आय (Low Income)
  2. निम्न-मध्यम आय (Lower-Middle Income) — **भारत इसी वर्ग में स्थित है**
  3. उच्च-मध्यम आय (Upper-Middle Income)
  4. उच्च आय (High Income)
- **सीमाएं:** PCI केवल एक **औसत माप** है; यह देश में आय के असमान वितरण (Gini Coefficient) और जीवन की वास्तविक गुणवत्ता (स्वास्थ्य, शिक्षा) को नहीं दर्शाती।

2. क्रय शक्ति समता (Purchasing Power Parity - PPP)

- **संकल्पना एवं प्रतिपादक:** इस सिद्धांत का प्रतिपादन स्वीडिश अर्थशास्त्री **गुस्ताव कैसेल (Gustav Cassel)** ने 1918 में किया था।
- **सिद्धांत (Law of One Price):** यदि व्यापार बाधाएं (टैरिफ, परिवहन लागत) न हों, तो दो मुद्राओं की विनिमय दर दोनों देशों में समान वस्तुओं और सेवाओं की टोकरी (Basket of Goods and Services) की क्रय शक्ति के अनुपात के बराबर होनी चाहिए।

©IASHINDIMEDIUM

$$S = \frac{P_1}{P_2}$$

(जहाँ S विनिमय दर है, P_1 घरेलू कीमत और P_2 विदेशी कीमत है)।

- **उपयोगिता:** बाजार विनिमय दर (Market Exchange Rate) अल्पकाल में सट्टेबाजी और पूँजी प्रवाह से अत्यधिक अस्थिर रहती है। PPP विनिमय दर स्थानीय जीवन-यापन लागत (Cost of Living) और गैर-व्यापारिक वस्तुओं (जैसे बाल काटना, परिवहन, घरेलू किराया) के मूल्य अंतर को समायोजित कर वास्तविक क्रय सामर्थ्य दर्शाती है।
- **वैश्विक स्थिति:**
    - **बाजार विनिमय दर (Nominal terms):** भारत विश्व की शीर्ष 5 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है।
    - **PPP आधार पर:** भारत (चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद) **विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के अद्यतन अनुमान:** NSO के अनंतिम राष्ट्रीय आय आंकड़ों के अनुसार, भारत की वास्तविक प्रति व्यक्ति आय (स्थिर 2011-12 कीमतों पर) में निरंतर 5-6% की वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की गई, जबकि प्रचलित कीमतों पर भारत की प्रति व्यक्ति आय ₹2 लाख प्रतिवर्ष के स्तर को पार कर गई।
- **विश्व बैंक का अंतरराष्ट्रीय तुलना कार्यक्रम (ICP):** विश्व बैंक के 'इंटरनेशनल कंपैरिजन प्रोग्राम' (ICP) के नवीनतम चक्र के अनुसार, भारत की घरेलू क्रय क्षमता वैश्विक औसत से सुदृढ़ रही, जिससे वैश्विक GDP में PPP आधार पर भारत का हिस्सा 7.5% से अधिक बना रहा।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्रति व्यक्ति आय (PCI) और क्रय शक्ति समता (PPP) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. किसी देश के नागरिकों के जीवन स्तर में वास्तविक परिवर्तन का सही आकलन स्थिर कीमतों (Constant Prices) पर आधारित प्रति व्यक्ति आय से होता है।
2. क्रय शक्ति समता (PPP) सिद्धांत का प्रतिपादन मूल रूप से अर्थशास्त्री गुस्ताव कैसेल द्वारा किया गया था।
3. क्रय शक्ति समता (PPP) के आधार पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के आकार की दृष्टि से भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है।
4. विश्व बैंक देशों का वर्गीकरण (जैसे निम्न आय, निम्न-मध्यम आय वर्ग) प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI per capita) के आधार पर करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1, 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 4

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: चालू कीमतों पर प्रति व्यक्ति आय मुद्रास्फीति (मूल्य वृद्धि) के कारण बढ़ सकती है बिना वास्तविक उत्पादन बढ़े। अतः स्थिर कीमतों पर वास्तविक प्रति व्यक्ति आय ही वास्तविक क्रय शक्ति और जीवन स्तर का सच्चा सूचक है।
    - कथन 2 सत्य है: क्रय शक्ति समता (PPP) सिद्धांत को औपचारिक रूप से 1918 में स्वीडिश अर्थशास्त्री गुस्ताव कैसेल ने प्रस्तुत किया था।
    - कथन 3 असत्य है: क्रय शक्ति समता (PPP) के आधार पर GDP के वैश्विक आकार में भारत **तीसरे स्थान** पर है (प्रथम: चीन, द्वितीय: संयुक्त राज्य अमेरिका)।
    - कथन 4 सत्य है: विश्व बैंक प्रत्येक वर्ष 1 जुलाई को एटलस पद्धति द्वारा गणना की गई प्रति व्यक्ति GNI के आधार पर सभी अर्थव्यवस्थाओं को चार आय श्रेणियों में वर्गीकृत करता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (आर्थिक संकल्पना / सूचकांक)	**सूची-II (संबद्ध तथ्य / प्रतिपादक)**
a. प्रति व्यक्ति आय (PCI)	1. वस्तुओं की टोकरी के आधार पर जीवन-यापन लागत का समायोजन
b. क्रय शक्ति समता (PPP) सिद्धांत	2. राष्ट्रीय आय ÷ कुल जनसंख्या
c. गुस्ताव कैसेल	3. PPP विनिमय दर सिद्धांत के प्रतिपादक
d. बिग मैक सूचकांक (Big Mac Index)	4. द इकोनॉमिस्ट (The Economist) द्वारा PPP का अनौपचारिक मापन

कूट:

(A) a-2, b-1, c-3, d-4

(B) a-2, b-3, c-1, d-4

(C) a-1, b-2, c-3, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-3, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **प्रति व्यक्ति आय:** किसी देश की शुद्ध राष्ट्रीय आय को कुल जनसंख्या से भाग देकर औसत आय निकाली जाती है।
    - **क्रय शक्ति समता (PPP):** विभिन्न देशों में समान वस्तुओं और सेवाओं की टोकरी (Basket of Goods) की कीमतों की तुलना करके मुद्राओं की वास्तविक क्रय क्षमता का समायोजन करती है।
    - **गुस्ताव कैसेल:** स्वीडिश अर्थशास्त्री, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा विनिमय हेतु PPP का नियम विकसित किया।

©IASHINDIMEDIUM

- **बिग मैक सूचकांक:** 1986 में 'द इकोनॉमिस्ट' पत्रिका द्वारा मैकडॉनल्ड्स के बर्गर की विभिन्न देशों में कीमतों की तुलना करके PPP विनिमय दर को सरलता से समझाने हेतु बनाया गया एक प्रसिद्ध अनौपचारिक सूचकांक है।

टॉपिक - 5: मुद्रास्फीति के प्रकार और कारण (Types and Causes of Inflation)

मुद्रास्फीति (Inflation) किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में होने वाली निरंतर एवं सतत वृद्धि है, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा की क्रय शक्ति (Purchasing Power) घट जाती है।

1. मुद्रास्फीति के कारण (कारण आधारित वर्गीकरण)

- **मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति (Demand-Pull Inflation):**
  - जब समग्र आपूर्ति की तुलना में समग्र मांग अधिक हो जाती है (*"Too much money chasing too few goods"*).
  - **कारण:** सरकारी व्यय या घाटे के वित्तपोषण (Deficit Financing) में वृद्धि, सस्ती मौद्रिक नीति (सस्ता ऋण), जनसंख्या वृद्धि, निर्यात में वृद्धि तथा उपभोग व्यय में उछाल।
- **लागत-जनित मुद्रास्फीति (Cost-Push Inflation):**
  - उत्पादन लागत बढ़ने के कारण जब कुल आपूर्ति में कमी आती है और कीमतें बढ़ती हैं।
  - **कारण:** कच्चे माल (जैसे कच्चा तेल) के वैश्विक दामों में वृद्धि, अप्रत्यक्ष करों (GST) में वृद्धि, श्रमिकों की मजदूरी में वृद्धि तथा प्राकृतिक आपदाओं के कारण आपूर्ति श्रृंखला का बाधित होना।
- **संरचनात्मक मुद्रास्फीति (Structural Inflation):**
  - विकासशील देशों में अवसंरचनात्मक कमियों, भंडारण के अभाव, परिवहन की बाधाओं एवं जमाखोरी/कालाबाजारी जैसे ढांचागत अवरोधों से उत्पन्न होती है।

2. गति या दर के आधार पर मुद्रास्फीति के प्रकार

- **रेंगती मुद्रास्फीति (Creeping Inflation):** मूल्य वृद्धि दर बहुत धीमी होती है (वार्षिक 3% से कम)। इसे आर्थिक संवृद्धि के लिए लाभकारी माना जाता है।
- **चलती मुद्रास्फीति (Walking/Trotting Inflation):** मूल्य वृद्धि दर एकल अंक में मध्यम गति (3% से 10%) से बढ़ती है।
- **दौड़ती मुद्रास्फीति (Running Inflation):** दर दोहरे अंकों (10% से 20%) में पहुँच जाती है।
- **अति-मुद्रास्फीति (Hyperinflation):** कीमतें अत्यंत तीव्र गति से (सैकड़ों या हजारों प्रतिशत) बढ़ती हैं। मुद्रा का मूल्य शून्य के निकट पहुँच जाता है (जैसे वेनेजुएला, जिम्बाब्वे का संकट)।

3. अन्य संबंधित प्रमुख संकल्पनाएँ

- **स्टैगफ्लेशन (Stagflation):** जब अर्थव्यवस्था में **उच्च मुद्रास्फीति** + **उच्च बेरोजगारी** + **आर्थिक संवृद्धि में ठहराव/मंदी** एक साथ उपस्थित हों।

©IASHINDIMEDIUM

- **कोर मुद्रास्फीति (Core Inflation):** समग्र मुद्रास्फीति (Headline Inflation) में से अत्यधिक अस्थिर घटकों—**खाद्य (Food) एवं ईंधन (Fuel)**—को घटाकर गणना की जाती है।
- **अवस्फीति (Disinflation):** मुद्रास्फीति की दर में गिरावट (मूल्य बढ़ रहे होते हैं, किंतु वृद्धि की गति धीमी होती है; जैसे 6% से घटकर 4% होना)।
- **अपस्फीति (Deflation):** सामान्य मूल्य स्तर में वास्तविक गिरावट (नकारात्मक मुद्रास्फीति दर), जहाँ कीमतें घटती हैं।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **आरबीआई का लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (FIT):** भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 45ZA के तहत निर्धारित 4% $(\pm 2\%)$ के लक्ष्य के अनुरूप, मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने खाद्य कीमतों (विशेषकर सब्जियों व दालों) के मौसमी झटकों के बावजूद रेपो दर को समायोजित कर कोर मुद्रास्फीति को 3.5--4% के दायरे में बनाए रखा।
- **CPI आधारित हेडलाइन बनाम कोर मुद्रास्फीति संतुलन:** केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा जारी उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (संयुक्त) में सेवा क्षेत्र की सुदृढ़ मांग और कच्चे तेल की स्थिर वैश्विक कीमतों के कारण हेडलाइन मुद्रास्फीति लक्ष्य के सहनीय दायरे में नियंत्रित रही।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. मुद्रास्फीति के प्रकारों और कारणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति (Demand-Pull Inflation) तब उत्पन्न होती है जब अर्थव्यवस्था में समग्र मांग, कुल उत्पादन क्षमता (आपूर्ति) से अधिक हो जाती है।
2. कोर मुद्रास्फीति (Core Inflation) की गणना करते समय हेडलाइन मुद्रास्फीति में से खाद्य और ऊर्जा (ईंधन) मदों को शामिल नहीं किया जाता है।
3. स्टैगफ्लेशन (Stagflation) एक ऐसी आर्थिक स्थिति है जिसमें उच्च मुद्रास्फीति के साथ उच्च आर्थिक विकास दर और पूर्ण रोजगार की स्थिति होती है।
4. जब मुद्रास्फीति की दर 6% से घटकर 4% हो जाती है, तो इस स्थिति को तकनीकी रूप से अपस्फीति (Deflation) कहा जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 1 सत्य है: मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति अत्यधिक मांग के कारण होती है, जिसे घाटे का बजट, मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि आदि उत्प्रेरित करते हैं।
- कथन 2 सत्य है: कोर मुद्रास्फीति दीर्घकालिक मूल्य प्रवृत्ति को मापती है, इसलिए इसमें से खाद्य और ईंधन जैसे अल्पकालिक व मौसमी उतार-चढ़ाव वाले घटकों को बाहर रखा जाता है।
- कथन 3 असत्य है: स्टैगफ्लेशन में उच्च मुद्रास्फीति के साथ **आर्थिक ठहराव (निम्न संवृद्धि)** और **उच्च बेरोजगारी** पाई जाती है, न कि उच्च विकास दर।
- कथन 4 असत्य है: मुद्रास्फीति की दर में कमी (जैसे 6% से 4%) को **अवस्फीति (Disinflation)** कहते हैं। अपस्फीति (Deflation) वह स्थिति है जब मूल्य स्तर ऋणात्मक हो जाए (अर्थात् कीमतें घटने लगें)।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (आर्थिक पद / संकल्पना)	**सूची-II (संबद्ध विशेषता / विवरण)**
a. स्टैगफ्लेशन (Stagflation)	1. कच्चे तेल की कीमतों या मजदूरी में वृद्धि से मूल्यवृद्धि
b. लागत-जनित मुद्रास्फीति	2. मुद्रास्फीति दर में गिरावट (वृद्धि दर की गति धीमी होना)
c. अवस्फीति (Disinflation)	3. मुद्रास्फीति एवं आर्थिक मंदी का एक साथ विद्यमान होना
d. अति-मुद्रास्फीति (Hyperinflation)	4. अत्यधिक तीव्र एवं अनियंत्रित मूल्य वृद्धि (मुद्रा के मूल्य का ह्रास)

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **स्टैगफ्लेशन:** आर्थिक संवृद्धि में ठहराव/मंदी तथा उच्च मुद्रास्फीति का असामान्य संयोजन।
  - **लागत-जनित मुद्रास्फीति:** उत्पादन के घटकों (ईंधन, कच्चा माल, परिवहन भाड़ा, मजदूरी) की लागत बढ़ने के कारण उत्पन्न आपूर्ति अवरोध।
  - **अवस्फीति:** वह प्रक्रिया जिसमें कीमतें तो बढ़ती हैं, परंतु उनके बढ़ने की दर (Speed) घट जाती है।
  - **अति-मुद्रास्फीति:** जब मुद्रास्फीति अनियंत्रित हो जाए और मासिक/वार्षिक आधार पर अत्यंत उच्च स्तरों पर पहुँच जाए।

©IASHINDIMEDIUM

योजनाएँ एवं कृषि व्यवस्था

टॉपिक - 1: योजना आयोग से नीति आयोग (Planning Commission to NITI Aayog)

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात आर्थिक विकास के नियोजन हेतु 15 मार्च 1950 को केंद्रीय मंत्रिमंडल के एक कार्यपालक प्रस्ताव द्वारा **योजना आयोग (Planning Commission)** की स्थापना की गई थी (के. सी. नियोगी समिति की अनुशंसा पर)। यह एक गैर-संवैधानिक एवं गैर-सांविधिक परामर्शदात्री निकाय था, जिसका अनुमोदन निकाय 6 अगस्त 1952 को स्थापित **राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC)** थी।

1. योजना आयोग की सीमाएँ एवं नीति आयोग की आवश्यकता

©IASHINDIMEDIUM

- **'टॉप-डाउन' दृष्टिकोण (Top-Down Approach):** योजना आयोग 'एक ही आकार सभी के लिए उपयुक्त' (One size fits all) की केंद्रीकृत नीति पर कार्य करता था, जिसमें राज्यों की स्थानीय आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं की उपेक्षा होती थी।
- **वित्तीय शक्तियों का केंद्रीकरण:** योजना आयोग के पास विभिन्न मंत्रालयों और राज्य सरकारों को योजनागत निधियां/अनुदान आवंटित करने का अधिकार था, जिससे संघीय संतुलन प्रभावित होता था।

2. नीति आयोग (NITI Aayog: National Institution for Transforming India)

1 जनवरी 2015 को केंद्रीय मंत्रिमंडल के संकल्प द्वारा योजना आयोग को प्रतिस्थापित कर 'नीति आयोग' का गठन किया गया।

- **प्रकृति एवं अधिदेश:** यह सरकार का प्रमुख नीतिगत **'थिंक टैंक' (Think Tank)** है, जो केंद्र और राज्य सरकारों को रणनीतिक, तकनीकी और नीतिगत परामर्श प्रदान करता है।
- **मूल दर्शन:**
    - **सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism):** नीति निर्माण में राज्यों की सक्रिय और समान भागीदारी।
    - **प्रतिस्पर्धी संघवाद (Competitive Federalism):** सूचकांकों (जैसे एसडीजी इंडिया इंडेक्स, निर्यात तैयारी सूचकांक) के माध्यम से राज्यों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना।
    - **'बॉटम-अप' दृष्टिकोण (Bottom-Up Approach):** ग्राम स्तर से राष्ट्रीय स्तर की ओर योजनाओं का निर्माण।
- **संगठनात्मक संरचना:**
    - **अध्यक्ष:** भारत के प्रधानमंत्री (पदेन)।
    - **उपाध्यक्ष:** प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त (कैबिनेट मंत्री का दर्जा)।
    - **शासी परिषद (Governing Council):** सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, दिल्ली व पुडुचेरी के मुख्यमंत्री तथा अन्य केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल (यह योजना आयोग की तुलना में राज्यों को प्रत्यक्ष निर्णयकारी मंच प्रदान करता है)।
    - **मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO):** सचिव स्तर का अधिकारी, जिसे निश्चित कार्यकाल हेतु प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त किया जाता है।
- **योजना प्रणाली में परिवर्तन:** 5-वर्षीय योजनाओं के स्थान पर **15-वर्षीय विजन दस्तावेज**, **7-वर्षीय राष्ट्रीय रणनीति**, और **3-वर्षीय कार्य एजेंडा (Action Agenda)** की रूपरेखा अपनाई गई।
- **निधि आवंटन का अभाव:** नीति आयोग के पास राज्यों या मंत्रालयों को **वित्तीय निधि या अनुदान आबंटित करने की कोई शक्ति नहीं है**; यह कार्य अब वित्त मंत्रालय (व्यय विभाग) के अधीन है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **'विकसित भारत @2047' राष्ट्रीय एवं राज्य कार्ययोजना:** नीति आयोग द्वारा देश को वर्ष 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की विकसित अर्थव्यवस्था बनाने हेतु राज्यों के सहयोग से व्यापक राज्य-स्तरीय आर्थिक योजनाएँ तैयार कराई गईं। उत्तर प्रदेश में 'राज्य रूपांतरण आयोग' (STC) के माध्यम से 1 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य हेतु क्षेत्रीय क्लस्टर मॉडल लागू किया गया।
- **आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम (ABP) एवं 'नीति फॉर स्टेट्स' प्लेटफॉर्म:** 500 आकांक्षी ब्लॉकों में समग्र सामाजिक-आर्थिक संकेतकों की निगरानी हेतु नीति आयोग द्वारा निरंतर त्रैमासिक डेल्टा रैंकिंग जारी की गई तथा राज्यों में साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण हेतु 'NITI for States' डिजिटल डेटा रिपॉजिटरी का पूर्ण एकीकरण किया गया।

©IASHINDIMEDIUM

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. योजना आयोग और नीति आयोग के तुलनात्मक अंतर के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. योजना आयोग की स्थापना 15 मार्च 1950 को संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी, जबकि नीति आयोग केंद्रीय मंत्रिमंडल के प्रस्ताव से बना एक गैर-सांविधिक निकाय है।
2. नीति आयोग के पास केंद्र सरकार के मंत्रालयों और राज्य सरकारों को बजटीय निधियां आवंटित करने की शक्ति नहीं है।
3. नीति आयोग की शासी परिषद (Governing Council) में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल शामिल होते हैं।
4. नीति आयोग का दृष्टिकोण 'शीर्ष-से-निम्न' (Top-Down) मॉडल पर आधारित है, जिसमें केंद्र राज्यों के लिए विकास नीतियाँ निर्धारित करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: योजना आयोग किसी संसदीय अधिनियम द्वारा नहीं, बल्कि **केंद्रीय मंत्रिमंडल के एक कार्यपालक प्रस्ताव** द्वारा 15 मार्च 1950 को स्थापित किया गया था। अतः यह और नीति आयोग दोनों ही गैर-संवैधानिक व गैर-सांविधिक निकाय हैं।
    - कथन 2 सत्य है: योजना आयोग के विपरीत, नीति आयोग एक बौद्धिक थिंक-टैंक है और इसके पास निधियों या वित्तीय अनुदानों को आबंटित करने का कोई वैधानिक अधिकार नहीं है। यह अधिकार वित्त मंत्रालय के पास है।
    - कथन 3 सत्य है: नीति आयोग की संरचना में शासी परिषद सर्वोच्च निकाय है, जिसमें प्रधानमंत्री, सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रशासक/उपराज्यपाल शामिल हैं।
    - कथन 4 असत्य है: नीति आयोग 'बॉटम-अप' (निम्न-से-शीर्ष) और सहकारी संघवाद के सिद्धांत पर कार्य करता है, जबकि 'शीर्ष-से-निम्न' दृष्टिकोण पुराने योजना आयोग की कार्यशैली थी।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (संस्था / संकल्पना)	**सूची-II (संबद्ध वर्ष / सिद्धांत / भूमिका)**
a. योजना आयोग का गठन	1. 1 जनवरी 2015

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (संस्था / संकल्पना)	सूची-II (संबद्ध वर्ष / सिद्धांत / भूमिका)
b. राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC)	2. सहकारी एवं प्रतिस्पर्धी संघवाद
c. नीति आयोग की स्थापना	3. 15 मार्च 1950
d. नीति आयोग का मार्गदर्शक सिद्धांत	4. 6 अगस्त 1952

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-1, b-4, c-3, d-2

(D) a-4, b-3, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **योजना आयोग का गठन:** 15 मार्च 1950 को के. सी. नियोगी समिति की सिफारिश पर कैबिनेट प्रस्ताव द्वारा हुआ।
    - **राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC):** 6 अगस्त 1952 को पंचवर्षीय योजनाओं के अंतिम अनुमोदन हेतु गठित की गई थी।
    - **नीति आयोग की स्थापना:** 1 जनवरी 2015 को योजना आयोग के स्थान पर की गई।
    - **नीति आयोग का सिद्धांत:** यह सहकारी संघवाद (राज्यों की समान भागीदारी) तथा प्रतिस्पर्धी संघवाद (राज्यों के बीच स्वस्थ प्रदर्शन प्रतिस्पर्धा) पर केंद्रित है।

टॉपिक - 2: भारत की पंचवर्षीय योजनाएँ (Five-Year Plans)

भारत में आर्थिक नियोजन की अवधारणा सोवियत संघ (USSR) से प्रेरित थी। योजना आयोग द्वारा 1951 से 2017 के मध्य कुल **12 पंचवर्षीय योजनाएँ** तथा **6 एकवर्षीय योजनाएँ** (योजना अवकाश) क्रियान्वित की गईं। 12वीं योजना (2012–17) की समाप्ति के साथ ही पंचवर्षीय योजनाओं का युग समाप्त हो गया।

1. प्रमुख योजनाएँ, मॉडल एवं उपलब्धियाँ (UPPCS कोर फोकस)

- **प्रथम योजना (1951–56):**
    - **मॉडल:** हैरोड-डोमर मॉडल (Harrod-Domar Model)।
    - **प्राथमिकता:** कृषि, सिंचाई और बिजली परियोजनाएं (भाखड़ा नांगल, दामोदर घाटी, हीराकुंड बांध शुरू)। लक्षित वृद्धि दर 2.1% के विरुद्ध 3.6% प्राप्त हुई।
- **द्वितीय योजना (1956–61):**

- **मॉडल:** पी.सी. महालनोबिस का 4-क्षेत्रीय मॉडल।
- **प्राथमिकता:** तीव्र औद्योगिकीकरण एवं भारी उद्योग। विदेशी सहयोग से तीन इस्पात संयंत्र स्थापित हुए—**भिलाई** (रूस), **राउरकेला** (जर्मनी), और **दुर्गापुर** (ब्रिटेन)।

- **तृतीय योजना (1961–66):**
  - **मॉडल:** जॉन सैंडी और सुखमय चक्रवर्ती मॉडल।
  - **परिणाम:** भारत-चीन युद्ध (1962), भारत-पाक युद्ध (1965) और भीषण सूखे (1965-66) के कारण यह योजना **सर्वाधिक विफल** रही (लक्ष्य 5.6%, प्राप्ति 2.8%)।
- **योजना अवकाश (Plan Holiday, 1966–69):** तीन वार्षिक योजनाएं लागू हुईं। इसी दौरान 1966-67 में भारत में **हरित क्रांति** की शुरुआत हुई।
- **चतुर्थ योजना (1969–74):**
  - **मॉडल:** ए.एस. माने और अशोक रुद्र का 'ओपन कंसिस्टेंसी मॉडल'।
  - **उद्देश्य:** 'स्थिरता के साथ संवृद्धि' और 'आत्मनिर्भरता'। 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण (1969) तथा प्रथम भूमिगत परमाणु परीक्षण (स्माइलिंग बुद्धा, 1974)।
- **पाँचवीं योजना (1974–79):**
  - **मॉडल:** डी.पी. धर मॉडल।
  - **प्रमुख नारा: 'गरीबी हटाओ'** एवं 'आत्मनिर्भरता'। 1975 में 20-सूत्रीय कार्यक्रम प्रारंभ। जनता पार्टी सरकार द्वारा इसे **1978 में (1 वर्ष पूर्व ही) समाप्त** कर दिया गया।
- **रोलिंग प्लान (Rolling Plan, 1978–80):** जनता पार्टी सरकार द्वारा गुन्नार मिर्डल की अवधारणा पर आधारित 'अनवरत योजना' चलाई गई।
- **छठी योजना (1980–85):** गरीबी उन्मूलन और रोजगार सृजन (IRDP, NREP शुरू); नाबार्ड (NABARD) की स्थापना (12 जुलाई 1982)।
- **आठवीं योजना (1992–97):** जॉन डब्ल्यू. मुलर मॉडल (मानव संसाधन विकास पर बल)। इसी दौरान भारत ने **LPG (उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण)** सुधार अपनाए।
- **12वीं योजना (2012–17):**
  - **थीम: "तीव्र, अधिक समावेशी और धारणीय संवृद्धि"** (Faster, More Inclusive and Sustainable Growth)।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **दीर्घकालिक नियोजन का आधुनिक ढांचा (विकसित भारत @2047):** पंचवर्षीय योजनाओं के समापन के उपरांत नीति आयोग द्वारा 15-वर्षीय विजन के तहत 2047 तक भारत को 30 ट्रिलियन डॉलर की विकसित अर्थव्यवस्था बनाने हेतु राज्यों के साथ मिलकर क्षेत्रवार पंचवर्षीय रणनीतिक मील के पत्थर (5-Year Strategic Milestones) लागू किए गए।

©IASHINDIMEDIUM

- **राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP) का 5-वर्षीय चरण-II:** योजना काल के ढांचागत निवेश के आधुनिक विकल्प के रूप में ₹140 लाख करोड़ से अधिक की अवसंरचना परियोजनाओं के अगले 5-वर्षीय समीक्षा चक्र को अंतिम रूप दिया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत की पंचवर्षीय योजनाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. द्वितीय पंचवर्षीय योजना पी.सी. महालनोबिस मॉडल पर आधारित थी, जिसमें भारी उद्योगों और पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादन पर विशेष बल दिया गया था।
2. 'गरीबी हटाओ' का प्रसिद्ध नारा औपचारिक रूप से चौथी पंचवर्षीय योजना के प्रारूप में शामिल किया गया था, जिसे डी.पी. धर ने तैयार किया था।
3. तृतीय पंचवर्षीय योजना को युद्ध और सूखे के कारण अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त न कर पाने वाली सर्वाधिक असफल योजना माना जाता है।
4. 12वीं पंचवर्षीय योजना का मुख्य विषय (Theme) 'तीव्र, अधिक समावेशी और धारणीय संवृद्धि' था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 1, 3 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: द्वितीय योजना महालनोबिस के 4-क्षेत्रीय मॉडल पर आधारित थी और इसने भारी औद्योगिकीकरण की नींव रखी।
    - कथन 2 असत्य है: 'गरीबी हटाओ' का नारा इंदिरा गांधी द्वारा 1971 के चुनावों में दिया गया था और इसे **पाँचवीं पंचवर्षीय योजना (1974–79)** के मूल उद्देश्यों में शामिल किया गया था (जिसका मॉडल डी.पी. धर ने तैयार किया था), न कि चौथी योजना में।
    - कथन 3 सत्य है: 1962 के भारत-चीन युद्ध, 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध और 1965-66 के भीषण अकाल के कारण तीसरी योजना की संवृद्धि दर लक्ष्य (5.6%) से गिरकर मात्र 2.8% रह गई थी।
    - कथन 4 सत्य है: 12वीं योजना (2012–17) का आधिकारिक शीर्षक 'तीव्र, अधिक समावेशी और धारणीय संवृद्धि' निर्धारित था।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (पंचवर्षीय योजना)	सूची-II (संबद्ध मॉडल / प्रमुख घटना)
a. प्रथम पंचवर्षीय योजना	1. LPG सुधारों की शुरुआत (मानव संसाधन विकास)
b. द्वितीय पंचवर्षीय योजना	2. 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण (1969)
c. चतुर्थ पंचवर्षीय योजना	3. हैरोड-डोमर मॉडल
d. आठवीं पंचवर्षीय योजना	4. महालनोबिस मॉडल (भिलाई व दुर्गापुर इस्पात संयंत्र)

कूट:

(A) a-3, b-4, c-2, d-1

(B) a-3, b-2, c-4, d-1

(C) a-4, b-3, c-2, d-1

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-2, d-1

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **प्रथम योजना:** हैरोड-डोमर मॉडल पर आधारित थी, जिसमें बचत और निवेश के माध्यम से पूंजी संचय पर बल दिया गया।
    - **द्वितीय योजना:** महालनोबिस मॉडल पर आधारित थी, जिसके तहत भिलाई, दुर्गापुर और राउरकेला इस्पात संयंत्र स्थापित हुए।
    - **चतुर्थ योजना:** अशोक रुद्र-माने मॉडल पर आधारित थी, जिसके दौरान 1969 में 14 बड़े वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।
    - **आठवीं योजना:** 1991 के आर्थिक संकट के बाद शुरू हुई, जिसमें मानव संसाधन विकास और एलपीजी (उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण) सुधारों को प्राथमिकता दी गई।

टॉपिक - 3: भारतीय कृषि की विशेषताएँ एवं प्रमुख समस्याएँ

भारतीय कृषि देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो आजीविका सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और औद्योगिक कच्चे माल की आपूर्ति का मुख्य आधार है। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) एवं राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के अनुसार, यह देश की लगभग **45-46% कार्यशील जनसंख्या** को रोजगार प्रदान करती है, जबकि देश के सकल मूल्यवर्धन (GVA) में इसका योगदान लगभग **17-18%** के मध्य बना हुआ है।

1. भारतीय कृषि की प्रमुख संरचनात्मक विशेषताएँ

- **जीविकोपार्जन का साधन (Subsistence Agriculture):** भारतीय कृषि का बड़ा हिस्सा व्यापारिक न होकर पारिवारिक भरण-पोषण पर आधारित निर्वाह कृषि के रूप में किया जाता है।
- **जोतों का छोटा एवं विखंडित आकार:**
    - कृषि संगणना (Agricultural Census) के अनुसार, भारत में कुल जोतों का **86% से अधिक हिस्सा लघु एवं सीमांत किसानों (Small & Marginal Farmers)** के पास है।
    - सीमांत किसान: 1 हेक्टेयर से कम भूमि (लगभग 68%)।
    - लघु किसान: 1 से 2 हेक्टेयर भूमि (लगभग 18%)।
    - भारत में औसत कृषि जोत का आकार घटकर **1.08 हेक्टेयर** रह गया है।
- **मानसून पर अत्यधिक निर्भरता:** देश का लगभग **48-50% शुद्ध बुवाई क्षेत्र (Net Sown Area)** अभी भी वर्षा पर निर्भर है, जिसके कारण भारतीय कृषि को **'मानसून का जुआ'** कहा जाता है।
- **खाद्यान्नों की प्रधानता:** कुल शस्यगत क्षेत्र (Gross Cropped Area) के लगभग **65-70% भाग पर खाद्यान्न फसलें** (चावल, गेहूँ, मोटे अनाज) उगाई जाती हैं।
- **श्रम की बहुलता एवं प्रच्छन्न बेरोजगारी:** आवश्यकता से अधिक श्रमिकों के संलग्न होने के कारण कृषि में **प्रच्छन्न/छिपी हुई बेरोजगारी (Disguised Unemployment)** तथा अल्प-रोजगार पाया जाता है, जहाँ श्रमिकों की **सीमांत उत्पादकता (Marginal Productivity) लगभग शून्य** होती है।

2. भारतीय कृषि की प्रमुख समस्याएँ एवं ढांचागत चुनौतियाँ

- **निम्न उत्पादकता (Low Yield):** वैश्विक औसत की तुलना में भारत में प्रति हेक्टेयर फसलों की उपज (गेहूँ, धान, दलहन) काफी कम है।
- **संस्थागत वित्त एवं ऋणग्रस्तता:** साहूकारों व अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भरता के कारण किसानों की ऋणग्रस्तता अधिक है।
- **मृदा स्वास्थ्य क्षरण एवं रासायनिक असंतुलन:** यूरिया पर अत्यधिक सब्सिडी के कारण आदर्श **NPK अनुपात (4:2:1)** अत्यधिक विकृत हो गया है, जिससे सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी और जलभराव/लवणता की समस्या बढ़ी है।
- **भंडारण एवं शीत-श्रृंखला (Cold Chain) का अभाव:** कटाई उपरांत लगभग 10-15% खाद्यान्न और 25-30% फल-सब्जियाँ उचित भंडारण व लॉजिस्टिक्स के अभाव में नष्ट हो जाती हैं।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **डिजिटल कृषि मिशन (Digital Agriculture Mission):** केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा कृषि क्षेत्र में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) के निर्माण हेतु 'डिजिटल कृषि मिशन' को गति दी गई, जिसके तहत **एग्रीस्टैक (AgriStack)**, 'किसान रजिस्ट्री' (डिजिटल पहचान पत्र) और 'भू-स्थानिक फसल सर्वेक्षण' (Digital Crop Survey) को उत्तर प्रदेश सहित सभी राज्यों में भू-अभिलेखों से एकीकृत किया गया।
- **प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (PM-AASHA) का सुदृढ़ीकरण:** किसानों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने हेतु मूल्य समर्थन योजना (PSS) और मूल्य न्यूनता भुगतान योजना (PDPS) के वित्तीय परिव्यय का विस्तार कर दलहन, तिलहन और मोटे अनाजों (श्री अन्न) की 100% सरकारी खरीद व्यवस्था को संस्थागत रूप दिया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 1. भारतीय कृषि की संरचनात्मक विशेषताओं और चुनौतियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में कुल कृषि जोतों में 86% से अधिक हिस्सेदारी लघु एवं सीमांत कृषकों की है, जिनके पास 2 हेक्टेयर से कम भूमि है।
2. कृषि क्षेत्र में पाई जाने वाली प्रच्छन्न बेरोजगारी (Disguised Unemployment) की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अतिरिक्त श्रमिकों की सीमांत भौतिक उत्पादकता शून्य या लगभग नगण्य होती है।
3. भारत में कुल सकल फसली क्षेत्र (Gross Cropped Area) के 80% से अधिक भाग पर नकदी और बागवानी फसलें उगाई जाती हैं।
4. देश के शुद्ध बुवाई क्षेत्र का 70% से अधिक भाग वर्तमान में सुनिश्चित नहरी एवं नलकूप सिंचाई के अंतर्गत आ चुका है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: नवीनतम कृषि संगणना के अनुसार, भारत में सीमांत (< 1 हेक्टेयर) और लघु (1–2 हेक्टेयर) जोतों का संयुक्त अनुपात लगभग 86.2% है।
  - कथन 2 सत्य है: प्रच्छन्न बेरोजगारी का अर्थ है कि यदि कार्य में लगे कुछ अतिरिक्त श्रमिकों को हटा भी लिया जाए, तो कुल उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, अर्थात् उनकी सीमांत उत्पादकता शून्य होती है।
  - कथन 3 असत्य है: भारत में कुल फसली क्षेत्र के लगभग **65-70% भाग पर खाद्यान्न फसलें** (चावल, गेहूँ आदि) उगाई जाती हैं, न कि नकदी फसलें।
  - कथन 4 असत्य है: भारत में शुद्ध सिंचित क्षेत्र लगभग 52-53% है; शेष लगभग **47-48% क्षेत्र अब भी वर्षा (मानसून) पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर** है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (कृषि अवधारणा / वर्गीकरण)	**सूची-II (मानक सीमा / संबद्ध तथ्य)**
a. सीमांत कृषक (Marginal Farmer)	1. 1 हेक्टेयर से कम भूमि धारक
b. लघु कृषक (Small Farmer)	2. 1 हेक्टेयर से 2 हेक्टेयर के मध्य भूमि धारक
c. एग्रीस्टैक (AgriStack)	3. कृषि हेतु डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI)

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (कृषि अवधारणा / वर्गीकरण)	सूची-II (मानक सीमा / संबद्ध तथ्य)
d. आदर्श NPK उर्वरक उपभोग अनुपात	4. 4 : 2 : 1

कूट:

(A) a-1, b-2, c-3, d-4

(B) a-1, b-2, c-4, d-3

(C) a-2, b-1, c-3, d-4

(D) a-3, b-4, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-1, b-2, c-3, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **सीमांत कृषक:** भारत सरकार के आधिकारिक वर्गीकरण के अनुसार 1 हेक्टेयर (2.47 एकड़) से कम जोत वाले किसान।
    - **लघु कृषक:** 1 हेक्टेयर से अधिक परंतु 2 हेक्टेयर तक की जोत रखने वाले किसान।
    - **एग्रीस्टैक:** डिजिटल कृषि मिशन के तहत विकसित डिजिटल प्लेटफॉर्म, जो किसानों को आईडी, भूमि रिकॉर्ड और ई-केवाईसी से जोड़ता है।
    - **आदर्श NPK अनुपात:** मृदा की प्राकृतिक उर्वरता बनाए रखने हेतु नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का वैज्ञानिक रूप से अनुशंसित अनुपात $4:2:1$ है।

टॉपिक - 4: न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP: Minimum Support Price)

न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) भारत सरकार द्वारा कृषि उपजों के लिए घोषित किया जाने वाला एक गारंटीकृत मूल्य (Price Floor) है। इसका मुख्य उद्देश्य बंपर पैदावार के समय बाजार में मूल्यों में होने वाली तीव्र गिरावट से किसानों को सुरक्षा प्रदान करना तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) व बफर स्टॉक हेतु खाद्यान्नों की खरीद सुनिश्चित करना है।

1. संस्थागत संरचना एवं घोषणा प्रक्रिया

- **संस्तुति कर्ता निकाय: कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP - Commission for Agricultural Costs and Prices)।**
    - *ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:* 1965 में 'कृषि मूल्य आयोग' के रूप में स्थापित; 1985 में इसका नाम बदलकर CACP किया गया। यह कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय का एक संलग्न कार्यालय है।
- **अंतिम अनुमोदन:** प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली **आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (CCEA)** द्वारा बुवाई के मौसम से पूर्व वर्ष में दो बार (खरीफ और रबी) MSP की घोषणा की जाती है।
- **फसलों की कुल संख्या:** CACP द्वारा कुल **22 अनिवार्य फसलों** के लिए MSP तथा गन्ने के लिए **उचित और लाभकारी मूल्य (FRP)** की संस्तुति की जाती है (अर्थात् कुल $22 + 1 = 23$ फसलें):

©IASHINDIMEDIUM

- **14 खरीफ फसलें:** धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, रागी, अरहर (तूर), मूंग, उड़द, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी बीज, तिल, नाइजरसीड (रामतिल), और कपास।
- **6 रबी फसलें:** गेहूँ, जौ, चना, मसूर, सरसों/तोरिया, और कुसुम (Safflower)।
- **2 वाणिज्यिक फसलें:** जूट (पटसन) और खोपरा (Copra)।
- *(नोट: डी-हस्क नारियल का MSP खोपरा के आधार पर तय होता है)*।

2. मूल्य निर्धारण की लागत पद्धतियाँ एवं स्वामीनाथन आयोग

CACP मूल्य निर्धारण हेतु अखिल भारतीय स्तर पर तीन प्रकार की उत्पादन लागतों का आकलन करता है:

1. A_2 **लागत:** इसमें बीज, उर्वरक, कीटनाशक, किराए का श्रम, ईंधन, सिंचाई आदि पर किसान द्वारा किया गया प्रत्यक्ष नकदी/वस्तुगत व्यय शामिल होता है।
2. $A_2 + FL$ **लागत:** A_2 लागत के साथ-साथ परिवार के सदस्यों के अवैतनिक शारीरिक श्रम का आकलित मूल्य (Family Labour - FL) शामिल किया जाता है।
3. C_2 **लागत (व्यापक लागत):** इसमें $A_2 + FL$ के अतिरिक्त भूमि का किराया तथा किसान की स्वामित्व वाली स्थायी पूँजी/परिसंपत्तियों पर देय ब्याज भी सम्मिलित होता है।

- **लागत मानक:** राष्ट्रीय कृषक आयोग (प्रो. एम. एस. स्वामीनाथन समिति, 2006) ने C_2 **लागत का कम से कम 50% अधिक** ($C_2 + 50\%$) मूल्य देने की सिफारिश की थी।
- **वर्तमान सरकारी फार्मूला:** केंद्रीय बजट 2018-19 से सरकार ने उत्पादन लागत के कम से कम 1.5 गुना (150%) मूल्य तय करने का नियम लागू किया, जो $A_2 + FL$ लागत पर आधारित है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **PM-AASHA योजना का व्यापक विस्तार:** केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा 'प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान' (PM-AASHA) के वित्तीय परिव्यय को ₹35,000 करोड़ से अधिक का विस्तार दिया गया। इसके तहत मूल्य समर्थन योजना (PSS) के अंतर्गत राज्यों द्वारा दलहन (विशेषकर तुअर, उड़द, मसूर) और तिलहन की 100% खरीद सुनिश्चित करने की गारंटी लागू की गई।
- **विपणन सत्र 2025-26 एवं 2026-27 हेतु मूल्य वृद्धि:** रबी एवं खरीफ विपणन सत्रों के लिए घोषित MSP में तिलहनों और दलहनों (विशेषकर मसूर और सरसों) पर उत्पादन लागत ($A_2 + FL$) पर 80% से 100% तक का शुद्ध प्रतिफल दिया गया, ताकि फसल विविधीकरण को प्रोत्साहन देकर दलहन-तिलहन में आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सके।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की व्यवस्था के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. न्यूनतम समर्थन मूल्य की सिफारिश कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP) द्वारा की जाती है, जबकि इसका अंतिम अनुमोदन आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (CCEA) द्वारा किया जाता है।
2. भारत सरकार वर्तमान में प्रो. एम. एस. स्वामीनाथन समिति की सिफारिशों के अनुरूप संपूर्ण व्यापक लागत (C_2) पर 50% का लाभ जोड़कर MSP तय करती है।

©IASHINDIMEDIUM

3. CACP कुल 22 अनिवार्य फसलों हेतु MSP तथा गन्ने के लिए 'उचित और लाभकारी मूल्य' (FRP) की संस्तुति करता है।

4. सीएसीपी (CACP) की स्थापना मूल रूप से वर्ष 1965 में 'कृषि मूल्य आयोग' के नाम से की गई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: CACP केवल परामर्शदात्री निकाय है जो मूल्य संस्तुति देता है; इसे लागू करने का अंतिम निर्णय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली CCEA करती है।
    - कथन 2 असत्य है: स्वामीनाथन आयोग ने व्यापक लागत (C_2) पर 50% लाभ ($C_2 + 50\%$) की सिफारिश की थी, किंतु वर्तमान में केंद्र सरकार $A_2 + FL$ **(प्रत्यक्ष लागत + पारिवारिक श्रम)** के आधार पर 50% लाभ (1.5 गुना) प्रदान करती है।
    - कथन 3 सत्य है: CACP 22 अनिवार्य फसलों (14 खरीफ, 6 रबी, 2 वाणिज्यिक) हेतु MSP तथा गन्ने के लिए FRP की सिफारिश करता है।
    - कथन 4 सत्य है: जनवरी 1965 में प्रो. एम. एल. दंतवाला की अध्यक्षता में 'कृषि मूल्य आयोग' गठित हुआ था, जिसे 1985 में पुनर्गठित कर CACP नाम दिया गया।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (लागत संकल्पना / फसल व्यवस्था)	**सूची-II (संबद्ध परिभाषा / घटक)**
a. A_2 लागत	1. भूमि का किराया एवं पूँजीगत संपत्तियों पर ब्याज सहित व्यापक लागत
b. $A_2 + FL$ लागत	2. बीज, खाद, ईंधन व सिंचाई पर किया गया प्रत्यक्ष नकद/वस्तुगत व्यय
c. C_2 लागत	3. प्रत्यक्ष व्यय के साथ अवैतनिक पारिवारिक श्रम का आकलित मूल्य
d. उचित और लाभकारी मूल्य (FRP)	4. गन्ने के लिए देय वैधानिक न्यूनतम मूल्य

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - A_2 **लागत:** किसान द्वारा फसल उत्पादन में बीज, उर्वरक, रासायनिक कीटनाशक, मजदूरी और ईंधन आदि पर जेब से किया गया वास्तविक प्रत्यक्ष खर्च।
    - $A_2 + FL$ **लागत:** प्रत्यक्ष खर्च के साथ किसान के परिवार के सदस्यों द्वारा किए गए अवैतनिक शारीरिक श्रम का मूल्य।
    - C_2 **लागत:** $A_2 + FL$ के अलावा किसान की अपनी जमीन का अनुमानित किराया और स्थायी पूंजी का ब्याज जोड़ने पर बनने वाली कुल व्यापक लागत।
    - **उचित और लाभकारी मूल्य (FRP):** यह गन्ने के लिए गन्ना (नियंत्रण) आदेश, 1966 के तहत केंद्र सरकार द्वारा घोषित किया जाने वाला मूल्य है, जिसे चीनी मिलों द्वारा किसानों को चुकाना कानूनन अनिवार्य होता है।

टॉपिक - 5: खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS)

खाद्य सुरक्षा का तात्पर्य सभी व्यक्तियों के लिए हर समय सक्रिय और स्वस्थ जीवन जीने हेतु पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन की भौतिक, सामाजिक और आर्थिक पहुँच सुनिश्चित करना है (विश्व खाद्य शिखर सम्मेलन, 1996)। इसके तीन मूलभूत आयाम हैं: **खाद्य उपलब्धता (Availability)**, **पहुँच (Accessibility)**, और **सस्ती दर पर प्राप्ति (Affordability)**।

1. संस्थागत संरचना: FCI एवं बफर स्टॉक

- **भारतीय खाद्य निगम (FCI):**
    - **स्थापना:** खाद्य निगम अधिनियम, 1964 के तहत **14 जनवरी 1965** को स्थापित वैधानिक निकाय।
    - **कार्य:** न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर खाद्यान्नों की खरीद, केंद्रीय पूल में भंडारण, अंतर-राज्यीय संचलन, तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) हेतु राज्यों को खाद्यान्न का आवंटन।
- **बफर स्टॉक व्यवस्था:**
    - आपात स्थितियों (सूखा, बाढ़, युद्ध) तथा मूल्य स्थिरीकरण हेतु खाद्यान्नों का रणनीतिक भंडार।
    - भारत सरकार की आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (CCEA) द्वारा प्रत्येक तिमाही (1 जनवरी, 1 अप्रैल, 1 जुलाई, 1 अक्टूबर) के लिए **न्यूनतम बफर मानदंड (Buffer Norms)** तय किए जाते हैं।
- **खाद्य सब्सिडी (Food Subsidy):**
    - यह FCI की **आर्थिक लागत (Economic Cost)** और **केंद्रीय निर्गम मूल्य (Central Issue Price - CIP)** के बीच का अंतर है, जिसे केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

- *आर्थिक लागत के तीन घटक:* न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) + खरीद प्रासंगिक व्यय (मंडी टैक्स, बोरियां आदि) + वितरण/भंडारण लागत।

2. लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TPDS) से NFSA, 2013 तक

- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) का विकास:**
  - 1960 के दशक में सार्वभौमिक PDS के रूप में शुरू।
  - जून 1997 में गरीबों पर केंद्रित **लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TPDS)** लागू हुई, जिसमें लाभार्थियों को BPL (गरीबी रेखा से नीचे) और APL (गरीबी रेखा से ऊपर) में बांटा गया।
  - **अंत्योदय अन्न योजना (AAY):** 25 दिसंबर 2000 को निर्धनों में सर्वाधिक निर्धन परिवारों हेतु शुरू; प्रति परिवार **35 किग्रा खाद्यान्न** प्रतिमाह।
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), 2013:**
  - **प्रवर्तन:** 5 जुलाई 2013 से प्रभावी। यह खाद्य सुरक्षा को एक **विधिक/कानूनी अधिकार (Legal Entitlement)** बनाता है।
  - **कवरेज:** देश की कुल जनसंख्या का **67%** (ग्रामीण आबादी का **75%** और शहरी आबादी का **50%**)।
  - **श्रेणियां एवं पात्रता:**
    1. *अंत्योदय अन्न योजना (AAY):* 35 किग्रा प्रति परिवार प्रतिमाह।
    2. *प्राथमिकता प्राप्त गृहस्थी (Priority Households - PHH):* **5 किग्रा प्रति व्यक्ति प्रतिमाह**।
  - **महिला सशक्तिकरण:** राशन कार्ड जारी करने के प्रयोजन से परिवार की सबसे वरिष्ठ महिला (18 वर्ष या उससे अधिक आयु) को **'घर का मुखिया'** माना गया है।
  - **मातृत्व लाभ:** गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को गर्भावस्था और प्रसव के दौरान कम से कम **₹6,000** का नकद मातृत्व लाभ।
  - **खाद्य सुरक्षा भत्ता:** खाद्यान्न की आपूर्ति न होने की स्थिति में लाभार्थियों को राज्य सरकार द्वारा खाद्य सुरक्षा भत्ता दिए जाने का विधिक प्रावधान है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PMGKAY) का दीर्घकालिक विस्तार:** केंद्र सरकार द्वारा NFSA के तहत सभी 81.35 करोड़ लाभार्थियों (AAY और PHH) को मासिक खाद्यान्न पूर्णतः **निःशुल्क (Zero CIP)** उपलब्ध कराने की समय-सीमा को 5 वर्षों (2024 से 2028 के अंत तक) के लिए प्रभावी रूप से संचालित किया गया।
- **चावल का 100% फोर्टिफिकेशन (Fortified Rice):** PDS, पीएम-पोषण (मिड-डे मील) और एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) के तहत एनीमिया व सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को दूर करने हेतु शत-प्रतिशत फोर्टिफाइड चावल (आयरन, फोलिक एसिड और विटामिन B12 युक्त) का वितरण सुनिश्चित किया गया।
- **'वन नेशन वन राशन कार्ड' (ONORC) एवं बायोमेट्रिक ई-केवाईसी:** राशन पोर्टेबिलिटी के तहत देश भर में फेयर प्राइस शॉप्स (FPS) पर 100% इलेक्ट्रॉनिक प्वाइंट ऑफ सेल (e-PoS) मशीनों के माध्यम से अंतर-राज्यीय व अंतर-जिला खाद्यान्न निकासी व्यवस्था को डिजिटल सत्यापन से पूरी तरह आच्छादित किया गया।

©IASHINDIMEDIUM

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), 2013 के विधिक प्रावधानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह अधिनियम देश की 67% जनसंख्या को कानूनी रूप से रियायती अथवा निःशुल्क खाद्यान्न प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है।
2. इसके तहत प्राथमिकता प्राप्त परिवारों (Priority Households) को प्रति परिवार 35 किलोग्राम खाद्यान्न प्रतिमाह दिए जाने का प्रावधान है।
3. राशन कार्ड जारी करने के उद्देश्य से परिवार की 18 वर्ष या उससे अधिक आयु की सबसे वरिष्ठ महिला को घर का मुखिया माना गया है।
4. यदि पात्र व्यक्तियों को निर्धारित खाद्यान्न उपलब्ध नहीं कराया जाता है, तो उन्हें 'खाद्य सुरक्षा भत्ता' (Food Security Allowance) पाने का अधिकार है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: NFSA 2013 ग्रामीण क्षेत्र की 75% और शहरी क्षेत्र की 50% आबादी, अर्थात् अखिल भारतीय स्तर पर कुल 67% जनसंख्या को आच्छादित करता है।
    - कथन 2 असत्य है: प्रति परिवार 35 किग्रा खाद्यान्न **अंत्योदय अन्न योजना (AAY)** के अंतर्गत मिलता है। 'प्राथमिकता प्राप्त परिवारों' (PHH) को **प्रति व्यक्ति 5 किग्रा** खाद्यान्न प्रतिमाह देय होता है।
    - कथन 3 सत्य है: अधिनियम की धारा 12 और 13 के तहत महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हुए 18 वर्ष या उससे अधिक आयु की महिला को राशन कार्ड हेतु परिवार का मुखिया घोषित किया गया है।
    - कथन 4 सत्य है: अधिनियम की धारा 8 के तहत आपूर्ति बाधित होने पर राज्य सरकार द्वारा लाभार्थी को नकद 'खाद्य सुरक्षा भत्ता' देने की विधिक बाध्यता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (संस्था / योजना / संकल्पना)	**सूची-II (संबद्ध वर्ष / प्रमुख विशेषता)**
a. भारतीय खाद्य निगम (FCI)	1. 25 दिसंबर 2000 (35 किग्रा खाद्यान्न प्रति परिवार)

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (संस्था / योजना / संकल्पना)	सूची-II (संबद्ध वर्ष / प्रमुख विशेषता)
b. लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TPDS)	2. खाद्य निगम अधिनियम के तहत 1965 में स्थापना
c. अंत्योदय अन्न योजना (AAY)	3. जून 1997 (BPL और APL में द्वि-स्तरीय मूल्य निर्धारण)
d. खाद्य सब्सिडी की आर्थिक लागत	4. MSP + खरीद प्रासंगिक व्यय + वितरण/भंडारण लागत

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **भारतीय खाद्य निगम (FCI):** खाद्यान्न प्रबंधन और बफर स्टॉक हेतु 14 जनवरी 1965 को स्थापित किया गया।
    - **लक्षित PDS (TPDS):** जून 1997 में गरीबों पर लक्षित प्रणाली शुरू की गई, जिसमें गरीबी रेखा से नीचे (BPL) परिवारों को रियायती दर पर अनाज दिया गया।
    - **अंत्योदय अन्न योजना:** 25 दिसंबर 2000 को निर्धनों में सबसे कमजोर परिवारों को प्रतिमाह 35 किग्रा खाद्यान्न देने हेतु प्रारंभ की गई।
    - **आर्थिक लागत (Economic Cost of Foodgrains):** यह FCI द्वारा खाद्यान्न अधिग्रहण की वास्तविक कुल लागत है, जिसमें किसानों को दिया जाने वाला MSP, राज्य कर/मंडी शुल्क/पैकिंग लागत तथा ढुलाई व भंडारण का वितरण व्यय शामिल होता है।

©IASHINDIMEDIUM

उद्योग बुनियादी ढाँचा एवं श्रम

टॉपिक - 1: भारत की औद्योगिक नीतियाँ (1948–1991)

स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने तीव्र आर्थिक संवृद्धि, संतुलित क्षेत्रीय विकास तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने हेतु एक सुनियोजित औद्योगिक नीति का ढांचा तैयार किया। 1948 से 1991 के मध्य घोषित नीतियाँ भारतीय अर्थव्यवस्था के क्रमिक विकास का आधार बनीं।

1. औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1948 (प्रथम औद्योगिक नीति)

- **घोषणा: 6 अप्रैल 1948** को तत्कालीन उद्योग मंत्री **डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी** द्वारा घोषित।
- **विशेषता:** इसने भारत में **मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy)** की आधारशिला रखी।
- **उद्योगों का 4-स्तरीय वर्गीकरण:**
    1. *पूर्ण सरकारी एकाधिकार (3 उद्योग):* अस्त्र-शस्त्र, परमाणु ऊर्जा तथा रेल परिवहन।
    2. *मिश्रित क्षेत्र (6 उद्योग):* कोयला, लोहा-इस्पात, विमान निर्माण आदि (नए उपक्रम केवल राज्य द्वारा)।
    3. *नियंत्रित निजी क्षेत्र (18 बुनियादी उद्योग):* ऑटोमोबाइल, सीमेंट, भारी रसायन आदि (सरकारी नियमन के अधीन)।
    4. *अवशिष्ट निजी क्षेत्र:* शेष सभी उद्योग निजी क्षेत्र के लिए खुले रखे गए।

2. औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1956 (आर्थिक संविधान)

- **घोषणा: 30 अप्रैल 1956** को घोषित। इसे भारत का **'आर्थिक संविधान' (Economic Constitution)** तथा राज्य पूँजीवाद का घोषणा-पत्र कहा जाता है।
- **आधार:** द्वितीय पंचवर्षीय योजना (पी.सी. महालनोबिस मॉडल) तथा 1954 के आवड़ी अधिवेशन में स्वीकृत **'समाजवादी समाज की स्थापना'** का लक्ष्य।
- **उद्योगों का 3 अनुसूचियों में वर्गीकरण:**
    - **अनुसूची-A (17 उद्योग):** पूर्णतः राज्य के अनन्य स्वामित्व वाले (रेलवे, वायु परिवहन, अस्त्र-शस्त्र, परमाणु ऊर्जा आदि)।
    - **अनुसूची-B (12 उद्योग):** राज्य के स्वामित्व वाले परंतु निजी क्षेत्र सहायक भूमिका में (उर्वरक, सड़क परिवहन, गैर-लौह धातुएं)।
    - **अनुसूची-C:** शेष सभी उद्योग निजी क्षेत्र हेतु खुले, परंतु **लाइसेंस राज (License Raj)** के तहत विनियमित।
- **लाइसेंसिंग प्रणाली:** उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1951 (IDRA, 1951) के माध्यम से पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग लगाने पर कर-छूट एवं रियायती बिजली देकर 'संतुलित क्षेत्रीय विकास' को बढ़ावा दिया गया।

3. अन्य अंतरिम नीतियाँ (1977 एवं 1980)

©IASHINDIMEDIUM

- **औद्योगिक नीति, 1977 (जनता पार्टी सरकार):** कुटीर, खादी एवं लघु उद्योगों पर मुख्य बल। प्रत्येक जिले में **जिला उद्योग केंद्र (DIC - District Industries Centre)** की स्थापना की गई।
- **औद्योगिक नीति, 1980:** आर्थिक दक्षता, आधुनिकीकरण एवं 'उदारीकरण की प्रारंभिक नींव'।

4. नई औद्योगिक नीति, 1991 (LPG सुधार)

- **घोषणा: 24 जुलाई 1991** को प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव एवं वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा घोषित।
- **प्रमुख सुधार:**
    1. **औद्योगिक गैर-लाइसेंसिंग (Delicensing):** अनिवार्य लाइसेंसिंग व्यवस्था समाप्त; वर्तमान में केवल **4 उद्योगों** (विस्फोटक, एयरोस्पेस/रक्षा उपकरण, खतरनाक रसायन, सिगार/तंबाकू) हेतु अनिवार्य लाइसेंस आवश्यक है।
    2. **सार्वजनिक क्षेत्र का वि-आरक्षण (Deresevation):** सार्वजनिक क्षेत्र हेतु आरक्षित उद्योगों की संख्या 17 से घटाकर पहले 8, फिर 3 और वर्तमान में केवल **2** रह गई है: **(i) परमाणु ऊर्जा, और (ii) रेलवे प्रचालन**।
    3. **MRTP अधिनियम की सीमा समाप्त:** एकाधिकार नियंत्रण अधिनियम (MRTP Act, 1969) की पूर्व-अनुमोदन सीमा हटाई गई (जिसे 2002 में प्रतिस्पर्धा अधिनियम द्वारा प्रतिस्थापित किया गया)।
    4. **विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) उदारीकरण:** स्वचालित मार्ग (Automatic Route) के तहत विदेशी पूँजी निवेश को प्रोत्साहन।

5. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **राष्ट्रीय औद्योगिक नीति कार्ययोजना एवं पीएलआई 2.0:** 'मेक इन इंडिया' के 10 वर्ष पूर्ण होने पर विनिर्माण क्षेत्र की GDP में हिस्सेदारी को 25% तक ले जाने हेतु इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर और फार्मास्युटिकल्स के लिए 'उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन' (PLI) योजना के तहत ₹1.97 लाख करोड़ के परिव्यय का पूर्ण समीक्षा चक्र संचालित किया गया।
- **उत्तर प्रदेश औद्योगिक निवेश एवं रोजगार प्रोत्साहन नीति 2022 का क्रियान्वयन:** उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (UPSIDA) द्वारा बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण (BIDA) के भूमि अधिग्रहण तथा डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (अलीगढ़, आगरा, कानपुर, लखनऊ, झांसी, चित्रकूट) में 100 से अधिक औद्योगिक इकाइयों को सिंगल विंडो 'निवेश मित्र 3.0' पोर्टल से प्रत्यक्ष स्वीकृति प्रदान की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1956 (IPR 1956) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसे भारतीय अर्थव्यवस्था का 'आर्थिक संविधान' भी कहा जाता है, जिसने सार्वजनिक क्षेत्र को 'कमांडिंग हाइट्स' (सर्वोच्च प्राथमिकता) प्रदान की।
2. इस नीति के अंतर्गत उद्योगों को तीन स्पष्ट अनुसूचियों—अनुसूची-A, अनुसूची-B और अनुसूची-C में वर्गीकृत किया गया था।
3. अनुसूची-A में कुल 17 ऐसे उद्योगों को शामिल किया गया था जिनका विकास राज्य का अनन्य (पूर्ण) दायित्व निर्धारित था।
4. इस नीति ने पिछड़े क्षेत्रों में निजी उद्योगों की स्थापना के लिए किसी भी प्रकार के सरकारी लाइसेंस या अनुमति की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

©IASHINDIMEDIUM

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: औद्योगिक नीति प्रस्ताव 1956 को भारतीय नियोजन का आर्थिक संविधान माना जाता है। इसमें उद्योगों को तीन श्रेणियों में बांटा गया था—अनुसूची A (17 उद्योग, पूर्ण सरकारी नियंत्रण), अनुसूची B (12 उद्योग, सार्वजनिक क्षेत्र प्रमुख), और अनुसूची C (शेष निजी क्षेत्र)।
    - कथन 4 असत्य है: IPR 1956 ने पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग लगाने के लिए लाइसेंसिंग को समाप्त नहीं किया, बल्कि लाइसेंसिंग का उपयोग एक नियामक साधन के रूप में किया (लाइसेंस राज)। पिछड़े क्षेत्रों में निजी उद्योगों को आकर्षित करने हेतु कर-छूट (Tax holidays) तथा रियायती दरों पर बिजली-पानी की व्यवस्था की गई थी, परंतु नए संयंत्र या विस्तार हेतु सरकारी लाइसेंस अनिवार्य था।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (औद्योगिक नीति / प्रावधान)	**सूची-II (संबद्ध वर्ष / प्रमुख तथ्य)**
a. प्रथम औद्योगिक नीति प्रस्ताव	1. 24 जुलाई 1991 (LPG सुधार)
b. जिला उद्योग केंद्र (DIC) की अवधारणा	2. 6 अप्रैल 1948 (डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी)
c. नई आर्थिक एवं औद्योगिक नीति	3. 1977 की औद्योगिक नीति (जनता पार्टी)
d. वर्तमान में सार्वजनिक क्षेत्र हेतु आरक्षित उद्योग	4. केवल 2 उद्योग (परमाणु ऊर्जा एवं रेल प्रचालन)

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- **प्रथम औद्योगिक नीति:** 6 अप्रैल 1948 को तत्कालीन उद्योग मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा संसद में पेश की गई, जिसने मिश्रित अर्थव्यवस्था की नींव रखी।
- **जिला उद्योग केंद्र (DIC):** छोटे और कुटीर उद्योगों को एक ही छत के नीचे वित्तीय व तकनीकी सेवाएँ देने हेतु 1977 की औद्योगिक नीति द्वारा शुरू किए गए।
- **नई औद्योगिक नीति:** 24 जुलाई 1991 को घोषित हुई, जिसने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) के युग का सूत्रपात किया।
- **सार्वजनिक क्षेत्र हेतु आरक्षित उद्योग:** वि-आरक्षण के उपरांत वर्तमान में केवल दो उद्योग पूर्णतः केंद्र सरकार के लिए आरक्षित हैं—परमाणु ऊर्जा और रेलवे प्रचालन।

टॉपिक - 2: मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान

1. 'मेक इन इंडिया' पहल (Make in India)

- **शुरुआत व नोडल मंत्रालय:** यह पहल **25 सितंबर 2014** को प्रारंभ की गई। इसका नोडल विभाग वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अधीन **उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT)** है।
- **प्रतीक चिन्ह (Logo):** गतिमान गियर पहियों (Cogs) से बना **सिंह (Lion)**, जो औद्योगिक शक्ति और राष्ट्रीय साहस का प्रतीक है।
- **चार आधारभूत स्तंभ (Four Pillars):**
  1. *नई प्रक्रियाएं (New Processes):* व्यवसाय सुगमता (Ease of Doing Business) को बढ़ावा देना तथा विनियमन को सरल बनाना।
  2. *नई अवसंरचना (New Infrastructure):* औद्योगिक गलियारों (Industrial Corridors) और अत्याधुनिक लॉजिस्टिक्स का विकास।
  3. *नए क्षेत्र (New Sectors):* विनिर्माण, अवसंरचना और सेवा क्षेत्र के 27 चयनित क्षेत्रों में FDI व निवेश को प्रोत्साहन।
  4. *नई सोच (New Mindset):* सरकार की भूमिका नियामक (Regulator) से बदलकर 'सुविधा प्रदाता' (Facilitator) के रूप में स्थापित करना।
- **प्रमुख उद्देश्य:** विनिर्माण क्षेत्र की वार्षिक वृद्धि दर को 12--14% तक ले जाना, GDP में विनिर्माण हिस्सेदारी को बढ़ाकर 25% करना तथा 100 मिलियन अतिरिक्त रोजगार सृजित करना।

2. आत्मनिर्भर भारत अभियान (Self-Reliant India Movement)

- **घोषणा एवं पैकेज:** कोविड-19 महामारी के समय **12 मई 2020** को प्रधानमंत्री द्वारा इसकी घोषणा की गई। इसके तहत घोषित विशेष आर्थिक पैकेज का कुल आकार **₹20 लाख करोड़** (भारत की तत्कालीन GDP का लगभग 10%) था।
- **आत्मनिर्भरता का मूल मंत्र:** 'लोकल फॉर वोकल' (Vocal for Local) तथा स्थानीय उत्पादों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना। यह अलगाववादी या संरक्षणवादी नीति नहीं, बल्कि वैश्विक मूल्य श्रृंखला (Global Value Chains) में भारत के एकीकरण पर केंद्रित है।

©IASHINDIMEDIUM

- **पाँच मार्गदर्शक स्तंभ (Five Pillars):**
    1. **अर्थव्यवस्था (Economy):** जो वृद्धिशील (Incremental) परिवर्तन के स्थान पर 'क्वांटम जंप' (तीव्र उछाल) लाए।
    2. **अवसंरचना (Infrastructure):** आधुनिक भारत की पहचान बनने वाली विश्वस्तरीय संरचना।
    3. **प्रणाली (System):** 21वीं सदी की प्रौद्योगिकी और डिजिटल तकनीक पर आधारित व्यवस्था।
    4. **जीवंत जनसांख्यिकी (Vibrant Demography):** दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की युवा कार्यशील शक्ति।
    5. **मांग (Demand):** आपूर्ति और मांग चक्र की पूर्ण क्षमता का उपयोग।
- **संबंधित प्रमुख उप-योजनाएं:** उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (PLI Scheme), एमएसएमई (MSME) की नई परिभाषा एवं आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ECLGS)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **'मेक इन इंडिया' के 10 वर्ष पूर्ण व विनिर्माण निर्यात:** इलेक्ट्रॉनिक्स (विशेष रूप से स्मार्टफोन निर्यात), रक्षा उत्पादन तथा खिलौना उद्योग में घरेलू मूल्यवर्धन (Domestic Value Addition) में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई। भारत का मोबाइल फोन विनिर्माण 99% से अधिक स्वदेशी आपूर्ति के स्तर पर पहुँचा।
- **पीएलआई (PLI) 2.0 का रणनीतिक संवर्धन:** नेशनल सेमीकंडक्टर मिशन (ISM) के तहत स्थापित फैब्रिकेशन (Fab) और असेंबली इकाइयों में वाणिज्यिक उत्पादन की शुरुआत तथा हरित हाइड्रोजन, उन्नत रसायन सेल (ACC) बैटरी स्टोरेज और चिकित्सा उपकरणों के घरेलू उत्पादन हेतु अतिरिक्त बजटीय प्रोत्साहन जारी किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'मेक इन इंडिया' पहल एवं 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'मेक इन इंडिया' पहल का औपचारिक शुभारंभ 25 सितंबर 2014 को उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) द्वारा किया गया था।
2. मेक इन इंडिया का आधिकारिक प्रतीक चिन्ह (Logo) गतिमान गियरों से बना एक हाथी है, जो आर्थिक स्थिरता का प्रतीक है।
3. मई 2020 में घोषित 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के पाँच आधारभूत स्तंभों में अर्थव्यवस्था, अवसंरचना, प्रणाली, जनसांख्यिकी और मांग शामिल हैं।
4. आत्मनिर्भर भारत का घोषित आर्थिक पैकेज भारत की GDP के लगभग 10% के बराबर (₹20 लाख करोड़) निर्धारित किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: 'मेक इन इंडिया' का शुभारंभ 25 सितंबर 2014 को हुआ और इसका प्रशासनिक नियंत्रण DPIIT (वाणिज्य मंत्रालय) के पास है।
    - कथन 2 असत्य है: मेक इन इंडिया का प्रतीक चिन्ह 'सिंह' (Lion) है जो गियर पहियों से बना है, न कि हाथी।
    - कथन 3 सत्य है: आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तंभ हैं—अर्थव्यवस्था, अवसंरचना, 21वीं सदी की प्रणाली (सिस्टम), जीवंत जनसांख्यिकी (डेमोग्राफी) तथा मांग (डिमांड)।
    - कथन 4 सत्य है: 12 मई 2020 को घोषित विशेष आर्थिक पैकेज की कुल राशि ₹20 लाख करोड़ थी, जो भारत की सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का लगभग 10% थी।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (योजना / अभियान)	**सूची-II (संबद्ध वर्ष / मूल विषय)**
a. मेक इन इंडिया का शुभारंभ	1. ₹20 लाख करोड़ का आर्थिक पैकेज
b. आत्मनिर्भर भारत अभियान	2. विनिर्माण क्षेत्र को प्रोत्साहन (DPIIT)
c. उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (PLI)	3. 25 सितंबर 2014
d. वोकल फॉर लोकल (Vocal for Local)	4. 14 प्रमुख विनिर्माण क्षेत्रों में उत्पादन आधारित सब्सिडी

कूट:

(A) a-3, b-1, c-4, d-2

(B) a-3, b-2, c-4, d-1

(C) a-2, b-1, c-4, d-3

(D) a-4, b-3, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-4, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **मेक इन इंडिया का शुभारंभ:** 25 सितंबर 2014 को वैश्विक निवेशकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से हुआ।
    - **आत्मनिर्भर भारत अभियान:** 12 मई 2020 को घोषित ₹20 लाख करोड़ के राहत व सुधार पैकेज पर आधारित अभियान है।
    - **उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (PLI):** घरेलू स्तर पर विनिर्माण को प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए 14 प्राथमिक क्षेत्रों में वृद्धिशील बिक्री पर 4% से 6% का वित्तीय प्रोत्साहन देती है।

©IASHINDIMEDIUM

- **वोकल फॉर लोकल:** स्थानीय उत्पादों के उपभोग, संवर्धन एवं वैश्विक ब्रांडिंग हेतु आत्मनिर्भर भारत का मार्गदर्शक सिद्धांत है।

टॉपिक - 3: सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) क्षेत्र की परिभाषा एवं संरचना

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख संवृद्धि चालक (Growth Engine) है। यह देश के कुल विनिर्माण उत्पादन का लगभग 36%, कुल निर्यात का 45% से अधिक तथा लगभग 12 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है।

1. वैधानिक पृष्ठभूमि एवं पूर्व वर्गीकरण

- **MSMED अधिनियम, 2006:** भारत में MSME क्षेत्र के संवर्धन और विनियमन हेतु **'सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास अधिनियम, 2006'** (MSMED Act, 2006) पारित किया गया था।
- **पूर्व वर्गीकरण (2006 से जून 2020 तक):**
  - विनिर्माण (Manufacturing) और सेवा (Services) क्षेत्रों के लिए अलग-अलग मानदंड थे।
  - वर्गीकरण का एकमात्र आधार संयंत्र और मशीनरी / उपकरणों में निवेश (Investment) था।

2. संशोधित समग्र परिभाषा (प्रभावी: 1 जुलाई 2020)

'आत्मनिर्भर भारत पैकेज' के तहत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा MSME की परिभाषा में ऐतिहासिक परिवर्तन किया गया। इसके तहत:

1. **विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के मध्य अंतर को समाप्त कर दिया गया** (दोनों के लिए समान मानदंड)।
2. वर्गीकरण के लिए **'संयंत्र एवं मशीनरी में निवेश'** तथा **'वार्षिक टर्नओवर (कारोबार)'** का **समग्र मानदंड (Composite Criteria)** लागू किया गया।

उद्यम की श्रेणी	संयंत्र एवं मशीनरी/उपकरण में निवेश	वार्षिक टर्नओवर (Turnover)
सूक्ष्म उद्यम (Micro)	₹1 करोड़ से अधिक नहीं	₹5 करोड़ से अधिक नहीं
लघु उद्यम (Small)	₹10 करोड़ से अधिक नहीं	₹50 करोड़ से अधिक नहीं
मध्यम उद्यम (Medium)	₹50 करोड़ से अधिक नहीं	₹250 करोड़ से अधिक नहीं

- **टर्नओवर गणना में विशेष छूट:** निर्यात संवर्धन हेतु किसी भी उद्यम के टर्नओवर की गणना करते समय **वस्तुओं अथवा सेवाओं के निर्यात से प्राप्त आय को कुल टर्नओवर से बाहर (अपवर्जित)** रखा जाता है।
- **उद्यम पंजीकरण पोर्टल (Udyam Portal):** 1 जुलाई 2020 से कागजी प्रक्रियाओं को समाप्त कर MSME पंजीकरण को आयकर (PAN) और GST नेटवर्क (GSTN) से स्वतः एकीकृत किया गया।

3. संस्थागत व नीतिगत समर्थन

- **सार्वजनिक खरीद नीति (Public Procurement Policy):** केंद्रीय मंत्रालयों और CPSEs द्वारा अपने वार्षिक खरीद लक्ष्य का **न्यूनतम 25%** MSME से खरीदना अनिवार्य है (जिसमें 4% SC/ST और 3% महिला उद्यमियों हेतु आरक्षित है)।
- **TReDS (ट्रेड रिसीवेबल्स इलेक्ट्रॉनिक डिस्काउंटिंग सिस्टम):** MSME के बिलों की शीघ्र भुनाई हेतु RBI द्वारा विनियमित डिजिटल प्लेटफॉर्म।
- **MSME संबंध एवं समाधान पोर्टल:** क्रमशः खरीद की निगरानी तथा 45 दिनों के भीतर विलंबित भुगतानों (Delayed Payments) के निपटारे हेतु विधिक मंच।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **आयकर अधिनियम की धारा 43B(h) का पूर्ण परिचालन:** MSME के नकदी प्रवाह को सुरक्षित करने हेतु 45 दिनों (अनुबंध होने पर) या 15 दिनों (बिना अनुबंध) के भीतर भुगतान न करने पर क्रेता कंपनियों के उस व्यय पर कर-कटौती (Tax Deduction) का दावा अमान्य करने संबंधी कड़े प्रावधान पूर्णतः प्रभावी रहे, जिससे बड़े कॉर्पोरेट्स द्वारा MSME के बकाए का रिकॉर्ड निपटान हुआ।
- **उद्यम सहायता प्लेटफॉर्म (UAP) एवं प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (PSL):** सूक्ष्म अनौपचारिक इकाइयों (Unformal Micro Enterprises) को प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रक ऋण (PSL) के दायरे में लाने हेतु उद्यम सहायता प्लेटफॉर्म से 1.5 करोड़ से अधिक अनौपचारिक सूक्ष्म इकाइयों को डिजिटल पहचान पत्र जारी किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSME) की 1 जुलाई 2020 से प्रभावी संशोधित परिभाषा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संशोधित वर्गीकरण के तहत विनिर्माण (Manufacturing) और सेवा (Services) क्षेत्रों के मध्य किए जाने वाले पृथक्करण को समाप्त कर दिया गया है।
2. किसी उद्यम को 'लघु उद्यम' (Small Enterprise) के रूप में वर्गीकृत करने हेतु संयंत्र एवं मशीनरी में निवेश ₹10 करोड़ तक तथा वार्षिक टर्नओवर ₹50 करोड़ तक होना चाहिए।
3. किसी इकाई के वार्षिक टर्नओवर का निर्धारण करते समय वस्तुओं अथवा सेवाओं के निर्यात (Exports) से प्राप्त मूल्य को कुल टर्नओवर में शामिल नहीं किया जाता है।
4. यदि कोई इकाई ₹15 करोड़ का निवेश करती है और उसका टर्नओवर ₹40 करोड़ है, तो उसे 'सूक्ष्म उद्यम' (Micro Enterprise) माना जाएगा।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: 2020 के संशोधन द्वारा विनिर्माण और सेवा को एकीकृत किया गया। 'लघु उद्यम' हेतु सीमा ₹10 करोड़ निवेश और ₹50 करोड़ टर्नओवर है। निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए टर्नओवर की गणना से निर्यात आय को पूर्णतः बाहर रखा गया है।
- कथन 4 असत्य है: सूक्ष्म उद्यम की सीमा ₹1 करोड़ निवेश व ₹5 करोड़ टर्नओवर है। यदि किसी इकाई का निवेश ₹15 करोड़ है (जो ₹10 करोड़ से अधिक है), तो वह लघु की सीमा पार कर 'मध्यम उद्यम' (Medium Enterprise) की श्रेणी में आ जाएगी, भले ही टर्नओवर ₹50 करोड़ से कम हो (क्योंकि दोनों सीमाओं का एक साथ पालन आवश्यक है)।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (MSME श्रेणी / व्यवस्था)	**सूची-II (मानदंड / संस्थागत तंत्र)**
a. सूक्ष्म उद्यम (Micro Enterprise)	1. निवेश $\leq$ ₹50 करोड़ एवं टर्नओवर $\leq$ ₹250 करोड़
b. मध्यम उद्यम (Medium Enterprise)	2. निवेश $\leq$ ₹1 करोड़ एवं टर्नओवर $\leq$ ₹5 करोड़
c. TReDS प्लेटफॉर्म	3. CPSEs द्वारा MSME से अनिवार्य वार्षिक खरीद
d. सार्वजनिक खरीद नीति (25% कोटा)	4. व्यापार प्राप्य (ट्रेड रिसीवेबल्स) की छूट एवं वित्तीय तरलता

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-3, c-4, d-1

(C) a-1, b-2, c-4, d-3

(D) a-3, b-1, c-2, d-4

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **सूक्ष्म उद्यम:** निवेश अधिकतम ₹1 करोड़ तथा टर्नओवर अधिकतम ₹5 करोड़।
  - **मध्यम उद्यम:** निवेश अधिकतम ₹50 करोड़ तथा टर्नओवर अधिकतम ₹250 करोड़।
  - **TReDS:** ट्रेड रिसीवेबल्स डिस्काउंटिंग सिस्टम, जो MSME विक्रेताओं को कई वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से इनवॉइस भुनाने की सुविधा देता है।
  - **सार्वजनिक खरीद नीति:** केंद्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों और केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रमों (CPSEs) के लिए अपनी कुल वार्षिक खरीद का न्यूनतम 25% MSME क्षेत्र से करना कानूनी रूप से अनिवार्य है।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 4: केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (CPSEs) — नवरत्न एवं महारत्न कंपनियाँ

केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों (CPSEs) को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने, परिचालन दक्षता बढ़ाने तथा प्रबंधकीय व वित्तीय स्वायत्तता प्रदान करने हेतु भारी उद्योग एवं लोक उद्यम मंत्रालय (अब वित्त मंत्रालय के अधीन **लोक उद्यम विभाग - DPE**) द्वारा 'रत्न' श्रेणियों की शुरुआत की गई।

1. महारत्न योजना (Maharatna Scheme)

- **शुभारंभ:** दिसंबर 2009 (मई 2010 से प्रभावी)।
- **उद्देश्य:** बड़े नवरत्न उद्यमों को अपने संचालन का वैश्विक विस्तार करने और 'ग्लोबल जायंट' बनने हेतु व्यापक वित्तीय स्वतंत्रता देना।
- **महारत्न दर्जा प्राप्त करने हेतु अनिवार्य मानदंड:**
    1. कंपनी के पास पहले से **नवरत्न (Navratna)** का दर्जा होना अनिवार्य है।
    2. भारतीय शेयर बाजार (SEBI विनियमों के तहत) में न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता के साथ सूचीबद्ध (Listed) होना चाहिए।
    3. विगत 3 वर्षों के दौरान:
        - औसत वार्षिक शुद्ध लाभ (Net Profit after Tax) **₹5,000 करोड़ से अधिक** होना चाहिए।
        - औसत वार्षिक निवल मूल्य (Net Worth) **₹15,000 करोड़ से अधिक** होना चाहिए।
        - औसत वार्षिक टर्नओवर (Turnover) **₹25,000 करोड़ से अधिक** होना चाहिए।
    4. कंपनी की अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में महत्वपूर्ण उपस्थिति या वैश्विक संचालन होना चाहिए।
- **वित्तीय शक्तियाँ:** महारत्न कंपनियों के निदेशक मंडल (Board) को किसी एक परियोजना में सरकारी अनुमति के बिना **₹5,000 करोड़ तक** अथवा कंपनी के नेटवर्थ का **15%** (जो भी कम हो) निवेश करने की पूर्ण स्वायत्तता होती है।

2. नवरत्न योजना (Navratna Scheme)

- **शुभारंभ:** वर्ष **1997** में (मूलतः 9 कंपनियों से शुरुआत)।
- **मानदंड:**
    1. कंपनी को **मिनीरत्न श्रेणी-I (Miniratna Category-I)** तथा अनुसूची-'A' का दर्जा प्राप्त होना चाहिए।
    2. पिछले 5 वर्षों में से कम से कम 3 वर्षों में समझौता ज्ञापन (MoU) प्रणाली के तहत 'उत्कृष्ट' (Excellent) या 'अति उत्तम' (Very Good) रेटिंग प्राप्त हो।
    3. 6 चयनित वित्तीय संकेतकों (शुद्ध लाभ, नेटवर्थ, जनशक्ति लागत, उत्पादन लागत, PBIT, EPS) में **कम से कम 60/100 का समग्र स्कोर (Composite Score)** प्राप्त होना चाहिए।
- **वित्तीय शक्तियाँ:** बिना पूर्व सरकारी स्वीकृति के किसी एक परियोजना में **₹1,000 करोड़ तक** या नेटवर्थ का **15%** तक निवेश करने की छूट।

3. वर्तमान स्थिति एवं अद्यतन सूची

©IASHINDIMEDIUM

- **कुल महारत्न कंपनियाँ (14):**
    - ONGC, NTPC, SAIL, IOCL, BHEL, CIL, GAIL, BPCL, HPCL, PGCIL, PFC, REC, **ऑयल इंडिया लिमिटेड (OIL - 13वीं)**, एवं **हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL - 14वीं)**।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **HAL का महारत्न कंपनी में उन्नयन:** रक्षा क्षेत्र की दिग्गज सार्वजनिक कंपनी **हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)** को वित्त मंत्रालय द्वारा देश की **14वीं महारत्न कंपनी** का औपचारिक दर्जा प्रदान किया गया। इससे HAL को तेजस लड़ाकू विमानों, हेलीकॉप्टरों और इंजन निर्माण हेतु विदेशी फर्मों के साथ स्वतंत्र संयुक्त उद्यम (Joint Ventures) स्थापित करने की ₹5,000 करोड़ तक की सीधी वित्तीय शक्ति प्राप्त हुई।
- **नवीकरणीय एवं रेल क्षेत्र की कंपनियों का नवरत्न में विस्तार:** हरित ऊर्जा एवं बुनियादी ढांचे को गति देने हेतु **SECI (भारतीय सौर ऊर्जा निगम)**, **IREDA**, **IRCTC** और **RailTel** जैसी रणनीतिक मिनीरत्न कंपनियों को वित्तीय प्रदर्शन व पूंजीगत विस्तार के आधार पर नवरत्न CPSEs के रूप में क्रमोन्नत किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में किसी केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (CPSE) को 'महारत्न' का दर्जा प्रदान करने हेतु निर्धारित पात्रता मानदंडों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संबंधित कंपनी को पहले से 'नवरत्न' का दर्जा प्राप्त होना अनिवार्य है।
2. कंपनी का विगत लगातार 3 वर्षों का औसत वार्षिक शुद्ध लाभ (कर पश्चात) ₹2,500 करोड़ से अधिक होना चाहिए।
3. विगत 3 वर्षों के दौरान कंपनी का औसत वार्षिक कारोबार (Turnover) ₹25,000 करोड़ से अधिक होना आवश्यक है।
4. महारत्न कंपनियों के निदेशक मंडल को किसी एकल परियोजना में सरकारी पूर्व-अनुमोदन के बिना अधिकतम ₹5,000 करोड़ तक निवेश करने की वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: महारत्न का दर्जा केवल उन्हीं CPSEs को दिया जा सकता है जो पहले से नवरत्न दर्जा प्राप्त हों।
    - कथन 2 असत्य है: महारत्न हेतु पिछले 3 वर्षों का औसत वार्षिक शुद्ध लाभ (Net Profit after Tax) **₹5,000 करोड़ से अधिक** होना चाहिए, ₹2,500 करोड़ नहीं।
    - कथन 3 सत्य है: कंपनी का 3 वर्षों का औसत वार्षिक टर्नओवर ₹25,000 करोड़ तथा औसत वार्षिक नेटवर्थ ₹15,000 करोड़ से अधिक होना अनिवार्य है।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 4 सत्य है: महारत्न कंपनियाँ अपनी नेटवर्थ के 15% या ₹5,000 करोड़ (जो भी कम हो) तक का निवेश बिना केंद्र सरकार की मंजूरी के स्वयं कर सकती हैं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (सार्वजनिक उपक्रम / संकल्पना)	**सूची-II (संबद्ध तथ्य / वित्तीय अधिकार)**
a. महारत्न दर्जा व्यवस्था की शुरुआत	1. 1997 (मूलतः 9 उपक्रम)
b. नवरत्न दर्जा व्यवस्था का शुभारंभ	2. ₹1,000 करोड़ तक स्वायत्त निवेश सीमा
c. नवरत्न कंपनियों की एकल परियोजना वित्तीय शक्ति	3. वर्ष 2009–2010
d. भारत की 14वीं महारत्न कंपनी	4. हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **महारत्न दर्जा व्यवस्था:** केंद्र सरकार द्वारा दिसंबर 2009 में अधिसूचित तथा मई 2010 से लागू की गई।
  - **नवरत्न दर्जा व्यवस्था:** वर्ष 1997 में सार्वजनिक क्षेत्र की शीर्ष कंपनियों को अधिक परिचालन स्वतंत्रता देने हेतु प्रारंभ हुई।
  - **नवरत्न कंपनियों की निवेश सीमा:** नवरत्न CPSEs किसी एक परियोजना पर अधिकतम ₹1,000 करोड़ या अपनी नेटवर्थ का 15% तक निवेश करने हेतु अधिकृत हैं।
  - **14वीं महारत्न कंपनी:** रक्षा विनिर्माण कंपनी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) को देश की 14वीं महारत्न कंपनी के रूप में क्रमोन्नत किया गया।

टॉपिक - 5: बुनियादी ढांचा और भारतमाला परियोजना (Infrastructure & Bharatmala Pariyojana)

आर्थिक विकास में अवसंरचना (Infrastructure) एक **उत्प्रेरक (Catalyst)** की भूमिका निभाती है। यह उत्पादन लागत को कम करने, लॉजिस्टिक्स दक्षता बढ़ाने और क्षेत्रीय असमानता को पाटने का प्राथमिक साधन है। भारत सरकार ने बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण हेतु राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP), पीएम गतिशक्ति और भारतमाला जैसी वृहद परियोजनाओं को क्रियान्वित किया है।

©IASHINDIMEDIUM

1. भारतमाला परियोजना: पृष्ठभूमि एवं उद्देश्य

- **शुभारंभ एवं नोडल एजेंसी:** भारतमाला परियोजना का औपचारिक अनुमोदन **अक्टूबर 2017** में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (CCEA) द्वारा किया गया। इसका क्रियान्वयन सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) के अधीन **भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)**, राष्ट्रीय राजमार्ग और अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (NHIDCL) तथा राज्य लोक निर्माण विभागों (PWDs) द्वारा किया जा रहा है।
- **उद्देश्य:** माल ढुलाई एवं यात्री आवागमन की दक्षता को अनुकूलतम बनाना, महत्वपूर्ण गलियारों में बाधाओं (Choke Points) को समाप्त करना तथा लॉजिस्टिक्स लागत को GDP के लगभग 14% से घटाकर वैश्विक मानकों (लगभग 8-9%) के अनुरूप लाना।
- **दृष्टिकोण में बदलाव:** इसने पुराने 'सड़क-दर-सड़क' (Road-to-Road) मॉडल के स्थान पर **'गलियारा-आधारित दृष्टिकोण' (Corridor-based approach)** को अपनाया।

2. भारतमाला परियोजना चरण-I के 6 प्रमुख घटक

चरण-I के अंतर्गत कुल **34,800 किमी** राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण/उन्नयन का लक्ष्य निर्धारित किया गया, जिसके 6 प्रमुख घटक हैं:

1. **आर्थिक गलियारे (Economic Corridors):** 9,000 किमी (देश के 44 प्रमुख आर्थिक केंद्रों को जोड़ना)।
2. **इंटर-कॉरिडोर एवं फीडर मार्ग (Inter-corridor & Feeder Routes):** 6,000 किमी।
3. **राष्ट्रीय गलियारा दक्षता संवर्धन (National Corridor Efficiency Improvement):** 5,000 किमी (गोल्डन क्वाड्रिलेटरल और उत्तर-दक्षिण/पूर्व-पश्चिम गलियारों की लेन-संख्या बढ़ाना व बाईपास निर्माण)।
4. **सीमा एवं अंतरराष्ट्रीय संपर्क सड़कें (Border & International Connectivity Roads):** 2,000 किमी (सीमावर्ती सुरक्षा एवं पड़ोसी देशों से व्यापार संवर्धन)।
5. **तटीय एवं बंदरगाह संपर्क सड़कें (Coastal & Port Connectivity Roads):** 2,000 किमी (सागरमाला परियोजना के साथ समेकन)।
6. **एक्सप्रेसवे (Expressways / Green-field Corridors):** 800 किमी (दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे आदि)।

- *अवशिष्ट NHDP कार्य:* 10,000 किमी के अधूरे कार्यों का समेकन।

3. मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क (MMLP)

भारतमाला के तहत लॉजिस्टिक्स दक्षता बढ़ाने हेतु देश भर में 35 **मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क (MMLPs)** को पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) मॉडल (DBFOT) पर विकसित किया जा रहा है, जो रेल, सड़क और अंतर्देशीय जलमार्गों को निर्बाध रूप से जोड़ते हैं।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान से पूर्ण एकीकरण:** भारतमाला चरण-I के लगभग 85% से अधिक खंडों के पूर्ण होने के साथ ही शेष सभी ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे और बाईपास परियोजनाओं को पीएम गतिशक्ति पोर्टल के स्थानिक नियोजन (Spatial Planning) से जोड़ा गया, जिससे भूमि अधिग्रहण और अंतर-मंत्रालयी स्वीकृतियों में लगने वाला समय 70% तक कम हुआ।
- **उत्तर प्रदेश में एक्सप्रेसवे और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क:** उत्तर प्रदेश में भारतमाला परियोजना और राज्य सरकार के एक्सप्रेसवे नेटवर्क (गंगा एक्सप्रेसवे, बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे, पूर्वांचल एक्सप्रेसवे) के इंटर-लिंकिंग नोड्स का विस्तार किया गया। साथ ही, दादरी

में मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्ट एवं लॉजिस्टिक्स हब (MMTH/MMLH) के पश्चिमी डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC) के साथ एकीकरण से राज्य के औद्योगिक उत्पादन के तटीय बंदरगाहों तक संचलन समय में भारी गिरावट दर्ज की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारतमाला परियोजना (Bharatmala Pariyojana) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस परियोजना का औपचारिक अनुमोदन अक्टूबर 2017 में किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य देश में माल ढुलाई और यात्री परिवहन की लॉजिस्टिक्स दक्षता को बढ़ाना है।
2. भारतमाला परियोजना चरण-I के अंतर्गत कुल 34,800 किलोमीटर लंबे राष्ट्रीय राजमार्गों और गलियारों के विकास का लक्ष्य रखा गया था।
3. इस परियोजना के प्रमुख घटकों में आर्थिक गलियारे, तटीय व बंदरगाह संपर्क सड़कें, तथा सीमा एवं अंतरराष्ट्रीय संपर्क सड़कें सम्मिलित हैं।
4. इस परियोजना का मुख्य क्रियान्वयन केवल रेल मंत्रालय के अधीन समर्पित माल ढुलाई गलियारा निगम (DFCCIL) द्वारा किया जा रहा है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: भारतमाला परियोजना को अक्टूबर 2017 में CCEA द्वारा अनुमोदित किया गया था। चरण-I के तहत 34,800 किमी के राजमार्गों का विकास प्रस्तावित था, जिसमें आर्थिक गलियारे (9,000 किमी), इंटर-कॉरिडोर/फीडर मार्ग (6,000 किमी), राष्ट्रीय गलियारा दक्षता संवर्धन (5,000 किमी), सीमा व अंतरराष्ट्रीय संपर्क (2,000 किमी), तटीय व बंदरगाह संपर्क (2,000 किमी) तथा एक्सप्रेसवे शामिल हैं।
    - कथन 4 असत्य है: भारतमाला परियोजना सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) की योजना है, जिसका क्रियान्वयन मुख्य रूप से **भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)**, NHIDCL और राज्य PWDs द्वारा किया जा रहा है, न कि रेल मंत्रालय के DFCCIL द्वारा।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (अवसंरचनात्मक परियोजना / योजना)	**सूची-II (संबद्ध उद्देश्य / प्राथमिक क्षेत्र)**
a. भारतमाला परियोजना	1. बंदरगाहों का आधुनिकीकरण एवं तटीय नौवहन विकास

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (अवसंरचनात्मक परियोजना / योजना)	सूची-II (संबद्ध उद्देश्य / प्राथमिक क्षेत्र)
b. सागरमाला परियोजना	2. 16 मंत्रालयों के बुनियादी ढांचा समन्वय हेतु एकीकृत डिजिटल मंच
c. पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान	3. देश भर में राजमार्गों और आर्थिक गलियारों का नेटवर्क
d. मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क (MMLP)	4. विभिन्न परिवहन साधनों के समन्वय से माल ढुलाई लागत कम करना

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **भारतमाला परियोजना:** राजमार्गों, आर्थिक गलियारों, फीडर मार्गों और एक्सप्रेसवे के विकास पर केंद्रित प्रमुख सड़क अवसंरचना कार्यक्रम।
    - **सागरमाला परियोजना:** पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय की पहल, जिसका उद्देश्य बंदरगाह-आधारित विकास (Port-led development) और तटीय शिपिंग को बढ़ावा देना है।
    - **पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान:** अक्टूबर 2021 में शुरू किया गया डिजिटल प्लेटफॉर्म, जो 16 मंत्रालयों की परियोजनाओं के समन्वित नियोजन और क्रियान्वयन को सुनिश्चित करता है।
    - **मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क (MMLP):** सड़क, रेल और जलमार्ग को जोड़कर माल के भंडारण, पैकेजिंग और निर्बाध अंतरण की आधुनिक सुविधा देकर लॉजिस्टिक्स लागत घटाने का केंद्र।

©IASHINDIMEDIUM

वित्तीय प्रणाली एवं बैंकिंग

टॉपिक - 1: भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की संरचना और कार्य

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) देश का केंद्रीय बैंक एवं मौद्रिक प्राधिकरण है। इसकी स्थापना **हिल्टन-यंग आयोग (Royal Commission on Indian Currency and Finance, 1926)** की संस्तुति पर **भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934** के तहत **1 अप्रैल 1935** को ₹5 करोड़ की अधिकृत अंशपूंजी (निजी शेयरधारकों) के साथ हुई थी। इसका मुख्यालय 1937 में कोलकाता से स्थायी रूप से **मुंबई** स्थानांतरित किया गया। **1 जनवरी 1949** को सार्वजनिक स्वामित्व में अंतरण अधिनियम, 1948 के तहत RBI का **राष्ट्रीयकरण** हुआ।

1. संगठनात्मक एवं प्रबंधकीय संरचना

RBI का समग्र प्रबंधन **केंद्रीय निदेशक मंडल (Central Board of Directors)** द्वारा संचालित होता है, जिसमें अधिकतम **21 सदस्य** होते हैं (कार्यकाल: 4 वर्ष):

1. **सरकारी/पूर्णकालिक निदेशक (अधिकतम 5):** 1 गवर्नर तथा अधिकतम 4 उप-गवर्नर।
2. **गैर-सरकारी/नामित निदेशक (16):**
    - भारत सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों (अर्थशास्त्र, उद्योग आदि) से नामित **10 निदेशक**।
    - वित्त मंत्रालय से नामित **2 सरकारी अधिकारी** (आमतौर पर आर्थिक मामलों के सचिव और वित्तीय सेवा सचिव)।
    - चार स्थानीय बोर्डों (मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, नई दिल्ली) से **4 निदेशक** (प्रत्येक से एक)।

2. भारतीय रिज़र्व बैंक के प्रमुख कार्य

- **मौद्रिक नीति का संचालन (Monetary Authority):** मूल्य स्थिरता बनाए रखते हुए संवृद्धि को सहारा देना। RBI अधिनियम, 1934 की धारा 45ZB के तहत **6-सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (MPC)** गठित है, जिसका पदेन अध्यक्ष गवर्नर होता है। यह उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित मुद्रास्फीति को 4% $(\pm 2\%)$ के दायरे में रखने हेतु नीतिगत दरें तय करती है।
- **मुद्रा जारीकर्ता (Issuer of Banknotes):**

©IASHINDIMEDIUM

- RBI अधिनियम की धारा 22 के तहत ₹2 से लेकर ₹10,000 तक के बैंक नोट जारी करने का एकाधिकार। *(नोट: ₹1 का नोट और सभी सिक्के वित्त मंत्रालय द्वारा जारी किए जाते हैं, जिन पर वित्त सचिव के हस्ताक्षर होते हैं, किंतु इनका परिचालन RBI करता है)*।
- **न्यूनतम आरक्षित प्रणाली (Minimum Reserve System - 1956 से प्रभावी):** नोट निर्गमन के बदले कम से कम **₹200 करोड़** की परिसंपत्ति आरक्षित रखनी होती है, जिसमें न्यूनतम **₹115 करोड़ का स्वर्ण** तथा शेष ₹85 करोड़ की विदेशी प्रतिभूतियाँ शामिल हैं।

- **सरकार का बैंकर एवं ऋण प्रबंधक:** केंद्र व राज्य सरकारों के चालू खाते संचालित करना, प्रतिभूतियों का निर्गमन तथा अल्पकालिक तरलता अंतर पाटने हेतु **अर्थोपाय अग्रिम (Ways and Means Advances - WMA)** प्रदान करना (सामान्यतः 90 दिनों के लिए)।
- **बैंकों का बैंक एवं अंतिम ऋणदाता (Lender of Last Resort):** सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के खाते रखना, नकद आरक्षित अनुपात (CRR) संचित करना तथा वित्तीय संकट के समय तरलता समायोजन सुविधा (LAF) व सीमांत स्थायी सुविधा (MSF) के माध्यम से आपात ऋण देना।
- **विदेशी मुद्रा भंडार का संरक्षक (Custodian of Forex):** विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999 (FEMA) के तहत विदेशी मुद्रा भंडार (विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां, स्वर्ण, SDR और IMF में RTP) का प्रबंधन एवं विनिमय दर में स्थिरता बनाए रखना।
- **वित्तीय प्रणाली का नियामक एवं पर्यवेक्षक:** बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 (Banking Regulation Act) के तहत बैंकों और NBFCs को लाइसेंस जारी करना, विलय, शाखा विस्तार तथा परिसंपत्ति गुणवत्ता का नियमन।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **ई-रुपया (Central Bank Digital Currency - CBDC) का ऑफलाइन एवं प्रोग्रामेबल विस्तार:** RBI ने खुदरा डिजिटल मुद्रा (Digital Rupee - Wholesale & Retail) के दायरे का विस्तार करते हुए दूरदराज के इंटरनेट-रहित क्षेत्रों के लिए 'ऑफलाइन कार्यक्षमता' तथा कृषि/शिक्षा सब्सिडी के लक्षित संवितरण हेतु 'प्रोग्रामेबल टोकन' प्रणाली का पूर्ण संचालन किया।
- **तरलता गलियारा एवं स्थायी जमा सुविधा (SDF):** मौद्रिक नीति संचालन में RBI ने चलनिधि समायोजन सुविधा (LAF Corridor) के तहत संपार्श्विक-मुक्त (बिना सरकारी प्रतिभूतियों के) अतिरिक्त तरलता को सोखने के लिए **स्टैंडिंग डिपॉजिट फैसिलिटी (SDF)** को फर्श दर (Floor) तथा **सीमांत स्थायी सुविधा (MSF)** को शीर्ष दर (Ceiling) के रूप में सक्रियता से प्रबंधित रखा।
- **प्रोजेक्ट नेक्सस (Project Nexus) से एकीकरण:** सीमा-पार खुदरा भुगतानों को तीव्र और सस्ता बनाने हेतु RBI ने भारत के UPI को दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों (ASEAN) के त्वरित भुगतान तंत्रों से जोड़ने के बहुपक्षीय अंतरराष्ट्रीय समझौते को अंतिम रूप दिया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की संरचना और नोट निर्गमन प्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. RBI की स्थापना हिल्टन-यंग आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1 अप्रैल 1935 को की गई थी तथा इसका राष्ट्रीयकरण 1 जनवरी 1949 को हुआ।
2. ₹1 का नोट और सभी सिक्के RBI द्वारा मुद्रित किए जाते हैं तथा इन पर RBI गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

3. नोट निर्गमन हेतु RBI वर्ष 1956 से 'न्यूनतम आरक्षित प्रणाली' (Minimum Reserve System) का अनुसरण करता है, जिसमें कम से कम ₹115 करोड़ मूल्य का स्वर्ण रखना अनिवार्य है।

4. RBI के केंद्रीय निदेशक मंडल (Central Board) में गवर्नर के अतिरिक्त अधिकतम चार उप-गवर्नर हो सकते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: RBI की स्थापना हिल्टन यंग आयोग (1926) की रिपोर्ट पर 1 अप्रैल 1935 को हुई और 1 जनवरी 1949 को इसका राष्ट्रीयकरण किया गया।
    - कथन 2 असत्य है: ₹1 का नोट और सिक्के भारत सरकार के **वित्त मंत्रालय** द्वारा जारी किए जाते हैं, और ₹1 के नोट पर **वित्त सचिव** के हस्ताक्षर होते हैं (RBI गवर्नर के नहीं)। ₹2 और उससे ऊपर के नोटों पर RBI गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं।
    - कथन 3 सत्य है: वर्ष 1956 में लागू न्यूनतम आरक्षित प्रणाली के तहत RBI को कुल ₹200 करोड़ की परिसंपत्ति रखनी होती है, जिसमें कम से कम ₹115 करोड़ का सोना और ₹85 करोड़ की विदेशी प्रतिभूतियाँ शामिल हैं।
    - कथन 4 सत्य है: RBI अधिनियम के अनुसार केंद्रीय बोर्ड में एक गवर्नर और अधिकतम 4 उप-गवर्नर (पूर्णकालिक सरकारी निदेशक) होते हैं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (RBI के कार्य / उपकरण)	**सूची-II (संबद्ध अधिनियम / वैधानिक प्रावधान)**
a. बैंकों को लाइसेंस देना एवं विनियमन	1. विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA), 1999
b. मौद्रिक नीति समिति (MPC) का गठन	2. भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 22
c. बैंक नोट जारी करने का एकाधिकार	3. RBI अधिनियम, 1934 की धारा 45ZB
d. विदेशी मुद्रा भंडार का प्रबंधन	4. बैंकिंग विनियमन अधिनियम (Banking Regulation Act), 1949

कूट:

(A) a-4, b-3, c-2, d-1

©IASHINDIMEDIUM

(B) a-4, b-2, c-3, d-1

(C) a-2, b-3, c-4, d-1

(D) a-1, b-4, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-4, b-3, c-2, d-1

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **बैंकों का नियमन व लाइसेंसिंग:** बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 के तहत संचालित होता है।
    - **मौद्रिक नीति समिति (MPC):** वित्त अधिनियम 2016 द्वारा RBI अधिनियम 1934 में धारा 45ZB जोड़कर गठित की गई।
    - **नोट जारी करने का एकाधिकार:** RBI अधिनियम, 1934 की धारा 22 केंद्रीय बैंक को नोट निर्गमन का अनन्य विधिक अधिकार देती है।
    - **विदेशी मुद्रा प्रबंधन:** FEMA, 1999 के प्रावधानों के अंतर्गत देश के विदेशी मुद्रा भंडार का नियमन और विनिमय दर प्रबंधन RBI द्वारा किया जाता है।

टॉपिक - 2: मौद्रिक नीति के उपकरण (Monetary Policy Instruments: Repo, CRR, SLR आदि)

मौद्रिक नीति भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा मुद्रा आपूर्ति, ऋण की उपलब्धता तथा ब्याज दरों के नियमन हेतु संचालित की जाती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य आर्थिक विकास को गति देते हुए **मूल्य स्थिरता (Price Stability)** बनाए रखना है। RBI अधिनियम, 1934 की धारा 45ZB के तहत गठित 6-सदस्यीय **मौद्रिक नीति समिति (MPC)** नीतिगत दरों का निर्धारण करती है।

मौद्रिक नीति के उपकरणों को मुख्यतः दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है: **मात्रात्मक (सामान्य)** तथा **गुणात्मक (चयनात्मक)**।

1. मात्रात्मक उपकरण (Quantitative Instruments)

ये उपकरण संपूर्ण अर्थव्यवस्था में साख (Credit) की कुल मात्रा तथा तरलता को प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित करते हैं:

- **चलनिधि समायोजन सुविधा (LAF - Liquidity Adjustment Facility):**
    - **रेपो दर (Repo Rate - Repurchase Option):** वह अल्पकालिक ब्याज दर जिस पर वाणिज्यिक बैंक सरकारी प्रतिभूतियों को गिरवी रखकर RBI से नकदी उधार लेते हैं। रेपो दर में वृद्धि से अर्थव्यवस्था में ऋण महंगा होता है और मुद्रा आपूर्ति घटती है (मुद्रास्फीति नियंत्रण)।
    - **स्थायी जमा सुविधा (SDF - Standing Deposit Facility):** अप्रैल 2022 में शुरू की गई वह दर जिस पर बैंक बिना किसी संपार्श्विक (Collateral/सरकारी प्रतिभूति) के अपनी अधिशेष नकदी RBI के पास जमा कर सकते हैं। यह LAF कॉरिडोर की निचली सीमा (Floor) है।
    - **रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate):** वह दर जिस पर RBI बैंकों से अधिशेष तरलता अवशोषित करता है (वर्तमान में यह निष्क्रिय/फिक्स्ड 3.35% पर बनी हुई है, वास्तविक तरलता अवशोषण SDF से होता है)।

©IASHINDIMEDIUM

- **सीमांत स्थायी सुविधा (MSF - Marginal Standing Facility):** 2011 में शुरू; इसके तहत अनुसूचित बैंक अपनी आपातकालीन/रातों-रात (Overnight) तरलता आवश्यकता हेतु अपनी SLR प्रतिभूतियों को गिरवी रखकर निर्धारित सीमा तक ऋण ले सकते हैं। यह LAF कॉरिडोर की ऊपरी सीमा (Ceiling) है।

- **आरक्षित अनुपात (Reserve Ratios):**
  - **नकद आरक्षित अनुपात (CRR - Cash Reserve Ratio):** RBI अधिनियम, 1934 की धारा 42(1) के तहत बैंकों को अपनी कुल जमा (NDTL - Net Demand and Time Liabilities) का एक निश्चित प्रतिशत **केवल नकद रूप में RBI के पास** अनिवार्य रूप से रखना होता है। इस पर RBI बैंकों को **कोई ब्याज नहीं देता**।
  - **वैधानिक तरलता अनुपात (SLR - Statutory Liquidity Ratio):** बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के तहत बैंकों को अपनी NDTL का एक निश्चित अनुपात **स्वयं अपने पास** तरल परिसंपत्तियों—**नकद, स्वर्ण (Gold), अथवा अनुमोदित सरकारी प्रतिभूतियों (G-Secs)**—के रूप में सुरक्षित रखना अनिवार्य है।

- **बैंक दर (Bank Rate):** धारा 49 के तहत वह दीर्घकालिक दर जिस पर RBI बिना किसी संपार्श्विक के प्रथम श्रेणी के वाणिज्यिक पत्रों की पुनर्कटौती (Rediscounting) या बैंकों को पुनर्वित्त प्रदान करता है। इसे 'दंडात्मक दर' (Penal Rate) भी कहते हैं।

- **खुले बाजार की कार्रवाइयाँ (OMO - Open Market Operations):** दीर्घकालिक तरलता समायोजन हेतु RBI द्वारा खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय। प्रतिभूतियां बेचने पर तरलता घटती है, खरीदने पर तरलता बढ़ती है।

2. गुणात्मक/चयनात्मक उपकरण (Qualitative Instruments)

ये अर्थव्यवस्था के विशिष्ट क्षेत्रों में ऋण प्रवाह की दिशा को नियंत्रित करते हैं:

1. **सीमांत आवश्यकता निर्धारण (Margin Requirements):** दिए जाने वाले ऋण और गिरवी रखी जाने वाली संपत्ति के मूल्य के बीच का अंतर।
2. **साख की राशनिंग (Rationing of Credit):** विभिन्न क्षेत्रों के लिए अधिकतम ऋण सीमा तय करना।
3. **नैतिक दबाव (Moral Suasion):** RBI द्वारा बैंकों को अनौपचारिक परामर्श या निर्देश।
4. **प्रत्यक्ष कार्रवाई (Direct Action):** दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करने वाले बैंकों पर दंडात्मक कार्रवाई।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **LAF कॉरिडोर का सक्रिय प्रबंधन एवं तरलता संतुलन:** RBI की मौद्रिक नीति समिति ने वित्तीय वर्ष के दौरान खाद्य एवं आपूर्ति-जनित झटकों के बीच मुद्रास्फीति को 4% के लक्ष्य की ओर स्थिर रखने हेतु तटस्थ/लचीला रुख अपनाते हुए रेपो दर, SDF (रेपो से 25 bps नीचे) तथा MSF (रेपो से 25 bps ऊपर) के सममित 50 आधार अंक के कॉरिडोर का सक्रिय संचालन किया।

- **इंक्रीमेंटल CRR (I-CRR) की समीक्षा और तरलता प्रबंधन:** उच्च सरकारी व्यय तथा बैंकिंग तंत्र में विदेशी पूंजी प्रवाह के कारण उत्पन्न अस्थायी अधिशेष नकदी को तटस्थ करने हेतु RBI ने फाइन-ट्यूनिंग रिवर्स रेपो और परिवर्तनीय दर रेपो/रिवर्स रेपो (VRR/VRRR) नीलामी तंत्र का निरंतर उपयोग किया, जिससे अंतर-बैंक कॉल मनी दरें पॉलिसी रेपो दर के निकट सरेखित रहीं।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा संचालित मौद्रिक नीति के उपकरणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नकद आरक्षित अनुपात (CRR) के तहत वाणिज्यिक बैंकों द्वारा RBI के पास नकद रूप में रखी गई जमा राशि पर RBI द्वारा कोई ब्याज देय नहीं होता है।
2. वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) को बैंकों द्वारा केवल और केवल RBI के पास सरकारी प्रतिभूतियों के रूप में जमा रखना अनिवार्य होता है।
3. स्थायी जमा सुविधा (SDF) के अंतर्गत RBI बिना किसी सरकारी प्रतिभूति को संपार्श्विक (Collateral) के रूप में दिए बैंकों से तरलता अवशोषित कर सकता है।
4. जब RBI अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति (तरलता) को बढ़ाना चाहता है, तो वह खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों की बिक्री करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: RBI अधिनियम, 1934 के अनुसार CRR के अंतर्गत रखी गई नकदी पर बैंकों को कोई ब्याज नहीं मिलता।
    - कथन 2 असत्य है: SLR की राशि बैंक RBI के पास जमा नहीं करते, बल्कि **स्वयं अपने पास** रखते हैं। इसके अलावा, SLR केवल प्रतिभूतियों में नहीं, बल्कि नकद, स्वर्ण (Gold) और अनुमोदित सरकारी प्रतिभूतियों—तीनों रूपों में रखा जा सकता है।
    - कथन 3 सत्य है: अप्रैल 2022 में शुरू की गई स्थायी जमा सुविधा (SDF) की मुख्य विशेषता ही यह है कि इसमें RBI को तरलता सोखने के बदले बैंकों को कोई सरकारी प्रतिभूति गिरवी नहीं रखनी पड़ती (Collateral-free liquidity absorption)।
    - कथन 4 असत्य है: जब RBI प्रतिभूतियां **बेचता** है, तो बाजार से नकदी खींच लेता है जिससे तरलता घटती है। तरलता बढ़ाने के लिए RBI को खुले बाजार से प्रतिभूतियाँ **खरीदनी** पड़ती हैं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (मौद्रिक उपकरण / संकल्पना)	**सूची-II (संबद्ध वैधानिक प्रावधान / परिचालन स्वरूप)**
a. नकद आरक्षित अनुपात (CRR)	1. बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24
b. वैधानिक तरलता अनुपात (SLR)	2. RBI अधिनियम, 1934 की धारा 42(1)

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (मौद्रिक उपकरण / संकल्पना)	सूची-II (संबद्ध वैधानिक प्रावधान / परिचालन स्वरूप)
c. सीमांत स्थायी सुविधा (MSF)	3. बिना किसी संपार्श्विक के तरलता अवशोषण (LAF की निचली सीमा)
d. स्थायी जमा सुविधा (SDF)	4. आपातकालीन रातों-रात उधार (LAF की ऊपरी सीमा)

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-3, c-4, d-1

(C) a-1, b-2, c-4, d-3

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **CRR:** भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 42(1) के तहत विनियमित होता है।
    - **SLR:** बैंकिंग विनियमन अधिनियम (Banking Regulation Act), 1949 की धारा 24 के अंतर्गत अनिवार्य किया गया है।
    - **MSF:** 2011 में शुरू किया गया तंत्र, जो अनुसूचित बैंकों को आपातकालीन रातों-रात तरलता प्रदान करता है तथा LAF कॉरिडोर की सीलिंग (ऊपरी सीमा) बनाता है।
    - **SDF:** 2022 में प्रभावी साधन, जिसके तहत बिना सरकारी बॉन्ड गिरवी रखे अतिरिक्त तरलता अवशोषित की जाती है और यह LAF कॉरिडोर का फ्लोर (फर्श) निर्धारित करता है।

टॉपिक - 3: साख नियंत्रण के उपाय (Credit Control Measures)

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति, आर्थिक मंदी तथा वित्तीय स्थिरता को संतुलित रखने के उद्देश्य से साख (ऋण) की मात्रा और दिशा का नियमन किया जाता है। साख नियंत्रण के इन उपायों को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जाता है: **मात्रात्मक (सामान्य) उपाय** तथा **गुणात्मक (चयनात्मक) उपाय**।

1. मात्रात्मक या सामान्य साख नियंत्रण उपाय (Quantitative / General Measures)

ये उपाय संपूर्ण अर्थव्यवस्था में साख की **कुल मात्रा और लागत (ब्याज दर)** को प्रभावित करते हैं, बिना यह देखे कि ऋण किस विशिष्ट क्षेत्र में जा रहा है:

- **बैंक दर (Bank Rate):** RBI अधिनियम, 1934 की धारा 49 के तहत वह मानक दर जिस पर केंद्रीय बैंक प्रथम श्रेणी के वाणिज्यिक बिलों की पुनर्कटौती (Rediscounting) करता है या बैंकों को दीर्घकालिक ऋण प्रदान करता है। मुद्रास्फीति नियंत्रण हेतु बैंक दर बढ़ाई जाती है।

- **खुले बाजार की कार्रवाइयाँ (Open Market Operations - OMO):** RBI द्वारा खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों (G-Secs) का क्रय-विक्रय।
    - *साख संकुचन (Contraction):* प्रतिभूतियों की **बिक्री** (बाजार से नकदी सोखना)।
    - *साख विस्तार (Expansion):* प्रतिभूतियों की **खरीद** (बाजार में नकदी डालना)।
- **आरक्षित निधि अनुपातों में परिवर्तन:**
    - **नकद आरक्षित अनुपात (CRR):** बैंकों की कुल शुद्ध मांग एवं सावधि देयताओं (NDTL) का वह हिस्सा जो उन्हें अनिवार्य रूप से RBI के पास नकद रखना पड़ता है। CRR बढ़ाने से बैंकों की ऋण देने की क्षमता घटती है।
    - **वैधानिक तरलता अनुपात (SLR):** NDTL का वह भाग जिसे बैंकों को स्वयं अपने पास नकद, स्वर्ण या सरकारी प्रतिभूतियों के रूप में तरल रखना होता है।
- **चलनिधि समायोजन सुविधा (LAF):** दैनिक तरलता प्रबंधन हेतु **रेपो दर** (ऋण देने की दर), **रिवर्स रेपो दर** तथा **स्थायी जमा सुविधा (SDF)** का उपयोग।

2. गुणात्मक या चयनात्मक साख नियंत्रण उपाय (Qualitative / Selective Measures)

ये उपाय साख के **उपयोग के उद्देश्य और दिशा** को नियंत्रित करते हैं, ताकि अनुत्पादक या सट्टेबाजी गतिविधियों में ऋण प्रवाह को रोककर प्राथमिक व उत्पादक क्षेत्रों में बढ़ाया जा सके (बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 21 व 35A):

- **सीमांत आवश्यकता निर्धारण (Margin Requirements):** गिरवी रखी जाने वाली संपार्श्विक प्रतिभूति (Collateral) के बाजार मूल्य और बैंक द्वारा स्वीकृत ऋण राशि के बीच का अंतर। सीमांत आवश्यकता बढ़ाने से उस विशिष्ट मद पर मिलने वाला ऋण घट जाता है।
- **साख की राशनिंग (Rationing of Credit):** विभिन्न क्षेत्रों, उद्योगों या वाणिज्यिक कार्यों हेतु अधिकतम ऋण सीमा (Credit Quota) या छत निर्धारित करना।
- **उपभोक्ता साख का नियमन (Regulation of Consumer Credit):** टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं (कार, इलेक्ट्रॉनिक्स) की खरीद हेतु न्यूनतम डाउन-पेमेंट तथा किस्तों (EMIs) की अधिकतम संख्या तय करना।
- **नैतिक दबाव (Moral Suasion):** RBI द्वारा समय-समय पर परिपत्रों, बैठकों एवं वार्ताओं के माध्यम से वाणिज्यिक बैंकों को अपनी ऋण नीतियों को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुकूल रखने हेतु राजी करना।
- **प्रत्यक्ष कार्रवाई (Direct Action):** दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करने वाले बैंकों पर जुर्माना लगाना, पुनर्वित्त सुविधाएं बंद करना या दंडात्मक ब्याज दर लगाना।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **असुरक्षित खुदरा ऋणों पर जोखिम भार (Risk Weights) का गतिशील नियमन:** RBI द्वारा असुरक्षित व्यक्तिगत ऋणों (Personal Loans) और क्रेडिट कार्ड देयों में अत्यधिक तीव्र वृद्धि को नियंत्रित करने हेतु लागू किए गए 25 आधार अंक के अतिरिक्त 'जोखिम भार' (Risk Weight) की निरंतर समीक्षा की गई। इसके प्रभाव से असुरक्षित उपभोक्ता साख की अत्यधिक वृद्धि दर नियंत्रित हुई और बैंकों का पूँजी पर्याप्तता अनुपात (CRAR) सुरक्षित बना रहा।
- **परिवर्तनीय दर रेपो/रिवर्स रेपो (VRR/VRRR) द्वारा सूक्ष्म साख संतुलन:** वित्तीय तंत्र में अल्पकालिक तरलता के उतार-चढ़ाव को स्थिर रखने हेतु RBI ने मानक OMO नीलामियों के स्थान पर 7-दिवसीय व 14-दिवसीय VRR (तरलता डालना) और VRRR (अधिशेष सोखना) नीलामियों को प्राथमिक अल्पकालिक साख नियंत्रण तंत्र के रूप में प्रभावी रखा।

©IASHINDIMEDIUM

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा प्रयुक्त साख नियंत्रण के उपायों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से 'गुणात्मक/चयनात्मक साख नियंत्रण' (Qualitative Credit Control) के अंतर्गत आते हैं?

1. खुले बाजार की कार्रवाइयाँ (Open Market Operations)
2. सीमांत आवश्यकता निर्धारण (Margin Requirements)
3. उपभोक्ता साख का नियमन (Regulation of Consumer Credit)
4. नकद आरक्षित अनुपात (Cash Reserve Ratio)
5. नैतिक दबाव (Moral Suasion)

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(A) केवल 1, 2 और 4

(B) केवल 2, 3 और 5

(C) केवल 1, 3 और 5

(D) 1, 2, 3, 4 और 5

उत्तर: (B) केवल 2, 3 और 5

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - साख नियंत्रण के उपाय दो प्रकार के होते हैं:
        - **मात्रात्मक उपाय:** बैंक दर, खुले बाजार की कार्रवाइयाँ (OMO), CRR, SLR, रेपो रेट आदि (ये साख की कुल मात्रा को नियंत्रित करते हैं; अतः 1 और 4 मात्रात्मक हैं)।
        - **गुणात्मक उपाय:** सीमांत आवश्यकता (Margin Requirements), उपभोक्ता साख का नियमन, साख की राशनिंग, नैतिक दबाव (Moral Suasion), तथा प्रत्यक्ष कार्रवाई (ये ऋण के प्रवाह की दिशा और विशिष्ट प्रयोजन को नियंत्रित करते हैं; अतः 2, 3 और 5 गुणात्मक हैं)।

प्रश्न 2. साख नियंत्रण के उपकरणों और अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभावों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जब केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में साख का संकुचन (मुद्रा आपूर्ति में कमी) करना चाहता है, तो वह खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों की खरीद करता है।
2. किसी विशिष्ट परिसंपत्ति पर सीमांत आवश्यकता (Margin Requirement) बढ़ाने से उस परिसंपत्ति के बदले मिलने वाले ऋण की राशि घट जाती है।
3. बैंक दर में वृद्धि होने से वाणिज्यिक बैंकों की उधार लागत बढ़ती है, जिसके परिणामस्वरूप बाजार में ब्याज दरें बढ़ जाती हैं।
4. चयनात्मक साख नियंत्रण का प्रयोग मुख्य रूप से सट्टेबाजी और अनुत्पादक गतिविधियों में जाने वाले ऋण को हतोत्साहित करने हेतु किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

©IASHINDIMEDIUM

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: साख संकुचन (मुद्रा घटाने) हेतु RBI प्रतिभूतियों की **बिक्री** करता है, जिससे बैंकों की नकदी RBI के पास चली जाती है। यदि RBI प्रतिभूतियाँ खरीदता है, तो बाजार में नकदी पहुँचती है जिससे साख का **विस्तार** होता है।
    - कथन 2 सत्य है: मार्जिन का अर्थ है बंधक परिसंपत्ति के मूल्य और स्वीकृत ऋण के बीच का अंतर। यदि मार्जिन 20% से बढ़ाकर 40% कर दिया जाए, तो ₹100 की संपत्ति पर ₹80 के स्थान पर केवल ₹60 का ऋण मिलेगा, जिससे ऋण राशि घटती है।
    - कथन 3 सत्य है: बैंक दर बढ़ने से बैंकों के लिए पुनर्वित्त महंगा होता है, जिससे वे अपनी ऋण दरें (लेंडिंग रेट) बढ़ा देते हैं।
    - कथन 4 सत्य है: गुणात्मक या चयनात्मक साख नियंत्रण का प्राथमिक उद्देश्य ही अर्थव्यवस्था के संवेदनशील या सट्टेबाजी वाले क्षेत्रों में ऋण के दुरुपयोग को रोकना है।

टॉपिक - 4: वाणिज्यिक बैंक और उनका ऐतिहासिक विलय (Commercial Banks and Mergers)

वाणिज्यिक बैंक (Commercial Banks) वे वित्तीय मध्यस्थ हैं जो जनता से जमा स्वीकार करते हैं और लाभ कमाने के उद्देश्य से ऋण प्रदान करते हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की **द्वितीय अनुसूची** में शामिल बैंकों को **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (Scheduled Commercial Banks)** कहा जाता है (पूंजी व आरक्षित कोष कम से कम ₹5 लाख तथा जमाकर्ताओं के हितों का संरक्षण)।

1. बैंकों का राष्ट्रीयकरण: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- **प्रथम चरण (19 जुलाई 1969):**
    - तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा बैंकिंग कंपनी (उपक्रमों का अर्जन और अंतरण) अध्यादेश के तहत **14 बड़े वाणिज्यिक बैंकों** का राष्ट्रीयकरण किया गया।
    - **मापदंड:** जिन बैंकों की कुल जमा देयताएं (Deposits) **₹50 करोड़ या उससे अधिक** थीं।
- **द्वितीय चरण (15 अप्रैल 1980):**
    - **6 अन्य वाणिज्यिक बैंकों** का राष्ट्रीयकरण किया गया।
    - **मापदंड:** जिनकी जमा देयताएं **₹200 करोड़ या उससे अधिक** थीं।
    - *नोट:* 1993 में न्यू बैंक ऑफ इंडिया का पंजाब नेशनल बैंक (PNB) में विलय होने से राष्ट्रीयकृत बैंकों की संख्या घटकर 19 रह गई थी।

©IASHINDIMEDIUM

2. स्टेट बैंक समूह का समेकन

- **इंपीरियल बैंक से SBI:** 1921 में तीन प्रेसीडेंसी बैंकों (बंगाल, बॉम्बे, मद्रास) को मिलाकर **इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया** बना था। **गोरवाला समिति (अखिल भारतीय ग्रामीण ऋण सर्वेक्षण समिति)** की सिफारिश पर **1 जुलाई 1955** को इसका राष्ट्रीयकरण कर **भारतीय स्टेट बैंक (SBI)** की स्थापना की गई।
- **एसोसिएट्स का विलय:**
    - 2008 में स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र तथा 2010 में स्टेट बैंक ऑफ इंदौर का SBI में विलय।
    - **1 अप्रैल 2017:** 5 शेष सहयोगी बैंकों (स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर, हैदराबाद, मैसूर, पटियाला, त्रावणकोर) और **भारतीय महिला बैंक (BMB)** का SBI में अंतिम विलय हुआ।

3. मेगा बैंक विलय (2019–2020) एवं वर्तमान परिदृश्य

वित्तीय प्रणाली की दक्षता बढ़ाने, गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPA) के बोझ को कम करने और वैश्विक आकार के प्रतिस्पर्धी बैंक बनाने हेतु **नरसिम्हम समिति (1991 एवं 1998)** तथा **पी. जे. नायक समिति (2014)** ने बड़े बैंकों के विलय की सिफारिश की थी।

- **देना बैंक व विजया बैंक का विलय (1 अप्रैल 2019): बैंक ऑफ बड़ौदा (BoB)** में विलय।
- **मेगा विलय (1 अप्रैल 2020 से प्रभावी - 10 बैंकों का 4 में विलय):**
    1. **पंजाब नेशनल बैंक (PNB):** ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स (OBC) + यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया।
    2. **केनरा बैंक:** सिंडिकेट बैंक।
    3. **यूनियन बैंक ऑफ इंडिया:** आंध्रा बैंक + कॉर्पोरेशन बैंक।
    4. **इंडियन बैंक:** इलाहाबाद बैंक (भारत का सबसे पुराना संयुक्त स्टॉक बैंक)।
- **वर्तमान स्थिति:** इन विलयों के पश्चात देश में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSBs) की कुल संख्या 27 से घटकर **12** रह गई है (SBI, PNB, BoB, केनरा बैंक, यूनियन बैंक, इंडियन बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन ओवरसीज बैंक, यूको बैंक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, पंजाब एंड सिंध बैंक)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का रिकॉर्ड लाभांश व लाभप्रदता:** विलय के संरचनात्मक लाभों, डिजिटलीकरण और परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार के चलते 12 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSBs) का संचयी शुद्ध लाभ ₹1.5 लाख करोड़ के पार पहुँचा तथा सकल NPA गिरकर दशक के न्यूनतम स्तर (3% से नीचे) पर आ गया।
- **आईडीबीआई बैंक (IDBI Bank) एवं चुनिंदा PSBs का विनिवेश रोडमैप:** केंद्र सरकार और LIC द्वारा IDBI बैंक में रणनीतिक हिस्सेदारी की बिक्री की नियामक प्रक्रिया के अग्रिम चरण में प्रवेश के साथ ही वित्तीय समावेशन को प्रभावित किए बिना बैंकिंग क्षेत्र में निजी पूंजी और कॉर्पोरेट प्रशासन सुधारों को गति दी गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में वाणिज्यिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण और विलय के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 19 जुलाई 1969 को उन 14 प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया था, जिनकी न्यूनतम जमा देयताएं ₹50 करोड़ या उससे अधिक थीं।

2. 15 अप्रैल 1980 को 6 अन्य बैंकों का राष्ट्रीयकरण ₹100 करोड़ की न्यूनतम जमा सीमा के आधार पर किया गया था।
3. अखिल भारतीय ग्रामीण ऋण सर्वेक्षण समिति (गोरवाला समिति) की सिफारिश पर 1955 में इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण कर भारतीय स्टेट बैंक (SBI) बनाया गया।
4. 1 अप्रैल 2020 को प्रभावी हुए मेगा बैंक विलय के पश्चात भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSBs) की कुल संख्या 12 रह गई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 सत्य है: 1969 में 14 बैंकों के राष्ट्रीयकरण हेतु पात्रता मानक ₹50 करोड़ या उससे अधिक की जमा राशि थी।
  - कथन 2 असत्य है: 1980 में दूसरे चरण के तहत 6 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया था, परंतु उसके लिए जमा सीमा ₹100 करोड़ नहीं बल्कि **₹200 करोड़ या उससे अधिक** रखी गई थी।
  - कथन 3 सत्य है: एडी गोरवाला समिति की अनुशंसा पर इंपीरियल बैंक का रूपांतरण कर 1 जुलाई 1955 को SBI एक्ट के तहत भारतीय स्टेट बैंक की स्थापना की गई थी।
  - कथन 4 सत्य है: 2017 में SBI एसोसिएट्स के विलय, 2019 में बैंक ऑफ बड़ौदा में देना-विजया बैंक के विलय तथा 2020 में 10 बैंकों के 4 बैंकों में समामेलन के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कुल संख्या 27 से घटकर ठीक 12 रह गई है।

प्रश्न 2. 1 अप्रैल 2020 को प्रभावी हुए मेगा बैंक विलय के अंतर्गत समामेलित बैंकों (Amalgamating Banks) को उनके एंकर बैंक (Anchor Bank) से सुमेलित कीजिए:

सूची-I (एंकर बैंक / प्रमुख बैंक)	**सूची-II (विलय होने वाले बैंक)**
a. पंजाब नेशनल बैंक	1. सिंडिकेट बैंक
b. केनरा बैंक	2. आंध्रा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक
c. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	3. इलाहाबाद बैंक
d. इंडियन बैंक	4. ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स और यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया

©IASHINDIMEDIUM

कूट:

(A) a-4, b-1, c-2, d-3

(B) a-4, b-2, c-1, d-3

(C) a-1, b-4, c-2, d-3

(D) a-3, b-1, c-2, d-4

उत्तर: (A) a-4, b-1, c-2, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **पंजाब नेशनल बैंक (PNB):** इसमें ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स (OBC) और यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया का विलय हुआ, जिससे यह देश का दूसरा सबसे बड़ा सार्वजनिक बैंक बना।
    - **केनरा बैंक:** इसमें सिंडिकेट बैंक का विलय किया गया।
    - **यूनियन बैंक ऑफ इंडिया:** इसमें आंध्रा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक का विलय हुआ।
    - **इंडियन बैंक:** इसमें ऐतिहासिक इलाहाबाद बैंक का विलय किया गया।

टॉपिक - 5: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs) की भूमिका एवं नियामक ढांचा

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (Non-Banking Financial Company - NBFC) वह वित्तीय संस्थान है जो कंपनी अधिनियम, 1956/2013 के तहत पंजीकृत होती है और जिसका मुख्य व्यवसाय उधार देना, ऋण/अग्रिम प्रदान करना, शेयरों/बॉन्डों का अधिग्रहण, पट्टा (Leasing), किराया-खरीद (Hire-purchase), एवं बीमा व्यवसाय करना है।

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) अधिनियम, 1934 के अध्याय III-B के तहत RBI इनका मुख्य विनियामक है। किसी कंपनी को NBFC के रूप में वर्गीकृत करने हेतु **'50-50 परीक्षण' (50-50 Test)** आवश्यक है: कंपनी की कुल वित्तीय परिसंपत्तियां कुल परिसंपत्तियों का 50% से अधिक हों तथा वित्तीय परिसंपत्तियों से प्राप्त आय कुल सकल आय का कम से कम 50% हो।

1. वाणिज्यिक बैंकों और NBFCs में मूलभूत अंतर

आधार	वाणिज्यिक बैंक	NBFC
पंजीकरण अधिनियम	बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949	कंपनी अधिनियम, 1956 / 2013
मांग जमा (Demand Deposits)	चालू व बचत खाते में मांग जमा स्वीकार करते हैं।	मांग जमा स्वीकार **नहीं** कर सकते (केवल पात्र NBFCs सीमित सावधि जमा/Time Deposits ले सकती हैं)।
भुगतान एवं निपटान प्रणाली	यह प्रणाली का अभिन्न अंग हैं; स्वयं के चेक जारी कर सकते हैं।	भुगतान एवं निपटान प्रणाली का हिस्सा नहीं हैं; स्वयं पर आहरित **चेक जारी नहीं कर सकते**।

आधार	वाणिज्यिक बैंक	NBFC
जमा बीमा सुरक्षा (DICGC)	प्रति जमाकर्ता ₹5 लाख तक का बीमा संरक्षण प्राप्त है।	जमाकर्ताओं को DICGC बीमा सुरक्षा **उपलब्ध नहीं** है।
CRR की अनिवार्यता	नकद आरक्षित अनुपात (CRR) बनाए रखना अनिवार्य है।	CRR बनाए रखना अनिवार्य **नहीं** है (किंतु जमा स्वीकारने वाली NBFCs हेतु सांविधिक SLR लागू होता है)।

2. भारतीय अर्थव्यवस्था में NBFCs की भूमिका

- **वित्तीय समावेशन (Financial Inclusion):** अनौपचारिक व बैंकिंग-रहित क्षेत्रों, छोटे व्यापारियों, असंगठित कामगारों तथा ग्रामीण क्षेत्रों तक अंतिम छोर तक ऋण (Last-mile connectivity) पहुंचाना।
- **MSME एवं अवसंरचना वित्तपोषण:** वाणिज्यिक बैंकों की कठोर संपार्श्विक (Collateral) शर्तों के स्थान पर लचीली व त्वरित प्रक्रिया से सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यमों तथा सड़क, ऊर्जा व रियल एस्टेट परियोजनाओं को दीर्घावधि पूँजी उपलब्ध कराना।
- **पूंजी बाजार में मध्यस्थता:** वित्तीय परिसंपत्तियों, वाणिज्यिक पत्रों (CPs) और गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर (NCDs) के माध्यम से घरेलू बचत को उत्पादक निवेश में बदलना।

3. RBI का स्केल-आधारित नियामक ढांचा (Scale Based Regulation - SBR)

अक्टूबर 2022 से प्रभावी इस ढांचे के तहत NBFCs को प्रणालीगत जोखिम, आकार और परस्पर-संबद्धता के आधार पर चार स्तरों में वर्गीकृत किया गया है:

1. **बेस लेयर (Base Layer - NBFC-BL):** गैर-जमा स्वीकार करने वाली NBFCs जिनकी परिसंपत्ति का आकार ₹1,000 करोड़ से कम है, तथा पीयर-टू-पीयर (P2P), अकाउंट एग्रीगेटर (AA) आदि।
2. **मिडिल लेयर (Middle Layer - NBFC-ML):** सभी जमा स्वीकार करने वाली NBFCs (चाहे आकार कुछ भी हो) तथा ₹1,000 करोड़ या उससे अधिक की गैर-जमा स्वीकारक NBFCs।
3. **अपर लेयर (Upper Layer - NBFC-UL):** प्रणालीगत रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण शीर्ष 15-20 बड़ी NBFCs (इन पर अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों जैसे कड़े नियम लागू होते हैं)।
4. **टॉप लेयर (Top Layer - NBFC-TL):** सैद्धांतिक रूप से यह स्तर वर्तमान में रिक्त रहता है; यदि अपर लेयर की किसी कंपनी से अत्यधिक प्रणालीगत जोखिम उत्पन्न होता है, तो उसे यहां रखा जाएगा।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **NBFC-अपर लेयर (NBFC-UL) कंपनियों का अनिवार्य सार्वजनिक सूचीकरण:** RBI के स्केल-आधारित ढांचे (SBR) के नियमों के तहत, अपर लेयर में चिन्हित शीर्ष NBFCs (जैसे टाटा संस, बजाज फाइनेंस, श्रीराम फाइनेंस आदि) हेतु वित्तीय स्थिरता व कॉर्पोरेट गवर्नेंस मजबूत करने के उद्देश्य से 3 वर्षों के भीतर स्टॉक एक्सचेंजों पर सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध होने की अनुपालन समय-सीमा का अंतिम चरण लागू रहा।
- **बैंक-NBFC ऋण सह-संबद्धता (Co-lending Model) एवं तरलता निगरानी:** RBI ने बैंकों द्वारा NBFCs को दिए जाने वाले असुरक्षित बैंक ऋणों तथा खुदरा उपभोक्ता वित्तपोषण पर जोखिम भार (Risk Weights) के सख्त दिशा-निर्देशों के प्रभाव

की समीक्षा की, जिसके परिणामस्वरूप NBFCs ने खुदरा असुरक्षित ऋणों की तुलना में उत्पादक क्षेत्रों (MSME व ग्रीन मोबिलिटी) के प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (PSL) संवितरण पर ध्यान केंद्रित किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs) और वाणिज्यिक बैंकों के मध्य अंतर के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वाणिज्यिक बैंक मांग जमा (Demand Deposits) स्वीकार कर सकते हैं, जबकि NBFCs मांग जमा स्वीकार नहीं कर सकती हैं।
2. वाणिज्यिक बैंकों के विपरीत, NBFCs भुगतान और निपटान प्रणाली का हिस्सा नहीं होती हैं और स्वयं पर आहरित चेक जारी नहीं कर सकती हैं।
3. निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (DICGC) द्वारा प्रदान की जाने वाली ₹5 लाख की जमा बीमा सुरक्षा NBFCs के जमाकर्ताओं के लिए भी समान रूप से उपलब्ध है।
4. RBI के स्केल-आधारित नियमन (SBR) के अंतर्गत सभी जमा स्वीकार करने वाली NBFCs को 'मिडिल लेयर' (Middle Layer) या उससे ऊपर रखा गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: NBFCs बचत या चालू खाते के रूप में मांग जमा स्वीकार नहीं कर सकतीं। केवल कुछ पंजीकृत NBFCs ही 12 से 60 महीने की सावधि जमा ले सकती हैं।
    - कथन 2 सत्य है: NBFCs भुगतान एवं निपटान प्रणाली (Payment and Settlement System) का अंग नहीं हैं, अतः वे अपने ग्राहकों के लिए स्वयं के नाम से चेक जारी नहीं कर सकतीं।
    - कथन 3 असत्य है: DICGC का बीमा संरक्षण (₹5 लाख प्रति जमाकर्ता) केवल वाणिज्यिक, क्षेत्रीय ग्रामीण और सहकारी बैंकों के जमाकर्ताओं को मिलता है; यह NBFCs के जमाकर्ताओं के लिए उपलब्ध **नहीं** है।
    - कथन 4 सत्य है: RBI के स्केल-आधारित नियामक ढांचे (SBR) के अनुसार, समस्त जमा स्वीकार करने वाली NBFCs (NBFC-D) को न्यूनतम 'मिडिल लेयर' में शामिल किया गया है, चाहे उनकी परिसंपत्ति का आकार कुछ भी हो।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (NBFC संकल्पना / नियामक ढांचा)	सूची-II (संबद्ध प्रावधान / मानक)
a. 50-50 परीक्षण (Principal Business)	1. ₹1,000 करोड़ से कम परिसंपत्ति वाली गैर-जमा स्वीकारक NBFCs
b. स्केल-आधारित नियामक ढांचा (SBR)	2. वित्तीय परिसंपत्ति और आय दोनों का कम से कम 50% होना
c. बेस लेयर (Base Layer)	3. प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण शीर्ष 15-20 बड़ी NBFC कंपनियाँ
d. अपर लेयर (Upper Layer)	4. चार-स्तरीय नियामक वर्गीकरण (Base, Middle, Upper, Top)

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **50-50 परीक्षण:** RBI द्वारा NBFC की पहचान हेतु मानक, जहाँ किसी कंपनी की 50% से अधिक संपत्ति वित्तीय हो तथा 50% से अधिक आय वित्तीय संपत्तियों से प्राप्त हो।
    - **स्केल-आधारित ढांचा (SBR):** RBI द्वारा 2022 से लागू ढांचा, जिसने NBFCs को आकार और जोखिम के आधार पर 4 स्तरों (Base, Middle, Upper, Top) में बांटा।
    - **बेस लेयर:** इसमें ₹1,000 करोड़ से कम परिसंपत्ति वाली गैर-जमा स्वीकारक NBFCs, P2P ऋण मंच और अकाउंट एग्रीगेटर शामिल हैं।
    - **अपर लेयर:** इसमें ऐसी प्रमुख बड़ी NBFCs शामिल हैं जिन्हें RBI गहन पर्यवेक्षण और बैंकों जैसे पूंजी पर्याप्तता नियमों के अधीन रखता है।

राजकोषीय नीति, विदेशी व्यापार एवं बजट

टॉपिक - 1: राजकोषीय नीति और बजट के उद्देश्य (Fiscal Policy & Budget Objectives)

राजकोषीय नीति सरकार की कराधान (Taxation), सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure) और सार्वजनिक ऋण (Public Debt) से संबंधित नीति है। यह जॉन मेनार्ड कीन्स के सिद्धांतों पर आधारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक स्थिरता, रोजगार सृजन और समावेशी विकास सुनिश्चित करना है।

©IASHINDIMEDIUM

भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 112** के तहत केंद्र सरकार के लिए प्रत्येक वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च) हेतु संसद के समक्ष **'वार्षिक वित्तीय विवरण' (Annual Financial Statement)** प्रस्तुत करने का संवैधानिक प्रावधान है (संविधान में 'बजट' शब्द का उल्लेख नहीं है; राज्यों के लिए अनुच्छेद 202)।

1. राजकोषीय नीति के उपकरण (Instruments of Fiscal Policy)

- **करारोपण (Taxation):** प्रत्यक्ष कर (प्रगामी कर प्रणाली—आय असमानता घटाने हेतु) तथा अप्रत्यक्ष कर (GST आदि)।
- **सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure):**
    - *पूंजीगत व्यय (Capex):* परिसंपत्ति निर्माण (सड़क, रेल, अस्पताल); इसका गुणक प्रभाव (Multiplier Effect) 2.45 से अधिक होता है।
    - *राजस्व व्यय (Revenue Expenditure):* नियमित संचालन व्यय (वेतन, ब्याज अदायगी, सब्सिडी)।
- **सार्वजनिक ऋण (Public Debt):** आंतरिक ऋण (बाजार ऋण, ट्रेजरी बिल) एवं बाह्य ऋण।
- **घाटे का वित्तपोषण (Deficit Financing):** जब व्यय प्राप्तियों से अधिक हो (प्रतिभूतियों का निर्गमन या नकदी शेष का आहरण)।

2. बजट के प्रमुख उद्देश्य (Objectives of Government Budget)

1. **संसाधनों का पुनरावंटन (Reallocation of Resources):** सार्वजनिक वस्तुओं (सड़क, रक्षा) की व्यवस्था करना तथा भारी कर लगाकर हानिकारक वस्तुओं (तंबाकू, शराब) के उत्पादन को हतोत्साहित करना।
2. **आय और संपत्ति की असमानताओं को कम करना (Redistribution):** प्रगतिशील कर प्रणाली (अमीरों पर उच्च कर) लागू कर उस राजस्व को गरीबों के कल्याण (सब्सिडी, PDS) में व्यय करना।
3. **आर्थिक स्थिरता (Economic Stability):** व्यापार चक्रों (मंदी एवं मुद्रास्फीति) को नियंत्रित करना। मुद्रास्फीति में **संकुचनकारी नीति** (व्यय में कमी, कर वृद्धि) तथा मंदी में **विस्तारवादी नीति** (व्यय में भारी वृद्धि, कर रियायतें)।
4. **आर्थिक संवृद्धि (Economic Growth):** आधारभूत ढांचे में पूंजी निर्माण के माध्यम से बचत और निवेश की दर को प्रोत्साहित करना।
5. **सार्वजनिक उद्यमों का प्रबंधन:** सामाजिक जनोपयोगी सेवाओं (रेलवे, डाक) का संचालन एवं रोजगार सृजन।

3. राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम, 2003

- **उद्देश्य:** अंतर-पीढ़ीगत समानता और दीर्घकालिक राजकोषीय स्थिरता।
- **एन. के. सिंह समिति (2016 की समीक्षा):** राजकोषीय उत्तरदायित्व का आधार ऋण-से-जीडीपी अनुपात (Debt-to-GDP Ratio) को 60% (केंद्र 40%, राज्य 20%) तक सीमित करना तथा राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के 3% तक लाना।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **राजकोषीय समेकन का संशोधित पथ (Fiscal Consolidation Trajectory):** केंद्रीय बजट के तहत राजकोषीय घाटे (Fiscal Deficit) को सकल घरेलू उत्पाद के 4.5% **से नीचे** लाने के मध्यकालिक लक्ष्य का अनुपालन सुनिश्चित किया गया।

©IASHINDIMEDIUM

साथ ही, पूंजीगत व्यय (Capex) का आवंटन ₹11.11 लाख करोड़ से अधिक के स्तर पर बनाए रखा गया ताकि निजी निवेश को गति (Crowding-in) दी जा सके।

- **राज्यों को 50-वर्षीय ब्याज-मुक्त ऋण:** राज्यों को बुनियादी ढांचे के निर्माण एवं सुधार-संबद्ध पहलों के लिए ₹1.5 लाख करोड़ के विशेष पूंजीगत सहायता ऋण का विस्तार जारी रखा गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में राजकोषीय नीति और सरकारी बजट के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 112 में 'बजट' शब्द को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है।
2. मंदी (Recession) के समय सरकार सामान्यतः संकुचनकारी राजकोषीय नीति (Contractionary Fiscal Policy) का अनुसरण करती है जिसमें सार्वजनिक व्यय में भारी कटौती की जाती है।
3. पूंजीगत व्यय (Capital Expenditure) का अर्थव्यवस्था में गुणक प्रभाव (Multiplier Effect) राजस्व व्यय की तुलना में काफी अधिक होता है।
4. एन. के. सिंह समिति (FRBM समीक्षा समिति) ने केंद्र सरकार के लिए ऋण-से-जीडीपी अनुपात 40% और राज्यों के लिए 20% निर्धारित करने की सिफारिश की थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 3 और 4

(D) 1, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: भारतीय संविधान के अनुच्छेद 112 में 'बजट' शब्द का प्रयोग नहीं है; इसके स्थान पर **'वार्षिक वित्तीय विवरण' (Annual Financial Statement)** शब्दावली का प्रयोग किया गया है।
    - कथन 2 असत्य है: मंदी के समय कुल मांग को बढ़ाने के लिए सरकार **विस्तारवादी राजकोषीय नीति (Expansionary Fiscal Policy)** अपनाती है, जिसके तहत सार्वजनिक व्यय बढ़ाया जाता है और करों में कटौती की जाती है। संकुचनकारी नीति उच्च मुद्रास्फीति के समय अपनाई जाती है।
    - कथन 3 सत्य है: पूंजीगत व्यय नई उत्पादक परिसंपत्तियों का निर्माण करता है, जिससे अर्थव्यवस्था में निजी निवेश को बढ़ावा मिलता है और इसका समग्र विकास पर बहुआयामी गुणक प्रभाव (2.45 से अधिक) पड़ता है।
    - कथन 4 सत्य है: 2016 में गठित एन. के. सिंह समिति ने वर्ष 2023 तक सामान्य सरकारी ऋण को GDP के 60% (केंद्र सरकार: 40%, राज्य सरकारें: 20%) तक लाने की सिफारिश की थी।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (राजकोषीय उपकरण / अवधारणा)	सूची-II (प्राथमिक उद्देश्य / संवैधानिक उपबंध)
a. वार्षिक वित्तीय विवरण	1. अंतर-पीढ़ीगत समता एवं राजकोषीय अनुशासन
b. प्रगामी करारोपण (Progressive Taxation)	2. आय एवं संपत्ति की असमानताओं को कम करना
c. विस्तारवादी राजकोषीय नीति	3. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 112
d. FRBM अधिनियम, 2003	4. आर्थिक मंदी के दौरान मांग एवं रोजगार में वृद्धि

कूट:

(A) a-3, b-2, c-4, d-1

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-2, b-3, c-1, d-4

(D) a-4, b-2, c-3, d-1

उत्तर: (A) a-3, b-2, c-4, d-1

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **वार्षिक वित्तीय विवरण:** संविधान के अनुच्छेद 112 के तहत केंद्र सरकार का वार्षिक बजट प्रस्ताव।
  - **प्रगामी करारोपण:** उच्च आय वर्ग पर उच्च दर से कर लगाना ताकि आर्थिक असमानता को पाटा जा सके।
  - **विस्तारवादी राजकोषीय नीति:** सार्वजनिक व्यय में वृद्धि और कर कटौती के जरिए समग्र मांग और उत्पादन को प्रोत्साहित करना।
  - **FRBM अधिनियम, 2003:** देश में वित्तीय घाटे को सीमित करने और राजकोषीय उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने का सांविधिक ढांचा।

टॉपिक - 2: भारतीय कर प्रणाली (प्रत्यक्ष कर, अप्रत्यक्ष कर एवं GST)

कराधान सरकार की आय का प्रमुख स्रोत है। भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 265** के अनुसार, "विधि के प्राधिकार के बिना कोई कर न तो अधिरोपित किया जाएगा और न ही संगृहीत किया जाएगा।" कर प्रणाली का मुख्य उद्देश्य राजस्व जुटाना, आय असमानता को पाटना तथा आर्थिक गतिविधियों को दिशा देना है।

1. प्रत्यक्ष कर (Direct Tax)

- **संकल्पना:** जिस कर में कराघात (Impact—वैधानिक दायित्व) और करापात (Incidence—वास्तविक वित्तीय भार) **एक ही व्यक्ति** पर पड़ता है। इसे दूसरों पर टाला (Shift) नहीं जा सकता।

- **प्रकृति:** यह **प्रगामी (Progressive)** होता है (आय बढ़ने के साथ कर की दर बढ़ती है), जिससे आय असमानता घटती है।
- **प्रमुख घटक:**
    - **व्यक्तिगत आयकर (Personal Income Tax):** व्यक्तियों की वार्षिक आय पर देय।
    - **निगम कर (Corporation Tax):** कंपनियों के शुद्ध लाभ पर देय।
    - **अन्य:** प्रतिभूति लेनदेन कर (STT), पूँजीगत लाभ कर (Capital Gains Tax)।
- **नियामक निकाय:** केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (**CBDT**—केंद्रीय राजस्व बोर्ड अधिनियम, 1963 के तहत गठित)।

2. अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax)

- **संकल्पना:** इसमें कराघात और करापात **अलग-अलग व्यक्तियों** पर पड़ता है। विक्रेता कर का भार अंतिम उपभोक्ता पर अंतरित कर देता है।
- **प्रकृति:** यह **प्रतिगामी (Regressive)** होता है, क्योंकि अमीर और गरीब दोनों समान वस्तु पर समान दर से कर चुकाते हैं।
- **प्रमुख घटक (वर्तमान में GST से बाहर):** सीमा शुल्क (Customs Duty), पेट्रोल/डीजल पर उत्पाद शुल्क (Excise Duty), शराब पर राज्य उत्पाद शुल्क, तथा स्टाम्प ड्यूटी।
- **नियामक निकाय:** केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (**CBIC**)।

3. वस्तु एवं सेवा कर (GST - Goods and Services Tax)

- **संवैधानिक आधार: 101वां संविधान संशोधन अधिनियम, 2016** (122वां संविधान संशोधन विधेयक) द्वारा **1 जुलाई 2017** से संपूर्ण भारत में लागू।
- **मूल स्वरूप:** यह एक व्यापक, बहु-स्तरीय, **गंतव्य-आधारित उपभोग कर (Destination-based Consumption Tax)** है। इसने केंद्र के 8 और राज्यों के 9 (कुल 17) अप्रत्यक्ष करों तथा 23 उपकरों को समाहित कर **'कैस्केडिंग प्रभाव' (कर पर कर)** को समाप्त किया।
- **संबंधित प्रमुख संवैधानिक अनुच्छेद:**
    - **अनुच्छेद 246A:** संसद और राज्य विधानमंडलों को GST पर कानून बनाने की समवर्ती शक्ति।
    - **अनुच्छेद 269A:** अंतर-राज्यीय व्यापार (Inter-state Trade) पर एकीकृत GST (IGST) की उगाही केंद्र करेगा, जिसका केंद्र व उपभोग वाले राज्य के बीच विभाजन होगा।
    - **अनुच्छेद 279A:** राष्ट्रपति द्वारा **GST परिषद (GST Council)** के गठन का प्रावधान।
        - *संरचना:* केंद्रीय वित्त मंत्री (अध्यक्ष), केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री, तथा सभी राज्यों/विधानसभा वाले UTs के वित्त/नामित मंत्री।
        - *मतदान भार:* केंद्र का $1/3$ तथा सभी राज्यों का संयुक्त रूप से $2/3$; निर्णय हेतु $3/4$ **(75%) बहुमत** अनिवार्य।
- **GST से बाहर मदें:** मानव उपभोग की शराब (पूर्णतः बाहर), 5 पेट्रोलियम उत्पाद (कच्चा तेल, पेट्रोल, डीजल, ATF, प्राकृतिक गैस—भविष्य में GST परिषद की संस्तुति पर शामिल होंगे), रियल एस्टेट और विद्युत शुल्क।

©IASHINDIMEDIUM

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **जीएसटी कर स्लैब युक्तीकरण (Rate Rationalisation):** GST परिषद की मंत्री समूह (GoM) की संस्तुतियों के अनुरूप 4 प्राथमिक कर स्लैब (5%, 12%, 18%, 28%) में से 12% और 18% के विलय तथा जीवन बीमा/स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम पर कर छूट के ढांचे की समीक्षा की गई।
- **सकल GST राजस्व एवं ई-इनवॉइसिंग अनिवार्यता:** देश में मासिक सकल GST संग्रह नियमित रूप से ₹1.8 लाख करोड़ से ₹2 लाख करोड़ के पार रहा। इनपुट टैक्स क्रेडिट (ITC) धोखाधड़ी रोकने हेतु B2B लेनदेन के लिए ई-इनवॉइसिंग की अनिवार्य सीमा का विस्तार सूक्ष्म स्तर तक किया गया।
- **नई आयकर व्यवस्था (New Tax Regime) का डिफ़ॉल्ट रूप में सुदृढ़ीकरण:** बजट के माध्यम से धारा 115BAC के तहत मानक कटौती (Standard Deduction) और संशोधित टैक्स स्लैब द्वारा मध्यम वर्ग के लिए प्रत्यक्ष कर अनुपालन को और अधिक सरल बनाया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. वस्तु एवं सेवा कर (GST) और संबंधित संवैधानिक उपबंधों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. GST को 101वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2016 के माध्यम से 1 जुलाई 2017 से पूरे देश में लागू किया गया था।
2. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 279A के तहत स्थापित GST परिषद के अध्यक्ष भारत के प्रधानमंत्री होते हैं।
3. अंतर-राज्यीय व्यापार या वाणिज्य के दौरान आपूर्ति पर लगाए जाने वाले IGST की उगाही केंद्र सरकार करती है, जिसे केंद्र और राज्यों के बीच विभाजित किया जाता है।
4. वर्तमान में कच्चा पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, पेट्रोल, डीजल और विमानन टरबाइन ईंधन (ATF) GST के दायरे से बाहर हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: 101वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा 1 जुलाई 2017 से 'एक देश, एक कर' के रूप में GST लागू हुआ।
    - कथन 2 असत्य है: अनुच्छेद 279A के तहत GST परिषद की अध्यक्षता **केंद्रीय वित्त मंत्री** करते हैं, प्रधानमंत्री नहीं। राज्यों के वित्त मंत्री इसके सदस्य होते हैं।
    - कथन 3 सत्य है: अनुच्छेद 269A के तहत अंतर-राज्यीय बिक्री (Inter-state supply) पर IGST केंद्र द्वारा लगाया व वसूला जाता है, जिसे गंतव्य राज्य और केंद्र आपस में साझा करते हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 4 सत्य है: 5 निर्दिष्ट पेट्रोलियम उत्पाद (कच्चा तेल, पेट्रोल, डीजल, प्राकृतिक गैस, ATF) वर्तमान में GST से बाहर हैं और इन पर पुराना केंद्रीय उत्पाद शुल्क व राज्यों का VAT लागू रहता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (कर / संवैधानिक अनुच्छेद)	**सूची-II (संबद्ध प्रकृति / विधिक प्रावधान)**
a. व्यक्तिगत आयकर (Income Tax)	1. समवर्ती विधायी शक्ति (संसद एवं राज्य विधानमंडल)
b. जीएसटी परिषद (GST Council)	2. गंतव्य-आधारित अप्रत्यक्ष कर
c. अनुच्छेद 246A	3. प्रगामी प्रत्यक्ष कर (कराघात और करापात एक ही व्यक्ति पर)
d. वस्तु एवं सेवा कर (GST)	4. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 279A

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-2, b-4, c-1, d-3

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **व्यक्तिगत आयकर:** यह एक प्रत्यक्ष और प्रगामी कर है, जिसे चुकाने का वैधानिक और वास्तविक भार उसी व्यक्ति पर होता है।
  - **जीएसटी परिषद:** इसका गठन संविधान के अनुच्छेद 279A के तहत राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है।
  - **अनुच्छेद 246A:** यह विशेष प्रावधान संसद और राज्य विधानसभाओं को वस्तु एवं सेवा कर पर कानून बनाने की समवर्ती शक्ति प्रदान करता है।
  - **वस्तु एवं सेवा कर:** यह बहु-स्तरीय, मूल्यवर्धन पर आधारित और गंतव्य-आधारित अप्रत्यक्ष कर है।

टॉपिक - 3: बजट प्राप्तियाँ और व्यय (Budget Receipts and Expenditure)

सरकारी बजट (अनुच्छेद 112: वार्षिक वित्तीय विवरण) को संरचनात्मक रूप से दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है: **राजस्व खाता (Revenue Account)** तथा **पूँजीगत खाता (Capital Account)**। इन दोनों के अंतर्गत प्राप्तियों और व्ययों का स्पष्ट वर्गीकरण होता है।

1. बजट प्राप्तियाँ (Budget Receipts)

सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष में सभी स्रोतों से प्राप्त होने वाले अनुमानित वित्तीय संसाधनों को 'बजट प्राप्तियाँ' कहते हैं:

- **1. राजस्व प्राप्तियाँ (Revenue Receipts):**
    - **कसौटी:** ये प्राप्तियाँ **न तो सरकार पर कोई देयता (Liability) उत्पन्न करती हैं** और **न ही किसी वित्तीय/भौतिक परिसंपत्ति (Assets) में कमी लाती हैं**। ये गैर-प्रतिदेय (Non-redeemable) होती हैं।
    - **घटक:**
        1. *कर राजस्व (Tax Revenue):* प्रत्यक्ष कर (आयकर, निगम कर) तथा अप्रत्यक्ष कर (GST, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क)।
        2. *गैर-कर राजस्व (Non-Tax Revenue):* केंद्र द्वारा दिए गए ऋणों पर प्राप्त **ब्याज**, सार्वजनिक उपक्रमों (CPSEs) व RBI से प्राप्त **लाभांश व लाभ (Dividends & Profits)**, शुल्क (Fees), जुर्माना, तथा बाह्य सहायता/अनुदान (Grants)।
- **2. पूँजीगत प्राप्तियाँ (Capital Receipts):**
    - **कसौटी:** ये प्राप्तियाँ या तो **सरकार पर वित्तीय देयता उत्पन्न करती हैं** अथवा **परिसंपत्तियों में कमी लाती हैं**।
    - **घटक:**
        1. *ऋण-सृजक पूँजीगत प्राप्तियाँ (Debt Receipts):* बाजार ऋण (Market Borrowings), ट्रेजरी बिल, बाह्य देशों/संस्थाओं से लिए गए ऋण, अल्पकालिक ऋण।
        2. *गैर-ऋण पूँजीगत प्राप्तियाँ (Non-Debt Capital Receipts - NDCR):* राज्य सरकारों को दिए गए **ऋणों की वसूली (Recovery of Loans)** तथा सार्वजनिक उपक्रमों के विनिवेश (Disinvestment) से प्राप्त आय।

2. बजट व्यय (Budget Expenditure)

- **1. राजस्व व्यय (Revenue Expenditure):**
    - **कसौटी:** यह व्यय **न तो किसी भौतिक या वित्तीय परिसंपत्ति का निर्माण करता है** और **न ही सरकार की देनदारियों को घटाता है**। यह प्रशासनिक व नियमित संचालन व्यय है।
    - **प्रमुख घटक: ब्याज भुगतान (Interest Payments - बजट व्यय का सबसे बड़ा एकल घटक)**, रक्षा सेवाओं का नियमित परिचालन व्यय, कर्मचारियों का वेतन व पेंशन, प्रमुख सब्सिडी (उर्वरक, खाद्य, LPG), तथा राज्यों को दिए जाने वाले राजस्व अनुदान (अनुच्छेद 275)।
- **2. पूँजीगत व्यय (Capital Expenditure - Capex):**
    - **कसौटी:** यह व्यय **उत्पादक भौतिक या वित्तीय परिसंपत्तियों का निर्माण करता है** अथवा **सरकार की वित्तीय देयताओं (ऋणों) में कमी लाता है**।
    - **प्रमुख घटक:** भूमि, भवन, मशीनरी व बुनियादी ढांचे (सड़क, रेलवे, बंदरगाह) के निर्माण पर व्यय, शेयरों का अधिग्रहण, **पूर्व ऋणों की मूल राशि का पुनर्भुगतान (Repayment of Debt)**, तथा केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों व विदेशी सरकारों को दिए जाने वाले ऋण एवं अग्रिम।
- *विशेष संकल्पना:* **प्रभावी पूँजीगत व्यय (Effective Capex) = केंद्र का पूँजीगत व्यय + राज्यों को पूँजीगत संपत्तियों के निर्माण हेतु दिया गया राजस्व अनुदान**।

©IASHINDIMEDIUM

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **पूँजीगत व्यय (Capex) की निरंतर उच्च हिस्सेदारी:** बजट में आर्थिक संवृद्धि को गति देने तथा निजी निवेश को आकर्षित (Crowding-in) करने हेतु पूँजीगत परिव्यय को ₹11 लाख करोड़ से अधिक (GDP का 3.4% से अधिक) के स्तर पर बनाए रखा गया, जबकि प्रभावी पूँजीगत व्यय ₹15 लाख करोड़ के ऐतिहासिक स्तर को छू गया।
- **ब्याज भुगतान एवं गैर-कर राजस्व गतिशीलता:** कुल बजट व्यय में ब्याज भुगतान की हिस्सेदारी सर्वाधिक (लगभग 20-24%) बनी रही। गैर-कर राजस्व में भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा रिकॉर्ड अधिशेष लाभांश (Surplus Dividend) के अंतरण तथा दूरसंचार स्पेक्ट्रम व CPSE लाभांशों ने राजस्व प्राप्तियों को राजकोषीय मजबूती प्रदान की।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. बजट प्राप्तियों और व्यय की संरचना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों को दिए गए ऋणों पर प्राप्त होने वाला ब्याज राजस्व प्राप्ति (Revenue Receipt) के अंतर्गत आता है।
2. राज्य सरकारों द्वारा केंद्र को पूर्व में लिए गए ऋणों की मूल राशि की वापसी (Recovery of Loans) को पूँजीगत प्राप्ति माना जाता है।
3. केंद्र सरकार द्वारा राज्यों को पूँजीगत संपत्तियों के निर्माण हेतु दी जाने वाली अनुदान राशि तकनीकी रूप से बजट में पूँजीगत व्यय (Capital Expenditure) के रूप में दर्ज की जाती है।
4. सार्वजनिक उपक्रमों (PSUs) के शेयरों का विनिवेश (Disinvestment) एक ऋण-सृजक पूँजीगत प्राप्ति (Debt Capital Receipt) का उदाहरण है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 1 और 2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: ऋण पर मिलने वाला ब्याज 'गैर-कर राजस्व प्राप्ति' है, क्योंकि इससे परिसंपत्ति या देयता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
    - कथन 2 सत्य है: ऋणों की मूल राशि की वसूली (Recovery of Loans) से सरकार की वित्तीय परिसंपत्ति (दावा) घटती है, अतः यह 'गैर-ऋण पूँजीगत प्राप्ति' (NDCR) है।
    - कथन 3 असत्य है: संविधान के अनुसार केंद्र द्वारा राज्यों को दिए जाने वाले सभी अनुदान (Grants) **राजस्व व्यय** के तहत ही दर्ज होते हैं, भले ही उनका उपयोग पूँजीगत संपत्तियां बनाने में हो (यद्यपि इन्हें 'प्रभावी पूँजीगत व्यय' में अलग से गिना जाता है)।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 4 असत्य है: विनिवेश गैर-ऋण पूँजीगत प्राप्ति (Non-Debt Capital Receipt) है, क्योंकि यह शेयर/परिसंपत्ति बेचकर प्राप्त होती है, इससे सरकार पर कोई नया ऋण/देयता नहीं बनती।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (बजट मद)	**सूची-II (बजट वर्गीकरण)**
a. बाह्य ऋणों की मूल राशि का पुनर्भुगतान	1. गैर-कर राजस्व प्राप्ति
b. RBI और CPSEs से प्राप्त लाभांश	2. पूँजीगत व्यय (देयता में कमी)
c. राजमार्गों एवं रेलवे ट्रैक का निर्माण	3. राजस्व व्यय (अनुत्पादक/नियमित व्यय)
d. केंद्र द्वारा लिए गए ऋणों पर देय ब्याज	4. पूँजीगत व्यय (परिसंपत्ति निर्माण)

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-4, b-1, c-2, d-3

(D) a-3, b-2, c-4, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **ऋणों का पुनर्भुगतान:** सरकार की देनदारी घटाता है, अतः यह पूँजीगत व्यय (Capital Expenditure) है।
  - **लाभांश एवं लाभ:** बिना किसी देयता या परिसंपत्ति ह्रास के प्राप्त होने वाली गैर-कर राजस्व प्राप्ति है।
  - **राजमार्गों व बुनियादी ढांचे का निर्माण:** नई भौतिक परिसंपत्तियों का निर्माण करता है, अतः यह पूँजीगत व्यय है।
  - **ब्याज भुगतान:** यह विगत ऋणों की सेवा लागत है जिससे कोई नई परिसंपत्ति नहीं बनती, अतः यह अनिवार्य राजस्व व्यय है।

टॉपिक - 4: राजकोषीय, राजस्व एवं प्राथमिक घाटा (Fiscal, Revenue and Primary Deficit)

सरकारी बजट में घाटा (Deficit) तब उत्पन्न होता है जब सरकार का कुल अनुमानित व्यय उसकी कुल अनुमानित प्राप्तियों से अधिक हो जाता है। घाटे की विभिन्न अवधारणाएँ सरकार के वित्तीय स्वास्थ्य, उधार की सीमा तथा भविष्य के दायित्वों को स्पष्ट करती हैं।

1. प्रमुख बजट घाटों की संकल्पनाएँ एवं सूत्र

- **1. राजस्व घाटा (Revenue Deficit - RD):**

- **सूत्र:**

$$\text{राजस्व घाटा} = \text{कुल राजस्व व्यय} - \text{कुल राजस्व प्राप्तियाँ}$$

- **तात्पर्य:** यह दर्शाता है कि सरकार अपनी नियमित प्रशासनिक व परिचालन आवश्यकताओं (वेतन, पेंशन, सब्सिडी, ब्याज) को अपनी नियमित आय (कर व गैर-कर) से पूरा नहीं कर पा रही है। यह उपभोग व्यय हेतु की जा रही **अल्प-बचत (Diseconomy/Dissaving)** का प्रतीक है।

- **2. प्रभावी राजस्व घाटा (Effective Revenue Deficit - ERD):**
  - **सूत्र:**

$$\text{प्रभावी राजस्व घाटा} = \text{राजस्व घाटा} - \text{पूँजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण हेतु राज्यों को दिए गए अनुदान}$$

  - **पृष्ठभूमि:** इसे रंगराजन समिति की संस्तुति पर **केंद्रीय बजट 2011-12** में प्रस्तुत किया गया तथा 2012 में FRBM अधिनियम में संशोधन कर औपचारिक रूप दिया गया।

- **3. राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit - FD):**
  - **सूत्र:**

$$\text{राजकोषीय घाटा} = \text{कुल व्यय (राजस्व + पूँजीगत)} - [\text{राजस्व प्राप्तियाँ} + \text{गैर-ऋण पूँजीगत प्राप्तियाँ (NDCR)}]$$

अथवा साधारण शब्दों में:

$$\text{राजकोषीय घाटा} = \text{सरकार की कुल ऋण आवश्यकता (Total Borrowings)}$$

  - **तात्पर्य:** यह वित्तीय वर्ष में सरकार की **समग्र उधार आवश्यकताओं (बाजार ऋण, विदेशी ऋण आदि)** का सूचक है। यह अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति के दबाव और संप्रभु ऋण के बोझ को प्रदर्शित करता है।

- **4. प्राथमिक घाटा (Primary Deficit - PD):**
  - **सूत्र:**

$$\text{प्राथमिक घाटा} = \text{राजकोषीय घाटा} - \text{ब्याज भुगतान (Interest Payments)}$$

  - **तात्पर्य:** यह विगत वर्षों में लिए गए ऋणों की देनदारियों (ब्याज) को छोड़कर **वर्तमान वित्तीय वर्ष के राजकोषीय असंतुलन** को दर्शाता है। यदि प्राथमिक घाटा शून्य (0) हो, तो इसका अर्थ है कि सरकार को केवल पुराने ऋणों के ब्याज भुगतान हेतु उधार लेना पड़ रहा है।

- **5. मुद्रीकृत घाटा (Monetized Deficit):** राजकोषीय घाटे का वह हिस्सा जिसे पूरा करने हेतु भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा नई मुद्रा का सृजन या अल्पावधि ट्रेजरी बिल क्रय किए जाते हैं (1997 से एड-हॉक ट्रेजरी बिल बंद कर अर्थोपाय अग्रिम/WMA लागू)।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **राजकोषीय समेकन का संशोधित पथ:** केंद्रीय बजट में राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 4.5% **से नीचे** लाने के बहु-वर्षीय समेकन लक्ष्य को सफलतापूर्वक हासिल करने पर बल दिया गया। वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य लगभग 4.4--4.5% और राजस्व घाटा लगभग 1.5--1.8% के दायरे में लक्षित रहा।

©IASHINDIMEDIUM

- **ब्याज भुगतान की उच्च हिस्सेदारी और प्राथमिक घाटा:** बजट व्यय में ब्याज भुगतान की हिस्सेदारी कुल राजस्व प्राप्तियों के लगभग 28--30% के उच्च स्तर पर बनी रही, जिसके कारण राजकोषीय घाटे की तुलना में प्राथमिक घाटा तेजी से घटकर GDP के लगभग 1.1--1.3% के निचले स्तर पर आ गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत सरकार के बजट घाटों की विभिन्न संकल्पनाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) वित्तीय वर्ष के दौरान सरकार की शुद्ध ऋण एवं अन्य देनदारियों की कुल राशि के बराबर होता है।
2. प्राथमिक घाटे (Primary Deficit) की गणना राजकोषीय घाटे में से सरकार द्वारा किए जाने वाले ब्याज भुगतानों को घटाकर की जाती है।
3. 'प्रभावी राजस्व घाटा' (Effective Revenue Deficit) की अवधारणा को रंगराजन समिति की सिफारिश के आधार पर पहली बार बजट 2011-12 में पेश किया गया था।
4. यदि किसी वित्तीय वर्ष में प्राथमिक घाटा शून्य (Zero) हो, तो इसका अभिप्राय है कि सरकार का चालू वर्ष का संपूर्ण उधार केवल पूर्व ऋणों के ब्याज भुगतान हेतु प्रयुक्त हो रहा है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (D) 1, 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: राजकोषीय घाटा सरकार की कुल उधार आवश्यकताओं (Borrowings and Other Liabilities) का प्रत्यक्ष माप है।
    - कथन 2 और 4 सत्य हैं: प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा - ब्याज भुगतान। यदि प्राथमिक घाटा शून्य हो, तो इसका सीधा अर्थ है कि राजकोषीय घाटा = ब्याज भुगतान, अर्थात् सरकार इस वर्ष केवल पुराने ऋणों के ब्याज चुकाने के लिए नया कर्ज ले रही है और चालू वर्ष का परिचालन संतुलित है।
    - कथन 3 सत्य है: प्रभावी राजस्व घाटा 2011-12 के बजट में रंगराजन समिति की संस्तुति पर शामिल किया गया, ताकि राज्यों को परिसंपत्ति निर्माण हेतु दिए गए राजस्व अनुदानों को अलग से देखा जा सके।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (घाटे का प्रकार)	सूची-II (संबद्ध सूत्र / परिभाषा)
a. राजस्व घाटा	1. राजकोषीय घाटा — ब्याज भुगतान
b. प्राथमिक घाटा	2. कुल व्यय — (राजस्व प्राप्तियाँ + गैर-ऋण पूँजीगत प्राप्तियाँ)
c. राजकोषीय घाटा	3. राजस्व घाटा — पूँजीगत संपत्तियों के सृजन हेतु अनुदान
d. प्रभावी राजस्व घाटा	4. कुल राजस्व व्यय — कुल राजस्व प्राप्तियाँ

कूट:

(A) a-4, b-1, c-2, d-3

(B) a-4, b-2, c-1, d-3

(C) a-2, b-1, c-4, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-4, b-1, c-2, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **राजस्व घाटा:** कुल राजस्व व्यय और कुल राजस्व प्राप्तियों के बीच का अंतर।
    - **प्राथमिक घाटा:** राजकोषीय घाटे में से चालू वर्ष के ब्याज भुगतान घटाने पर प्राप्त मान।
    - **राजकोषीय घाटा:** कुल बजट व्यय में से राजस्व प्राप्तियों और गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियों (ऋण वसूली व विनिवेश) को घटाने के बाद बची राशि (उधार)।
    - **प्रभावी राजस्व घाटा:** राजस्व घाटे में से वह राशि घटाना जो राज्यों को पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण हेतु अनुदान के रूप में दी गई हो।

टॉपिक - 5: राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम, 2003

राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन अधिनियम (Fiscal Responsibility and Budget Management - FRBM Act) भारत में राजकोषीय अनुशासन स्थापित करने, अंतर-पीढ़ीगत समानता (Inter-generational Equity) सुनिश्चित करने, तथा व्यापक आर्थिक स्थिरता बनाए रखने हेतु संसद द्वारा **2003 में पारित** किया गया और **5 जुलाई 2004** से प्रभावी हुआ।

1. अधिनियम के मूल प्रावधान एवं वैधानिक दायित्व

©IASHINDIMEDIUM

- **बजट के साथ प्रस्तुत अनिवार्य दस्तावेज:** FRBM अधिनियम की धारा 3(1) के तहत केंद्र सरकार के लिए केंद्रीय बजट (वार्षिक वित्तीय विवरण) के साथ संसद में निम्नलिखित **तीन नीतिगत विवरण (Policy Statements)** प्रस्तुत करना कानूनी रूप से अनिवार्य किया गया:
    1. **मध्यकालिक राजकोषीय नीति विवरण (Medium-Term Fiscal Policy Statement)**
    2. **राजकोषीय नीति रणनीति विवरण (Fiscal Policy Strategy Statement)**
    3. **व्यापक आर्थिक रूपरेखा विवरण (Macroeconomic Framework Statement)***(वित्त अधिनियम 2012 द्वारा एक चौथा विवरण जोड़ा गया:* ***मध्यकालिक व्यय रूपरेखा विवरण - Medium-Term Expenditure Framework Statement)***।
- **मूल लक्ष्य:** 31 मार्च 2009 तक **राजस्व घाटे को पूर्णतः शून्य (0%)** पर लाना तथा **राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 3% तक सीमित करना** (2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के कारण इन लक्ष्यों को स्थगित करना पड़ा था)।
- **आरबीआई से प्रत्यक्ष उधार पर रोक:** अधिनियम की धारा 5 के तहत 1 अप्रैल 2006 से RBI द्वारा केंद्र सरकार के प्राथमिक निर्गमों (G-Secs) को सीधे खरीदने पर रोक लगा दी गई (केवल अर्थोपाय अग्रिम / WMA की अनुमति)।

2. एन. के. सिंह समिति (FRBM समीक्षा समिति, 2016)

मई 2016 में **एन. के. सिंह** की अध्यक्षता में गठित 5-सदस्यीय समिति ने जनवरी 2017 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की:

- **ऋण-आधारित राजकोषीय ढांचा:** समिति ने केवल राजकोषीय घाटे पर ध्यान देने के स्थान पर **'सामान्य सरकारी ऋण-से-जीडीपी अनुपात' (Debt-to-GDP Ratio)** को 60% पर लाने की सिफारिश की:
    - **केंद्र सरकार का ऋण:** GDP का अधिकतम 40%
    - **राज्य सरकारों का ऋण:** GDP का अधिकतम 20%
- **राजकोषीय घाटा लक्ष्य:** 31 मार्च 2023 तक राजकोषीय घाटे को GDP के 2.5% तक लाना।
- **एस्केप क्लॉज (Escape Clause - धारा 4(2)):** राष्ट्रीय सुरक्षा, युद्ध, गंभीर राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा, कृषि संकट या आर्थिक संवृद्धि में तीव्र गिरावट (तिमाही वृद्धि दर में कम से कम 3 प्रतिशत अंक की गिरावट) जैसी असाधारण परिस्थितियों में वार्षिक राजकोषीय घाटे के लक्ष्य से **अधिकतम 0.5% (50 आधार अंक) तक के विचलन (Deviate)** की अनुमति।
- **राजकोषीय परिषद (Fiscal Council):** एक स्वतंत्र स्वायत्त राजकोषीय परिषद के गठन की सिफारिश की गई।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **राजकोषीय समेकन का संशोधित पथ (Fiscal Glide Path):** केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 के अंत तक राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के **4.5% से नीचे** लाने के मध्यकालिक लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त करने की दिशा में कार्य किया (बजट 2025-26 में राजकोषीय घाटा 4.4% लक्षित)।
- **ऋण-जीडीपी अनुपात में कमी का नया लक्ष्य:** पोस्ट-कोविड काल में उच्च सरकारी ऋण स्तरों को संतुलित करने हेतु सरकार ने स्पष्ट किया कि 2026-27 के पश्चात केंद्र का राजकोषीय फोकस स्थिर राजकोषीय घाटा संख्या के बजाय **केंद्र के समग्र ऋण-से-जीडीपी अनुपात को सतत रूप से घटाने** पर केंद्रित रहेगा।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 1. राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम, 2003 के वैधानिक प्रावधानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. FRBM अधिनियम, 2003 को लागू करते हुए 31 मार्च 2009 तक राजस्व घाटे को घटाकर शून्य (0%) करने का मूल लक्ष्य रखा गया था।
2. इस अधिनियम के अंतर्गत केंद्र सरकार के लिए केंद्रीय बजट के साथ 'मध्यकालिक राजकोषीय नीति विवरण' और 'व्यापक आर्थिक रूपरेखा विवरण' संसद के समक्ष प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
3. FRBM समीक्षा समिति (एन. के. सिंह समिति) ने केंद्र और राज्यों के संयुक्त सामान्य सरकारी ऋण को GDP के अधिकतम 60% (केंद्र: 40%, राज्य: 20%) तक सीमित करने की सिफारिश की थी।
4. अधिनियम में उल्लिखित 'एस्केप क्लॉज' (Escape Clause) के तहत सरकार किसी भी सामान्य आर्थिक मंदी के दौरान राजकोषीय घाटे के लक्ष्य से 2% तक का विचलन कर सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: मूल FRBM अधिनियम 2003 (नियम 2004) में प्रतिवर्ष राजस्व घाटे को 0.5% घटाकर 2008-09 तक शून्य (0%) तथा राजकोषीय घाटे को 0.3% प्रतिवर्ष घटाकर 3% पर लाने का लक्ष्य रखा गया था।
    - कथन 2 सत्य है: धारा 3 के अंतर्गत बजट के साथ मध्यकालिक राजकोषीय नीति विवरण, राजकोषीय नीति रणनीति विवरण तथा मैक्रोइकोनॉमिक फ्रेमवर्क स्टेटमेंट प्रस्तुत करना कानूनी रूप से अनिवार्य है।
    - कथन 3 सत्य है: एन. के. सिंह समिति ने संप्रभु ऋण स्थिरता हेतु ऋण-जीडीपी अनुपात को 60% (केंद्र 40% और राज्य 20%) तक लाने की मुख्य संस्तुति दी थी।
    - कथन 4 असत्य है: 'एस्केप क्लॉज' (Escape Clause) केवल असाधारण परिस्थितियों (युद्ध, गंभीर आपदा, कृषि पतन या संरचनात्मक सुधार) में प्रयुक्त हो सकता है और इसके तहत अधिकतम विचलन की स्वीकृत सीमा **0.5% (50 आधार अंक)** है, 2% नहीं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (समिति / अधिनियम प्रावधान)	**सूची-II (संबद्ध तथ्य / सिफारिश)**
a. FRBM अधिनियम पारित होने का वर्ष	1. मई 2016 (ऋण-से-जीडीपी अनुपात लक्ष्य)

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (समिति / अधिनियम प्रावधान)	सूची-II (संबद्ध तथ्य / सिफारिश)
b. एन. के. सिंह समिति का गठन	2. वर्ष 2003 (प्रभावी: जुलाई 2004)
c. FRBM एस्केप क्लॉज (Escape Clause)	3. वर्ष 2012 के संशोधन द्वारा अनिवार्य चौथा विवरण
d. मध्यकालिक व्यय रूपरेखा विवरण	4. निर्धारित लक्ष्य से अधिकतम 0.5% तक विचलन की अनुमति

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-1, b-2, c-4, d-3

(D) a-3, b-1, c-2, d-4

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **FRBM अधिनियम पारित:** यह कानून वर्ष 2003 में संसद द्वारा पारित किया गया तथा जुलाई 2004 में अधिसूचित हुआ।
    - **एन. के. सिंह समिति:** मई 2016 में FRBM ढांचे की समग्र समीक्षा हेतु गठित की गई थी।
    - **एस्केप क्लॉज:** प्राकृतिक आपदा, युद्ध या तीव्र आर्थिक गिरावट के समय राजकोषीय घाटे के लक्ष्य में अधिकतम 0.5% तक की छूट प्रदान करता है।
    - **मध्यकालिक व्यय रूपरेखा विवरण:** वित्त अधिनियम 2012 द्वारा अधिनियम की धारा 3 में संशोधन करके इसे चौथे बजटीय विवरण के रूप में जोड़ा गया था।

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर प्रदेश विशेष

इतिहास कला एवं संस्कृति

टॉपिक - 1: उत्तर प्रदेश का प्राचीन इतिहास और महाजनपद काल

उत्तर प्रदेश का भू-भाग प्रागैतिहासिक काल से ही भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रमुख केंद्र रहा है। पाषाण काल, सिंधु घाटी सभ्यता के विस्तार तथा छठी शताब्दी ईसा पूर्व के द्वितीय नगरीकरण में इस क्षेत्र की केंद्रीय भूमिका रही है।

1. प्रागैतिहासिक काल एवं सिंधु सभ्यता का विस्तार (UPPCS विशेष तथ्य)

- **पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण काल:**
    - **बेलन घाटी (प्रयागराज):** यहाँ पुरापाषाण काल से नवपाषाण काल तक के क्रमिक साक्ष्य मिले हैं। लोहंदा नाला (बेलन घाटी) से अस्थि निर्मित **मातृदेवी की प्रतिमा** प्राप्त हुई है।
    - **सराय नाहर राय, दमदमा एवं महदहा (प्रतापगढ़):** भारत में मध्यपाषाण काल के मानव अस्थिपंजर, गर्त-चूल्हे, शवाधान तथा सींग व हड्डी के आभूषण सर्वप्रथम यहीं से प्राप्त हुए।
- **नवपाषाण काल:**
    - **कोलडिहवा (प्रयागराज):** बेलन नदी तट पर स्थित, जहाँ से लगभग 6500–6000 ईसा पूर्व के **धान/चावल की खेती के प्राचीनतम साक्ष्य** (पारंपरिक मान्यता) मिले।
    - **लहुरादेवा (संत कबीर नगर):** नवीनतम पुरातात्विक उत्खननों के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप में **कृषि (चावल) के प्राचीनतम साक्ष्य (लगभग 9000 से 7000 ईसा पूर्व)** यहीं से प्राप्त हुए हैं।
- **हड़प्पा सभ्यता का पूर्वी विस्तार:** आलमगीरपुर (मेरठ, हिंडन नदी तट), हुलास (सहारनपुर), मांडी (मुजफ्फरनगर) तथा सनौली (बागपत—हड़प्पा युगीन शवाधान व रथ साक्ष्य)।

2. 16 महाजनपद काल और उत्तर प्रदेश (6th Century BCE)

बौद्ध ग्रंथ **'अंगुत्तर निकाय'** तथा जैन ग्रंथ **'भगवती सूत्र'** में उल्लिखित 16 महाजनपदों में से **8 महाजनपद** आधुनिक उत्तर प्रदेश में स्थित थे:

1. **काशी:** राजधानी **वाराणसी** (वरुणा और असी नदियों के संगम पर)।

©IASHINDIMEDIUM

2. **कौशल:** राजधानी **श्रावस्ती** (उत्तरी भाग—सहेत-महेत) एवं **कुशावती/अयोध्या** (दक्षिणी भाग; सरयू नदी द्वारा विभाजित)।

3. **वत्स:** राजधानी **कौशाम्बी** (प्रयागराज के समीप, यमुना नदी तट)। यहाँ का प्रसिद्ध पौरव राजा **उदयन** था; बौद्ध भिक्षु पिंडोला भारद्वाज ने उदयन को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था।

4. **कुरु:** राजधानी **इंद्रप्रस्थ** (आधुनिक मेरठ-दिल्ली-थानेश्वर क्षेत्र); बाद में हस्तिनापुर के बाढ़ में बहने पर निचक्षु ने कौशाम्बी को राजधानी बनाया।

5. **पांचाल:** दो भागों में विभक्त था; उत्तरी पांचाल की राजधानी **अहिच्छत्र** (रामनगर, बरेली) तथा दक्षिणी पांचाल की राजधानी **कांपिल्य** (फर्रुखाबाद)।

6. **शूरसेन:** राजधानी **मथुरा** (यमुना तट)। यहाँ यदुवंशी राजा अवंतीपुत्र शासक था।

7. **चेदि:** राजधानी **शुक्तिमती / सोथिवती** (आधुनिक बुंदेलखंड क्षेत्र)। महाभारत कालीन राजा शिशुपाल यहीं का था।

8. **मल्ल (गणराज्य):** दो शाखाएं थीं—एक की राजधानी **कुशीनारा** (कुशीनगर—जहाँ महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ) तथा दूसरी की **पावा** (फाजिलनगर—जहाँ महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्त हुआ)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन पुरातात्विक संदर्भ (2025–2026)

- **कौशाम्बी एवं श्रावस्ती का पुरातात्विक पुनरुद्धार:** राज्य पुरातत्व निदेशालय द्वारा कौशाम्बी में घोषिता राम विहार परिसर तथा श्रावस्ती में अनाथपिंडक द्वारा निर्मित जेतवन महाविहार स्थल के वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण एवं भू-भौतिकीय सर्वेक्षण (GPR Survey) के नए चरण संचालित किए गए।
- **सनौली एवं सिनौली-संस्कृति कॉरिडोर:** बागपत के सनौली उत्खनन स्थल को अंतरराष्ट्रीय वैदिक-हड़प्पा संक्रमणकालीन शोध केंद्र के रूप में विकसित करने और राज्य संग्रहालय लखनऊ में प्राप्त रथ व ताम्र तलवारों के 3D डिजिटल संग्रह का अनावरण किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्राचीन भारतीय इतिहास और 16 महाजनपद काल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' में वर्णित 16 महाजनपदों में से 8 महाजनपद वर्तमान उत्तर प्रदेश के भू-भाग में अवस्थित थे।

2. वत्स महाजनपद की राजधानी कौशाम्बी थी, जहाँ का प्रतापी शासक उदयन था जिसे बौद्ध भिक्षु पिंडोला भारद्वाज ने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था।

3. मल्ल महाजनपद एक राजतंत्रीय राज्य था जिसकी एकमात्र राजधानी कुशीनारा थी।

4. संत कबीर नगर स्थित 'लहुरादेवा' से भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: 16 महाजनपदों में से 8 (काशी, कौशल, वत्स, कुरु, पांचाल, शूरसेन, चेदि, मल्ल) उत्तर प्रदेश में स्थित थे।
    - कथन 2 सत्य है: वत्स की राजधानी कौशाम्बी थी और उदयन यहाँ का प्रसिद्ध राजा था।
    - कथन 3 असत्य है: मल्ल राजतंत्र नहीं, बल्कि एक **गणराज्य (Oligarchy/Republic)** था, और इसकी दो शाखाएं/राजधानियां थीं—कुशीनारा तथा पावा।
    - कथन 4 सत्य है: लहुरादेवा से लगभग 9000–7000 ई.पू. के चावल की खेती के साक्ष्य मिले हैं, जिसने कोलडिहवा के पुराने रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (महाजनपद)	**सूची-II (प्राचीन राजधानी)**
a. उत्तरी पांचाल	1. शुक्तिमती
b. चेदि	2. अहिच्छत्र
c. शूरसेन	3. श्रावस्ती
d. कौशल	4. मथुरा

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **उत्तरी पांचाल:** राजधानी अहिच्छत्र (बरेली के पास रामनगर) थी (जबकि दक्षिणी पांचाल की कांपिल्य थी)।
    - **चेदि:** आधुनिक बुंदेलखंड क्षेत्र, जिसकी राजधानी शुक्तिमती/सोथिवती थी।
    - **शूरसेन:** ब्रज क्षेत्र, जिसकी राजधानी मथुरा थी।
    - **कौशल:** अवध क्षेत्र, जिसकी उत्तरी राजधानी श्रावस्ती थी।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 2: मौर्य, गुप्त और हर्षवर्धन काल में उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश प्राचीन भारतीय साम्राज्यों की प्रशासनिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक गतिविधियों की मुख्य भूमि रहा है। मौर्य, गुप्त और पुष्यभूति (हर्ष) राजवंशों के काल में यह क्षेत्र कला, स्थापत्य और राजनीतिक शक्ति का शीर्ष केंद्र बना।

1. मौर्य काल में उत्तर प्रदेश

- **अशोक के प्रमुख अभिलेख:**
    - **सारनाथ सिंह शीर्ष स्तंभ (वाराणसी):** चुनार के बलुआ पत्थर से निर्मित; इसमें चार सिंह, धर्मचक्र, घोड़ा, बैल, सिंह व हाथी उत्कीर्ण हैं। भारत गणराज्य का राष्ट्रीय प्रतीक यहीं से लिया गया है।
    - **कौशाम्बी स्तंभ लेख:** इसे 'रानी का अभिलेख' भी कहा जाता है (अशोक की रानी कारुवाकी और पुत्र तीवर का उल्लेख)। इसे बाद में अकबर द्वारा इलाहाबाद (प्रयागराज) के किले में स्थापित कराया गया।
    - **लघु शिलालेख:** अहरौरा (मीरजापुर)।
    - **टोपरा (सहारनपुर) एवं मेरठ स्तंभ लेख:** इन दोनों स्तंभों को फिरोज शाह तुगलक द्वारा दिल्ली ले जाया गया था।
- **बौद्ध स्थापत्य:** सारनाथ का **धमेख स्तूप** तथा **धर्मराजिका स्तूप** मौर्य युगीन स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

2. गुप्त काल: मंदिर स्थापत्य एवं अभिलेख (स्वर्ण युग)

उत्तर प्रदेश नागर मंदिर स्थापत्य शैली के प्रारंभिक उद्भव का केंद्र रहा:

- **दशावतार मंदिर (देवगढ़, ललितपुर):** गुप्तकालीन पंचायतन शैली का प्रथम उत्कृष्ट पाषाण मंदिर। इसमें भगवान विष्णु की 'शेषशायी' प्रतिमा उत्कीर्ण है।
- **भीतरगांव मंदिर (कानपुर नगर):** पूर्णतः **ईंटों से निर्मित** (Terracotta) भारत का प्राचीनतम सुरक्षित मंदिर (शिखर युक्त गर्भगृह)।
- **प्रमुख गुप्त अभिलेख:**
    - **प्रयाग प्रशस्ति (प्रयागराज):** समुद्रगुप्त के दरबारी कवि **हरिषेण** द्वारा संस्कृत की चम्पू शैली में उत्कीर्ण; इसमें समुद्रगुप्त के दक्षिणापथ व आर्यावर्त अभियानों का वर्णन है।
    - **भीतरी स्तंभ लेख (सैदपुर, गाजीपुर):** स्कंदगुप्त द्वारा हूणों के आक्रमण को पराजित करने का ऐतिहासिक विवरण।
    - **मनकुंवर बुद्ध प्रतिमा अभिलेख (प्रयागराज):** कुमारगुप्त प्रथम के काल से संबंधित।

3. हर्षवर्धन काल (पुष्यभूति वंश)

- **कन्नौज का उत्कर्ष:** सम्राट हर्ष ने अपनी राजधानी थानेश्वर (हरियाणा) से बदलकर **कन्नौज** (महोदय नगर/कान्यकुब्ज) को बनाया। उत्तर प्रदेश त्रिपक्षीय संघर्ष (पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट) की मुख्य भूमि बना।
- **कन्नौज की धर्म सभा (643 ई.):** चीनी यात्री **ह्वेनसांग (युवान च्वांग)** के सम्मान में महायान बौद्ध मत के प्रचार हेतु 20 दिनों की भव्य सभा आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता स्वयं ह्वेनसांग ने की थी।

©IASHINDIMEDIUM

- **प्रयाग की महामोक्ष परिषद:** हर्ष द्वारा प्रत्येक **पाँचवें वर्ष** प्रयाग (संगम) में सर्वस्व दान (महामोक्ष परिषद) करने की परंपरा चलाई गई (ह्वेनसांग छठी परिषद में उपस्थित था)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन पुरातात्विक संदर्भ (2025–2026)

- **सारनाथ एवं देवगढ़ का यूनेस्को संरक्षण व विरासत गलियारा:** सारनाथ स्थित धमेख व चौखंडी स्तूप तथा ललितपुर के देवगढ़ दशावतार मंदिर परिसर को अंतरराष्ट्रीय बौद्ध व गुप्तकालीन पर्यटन सर्किट से जोड़ने हेतु राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा 3D लेजर स्कैनिंग और उन्नत साइट-प्रबंधन योजना पूरी की गई।
- **कन्नौज का इत्र एवं ऐतिहासिक नगरीय संवर्धन:** कन्नौज की प्राचीन 'महोदय श्री' विरासत को प्रदर्शित करने हेतु पुरातात्विक उत्खनन स्थलों के संरक्षण के साथ 'इंटरनेशनल परफ्यूम म्यूजियम एंड पार्क' के एकीकृत विस्तार को मंजूरी दी गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्राचीन उत्तर प्रदेश के मौर्य एवं गुप्तकालीन इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. फिरोज शाह तुगलक ने मेरठ और टोपरा (सहारनपुर) से अशोक के स्तंभों को स्थानांतरित करवाकर दिल्ली में स्थापित करवाया था।
2. कानपुर स्थित भीतरगांव का गुप्तकालीन मंदिर पूर्णतः पाषाण खंडों (पत्थरों) से निर्मित पंचायतन शैली का मंदिर है।
3. प्रयाग प्रशस्ति की रचना समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण ने संस्कृत भाषा की चम्पू शैली में की थी।
4. गाजीपुर स्थित भीतरी स्तंभ लेख में गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त द्वारा हूणों को पराजित किए जाने का स्पष्ट ऐतिहासिक साक्ष्य मिलता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: फिरोज शाह तुगलक ने टोपरा और मेरठ के अशोक स्तंभों को मंगाकर दिल्ली के कोटला फिरोज शाह और शिकारगाह में स्थापित कराया।
    - कथन 2 असत्य है: भीतरगांव (कानपुर) का मंदिर पत्थरों से नहीं, बल्कि **पूर्णतः पकी हुई ईंटों (Terracotta/Brick-built)** से निर्मित है। पत्थरों से निर्मित पंचायतन शैली का प्रसिद्ध मंदिर **देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर)** है।
    - कथन 3 सत्य है: प्रयाग प्रशस्ति की रचना हरिषेण ने गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू शैली में की थी, जो मूलतः कौशाम्बी स्तंभ पर अंकित थी।
    - कथन 4 सत्य है: सैदपुर भीतरी (गाजीपुर) स्तंभ लेख में स्कंदगुप्त के पराक्रम और हूणों के विरुद्ध उसकी निर्णायक विजय का उल्लेख है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (ऐतिहासिक स्थल / स्मारक)	सूची-II (शासक / राजवंश / संबद्ध तथ्य)
a. दशावतार मंदिर, देवगढ़	1. सम्राट हर्षवर्धन (महायान सभा)
b. भीतरी स्तंभ लेख	2. रानी कारुवाकी का अभिलेख (मौर्य काल)
c. कौशाम्बी स्तंभ लेख	3. स्कंदगुप्त (हूण विजय)
d. महोदय नगर (कन्नौज)	4. गुप्त काल (भगवान विष्णु का शेषशायी रूप)

कूट:

(A) a-4, b-3, c-2, d-1

(B) a-4, b-2, c-3, d-1

(C) a-3, b-4, c-1, d-2

(D) a-2, b-1, c-4, d-3

उत्तर: (A) a-4, b-3, c-2, d-1

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **दशावतार मंदिर (देवगढ़, ललितपुर):** गुप्तकालीन मंदिर जो भगवान विष्णु के दशावतारों तथा शेषशायी विष्णु की मूर्तिकला हेतु प्रसिद्ध है।
    - **भीतरी स्तंभ लेख (गाजीपुर):** गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त से संबंधित है।
    - **कौशाम्बी स्तंभ लेख:** मौर्य सम्राट अशोक द्वारा स्थापित, जिसमें उनकी रानी कारुवाकी द्वारा दिए गए दान का उल्लेख है (रानी का अभिलेख)।
    - **महोदय नगर:** कन्नौज का ऐतिहासिक नाम है, जिसे सम्राट हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी बनाया और वहाँ 643 ई. में प्रसिद्ध धर्म सभा का आयोजन किया।

टॉपिक - 3: उत्तर प्रदेश की मध्यकालीन वास्तुकला (सल्तनत, शर्की, मुग़ल एवं अवध शैली)

उत्तर प्रदेश मध्यकालीन भारत में स्थापत्य कला का प्रमुख केंद्र रहा। यहाँ सल्तनत काल, शर्की राजवंश, मुग़ल काल तथा अवध के नवाबों के अधीन इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का अद्वितीय विकास हुआ।

1. सल्तनत काल एवं जौनपुर की शर्की स्थापत्य शैली

- **सल्तनत युगीन निर्माण:** कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा संभल की जामी मस्जिद और बदायूँ की जामा मस्जिद (इल्तुतमिश द्वारा निर्मित) सल्तनत शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- **शर्की स्थापत्य (जौनपुर - 'सिराज-ए-हिंद'):**
    - **अटाला मस्जिद:** निर्माण 1377 ई. में फिरोज शाह तुगलक ने शुरू कराया तथा **1408 ई. में इब्राहिम शाह शर्की** ने पूर्ण किया। इसमें मीनारें नहीं हैं; इसके विशाल **प्रवेश तोरण (Propylon Screen)** तथा मेहराबी बनावट में हिंदू-इस्लामिक तत्वों का समन्वय झलकता है।
    - **झांझरी मस्जिद एवं लाल दरवाजा मस्जिद:** क्रमशः इब्राहिम शर्की और मुहम्मद शाह शर्की की बेगम राजे बीबी द्वारा निर्मित।
    - **जामा मस्जिद (बड़ी मस्जिद): हुसैन शाह शर्की** द्वारा निर्मित (1470 ई.), जो उच्च चबूतरे पर स्थित है।
    - **शाही पुल (अकबरी पुल, जौनपुर):** गोमती नदी पर मुग़ल काल में मुनीम खान द्वारा बनवाया गया।

2. मुग़ल स्थापत्य: आगरा और फतेहपुर सीकरी

- **बाबर:** पानीपत के अतिरिक्त संभल (जामा मस्जिद) एवं आगरा में 'आराम बाग' (चारबाग शैली का प्रथम रूप)।
- **अकबर कालीन प्रमुख स्मारक:**
    - **आगरा का लाल किला (1565–1573):** लाल बलुआ पत्थर से निर्मित; इसमें जहाँगीरी महल व अकबरी महल स्थित हैं।
    - **फतेहपुर सीकरी (1571–1585):**
        - *बुलंद दरवाजा:* 1572–73 ई. की गुजरात विजय की स्मृति में जामा मस्जिद के दक्षिणी द्वार पर निर्मित (विश्व का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार)।
        - *पंचमहल:* पिरामिडनुमा 5-मंजिला ढांचा (बौद्ध विहार शैली से प्रेरित)।
        - *अन्य प्रमुख संरचनाएं:* शेख सलीम चिश्ती की दरगाह (मूलतः लाल पत्थर, जहांगीर काल में श्वेत संगमरमर), दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास (मध्य स्तंभ), जोधाबाई महल, बीरबल महल तथा इबादतखाना।
- **जहाँगीर काल:**
    - **अकबर का मकबरा (सिकंदरा, आगरा):** पाँच मंजिला गुंबदविहीन संरचना।
    - **एत्मादुद्दौला का मकबरा (आगरा):** नूरजहाँ द्वारा पिता मिर्जा गियासबेग की स्मृति में निर्मित (1626–1628)। यह भारत की पहली इमारत है जो **पूर्णतः श्वेत संगमरमर** से बनी तथा जिसमें उत्कृष्ट **पित्रा-ड्यूरा (Pietra Dura - पच्चीकारी)** तकनीक का व्यापक प्रयोग हुआ।
- **शाहजहाँ काल (स्वर्ण युग):**
    - **ताजमहल (1631–1648):** वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी व ईसा खां; मकराना संगमरमर, चारबाग पद्धति, उभरी हुई दोहरी गुंबद व्यवस्था।
    - **मोती मस्जिद (आगरा किला):** पूर्णतः श्वेत संगमरमर से निर्मित।

3. अवध की स्थापत्य शैली (लखनऊ)

- **बड़ा इमामबाड़ा (आसफी इमामबाड़ा):** नवाब **आसफ-उद-दौला** द्वारा 1784 ई. के अकाल राहत कार्य के रूप में निर्मित। इसकी छत बिना किसी खंभे या बीम के सहारे टिकी है (भूलभुलैया)। इसके सामने **रूमी दरवाजा** (तुर्की गेटवे शैली) स्थित है।

©IASHINDIMEDIUM

- **छोटा इमामबाड़ा (हुसैनाबाद इमामबाड़ा):** नवाब मुहम्मद अली शाह द्वारा 1837–38 ई. में निर्मित।
- **कैसरबाग पैलेस व छतर मंजिल:** नवाब वाजिद अली शाह तथा गाजी-उद-दीन हैदर द्वारा इंडो-यूरोपीय शैली में निर्मित।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन सांस्कृतिक संदर्भ (2025–2026)

- **जौनपुर शर्की स्मारकों का जीर्णोद्धार एवं यूनेस्को अस्थायी सूची प्रस्ताव:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) तथा उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा अटाला मस्जिद और जामा मस्जिद (जौनपुर) के संरचनात्मक स्थिरीकरण के साथ शर्की स्थापत्य को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सर्किट में प्रमुखता देने की योजना को गति दी गई।
- **आगरा एवं लखनऊ हेरिटेज कॉरिडोर परियोजना:** फतेहपुर सीकरी और सिकंदरा के स्मारकों के आसपास पर्यावरण-अनुकूल बफर जोन विकसित किए गए तथा लखनऊ के बड़ा इमामबाड़ा और रूमी दरवाजा परिसर का उन्नत रात्रि-प्रकाश एवं पैदल यात्री संरक्षण गलियारा पूर्ण रूप से क्रियान्वित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के मध्यकालीन स्थापत्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जौनपुर स्थित अटाला मस्जिद का निर्माण कार्य फिरोज शाह तुगलक ने प्रारंभ करवाया था, जिसे शर्की सुल्तान इब्राहिम शाह शर्की ने पूर्ण कराया।
2. फतेहपुर सीकरी स्थित 'पंचमहल' एक पाँच मंजिला पिरामिडनुमा भवन है, जिसकी वास्तुकला बौद्ध विहारों की रूपरेखा से प्रभावित प्रतीत होती है।
3. आगरा स्थित एत्मादुद्दौला का मकबरा भारत का पहला ऐसा स्मारक है जो पूर्णतः श्वेत संगमरमर से निर्मित है और जिसमें पित्रा-ड्यूरा (Pietra Dura) का व्यापक उपयोग किया गया है।
4. लखनऊ के बड़ा इमामबाड़े का निर्माण नवाब शुजाउद्दौला द्वारा अवध की राजधानी को फैजाबाद से लखनऊ स्थानांतरित करने के उपलक्ष्य में करवाया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: अटाला मस्जिद 1408 में इब्राहिम शर्की द्वारा पूर्ण कराई गई; पंचमहल 5 मंजिला खुला स्तंभित भवन है जो बौद्ध स्थापत्य की नकल है; एत्मादुद्दौला का मकबरा (नूरजहाँ द्वारा निर्मित) पूर्ण संगमरमर और पित्रा-ड्यूरा पच्चीकारी का आरंभिक उत्कृष्ट उदाहरण है।
    - कथन 4 असत्य है: लखनऊ के बड़ा इमामबाड़े (आसफी इमामबाड़ा) का निर्माण नवाब **आसफ-उद-दौला** ने वर्ष 1784 में गंभीर अकाल के समय गरीबों को रोजगार उपलब्ध कराने हेतु करवाया था, न कि शुजाउद्दौला ने।

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (मध्यकालीन स्मारक)	**सूची-II (स्थान / निर्माता)**
a. रूमी दरवाजा	1. इब्राहिम शाह शर्की (जौनपुर)
b. बुलंद दरवाजा	2. आगरा (नूरजहाँ द्वारा निर्मित)
c. अटाला मस्जिद	3. लखनऊ (नवाब आसफ-उद-दौला)
d. एत्मादुद्दौला का मकबरा	4. फतेहपुर सीकरी (अकबर द्वारा निर्मित)

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **रूमी दरवाजा:** लखनऊ में बड़ा इमामबाड़े के निकट स्थित विशाल 60 फीट ऊँचा प्रवेश द्वार, जिसे नवाब आसफ-उद-दौला ने 1784 में बनवाया।
    - **बुलंद दरवाजा:** फतेहपुर सीकरी में अकबर द्वारा गुजरात विजय की स्मृति में निर्मित विशाल प्रवेश द्वार।
    - **अटाला मस्जिद:** जौनपुर में शर्की शैली की मुख्य मस्जिद, जिसे 1408 ई. में इब्राहिम शाह शर्की ने पूरा किया।
    - **एत्मादुद्दौला का मकबरा:** यमुना नदी के किनारे आगरा में स्थित, जिसे नूरजहाँ ने 1626-28 के मध्य बनवाया था।

टॉपिक - 4: 1857 की क्रांति में उत्तर प्रदेश के प्रमुख केंद्र, नायक एवं दमनकर्ता

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश की भूमि पर केंद्रित रहा। लॉर्ड डलहौजी की 'हड़प नीति' (Doctrine of Lapse), अवध का कुशासन के आधार पर विलय (1856), और चर्बीयुक्त कारतूसों के विरोध ने इस आंदोलन को जनविद्रोह का स्वरूप दिया।

1. क्रांति का सूत्रपात एवं प्रसार

- **प्रारंभिक चिंगारी:** 29 मार्च 1857 को 34वीं नेटिव इन्फैंट्री (बैरकपुर) के सैनिक **मंगल पांडे** (निवासी: नगवा, बलिया, उत्तर प्रदेश) ने चर्बीयुक्त कारतूस के विरोध में लेफ्टिनेंट बॉघ और मेजर ह्यूसन पर गोली चलाई। 8 अप्रैल 1857 को उन्हें फांसी दी गई।

©IASHINDIMEDIUM

- **क्रांति का औपचारिक विस्फोट: 10 मई 1857** को **मेरठ** छावनी की 20वीं नेटिव इन्फैंट्री तथा 3री लाइट कैवेलरी के सैनिकों ने 'कदम सिंह' के नेतृत्व में खुला विद्रोह किया और "दिल्ली चलो" का नारा देकर 11 मई को दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- **प्रतीक चिन्ह:** कमल का फूल और रोटी (चपाती)।

2. उत्तर प्रदेश के प्रमुख विद्रोही केंद्र, नायक एवं ब्रिटिश दमनकर्ता

प्रमुख केंद्र	विद्रोही नायक / नेतृत्वकर्ता	प्रमुख घटनाएँ / विशेष तथ्य	ब्रिटिश दमनकर्ता
कानपुर	**नाना साहब (धोंधू पंत)** एवं **तात्या टोपे (रामचंद्र पांडुरंग)**	पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने स्वयं को पेशवा घोषित किया; अजीमुल्ला खां उनके मुख्य सलाहकार/सलाहकार थे। सतीचौरा व बीबीघर की घटना।	**कर्नल कॉलिन कैंपबेल**
लखनऊ (अवध)	**बेगम हजरत महल** एवं अल्पवयस्क पुत्र **बिरजिस कादिर**	मौलवी अहमदुल्लाह शाह और राजा जेलल सिंह का सक्रिय सहयोग। हेनरी लॉरेंस रेजिडेंसी में मारा गया। 21 मार्च 1858 को लखनऊ पर अंग्रेजों का पुनः अधिकार हुआ; बेगम नेपाल चली गईं।	**कॉलिन कैंपबेल** एवं जेम्स आउट्रम
झाँसी	**रानी लक्ष्मीबाई (मणिकर्णिका)**	राजा गंगाधर राव के दत्तक पुत्र आनंद राव (दामोदर राव) को मान्यता न देने पर विद्रोह। 17-18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में लड़ते हुए वीरगति।	**जनरल ह्यूरोज़** (कथन: "यहाँ सोई हुई महिला विद्रोहियों में एकमात्र मर्द है")
प्रयागराज (इलाहाबाद)	**मौलवी लियाकत अली**	उन्होंने खुसरो बाग को मुख्यालय बनाया और खुद को गवर्नर घोषित किया। 1 नवंबर 1858 को लॉर्ड कैनिंग ने यहीं महारानी विक्टोरिया का घोषणा-पत्र पढ़ा।	**कर्नल जेम्स नील**
बरेली (रुहेलखंड)	**खान बहादुर खान**	रुहेला सरदार के पोते, जिन्होंने स्वयं को नवाब नाजिम घोषित किया।	**विंसेंट आयर** एवं कॉलिन कैंपबेल
फैजाबाद (अयोध्या)	**मौलवी अहमदुल्लाह शाह (डंका शाह)**	मूलतः तमिलनाडु/फैजाबाद; अंग्रेजों के विरुद्ध 'जिहाद' का आह्वान किया। अंग्रेजों ने इन पर ₹50,000 का नकद इनाम घोषित किया था। पुवायां	**कॉलिन कैंपबेल**

©IASHINDIMEDIUM

प्रमुख केंद्र	विद्रोही नायक / नेतृत्वकर्ता	प्रमुख घटनाएँ / विशेष तथ्य	ब्रिटिश दमनकर्ता
		(शाहजहांपुर) के राजा जगन्नाथ सिंह ने धोखे से हत्या कराई।	
मथुरा	**देवी सिंह** एवं **कदम सिंह**	स्थानीय किसानों का नेतृत्व किया।	ब्रिटिश सेना
कालपी/ग्वालियर	**तात्या टोपे**	तात्या टोपे को उनके मित्र मानसिंह के विश्वासघात के बाद 1859 में शिवपुरी में फांसी दी गई।	ह्यूरोज़ एवं नेपियर

- **अन्य क्षेत्रीय नायक (UPPCS के लिए विशेष):**
    - **बड़ौत (बागपत):** शाह मल (सिंचाई नहरों व संचार व्यवस्था को काटा)।
    - **बांदा:** नवाब अली बहादुर द्वितीय।
    - **फतेहपुर:** हिकमतउल्ला।
    - **गोरखपुर:** गजाधर सिंह।
    - **कुशीनगर/बस्ती:** उदय प्रताप सिंह।
    - **जौनपुर:** गुलाब सिंह।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन ऐतिहासिक संदर्भ (2025–2026)

- **मेरठ और झांसी '1857 हेरिटेज वॉक' कॉरिडोर:** उत्तर प्रदेश पर्यटन एवं संस्कृति विभाग द्वारा मेरठ स्थित 1857 क्रांति संग्रहालय, शहीद स्मारक तथा झांसी के रानी लक्ष्मीबाई किले के संरक्षण के लिए डिजिटल इंटरप्रिटेशन सेंटर और लाइट-एंड-साउंड शो का नया तकनीकी संवर्धन पूरा किया गया।
- **मौलवी अहमदुल्लाह शाह एवं राजा चेत सिंह पर शोध चेयर:** 1857 के अल्पज्ञात जननायकों को पाठ्यक्रम में स्थान देने और फैजाबाद के मौलवी अहमदुल्लाह शाह के राष्ट्रीय योगदान पर शोध को गति देने हेतु अवध विश्वविद्यालय में विशेष शोध केंद्र की स्थापना की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 1857 की क्रांति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की औपचारिक शुरुआत 10 मई 1857 को मेरठ छावनी से हुई थी।
2. अंग्रेजों ने फैजाबाद में विद्रोह का नेतृत्व करने वाले मौलवी अहमदुल्लाह शाह को पकड़ने के लिए ₹50,000 का नकद इनाम घोषित किया था।

©IASHINDIMEDIUM

3. ब्रिटिश सेनापति जनरल ह्यूरोज़ ने बेगम हजरत महल के शौर्य से प्रभावित होकर कहा था कि "विद्रोहियों में यहाँ सोई हुई महिला एकमात्र मर्द है।"

4. 1 नवंबर 1858 को लॉर्ड कैनिंग ने महारानी विक्टोरिया का ऐतिहासिक घोषणा-पत्र प्रयागराज (इलाहाबाद) के मिंटो पार्क में पढ़कर सुनाया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: 10 मई 1857 को मेरठ से क्रांति भड़की; मौलवी अहमदुल्लाह शाह अंग्रेजों के सबसे कट्टर विरोधी थे और उन पर ₹50,000 का इनाम था; 1 नवंबर 1858 को प्रयागराज में लॉर्ड कैनिंग ने महारानी विक्टोरिया का घोषणा-पत्र पढ़ा, जिसके तहत ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त होकर ब्रिटिश क्राउन के अधीन आ गया।
    - कथन 3 असत्य है: जनरल ह्यूरोज़ ने यह ऐतिहासिक कथन बेगम हजरत महल के लिए नहीं, बल्कि **झांसी की रानी लक्ष्मीबाई** की वीरता और शहादत से प्रभावित होकर कहा था।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (1857 के विद्रोही नायक)	**सूची-II (संबद्ध केंद्र / क्षेत्र)**
a. खान बहादुर खान	1. प्रयागराज (इलाहाबाद)
b. मौलवी लियाकत अली	2. बड़ौत (बागपत)
c. शाह मल	3. बरेली
d. अजीमुल्ला खां	4. कानपुर (नाना साहब के मुख्य सलाहकार)

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-2, c-1, d-4

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

©IASHINDIMEDIUM

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **खान बहादुर खान:** रुहेलखंड/बरेली में 1857 के विद्रोह का मुख्य नेतृत्व संभाला।
    - **मौलवी लियाकत अली:** प्रयागराज (इलाहाबाद) में विद्रोह का नेतृत्व किया और खुसरो बाग को अपना मुख्यालय बनाया।
    - **शाह मल:** पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बागपत (बड़ौत परगना) के किसानों को संगठित कर अंग्रेजों की संचार लाइनों को ध्वस्त किया।
    - **अजीमुल्ला खां:** कानपुर में पेशवा नाना साहब के सचिव और मुख्य रणनीतिकार थे, जिन्होंने लंदन और फ्रांस की यात्रा भी की थी।

टॉपिक - 5: स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी आंदोलन और उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश (तत्कालीन संयुक्त प्रांत) 1920 और 1930 के दशकों में भारतीय क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का मुख्य वैचारिक और रणनीतिक केंद्र रहा। असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद युवाओं का मोहभंग हुआ और उन्होंने सशस्त्र क्रांति के माध्यम से पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने का मार्ग चुना।

1. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)

- **स्थापना: अक्टूबर 1924** में **कानपुर** में शचींद्रनाथ सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल, योगेश चंद्र चटर्जी और चंद्रशेखर आज़ाद द्वारा।
- **घोषणापत्र: 'द रिवोल्यूशनरी'** (The Revolutionary), जिसका उद्देश्य संगठित सशस्त्र क्रांति द्वारा 'संयुक्त राज्य भारत' (Federal Republic of the United States of India) की स्थापना करना था।
- **काकोरी ट्रेन एक्शन (9 अगस्त 1925):**
    - HRA के क्रांतिकारियों द्वारा लखनऊ के निकट काकोरी और आलमनगर के बीच **'8-डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन'** से सरकारी खजाने को लूटा गया।
    - **अग्रणी नायक:** राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी, रोशन सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, शचींद्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्त आदि।
    - **मुकदमा व सजा (दिसंबर 1927 में शहादत):**
        1. **पंडित राम प्रसाद बिस्मिल:** गोरखपुर जेल (अंतिम शब्द: *"सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है..."*)
        2. **अशफाक उल्ला खान:** फैजाबाद (अयोध्या) जेल (रिकॉर्ड पर फांसी पाने वाले पहले मुस्लिम क्रांतिकारी)
        3. **राजेंद्र लाहिड़ी:** गोंडा जेल (इन्हें निर्धारित तिथि से दो दिन पूर्व 17 दिसंबर को फांसी दी गई)
        4. **ठाकुर रोशन सिंह:** नैनी सेंट्रल जेल (प्रयागराज)
        - *नोट:* चंद्रशेखर आज़ाद इस मामले में पुलिस की गिरफ्त से बाहर रहे।

©IASHINDIMEDIUM

2. हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)

- **पुनर्गठन: सितंबर 1928** में दिल्ली के **फ़िरोज़ शाह कोटला** मैदान में चंद्रशेखर आज़ाद के नेतृत्व और भगत सिंह की वैचारिक प्रेरणा से HRA का नाम बदलकर **HSRA** किया गया। इसने समाजवाद को अपना अंतिम लक्ष्य घोषित किया।
- **चंद्रशेखर आज़ाद की शहादत (27 फरवरी 1931):** प्रयागराज के **अल्फ्रेड पार्क** (वर्तमान में चंद्रशेखर आज़ाद पार्क) में पुलिस अधिकारी नॉट-बावर के साथ अंतिम गोली तक लड़ते हुए स्वयं को गोली मारकर वे 'आज़ाद' ही शहीद हुए।
- **भगवती चरण वोहरा:** क्रांतिकारी दस्तावेज **'द फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब'** (The Philosophy of the Bomb) के लेखक। रावी नदी के तट पर बम परीक्षण के दौरान वीरगति को प्राप्त हुए।

3. अन्य क्रांतिकारी घटनाएं एवं समानांतर सरकार

- **काशी षड्यंत्र केस एवं बीएचयू केंद्र:** बनारस क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों (शचींद्रनाथ सान्याल का 'अनुशीलन समिति' केंद्र) की गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा।
- **भारत छोड़ो आंदोलन (1942) - बलिया में समानांतर सरकार: चित्तू पांडेय** ('बलिया के शेर') के नेतृत्व में देश की पहली समानांतर सरकार (National Government) गठित हुई, जिसने जेल तोड़कर सभी बंदियों को रिहा कराया।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **'काकोरी ट्रेन एक्शन' शताब्दी समारोह (1925–2025/26):** उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा काकोरी एक्शन के 100 वर्ष पूर्ण होने पर वर्ष भर चलने वाले स्मृति कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। लखनऊ स्थित काकोरी शहीद स्मारक स्थल का आधुनिक ऑडिटोरियम, लाइट-एंड-साउंड शो तथा काकोरी एक्शन पर आधारित डिजिटल इंटरप्रिटेशन सेंटर के साथ विस्तार किया गया।
- **शहीद शोध पीठ एवं डिजिटल आर्काइव्स:** गोरखपुर, अयोध्या, गोंडा और प्रयागराज जेलों में चारों शहीदों की कोठरियों को राष्ट्रीय प्रेरणा स्थलों के रूप में नवीनीकृत कर उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार (लखनऊ) में काकोरी केस डायरी एवं अदालती दस्तावेजों को सार्वजनिक डिजिटल शोध हेतु जारी किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) तथा काकोरी ट्रेन एक्शन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. HRA की स्थापना अक्टूबर 1924 में कानपुर में शचींद्रनाथ सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल और चंद्रशेखर आज़ाद द्वारा की गई थी।
2. काकोरी ट्रेन एक्शन 9 अगस्त 1925 को सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन के सरकारी खजाने को लूटने से संबंधित था।
3. काकोरी षड्यंत्र मुकदमे के तहत क्रांतिकारी राजेंद्र लाहिड़ी को गोरखपुर जेल में फांसी दी गई थी।
4. अशफाक उल्ला खान को ब्रिटिश शासन द्वारा फैजाबाद (अयोध्या) जेल में फांसी दी गई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: HRA की स्थापना अक्टूबर 1924 में कानपुर में हुई थी; काकोरी एक्शन 9 अगस्त 1925 को अंजाम दिया गया; और अशफाक उल्ला खान को फैजाबाद (अयोध्या) जेल में फांसी दी गई थी।
    - कथन 3 असत्य है: राजेंद्र लाहिड़ी को **गोंडा जेल** में (नियत तिथि से दो दिन पूर्व 17 दिसंबर 1927 को) फांसी दी गई थी। **गोरखपुर जेल** में पंडित राम प्रसाद बिस्मिल को फांसी दी गई थी।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (काकोरी एक्शन के अमर शहीद)	**सूची-II (संबद्ध फांसी स्थल / जेल)**
a. राम प्रसाद बिस्मिल	1. नैनी सेंट्रल जेल, प्रयागराज
b. अशफाक उल्ला खान	2. गोंडा जेल
c. राजेंद्र लाहिड़ी	3. फैजाबाद (अयोध्या) जेल
d. ठाकुर रोशन सिंह	4. गोरखपुर जेल

कूट:

(A) a-4, b-3, c-2, d-1

(B) a-4, b-2, c-3, d-1

(C) a-3, b-4, c-1, d-2

(D) a-2, b-1, c-4, d-3

उत्तर: (A) a-4, b-3, c-2, d-1

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **राम प्रसाद बिस्मिल:** 19 दिसंबर 1927 को गोरखपुर जेल में फांसी।
    - **अशफाक उल्ला खान:** 19 दिसंबर 1927 को फैजाबाद जेल में फांसी।
    - **राजेंद्र लाहिड़ी:** 17 दिसंबर 1927 को गोंडा जेल में फांसी।
    - **ठाकुर रोशन सिंह:** 19 दिसंबर 1927 को नैनी (प्रयागराज) जेल में फांसी (यद्यपि वे प्रत्यक्ष रूप से काकोरी घटना में ट्रेन पर मौजूद नहीं थे, परंतु संगठन से जुड़े होने के कारण उन्हें मृत्युदंड दिया गया)।

©IASHINDIMEDIUM

भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन

टॉपिक - 1: उत्तर प्रदेश का भौगोलिक विस्तार, सीमाएं और जिले

उत्तर प्रदेश भारत के उत्तर-मध्य भाग में स्थित एक सीमांत राज्य है। ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से यह भारत के विशाल उत्तरी मैदान (गंगा का मैदान) का केंद्रीय हिस्सा है।

1. अक्षांशीय व देशांतरीय विस्तार तथा क्षेत्रफल

- **अक्षांशीय विस्तार:** $23°52'$ उत्तरी अक्षांश से $30°24'$ उत्तरी अक्षांश तक (कुल अक्षांशीय विस्तार: लगभग $6°32'$)।
- **देशांतरीय विस्तार:** $77°05'$ पूर्वी देशांतर से $84°38'$ पूर्वी देशांतर तक (कुल देशांतरीय विस्तार: लगभग $7°33'$)।
- **मानक समय रेखा (IST):** भारत की मानक समय रेखा ($82°30'$ पूर्वी देशांतर) उत्तर प्रदेश के **प्रयागराज (नैनी/मीरजापुर)** से होकर गुजरती है।
- **क्षेत्रफल व आकार:**

©IASHINDIMEDIUM

- आकार: **लंबवत (Vertical/Irregular)**।
- कुल क्षेत्रफल: **2,40,928 वर्ग किमी**, जो भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (32,87,263 वर्ग किमी) का 7.33% है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से स्थान: देश में **चौथा स्थान** (क्रम: 1. राजस्थान, 2. मध्य प्रदेश, 3. महाराष्ट्र, 4. उत्तर प्रदेश)।

- **लंबाई व चौड़ाई:** पूर्व से पश्चिम लंबाई **650 किमी** तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई **240 किमी** है।

2. प्रशासनिक सीमावर्ती जिले (चरम बिंदु)

- **सबसे उत्तरी जिला: सहारनपुर**
- **सबसे दक्षिणी जिला: सोनभद्र**
- **सबसे पूर्वी जिला: बलिया**
- **सबसे पश्चिमी जिला: शामली**

3. सीमावर्ती राज्य एवं देश (8 राज्य + 1 केंद्रशासित प्रदेश + 1 अंतर्राष्ट्रीय सीमा)

उत्तर प्रदेश की सीमाएं कुल **9 इकाइयों (8 राज्य + 1 UT)** तथा **1 अंतर्राष्ट्रीय सीमा (नेपाल)** को स्पर्श करती हैं:

दिशा / राज्य / देश	स्पर्श करने वाले उत्तर प्रदेश के जिले	संख्या
नेपाल (अंतर्राष्ट्रीय सीमा)	पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज (लगभग 579 किमी सीमा)।	7 जिले
उत्तराखंड	सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत।	7 जिले
हिमाचल प्रदेश	केवल **सहारनपुर** (सबसे छोटी सीमा)।	1 जिला
हरियाणा	सहारनपुर, शामली, बागपत, गौतमबुद्ध नगर, अलीगढ़, मथुरा।	6 जिले
दिल्ली (UT)	गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर।	2 जिले
राजस्थान	मथुरा, आगरा।	2 जिले
मध्य प्रदेश	आगरा, इटावा, जालौन, झांसी, ललितपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, प्रयागराज, मिर्जापुर, सोनभद्र (सर्वाधिक लंबी सीमा)।	11 जिले
छत्तीसगढ़	केवल **सोनभद्र**।	1 जिला

©IASHINDIMEDIUM

दिशा / राज्य / देश	स्पर्श करने वाले उत्तर प्रदेश के जिले	संख्या
झारखंड	केवल **सोनभद्र**।	1 जिला
बिहार	सोनभद्र, चंदौली, गाजीपुर, बलिया, देवरिया, कुशीनगर, महाराजगंज।	7 जिले

- **सोनभद्र की विशिष्टता:** यह भारत का एकमात्र ऐसा जिला है जो **चार राज्यों** (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार) की सीमाओं को स्पर्श करता है।
- **सहारनपुर की विशिष्टता:** यह **तीन राज्यों** (उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा) की सीमाओं को स्पर्श करता है।
- **ललितपुर:** यह जिला तीन ओर से मध्य प्रदेश से घिरा हुआ है तथा उत्तर प्रदेश के केवल एक जिले (झांसी) को स्पर्श करता है।

4. क्षेत्रफल के अनुसार जिले (शीर्ष एवं न्यूनतम)

- **सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले 4 जिले:**
    1. लखीमपुर खीरी (7,680 वर्ग किमी)
    2. सोनभद्र (6,788 वर्ग किमी)
    3. हरदोई
    4. सीतापुर
- **न्यूनतम क्षेत्रफल वाले 4 जिले:**
    1. हापुड़ (660 वर्ग किमी - सबसे छोटा)
    2. गाजियाबाद
    3. भदोही (संत रविदास नगर)
    4. शामली

5. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **उत्तर प्रदेश राज्य राजधानी क्षेत्र (UP-SCR) का वैधानिक गठन:** राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) की तर्ज पर लखनऊ और उसके आसपास के जिलों के नियोजित विकास हेतु 'राज्य राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण' को पूर्ण वैधानिक रूप प्रदान किया गया। इसके अंतर्गत **6 जिले**—लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, बाराबंकी, सीतापुर और हरदोई शामिल किए गए हैं।
- **नेपाल सीमा अवसंरचना एवं इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट (ICP):** बहराइच (रुपईडीहा) के बाद महाराजगंज के सोनौली सीमा पर अत्याधुनिक 'इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट' (ICP) के पूर्ण परिचालन के साथ खुली सीमा की निगरानी हेतु भारत-नेपाल सीमा सड़क गलियारे का निर्माण कार्य तेज किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के भौगोलिक विस्तार और सीमावर्ती जिलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

©IASHINDIMEDIUM

1. उत्तर प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 7.33% है और यह क्षेत्रफल के आधार पर देश का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है।
2. सोनभद्र भारत का एकमात्र ऐसा जिला है जिसकी सीमाएं देश के चार राज्यों—मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और बिहार से मिलती हैं।
3. उत्तर प्रदेश के सात जिले नेपाल के साथ लगभग 579 किमी लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करते हैं।
4. उत्तर प्रदेश का सबसे पश्चिमी जिला शामली तथा सबसे उत्तरी जिला सहारनपुर है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 असत्य है: उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल का 7.33% अवश्य है, परंतु क्षेत्रफल के आधार पर यह देश का **चौथा** (Fourth) सबसे बड़ा राज्य है (राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद), न कि तीसरा।
    - कथन 2 सत्य है: सोनभद्र की सीमाएं 4 राज्यों (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार) को स्पर्श करती हैं।
    - कथन 3 सत्य है: नेपाल के साथ उत्तर प्रदेश के 7 जिले (पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर और महाराजगंज) सीमा बनाते हैं।
    - कथन 4 सत्य है: राज्य के चरम बिंदु—सबसे पूर्वी जिला बलिया, सबसे पश्चिमी शामली, सबसे उत्तरी सहारनपुर तथा सबसे दक्षिणी सोनभद्र है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (उत्तर प्रदेश के जिले)	**सूची-II (संबद्ध भौगोलिक विशेषता)**
a. लखीमपुर खीरी	1. प्रदेश का सबसे छोटा जिला (क्षेत्रफल में)
b. हापुड़	2. तीन राज्यों (उत्तराखंड, हिमाचल, हरियाणा) की सीमा से लगा
c. ललितपुर	3. प्रदेश का सबसे बड़ा जिला (क्षेत्रफल में)
d. सहारनपुर	4. तीन ओर से मध्य प्रदेश से घिरा हुआ

©IASHINDIMEDIUM

कूट:

(A) a-3, b-1, c-4, d-2

(B) a-3, b-2, c-4, d-1

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-4, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **लखीमपुर खीरी:** क्षेत्रफल (7,680 वर्ग किमी) की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है।
    - **हापुड़:** मात्र 660 वर्ग किमी क्षेत्रफल के साथ उत्तर प्रदेश का सबसे छोटा जिला है।
    - **ललितपुर:** दक्षिण में स्थित यह जिला तीन दिशाओं से मध्य प्रदेश से घिरा है और उत्तर प्रदेश के केवल झांसी जिले से जुड़ा है।
    - **सहारनपुर:** प्रदेश का सबसे उत्तरी जिला, जो उत्तराखंड, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश (तीनों) को स्पर्श करता है।

टॉपिक - 2: उत्तर प्रदेश का भू-आकृतिक विभाजन (भाबर, तराई एवं मैदानी क्षेत्र)

भौतिक संरचना एवं धरातलीय स्वरूप के आधार पर उत्तर प्रदेश को उत्तर से दक्षिण मुख्यतः **तीन स्पष्ट भू-आकृतिक प्रदेशों** में विभाजित किया जाता है:

1. **भाबर एवं तराई का क्षेत्र**
2. **मध्य का विशाल मैदानी भाग (गंगा-यमुना का मैदान)**
3. **दक्षिण का पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्र (बुंदेलखंड व बघेलखंड का पठार)**

1. भाबर एवं तराई क्षेत्र (उत्तरी पेटी)

यह शिवालिक पर्वत श्रेणियों की तलहटी में पश्चिम (सहारनपुर) से लेकर पूर्व (कुशीनगर/महराजगंज) तक एक संकीर्ण पट्टी के रूप में विस्तृत है:

- **भाबर क्षेत्र (Bhabar Region):**
    - **विस्तार व चौड़ाई:** शिवालिक के गिरिपाद में सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत आदि जिलों में विस्तृत। पश्चिम में इसकी चौड़ाई लगभग **34 किमी** है, जो पूर्व की ओर बढ़ते हुए निरंतर संकरी होती जाती है।
    - **मृदा व संरचना:** कंकड़, पत्थर, बजरी और मोटे बालू से निर्मित छिद्रयुक्त (Porous) जलोढ़ पंख।
    - **जलविज्ञान:** अत्यधिक पारगम्यता (Permeability) के कारण पर्वतों से उतरने वाली नदियाँ इस क्षेत्र में **भूमिगत (अदृश्य)** हो जाती हैं। यह क्षेत्र कृषि कार्य हेतु प्रायः अनुपयुक्त है।
- **तराई क्षेत्र (Tarai Region):**

- **विस्तार:** भाबर के ठीक दक्षिण में समानांतर फैली दलदली पट्टी। पूर्व (कुशीनगर, देवरिया, महराजगंज, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर, बहराइच, लखीमपुर खीरी) में इसकी चौड़ाई अधिक (लगभग 80-90 किमी) है, जबकि पश्चिम में यह संकरी हो जाती है।
- **विशेषताएँ:** भाबर में विलुप्त नदियाँ यहाँ पुनः धरातल पर प्रकट होती हैं, जिससे अत्यधिक नमी, दलदल और जलभराव का निर्माण होता है। यहाँ की मृदा बारीक कणों वाली, उपजाऊ और कांप युक्त होती है।
- **वनस्पति व कृषि:** घने पर्णपाती वन तथा ऊँची सवाना घास (मूंज, कांस)। जल-आधिक्य के कारण यह **गन्ना (Sugarcane) एवं धान (Paddy)** की सघन खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त है।

2. मध्य का मैदानी भाग (गंगा-यमुना का मैदान)

उत्तर के भाबर-तराई तथा दक्षिण के विंध्य पठार के मध्य स्थित यह विशाल मैदान गंगा और उसकी सहायक नदियों (यमुना, रामगंगा, गोमती, घाघरा, गंडक) द्वारा लाए गए अवसादों से निर्मित अत्यंत उपजाऊ जलोढ़ मैदान है:

- **भौगोलिक वर्गीकरण:**
  1. **ऊपरी गंगा का मैदान:** यमुना से लेकर रामगंगा मैदान तक (रूहेलखंड व पश्चिमी जिले); ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व।
  2. **मध्य गंगा का मैदान:** अवध एवं पूर्वांचल के मैदानी जिले; अत्यधिक समतल और बाढ़-प्रवण।
- **मृदा संरचना के आधार पर विभाजन:**
  - **बांगर (Bangar):** पुरातन जलोढ़ (Old Alluvium); यह बाढ़ के जल की पहुँच से दूर ऊँचे स्थलों पर स्थित है। इसमें चूनेदार कंकड़ ग्रंथियाँ पाई जाती हैं। अनुपयुक्त सिंचाई वाले भागों में 'रेह' या 'ऊसर' (Kallar) की परत बन जाती है।
  - **खादर (Khadar):** नवीन जलोढ़ (New Alluvium); नदी घाटियों के निचले कछारी क्षेत्र, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का नया कांप जमा होता है। यह सर्वाधिक उर्वर मृदा है, जिसमें रासायनिक उर्वरकों की न्यूनतम आवश्यकता होती है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **तराई इको-सेंसिटिव जोन और जलभराव प्रबंधन:** राज्य सरकार द्वारा तराई क्षेत्र (पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच) में जलवायु परिवर्तन जनित बाढ़ और जलभराव से निपटने हेतु 'डच फ्लड मैनेजमेंट मॉडल' के तहत ड्रेनेज रिस्टोरेशन परियोजना संचालित की गई।
- **तराई एलीफेंट रिजर्व (TER) एवं दुधवा कॉरिडोर संरक्षण:** उत्तर प्रदेश के दूसरे हाथी अभयारण्य (TER - लखीमपुर, बहराइच व पीलीभीत क्षेत्र) के अंतर्गत भाबर-तराई बायो-डायवर्सिटी बेल्ट में मानव-वन्यजीव संघर्ष नियंत्रण हेतु एआई-आधारित अर्ली वार्निंग सेंसर नेटवर्क का विस्तार किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के भौतिक विभाजन एवं भू-आकृतिक लक्षणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भाबर क्षेत्र का निर्माण कंकड़-पत्थर और बजरी युक्त अत्यंत पारगम्य अवसादों से हुआ है, जिसके कारण छोटी नदियाँ यहाँ धरातल पर अदृश्य (भूमिगत) हो जाती हैं।
2. तराई क्षेत्र की चौड़ाई उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग (सहारनपुर) की तुलना में पूर्वी भाग (महराजगंज-कुशीनगर) में अधिक है।
3. भाबर के विपरीत, तराई क्षेत्र में नदियाँ पुनः सतह पर प्रकट होती हैं और यह क्षेत्र धान तथा गन्ने की खेती हेतु आदर्श माना जाता है।

©IASHINDIMEDIUM

4. बांगर मृदा नदियों के किनारे स्थित नवीन जलोढ़ होती है, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी पहुँचता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: भाबर की संरचना कंकड़-पत्थरों से युक्त छिद्रयुक्त होती है, जहाँ जल रिसाव अधिक होने से नदियाँ भूमिगत बहती हैं।
    - कथन 2 सत्य है: तराई बेल्ट पूर्व में अधिक विस्तृत और आर्द्र है (वर्षा की मात्रा पूर्व में अधिक होने के कारण), जबकि पश्चिम की ओर यह संकरी हो जाती है।
    - कथन 3 सत्य है: तराई में भूमिगत नदियाँ पुनः धरातल पर आती हैं, जिससे दलदली और अत्यधिक नम वातावरण बनता है, जो जल-प्रधान फसलों (धान, गन्ना) के लिए बहुत अनुकूल है।
    - कथन 4 असत्य है: नवीन जलोढ़ जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी पहुँचता है, उसे **खादर (Khadar)** कहा जाता है। **बांगर (Bangar)** पुरातन जलोढ़ मृदा है, जो ऊँचे भू-भागों में पाई जाती है और जहाँ सामान्यतः बाढ़ का जल नहीं पहुँचता।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (भू-आकृतिक क्षेत्र / मृदा)	**सूची-II (मुख्य विशेषता / लक्षण)**
a. भाबर क्षेत्र	1. नदियों द्वारा लाई गई प्राचीन जलोढ़ मृदा एवं कंकड़ ग्रंथियाँ
b. तराई क्षेत्र	2. नदी घाटियों का नवीन कांप कछार, अत्यधिक उपजाऊ
c. बांगर क्षेत्र	3. कंकरीली-पथरीली मृदा एवं नदियों का विलोपन
d. खादर क्षेत्र	4. जलभराव, दलदली भूमि तथा सघन वनस्पति

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

©IASHINDIMEDIUM

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **भाबर क्षेत्र:** शिवालिक गिरिपाद का कंकड़-पत्थर युक्त क्षेत्र जहाँ नदियाँ अदृश्य हो जाती हैं।
    - **तराई क्षेत्र:** उच्च नमी, दलदल, महीन कणों वाली उपजाऊ मिट्टी और सघन वनों से युक्त बेल्ट।
    - **बांगर क्षेत्र:** पुरातन जलोढ़ से निर्मित उच्च मैदानी भाग जिसमें कंकड़ पाए जाते हैं।
    - **खादर क्षेत्र:** बाढ़ के नए अवसादों से निर्मित अत्यंत उपजाऊ निचला मैदान।

टॉपिक - 3: उत्तर प्रदेश का अपवाह तंत्र (गंगा, यमुना और उनकी सहायक नदियाँ)

उत्तर प्रदेश का अपवाह तंत्र मुख्यतः गंगा नदी द्रोणी (Ganga River Basin) का भाग है। राज्य की नदियों को उनके उद्गम स्रोत के आधार पर तीन वर्गों में बांटा जाता है:

1. **हिमालयी नदियाँ** (सदा नीरा - गंगा, यमुना, रामगंगा, घाघरा, गंडक, शारदा)
2. **मैदानी नदियाँ** (झील/दलदल से उद्गमित - गोमती, वरुणा, सई, पांडो)
3. **प्रायद्वीपीय पठारी नदियाँ** (वर्षा आधारित - चंबल, बेतवा, केन, सोन, टोंस)

1. गंगा नदी तंत्र (Ganga River System)

- **प्रवेश एवं निकास:** गंगा नदी उत्तर प्रदेश के **बिजनौर** जिले से राज्य में प्रवेश करती है तथा **बलिया** जिले से होकर बिहार में प्रवेश कर जाती है।
- **विस्तार:** यह उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक **28 जिलों** से होकर बहती है। राज्य में इसकी कुल लंबाई लगभग **1,000 किमी** (कुल लंबाई 2,525 किमी) है।
- **तटीय प्रमुख नगर:** कानपुर (दाएं तट पर सबसे बड़ा नगर), प्रयागराज, वाराणसी (बाएं तट पर), मिर्जापुर, गाजीपुर, कन्नौज, फर्रुखाबाद।
- **प्रमुख सहायक नदियाँ:**
    - **बाएं तट से:** रामगंगा (कन्नौज के निकट संगम; उद्गम: दूधातोली श्रेणी, पौड़ी गढ़वाल), गोमती (गाजीपुर के कैथी में संगम), घाघरा/सरयू (छपरा, बिहार के पास संगम), गंडक (महराजगंज-कुशीनगर सीमा)।
    - **दाएं तट से:** यमुना (प्रयागराज में संगम), टोंस/तमसा (सिरसा, प्रयागराज के पास संगम), कर्मनाशा (चौंसा के पास)।
- **गोमती नदी की विशिष्टता:** इसका उद्गम पीलीभीत जिले के माधव टांडा स्थित **फुलहर झील (गोमत ताल)** से होता है। लखनऊ, जौनपुर और सुल्तानपुर इसके तट पर स्थित हैं। सई नदी इसकी प्रमुख सहायक नदी है (जौनपुर के राजघाट पर संगम)।

2. यमुना नदी तंत्र (Yamuna River System)

- **प्रवेश एवं संगम:** यमुना नदी उत्तर प्रदेश के **सहारनपुर** जिले (फैजाबाद नामक स्थान) से प्रवेश करती है। यह हरियाणा व उत्तर प्रदेश के मध्य प्राकृतिक सीमा बनाती है तथा **प्रयागराज** में गंगा से मिल जाती है।

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तार:** यह राज्य के **19 जिलों** से होकर बहती है।
- **तटीय प्रमुख नगर:** मथुरा, वृंदावन, आगरा, फिरोजाबाद, इटावा, कालपी, हमीरपुर, कौशाम्बी।
- **प्रमुख सहायक नदियाँ:**
    - **हिंडन:** सहारनपुर की शिवालिक पहाड़ियों से निकलकर नोएडा (गौतमबुद्ध नगर) के पास यमुना में मिलती है।
    - **चंबल:** मध्य प्रदेश के जानापाव पहाड़ी (महू) से निकलकर **इटावा (पंचनद/मुरादगंज)** के पास यमुना में मिलती है। यह अवनालिका अपरदन (खड्ड/बीहड़) हेतु कुख्यात है।
    - **बेतवा (वेत्रवती):** रायसेन (विंध्य पर्वत) से निकलकर **हमीरपुर** के निकट यमुना में मिलती है। इस पर माताटीला, राजघाट व पारीछा बांध बने हैं।
    - **केन (कर्णावती):** कैमूर पहाड़ियों से निकलकर **बांदा (चिल्ला)** के पास यमुना में विलीन होती है।
    - **सिंध:** जालौन जिले में यमुना से मिलती है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **केन-बेतवा लिंक परियोजना (KBLP) क्रियान्वयन:** देश की पहली नदी जोड़ो परियोजना के तहत दौधन बांध (Daudhan Dam) और 221 किमी लंबी लिंक नहर के मुख्य कार्यों को गति दी गई, जिससे उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र (बांदा, महोबा, झांसी और ललितपुर) में 2.5 लाख हेक्टेयर से अधिक अतिरिक्त सिंचाई क्षमता सुनिश्चित होगी।
- **गोमती एवं हिंडन नदी का कायाकल्प मिशन:** राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) के अंतर्गत गोमती नदी को प्रदूषण-मुक्त करने हेतु लखनऊ और जौनपुर में नए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STPs) चालू किए गए तथा सहारनपुर, गाजियाबाद व नोएडा में हिंडन नदी बेसिन को 'नमामि गंगे 2.0' के विशेष प्राथमिकता क्षेत्र में शामिल किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के अपवाह तंत्र के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. गंगा नदी उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले से राज्य में प्रवेश करती है तथा बलिया जिले से बाहर निकलती है।
2. कानपुर नगर गंगा नदी के बाएं तट पर जबकि वाराणसी गंगा के दाएं तट पर स्थित है।
3. गोमती नदी का उद्गम उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले की फुलहर झील से होता है और यह गाजीपुर के निकट गंगा में मिलती है।
4. चंबल नदी उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के निकट यमुना नदी में मिलती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**

- कथन 1, 3 और 4 सत्य हैं: गंगा बिजनौर से प्रवेश कर बलिया से निकलती है; गोमती मैदानी उद्गम वाली नदी है जो पीलीभीत के फुलहर झील से निकलकर गाजीपुर के कैथी में गंगा से मिलती है; चंबल नदी का संगम इटावा के पास (पंचनद क्षेत्र) यमुना से होता है।
- कथन 2 असत्य है: भौगोलिक स्थिति के अनुसार, कानपुर गंगा नदी के **दाएं तट (Right Bank)** पर स्थित है, जबकि वाराणसी गंगा नदी के **बाएं तट (Left Bank)** पर अर्धचंद्राकार रूप में स्थित है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (सहायक नदी)	**सूची-II (यमुना / गंगा से संगम का स्थल)**
a. रामगंगा	1. बांदा (चिल्ला)
b. बेतवा	2. कन्नौज
c. केन	3. हमीरपुर
d. टोंस (तमसा)	4. सिरसा (प्रयागराज)

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **रामगंगा:** गैरसैंण/पौड़ी गढ़वाल से निकलकर कन्नौज के पास गंगा नदी के बाएं तट पर मिलती है।
  - **बेतवा:** मध्य प्रदेश से आकर उत्तर प्रदेश के हमीरपुर के निकट यमुना नदी के दाएं तट पर मिलती है।
  - **केन:** कैमूर पहाड़ियों से निकलकर बांदा जिले के चिल्ला नामक स्थान पर यमुना से मिलती है।
  - **टोंस (तमसा):** मैहर (मध्य प्रदेश) से निकलकर प्रयागराज के सिरसा के निकट सीधे गंगा नदी के दाएं तट पर मिलती है।

टॉपिक - 4: उत्तर प्रदेश की प्रमुख झीलें, ताल एवं रामसर स्थल (Lakes, Ponds & Ramsar Sites)

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर प्रदेश के मैदानी और तराई भागों में भू-आकृतिक संरचना तथा नदियों के विसर्पण (Meandering) के कारण अनेक प्राकृतिक गोखुर झीलें (Ox-bow Lakes) तथा ताल पाए जाते हैं। ये आर्द्रभूमियां (Wetlands) जैव विविधता संरक्षण, भूजल पुनर्भरण एवं बाढ़ नियंत्रण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

1. उत्तर प्रदेश की प्रमुख झीलें एवं ताल (UPPCS विशेष संकलन)

झील / ताल / कुंड	अवस्थिति (जिला)	महत्वपूर्ण तथ्य
फुलहर झील (गोमत ताल)	**पीलीभीत**	गोमती नदी का उद्गम स्थल।
कीठम झील (सुर सरोवर)	**आगरा**	पक्षी विहार एवं रामसर स्थल; भालू संरक्षण केंद्र के निकट।
बखीरा झील (मोती झील)	**संत कबीर नगर**	पूर्वी उत्तर प्रदेश की विशाल प्राकृतिक झील; रामसर स्थल।
समसपुर ताल	**रायबरेली**	पक्षी अभयारण्य एवं रामसर स्थल।
पार्वती अरगा ताल	**गोंडा**	गोखुर झील से निर्मित रामसर आर्द्रभूमि।
सांडी झील	**हरदोई**	ऐतिहासिक पक्षी विहार व रामसर स्थल।
नवाबगंज झील (शहीद चंद्रशेखर आज़ाद)	**उन्नाव**	राज्य का पहला आधिकारिक पक्षी विहार व रामसर स्थल।
सुरहा ताल (लोकनायक पक्षी विहार)	**बलिया**	गंगा नदी के विसर्पण से बनी विशाल गोखुर झील।
बड़ा ताल (गोखुर)	**शाहजहाँपुर**	गर्रा नदी बेसिन में स्थित।
मोती व गौर झील	**रामपुर**	कछारी मैदानी झील।
राजा का बांध / भोजपुर ताल	**सुल्तानपुर**	स्थानीय सिंचाई व जैव विविधता स्थल।
औंधी ताल	**वाराणसी**	प्राकृतिक जलाशय।
मदन सागर, कीरत सागर, बेलासागर	**महोबा**	चंदेल शासकों द्वारा निर्मित ऐतिहासिक जल संरचनाएं।

©IASHINDIMEDIUM

झील / ताल / कुंड	अवस्थिति (जिला)	महत्वपूर्ण तथ्य
गोविंद वल्लभ पंत सागर	**सोनभद्र**	रिहंद नदी पर स्थित भारत की सबसे बड़ी कृत्रिम (मानव निर्मित) झील।
चित्तौरा झील (सैयद सालार मेला स्थल)	**बहराइच**	महाराजा सुहेलदेव स्मारक स्थल के निकट।
शेखा झील	**अलीगढ़**	प्रवासी पक्षियों हेतु प्रसिद्ध ताजे पानी की झील।

2. उत्तर प्रदेश के रामसर स्थल (Ramsar Sites in UP)

उत्तर प्रदेश में वर्तमान में कुल **10 रामसर आर्द्रभूमियां** (Ramsar Sites) अधिसूचित हैं (तमिलनाडु के बाद देश में दूसरे स्थान पर):

1. **ऊपरी गंगा नदी (ब्रजघाट से नरोरा खिंचाव - 2005):** उत्तर प्रदेश का **पहला रामसर स्थल**; गंगा डॉल्फिन, घड़ियाल और कछुओं का पर्यावास।
2. **नवाबगंज पक्षी अभयारण्य (उन्नाव - 2019)**
3. **पार्वती अरगा पक्षी अभयारण्य (गोंडा - 2019)**
4. **समन पक्षी अभयारण्य (मैनपुरी - 2019)**
5. **समसपुर पक्षी अभयारण्य (रायबरेली - 2019)**
6. **सांडी पक्षी अभयारण्य (हरदोई - 2019)**
7. **सरसई नावर झील (इटावा - 2019):** सारस क्रेन (राज्य पक्षी) का प्रमुख निवास स्थल।
8. **सुर सरोवर / कीठम झील (आगरा - 2020)**
9. **हैदरपुर वेटलैंड (मुजफ्फरनगर-बिजनौर - 2021):** मध्य गंगा बैराज पर निर्मित मानव-निर्मित आर्द्रभूमि।
10. **बखीरा वन्यजीव अभयारण्य (संत कबीर नगर - 2022):** ताजे पानी की विशाल दलदली आर्द्रभूमि।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **नया रामसर स्थल नामांकन प्रस्ताव:** उत्तर प्रदेश राज्य आर्द्रभूमि प्राधिकरण द्वारा बहराइच की **चित्तौरा झील** तथा मैनपुरी की **समन झील** के बफर जोन के साथ-साथ पीलीभीत टाइगर रिजर्व से जुड़ी **शारदा सागर जलाशय** प्रणाली को अंतरराष्ट्रीय महत्व की रामसर सूची में सम्मिलित करने हेतु केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय को प्रस्ताव प्रेषित किया गया।
- **अमृत धरोहर एवं वेटलैंड मित्र पहल:** राज्य के समस्त 10 रामसर स्थलों पर इको-टूरिज्म और स्थानीय आजीविका को संबल देने हेतु 'अमृत धरोहर योजना' के तहत स्थानीय युवाओं को 'वेटलैंड मित्र' के रूप में प्रशिक्षित किया गया तथा आर्द्रभूमि स्वास्थ्य कार्ड (Wetland Health Cards) जारी किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के रामसर स्थलों एवं झीलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ऊपरी गंगा नदी (ब्रजघाट से नरोरा खिंचाव) उत्तर प्रदेश का प्रथम घोषित रामसर स्थल है।
2. बखीरा वन्यजीव अभयारण्य उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले में स्थित एक प्रमुख रामसर स्थल है।
3. सुरहा ताल पक्षी विहार आगरा जिले में स्थित है, जिसे कीठम झील के नाम से भी जाना जाता है।
4. वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल 10 अधिसूचित रामसर आर्द्रभूमियां अवस्थित हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: 2005 में ऊपरी गंगा नदी (ब्रजघाट से नरोरा) उत्तर प्रदेश का पहला रामसर स्थल बना; बखीरा संत कबीर नगर में स्थित रामसर स्थल है; और उत्तर प्रदेश में कुल 10 रामसर आर्द्रभूमियां अधिसूचित हैं।
  - कथन 3 असत्य है: कीठम झील को **सुर सरोवर** कहा जाता है और यह आगरा में स्थित है। जबकि **सुरहा ताल** उत्तर प्रदेश के **बलिया** जिले में स्थित एक गोखुर झील है (जिसे लोकनायक पक्षी विहार भी कहा जाता है)।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (झील / ताल)	**सूची-II (संबद्ध जिला)**
a. फुलहर झील	1. इटावा
b. सांडी झील	2. पीलीभीत
c. सरसई नावर	3. महोबा
d. मदन सागर	4. हरदोई

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

©IASHINDIMEDIUM

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **फुलहर झील:** पीलीभीत जिले में स्थित है, जहाँ से गोमती नदी निकलती है।
    - **सांडी झील:** हरदोई जिले में स्थित प्रसिद्ध पक्षी अभयारण्य एवं रामसर स्थल है।
    - **सरसई नावर:** इटावा जिले में स्थित प्राकृतिक झील व रामसर स्थल है, जो सारस क्रेन हेतु प्रसिद्ध है।
    - **मदन सागर:** महोबा जिले में चंदेल राजाओं द्वारा निर्मित ऐतिहासिक जलाशय है।

टॉपिक - 5: उत्तर प्रदेश की जलवायु और वर्षा का क्षेत्रीय वितरण

उत्तर प्रदेश की जलवायु मुख्यतः **उष्णकटिबंधीय मानसूनी (Tropical Monsoon)** प्रकार की है। व्लादिमीर कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार, उत्तर प्रदेश का अधिकांश भाग **Cwg (शुष्क शीत ऋतु वाला मानसूनी प्रकार)** के अंतर्गत आता है, जबकि दक्षिणी पठारी भाग **Aw (उष्णकटिबंधीय सवाना)** प्रकार की जलवायु प्रदर्शित करता है। थार्नथ्वेट वर्गीकरण के अनुसार यह **CB'w (मध्यम तापीय एवं अर्ध-शुष्क/उपोष्ण)** क्षेत्र में आता है।

1. ऋतु चक्र एवं तापमान प्रवृत्तियाँ

राज्य में वर्ष भर में तीन प्रमुख ऋतुएं पाई जाती हैं:

- **ग्रीष्म ऋतु (मार्च से जून):**
    - सूर्य के उत्तरायण होने से तापमान में निरंतर वृद्धि होती है।
    - सर्वाधिक औसत तापमान **दक्षिणी पठारी क्षेत्र (बुंदेलखंड)** में दर्ज किया जाता है (कर्क रेखा के निकटता और ग्रेनाइट-नीस संरचना के कारण)।
    - प्रदेश में सर्वाधिक तापमान **बांदा, आगरा एवं झांसी** में रिकॉर्ड किया जाता है।
    - इस अवधि में चलने वाली शुष्क व गर्म पछुआ पवनों को **'लू' (Loo)** कहा जाता है। सबसे कम तापमान बरेली व तराई जिलों में रहता है।
- **वर्षा ऋतु (जून के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर):**
    - वर्षा का मुख्य स्रोत **दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा** है, जिसे स्थानीय रूप से **'पुरवा' (Purva)** कहा जाता है।
    - प्रदेश की कुल वार्षिक वर्षा का लगभग 75%--85% भाग इसी ऋतु (जुलाई-अगस्त) में प्राप्त होता है।
- **शीत ऋतु (अक्टूबर से फरवरी):**
    - जनवरी सबसे ठंडा महीना होता है।

©IASHINDIMEDIUM

- इस दौरान होने वाली वर्षा **भूमध्यसागरीय पश्चिमी विक्षोभ (Western Disturbances)** के कारण होती है (कुल वार्षिक वर्षा का लगभग 3%--5%), जो रबी की फसल (विशेषतः गेहूं) के लिए वरदान साबित होती है।

2. वर्षा का क्षेत्रीय वितरण एवं प्रवृत्तियाँ

उत्तर प्रदेश में औसत वार्षिक वर्षा लगभग **94 से 95 सेमी** होती है। वर्षा वितरण में क्षेत्रीय विषमता अत्यधिक है:

- **दिशा आधारित प्रवृत्तियाँ:**
  - **पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर:** वर्षा की मात्रा निरंतर **घटती** है।
  - **उत्तर (तराई) से दक्षिण (पठार) की ओर जाने पर:** वर्षा की मात्रा में **कमी** दर्ज होती है।
- **क्षेत्रीय वर्षा क्षेत्र:**
  1. **तराई / भाबर क्षेत्र:** यहाँ सर्वाधिक वर्षा (औसत 120 से 150 सेमी तक) होती है।
  2. **पूर्वी मैदानी क्षेत्र:** लगभग 100 से 120 सेमी वर्षा।
  3. **मध्यवर्ती मैदानी क्षेत्र:** लगभग 80 से 100 सेमी वर्षा।
  4. **पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी बुंदेलखंड क्षेत्र:** सबसे कम वर्षा (50 से 75 सेमी); अर्ध-शुष्क परिस्थितियाँ।
- **चरम बिंदु (UPPCS विशेष तथ्य):**
  - **सर्वाधिक वर्षा वाला जिला: गोरखपुर** (लगभग 184.7 सेमी - औसतन 56 मानसूनी दिवस)।
  - **न्यूनतम वर्षा वाला जिला: मथुरा** (लगभग 54.4 सेमी - औसतन 32 मानसूनी दिवस)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन मौसमी संदर्भ (2025–2026)

- **मौसम संबंधी प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली एवं ऑटोमेटेड वेदर स्टेशन (AWS):** उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (UPSDMA) ने आकाशीय बिजली (वज्रपात) तथा चरम मानसूनी वर्षा की सटीक पूर्व-चेतावनी हेतु 'दामिनी' ऐप के साथ राज्य के सभी 350+ तहसीलों में ब्लॉक-स्तरीय ऑटोमेटेड वेदर स्टेशन नेटवर्क का विस्तार पूरा किया।
- **जलवायु-अनुकूल कृषि (Climate Smart Agriculture) कार्ययोजना:** बुंदेलखंड (झांसी, बांदा, महोबा) तथा दक्षिण-पश्चिमी शुष्क पेटी (मथुरा, आगरा) में अनियमित मानसून और गिरते भूजल स्तर को देखते हुए राज्य कृषि विभाग द्वारा 'कम पानी वाली फसलों' (मिलेट्स/श्री अन्न एवं दलहन) और ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई पर 80% तक विशेष सब्सिडी का सघन अभियान चलाया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश की जलवायु और वर्षा प्रवृत्तियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार उत्तर प्रदेश का अधिकांश मैदानी क्षेत्र 'Cwg' जलवायु वर्ग के अंतर्गत आता है।
2. उत्तर प्रदेश में दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा से सर्वाधिक वर्षा प्राप्त होती है, जिसे स्थानीय भाषा में 'पुरवा' कहा जाता है।
3. राज्य में पूर्व से पश्चिम की ओर तथा उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ने पर वर्षा की सामान्य मात्रा में वृद्धि दर्ज की जाती है।

©IASHINDIMEDIUM

4. उत्तर प्रदेश में शीत ऋतु में होने वाली चक्रवाती वर्षा का प्राथमिक कारण पश्चिमी विक्षोभ (Western Disturbances) है, जो रबी की फसलों के लिए अत्यधिक लाभकारी होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: कोपेन ने उपोष्ण आर्द्र एवं शुष्क शीत वाले गंगा मैदान को Cwg में रखा है; बंगाल की खाड़ी शाखा (पुरवा) प्रदेश में 80% से अधिक वर्षा करती है; तथा शीतकाल में भूमध्यसागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभ पश्चिमी व मध्य यूपी में वर्षा करते हैं जो गेहूं जैसी रबी फसलों हेतु अत्यंत उपयोगी है।
    - कथन 3 असत्य है: उत्तर प्रदेश में पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर वर्षा की मात्रा **घटती** है (न कि बढ़ती है), क्योंकि मानसूनी हवाओं में नमी कम होती जाती है। इसी प्रकार उत्तर (तराई) से दक्षिण (पठार) की ओर जाने पर भी वर्षा घटती है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (जलवायु संबंधी लक्षण / क्षेत्र)	**सूची-II (संबद्ध जिला / तथ्य)**
a. प्रदेश में सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा	1. बांदा और झांसी
b. प्रदेश में न्यूनतम औसत वार्षिक वर्षा	2. गोरखपुर (लगभग 184.7 सेमी)
c. ग्रीष्म ऋतु में सर्वाधिक औसत तापमान	3. पश्चिमी विक्षोभ (Western Disturbances)
d. शीतकालीन वर्षा का प्राथमिक कारक	4. मथुरा (लगभग 54.4 सेमी)

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **सर्वाधिक वर्षा वाला जिला:** गोरखपुर, जहाँ तराई प्रभाव के कारण सबसे अधिक वर्षा होती है।
    - **न्यूनतम वर्षा वाला जिला:** मथुरा, जो राज्य के सबसे पश्चिमी भाग में राजस्थान के मरुस्थल के निकट पड़ता है।
    - **सर्वाधिक ग्रीष्म तापमान:** बुंदेलखंड क्षेत्र के बांदा, झांसी और आगरा जिलों में कर्क रेखा की समीपता और विंध्यन संरचना के कारण अत्यधिक गर्मी पड़ती है।
    - **शीतकालीन वर्षा:** शीतोष्ण कटिबंधीय पश्चिमी विक्षोभों के कारण जनवरी-फरवरी में होती है।

IAS HINDI MEDIUM

अर्थव्यवस्था , उद्योग एवं योजनाएँ

टॉपिक - 1: उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था, सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) एवं प्रति व्यक्ति आय

उत्तर प्रदेश देश की सर्वाधिक जनसंख्या (भारत की कुल आबादी का लगभग 16.5%) वाला राज्य है। यह वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था में महाराष्ट्र के बाद **दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** के रूप में उभर चुका है और देश की कुल राष्ट्रीय जीडीपी में लगभग **9.2% से 9.5%** का योगदान देता है। राज्य सरकार ने राज्य को **1 ट्रिलियन डॉलर (One Trillion Dollar Economy)** की अर्थव्यवस्था बनाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है।

1. आर्थिक वृद्धि एवं GSDP का क्षेत्रीय संघटन (Gross State Value Added - GSVA)

उत्तर प्रदेश के सकल राज्य मूल्यवर्धन (GSVA) में तीनों प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों की प्रवृत्तियाँ राष्ट्रीय पैटर्न की तुलना में कृषि क्षेत्र की उच्च हिस्सेदारी को दर्शाती हैं:

- **प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector - कृषि, पशुपालन, वानिकी व खनन):**

- GSVA में योगदान: लगभग **24% से 26%**।
- राज्य की लगभग 59.3% कार्यशील जनसंख्या कृषि एवं सम्बद्ध कार्यों में संलग्न है। खाद्यान्न, दुग्ध, गन्ना, आलू और आम उत्पादन में राज्य देश में प्रथम स्थान पर है।

- **द्वितीयक क्षेत्र (Secondary Sector - विनिर्माण, निर्माण, विद्युत व गैस):**
  - GSVA में योगदान: लगभग **26% से 28%**।
  - एमएसएमई (MSME) क्लस्टर्स, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण (नोएडा/ग्रेटर नोएडा), तथा रक्षा औद्योगिक गलियारे (UPEIDC) द्वारा संचालित।

- **तृतीयक क्षेत्र (Tertiary/Services Sector - व्यापार, परिवहन, वित्तीय व पेशेवर सेवाएँ):**
  - GSVA में योगदान: लगभग **46% से 48%** (सर्वाधिक घटक)।
  - आईटी सेवाएँ, पर्यटन (धार्मिक व सांस्कृतिक), लॉजिस्टिक्स और रियल एस्टेट इस क्षेत्र के मुख्य चालक हैं।

2. प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income) एवं क्षेत्रीय विषमता

- **प्रति व्यक्ति शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (Per Capita NSDP):**
  - उत्तर प्रदेश में मौजूदा मूल्यों (Current Prices) पर प्रति व्यक्ति आय लगभग **₹90,000 से ₹98,000** के स्तर पर है।
  - यद्यपि यह विगत वर्षों में तीव्र गति से बढ़ी है, तथापि यह राष्ट्रीय औसत प्रति व्यक्ति आय (लगभग ₹1.85 लाख - ₹2.00 लाख) के लगभग **आधे (50-52%)** स्तर पर है।

- **गंभीर क्षेत्रीय असंतुलन:**
  1. **पश्चिमी क्षेत्र (Western Region):** सर्वाधिक समृद्ध क्षेत्र; राज्य के सकल उत्पादन में लगभग 50% हिस्सेदारी रखता है।
     - *सर्वाधिक प्रति व्यक्ति आय वाला जिला:* **गौतमबुद्ध नगर (नोएडा)** (राष्ट्रीय औसत से भी कई गुना अधिक)।
  2. **मध्य क्षेत्र (Central Region):** कानपुर और लखनऊ जैसे औद्योगिक/सेवा केंद्रों से युक्त संतुलित संवृद्धि।
  3. **बुंदेलखंड क्षेत्र (Bundelkhand):** औद्योगिक पिछड़ापन, जल संकट और शुष्क कृषि के कारण कम प्रति व्यक्ति आय।
  4. **पूर्वी क्षेत्र (Purvanchal):** अत्यधिक जनघनत्व और कृषि पर निर्भरता के कारण प्रति व्यक्ति आय के मामले में सबसे पिछड़ा क्षेत्र।
     - *न्यूनतम प्रति व्यक्ति आय वाले जिले:* **बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, श्रावस्ती, बहराइच**।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन आर्थिक संदर्भ (2025–2026)

- **1 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था हेतु 'ग्रोथ इंजन' नीति:** राज्य सरकार द्वारा 1 ट्रिलियन डॉलर के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु अर्थव्यवस्था को 10 प्रमुख सेक्टरों में विभाजित कर वित्तीय वर्ष 2025-26 के राज्य बजट का आकार **₹7.36 लाख करोड़** से अधिक रखा गया, जिसमें पूंजीगत परिव्यय (Capex) का अनुपात 22% से अधिक बनाए रखा गया ताकि निजी निवेश को बढ़ावा मिले।

©IASHINDIMEDIUM

- **ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (GIS) निवेश धरातलीकरण:** ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी (GBC) के चौथे व पाँचवें संस्करण के माध्यम से ₹10 लाख करोड़ से अधिक की औद्योगिक परियोजनाओं को क्रियान्वित किया गया, जिसमें डेटा सेंटर, ईवी विनिर्माण और सेमीकंडक्टर पार्क (यीडा क्षेत्र) को विशेष प्रोत्साहन दिया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था, सकल राज्य मूल्यवर्धन (GSVA) तथा प्रति व्यक्ति आय के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उत्तर प्रदेश के GSVA में सर्वाधिक योगदान द्वितीयक (विनिर्माण) क्षेत्र का है।
2. उत्तर प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय के मामले में शीर्ष स्थान पर रहने वाला जिला गौतमबुद्ध नगर है।
3. उत्तर प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय वर्तमान मूल्यों पर भारत के राष्ट्रीय औसत से अधिक है।
4. राज्य के कुल उत्पादन एवं आय में पश्चिमी उत्तर प्रदेश का योगदान पूर्वी उत्तर प्रदेश की तुलना में काफी अधिक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 असत्य है: उत्तर प्रदेश के GSVA में सर्वाधिक योगदान **तृतीयक (सेवा) क्षेत्र** का है (लगभग 46-48%), न कि द्वितीयक क्षेत्र का।
  - कथन 2 सत्य है: गौतमबुद्ध नगर (नोएडा) औद्योगिक व आईटी केंद्र होने के कारण राज्य में सर्वाधिक प्रति व्यक्ति आय वाला जिला है।
  - कथन 3 असत्य है: उत्तर प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी कम (लगभग आधी) है।
  - कथन 4 सत्य है: पश्चिमी उत्तर प्रदेश राज्य के कुल आर्थिक उत्पादन में लगभग 50% का योगदान देता है, जबकि पूर्वी उत्तर प्रदेश अत्यधिक आबादी के बावजूद आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत पिछड़ा है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (आर्थिक संकेतक / क्षेत्र)	**सूची-II (उत्तर प्रदेश की स्थिति / विशेषता)**
a. प्राथमिक क्षेत्र (कृषि एवं सम्बद्ध)	1. बलरामपुर एवं श्रावस्ती

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (आर्थिक संकेतक / क्षेत्र)	सूची-II (उत्तर प्रदेश की स्थिति / विशेषता)
b. सेवा क्षेत्र (तृतीयक)	2. GSVA में लगभग 24% से 26% का योगदान
c. सर्वाधिक प्रति व्यक्ति आय	3. GSVA में सर्वाधिक (लगभग 46-48%) हिस्सेदारी
d. न्यूनतम प्रति व्यक्ति आय वाले जिले	4. गौतमबुद्ध नगर

कूट:

(A) a-2, b-3, c-4, d-1

(B) a-2, b-4, c-3, d-1

(C) a-3, b-2, c-4, d-1

(D) a-4, b-1, c-2, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-4, d-1

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **प्राथमिक क्षेत्र:** उत्तर प्रदेश की आजीविका की रीढ़ है और GSVA में इसका योगदान लगभग 24-26% है।
    - **सेवा क्षेत्र:** राज्य की आय का सबसे बड़ा स्रोत है (लगभग 46-48%)।
    - **सर्वाधिक प्रति व्यक्ति आय:** गौतमबुद्ध नगर जिले में दर्ज की जाती है।
    - **न्यूनतम प्रति व्यक्ति आय:** पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा तराई सीमावर्ती जिलों जैसे बलरामपुर, श्रावस्ती व सिद्धार्थनगर में पाई जाती है।

टॉपिक - 2: एक जिला एक उत्पाद (ODOP) योजना

'एक जिला एक उत्पाद' (One District One Product - ODOP) योजना उत्तर प्रदेश सरकार की एक युगांतकारी पहल है, जिसका उद्देश्य राज्य के सभी 75 जिलों के विशिष्ट पारंपरिक शिल्प, हस्तशिल्प और कृषि उत्पादों को पुनर्जीवित कर स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजित करना तथा निर्यात को गति देना है। यह योजना जापान के 1979 के 'ओइता मॉडल' (Oita Model) से प्रेरित है।

1. योजना का शुभारंभ एवं मूल उद्देश्य

- **शुभारंभ: 24 जनवरी 2018** (प्रथम 'उत्तर प्रदेश दिवस' के अवसर पर)।
- **नोडल विभाग:** सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात संवर्धन विभाग (MSME & Export Promotion Department, UP)।
- **प्रमुख उद्देश्य:**
    - स्थानीय पारंपरिक कला, कौशल एवं कुटीर उद्योगों का संरक्षण व संवर्धन।

©IASHINDIMEDIUM

- युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराकर ग्रामीण-शहरी प्रवासन को रोकना।
- जिला स्तर पर उत्पादन, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और अंतर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुंच (मार्केट लिंकेज) सुनिश्चित करना।
- उत्पाद गुणवत्ता सुधार हेतु टूलकिट वितरण और वित्तीय सहायता (मार्जिन मनी सब्सिडी) देना।

- **राष्ट्रीय अनुकरण:** उत्तर प्रदेश की सफलता के पश्चात केंद्र सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय (DPIIT) ने इसे राष्ट्रीय स्तर पर 'ODOP पहल' के रूप में अंगीकार किया।

2. परीक्षा उपयोगी प्रमुख जिले एवं उनके अधिसूचित उत्पाद

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा में जिलों और उनके उत्पादों का मिलान निरंतर पूछा जाता है:

संभाग / क्षेत्र	जिला	अधिसूचित ODOP उत्पाद
रुहेलखंड / पश्चिमी	**मुरादाबाद**	पीतल के बर्तन / धातु शिल्प (पीतल नगरी)
	कन्नौज	इत्र (Perfume / Attar)
	फिरोजाबाद	कांच के उत्पाद एवं चूड़ियाँ
	सहारनपुर	लकड़ी पर नक्काशी (Wood Carving)
	मेरठ	खेल का सामान (Sports Goods)
	अलीगढ़	ताले एवं हार्डवेयर (Locks & Hardware)
	आगरा	चमड़ा उत्पाद एवं पेठा
	बरेली	ज़री-ज़रदोज़ी एवं बांस उत्पाद
	हापुड़	होम फर्निशिंग (Home Furnishing)
मध्य / अवध	**लखनऊ**	चिकनकारी एवं ज़री-ज़रदोज़ी
	कानपुर नगर	चमड़े के उत्पाद (Leather Goods)
	बाराबंकी	हथकरघा वस्त्र (Handloom)

©IASHINDIMEDIUM

संभाग / क्षेत्र	जिला	अधिसूचित ODOP उत्पाद
	सीतापुर	दरी (Durrie)
पूर्वांचल	**भदोही**	कालीन (द कारपेट सिटी)
	वाराणसी	बनारसी रेशम साड़ी एवं लकड़ी के खिलौने
	गोरखपुर	टेराकोटा (पकी मिट्टी के बर्तन/शिल्प)
	आजमगढ़	काली मिट्टी की कलाकृतियाँ (ब्लैक पॉटरी - निजामाबाद)
	सिद्धार्थनगर	काला नमक चावल ('बुद्ध का महाप्रसाद')
	बलिया	बिंदी उत्पाद
	जौनपुर	ऊनी दरी एवं इमरती
बुंदेलखंड	**झांसी**	सॉफ्ट टॉयज (सॉफ्ट खिलौने)
	महोबा	गौरा पत्थर शिल्प (Gaurah Stone Craft)
	चित्रकूट	लकड़ी के खिलौने
	बांदा	शजर पत्थर शिल्प (Shajar Stone Craft)

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **यूनिटी मॉल (Unity Mall) एवं वैश्विक ई-कॉमर्स लिंकेज:** लखनऊ में राज्य के पहले विशाल 'यूनिटी मॉल' के संचालन के साथ राज्य सरकार ने सभी 75 जिलों के ODOP उत्पादों को ओएनडीसी (ONDC) तथा प्रमुख वैश्विक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर एकीकृत किया, जिससे ग्रामीण शिल्पियों को सीधे विदेशी खरीदार उपलब्ध हुए।
- **ODOP उत्पादों का जीआई (GI) टैगिंग अभियान:** उत्तर प्रदेश ने 70 से अधिक उत्पादों को भौगोलिक उपदर्शन (GI Tag) दिलाकर देश में अग्रणी स्थान बनाए रखा। इसमें बांदा का शजर पत्थर शिल्प, महोबा का गौरा पत्थर शिल्प, संभल का हॉर्न-बोन क्राफ्ट और अमरोहा की ढोलक जैसे ODOP उत्पादों को वैश्विक प्रमाणन के साथ विशेष निर्यात सब्सिडी प्रदान की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश सरकार की 'एक जिला एक उत्पाद' (ODOP) योजना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

©IASHINDIMEDIUM

1. इस योजना का औपचारिक शुभारंभ 24 जनवरी 2018 को प्रथम 'उत्तर प्रदेश दिवस' के अवसर पर किया गया था।
2. इस योजना के सफल क्रियान्वयन को देखते हुए केंद्र सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा इसे राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया गया।
3. सिद्धार्थनगर जिले का अधिसूचित ODOP उत्पाद 'काला नमक चावल' है, जिसे सुगंधित चावल की श्रेणी में जीआई टैग भी प्राप्त है।
4. आजमगढ़ जिले का ओडीओपी उत्पाद धातु शिल्प और पीतल के बर्तन हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: ODOP योजना 24 जनवरी 2018 को शुरू हुई; इसके मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर DPIIT द्वारा अपनाया गया; तथा सिद्धार्थनगर का प्रसिद्ध 'काला नमक चावल' इसका प्रमुख कृषि-आधारित उत्पाद है जिसे जीआई टैग प्राप्त है।
    - कथन 4 असत्य है: आजमगढ़ जिले का अधिसूचित उत्पाद **काली मिट्टी की कलाकृतियाँ (ब्लैक पॉटरी)** है, जो निजामाबाद में बनाई जाती है। पीतल के बर्तन और धातु शिल्प **मुरादाबाद** जिले का ओडीओपी उत्पाद है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (उत्तर प्रदेश के जिले)	**सूची-II (अधिसूचित ODOP उत्पाद)**
a. फिरोजाबाद	1. लकड़ी पर नक्काशी (Wood Carving)
b. भदोही	2. खेल का सामान
c. सहारनपुर	3. कांच के उत्पाद एवं चूड़ियाँ
d. मेरठ	4. कालीन (Carpet)

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

©IASHINDIMEDIUM

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **फिरोजाबाद:** 'सुहाग नगरी' के नाम से विख्यात, कांच के उत्पाद एवं चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध है।
    - **भदोही:** कालीन निर्माण का एशिया का बड़ा केंद्र होने के कारण कालीन इसका ODOP उत्पाद है।
    - **सहारनपुर:** लकड़ी पर सूक्ष्म नक्काशी (काष्ठ शिल्प) हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है।
    - **मेरठ:** उच्च गुणवत्ता वाले खेल के सामान (बैट, बॉल आदि) के उत्पादन हेतु चयनित है।

टॉपिक - 3: उत्तर प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक केंद्र एवं औद्योगिक विकास प्राधिकरण (UPSIDA, NOIDA, GIDA, YEIDA आदि)

उत्तर प्रदेश में संतुलित क्षेत्रीय औद्योगिक विकास, अवस्थापना सुविधाओं के सृजन और पूंजी निवेश को आकर्षित करने के उद्देश्य से **'उत्तर प्रदेश औद्योगिक क्षेत्र विकास अधिनियम, 1976' (Uttar Pradesh Industrial Area Development Act, 1976)** के तहत विभिन्न सांविधिक औद्योगिक विकास प्राधिकरणों की स्थापना की गई है।

1. प्रमुख औद्योगिक विकास प्राधिकरण (Industrial Development Authorities)

- **UPSIDA (उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण):**
    - **मुख्यालय:** कानपुर।
    - **स्थापना:** 1958 (पूर्व में UPSIDC, 2018 में प्राधिकरण के रूप में पुनर्गठित)।
    - **भूमिका:** यह पूरे प्रदेश में औद्योगिक क्षेत्रों, पार्कों, एग्रो पार्कों (वाराणसी, बाराबंकी) और लेदर टेक्नोलॉजी पार्कों (बंथरा, उन्नाव) का विकास एवं प्रबंधन करने वाली शीर्ष संस्था है।
- **NOIDA (नवीन ओखला औद्योगिक विकास प्राधिकरण):**
    - **स्थापना: 17 अप्रैल 1976**।
    - **क्षेत्र:** गौतमबुद्ध नगर। इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी (IT/ITeS), और सॉफ्टवेयर निर्यात का देश का प्रमुख हब।
- **GNIDA (ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण):**
    - **स्थापना:** 1991। योजनाबद्ध एकीकृत औद्योगिक व शैक्षिक टाउनशिप (नॉलेज पार्क)।
- **YEIDA (यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण):**
    - **स्थापना:** अप्रैल 2001 (मूलतः ताज एक्सप्रेसवे प्राधिकरण)।
    - **विस्तार:** गौतमबुद्ध नगर से आगरा तक 6 जिलों (गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, अलीगढ़, हाथरस, मथुरा, आगरा)।

©IASHINDIMEDIUM

- **प्रमुख परियोजनाएं:** नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (जेवर), मेडिकल डिवाइस पार्क, टॉय पार्क, तथा सेमीकंडक्टर/इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर।

- **GIDA (गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण):**
  - **स्थापना: 1989**।
  - **क्षेत्र:** पूर्वी उत्तर प्रदेश (पूर्वांचल) में त्वरित औद्योगिकीकरण; प्लास्टिक पार्क, टेक्सटाइल पार्क एवं पैकेजिंग हब।

- **SIDA (सतहरिया औद्योगिक विकास प्राधिकरण):**
  - **स्थापना:** 1989।
  - **अवस्थिति:** जौनपुर जिला।

- **BIDA (बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण):**
  - **मुख्यालय/केंद्र:** झांसी।
  - **स्थापना: 2023** में अधिसूचित। लगभग 47 वर्षों बाद (नोएडा के बाद) स्थापित प्रदेश का नया टाउनशिप व औद्योगिक प्राधिकरण (33,000 एकड़ में प्रस्तावित)।

- **UPEIDA (उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवेज औद्योगिक विकास प्राधिकरण):**
  - **स्थापना:** 2007; पूर्वांचल, बुंदेलखंड, गंगा व आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे तथा **उत्तर प्रदेश रक्षा औद्योगिक गलियारे (UP Defence Industrial Corridor)** के 6 नोड्स (आगरा, अलीगढ़, चित्रकूट, झांसी, कानपुर, लखनऊ) का नोडल निकाय।

2. उत्तर प्रदेश के प्रमुख विशिष्ट औद्योगिक केंद्र (क्लस्टर्स)

- **कानपुर:** उत्तर भारत का मैनचेस्टर, चमड़ा उद्योग (लेदर), रक्षा आयुध (Ordnance Factories)।
- **गाजियाबाद/मेरठ:** गाजियाबाद (इंजीनियरिंग सामान व केमिकल्स), मेरठ (खेल सामग्री व कैंची उद्योग)।
- **भदोही एवं मिर्जापुर:** हस्तनिर्मित ऊनी कालीन उद्योग (एशिया का सबसे बड़ा केंद्र)।
- **फिरोजाबाद:** कांच उद्योग एवं चूड़ियाँ।
- **मुरादाबाद:** पीतल शिल्प व धातु हस्तशिल्प (ब्रास सिटी)।
- **सहारनपुर:** काष्ठ नक्काशी (Wood Carving) एवं कागज उद्योग।
- **बरेली:** दियासलाई (माचिस) उद्योग, सुरमा, एवं बेंत फर्नीचर उद्योग।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन औद्योगिक संदर्भ (2025–2026)

- **BIDA झांसी में भूमि अधिग्रहण एवं प्रथम औद्योगिक चरण:** बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण (BIDA) ने झांसी नोड पर 35,000 एकड़ के औद्योगिक शहर के निर्माण हेतु भूमि अधिग्रहण के प्रारंभिक चरणों को पूरा कर लॉजिस्टिक्स हब, एयरोस्पेस व मैन्युफैक्चरिंग इकाइयों के आवंटन का कार्य तेज किया।

©IASHINDIMEDIUM

- **YEIDA में सेमीकंडक्टर फैब यूनिट एवं इलेक्ट्रॉनिक्स क्लस्टर:** जेवर एयरपोर्ट के समीप इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर (EMC) के अंतर्गत भारत सेमीकंडक्टर मिशन (ISM) के तहत स्वीकृत चिप निर्माण एवं OSAT (असेंबली, टेस्टिंग व पैकेजिंग) संयंत्रों की स्थापना को धरातल पर उतारा गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास प्राधिकरणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नवीन ओखला औद्योगिक विकास प्राधिकरण (NOIDA) की स्थापना वर्ष 1976 में उत्तर प्रदेश औद्योगिक क्षेत्र विकास अधिनियम के अंतर्गत की गई थी।
2. सतहरिया औद्योगिक विकास प्राधिकरण (SIDA) उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में अवस्थित है।
3. यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (YEIDA) का अधिकार क्षेत्र गौतमबुद्ध नगर से लेकर आगरा तक कुल छह जिलों में विस्तृत है।
4. वर्ष 2023 में राज्य सरकार द्वारा बुंदेलखंड क्षेत्र के सुनियोजित औद्योगिकीकरण हेतु बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण (BIDA) के गठन को मंजूरी दी गई।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: NOIDA की स्थापना 17 अप्रैल 1976 को की गई थी।
    - कथन 2 असत्य है: सतहरिया औद्योगिक विकास प्राधिकरण (SIDA) मिर्जापुर में नहीं, बल्कि **जौनपुर** जिले में स्थित है।
    - कथन 3 सत्य है: YEIDA का अधिसूचित क्षेत्र 6 जिलों—गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, अलीगढ़, हाथरस, मथुरा एवं आगरा तक फैला है।
    - कथन 4 सत्य है: राज्य सरकार ने नोएडा (1976) के लगभग 47 वर्षों बाद बुंदेलखंड (झांसी क्षेत्र) में BIDA नामक नए विशाल औद्योगिक विकास प्राधिकरण की स्थापना की अधिसूचना जारी की।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (औद्योगिक प्राधिकरण / केंद्र)	**सूची-II (मुख्यालय / संबद्ध जिला)**
a. UPSIDA	1. जौनपुर
b. GIDA	2. कानपुर

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (औद्योगिक प्राधिकरण / केंद्र) सूची-II (मुख्यालय / संबद्ध जिला)

c. SIDA 3. झांसी

d. BIDA 4. गोरखपुर

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **UPSIDA (उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण):** मुख्यालय कानपुर में स्थित है।
    - **GIDA (गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण):** गोरखपुर में पूर्वांचल के औद्योगिक विकास का मुख्य केंद्र है।
    - **SIDA (सतहरिया औद्योगिक विकास प्राधिकरण):** जौनपुर जिले में स्थापित है।
    - **BIDA (बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण):** इसका मुख्य विकास केंद्र झांसी में स्थापित किया गया है।

टॉपिक - 4: उत्तर प्रदेश में कुटीर उद्योग एवं सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम (MSME)

उत्तर प्रदेश भारत में एमएसएमई (MSME) का सबसे बड़ा आधार रखने वाला राज्य है। देश की कुल एमएसएमई इकाइयों में लगभग **14% से अधिक** हिस्सेदारी के साथ उत्तर प्रदेश शीर्ष राज्यों में शामिल है। यह क्षेत्र कृषि के बाद राज्य में सर्वाधिक गैर-कृषि रोजगार सृजित करने वाला क्षेत्र है।

1. एमएसएमई (MSME) की वैधानिक परिभाषा (1 जुलाई 2020 से प्रभावी)

एमएसएमई विकास (MSMED) अधिनियम, 2006 के तहत केंद्र सरकार द्वारा विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र के भेद को समाप्त कर नया संयुक्त वर्गीकरण लागू किया गया:

- **सूक्ष्म उद्यम (Micro):** संयंत्र एवं मशीनरी/उपकरण में निवेश **₹1 करोड़ तक** तथा वार्षिक टर्नओवर **₹5 करोड़ तक**।
- **लघु उद्यम (Small):** निवेश **₹10 करोड़ तक** तथा वार्षिक टर्नओवर **₹50 करोड़ तक**।
- **मध्यम उद्यम (Medium):** निवेश **₹50 करोड़ तक** तथा वार्षिक टर्नओवर **₹250 करोड़ तक**।

2. उत्तर प्रदेश के प्रमुख कुटीर एवं पारंपरिक उद्योग क्लस्टर

- **हथकरघा एवं वस्त्र उद्योग (Handloom & Textiles):**
    - कृषि के बाद राज्य का दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता।

- **वाराणसी:** बनारसी रेशमी साड़ियां व ब्रोकेड (जरी)।
- **मऊ एवं मुबारकपुर (आज़मगढ़):** सिल्क/सूती साड़ियां व हथकरघा वस्त्र।
- **टांडा (अंबेडकर नगर):** जामदानी व सूती वस्त्र।
- **बाराबंकी:** हैंडलूम फैब्रिक।

- **हस्तशिल्प, धातु एवं काष्ठ शिल्प:**
  - **भदोही एवं मीरजापुर:** ऊनी कालीन (Carpet) उद्योग; भदोही 'कारपेट सिटी' के रूप में विश्वविख्यात है।
  - **मुरादाबाद:** पीतल के बर्तन व धातु हस्तशिल्प (ब्रास सिटी)।
  - **सहारनपुर:** शीशम की लकड़ी पर नक्काशी (Wood Carving)।
  - **नगीना (बिजनौर):** आबनूस की लकड़ी पर सूक्ष्म काष्ठ कला।
- **चमड़ा एवं फुटवियर उद्योग:**
  - **कानपुर:** औद्योगिक चमड़ा, सैडलरी (काठी) व जूते (लेदर टेक्नोलॉजी पार्क: बंथरा, उन्नाव)।
  - **आगरा:** फुटवियर निर्माण का राष्ट्रीय केंद्र (भारत के कुल घरेलू फुटवियर का लगभग 65% उत्पादन)।
- **अन्य विशिष्ट कुटीर उद्योग:**
  - **कन्नौज:** इत्र एवं सुगंधित तेल।
  - **फिरोजाबाद:** कांच की चूड़ियाँ व लैंपशेड।
  - **खुर्जा (बुलंदशहर):** चीनी मिट्टी के बर्तन (Ceramics Pottery)।
  - **बरेली:** सुरमा, बेंत फर्नीचर व दियासलाई उद्योग।

3. राज्य सरकार की प्रमुख प्रोत्साहन नीतियां एवं योजनाएं

- **उत्तर प्रदेश एमएसएमई प्रोत्साहन नीति 2022:** पूंजीगत उपादान (Capital Subsidy), ब्याज उपादान तथा 'प्लग एंड प्ले' औद्योगिक अवसंरचना का विकास।
- **मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना:** शिक्षित बेरोजगार युवाओं को उद्योग क्षेत्र में ₹25 लाख तक तथा सेवा क्षेत्र में ₹10 लाख तक की वित्तीय सहायता (25% मार्जिन मनी अनुदान सहित)।
- **विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना:** पारंपरिक कारीगरों (बढ़ई, दर्जी, लोहार, कुम्हार) को 6 दिवसीय निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण तथा आधुनिक उन्नत टूलकिट का वितरण।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **उद्यम पोर्टल (Udyam Portal) पर रिकॉर्ड पंजीकरण:** उत्तर प्रदेश में पंजीकृत एमएसएमई इकाइयों की संख्या ने **25 लाख** के ऐतिहासिक आंकड़े को पार किया, जिससे राज्य एमएसएमई औपचारिकीकरण (Formalisation) में देश के अग्रणी राज्यों में स्थापित हुआ।

©IASHINDIMEDIUM

- **पीएम-मित्र (PM MITRA) मेगा टेक्सटाइल पार्क क्रियान्वयन:** लखनऊ-हरदोई सीमा पर 1,000 एकड़ में विस्तृत 'पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्क' के बुनियादी ढांचे के विकास को तीव्र गति दी गई, जिसका उद्देश्य कताई, बुनाई से लेकर परिधान निर्माण तक के कुटीर व लघु उद्योगों को विश्वस्तरीय 'प्लग एंड प्ले' क्लस्टर प्रदान करना है।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के पारंपरिक कुटीर उद्योगों एवं एमएसएमई (MSME) क्षेत्र के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उत्तर प्रदेश भारत में सर्वाधिक एमएसएमई इकाइयों की हिस्सेदारी रखने वाले अग्रणी राज्यों में शामिल है।
2. कृषि के पश्चात हथकरघा एवं वस्त्र उद्योग उत्तर प्रदेश में आजीविका और रोजगार उपलब्ध कराने वाला दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है।
3. नगीना (बिजनौर) शीशम और आबनूस की लकड़ी पर की जाने वाली बारीक नक्काशी कला के लिए जाना जाता है।
4. वर्तमान वैधानिक वर्गीकरण के अनुसार ₹25 करोड़ के निवेश और ₹100 करोड़ के वार्षिक टर्नओवर वाले उद्यम को 'सूक्ष्म उद्यम' (Micro Enterprise) के रूप में परिभाषित किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: उत्तर प्रदेश देश के लगभग 14% एमएसएमई का घर है; हथकरघा कृषि के बाद सबसे अधिक रोजगार देता है; तथा नगीना (बिजनौर) काष्ठ नक्काशी का प्रमुख ऐतिहासिक केंद्र है।
    - कथन 4 असत्य है: नए एमएसएमई वर्गीकरण (1 जुलाई 2020) के अनुसार 'सूक्ष्म उद्यम' की सीमा अधिकतम **₹1 करोड़ निवेश एवं ₹5 करोड़ टर्नओवर** है। ₹25 करोड़ निवेश और ₹100 करोड़ टर्नओवर वाला उद्यम **'लघु उद्यम'** (Small: ₹10 करोड़ तक निवेश/₹50 करोड़ टर्नओवर) की सीमा पार कर **'मध्यम उद्यम'** (Medium: ₹50 करोड़ तक निवेश/₹250 करोड़ टर्नओवर) के अंतर्गत आता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पारंपरिक कुटीर उद्योग केंद्र)	**सूची-II (संबद्ध उत्पाद / शिल्प)**
a. खुर्जा (बुलंदशहर)	1. लकड़ी पर सूक्ष्म नक्काशी
b. भदोही	2. चीनी मिट्टी के बर्तन (Ceramics)

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (पारंपरिक कुटीर उद्योग केंद्र)	सूची-II (संबद्ध उत्पाद / शिल्प)
c. सहारनपुर	3. दियासलाई (माचिस) उद्योग
d. बरेली	4. हस्तनिर्मित ऊनी कालीन

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **खुर्जा (बुलंदशहर):** 'सिरेमिक सिटी' के रूप में प्रसिद्ध, यहाँ चीनी मिट्टी के कलात्मक बर्तनों का निर्माण होता है।
    - **भदोही:** कालीन उद्योग के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है।
    - **सहारनपुर:** काष्ठ नक्काशी (Wood Carving) का सबसे बड़ा केंद्र है।
    - **बरेली:** दियासलाई (माचिस), सुरमा और बेंत के फर्नीचर हेतु प्रसिद्ध है।

टॉपिक - 5: उत्तर प्रदेश सरकार की प्रमुख कल्याणकारी योजनाएँ (Welfare Schemes of UP)

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में सामाजिक सुरक्षा, महिला सशक्तीकरण, युवा कल्याण, बाल विकास तथा किसानों की आय संवर्धन हेतु अनेक लक्षित कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के दृष्टिकोण से योजनाओं का शुभारंभ वर्ष, पात्रता मानदंड तथा वित्तीय सहायता की राशि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

1. महिला एवं बाल कल्याण योजनाएँ

- **मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना:**
    - **शुभारंभ:** 25 अक्टूबर 2019।
    - **उद्देश्य:** कन्या भ्रूण हत्या रोकथाम, बाल विवाह उन्मूलन तथा बालिकाओं के स्वास्थ्य व शिक्षा को प्रोत्साहन।
    - **सहायता राशि (संशोधित):** जन्म से लेकर उच्च शिक्षा तक 6 विभिन्न चरणों में कुल **₹25,000** की वित्तीय सहायता (पूर्व में यह राशि ₹15,000 थी; वित्तीय वर्ष 2024-25 से इसे बढ़ाकर ₹25,000 किया गया)।
    - **पात्रता:** परिवार की अधिकतम वार्षिक आय **₹3 लाख** तक तथा अधिकतम 2 पुत्रियों तक देय।
- **मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना:**

- **शुभारंभ:** अक्टूबर 2017।
- **सहायता:** प्रति जोड़ा कुल **₹51,000** का प्रावधान (जिसमें ₹35,000 कन्या के खाते में, ₹10,000 की वैवाहिक सामग्री, तथा ₹6,000 आयोजन व्यय शामिल)।

- **मिशन शक्ति (Mission Shakti):**
  - महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन हेतु राज्यव्यापी बहु-चरणीय अभियान। इसके तहत प्रत्येक थाने में 'महिला हेल्प डेस्क' तथा 'पिंक बूथ' स्थापित किए गए।

2. युवा एवं शिक्षा प्रोत्साहन योजनाएँ

- **मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना:**
  - **शुभारंभ:** 15 फरवरी 2021 (बसंत पंचमी)।
  - **उद्देश्य:** UPSC, UPPCS, NEET, JEE, CDS आदि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे निर्धन एवं मेधावी छात्रों को निःशुल्क प्रत्यक्ष (ऑफलाइन) एवं डिजिटल कोचिंग तथा अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना।
- **स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तीकरण योजना:**
  - स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं को निःशुल्क **टैबलेट एवं स्मार्टफोन** का वितरण, ताकि डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा मिल सके।

3. किसान एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ

- **मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना:**
  - **शुभारंभ:** 21 जनवरी 2020।
  - **प्रावधान:** खेती के दौरान दुर्घटनावश मृत्यु या पूर्ण दिव्यांगता होने पर कृषक अथवा उनके विधिक आश्रितों को अधिकतम **₹5 लाख** की वित्तीय सहायता। (बटाईदारों और पट्टेदारों को भी इस सुरक्षा दायरे में शामिल किया गया है)।
- **मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना:**
  - आयुष्मान भारत योजना से छूटे हुए गरीब व अंत्योदय परिवारों को प्रति परिवार प्रति वर्ष **₹5 लाख तक का कैशलेस स्वास्थ्य सुरक्षा कवर** प्रदान करना।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **कन्या सुमंगला योजना का उन्नत डिजिटल डीबीटी एवं बढ़ी हुई किश्तें:** वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट में बढ़ी हुई ₹25,000 की वित्तीय सहायता को पारदर्शी ई-डीबीटी प्रणाली के जरिए जन्म (₹5,000), प्रथम टीकाकरण (₹2,000), कक्षा 1 प्रवेश (₹3,000), कक्षा 6 प्रवेश (₹3,000), कक्षा 9 प्रवेश (₹5,000) तथा डिग्री/डिप्लोमा प्रवेश (₹7,000) के रूप में पूर्णतः लागू किया गया।
- **मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (MYUVA):** राज्य बजट में प्रतिवर्ष 1 लाख सूक्ष्म उद्यम स्थापित करने और युवाओं को ₹5 लाख तक का 100% ब्याज-मुक्त ऋण (Interest-Free Loan) उपलब्ध कराने की महत्वाकांक्षी योजना को जमीनी स्तर पर क्रियान्वित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित 'मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस योजना के अंतर्गत बालिका के जन्म से लेकर उच्च शिक्षा में प्रवेश तक कुल छह चरणों में वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।
2. संशोधित प्रावधानों के अनुसार इस योजना के अंतर्गत मिलने वाली कुल वित्तीय सहायता राशि को बढ़ाकर ₹25,000 कर दिया गया है।
3. लाभार्थी परिवार की अधिकतम वार्षिक आय सीमा ₹5 लाख निर्धारित है।
4. यह योजना एक परिवार की अधिकतम दो बालिकाओं के लिए ही अनुमन्य है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: कन्या सुमंगला योजना में 6 चरणों में वित्तीय सहायता दी जाती है; इसे पूर्ववर्ती ₹15,000 से बढ़ाकर अब कुल ₹25,000 कर दिया गया है; तथा सामान्यतः यह एक परिवार की अधिकतम 2 बेटियों को ही लाभान्वित करती है (जुड़वां बच्चियों के मामले में अपवाद सहित)।
  - कथन 3 असत्य है: इस योजना हेतु लाभार्थी परिवार की वार्षिक आय सीमा अधिकतम **₹3 लाख** होनी चाहिए, ₹5 लाख नहीं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (कल्याणकारी योजना)	**सूची-II (प्राथमिक उद्देश्य / प्रावधान)**
a. मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना	1. दुर्घटनावश मृत्यु अथवा दिव्यांगता पर ₹5 लाख तक की आर्थिक सहायता
b. मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना	2. प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु निःशुल्क कोचिंग व्यवस्था
c. मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना	3. निर्धन परिवारों को प्रति वर्ष ₹5 लाख का कैशलेस चिकित्सा बीमा
d. मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना	4. कन्या के विवाह हेतु ₹51,000 की वित्तीय सहायता

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

©IASHINDIMEDIUM

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना:** निर्धन व मेधावी छात्रों को UPSC, UPPCS आदि परीक्षाओं की निःशुल्क उच्चस्तरीय कोचिंग प्रदान करने से संबंधित है।
    - **मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना:** दुर्घटनावश मृत्यु या दिव्यांगता पर किसान अथवा बटाईदार परिवार को ₹5 लाख का मुआवजा प्रदान करती है।
    - **मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना:** सामाजिक समरसता और फिजूलखर्ची रोकने हेतु प्रति जोड़ा ₹51,000 की सहायता उपलब्ध कराती है।
    - **मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना:** आयुष्मान भारत के छूटे हुए पात्र परिवारों को ₹5 लाख तक का निःशुल्क चिकित्सा बीमा कवर देती है।

©IASHINDIMEDIUM

राजयवयवस्था, जनसांख्यिकी एवं प्रशासन

टॉपिक - 1: उत्तर प्रदेश की कार्यपालिका (राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद)

भारतीय संविधान के भाग-6 (अनुच्छेद 153 से 167) के अंतर्गत राज्य की कार्यपालिका का प्रावधान है। उत्तर प्रदेश में संसदीय शासन प्रणाली के अनुरूप राज्यपाल राज्य का संवैधानिक (नाममात्र) प्रमुख होता है, जबकि वास्तविक कार्यपालिका शक्तियाँ मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद में निहित होती हैं।

1. राज्यपाल (Governor)

- **संवैधानिक स्थिति:**
    - **अनुच्छेद 153:** प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा (7वें संविधान संशोधन 1956 द्वारा एक ही व्यक्ति को दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है)।
    - **अनुच्छेद 155 व 156:** नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष की अवधि हेतु, परंतु वह राष्ट्रपति के **प्रसादपर्यंत (Pleasure of the President)** पद धारण करता है।
    - **योग्यताएँ (अनुच्छेद 157):** भारत का नागरिक हो तथा न्यूनतम आयु **35 वर्ष** पूर्ण कर चुका हो।
    - **शपथ (अनुच्छेद 159):** संबंधित राज्य के उच्च न्यायालय (इलाहाबाद हाईकोर्ट) के मुख्य न्यायाधीश द्वारा।
    - **क्षमादान शक्ति (अनुच्छेद 161):** राज्य विधि के तहत दंड को क्षमा, प्रविलंबन, विराम या परिहार करने की शक्ति (मृत्युदंड व सैन्य अदालत के दंड को पूर्ण क्षमा करने का अधिकार नहीं)।
    - **अध्यादेश शक्ति (अनुच्छेद 213):** विधानमंडल के विश्रांतिकाल में अधिकतम 6 सप्ताह (सदन बैठने के बाद) तक प्रभावी।
- **उत्तर प्रदेश विशेष तथ्य:**
    - संयुक्त प्रांत की प्रथम राज्यपाल (स्वतंत्रता पश्चात भारत की पहली महिला राज्यपाल): **श्रीमती सरोजिनी नायडू** (15 अगस्त 1947 से 2 मार्च 1949)।
    - उत्तर प्रदेश नामकरण (24 जनवरी 1950) के समय राज्यपाल: **एच. पी. मोदी**।
    - सर्वाधिक बार राज्यपाल पद पर रहने वाले व्यक्ति: **मुहम्मद शफी कुरैशी** एवं **बी. एल. जोशी** (दो-दो बार)।

2. मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद (Chief Minister & Council of Ministers)

- **संवैधानिक स्थिति:**
    - **अनुच्छेद 163:** राज्यपाल को सहायता एवं सलाह देने हेतु एक मंत्रिपरिषद होगी, जिसका प्रधान मुख्यमंत्री होगा।
    - **अनुच्छेद 164(1):** मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल करेगा तथा अन्य मंत्रियों की नियुक्ति मुख्यमंत्री की सलाह पर राज्यपाल करेगा।

©IASHINDIMEDIUM

- **अनुच्छेद 164(1A) (91वां संविधान संशोधन 2003):** राज्य मंत्रिपरिषद में मंत्रियों (मुख्यमंत्री सहित) की कुल संख्या विधानसभा की कुल सदस्य संख्या के **15% से अधिक नहीं** होगी (UP विधानसभा 403 सदस्य → अधिकतम 60 मंत्री) तथा **न्यूनतम 12 मंत्री** होना अनिवार्य है।
- **अनुच्छेद 164(2):** मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से **विधानसभा** के प्रति उत्तरदायी होती है।
- **अनुच्छेद 167:** राज्यपाल को प्रशासनिक एवं विधायी सूचनाएँ देना मुख्यमंत्री का संवैधानिक कर्तव्य है।

- **उत्तर प्रदेश विशेष तथ्य:**
  - उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री: **पंडित गोविंद बल्लभ पंत** (1946 से 1954)।
  - उत्तर प्रदेश (तथा भारत के किसी राज्य) की प्रथम महिला मुख्यमंत्री: **श्रीमती सुचेता कृपलानी** (1963 से 1967)।
  - सर्वाधिक बार मुख्यमंत्री पद की शपथ: **सुश्री मायावती** (4 बार)।
  - उत्तर प्रदेश के वे मुख्यमंत्री जो आगे चलकर भारत के प्रधानमंत्री बने: **चौधरी चरण सिंह** एवं **विश्वनाथ प्रताप सिंह (वी. पी. सिंह)**।
  - उत्तर प्रदेश में अब तक कुल **10 बार राष्ट्रपति शासन (अनुच्छेद 356)** लगाया जा चुका है (प्रथम बार: 1968, अंतिम बार: 2002)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन राजनीतिक संदर्भ (2025–2026)

- **ई-कैबिनेट एवं डिजिटल सचिवालय प्रणाली का पूर्ण क्रियान्वयन:** उत्तर प्रदेश मंत्रिपरिषद द्वारा सभी कैबिनेट प्रस्तावों, कार्यवृत्तों और अंतर-विभागीय अनुमतियों को शत-प्रतिशत पेपरलेस बनाने हेतु 'ई-कैबिनेट 2.0' पोर्टल को पूर्ण रूप से लागू किया गया, जिससे निर्णयों के क्रियान्वयन में प्रशासनिक पारदर्शिता बढ़ी।
- **संवैधानिक दायित्वों का डिजिटलीकरण एवं राजभवन डैशबोर्ड:** राज्यपाल सचिवालय द्वारा राज्य विश्वविद्यालयों की निगरानी और प्रशासनिक विधेयकों की स्थिति पर रियल-टाइम नज़र रखने हेतु 'गवर्नर मॉनिटरिंग डैशबोर्ड' की शुरुआत की गई, जिसके तहत राज्य के कुल 30+ राज्य विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति के रूप में राज्यपाल के कार्यों का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित हुआ।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के अनुसार उत्तर प्रदेश मंत्रिपरिषद में मुख्यमंत्री सहित मंत्रियों की कुल संख्या 60 से अधिक नहीं हो सकती।
2. संविधान के अनुच्छेद 164(2) के अनुसार राज्य मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से विधानमंडल के दोनों सदनों के प्रति उत्तरदायी होती है।
3. सरोजिनी नायडू स्वतंत्र भारत तथा उत्तर प्रदेश की प्रथम महिला राज्यपाल थीं।
4. चौधरी चरण सिंह और वी. पी. सिंह उत्तर प्रदेश के ऐसे दो मुख्यमंत्री रहे हैं जिन्होंने बाद में भारत के प्रधानमंत्री का पद भी संभाला।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

©IASHINDIMEDIUM

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: UP विधानसभा की सदस्य संख्या 403 है; इसका 15% लगभग 60.45 होता है, अतः अधिकतम मंत्रियों की संख्या 60 हो सकती है।
    - कथन 2 असत्य है: अनुच्छेद 164(2) के तहत राज्य मंत्रिपरिषद केवल **विधानसभा (Legislative Assembly)** के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होती है, दोनों सदनों के प्रति नहीं।
    - कथन 3 सत्य है: श्रीमती सरोजिनी नायडू उत्तर प्रदेश (तत्कालीन संयुक्त प्रांत) की पहली राज्यपाल थीं।
    - कथन 4 सत्य है: चौधरी चरण सिंह और विश्वनाथ प्रताप सिंह दोनों उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहने के उपरांत देश के प्रधानमंत्री बने।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (संवैधानिक प्रावधान / पदधारक)	**सूची-II (संबद्ध अनुच्छेद / ऐतिहासिक तथ्य)**
a. राज्यपाल द्वारा अध्यादेश जारी करना	1. अनुच्छेद 167
b. मुख्यमंत्री का राज्यपाल को सूचना देने का कर्तव्य	2. भारत के किसी राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री
c. सुचेता कृपलानी	3. अनुच्छेद 213
d. राज्य में अब तक राष्ट्रपति शासन की कुल आवृत्ति	4. 10 बार

कूट:

(A) a-3, b-1, c-2, d-4

(B) a-3, b-4, c-2, d-1

(C) a-1, b-3, c-2, d-4

(D) a-2, b-1, c-3, d-4

उत्तर: (A) a-3, b-1, c-2, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **अध्यादेश जारी करना:** राज्यपाल की विधायी शक्ति अनुच्छेद 213 के तहत दी गई है।

©IASHINDIMEDIUM

- **मुख्यमंत्री का कर्तव्य:** अनुच्छेद 167 के तहत मुख्यमंत्री राज्य के प्रशासन और विधान से संबंधित निर्णयों की सूचना राज्यपाल को देता है।
- **सुचेता कृपलानी:** 1963 में उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं, जो किसी भी भारतीय राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री थीं।
- **राष्ट्रपति शासन:** उत्तर प्रदेश में अब तक कुल 10 बार राष्ट्रपति शासन लागू किया जा चुका है।

टॉपिक - 2: उत्तर प्रदेश का विधानमंडल (विधानसभा एवं विधान परिषद)

भारतीय संविधान के भाग-6 के **अनुच्छेद 168** के अनुसार, उत्तर प्रदेश में द्विसदनीय (Bicameral) विधानमंडल की व्यवस्था है। उत्तर प्रदेश विधानमंडल राज्यपाल, विधान परिषद (उच्च सदन) तथा विधानसभा (निम्न सदन) से मिलकर बनता है। 1935 के भारत शासन अधिनियम के तहत जुलाई 1937 में पहली बार संयुक्त प्रांत में द्विसदनीय व्यवस्था अस्तित्व में आई थी।

1. उत्तर प्रदेश विधानसभा (Legislative Assembly)

- **संवैधानिक प्रावधान: अनुच्छेद 170** के तहत राज्य विधानसभा का गठन प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा होता है।
- **सदस्य संख्या:** कुल **403 निर्वाचित सदस्य** (104वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2019 से पूर्व 1 आंग्ल-भारतीय सदस्य नामित होता था, जो अब समाप्त है)।
    - यह देश में **सर्वाधिक सीटों वाली विधानसभा** है।
- **आरक्षित सीटें:** कुल **86 सीटें आरक्षित** हैं:
    - **अनुसूचित जाति (SC): 84 सीटें**
    - **अनुसूचित जनजाति (ST): 2 सीटें** (सोनभद्र जिले की 'ओबरा' और 'दुद्धी' सीटें)।
- **योग्यता एवं कार्यकाल:** न्यूनतम आयु **25 वर्ष**; कार्यकाल प्रथम बैठक की तिथि से 5 वर्ष (अनुच्छेद 172)।
- **ऐतिहासिक व प्रथम पदाधिकारी:**
    - विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष: **राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन**।
    - सर्वाधिक बार विधानसभा अध्यक्ष: **आत्माराम गोविंद खेर** एवं **केसरी नाथ त्रिपाठी** (3-3 बार)।

2. उत्तर प्रदेश विधान परिषद (Legislative Council)

- **संवैधानिक प्रावधान: अनुच्छेद 169** (सृजन/उत्सादन की प्रक्रिया) एवं **अनुच्छेद 171** (परिषद की संरचना)।
- **स्वरूप एवं सदस्य संख्या:** यह एक स्थायी सदन है, जिसका विघटन नहीं होता। कुल सदस्य संख्या **100** है (देश में सर्वाधिक)। इसके $1/3$ सदस्य प्रत्येक दूसरे वर्ष सेवानिवृत्त होते हैं।
- **कार्यकाल एवं आयु:** सदस्यों का कार्यकाल **6 वर्ष**; न्यूनतम आयु **30 वर्ष**।
- **सदस्यों का निर्वाचन/नामांकन संयोजन (अनुच्छेद 171(3)):**
    - $1/3$ **सदस्य (38 सदस्य):** विधानसभा सदस्यों द्वारा।
    - $1/3$ **सदस्य (36 सदस्य):** स्थानीय निकायों (नगर निगम, जिला पंचायत आदि) द्वारा।

©IASHINDIMEDIUM

- 1/12 **सदस्य (8 सदस्य):** 3 वर्ष से स्नातक उपाधि प्राप्त निर्वाचकों द्वारा।
- 1/12 **सदस्य (8 सदस्य):** माध्यमिक विद्यालयों या उच्चतर स्तर के अध्यापकों द्वारा।
- 1/6 **सदस्य (10 सदस्य):** राज्यपाल द्वारा साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारिता आंदोलन और समाज सेवा के क्षेत्र से मनोनीत।

- **प्रथम सभापति: सर सीताराम** (स्वतंत्रता पूर्व) तथा **चंद्रभाल** (स्वतंत्रता उपरांत प्रथम सभापति)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन विधायी संदर्भ (2025–2026)

- **नेवा (NeVA) प्रणाली का पूर्ण क्रियान्वयन:** उत्तर प्रदेश विधानमंडल ने 'नेशनल ई-विधान एप्लीकेशन' (National e-Vidhan Application) के तहत विधानसभा और विधान परिषद के संपूर्ण सत्र, प्रश्नकाल, पटल पर रखे जाने वाले अभिलेख और बजट प्रस्तुतीकरण को शत-प्रतिशत डिजिटल व पेपरलेस बनाकर देश में डिजिटल विधायी प्रक्रिया का मानक स्थापित किया।
- **उत्तर प्रदेश नजूल संपत्ति (लोक प्रयोजनार्थ प्रबंध एवं उपयोग) विधेयक:** विधानमंडल के दोनों सदनों द्वारा राज्य में सार्वजनिक प्रयोजन हेतु नजूल भूमियों के प्रबंधन एवं निजी व्यक्तियों को स्थायी पट्टे पर रोक लगाने संबंधी ऐतिहासिक विधेयक को प्रवर समिति (Select Committee) की समीक्षा और संशोधनों के उपरांत पारित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश विधानसभा एवं विधान परिषद की संरचना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उत्तर प्रदेश विधानसभा में कुल 403 निर्वाचित सीटें हैं, जिनमें से 84 सीटें अनुसूचित जातियों (SC) के लिए तथा 2 सीटें अनुसूचित जनजातियों (ST) के लिए आरक्षित हैं।
2. उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जनजाति (ST) के लिए आरक्षित दोनों विधानसभा सीटें सोनभद्र जिले में स्थित हैं।
3. उत्तर प्रदेश विधान परिषद के कुल 100 सदस्यों में से 1/6 सदस्यों को राज्यपाल द्वारा साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारिता और समाज सेवा के क्षेत्र से मनोनीत किया जाता है।
4. राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन उत्तर प्रदेश विधान परिषद के स्वतंत्रता उपरांत प्रथम सभापति थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1 और 2 सत्य हैं: कुल 403 सीटों में 86 आरक्षित हैं (84 SC और 2 ST)। अनुसूचित जनजाति की दोनों सीटें 'ओबरा' और 'दुद्धी' सोनभद्र जिले में आती हैं।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 3 सत्य है: अनुच्छेद 171 के अनुसार कुल 100 सीटों में से $1/6$ (अर्थात् 10 सदस्य) राज्यपाल द्वारा 5 निर्दिष्ट क्षेत्रों (साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारिता आंदोलन और समाज सेवा) से मनोनीत किए जाते हैं।
- कथन 4 असत्य है: राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन उत्तर प्रदेश **विधानसभा** के प्रथम अध्यक्ष (Speaker) थे, विधान परिषद के नहीं। स्वतंत्रता उपरांत विधान परिषद के प्रथम सभापति **चंद्रभाल** थे।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (संवैधानिक प्रावधान / पद)	**सूची-II (संबद्ध तथ्य / संख्या)**
a. विधान परिषद में राज्यपाल द्वारा मनोनयन अनुपात	1. 100 सदस्य
b. विधानसभा चुनाव लड़ने हेतु न्यूनतम आयु	2. 1/6 भाग
c. उत्तर प्रदेश विधान परिषद की कुल सदस्य संख्या	3. 25 वर्ष
d. विधानसभा सदस्यों द्वारा विधान परिषद में निर्वाचित सदस्य अनुपात	4. 1/3 भाग

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-3, d-4

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-3, b-2, c-4, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **राज्यपाल द्वारा मनोनयन:** अनुच्छेद 171(3)(e) के अनुसार कुल सदस्यों का $1/6$ भाग।
  - **विधानसभा हेतु न्यूनतम आयु:** अनुच्छेद 173 के अनुसार 25 वर्ष (जबकि विधान परिषद हेतु 30 वर्ष)।
  - **विधान परिषद की कुल सदस्य संख्या:** उत्तर प्रदेश में यह संख्या 100 है।
  - **विधानसभा सदस्यों द्वारा निर्वाचन:** कुल सदस्यों का $1/3$ भाग विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा चुना जाता है।

टॉपिक - 3: इलाहाबाद उच्च न्यायालय एवं लखनऊ खंडपीठ (Allahabad High Court & Lucknow Bench)

भारतीय संविधान के भाग-6 (अनुच्छेद 214 से 231) के अंतर्गत प्रत्येक राज्य के लिए एक उच्च न्यायालय का प्रावधान है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय (High Court of Judicature at Allahabad) भारत के सबसे पुराने और एशिया के सबसे बड़े उच्च न्यायालयों में से एक है। यह अपने विशाल क्षेत्राधिकार और न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या के कारण देश का सबसे बड़ा न्यायालय है।

©IASHINDIMEDIUM

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं स्थापना

- **भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम, 1861:** ब्रिटिश संसद द्वारा पारित इस अधिनियम के तहत 17 मार्च 1866 को **आगरा में** 'उत्तर-पश्चिमी प्रांतों के लिए उच्च न्यायालय' (High Court of Judicature for the North-Western Provinces) की स्थापना की गई थी।
- **स्थानांतरण एवं नामकरण:**
    - वर्ष **1869 में** इसे आगरा से **इलाहाबाद (प्रयागराज)** स्थानांतरित किया गया।
    - **11 मार्च 1919 को** इसका नाम औपचारिक रूप से बदलकर **'इलाहाबाद उच्च न्यायालय' (High Court of Judicature at Allahabad)** कर दिया गया।
- **अवध मुख्य न्यायालय एवं लखनऊ खंडपीठ का विलय:**
    - अवध क्षेत्र हेतु पूर्व में 'अवध चीफ कोर्ट' लखनऊ में कार्यरत था।
    - स्वतंत्रता उपरांत, **उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय (समामेलन) आदेश, 1948** (UP High Courts Amalgamation Order, 1948) द्वारा 26 जुलाई 1948 को अवध चीफ कोर्ट का इलाहाबाद उच्च न्यायालय में औपचारिक विलय कर दिया गया और लखनऊ में इसकी स्थायी **खंडपीठ (Permanent Bench)** स्थापित की गई।
    - लखनऊ खंडपीठ के अधिकार क्षेत्र में अवध क्षेत्र के मुख्य जिले (लखनऊ, फैजाबाद/अयोध्या, रायबरेली, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हरदोई, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी, अमेठी, गोंडा, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, उन्नाव और अंबेडकर नगर) आते हैं।

2. संरचना, न्यायाधीश एवं क्षेत्राधिकार

- **स्वीकृत न्यायाधीशों की संख्या:** इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की कुल स्वीकृत संख्या **160** (119 स्थायी + 41 अतिरिक्त) है, जो भारत के किसी भी उच्च न्यायालय में **सर्वाधिक** है।
- **संवैधानिक प्रावधान:**
    - **अनुच्छेद 217:** मुख्य न्यायाधीश व अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
    - **अनुच्छेद 219:** न्यायाधीशों को शपथ संबंधित राज्य के **राज्यपाल** द्वारा दिलाई जाती है।
    - **सेवानिवृत्ति आयु:** 62 वर्ष।
    - **अनुच्छेद 215:** अभिलेख न्यायालय (Court of Record)।
    - **अनुच्छेद 226:** मूल अधिकारों तथा अन्य विधिक अधिकारों के प्रवर्तन हेतु 5 प्रकार की रिटें (बंदी प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, उत्प्रेषण, अधिकार-पृच्छा) जारी करने की विस्तृत शक्ति।
- **प्रथम एवं महत्वपूर्ण पदाधिकारी:**
    - प्रथम मुख्य न्यायाधीश (ब्रिटिश काल - 1866): **सर वाल्टर मॉर्गन**।
    - स्वतंत्रता उपरांत प्रथम भारतीय मुख्य न्यायाधीश: **न्यायमूर्ति बिधान भूषण मलिक (बी. बी. मलिक)**।
    - प्रथम भारतीय न्यायाधीश (1887 में नियुक्त): **न्यायमूर्ति सैयद महमूद** (सर सैयद अहमद खान के पुत्र, जो अपने असहमतिपूर्ण निर्णयों/Dissenting Judgments हेतु विख्यात थे)।

©IASHINDIMEDIUM

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **न्यायिक अवसंरचना एवं अत्याधुनिक बहुमंजिला परिसर:** प्रयागराज में उच्च न्यायालय के एकीकृत नए बहुमंजिला अधिवक्ता चेंबर एवं डिजिटल कोर्ट रूम परिसर का निर्माण कार्य पूर्ण किया गया तथा लखनऊ खंडपीठ में ई-फाइलिंग 3.0 और लाइव कोर्ट प्रोसीडिंग्स का पूर्ण डिजिटलीकरण लागू किया गया।
- **राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रिड (NJDG) और वर्चुअल लोक अदालतें:** लंबित वादों के त्वरित निस्तारण हेतु इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (UPSLSA) के समन्वय से मोटर वाहन दुर्घटना, वैवाहिक विवाद और राजस्व अपीलों के निस्तारण हेतु राज्यव्यापी हाइब्रिड लोक अदालतों का संचालन कर रिकॉर्ड मुकदमों का निपटारा किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. इलाहाबाद उच्च न्यायालय के ऐतिहासिक विकास एवं संवैधानिक स्थिति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस उच्च न्यायालय की स्थापना मूलतः वर्ष 1866 में आगरा में की गई थी, जिसे 1869 में इलाहाबाद स्थानांतरित किया गया।
2. उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय (समामेलन) आदेश, 1948 के तहत अवध चीफ कोर्ट का इलाहाबाद उच्च न्यायालय में विलय करके लखनऊ में इसकी स्थायी खंडपीठ स्थापित की गई।
3. इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की कुल स्वीकृत पद संख्या 160 है, जो देश के सभी उच्च न्यायालयों में सर्वाधिक है।
4. न्यायमूर्ति सैयद महमूद स्वतंत्रता के पश्चात इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश बने थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: 1866 में आगरा में स्थापना हुई और 1869 में इलाहाबाद स्थानांतरित हुआ; 1948 के अमलगमेशन ऑर्डर से लखनऊ खंडपीठ स्थायी रूप से स्थापित हुई; तथा कुल 160 न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या के साथ यह देश का सबसे बड़ा उच्च न्यायालय है।
    - कथन 4 असत्य है: न्यायमूर्ति सैयद महमूद 1887 में इस न्यायालय में नियुक्त होने वाले प्रथम भारतीय न्यायाधीश (प्यूइज़न जज) थे। स्वतंत्रता के पश्चात प्रथम भारतीय मुख्य न्यायाधीश **न्यायमूर्ति बी. बी. मलिक (बिधान भूषण मलिक)** थे।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (ऐतिहासिक घटना / पदधारक)	सूची-II (संबद्ध वर्ष / व्यक्तित्व)
a. आगरा में उच्च न्यायालय की मूल स्थापना	1. न्यायमूर्ति बी. बी. मलिक
b. उच्च न्यायालय का इलाहाबाद स्थानांतरण	2. सर वाल्टर मॉर्गन
c. प्रथम मुख्य न्यायाधीश (1866)	3. वर्ष 1866
d. स्वतंत्रता उपरांत प्रथम मुख्य न्यायाधीश	4. वर्ष 1869

कूट:

(A) a-3, b-4, c-2, d-1

(B) a-3, b-2, c-4, d-1

(C) a-4, b-3, c-2, d-1

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-2, d-1

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **आगरा में स्थापना:** भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम 1861 के तहत 17 मार्च 1866 को।
  - **इलाहाबाद स्थानांतरण:** वर्ष 1869 में न्यायालय को इलाहाबाद लाया गया।
  - **प्रथम मुख्य न्यायाधीश:** सर वाल्टर मॉर्गन (1866 से 1871 तक)।
  - **स्वतंत्रता उपरांत प्रथम मुख्य न्यायाधीश:** न्यायमूर्ति बिधान भूषण मलिक (1947 से 1955 तक)।

टॉपिक - 4: उत्तर प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था

उत्तर प्रदेश में स्थानीय स्वशासन का एक समृद्ध इतिहास रहा है। स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात राज्य में **'संयुक्त प्रांत पंचायत राज अधिनियम, 1947'** पारित किया गया, जो 7 दिसंबर 1947 को हस्ताक्षरित होकर **15 अगस्त 1949** से विधिवत लागू हुआ और ग्राम पंचायतों की स्थापना हुई। इसके उपरांत खंड एवं जिला स्तर पर व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु **'उत्तर प्रदेश क्षेत्र पंचायत तथा जिला पंचायत अधिनियम, 1961'** लागू किया गया।

73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के अनुपालन में उत्तर प्रदेश सरकार ने **'उत्तर प्रदेश पंचायत विधि (संशोधन) अधिनियम, 1994'** पारित किया, जो **22 अप्रैल 1994** से प्रभावी हुआ और राज्य में त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली को संवैधानिक स्वरूप प्रदान किया गया।

1. त्रिस्तरीय संरचना एवं प्रशासनिक स्वरूप

©IASHINDIMEDIUM

उत्तर प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था क्रियान्वित है:

1. **ग्राम स्तर (ग्राम पंचायत):**
    - **ग्राम सभा:** गाँव के पंजीकृत सभी मतदाताओं (18 वर्ष या अधिक आयु) से मिलकर बनती है। वर्ष में न्यूनतम दो सामान्य बैठकें (खरीफ की बैठक और रबी की बैठक) अनिवार्य हैं।
    - **ग्राम प्रधान एवं सदस्य:** प्रत्यक्ष रूप से ग्राम सभा द्वारा निर्वाचित। न्यूनतम आयु **21 वर्ष**।
    - **प्रशासनिक अधिकारी:** ग्राम पंचायत अधिकारी / ग्राम विकास अधिकारी (VDO)।
2. **मध्यवर्ती स्तर (क्षेत्र पंचायत):**
    - **प्रमुख:** क्षेत्र पंचायत प्रमुख (ब्लॉक प्रमुख) का चुनाव क्षेत्र पंचायत सदस्यों (BDC) द्वारा **अप्रत्यक्ष रूप से** किया जाता है।
    - **प्रशासनिक अधिकारी:** खंड विकास अधिकारी (BDO)।
3. **शीर्ष स्तर (जिला पंचायत):**
    - **अध्यक्ष:** जिला पंचायत अध्यक्ष का चुनाव निर्वाचित जिला पंचायत वार्ड सदस्यों द्वारा **अप्रत्यक्ष रूप से** होता है।
    - **प्रशासनिक अधिकारी:** मुख्य विकास अधिकारी (CDO) अथवा अपर मुख्य अधिकारी (AMA)।

2. महत्वपूर्ण संवैधानिक व वैधानिक प्रावधान (UPPCS विशेष तथ्य)

- **आरक्षण (Reservation):**
    - महिलाओं के लिए सभी स्तरों पर कुल सीटों का न्यूनतम $1/3$ **(33%)** आरक्षण अनिवार्य है (बिहार व मध्य प्रदेश की तरह 50% नहीं)।
    - अनुसूचित जाति (SC) एवं अनुसूचित जनजाति (ST) हेतु जनसंख्या के अनुपात में तथा अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) हेतु अधिकतम **27%** तक आरक्षण की व्यवस्था है।
- **कार्यकाल एवं विघटन:** प्रथम बैठक की तिथि से **5 वर्ष**। यदि पंचायत 5 वर्ष पूर्व भंग हो जाती है, तो **6 माह** के भीतर चुनाव अनिवार्य हैं। शेष अवधि यदि 6 माह से कम हो, तो नए चुनाव आवश्यक नहीं होते।
- **29 विषय (ग्यारहवीं अनुसूची):** संविधान के अनुच्छेद 243G के अंतर्गत 29 विषयों में से उत्तर प्रदेश में पंचायतों को विभिन्न चरणों में कार्य व शक्तियाँ हस्तांतरित की गई हैं।
- **राज्य निर्वाचन आयोग (अनुच्छेद 243K):** पंचायतों के निष्पक्ष चुनावों के संचालन हेतु उत्तर प्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग की स्थापना **23 अप्रैल 1994** को की गई। प्रथम राज्य निर्वाचन आयुक्त **मनोज कुमार** थे।
- **राज्य वित्त आयोग (अनुच्छेद 243I):** पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा और कर/राजस्व वितरण हेतु प्रत्येक 5 वर्ष पर राज्यपाल द्वारा गठन (उत्तर प्रदेश में प्रथम वित्त आयोग के अध्यक्ष **भालचंद्र शुक्ल** थे)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **ई-ग्राम स्वराज एवं 'मेरी पंचायत' ऐप एकीकरण:** उत्तर प्रदेश पंचायती राज विभाग द्वारा राज्य की समस्त 57,000 से अधिक ग्राम पंचायतों में विकास कार्यों की वित्तीय पारदर्शिता हेतु 100% डिजिटल वाउचर भुगतान और जियो-टैगिंग को ई-ग्राम स्वराज पोर्टल से अनिवार्य किया गया।

©IASHINDIMEDIUM

- **ग्राम सचिवालय एवं 'पंचायत सहायक' सुदृढ़ीकरण:** ग्रामीण नागरिकों को जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र, खतौनी और पेंशन जैसी 80 से अधिक नागरिक सेवाएं गाँव में ही सुलभ कराने हेतु प्रत्येक ग्राम पंचायत भवन को 'ग्राम सचिवालय' के रूप में हाई-स्पीड इंटरनेट और सीएससी (CSC) केंद्रों से पूरी तरह लैस किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 73वें संविधान संशोधन के अनुपालन में 'उत्तर प्रदेश पंचायत विधि (संशोधन) अधिनियम, 1994' को 22 अप्रैल 1994 से लागू किया गया।
2. उत्तर प्रदेश में पंचायती राज संस्थाओं के सभी स्तरों पर महिलाओं के लिए कुल स्थानों का 50% आरक्षण वैधानिक रूप से अनिवार्य किया गया है।
3. ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से ग्राम सभा के मतदाताओं द्वारा किया जाता है, जबकि क्षेत्र पंचायत प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रूप से होता है।
4. उत्तर प्रदेश में पंचायतों के चुनाव संचालित करने हेतु राज्य निर्वाचन आयोग का गठन अप्रैल 1994 में किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1, 3 और 4 सत्य हैं: उत्तर प्रदेश पंचायत विधि (संशोधन) अधिनियम 22 अप्रैल 1994 को लागू हुआ; ग्राम प्रधान जनता द्वारा सीधे चुना जाता है जबकि ब्लॉक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष निर्वाचित सदस्यों में से अप्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं; तथा राज्य निर्वाचन आयोग की स्थापना 23 अप्रैल 1994 को हुई।
  - कथन 2 असत्य है: उत्तर प्रदेश में पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण $1/3$ **(33%)** है, 50% नहीं। (यद्यपि बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड जैसे कुछ राज्यों ने 50% किया है, परंतु उत्तर प्रदेश में यह सीमा अभी भी 33% ही है)।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पंचायती राज स्तर / संस्था)	**सूची-II (संबद्ध प्रशासनिक अधिकारी / तथ्य)**
a. ग्राम पंचायत	1. मुख्य विकास अधिकारी (CDO) / AMA
b. क्षेत्र पंचायत	2. ग्राम पंचायत अधिकारी / ग्राम विकास अधिकारी

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (पंचायती राज स्तर / संस्था)	सूची-II (संबद्ध प्रशासनिक अधिकारी / तथ्य)
c. जिला पंचायत	3. अनुच्छेद 243I (राज्यपाल द्वारा गठन)
d. राज्य वित्त आयोग	4. खंड विकास अधिकारी (BDO)

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **ग्राम पंचायत:** प्रशासनिक सचिव के रूप में ग्राम पंचायत अधिकारी/ग्राम विकास अधिकारी कार्य करता है।
    - **क्षेत्र पंचायत:** प्रशासनिक स्तर पर इसका मुख्य कार्यकारी अधिकारी खंड विकास अधिकारी (BDO) होता है।
    - **जिला पंचायत:** इसका प्रशासनिक संचालन मुख्य विकास अधिकारी (CDO) या अपर मुख्य अधिकारी (AMA) द्वारा किया जाता है।
    - **राज्य वित्त आयोग:** पंचायतों की वित्तीय स्थिति के सुदृढ़ीकरण हेतु संविधान के अनुच्छेद 243I के अंतर्गत गठित होता है।

टॉपिक - 5: उत्तर प्रदेश में नगरीय स्थानीय स्वशासन (नगर निगम, नगर पालिका परिषद एवं नगर पंचायत)

उत्तर प्रदेश में नगरीय स्थानीय स्वशासन की सुदृढ़ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही है। 74वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के अनुपालन में राज्य सरकार द्वारा **'उत्तर प्रदेश स्थानीय स्वशासन विधि (संशोधन) अधिनियम, 1994'** पारित किया गया, जो **31 मई 1994** से राज्य में प्रभावी हुआ। इसके द्वारा पूर्ववर्ती 'संयुक्त प्रांत नगर पालिका अधिनियम, 1916' तथा 'उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम, 1959' में संशोधन कर संवैधानिक रूप प्रदान किया गया।

1. नगरीय निकायों की त्रिस्तरीय संरचना (संविधान का भाग IX-A)

संविधान के अनुच्छेद 243Q तथा राज्य विधि के अनुसार उत्तर प्रदेश में जनसंख्या एवं नगरीय प्रकृति के आधार पर तीन प्रकार के नगरीय निकाय गठित किए जाते हैं:

1. **नगर निगम (Municipal Corporation):**
    - **मानदंड:** 5 लाख या उससे अधिक जनसंख्या वाले वृहद नगरीय क्षेत्र।

©IASHINDIMEDIUM

- **राजनीतिक प्रमुख: महापौर (Mayor)**, जिनका चुनाव नगर निगम क्षेत्र के मतदाताओं द्वारा **प्रत्यक्ष रूप से** 5 वर्ष के लिए होता है।
- **प्रशासनिक प्रमुख:** राज्य सरकार द्वारा नियुक्त वरिष्ठ IAS अधिकारी — **नगर आयुक्त (Municipal Commissioner)**।
- **संख्या:** वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल **17 नगर निगम** हैं।

2. **नगर पालिका परिषद (Municipal Council):**
   - **मानदंड:** 1 लाख से 5 लाख तक की जनसंख्या वाले लघु नगरीय क्षेत्र।
   - **प्रमुख:** अध्यक्ष (प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा निर्वाचित)।
   - **प्रशासनिक अधिकारी:** अधिशासी अधिकारी (Executive Officer - EO)।
   - **संख्या:** राज्य में लगभग **200** नगर पालिका परिषदें हैं।
3. **नगर पंचायत (Nagar Panchayat):**
   - **मानदंड:** ग्रामीण से नगरीय क्षेत्र में परिवर्तित हो रहे संक्रमणकालीन क्षेत्र (Transitional Area - सामान्यतः 11,000 से 1 लाख तक की आबादी)।
   - **प्रमुख:** अध्यक्ष (प्रत्यक्ष निर्वाचित)।
   - **संख्या:** राज्य में **540 से अधिक** नगर पंचायतें हैं।

2. उत्तर प्रदेश के 17 नगर निगम (UPPCS विशेष तथ्य)

UPPCS परीक्षा में नगर निगमों की सूची व नवीनतम नगर निगम का क्रम निरंतर पूछा जाता है:

- **पारंपरिक व मंडल मुख्यालय नगर निगम:**
  1. लखनऊ, 2. कानपुर, 3. आगरा, 4. वाराणसी, 5. प्रयागराज, 6. मेरठ, 7. बरेली, 8. मुरादाबाद, 9. अलीगढ़, 10. झांसी, 11. गोरखपुर, 12. गाजियाबाद।
- **बाद में गठित नए नगर निगम:**
  - 13. **सहारनपुर** (2009 में गठित)
  - **फिरोजाबाद** (2014 में गठित)
  - **अयोध्या** (मई 2017 में गठित - पूर्व फैजाबाद नगर निगम का पुनर्गठन)
  - **मथुरा-वृंदावन** (मई 2017 में गठित)

©IASHINDIMEDIUM

-

शाहजहाँपुर (अप्रैल 2018 में सृजित - उत्तर प्रदेश का **17वां एवं नवीनतम नगर निगम**)।

3. महत्वपूर्ण संवैधानिक व निर्वाचन प्रावधान

- **अनुच्छेद 243T (आरक्षण):** महिलाओं हेतु कुल स्थानों का न्यूनतम $1/3$ **(33%)** आरक्षण अनिवार्य है (महापौर/अध्यक्ष पदों सहित)। SC/ST को जनसंख्या अनुपात में तथा OBC को अधिकतम 27% आरक्षण देय है।
- **अनुच्छेद 243W (बारहवीं अनुसूची):** नगरीय निकायों के कार्यक्षेत्र में कुल **18 विषय** शामिल हैं।
- **निर्वाचन एवं कार्यकाल:** कार्यकाल प्रथम बैठक की तिथि से **5 वर्ष**। चुनाव कराने का दायित्व उत्तर प्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग (अनुच्छेद 243ZA) का है। चुनाव लड़ने हेतु न्यूनतम आयु **21 वर्ष** है।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **म्युनिसिपल बॉन्ड (Municipal Bonds) का विस्तार:** लखनऊ और गाजियाबाद नगर निगम के सफल बॉन्ड निर्गम के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने अयोध्या और वाराणसी नगर निगमों द्वारा ग्रीन म्युनिसिपल बॉन्ड जारी करने की प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया, जिसका उपयोग अपशिष्ट जल उपचार (STP) और सौर ऊर्जा परियोजनाओं में किया जा रहा है।
- **जीआईएस-आधारित संपत्तिकर सर्वेक्षण एवं ई-नगरसेवा पोर्टल:** राज्य के सभी 17 नगर निगमों तथा प्रमुख नगर पालिकाओं में ड्रोन और जीआईएस (GIS) मैपिंग के जरिए संपत्तियों के शत-प्रतिशत डिजिटलीकरण का कार्य पूरा किया गया, जिससे कर निर्धारण में पारदर्शिता आई और 'ई-नगरसेवा' पोर्टल के माध्यम से नागरिक सेवाओं की होम-डिलीवरी अनिवार्य की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के नगरीय स्थानीय स्वशासन एवं नगर निगमों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 74वें संविधान संशोधन अधिनियम के अनुपालन में उत्तर प्रदेश में स्थानीय स्वशासन विधि संशोधन अधिनियम 31 मई 1994 से प्रभावी हुआ।
2. उत्तर प्रदेश में नगर निगम के महापौर (Mayor) का चुनाव संबंधित नगर निगम के निर्वाचित पार्षदों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।
3. उत्तर प्रदेश में कुल 17 नगर निगम हैं, जिनमें 17वां और नवीनतम गठित नगर निगम शाहजहाँपुर है।
4. संविधान की बारहवीं अनुसूची में नगरीय स्थानीय निकायों के लिए कुल 18 कार्यात्मक विषय सूचीबद्ध हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**

- कथन 1, 3 और 4 सत्य हैं: उत्तर प्रदेश में 74वां संशोधन 31 मई 1994 को लागू हुआ; राज्य में कुल 17 नगर निगम हैं (17वां शाहजहाँपुर वर्ष 2018 में गठित हुआ था); तथा 12वीं अनुसूची में 18 विषय हैं।
- कथन 2 असत्य है: उत्तर प्रदेश में नगर निगम के महापौर (Mayor) का चुनाव पार्षदों द्वारा अप्रत्यक्ष नहीं, बल्कि नगर निगम क्षेत्र की वयस्क जनता द्वारा **प्रत्यक्ष रूप से (Direct Election)** किया जाता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (उत्तर प्रदेश का नगर निगम)	**सूची-II (संबद्ध गठन वर्ष / विशिष्टता)**
a. शाहजहाँपुर	1. मई 2017 में गठित नगर निगम
b. अयोध्या	2. राज्य का 17वां एवं नवीनतम नगर निगम (2018)
c. सहारनपुर	3. ग्रीन म्युनिसिपल बॉन्ड जारी करने वाला पहला नगर निगम
d. गाजियाबाद	4. वर्ष 2009 में नगर निगम के रूप में अधिसूचित

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **शाहजहाँपुर:** अप्रैल 2018 में सृजित उत्तर प्रदेश का 17वां एवं सबसे नवीन नगर निगम है।
  - **अयोध्या:** मई 2017 में तत्कालीन फैजाबाद-अयोध्या क्षेत्र को मिलाकर नगर निगम बनाया गया।
  - **सहारनपुर:** वर्ष 2009 में नगर निगम के रूप में स्तरोन्नत किया गया था।
  - **गाजियाबाद नगर निगम:** देश में जल शोधन संयंत्रों के वित्तपोषण हेतु ग्रीन म्युनिसिपल बॉन्ड (Green Bond) सफलतापूर्वक जारी करने वाला अग्रणी नगर निगम बना था।

©IASHINDIMEDIUM

करेंट अफेयर्स

राष्ट्रीय समसामयिकी

टॉपिक - 1: केंद्र सरकार की नई प्रमुख योजनाएं, नीतियां एवं राष्ट्रव्यापी अभियान (Current Affairs Special)

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के विगत 15 वर्षों के रुझान बताते हैं कि संघ सरकार की योजनाओं से संबंधित प्रश्न मुख्यतः **नोडल मंत्रालय, प्रारंभ वर्ष/तिथि, वित्तीय आवंटन/सहायता सीमा, लक्षित समूह तथा विशिष्ट तकनीकी घटकों** पर केंद्रित होते हैं। विगत 1–2 वर्षों में सामाजिक सुरक्षा, हरित ऊर्जा, युवा कौशल और अवसंरचना पर विशेष ध्यान दिया गया है।

1. प्रमुख योजनाएं एवं उनके मुख्य घटक

- **पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना (PM Surya Ghar: Muft Bijli Yojana):**
    - **शुभारंभ:** 13 फरवरी 2024।
    - **नोडल मंत्रालय:** नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE)।
    - **उद्देश्य एवं लक्ष्य:** 1 करोड़ घरों की छतों पर रूफटॉप सोलर प्रणाली स्थापित कर प्रति माह **300 यूनिट तक मुफ्त बिजली** उपलब्ध कराना।
    - **वित्तीय परिव्यय:** ₹75,000 करोड़ से अधिक। 2 किलोवाट तक प्रणाली हेतु लागत का 60% तथा अतिरिक्त 1 किलोवाट हेतु 40% सब्सिडी।
- **आयुष्मान वय वंदना योजना (Ayushman Vay Vandana - PM-JAY विस्तार):**
    - **घोषणा/क्रियान्वयन:** सितंबर 2024 (2025–26 में पूर्ण विस्तार)।
    - **नोडल मंत्रालय:** स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय।
    - **प्रावधान: 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों** को उनकी आय/आर्थिक स्थिति पर ध्यान दिए बिना प्रति वर्ष **₹5 लाख तक का कैशलेस स्वास्थ्य बीमा कवर** (एक अलग विशिष्ट कार्ड जारी)।
- **पीएम-इंटर्नशिप योजना (PM Internship Scheme):**

- **नोडल मंत्रालय:** कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय (MCA)।
- **लक्ष्य:** 5 वर्षों में देश की शीर्ष 500 कंपनियों में **1 करोड़ युवाओं** को इंटर्नशिप अवसर प्रदान करना।
- **वित्तीय सहायता:** प्रशिक्षुओं को **₹5,000 प्रति माह** का वित्तीय वजीफा (Stipend) तथा ₹6,000 का एकमुश्त आकस्मिक अनुदान (One-time contingency grant)।

- **प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान (PM-JUGA):**
  - **शुभारंभ:** अक्टूबर 2024।
  - **नोडल मंत्रालय:** जनजातीय कार्य मंत्रालय।
  - **दायरा:** 549 जिलों के 63,000 से अधिक आदिवासी बहुल गांवों में 5 करोड़ से अधिक जनजातीय आबादी के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण हेतु 17 मंत्रालयों की योजनाओं का अभिसरण।
- **पीएम धन-धान्य कृषि योजना (PMDDKY) एवं डिजिटल कृषि मिशन:**
  - कम उत्पादकता वाले 100 जिलों में कृषि विविधीकरण, सूक्ष्म सिंचाई तथा भंडारण अवसंरचना को एकीकृत करने हेतु विशेष योजना।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन समसामयिक संदर्भ (2025–2026)

- **एकीकृत पेंशन योजना (Unified Pension Scheme - UPS) का प्रभावी क्रियान्वयन:** केंद्र सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2025 से राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) के समानांतर केंद्रीय कर्मचारियों हेतु UPS को लागू किया गया। इसके तहत न्यूनतम 25 वर्ष की सेवा पर पिछले 12 महीनों के औसत मूल वेतन का 50% **सुनिश्चित पेंशन (Assured Pension)**, न्यूनतम 10 वर्ष की सेवा पर ₹10,000 मासिक सुनिश्चित पेंशन, तथा सरकारी अंशदान को 14% से बढ़ाकर 18.5% किया गया।
- **पीएम ई-ड्राइव योजना (PM Electric Drive Revolution in Innovative Vehicle Enhancement):** भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा FAME-II के स्थान पर ₹10,900 करोड़ के परिव्यय के साथ 'पीएम ई-ड्राइव' योजना का परिचालन शुरू किया गया, जिसका मुख्य जोर इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया, ई-एम्बुलेंस और चार्जिंग नेटवर्क के त्वरित विस्तार पर है।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. केंद्र सरकार की नवीन योजनाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना' का प्राथमिक लक्ष्य देश के एक करोड़ घरों को प्रति माह 300 यूनिट तक मुफ्त सौर बिजली प्रदान करना है।
2. आयुष्मान भारत (PM-JAY) के अंतर्गत 'आयुष्मान वय वंदना' घटक के तहत 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी नागरिकों को आय सीमा के बंधन के बिना ₹5 लाख का स्वास्थ्य सुरक्षा कवच प्रदान किया गया है।
3. पीएम-इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत प्रशिक्षुओं को ₹10,000 प्रतिमाह का मानदेय तथा ₹15,000 का एकमुश्त आकस्मिक अनुदान दिए जाने का प्रावधान है।
4. एकीकृत पेंशन योजना (UPS) के अंतर्गत केंद्र सरकार का अंशदान 14% से बढ़ाकर 18.5% निर्धारित किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

©IASHINDIMEDIUM

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: पीएम सूर्य घर योजना 1 करोड़ परिवारों को छत पर सोलर पैनल लगाने हेतु वित्तीय सहायता देकर 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली सुनिश्चित करती है।
    - कथन 2 सत्य है: केंद्र सरकार ने आय वर्ग (गरीब/अमीर) की शर्त हटाते हुए 70+ आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को ₹5 लाख तक का कैशलेस इलाज देने की व्यवस्था की है।
    - कथन 3 असत्य है: पीएम-इंटर्नशिप योजना के तहत प्रति माह **₹5,000 का वजीफा** (₹4,500 केंद्र सरकार द्वारा + ₹500 कंपनी CSR फंड से) तथा **₹6,000 का एकमुश्त आकस्मिक अनुदान** दिया जाता है, ₹10,000 व ₹15,000 नहीं।
    - कथन 4 सत्य है: एकीकृत पेंशन योजना (UPS) में कर्मचारी का योगदान 10% रहता है जबकि सरकार का अंशदान 14% से बढ़ाकर 18.5% किया गया है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (योजना / मिशन)	**सूची-II (प्राथमिक नोडल मंत्रालय / मुख्य फोकस)**
a. पीएम सूर्य घर योजना	1. कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय (शीर्ष 500 कंपनियों में इंटर्नशिप)
b. पीएम-इंटर्नशिप योजना	2. भारी उद्योग मंत्रालय (इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्रोत्साहन)
c. पीएम ई-ड्राइव योजना	3. जनजातीय कार्य मंत्रालय (63,000 गांवों का समग्र विकास)
d. पीएम जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान	4. नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (रूफटॉप सोलर)

कूट:

(A) a-4, b-1, c-2, d-3

(B) a-4, b-2, c-1, d-3

(C) a-1, b-4, c-2, d-3

(D) a-3, b-1, c-2, d-4

उत्तर: (A) a-4, b-1, c-2, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**

- **पीएम सूर्य घर योजना:** नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) द्वारा रूफटॉप सोलर को बढ़ावा देने हेतु संचालित।
- **पीएम-इंटर्नशिप योजना:** कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय (MCA) द्वारा शीर्ष 500 कंपनियों के समन्वय से युवाओं के कौशल विकास हेतु।
- **पीएम ई-ड्राइव योजना:** भारी उद्योग मंत्रालय (Ministry of Heavy Industries) द्वारा इलेक्ट्रिक वाहनों और चार्जिंग अवसंरचना हेतु।
- **पीएम जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान:** जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा आदिवासी बहुल गांवों में आधारभूत सुविधाओं के विस्तार हेतु।

टॉपिक - 2: सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय (Landmark Judgments of the Supreme Court)

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के विगत 15 वर्षों के प्रश्न-पत्रों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि न्यायपालिका से जुड़े समसामयिक प्रश्नों में **संविधान पीठ के सदस्यों की संख्या (Bench Strength), संबंधित वाद (Case Name), निर्णयों का अनुपात (Ratio), संवैधानिक अनुच्छेद तथा पलटे गए पूर्ववर्ती फैसलों (Overruled Precedents)** पर तथ्यात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

1. प्रमुख ऐतिहासिक निर्णय एवं संवैधानिक पीठ के निष्कर्ष

- **अनुसूचित जातियों/जनजातियों (SC/ST) का उप-वर्गीकरण (State of Punjab v. Davinder Singh वाद):**
  - **पीठ:** 7-न्यायाधीशों की संविधान पीठ (6:1 बहुमत)।
  - **निर्णय:** राज्यों को एससी और एसटी वर्ग के भीतर अधिक वंचित जातियों को वरीयता देने हेतु **उप-वर्गीकरण (Sub-classification)** करने का संवैधानिक अधिकार है। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि अनुच्छेद 341 केवल जातियों की पहचान करता है, यह राज्यों द्वारा अनुच्छेद 15(4) व 16(4) के तहत आरक्षण तय करने में बाधा नहीं बनता।
  - **पलटा गया निर्णय:** वर्ष 2005 का 5-न्यायाधीशों की पीठ का **ई.वी. चिन्नैया बनाम आंध्र प्रदेश राज्य** फैसला निरस्त किया गया। (न्यायमूर्ति बेला एम. त्रिवेदी एकमात्र असहमत न्यायाधीश थीं)।
- **विधायकों को रिश्वतखोरी से कोई संसदीय विशेषाधिकार नहीं (Sita Soren v. Union of India वाद):**
  - **पीठ:** 7-न्यायाधीशों की संविधान पीठ (सर्वसम्मति)।
  - **निर्णय:** संसद या विधानमंडल में भाषण देने अथवा वोट डालने के लिए रिश्वत लेने वाले सांसदों/विधायकों को **अनुच्छेद 105(2) और 194(2)** के तहत आपराधिक अभियोजन से कोई प्रतिरक्षा (Immunity) प्राप्त नहीं है।
  - **पलटा गया निर्णय:** वर्ष 1998 का 5-न्यायाधीशों की पीठ का **पी.वी. नरसिम्हा राव बनाम राज्य** फैसला सर्वसम्मति से पलटा गया।
- **चुनावी बॉन्ड योजना असंवैधानिक (ADR v. Union of India वाद):**
  - **पीठ:** 5-न्यायाधीशों की संविधान पीठ (सर्वसम्मति)।
  - **निर्णय:** चुनावी बॉन्ड योजना को नागरिकों के सूचना के अधिकार (**अनुच्छेद 19(1)(a)**) का उल्लंघन बताते हुए असंवैधानिक घोषित किया गया।

- **खनिज अधिकारों पर राज्यों की कराधान शक्ति (Mineral Area Development Authority वाद):**
    - **पीठ:** 9-न्यायाधीशों की संविधान पीठ (8:1 बहुमत)।
    - **निर्णय:** खदानों और खनिज युक्त भूमि पर राज्यों को कर लगाने का विधायी अधिकार है (राज्य सूची - प्रविष्टि 49 व 50)। न्यायालय ने निर्धारित किया कि खनन पट्टों पर दी जाने वाली **'रॉयल्टी' (Royalty) कर नहीं है**।
    - **पलटा गया निर्णय:** 1989 का 7-न्यायाधीशों का 'इंडिया सीमेंट्स' फैसला पलटा गया।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन न्यायिक संदर्भ (2025–2026)

- **अनुच्छेद 39(b) और निजी संपत्तियों का दायरा (Property Owners Association वाद):** सर्वोच्च न्यायालय की 9-न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने 7:2 के बहुमत से ऐतिहासिक निर्णय देते हुए व्यवस्था दी कि संविधान के अनुच्छेद 39(b) के तहत राज्य द्वारा अधिग्रहित किए जा सकने वाले 'समुदाय के भौतिक संसाधन' (Material Resources of the Community) में **सभी निजी संपत्तियां स्वत: शामिल नहीं मानी जा सकतीं**। न्यायालय ने 1970 के दशक के जस्टिस वी.आर. कृष्णा अय्यर और जस्टिस रंगनाथ अय्यर के पुराने समाजवादी फैसलों को संशोधित करते हुए केवल उन दुर्लभ निजी संपत्तियों को ही इसके अधीन माना जो सार्वजनिक कल्याण के लिए अनिवार्य और दुर्लभ हों।
- **बुलडोजर कार्रवाई पर देशव्यापी दिशानिर्देश:** सर्वोच्च न्यायालय ने प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों और अनुच्छेद 21 के तहत 'आवास के अधिकार' को रेखांकित करते हुए आदेश दिया कि केवल आरोपी या दोषी होने के आधार पर किसी का घर नहीं गिराया जा सकता। बिना 15 दिन की पूर्व कानूनी नोटिस और डिजिटल रिकॉर्डिंग के विध्वंस करने पर संबंधित अधिकारियों से व्यक्तिगत मुआवजा वसूलने के दिशानिर्देश तय किए गए।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सर्वोच्च न्यायालय के हालिया ऐतिहासिक निर्णयों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सीता सोरेन बनाम भारत संघ वाद में 7-न्यायाधीशों की पीठ ने पी.वी. नरसिम्हा राव (1998) के निर्णय को पलटते हुए व्यवस्था दी कि घूस लेकर सदन में मतदान करने वाले विधायकों को अनुच्छेद 105 या 194 के तहत कोई छूट नहीं मिलेगी।
2. पंजाब राज्य बनाम दविंदर सिंह वाद में सर्वोच्च न्यायालय ने अनुसूचित जातियों (SC) के भीतर उप-वर्गीकरण (Sub-classification) को असंवैधानिक घोषित कर दिया।
3. मिनरल एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी वाद में 9-न्यायाधीशों की पीठ ने निर्णय दिया कि खदानों पर देय 'रॉयल्टी' (Royalty) एक प्रकार का कर (Tax) है।
4. एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (ADR) वाद में सर्वोच्च न्यायालय ने चुनावी बॉन्ड योजना को अनुच्छेद 19(1)(a) का उल्लंघन मानते हुए रद्द कर दिया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1 और 4

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 सत्य है: सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि रिश्वतखोरी से संसदीय विशेषाधिकार की रक्षा नहीं होती; अतः पी.वी. नरसिम्हा राव मामले का 1998 का फैसला सर्वसम्मति से पलट दिया गया।
    - कथन 2 असत्य है: दविंदर सिंह मामले में 7-न्यायाधीशों की पीठ ने 6:1 के बहुमत से एससी/एसटी के उप-वर्गीकरण को **संवैधानिक रूप से वैध (अनुमन्य)** माना है।
    - कथन 3 असत्य है: 9-न्यायाधीशों की पीठ ने स्पष्ट रूप से निर्णय दिया कि खनन पट्टों पर देय 'रॉयल्टी' **कर (Tax) नहीं है** और राज्य विधानमंडलों को खनिज युक्त भूमि पर कर लगाने का अधिकार है।
    - कथन 4 सत्य है: चुनावी बॉन्ड योजना को नागरिकों के सूचना के अधिकार (अनुच्छेद 19(1)(a)) का हनन मानते हुए असंवैधानिक घोषित किया गया।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक वाद)	**सूची-II (संबद्ध विषय / संवैधानिक पीठ)**
a. राज्य बनाम दविंदर सिंह	1. खनिज अधिकारों पर राज्यों का कराधान अधिकार (9-न्यायाधीश पीठ)
b. सीता सोरेन बनाम भारत संघ	2. चुनावी बॉन्ड योजना का निरस्तीकरण (5-न्यायाधीश पीठ)
c. मिनरल एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी वाद	3. एससी/एसटी का उप-वर्गीकरण मान्य (7-न्यायाधीश पीठ)
d. एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स वाद	4. विधायिका में रिश्वतखोरी पर कोई संसदीय प्रतिरक्षा नहीं (7-न्यायाधीश पीठ)

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **दविंदर सिंह वाद (2024):** 7 जजों की पीठ द्वारा SC/ST आरक्षण में उप-वर्गीकरण को वैध ठहराया गया।
    - **सीता सोरेन वाद (2024):** 7 जजों की पीठ ने रिश्वतखोरी पर सांसदों/विधायकों के विशेषाधिकार को समाप्त किया।

©IASHINDIMEDIUM

- **मिनरल एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी वाद (2024):** 9 जजों की पीठ ने राज्यों को खनिज भूमि पर कर लगाने का अधिकार दिया तथा रॉयल्टी को कर नहीं माना।
- **ADR वाद (2024):** 5 जजों की पीठ ने सर्वसम्मति से चुनावी बॉन्ड व्यवस्था को असंवैधानिक ठहराया।

टॉपिक - 3: संसद द्वारा पारित महत्वपूर्ण नवीनतम अधिनियम एवं विधायी सुधार

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के विगत 15 वर्षों के पैटर्न के अनुसार संसद द्वारा पारित नवीन अधिनियमों से संबंधित प्रश्न मुख्यतः **मूल अधिनियम (जिसे प्रतिस्थापित या संशोधित किया गया), अपराधों के वर्गीकरण (संज्ञेय/गैर-जमानती), दंडात्मक प्रावधानों (कारावास व जुर्माना राशि), गठित होने वाले नए वैधानिक निकायों तथा केंद्र-राज्य क्षेत्राधिकार** पर पूछे जाते हैं।

1. प्रमुख पारित अधिनियम एवं उनके मुख्य घटक

- **लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024 [The Public Examinations (Prevention of Unfair Means) Act, 2024]:**
  - **लागू होने की तिथि:** 21 जून 2024।
  - **उद्देश्य:** UPSC, SSC, रेलवे भर्ती बोर्ड (RRB), NTA तथा IBPS द्वारा आयोजित सार्वजनिक परीक्षाओं में पेपर लीक, नकल और अनुचित साधनों पर रोक लगाना।
  - **दंडात्मक प्रावधान:**
    - सामान्य व्यक्तियों/संलिप्त अपराधियों हेतु: **3 से 5 वर्ष का कारावास** तथा **₹10 लाख तक का जुर्माना**।
    - संगठित अपराध सिंडिकेट (Organised Crimes): **5 से 10 वर्ष का कठोर कारावास** तथा न्यूनतम **₹1 करोड़ का जुर्माना**।
    - सेवा प्रदाता फर्मों द्वारा मिलीभगत: परीक्षा संचालन से 4 वर्ष का प्रतिबंध और ₹1 करोड़ तक जुर्माना।
  - **अपराध की प्रकृति:** सभी अपराध **संज्ञेय (Cognizable), गैर-जमानती (Non-Bailable)** तथा गैर-शमनीय (Non-Compoundable)। जांच पुलिस उपाधीक्षक (DSP/ACP) स्तर के अधिकारी द्वारा ही की जा सकती है।
- **भारतीय वायुयान अधिनियम, 2024 (Bharatiya Vayuyan Adhiniyam, 2024):**
  - इसने औपनिवेशिक काल के 90 वर्ष पुराने **विमान अधिनियम, 1934 (Aircraft Act, 1934)** को निरस्त कर प्रतिस्थापित किया।
  - यह केवल विमानों के निर्माण व संचालन तक सीमित न रहकर **'विमानों के डिजाइन' (Aircraft Design)** को भी वैधानिक विनियमन के दायरे में लाता है।
  - तीन प्रमुख वैधानिक निकायों—नागर विमानन महानिदेशालय (DGCA), नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो (BCAS), तथा विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (AAIB) की भूमिका को औपचारिक विधायी आधार प्रदान किया गया।
- **जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) संशोधन अधिनियम, 2024:**
  - मूल अधिनियम (1974) में संशोधन।

©IASHINDIMEDIUM

- छोटे एवं तकनीकी गैर-अनुपालनों को **अपराधमुक्त (Decriminalize)** किया गया; कई मामलों में कारावास के स्थान पर आर्थिक दंड का प्रावधान किया गया।
- यह केंद्र सरकार को औद्योगिक इकाइयों के संचालन हेतु केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के माध्यम से एक समान मानक एवं छूट निर्धारित करने का अधिकार देता है।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन विधायी संदर्भ (2025–2026)

- **आपदा प्रबंधन (संशोधन) अधिनियम, 2025 (Disaster Management Amendment Act):** संसद द्वारा वर्ष 2005 के मूल आपदा प्रबंधन अधिनियम में संशोधन कर राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर समवर्ती आपदा प्रबंधन डेटाबेस तैयार करने तथा शहरी क्षेत्रों में तीव्र जोखिम प्रबंधन हेतु 'शहरी आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' (Urban Disaster Management Authorities) के गठन का वैधानिक मार्ग प्रशस्त किया गया।
- **जन विश्वास (उपबंधों का संशोधन) अधिनियम 2.0 (Jan Vishwas Act 2.0, 2026):** 'ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस' और 'ईज़ ऑफ लिविंग' को बढ़ावा देने हेतु दर्जनों मंत्रालयों से जुड़े विभिन्न केंद्रीय कानूनों में छोटे तकनीकी उल्लंघनों से कारावास के प्रावधान को हटाकर केवल मौद्रिक पेनल्टी (Civil Penalties) में परिवर्तित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस अधिनियम के अंतर्गत अपराधों को संज्ञेय, जमानती तथा शमनीय (Compoundable) बनाया गया है।
2. संगठित परीक्षा अपराधों (Organised Crimes) के मामलों में न्यूनतम 5 वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक के कारावास तथा न्यूनतम ₹1 करोड़ के जुर्माने का प्रावधान है।
3. अधिनियम के अंतर्गत अपराधों की जांच पुलिस उप-अधीक्षक (DSP) अथवा सहायक पुलिस आयुक्त (ACP) स्तर से नीचे के अधिकारी द्वारा नहीं की जा सकती।
4. यह अधिनियम केवल संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की परीक्षाओं पर लागू होता है, राज्य लोक सेवा आयोगों की परीक्षाओं पर नहीं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B) केवल 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 2 और 3 सत्य हैं: संगठित पेपर लीक गिरोहों हेतु 5 से 10 वर्ष की जेल और न्यूनतम ₹1 करोड़ के जुर्माने का कड़ा दंड तय किया गया है। इसकी जांच डीएसपी/एसीपी रैंक के वरिष्ठ अधिकारी द्वारा ही की जा सकती है।

©IASHINDIMEDIUM

- कथन 1 असत्य है: इस अधिनियम के अंतर्गत सभी अपराध **संज्ञेय, गैर-जमानती (Non-bailable)** तथा **गैर-शमनीय (Non-compoundable)** घोषित किए गए हैं।
- कथन 4 असत्य है: यह कानून UPSC, SSC, RRB, NTA, बैंकिंग परीक्षाओं के साथ-साथ केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित सार्वजनिक परीक्षाओं तथा राज्य सरकारों द्वारा अंगीकार किए जाने पर व्यापक स्तर पर लागू होता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (संसद द्वारा पारित नवीन अधिनियम)	**सूची-II (प्राथमिक उद्देश्य / प्रतिस्थापित कानून)**
a. भारतीय वायुयान अधिनियम, 2024	1. छोटे व तकनीकी पर्यावरणीय उल्लंघनों का वि-अपराधीकरण
b. लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024	2. 1934 के औपनिवेशिक विमानन कानून का प्रतिस्थापन
c. जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) संशोधन अधिनियम, 2024	3. शहरी आपदा प्राधिकरणों का गठन एवं डेटाबेस एकीकरण
d. आपदा प्रबंधन (संशोधन) अधिनियम, 2025	4. पेपर लीक और संगठित नकल माफिया पर कठोर अंकुश

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **भारतीय वायुयान अधिनियम, 2024:** 90 वर्ष पुराने 'विमान अधिनियम, 1934' को समाप्त कर विमान डिजाइन और आधुनिक नागर विमानन को एकीकृत करता है।
  - **लोक परीक्षा अधिनियम, 2024:** राष्ट्रीय स्तर पर पेपर लीक और संगठित नकल सिंडिकेट को रोकने हेतु पारित किया गया।
  - **जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) संशोधन अधिनियम, 2024:** 1974 के कानून में संशोधन कर मामूली उल्लंघनों को अपराधमुक्त करता है।
  - **आपदा प्रबंधन (संशोधन) अधिनियम, 2025:** 2005 के अधिनियम का आधुनिकीकरण करते हुए आपदा जोखिम और शहरी प्रबंधन तंत्र को सशक्त करता है।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 4: नीति आयोग और सरकार की प्रमुख रिपोर्ट एवं सूचकांक

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के विगत 15 वर्षों के रुझानों के अनुसार नीति आयोग तथा केंद्रीय मंत्रालयों की रिपोर्टों से संबंधित प्रश्न मुख्य रूप से **शीर्ष व निम्नतम प्रदर्शनकर्ता राज्यों, उत्तर प्रदेश की रैंकिंग/स्कोर, प्रयुक्त आयामों व संकेतकों (Dimensions & Indicators) तथा श्रेणियों (Aspirant, Performer, Front Runner, Achiever)** पर पूछे जाते हैं।

1. प्रमुख सूचकांक एवं उत्तर प्रदेश की स्थिति

- **एसडीजी इंडिया इंडेक्स (SDG India Index 2023-24 / 4th Edition):**
    - **समग्र राष्ट्रीय प्रगति:** भारत का समग्र एसडीजी स्कोर सुधरकर **71** हो गया (2020-21 में 66 था)।
    - **वर्गीकरण श्रेणियां:** आकांक्षी/Aspirant (0–49), परफार्मर/Performer (50–64), फ्रंट रनर/Front Runner (65–99), अचीवर/Achiever (100)। वर्तमान में कोई भी राज्य एस्पिरेंट श्रेणी में नहीं है।
    - **शीर्ष राज्य: उत्तराखंड एवं केरल** (संयुक्त रूप से स्कोर: 79 के साथ प्रथम स्थान)।
    - **निम्नतम राज्य: बिहार** (स्कोर: 57)।
    - **उत्तर प्रदेश की स्थिति:** उत्तर प्रदेश **'फ्रंट रनर' (Front Runner)** श्रेणी में शामिल है (स्कोर: 67)। राज्य ने स्वच्छ ऊर्जा (SDG 7) तथा जल एवं स्वच्छता (SDG 6) में सबसे तीव्र छलांग लगाई है।
- **राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (National Multidimensional Poverty Index - MPI):**
    - **पद्धति:** ऑक्सफोर्ड पावर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव (OPHI) की **अल्कायर-फॉस्टर (Alkire-Foster) पद्धति**।
    - **आयाम व संकेतक:** 3 व्यापक आयाम—स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर। वैश्विक एमपीआई के 10 संकेतकों की तुलना में भारतीय एमपीआई में कुल **12 संकेतक** हैं (दो नए जोड़े गए: **मातृ स्वास्थ्य** एवं **बैंक खाता**)।
    - **राष्ट्रीय निष्कर्ष:** बहुआयामी गरीबों का अनुपात घटकर **14.96%** रह गया।
    - **उत्तर प्रदेश विशेष:** गरीबी से बाहर निकलने वाले लोगों की सर्वाधिक संख्या **उत्तर प्रदेश में (लगभग 5.94 करोड़ व्यक्ति)** दर्ज की गई, जो पूरे देश में सर्वाधिक है। इसके बाद बिहार और मध्य प्रदेश का स्थान रहा।
- **इंडिया इनोवेशन इंडेक्स (India Innovation Index):**
    - प्रमुख राज्यों में शीर्ष स्थान: **कर्नाटक**। उत्तर प्रदेश ने ज्ञान प्रसार (Knowledge Diffusion) और आईसीटी अवसंरचना में सुधार करते हुए शीर्ष 7 राज्यों में स्थान बनाया।
- **राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक (SFSI - FSSAI द्वारा जारी):**
    - बड़े राज्यों में शीर्ष राज्य: **केरल** (प्रथम) एवं पंजाब (द्वितीय)। उत्तर प्रदेश शीर्ष 5 राज्यों में सम्मिलित।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम (Aspirational Blocks Programme - ABP) डेल्टा रैंकिंग:** नीति आयोग द्वारा देश के 500 आकांक्षी ब्लॉकों हेतु जारी डेल्टा रैंकिंग में उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड (चित्रकूट, बांदा) तथा पूर्वांचल (श्रावस्ती, बलरामपुर) के ब्लॉकों ने स्वास्थ्य, पोषण और वित्तीय समावेशन के 'संपूर्णता अभियान' के तहत देश में शीर्ष प्रदर्शन किया।

©IASHINDIMEDIUM

- **'विकसित भारत @2047' राज्य दृष्टि योजना (State Vision Documents):** नीति आयोग के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश राज्य परिवर्तन संस्थान (STIU / पूर्व राज्य योजना आयोग) द्वारा वर्ष 2047 तक राज्य को 3 ट्रिलियन डॉलर तथा देश की जीडीपी में 15% हिस्सेदारी दिलाने हेतु विस्तृत रोडमैप का विमोचन किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. नीति आयोग द्वारा जारी 'एसडीजी इंडिया इंडेक्स (SDG India Index)' तथा 'राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (National MPI)' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नीति आयोग के राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक में कुल 12 संकेतक शामिल हैं, जिनमें 'मातृ स्वास्थ्य' और 'बैंक खाते' को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है।
2. राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक के अनुसार भारत में बहुआयामी गरीबी से मुक्त होने वाले लोगों की सर्वाधिक संख्या उत्तर प्रदेश राज्य में दर्ज की गई है।
3. एसडीजी इंडिया इंडेक्स के नवीनतम संस्करण में उत्तर प्रदेश को सबसे निचली 'आकांक्षी' (Aspirant) श्रेणी में रखा गया है।
4. एसडीजी इंडिया इंडेक्स में उत्तराखंड और केरल संयुक्त रूप से शीर्ष प्रदर्शनकर्ता राज्य रहे हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: भारतीय MPI में वैश्विक 10 संकेतकों के अतिरिक्त मातृ स्वास्थ्य और बैंक खाते जोड़कर कुल 12 संकेतक हैं; उत्तर प्रदेश में देश में सर्वाधिक (5.94 करोड़) लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए हैं; तथा उत्तराखंड व केरल 79 अंकों के साथ शीर्ष स्थान पर रहे।
    - कथन 3 असत्य है: उत्तर प्रदेश 65 से 99 अंक के मध्य स्कोर (67 अंक) के साथ **'फ्रंट रनर' (Front Runner)** श्रेणी में है, न कि आकांक्षी श्रेणी में। वर्तमान में भारत का कोई भी राज्य आकांक्षी श्रेणी (0–49 अंक) में नहीं है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (सूचकांक / रिपोर्ट)	**सूची-II (शीर्ष प्रदर्शनकर्ता राज्य / मुख्य आयाम)**
a. एसडीजी इंडिया इंडेक्स (नवीनतम)	1. केरल (प्रथम स्थान)
b. इंडिया इनोवेशन इंडेक्स (प्रमुख राज्य)	2. उत्तराखंड एवं केरल

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (सूचकांक / रिपोर्ट)	सूची-II (शीर्ष प्रदर्शनकर्ता राज्य / मुख्य आयाम)
c. बहुआयामी गरीबी सूचकांक (पद्धति)	3. कर्नाटक
d. राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक (बड़े राज्य)	4. अल्कायर-फॉस्टर (12 संकेतक)

कूट:

(A) a-2, b-3, c-4, d-1

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-3, b-2, c-4, d-1

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-4, d-1

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **एसडीजी इंडिया इंडेक्स:** उत्तराखंड और केरल संयुक्त रूप से शीर्ष पर हैं।
    - **इंडिया इनोवेशन इंडेक्स:** प्रमुख बड़े राज्यों की श्रेणी में कर्नाटक शीर्ष पर बना हुआ है।
    - **राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक:** यह ऑक्सफोर्ड की अल्कायर-फॉस्टर पद्धति पर आधारित है जिसमें 3 आयाम और 12 संकेतक हैं।
    - **राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक:** भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) द्वारा जारी इस सूचकांक के बड़े राज्यों के वर्ग में केरल प्रथम स्थान पर है।

IAS HINDI MEDIUM

टॉपिक - 5: निर्वाचन आयोग की नवीन पहलें, चुनावी सुधार एवं 18वीं लोकसभा चुनाव

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा के विगत 15 वर्षों के विश्लेषण के अनुसार चुनाव एवं भारत निर्वाचन आयोग (ECI) से संबंधित प्रश्न मुख्यतः **संवैधानिक प्रावधानों (अनुच्छेद 324-329), नवीन डिजिटल अनुप्रयोगों (Apps), चुनावी कानूनों/संशोधनों, मतदान सहभागिता पहलों तथा राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की अर्हताओं** पर केंद्रित होते हैं।

1. संवैधानिक एवं वैधानिक सुधार: मुख्य निर्वाचन आयुक्त एवं अन्य निर्वाचन आयुक्त अधिनियम, 2023

- **पृष्ठभूमि:** संसद द्वारा पारित यह अधिनियम जनवरी 2024 से प्रभावी हुआ, जिसने 1991 के अधिनियम को प्रतिस्थापित किया।
- **चयन प्रक्रिया (त्रि-सदस्यीय चयन समिति):**
    - समिति में **प्रधानमंत्री (अध्यक्ष)**, **लोकसभा में विपक्ष के नेता / सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता**, तथा **प्रधानमंत्री द्वारा नामित एक केंद्रीय कैबिनेट मंत्री** शामिल हैं।
    - *खोज समिति (Search Committee):* कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में 5 नामों का पैनल चयन समिति को प्रस्तावित करती है।

- **कार्यकाल एवं सेवा शर्तें:** पदभार ग्रहण से **6 वर्ष अथवा 65 वर्ष की आयु** (जो भी पहले हो)। वेतन व सेवा शर्तें सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के समतुल्य रखी गई हैं।
- **पदमुक्ति प्रक्रिया:** मुख्य निर्वाचन आयुक्त (CEC) को केवल सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की भांति संसद द्वारा महाभियोग (सिद्ध कदाचार/असमर्थता) से हटाया जा सकता है, जबकि अन्य निर्वाचन आयुक्तों को CEC की सिफारिश पर ही हटाया जा सकता है।

2. निर्वाचन आयोग के प्रमुख डिजिटल अनुप्रयोग (IT Initiatives)

- **c-VIGIL:** नागरिकों द्वारा आदर्श आचार संहिता (MCC) तथा व्यय उल्लंघनों की 100 मिनट के भीतर भू-स्थानिक (GIS) रिपोर्टिंग व त्वरित निवारण।
- **सक्षम ऐप (Saksham App):** दिव्यांग (PwD) मतदाताओं हेतु व्हीलचेयर अनुरोध, ब्रेल लिपि संबंधी सहायता तथा विशेष मतदान केंद्र पिक-अप की सुविधा।
- **सुविधा पोर्टल (Suvidha Portal):** उम्मीदवारों व राजनीतिक दलों को रैलियों, सभाओं और वाहनों की अनुमति हेतु सिंगल-विंडो डिजिटल क्लीयरेंस।
- **नो योर कैंडिडेट (KYC App):** मतदाताओं को प्रत्याशियों के आपराधिक पूर्ववृत्त (Criminal Antecedents) व परिसंपत्तियों की पारदर्शी जानकारी।
- **मिथ वर्सेस रियलिटी (Myth vs Reality Register):** चुनावी अफवाहों और भ्रामक डीपफेक सामग्री का आधिकारिक खंडन करने हेतु ECI का समर्पित पोर्टल।

3. 18वीं लोकसभा चुनाव की विशिष्टताएँ एवं मतदाता सहभागिता

- **घर से मतदान (Home Voting Facility):** भारत में पहली बार लोकसभा चुनावों में **85 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों** तथा 40% **से अधिक दिव्यांगता** वाले व्यक्तियों को पोस्टल बैलेट द्वारा घर से ही मतदान की राष्ट्रव्यापी वैकल्पिक सुविधा प्रदान की गई।
- **स्वीप (SVEEP):** 'सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता' अभियान के तहत कम मतदान वाले शहरी एवं ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्रों में विशेष जागरूकता अभियान चलाए गए।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन चुनावी संदर्भ (2025–2026)

- **'एक राष्ट्र, एक चुनाव' (उच्चस्तरीय समिति रिपोर्ट व अनुवर्ती कदम):** पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली उच्चस्तरीय समिति की रिपोर्ट के आधार पर लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने (प्रथम चरण) तथा उसके 100 दिनों के भीतर स्थानीय निकायों (नगर पालिकाओं व पंचायतों) के चुनाव कराने हेतु प्रस्तावित संवैधानिक संशोधन (अनुच्छेद 82A, 83, 172 आदि) एवं एकल मतदाता सूची (Single Electoral Roll) निर्माण की प्रक्रिया पर अग्रिम विधायी मसौदे को आगे बढ़ाया गया।
- **राष्ट्रीय दल की स्थिति (वर्तमान में 6 दल):** राजनीतिक दलों की मान्यता की नवीनतम स्थिति के अनुसार भारत में कुल **6 राष्ट्रीय दल** मान्यता प्राप्त हैं—भारतीय जनता पार्टी (BJP), भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC), बहुजन समाज पार्टी (BSP), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी-मार्क्सवादी (CPI-M), नेशनल पीपुल्स पार्टी (NPP) तथा आम आदमी पार्टी (AAP)।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

©IASHINDIMEDIUM

प्रश्न 1. 'मुख्य निर्वाचन आयुक्त और अन्य निर्वाचन आयुक्त (नियुक्ति, सेवा शर्तें और पदावधि) अधिनियम, 2023' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस अधिनियम के तहत मुख्य निर्वाचन आयुक्त तथा अन्य निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति हेतु गठित चयन समिति में भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) को अनिवार्य सदस्य के रूप में शामिल किया गया है।
2. चयन समिति की अध्यक्षता भारत के प्रधानमंत्री द्वारा की जाती है।
3. मुख्य निर्वाचन आयुक्त अथवा अन्य निर्वाचन आयुक्त का कार्यकाल 6 वर्ष अथवा 65 वर्ष की आयु (जो भी पहले हो) तक होता है।
4. 18वीं लोकसभा चुनाव में पहली बार 85 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों तथा 40% से अधिक दिव्यांगता वाले मतदाताओं को घर से मतदान (Home Voting) की वैकल्पिक सुविधा प्रदान की गई।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 2, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 2, 3 और 4 सत्य हैं: चयन समिति में प्रधानमंत्री (अध्यक्ष), लोकसभा में विपक्ष के नेता तथा प्रधानमंत्री द्वारा नामित केंद्रीय कैबिनेट मंत्री होते हैं; कार्यकाल 6 वर्ष या 65 वर्ष की आयु तक होता है; तथा 18वीं लोकसभा में 85+ वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगों को घर से पोस्टल बैलेट द्वारा मतदान की सुविधा दी गई।
    - कथन 1 असत्य है: 2023 के अधिनियम में चयन समिति से **भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI)** को बाहर रखा गया है और उनके स्थान पर 'प्रधानमंत्री द्वारा नामित एक केंद्रीय कैबिनेट मंत्री' को सदस्य बनाया गया है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (निर्वाचन आयोग की पहल / ऐप)	**सूची-II (प्राथमिक उद्देश्य / कार्यप्रणाली)**
a. c-VIGIL	1. दिव्यांग मतदाताओं हेतु सुलभता व सहायता
b. सक्षम ऐप (Saksham)	2. आचार संहिता उल्लंघन की जीपीएस-आधारित त्वरित शिकायत
c. सुविधा पोर्टल	3. चुनावी अफवाहों व डीपफेक सामग्री का त्वरित खंडन
d. मिथ वर्सेस रियलिटी रजिस्टर	4. रैलियों एवं जनसभाओं की एकल-खिड़की डिजिटल अनुमति

©IASHINDIMEDIUM

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-4, b-1, c-2, d-3

(D) a-3, b-2, c-4, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **c-VIGIL:** चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन की ऑडियो, वीडियो या फोटो के माध्यम से 100 मिनट में जांच व निवारण सुनिश्चित करता है।
    - **सक्षम ऐप:** विशेष रूप से दिव्यांग (PwD) मतदाताओं को सुगम मतदान अनुभव उपलब्ध कराने के लिए तैयार किया गया है।
    - **सुविधा पोर्टल:** राजनीतिक दलों एवं उम्मीदवारों को चुनाव प्रचार से जुड़ी स्वीकृतियों के लिए सिंगल-विंडो सिस्टम प्रदान करता है।
    - **मिथ वर्सेस रियलिटी रजिस्टर:** सोशल मीडिया व सार्वजनिक विमर्श में चुनावों को लेकर फैलाई जाने वाली गलत सूचनाओं व फेक न्यूज का आधिकारिक तथ्यों के साथ खंडन करता है।

IAS HINDI MEDIUM

अंतर्राष्ट्रीय समसामयिकी

टॉपिक - 1: प्रमुख देशों के चुनाव एवं नवनिर्वाचित राष्ट्राध्यक्ष

अंतरराष्ट्रीय नियुक्तियों एवं चुनावों के अंतर्गत विभिन्न देशों के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रथम महिला राष्ट्राध्यक्षों तथा उनसे संबद्ध राजनीतिक दलों से जुड़े तथ्य परीक्षा की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

1. प्रमुख नवनिर्वाचित वैश्विक नेता एवं राष्ट्राध्यक्ष

देश	**नवनिर्वाचित राष्ट्राध्यक्ष / शासनाध्यक्ष**	**पद**	**संबंधित दल / विशिष्ट तथ्य**
मैक्सिको	**क्लाउडिया शिनबाम (Claudia Sheinbaum)**	राष्ट्रपति	मोरेना (MORENA) पार्टी; **मैक्सिको के इतिहास की प्रथम महिला राष्ट्रपति**।
संयुक्त राज्य अमेरिका (USA)	**डोनाल्ड ट्रम्प**	47वें राष्ट्रपति	रिपब्लिकन पार्टी; उपराष्ट्रपति: जे. डी. वेंस।
यूनाइटेड किंगडम (UK)	**कीर स्टार्मर (Keir Starmer)**	प्रधानमंत्री	लेबर पार्टी (14 वर्षों के कंजर्वेटिव शासन के बाद सत्ता में वापसी)।

©IASHINDIMEDIUM

देश	नवनिर्वाचित राष्ट्राध्यक्ष / शासनाध्यक्ष	पद	संबंधित दल / विशिष्ट तथ्य
श्रीलंका	**अनुरा कुमारा दिसानायके**	कार्यपालक राष्ट्रपति	जनता विमुक्ति पेरामुना (JVP) / नेशनल पीपुल्स पावर (NPP) गठबंधन।
इंडोनेशिया	**प्रबोवो सुबियांतो (Prabowo Subianto)**	राष्ट्रपति	पूर्व रक्षा मंत्री; जोको विडोडो का स्थान लिया।
जापान	**शिगेरु इशिबा (Shigeru Ishiba)**	प्रधानमंत्री	लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (LDP); फुमियो किशिदा का स्थान लिया।
मॉरीशस	**नवीन रामगुलाम**	प्रधानमंत्री	लेबर पार्टी / अलायंस डू चांगमेंट; प्रविंद जगन्नाथ को पराजित किया।
ताइवान	**लाई चिंग-ते (विलियम लाई)**	राष्ट्रपति	डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (DPP)।
सेनेगल	**बस्सिरू डियोमाये फाये**	राष्ट्रपति	अफ्रीका के सबसे युवा निर्वाचित राष्ट्रपति (44 वर्ष)।
ईरान	**मसूद पेज़ेशकियन (Masoud Pezeshkian)**	राष्ट्रपति	सुधारवादी नेता; इब्राहिम रईसी के निधनोपरांत निर्वाचित।

2. विशिष्ट चुनावी प्रवृत्तियाँ एवं नेतृत्व परिवर्तन

- **लातिन अमेरिका में महिला नेतृत्व:** मैक्सिको में पर्यावरण वैज्ञानिक और मेक्सिको सिटी की पूर्व मेयर क्लाउडिया शिनबाम ने देश के 200 वर्षों के इतिहास में पहली महिला राष्ट्रपति बनकर नया कीर्तिमान स्थापित किया।
- **दक्षिण एशिया में राजनीतिक बदलाव:** श्रीलंका में आर्थिक संकट के उपरांत वामपंथी रुझान वाले नेता अनुरा कुमारा दिसानायके की जीत तथा आम चुनावों में एनपीपी गठबंधन को ऐतिहासिक बहुमत प्राप्त हुआ।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन अंतरराष्ट्रीय संदर्भ (2025–2026)

- **जर्मनी एवं पश्चिमी यूरोप में राजनीतिक परिवर्तन:** जर्मनी के संघीय बुंडेस्टाग चुनावों के बाद विपक्षी क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (CDU) के नेता **फ्रेडरिक मर्ज (Friedrich Merz)** के नेतृत्व में नए गठबंधन की दिशा तय हुई।
- **आयरलैंड एवं दक्षिण अमेरिका में चुनावी परिणाम:** आयरलैंड में आम चुनाव संपन्न हुए, जबकि चिली और इक्वाडोर में राष्ट्रपति चुनावों के बहुचरणीय मतदान आयोजित किए गए।
- **वैश्विक नेतृत्व समीकरण:** विश्व भर में संपन्न हुए चुनावों के उपरांत संरक्षणवादी व्यापार नीतियों, द्विपक्षीय रक्षा समझौतों तथा बहुपक्षीय मंचों (G20, BRICS, कॉप शिखर सम्मेलन) में नए राष्ट्राध्यक्षों की सक्रिय भागीदारी दर्ज की गई।

©IASHINDIMEDIUM

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. हाल ही में संपन्न हुए विभिन्न देशों के चुनावों एवं नवनिर्वाचित राष्ट्राध्यक्षों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. क्लाउडिया शिनबाम (Claudia Sheinbaum) मैक्सिको के इतिहास में राष्ट्रपति निर्वाचित होने वाली प्रथम महिला बनी हैं।
2. यूनाइटेड किंगडम के आम चुनाव में कीर स्टार्मर के नेतृत्व वाली लेबर पार्टी ने 14 वर्षों बाद सत्ता में वापसी की।
3. अनुरा कुमारा दिसानायके श्रीलंका के राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित हुए हैं, जिनका संबंध जनता विमुक्ति पेरामुना (JVP)/NPP गठबंधन से है।
4. शिगेरु इशिबा को दक्षिण कोरिया का नया राष्ट्रपति चुना गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: क्लाउडिया शिनबाम मैक्सिको की पहली महिला राष्ट्रपति चुनी गईं; ब्रिटेन में लेबर पार्टी के कीर स्टार्मर नए प्रधानमंत्री बने; तथा श्रीलंका में वामपंथी पृष्ठभूमि के अनुरा कुमारा दिसानायके राष्ट्रपति चुने गए।
  - कथन 4 असत्य है: शिगेरु इशिबा **जापान** के प्रधानमंत्री बने हैं, न कि दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति के पद पर।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (नवनिर्वाचित राष्ट्राध्यक्ष / शासनाध्यक्ष)	**सूची-II (संबद्ध देश)**
a. क्लाउडिया शिनबाम	1. यूनाइटेड किंगडम
b. कीर स्टार्मर	2. मैक्सिको
c. प्रबोवो सुबियांतो	3. सेनेगल
d. बस्सिरू डियोमाये फाये	4. इंडोनेशिया

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

©IASHINDIMEDIUM

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **क्लाउडिया शिनबाम:** मैक्सिको की पहली महिला राष्ट्रपति।
    - **कीर स्टार्मर:** यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री (लेबर पार्टी)।
    - **प्रबोवो सुबियांतो:** इंडोनेशिया के राष्ट्रपति।
    - **बस्सिरू डियोमाये फाये:** सेनेगल के सबसे युवा राष्ट्रपति।

टॉपिक - 2: प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठन, जी-20, ब्रिक्स एवं यूएन सम्मेलन

1. जी-20 (G20) शिखर सम्मेलन

- **संरचना एवं स्वरूप:** 19 देश + यूरोपीय संघ (EU) + अफ्रीकी संघ (AU - 2023 के 18वें नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में 21वें स्थायी सदस्य के रूप में शामिल)।
- **19वां जी-20 शिखर सम्मेलन (2024):**
    - **आयोजन स्थल:** रियो डी जेनेरियो, **ब्राजील** (नवंबर 2024)।
    - **आधिकारिक थीम:** *"Building a just world and a sustainable planet"* (एक न्यायसंगत विश्व और संधारणीय ग्रह का निर्माण)।
    - **प्रमुख परिणाम:** ब्राजील की अध्यक्षता में **'ग्लोबल अलायंस अगेंस्ट हंगर एंड पावर्टी' (Global Alliance against Hunger and Poverty)** का औपचारिक शुभारंभ।
- **20वां जी-20 शिखर सम्मेलन (2025):** जोहान्सबर्ग, **दक्षिण अफ्रीका**। (यह पहली बार था जब जी-20 की लगातार अध्यक्षता ग्लोबल साउथ के चार देशों—इंडोनेशिया, भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका—द्वारा पूरी की गई)।
- **21वां जी-20 शिखर सम्मेलन (2026):** संयुक्त राज्य अमेरिका (USA)।

2. ब्रिक्स (BRICS) एवं इसका ऐतिहासिक विस्तार

- **सदस्यता विस्तार:** 1 जनवरी 2024 से 4 नए पूर्ण सदस्य आधिकारिक रूप से शामिल हुए—**मिस्र (Egypt), इथियोपिया (Ethiopia), ईरान (Iran) एवं संयुक्त अरब अमीरात (UAE)**।
- **16वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2024):**
    - **आयोजन स्थल:** कज़ान (Kazan), **रूस** (अक्टूबर 2024)।
    - **थीम:** *"Strengthening Multilateralism for Just Global Development and Security"*।

©IASHINDIMEDIUM

- **परिणाम: कज़ान घोषणा-पत्र (Kazan Declaration)** अंगीकार; स्थानीय मुद्राओं में सीमा-पार वित्तीय लेन-देन तंत्र (BRICS Clear/Pay) तथा 13 देशों को 'भागीदार देश' (Partner Countries) का दर्जा देने पर सहमति।

- **17वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2025):** रियो डी जेनेरियो, **ब्राजील**।
- **18वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2026): भारत** (नई दिल्ली) — भारत द्वारा 2026 हेतु ब्रिक्स की घूर्णी अध्यक्षता का संचालन।

3. संयुक्त राष्ट्र एवं अन्य प्रमुख बहुपक्षीय मंच

- **यूएन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (UNFCCC COP):**
  - **COP-29 (2024):** बाकू, **अजरबैजान** (मुख्य केंद्र: नया सामूहिक परिमाणित जलवायु वित्त लक्ष्य - NCQG)।
  - **COP-30 (2025):** बेलेम (Belém), **ब्राजील** (अमेज़न वर्षावन क्षेत्र)।
  - **COP-31 (2026):** तुर्किये / ऑस्ट्रेलिया-प्रशांत साझेदारी।
- **शंघाई सहयोग संगठन (SCO):** वर्ष 2024 के अस्ताना (कजाकिस्तान) शिखर सम्मेलन में **बेलारूस** आधिकारिक रूप से SCO का **10वां पूर्ण सदस्य** बना (2023 में ईरान 9वां सदस्य बना था)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **भारत द्वारा 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 2026 की मेजबानी:** भारत ने 2026 में 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता संभालते हुए इसका मुख्य विषय *"Building for Resilience, Innovation, Cooperation and Sustainability"* निर्धारित किया। इसमें डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) और पारंपरिक चिकित्सा के वैश्विक प्रसार पर विशेष बल दिया गया।
- **संयुक्त राष्ट्र 'पैक्ट फॉर द फ्यूचर' (Pact for the Future):** संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) द्वारा बहुपक्षीय वित्तीय संस्थानों (IMF, विश्व बैंक) तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधारों हेतु 'पैक्ट फॉर द फ्यूचर' एवं 'ग्लोबल डिजिटल कॉम्पैक्ट' के कार्यान्वयन ढांचे को आगे बढ़ाया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. अंतरराष्ट्रीय संगठनों एवं सम्मेलनों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2024) का आयोजन कज़ान (रूस) में किया गया, जिसमें कज़ान घोषणा-पत्र को अंगीकार किया गया।
2. बेलारूस शंघाई सहयोग संगठन (SCO) का 10वां पूर्ण सदस्य राष्ट्र बना है।
3. वर्ष 2024 के रियो डी जेनेरियो जी-20 शिखर सम्मेलन में आधिकारिक रूप से 'ग्लोबल अलायंस अगेंस्ट हंगर एंड पावर्टी' का शुभारंभ किया गया।
4. 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2026) की अध्यक्षता दक्षिण अफ्रीका द्वारा की जा रही है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

©IASHINDIMEDIUM

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: 16वां ब्रिक्स सम्मेलन कज़ान (रूस) में संपन्न हुआ; बेलारूस 2024 में SCO का 10वां पूर्ण सदस्य बना; तथा रियो जी-20 शिखर सम्मेलन (2024) में 'ग्लोबल अलायंस अगेंस्ट हंगर एंड पावर्टी' की शुरुआत हुई।
    - कथन 4 असत्य है: 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2026) की घूर्णी अध्यक्षता **भारत** द्वारा की जा रही है, दक्षिण अफ्रीका द्वारा नहीं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (शिखर सम्मेलन / बैठक)	**सूची-II (आयोजन स्थल / देश)**
a. 19वां जी-20 शिखर सम्मेलन (2024)	1. बाकू (अजरबैजान)
b. 16वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2024)	2. रियो डी जेनेरियो (ब्राजील)
c. यूएनएफसीसीसी COP-29 (2024)	3. कज़ान (रूस)
d. यूएनएफसीसीसी COP-30 (2025)	4. बेलेम (ब्राजील)

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **19वां जी-20 शिखर सम्मेलन (2024):** रियो डी जेनेरियो, ब्राजील।
    - **16वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2024):** कज़ान, रूस।
    - **COP-29 (2024):** बाकू, अजरबैजान।
    - **COP-30 (2025):** बेलेम, ब्राजील।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 3: भारत के पड़ोसी देशों के साथ कूटनीतिक संबंध

1. प्रमुख पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय एवं सामरिक आयाम

- **भारत-चीन (सीमा गश्त समझौता एवं गतिरोध समाधान):**
    - पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर सैन्य गतिरोध के समाधान हेतु दोनों देशों ने **डेपसांग (Depsang Plains)** एवं **डेमचोक (Demchok)** क्षेत्रों में सैनिकों की वापसी (Disengagement) तथा समन्वय-आधारित गश्त अधिकारों (Patrolling Rights) की बहाली पर सहमति व्यक्त की।
    - इसके परिणामस्वरूप 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (कज़ान) के दौरान दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व के मध्य औपचारिक द्विपक्षीय वार्ता आयोजित हुई।
- **भारत-मालदीव संबंध (आर्थिक साझेदारी एवं मुद्रा विनिमय):**
    - दोनों देशों ने **'व्यापक आर्थिक एवं समुद्री सुरक्षा साझेदारी' (Comprehensive Economic and Maritime Security Partnership)** का विज़न दस्तावेज़ जारी किया।
    - भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) एवं मालदीव मौद्रिक प्राधिकरण (MMA) के मध्य SAARC करेंसी स्वैप फ्रेमवर्क के तहत **$400 मिलियन** तथा **₹30 बिलियन (₹3,000 करोड़)** का द्विपक्षीय करेंसी स्वैप समझौता संपन्न हुआ।
    - मालदीव में भारतीय डिजिटल भुगतान प्रणाली—**UPI** तथा **रुपे (RuPay)** नेटवर्क का विस्तार किया गया।
- **भारत-भूटान संबंध (सीमा-पार रेल संपर्क एवं स्मार्ट सिटी):**
    - दोनों देशों के मध्य पहली बार सीमा-पार रेल संपर्क स्थापित करने हेतु **गेलेफू-कोकराझार (Gelephu-Kokrajhar)** तथा **सैमत्से-बनरहाट** रेल लिंक परियोजना पर द्विपक्षीय सहमति बनी।
    - भूटान के **'गेलेफू माइंडफुलनेस सिटी' (GMC)** विशेष प्रशासनिक क्षेत्र के विकास में भारत ने प्रमुख अवसंरचनात्मक भागीदार की भूमिका स्वीकार की।
- **भारत-नेपाल संबंध (त्रिपक्षीय विद्युत व्यापार):**
    - भारत, नेपाल और बांग्लादेश के मध्य त्रिपक्षीय विद्युत व्यापार समझौते (Tripartite Power Trade Agreement) के तहत नेपाल ने भारतीय ट्रांसमिशन ग्रिड के माध्यम से बांग्लादेश को 40 मेगावाट बिजली का प्रत्यक्ष निर्यात शुरू किया।
    - महाकाली संधि एवं पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना (Pancheshwar Multipurpose Project) के क्रियान्वयन को गति प्रदान की गई।
- **भारत-बांग्लादेश संबंध (ऊर्जा सुरक्षा एवं पारगमन):**
    - राजनीतिक बदलावों के बावजूद भारत ने **'मैत्री पाइपलाइन' (Indo-Bangla Friendship Pipeline)** के माध्यम से असम की नुमालीगढ़ रिफाइनरी से बांग्लादेश को हाई-स्पीड डीजल (HSD) की निरंतर आपूर्ति जारी रखी।

2. विगत 1 वर्ष का अद्यतन कूटनीतिक संदर्भ (2025–2026)

- **श्रीलंका के साथ ऊर्जा ग्रिड इंटरकनेक्शन एवं बंदरगाह विकास:** भारत और श्रीलंका ने मन्नार की खाड़ी के पार **उच्च-वोल्टेज प्रत्यक्ष धारा (HVDC) पावर ग्रिड इंटरकनेक्शन** और पेट्रोलियम पाइपलाइन के निर्माण को वित्तीय स्वीकृति दी। इसके अतिरिक्त उत्तरी श्रीलंका (जाफना) स्थित **कांकेसंतुरई (KKS) बंदरगाह** के आधुनिकीकरण हेतु भारतीय अनुदान सहायता को बढ़ाया गया।

©IASHINDIMEDIUM

- **चाबहार बंदरगाह एवं आईएनएसटीसी (INSTC) क्षेत्रीय पारगमन:** भारत द्वारा ईरान के साथ 10-वर्षीय दीर्घकालिक अनुबंध के प्रभावी होने के साथ ही अफगानिस्तान एवं मध्य एशियाई देशों हेतु व्यापार व मानवीय सहायता के पारगमन मार्ग का संचालन सुदृढ़ किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के अपने पड़ोसी देशों के साथ हालिया कूटनीतिक एवं सामरिक समझौतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत और चीन के मध्य पूर्वी लद्दाख के डेपसांग और डेमचोक क्षेत्रों में गश्त अधिकारों की बहाली तथा सैनिकों की वापसी पर समझौता हुआ।
2. भारत ने मालदीव के विदेशी मुद्रा संकट के समाधान हेतु $400 मिलियन तथा ₹30 बिलियन का द्विपक्षीय करेंसी स्वैप समझौता संपन्न किया।
3. भारत, नेपाल और म्यांमार के मध्य संपन्न त्रिपक्षीय विद्युत व्यापार समझौते के तहत म्यांमार को नेपाल से बिजली निर्यात की शुरुआत की गई।
4. असम के कोकराझार और भूटान के गेलेफू के मध्य दोनों देशों का पहला सीमा-पार रेल संपर्क विकसित किया जा रहा है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: डेपसांग और डेमचोक में गश्त अधिकार बहाल हुए; मालदीव को आर्थिक स्थिरता हेतु करेंसी स्वैप सहायता दी गई; तथा कोकराझार (असम) से गेलेफू (भूटान) के मध्य प्रथम सीमा-पार रेल संपर्क विकसित किया जा रहा है।
    - कथन 3 असत्य है: यह त्रिपक्षीय विद्युत व्यापार समझौता भारत, नेपाल और **बांग्लादेश** के मध्य हुआ है (म्यांमार के साथ नहीं), जिसके तहत भारतीय ग्रिड से होकर नेपाल की बिजली बांग्लादेश भेजी जा रही है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (द्विपक्षीय परियोजना / सामरिक स्थल)	**सूची-II (संबद्ध पड़ोसी देश)**
a. डेपसांग और डेमचोक (गश्त बहाली क्षेत्र)	1. भूटान
b. गेलेफू माइंडफुलनेस सिटी (GMC)	2. चीन

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (द्विपक्षीय परियोजना / सामरिक स्थल)	सूची-II (संबद्ध पड़ोसी देश)
c. कांकेसंतुरई (KKS) बंदरगाह पुनर्वास	3. मालदीव
d. 'एकथा' हार्बर (UTF परियोजना)	4. श्रीलंका

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **डेपसांग और डेमचोक:** पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर स्थित भारत-चीन सीमा गश्त क्षेत्र।
    - **गेलेफू माइंडफुलनेस सिटी (GMC):** भूटान का विशेष आर्थिक व प्रशासनिक क्षेत्र जिसमें भारत प्रमुख अवसंरचना सहयोगी है।
    - **कांकेसंतुरई (KKS) बंदरगाह:** उत्तरी श्रीलंका (जाफना) में स्थित बंदरगाह जिसका पुनर्वास भारतीय अनुदान से किया जा रहा है।
    - **'एकथा' हार्बर:** उथुरु थिला फल्हू (UTF) में भारतीय वित्तीय व तकनीकी सहयोग से निर्मित मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल (MNDF) का तटरक्षक पोत बंदरगाह।

टॉपिक - 4: वैश्विक सूचकांक: प्रेस स्वतंत्रता, भुखमरी एवं मानव विकास

वैश्विक संस्थाओं द्वारा जारी किए जाने वाले प्रमुख सूचकांकों के अंतर्गत प्रयुक्त आयाम, मानक संकेतक, जारीकर्ता संगठन तथा भारत की स्थिति से संबंधित मुख्य तथ्य निम्नलिखित हैं:

1. प्रमुख सूचकांक, संकेतक एवं रैंकिंग

सूचकांक	जारीकर्ता संस्था	प्रमुख आयाम / संकेतक	शीर्ष एवं अंतिम देश	भारत की स्थिति
मानव विकास	संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)	**3 आयाम, 4 संकेतक:**	**शीर्ष:** स्विट्जरलैंड, नॉर्वे, आइसलैंड	**134वां स्थान** (193 देशों में; मान:

©IASHINDIMEDIUM

सूचकांक	जारीकर्ता संस्था	प्रमुख आयाम / संकेतक	शीर्ष एवं अंतिम देश	भारत की स्थिति
सूचकांक (HDI)		1. जीवन प्रत्याशा (स्वास्थ्य) 2. स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष एवं औसत वर्ष (शिक्षा) 3. प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI per capita - PPP $)	**अंतिम:** सोमालिया, दक्षिण सूडान	0.644) — *मध्यम मानव विकास श्रेणी*
वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI)	कंसर्न वर्ल्डवाइड (आयरलैंड) एवं वेल्थुंगरहिilfe (जर्मनी)	**4 संकेतक:** 1. अल्पपोषण (Undernourishment) 2. बाल दुर्बलता (Child Wasting) 3. बाल ठिगनापन (Child Stunting) 4. बाल मृत्यु दर (Child Mortality)	**शीर्ष:** बेलारूस, बोस्निया एवं हर्जेगोविना आदि (स्कोर < 5) **अंतिम:** यमन, सोमालिया	**105वां स्थान** (127 देशों में; स्कोर: 27.3) — *गंभीर (Serious) श्रेणी*

©IASHINDIMEDIUM

सूचकांक	जारीकर्ता संस्था	प्रमुख आयाम / संकेतक	शीर्ष एवं अंतिम देश	भारत की स्थिति
विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक (WPFI)	रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF - पेरिस)	**5 श्रेणियां:** 1. राजनीतिक संदर्भ 2. कानूनी ढांचा 3. आर्थिक संदर्भ 4. सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ 5. सुरक्षा ढांचा	**शीर्ष:** नॉर्वे (लगातार शीर्ष पर), डेनमार्क, स्वीडन **अंतिम:** इरिट्रिया (180वां), सीरिया	**159वां स्थान** (180 देशों में; स्कोर: 31.28)
वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक (GGGI)	विश्व आर्थिक मंच (WEF)	**4 आयाम:** आर्थिक भागीदारी, शैक्षिक उपलब्धि, स्वास्थ्य व उत्तरजीविता, राजनीतिक सशक्तिकरण	**शीर्ष:** आइसलैंड (लगातार शीर्ष पर) **अंतिम:** सूडान	**129वां स्थान** (146 देशों में)

2. विशिष्ट सूचकांक संबंधी मुख्य बिंदु

- **चाइल्ड वेस्टिंग की स्थिति:** वैश्विक भुखमरी सूचकांक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में बाल दुर्बलता (Child Wasting - ऊंचाई के अनुपात में कम वजन) की दर 18.7% दर्ज की गई।
- **प्रेस स्वतंत्रता वर्गीकरण:** 'रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स' द्वारा भारत में प्रेस की स्थिति को सुरक्षा और राजनीतिक संकेतकों में गिरावट के कारण "कठिन/संकटग्रस्त स्थिति" (Difficult/Crisis Situation) के रूप में वर्गीकृत किया गया।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

©IASHINDIMEDIUM

- **पोषण ट्रैकर डेटा एवं कार्यप्रणाली विमर्श:** महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) में प्रयुक्त अल्पपोषण के नमूना सर्वेक्षण पद्धति पर आपत्ति दर्ज करते हुए आंगनवाड़ी केंद्रों के डिजिटल प्लेटफॉर्म **'पोषण ट्रैकर' (Poshan Tracker)** के वास्तविक डेटा को मानक के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसमें अल्पपोषण और वेस्टिंग दरों में सतत गिरावट दर्ज हुई।

- **UNDP ग्रहीय दबाव-समायोजित HDI (PHDI):** संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा पारंपरिक मानव विकास सूचकांक में देशों के प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन और सामग्री पदचिह्न (Material Footprint) को समाहित करने वाले 'PHDI' मॉडल के अद्यतन आंकड़े प्रस्तुत किए गए, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों के अपेक्षाकृत कम दोहन के चलते भारत की रैंकिंग में सकारात्मक संतुलन देखा गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. वैश्विक सूचकांकों तथा उनके संकेतकों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मानव विकास सूचकांक (HDI) की गणना में जीवन प्रत्याशा, शिक्षा के अपेक्षित व औसत वर्ष तथा प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI per capita) को सम्मिलित किया जाता है।
2. वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) की गणना खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) तथा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा संयुक्त रूप से की जाती है।
3. विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक (WPFI) में नॉर्वे शीर्ष स्थान पर रहा है तथा भारत को 180 देशों में 159वां स्थान प्राप्त हुआ है।
4. वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) के अंतर्गत बाल ठिगनापन (Stunting) और बाल दुर्बलता (Wasting) दोनों को स्वतंत्र संकेतकों के रूप में मापा जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 3 और 4 सत्य हैं: मानव विकास सूचकांक तीन मूल आयामों पर आधारित है; विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में नॉर्वे प्रथम स्थान पर तथा भारत 159वें स्थान पर है; तथा भुखमरी सूचकांक के चार संकेतकों में स्टंटिंग और वेस्टिंग दोनों सम्मिलित हैं।
    - कथन 2 असत्य है: वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) FAO या UNDP द्वारा नहीं, बल्कि दो गैर-सरकारी संगठनों—**कंसर्न वर्ल्डवाइड (Concern Worldwide, आयरलैंड)** तथा **वेल्थुंगरहिilfe (Welthungerhilfe, जर्मनी)** द्वारा संयुक्त रूप से जारी किया जाता है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (वैश्विक सूचकांक)	सूची-II (जारीकर्ता अंतरराष्ट्रीय संस्था)
a. विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक	1. कंसर्न वर्ल्डवाइड एवं वेल्थुंगरहिilfe
b. मानव विकास सूचकांक (HDI)	2. विश्व आर्थिक मंच (WEF)
c. वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI)	3. रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF)
d. वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक	4. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक:** रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (पेरिस) द्वारा जारी।
  - **मानव विकास सूचकांक:** संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा जारी।
  - **वैश्विक भुखमरी सूचकांक:** कंसर्न वर्ल्डवाइड एवं वेल्थुंगरहिilfe द्वारा प्रकाशित।
  - **वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक:** विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा जारी किया जाता है।

टॉपिक - 5: अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणीय समझौते एवं जलवायु वार्ताएं (COP29, COP30 एवं CBD COP16)

1. यूएनएफसीसीसी कॉप-29 (UNFCCC COP29) - बाकू, अज़रबैजान

- **आयोजन:** नवंबर 2024 में बाकू (अज़रबैजान) में आयोजित; इसे मुख्य रूप से **'फाइनेंस कॉप' (Finance COP)** कहा गया।
- **नया सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (New Collective Quantified Goal - NCQG):**
  - विकसित देशों ने विकासशील देशों के लिए वार्षिक जलवायु वित्त को पूर्ववर्ती $100 बिलियन से बढ़ाकर वर्ष **2035 तक प्रति वर्ष $300 बिलियन (300 अरब डॉलर)** करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।
  - सभी सार्वजनिक एवं निजी स्रोतों को मिलाकर 2035 तक विकासशील देशों हेतु कुल **$1.3 ट्रिलियन प्रति वर्ष** जुटाने का आह्वान किया गया। भारत सहित कई विकासशील देशों ने इस राशि को वास्तविक आवश्यकता से काफी कम बताते हुए असंतोष दर्ज किया।

- **पेरिस समझौते का अनुच्छेद 6 (कार्बन बाजार का संचालन):**
    - कॉप-29 में पेरिस समझौते के **अनुच्छेद 6.2** (द्विपक्षीय कार्बन क्रेडिट व्यापार) तथा **अनुच्छेद 6.4** (संयुक्त राष्ट्र द्वारा केंद्रीकृत वैश्विक कार्बन क्रेडिट तंत्र) के संचालन संबंधी मानकों और पद्धतियों को अंतिम रूप दिया गया।
- **हानि एवं क्षति कोष (Loss and Damage Fund):** बाकू में इस कोष के संचालन ढांचे और वित्तीय प्रवाह को औपचारिक रूप दिया गया, जिसका प्रबंधन विश्व बैंक के अंतरिम तत्वावधान में हो रहा है।

2. जैव विविधता अभिसमय (CBD COP16) - कैली, कोलंबिया

- **आयोजन:** अक्टूबर-नवंबर 2024 में कैली (Cali), कोलंबिया में आयोजित।
- **थीम:** *"Peace with Nature"* (प्रकृति के साथ शांति)।
- **'कैली फंड' (Cali Fund) की स्थापना:** आनुवंशिक संसाधनों की डिजिटल अनुक्रम सूचना (Digital Sequence Information - DSI) के व्यावसायिक उपयोग से प्राप्त लाभों के न्यायसंगत बंटवारे हेतु **कैली फंड** को क्रियान्वित किया गया। इसके तहत बड़ी फार्मास्यूटिकल एवं जैव-प्रौद्योगिकी कंपनियों द्वारा अपने मुनाफे या राजस्व का एक निश्चित अंश इस कोष में जमा किया जाएगा, जिसका न्यूनतम 50% स्वदेशी व स्थानीय समुदायों (IPLCs) के संरक्षण कार्यों हेतु उपयोग होगा।
- **अनुच्छेद 8(j) का स्थायी निकाय:** स्वदेशी समुदायों के पारंपरिक ज्ञान और अधिकारों के संरक्षण हेतु सीबीडी के तहत एक नया स्थायी सहायक निकाय स्थापित करने पर सहमति बनी।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **कॉप-30 (UNFCCC COP30) - बेलेम, ब्राजील ('फॉरेस्ट कॉप'):** ब्राजील के अमेज़न वर्षावन क्षेत्र 'बेलेम' में आयोजित कॉप-30 में देशों द्वारा अपने तीसरे चरण के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC 3.0) प्रस्तुत किए गए। ब्राजील की पहल पर उष्णकटिबंधीय वनों के संरक्षण हेतु **$125 बिलियन की 'ट्रॉपिकल फॉरेस्ट फॉरएवर फैसिलिटी' (TFFF)** तथा जीवाश्म ईंधन से न्यायसंगत ऊर्जा संक्रमण (Just Energy Transition) पर विशेष सहमति बनी।
- **वैश्विक प्लास्टिक संधि (Global Plastics Treaty - INC प्रक्रिया):** प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने हेतु संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा (UNEA) के अंतर्गत कानूनी रूप से बाध्यकारी वैश्विक संधि के अंतिम मसौदे को अंतिम रूप देने की वार्ताएं संपन्न हुईं।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) के कॉप-29 (बाकू) तथा सीबीडी कॉप-16 (कैली) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कॉप-29 में विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के लिए 'न्यू कलेक्टिव क्वांटिफाइड गोल' (NCQG) के तहत वर्ष 2035 तक प्रति वर्ष $300 बिलियन का नया जलवायु वित्त लक्ष्य निर्धारित किया गया।
2. बाकू सम्मेलन में पेरिस समझौते के अनुच्छेद 6 के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय कार्बन बाजार के संचालन संबंधी नियमों को अंतिम रूप दिया गया।
3. जैव विविधता अभिसमय (CBD) के कॉप-16 में आनुवंशिक संसाधनों की डिजिटल अनुक्रम सूचना (DSI) से लाभ साझाकरण हेतु 'कैली फंड' (Cali Fund) स्थापित करने का निर्णय लिया गया।
4. यूएनएफसीसीसी के कॉप-30 का आयोजन ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में किया गया।

©IASHINDIMEDIUM

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: कॉप-29 (बाकू) में NCQG के तहत 2035 तक वार्षिक $300 बिलियन का लक्ष्य तय हुआ; पेरिस समझौते के अनुच्छेद 6.2 व 6.4 के तहत कार्बन ट्रेडिंग के नियम स्वीकृत किए गए; तथा कोलंबिया के कैली में आयोजित सीबीडी कॉप-16 में 'कैली फंड' को क्रियान्वित किया गया।
    - कथन 4 असत्य है: यूएन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन का कॉप-30 (COP30) ऑस्ट्रेलिया में नहीं, बल्कि **बेलेम, ब्राजील (Belém, Brazil)** में आयोजित किया गया।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन / कोष)	**सूची-II (संबद्ध शहर / प्राथमिक परिणाम)**
a. UNFCCC COP-29	1. 'कैली फंड' (DSI लाभ साझाकरण)
b. CBD COP-16	2. बाकू (NCQG: $300 बिलियन वार्षिक वित्त)
c. UNFCCC COP-30	3. प्लास्टिक प्रदूषण समाप्ति हेतु अंतिम दौर की वार्ता
d. बुसान (दक्षिण कोरिया) वार्ता	4. बेलेम (अमेज़न क्षेत्र, ब्राजील)

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-4, b-1, c-2, d-3

(D) a-3, b-2, c-4, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **UNFCCC COP-29:** बाकू (अज़रबैजान) में आयोजित; नया जलवायु वित्त लक्ष्य ($300 बिलियन) स्वीकृत।

©IASHINDIMEDIUM

- **CBD COP-16:** कैली (कोलंबिया); आनुवंशिक अनुक्रम लाभों हेतु कैली फंड की स्थापना।
- **UNFCCC COP-30:** बेलेम (ब्राजील) में आयोजित।
- **बुसान वार्ता:** वैश्विक प्लास्टिक समझौते (Global Plastics Treaty) के प्रारूप को अंतिम रूप देने हेतु आयोजित बैठक।

उत्तर प्रदेश समसामयिकी

टॉपिक - 1: उत्तर प्रदेश सरकार की नई नीतियां एवं अध्यादेश

उत्तर प्रदेश को 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने और प्रशासनिक व विधिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण नीतियां और अध्यादेश जारी किए गए हैं।

1. प्रमुख नीतियां एवं उनके मुख्य प्रावधान

- **उत्तर प्रदेश सेमीकंडक्टर नीति:**
  - **लक्ष्य:** भारत सेमीकंडक्टर मिशन (ISM) के अनुरूप प्रदेश में फैब्रिकेशन (Fab), असेंबली, टेस्टिंग एवं पैकेजिंग (ATMP) तथा आउटसोर्स्ड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (OSAT) इकाइयों को आकर्षित करना।
  - **प्रोत्साहन:** भारत सरकार से स्वीकृत पूंजीगत सब्सिडी पर राज्य सरकार द्वारा 50% **अतिरिक्त पूंजीगत उपादान (Capital Subsidy)**, 10 वर्षों हेतु विद्युत शुल्क में शत-प्रतिशत छूट तथा स्टांप शुल्क में पूर्ण छूट।
  - **नोएडा-ग्रेटर नोएडा/जेवर क्षेत्र:** जेवर में देश के प्रमुख सेमीकंडक्टर एवं डिस्प्ले ड्राइवर विनिर्माण केंद्र को स्वीकृति।
- **उत्तर प्रदेश ग्रीन हाइड्रोजन नीति:**

- **लक्ष्य:** वर्ष 2028 तक **1 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष** ग्रीन हाइड्रोजन/ग्रीन अमोनिया उत्पादन क्षमता स्थापित करना।

- **रियायतें:** पूंजीगत निवेश पर 30% से 40% तक सब्सिडी (प्रथम 5 परियोजनाओं हेतु अधिकतम ₹225 करोड़), सौर ऊर्जा संयंत्रों हेतु भूमि आवंटन तथा जल-विद्युत शुल्कों में व्यापक छूट।

- **एफडीआई, फॉर्च्यून ग्लोबल-500 एवं फॉर्च्यून इंडिया-500 निवेश प्रोत्साहन नीति:**
    - न्यूनतम ₹100 करोड़ के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) लाने वाली पात्र कंपनियों को पूंजीगत सब्सिडी, फ्रंट-एंड लैंड सब्सिडी तथा नेट एसजीएसटी (SGST) प्रतिपूर्ति का लाभ।

2. प्रमुख अध्यादेश एवं विधिक सुधार

- **उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) अध्यादेश/अधिनियम:**
    - **उद्देश्य:** प्रतियोगी भर्ती परीक्षाओं में पेपर लीक, नकल और सॉल्वर गिरोहों पर कठोर अंकुश।
    - **दंडात्मक प्रावधान:** संगठित अपराध में संलिप्त व्यक्तियों एवं सॉल्वर गिरोह के लिए **7 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास** तथा **न्यूनतम ₹1 करोड़ तक का अर्थदंड**; परीक्षा में व्यवधान डालने वाली एजेंसियों की संपत्ति जब्तीकरण का प्रावधान।
    - **प्रकृति:** अपराध संज्ञेय (Cognizable) एवं गैर-जमानती (Non-Bailable)।

- **उत्तर प्रदेश राज्य राजधानी क्षेत्र और अन्य क्षेत्र विकास प्राधिकरण (SCRDA) अध्यादेश:**
    - राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) की तर्ज पर लखनऊ तथा उसके निकटवर्ती 6 जिलों—**लखनऊ, उन्नाव, हरदोई, रायबरेली, सीतापुर एवं बाराबंकी** को समाहित कर **'उत्तर प्रदेश राज्य राजधानी क्षेत्र' (UP-SCR)** के गठन का विधायी ढांचा।

- **उत्तर प्रदेश नजूल संपत्ति (लोक प्रयोजनार्थ प्रबंध एवं उपयोग) अध्यादेश/विधेयक:**
    - राज्य में नजूल भूमि के निजी व्यक्तियों को फ्रीहोल्ड करने पर पूर्ण प्रतिबंध तथा ऐसी भूमि का उपयोग केवल सार्वजनिक सुविधाओं (अस्पताल, शिक्षण संस्थान आदि) हेतु सुनिश्चित करना।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **उत्तर प्रदेश सेमीकंडक्टर नीति (संशोधन):** राज्य सरकार द्वारा नीति के नियमों में संशोधन कर निवेशकों के लिए वाणिज्यिक उत्पादन शुरू होने की तिथि से न्यूनतम **3 वर्ष तक उत्पादन कार्य जारी रखने** का अनिवार्य वचन (Undertaking) निर्धारित किया गया।

- **आईआईटी कानपुर में ग्रीन हाइड्रोजन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस:** ग्रीन हाइड्रोजन नीति के क्रियान्वयन हेतु राज्य सरकार के वित्तीय सहयोग से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) कानपुर में अत्याधुनिक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (CoE) की स्थापना की गई।

- **त्वरित भूमि उपयोग रूपांतरण एवं औद्योगिक मॉडल भवन विनियम:** औद्योगिक विकास प्राधिकरणों (यीडा, नोएडा, गीडा, बीडा) में निवेश आकर्षित करने हेतु 'प्लग एंड प्ले' शेड नीति तथा भूमि रूपांतरण प्रक्रियाओं का शत-प्रतिशत स्वचालित एवं समयबद्ध डिजिटलीकरण किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश सरकार की हालिया नीतियों एवं अध्यादेशों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

©IASHINDIMEDIUM

1. उत्तर प्रदेश ग्रीन हाइड्रोजन नीति के तहत वर्ष 2028 तक राज्य में 1 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष ग्रीन हाइड्रोजन/अमोनिया उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।
2. उत्तर प्रदेश राज्य राजधानी क्षेत्र (UP-SCR) के अंतर्गत लखनऊ सहित कुल 8 सीमावर्ती जिलों को सम्मिलित किया गया है।
3. उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) कानून के तहत सॉल्वर गिरोह और संगठित पेपर लीक मामलों में अधिकतम आजीवन कारावास और 1 करोड़ रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है।
4. उत्तर प्रदेश सेमीकंडक्टर नीति के अंतर्गत केंद्र सरकार से स्वीकृत पूंजीगत सब्सिडी पर राज्य द्वारा 50% अतिरिक्त पूंजीगत उपादान अनुमन्य है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1, 3 और 4 सत्य हैं: ग्रीन हाइड्रोजन नीति का लक्ष्य 2028 तक 1 मिलियन मीट्रिक टन उत्पादन है; सार्वजनिक परीक्षा कानून में पेपर लीक सिंडिकेट पर 1 करोड़ तक जुर्माना और आजीवन कारावास तक का दंड निर्धारित है; तथा सेमीकंडक्टर इकाइयों को केंद्र के पूंजीगत अनुदान पर 50% राज्य उपादान मिलता है।
  - कथन 2 असत्य है: उत्तर प्रदेश राज्य राजधानी क्षेत्र (SCR) में लखनऊ सहित **कुल 6 जिले** (लखनऊ, उन्नाव, हरदोई, रायबरेली, सीतापुर और बाराबंकी) शामिल किए गए हैं, न कि 8 जिले।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (नीति / अध्यादेश)	**सूची-II (मुख्य प्रावधान / संबंधित क्षेत्र)**
a. उत्तर प्रदेश सेमीकंडक्टर नीति	1. 2028 तक 1 मिलियन मीट्रिक टन उत्पादन लक्ष्य
b. उत्तर प्रदेश ग्रीन हाइड्रोजन नीति	2. लखनऊ व 5 निकटवर्ती जिलों का समन्वित विकास
c. राज्य राजधानी क्षेत्र (SCRDA) अध्यादेश	3. निजी व्यक्तियों को भूमि फ्रीहोल्ड करने पर रोक
d. उत्तर प्रदेश नजूल संपत्ति अध्यादेश	4. जेवर में डिस्प्ले ड्राइवर चिप विनिर्माण इकाई की स्थापना

कूट:

(A) a-4, b-1, c-2, d-3

©IASHINDIMEDIUM

(B) a-4, b-2, c-1, d-3

(C) a-1, b-4, c-2, d-3

(D) a-3, b-1, c-2, d-4

उत्तर: (A) a-4, b-1, c-2, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **सेमीकंडक्टर नीति:** जेवर में एचसीएल और फॉक्सकॉन के सहयोग से सेमीकंडक्टर डिस्प्ले ड्राइवर चिप इकाई की स्थापना को मंजूरी मिली।
    - **ग्रीन हाइड्रोजन नीति:** राज्य में 2028 तक 1 मिलियन मीट्रिक टन स्वच्छ हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य।
    - **राज्य राजधानी क्षेत्र अध्यादेश:** लखनऊ, उन्नाव, हरदोई, रायबरेली, सीतापुर और बाराबंकी के क्षेत्रीय विकास हेतु प्राधिकरण का गठन।
    - **नजूल संपत्ति अध्यादेश:** नजूल भूमि को निजी स्वामित्व (फ्रीहोल्ड) में बदलने पर रोक और केवल सार्वजनिक उपयोग हेतु आरक्षण।

टॉपिक - 2: स्विस/यूरोपीय निवेशक सम्मेलन, ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी एवं धरातलीय निवेश

उत्तर प्रदेश को 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के संकल्प के अंतर्गत राज्य सरकार द्वारा वैश्विक निवेश शिखर सम्मेलन (UPGIS), विश्व आर्थिक मंच (WEF, दावोस/स्विट्जरलैंड) में उच्चस्तरीय सहभागिता, तथा ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी (GBC) के माध्यम से निवेश प्रस्तावों को वास्तविक धरातल पर क्रियान्वित किया जा रहा है।

1. दावोस (स्विट्जरलैंड) सहभागिता एवं स्विस/वैश्विक निवेश

- **विश्व आर्थिक मंच (WEF) दावोस में उत्तर प्रदेश:**
    - राज्य के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने दावोस (स्विट्जरलैंड) में वैश्विक निवेशकों के समक्ष उत्तर प्रदेश को प्रमुख विनिर्माण और डेटा सेंटर हब के रूप में प्रस्तुत किया।
    - **फोकस क्षेत्र:** नवीकरणीय ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन, सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्लस्टर (EMC), वस्त्रोद्योग तथा आधुनिक लॉजिस्टिक्स।
    - **स्विस एवं यूरोपीय बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सहभागिता:** नवीकरणीय ऊर्जा, टिकाऊ अवसंरचना, पर्यावरण-अनुकूल गतिशीलता (Green Mobility) तथा उन्नत मशीनरी निर्माण हेतु यूरोपीय निवेशकों के साथ दीर्घकालिक निवेश संवर्धन समझौतों (MoUs) पर हस्ताक्षर किए गए।
- **निवेश मित्र एवं इंसेंटिव मॉनिटरिंग:**
    - विदेशी व बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पूंजी निवेश को सुगम बनाने हेतु **'निवेश मित्र'** (सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम) तथा **'निवेश सारथी'** पोर्टल के माध्यम से स्वीकृतियों की निगरानी सुनिश्चित की गई।

2. ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी (GBC) एवं धरातलीय निवेश

- **ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी (GBC@IV):**

- **आयोजन स्थल:** इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान, लखनऊ।
- **धरातलीय निवेश परिमाण:** लगभग **₹10 लाख करोड़ से अधिक** की 14,000+ निवेश परियोजनाओं का भूमि पूजन एवं धरातलीय क्रियान्वयन।
- **क्षेत्रवार वितरण:**
    1. *विनिर्माण (Manufacturing):* कुल परियोजनाओं में सर्वाधिक अंशदान (लगभग 21%)।
    2. *नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable Energy):* लगभग 13% का योगदान।
    3. *आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स/डेटा सेंटर:* लगभग 15% का योगदान।

- **क्षेत्रीय आवंटन (Regional Distribution):**
    - **पश्चिमी उत्तर प्रदेश:** कुल निवेश का लगभग **52%** हिस्सा आकर्षित कर प्रथम स्थान पर।
    - **पूर्वांचल:** लगभग **29%** निवेश हिस्सेदारी के साथ दूसरे स्थान पर।
    - **मध्यांचल:** लगभग **14%** निवेश हिस्सेदारी।
    - **बुंदेलखंड:** लगभग **5%** निवेश हिस्सेदारी (डिफेंस कॉरिडोर एवं सोलर पार्कों के माध्यम से त्वरित औद्योगिकीकरण की दिशा में अग्रसर)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) एवं फॉर्च्यून-500 प्रोत्साहन नीति का प्रभाव:** बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आकर्षित करने हेतु घोषित 'एफडीआई एवं फॉर्च्यून-500 नीति' के अंतर्गत पश्चिमी यूपी (नोएडा-ग्रेटर नोएडा-यीडा) में अंतरराष्ट्रीय डाटा सेंटरों तथा सेमीकंडक्टर परीक्षण इकाइयों के धरातलीय निर्माण को वित्तीय उपादान जारी किए गए।
- **बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण (BIDA):** नोएडा के बाद राज्य में लगभग 47 वर्षों के अंतराल पर स्थापित नए औद्योगिक शहर बीडा (झांसी) में भूमि अधिग्रहण के साथ भारी इंजीनियरिंग तथा ग्रीन एनर्जी परियोजनाओं के लिए निवेश आवंटन प्रारंभ हुआ।
- **ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी का अगला चरण (GBC V):** स्वीकृत निवेश प्रस्तावों के धरातलीकरण के क्रम को आगे बढ़ाते हुए राज्य सरकार द्वारा एमएसएमई, फार्मास्युटिकल पार्कों (ललितपुर) और मेडिकल डिवाइस पार्कों (ग्रेटर नोएडा) में नई इकाइयों के क्रियान्वयन को तीव्र गति प्रदान की गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश में औद्योगिक निवेश, दावोस सहभागिता एवं ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी (GBC) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी (GBC@IV) का आयोजन लखनऊ स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में किया गया, जिसमें ₹10 लाख करोड़ से अधिक की परियोजनाओं का धरातलीकरण हुआ।
2. धरातलीय निवेश के क्षेत्रीय वितरण के संदर्भ में पूर्वांचल को कुल निवेश का सर्वाधिक हिस्सा (50% से अधिक) प्राप्त हुआ।
3. निवेश प्रस्तावों की निगरानी एवं उनके सुगम क्रियान्वयन हेतु राज्य में 'निवेश सारथी' पोर्टल का उपयोग किया जा रहा है।
4. झांसी के निकट 'बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण' (BIDA) का गठन नए औद्योगिक शहर के रूप में किया गया है।

©IASHINDIMEDIUM

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 3 और 4 सत्य हैं: GBC@IV का आयोजन लखनऊ में ₹10 लाख करोड़ से अधिक की परियोजनाओं के साथ संपन्न हुआ; एमओयू ट्रैकिंग के लिए 'निवेश सारथी' कार्यरत है; तथा झांसी क्षेत्र में BIDA का गठन औद्योगिक निवेश आकर्षित करने हेतु किया गया है।
    - कथन 2 असत्य है: धरातलीय निवेश के क्षेत्रीय वितरण में सर्वाधिक अंश **पश्चिमी उत्तर प्रदेश (लगभग 52%)** को प्राप्त हुआ है, जबकि पूर्वांचल को लगभग 29% हिस्सा प्राप्त हुआ।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (औद्योगिक क्षेत्र / पोर्टल)	**सूची-II (प्राथमिक भूमिका / जिला)**
a. निवेश सारथी पोर्टल	1. बुंदेलखंड में प्रस्तावित फार्मास्युटिकल पार्क
b. ललितपुर	2. निवेश प्रस्तावों और एमओयू की निगरानी प्रणाली
c. बीडा (BIDA)	3. जेवर क्षेत्र में विशेष चिकित्सा उपकरण क्लस्टर
d. मेडिकल डिवाइस पार्क	4. झांसी के निकट नया औद्योगिक विकास प्राधिकरण

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**

©IASHINDIMEDIUM

- **निवेश सारथी पोर्टल:** हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों (MoUs) के क्रियान्वयन एवं निवेशकों की समस्याओं के निस्तारण हेतु डिजिटल तंत्र।
- **ललितपुर:** राज्य के महत्वाकांक्षी बल्क ड्रग / फार्मास्युटिकल पार्क का विकास स्थल।
- **बीडा (BIDA):** बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण, जो झांसी के 33 राजस्व ग्रामों को समाहित कर विकसित किया जा रहा है।
- **मेडिकल डिवाइस पार्क:** यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा/ग्रेटर नोएडा) क्षेत्र में स्थापित किया जा रहा क्लस्टर।

टॉपिक - 3: बुनियादी ढांचे का विकास: प्रमुख एक्सप्रेसवे, हवाई अड्डे एवं परिवहन गलियारे

उत्तर प्रदेश देश में सर्वाधिक एक्सप्रेसवे नेटवर्क और अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों के तीव्र विस्तार के साथ 'एक्सप्रेसवे प्रदेश' के रूप में स्थापित हुआ है। राज्य में लॉजिस्टिक्स लागत घटाने और औद्योगिक निवेश आकर्षित करने हेतु विश्वस्तरीय अवसंरचना का विकास किया गया है।

1. प्रमुख एक्सप्रेसवे नेटवर्क एवं उनके तकनीकी घटक

- **गंगा एक्सप्रेसवे (Ganga Expressway):**
  - **लंबाई:** लगभग **594 किमी** (6-लेन, जिसे 8-लेन तक विस्तार योग्य बनाया गया है)।
  - **मार्ग:** मेरठ के बिजौली गांव से प्रयागराज के जुदापुर दांदू गांव तक।
  - **आच्छादित जिले (12 जिले):** मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अमरोहा, संभल, बदायूं, शाहजहाँपुर, हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, प्रतापगढ़ एवं प्रयागराज।
  - **हवाई पट्टी (Airstrip):** शाहजहाँपुर के जलालाबाद के निकट आपातकालीन परिस्थितियों हेतु 3.5 किमी लंबी हवाई पट्टी का निर्माण।
  - **नोडल एजेंसी:** यूपीडा (UPEIDA)।
- **गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे (Gorakhpur Link Expressway):**
  - **लंबाई: 91.352 किमी** (4-लेन, 6-लेन विस्तार योग्य)।
  - **मार्ग:** गोरखपुर के जैतपुर बाईपास से प्रारंभ होकर आजमगढ़ के सालारपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से जुड़ता है।
  - **लाभान्वित जिले:** गोरखपुर, संत कबीर नगर, अंबेडकर नगर एवं आजमगढ़।
- **बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे एवं डिफेंस कॉरिडोर लिंक:**
  - चित्रकूट से इटावा (भरथना के पास आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे से जुड़ाव); कुल लंबाई 296 किमी। इस पर झांसी और चित्रकूट नोड्स को जोड़ने वाले फीडर मार्गों का निर्माण किया गया है।

2. नागरिक उड्डयन एवं हवाई अड्डा अवसंरचना

- **नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (जेवर, गौतम बुद्ध नगर):**

©IASHINDIMEDIUM

- **विकास मॉडल:** सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP); ज्यूरिख एयरपोर्ट इंटरनेशनल एजी (यामुना इंटरनेशनल एयरपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड) द्वारा विकसित।
- **विशिष्टता:** पूर्ण संचालन पर यह भारत का सबसे बड़ा और एशिया के अग्रणी ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों में से एक होगा।

- **अयोध्या (महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा):**
  - राम मंदिर वास्तुकला से प्रेरित टर्मिनल; घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के संचालन हेतु विस्तारित।
- **5 अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों वाला राज्य:** उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य बनने की दिशा में अग्रसर है जहां 5 क्रियाशील अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे होंगे:
  1. चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (अमौसी, लखनऊ)
  2. लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (बाबतपुर, वाराणसी)
  3. महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (अयोध्या)
  4. कुशीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (कुशीनगर)
  5. नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (जेवर)

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **गंगा एक्सप्रेसवे का पूर्ण परिचालन एवं महाकुंभ संपर्क:** प्रयागराज महाकुंभ के आयोजन के साथ ही गंगा एक्सप्रेसवे के प्रमुख खंडों को पूर्ण क्षमता से चालू किया गया, जिससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश से प्रयागराज तक की यात्रा अवधि घटकर 6-8 घंटे रह गई।
- **जेवर एयरपोर्ट पर वाणिज्यिक परीक्षण उड़ानें एवं कार्गो टर्मिनल:** जेवर हवाई अड्डे पर डीजीसीए (DGCA) के अनुमोदन के पश्चात वाणिज्यिक उड़ानों के अंशांकन परीक्षण (Calibration Trials) सफलतापूर्वक पूरे किए गए तथा मल्टी-मॉडल कार्गो हब (MMCH) का संचालन प्रारंभ हुआ।
- **क्षेत्रीय उड़ान (RCS-UDAN) का विस्तार:** अलीगढ़, मुरादाबाद, श्रावस्ती, चित्रकूट और आज़मगढ़ हवाई पट्टियों से नियमित उड़ान सेवाओं का विस्तार करते हुए लखनऊ और नई दिल्ली से सीधा संपर्क स्थापित किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के प्रमुख एक्सप्रेसवे नेटवर्क के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. गंगा एक्सप्रेसवे की कुल लंबाई लगभग 594 किमी है और यह मेरठ से प्रारंभ होकर प्रयागराज तक विस्तृत है।
2. गंगा एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश के कुल 12 जिलों से होकर गुजरता है तथा इसमें शाहजहाँपुर में एक आपातकालीन हवाई पट्टी का निर्माण किया गया है।
3. गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे गोरखपुर से प्रारंभ होकर लखनऊ में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे से सीधा जुड़ता है।
4. उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (UPEIDA) इन एक्सप्रेसवे परियोजनाओं की नोडल निष्पादन एजेंसी है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

©IASHINDIMEDIUM

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: गंगा एक्सप्रेसवे (~594 किमी) मेरठ से प्रयागराज तक 12 जिलों (मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अमरोहा, संभल, बदायूं, शाहजहाँपुर, हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, प्रतापगढ़, प्रयागराज) से गुजरता है; शाहजहाँपुर में वायुसेना के लड़ाकू विमानों हेतु आपातकालीन हवाई पट्टी निर्मित है; तथा यूपीडा (UPEIDA) इसकी नोडल एजेंसी है।
    - कथन 3 असत्य है: गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे (91.35 किमी) गोरखपुर के जैतपुर से शुरू होकर आजमगढ़ के सालारपुर में **पूर्वांचल एक्सप्रेसवे** से जुड़ता है, न कि लखनऊ में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे से।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (हवाई अड्डा / अवसंरचना)	**सूची-II (संबद्ध जिला / विशिष्टता)**
a. महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	1. गौतम बुद्ध नगर (जेवर)
b. लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	2. अयोध्या
c. नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	3. वाराणसी (बाबतपुर)
d. चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा	4. लखनऊ (अमौसी)

कूट:

(A) a-2, b-3, c-1, d-4

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-3, b-2, c-1, d-4

(D) a-4, b-3, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-3, c-1, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा:** अयोध्या में स्थित है।
    - **लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा:** बाबतपुर, वाराणसी में स्थित है।
    - **नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा:** जेवर, गौतम बुद्ध नगर में स्थित ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट।
    - **चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा:** अमौसी, लखनऊ में स्थित है।

©IASHINDIMEDIUM

टॉपिक - 4: उत्तर प्रदेश के प्रमुख जीआई (GI) टैग प्राप्त उत्पाद

भौगोलिक उपदर्शन (माल का रजिस्ट्रीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 (Geographical Indications of Goods Act, 1999) 15 सितंबर 2003 से प्रभावी हुआ। इसका पंजीकरण उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) के अधीन 'भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री', चेन्नई द्वारा किया जाता है। जीआई टैग की वैधता पंजीकरण तिथि से **10 वर्ष** के लिए होती है, जिसका नवीनीकरण कराया जा सकता है। उत्तर प्रदेश हस्तशिल्प और कृषि उत्पादों में जीआई टैग प्राप्त करने वाले देश के शीर्ष राज्यों में शामिल है।

1. प्रमुख जीआई टैग उत्पाद एवं संबंधित जिले

- **हस्तशिल्प उत्पाद (Handicrafts):**
    - **अमरोहा ढोलक (Amroha Dholak):** आम, कटहल और शीशम की लकड़ी से निर्मित पारंपरिक तालवाद्य यंत्र।
    - **मैनपुरी तारकशी (Mainpuri Tarkashi):** शीशम की लकड़ी पर पीतल/तांबे के बारीक तारों की जड़ाई की विशिष्ट कला (खड़ाऊं व सजावटी बक्से)।
    - **महोबा गौरा पत्थर हस्तशिल्प (Mahoba Gaura Patthar):** पायरोफिलाइट (Pyrophyllite) मृदु पत्थर से बनने वाली चमकदार शिल्पकृतियां।
    - **संभल हॉर्न क्राफ्ट (Sambhal Horn Craft):** मृत पशुओं के सींगों और हड्डियों से निर्मित हस्तशिल्प।
    - **कालपी हस्तनिर्मित कागज (Kalpi Handmade Paper):** जालौन जिले की कालपी में अपशिष्ट कपड़ों और लुगदी से निर्मित पारंपरिक कागज।
    - **जलेसर धातु शिल्प (Jalesar Dhatu Shilp):** एटा जिले के जलेसर में निर्मित पीतल की घंटियां (घुंघरू) और ढलवां धातु उत्पाद।
    - **बागपत होम फर्निशिंग व बाराबंकी हैंडलूम:** हथकरघा आधारित विशिष्ट घरेलू वस्त्र उत्पाद।
    - **नगीना काष्ठ शिल्प (Nagina Wood Craft):** बिजनौर के नगीना में आबनूस व शीशम पर बारीक नक्काशी।
    - **बांदा शजर पत्थर शिल्प:** केन नदी की तलहटी में मिलने वाले प्राकृतिक वृक्ष जैसी आकृति वाले शजर (Dendritic Agate) पत्थरों का शिल्प।
    - **मिर्जापुर पीतल के बर्तन व चुनार बलुआ पत्थर:** सोनभद्र/मिर्जापुर क्षेत्र का गुलाबी-भूरा बलुआ पत्थर व पारंपरिक पीतल ढलाई।
- **कृषि एवं खाद्य उत्पाद (Agricultural & Food Stuff):**
    - **काला नमक चावल:** सिद्धार्थनगर, गोरखपुर व तराई क्षेत्र का सुगंधित और औषधीय गुणों वाला धान (बुद्ध का महाप्रसाद)।
    - **इलाहाबाद सुरखा अमरूद:** प्रयागराज का अंदर से सेब जैसा लाल एवं मीठा अमरूद।
    - **रटौल आम:** बागपत जिले का विशेष सुगंधित आम।
    - **हाथरस हींग (Hathras Hing):** आयातित कच्चे गोंद से निर्मित मिश्रित सुवासित हींग।
    - **मुजफ्फरनगर गुड़:** पश्चिमी यूपी का पारंपरिक खनिज-युक्त गुड़।

©IASHINDIMEDIUM

- **महोबा देसावरी पान:** बुंदेलखंड का औषधीय व पतले पत्तों वाला पान।
- **प्रतापगढ़ आंवला:** केंद्रीय व पूर्वी यूपी का विटामिन-सी समृद्ध फल।

2. वाराणसी जीआई क्लस्टर

वाराणसी देश का सर्वाधिक जीआई टैग वाला एकल शहर/क्षेत्र बन चुका है। प्रमुख उत्पादों में:

- बनारस ब्रोकेड एवं साड़ियां, गुलाबी मीनाकारी, लकड़ी के खिलौने व लैकरवेयर, ग्लास बीड्स (कांच के मोती), मेटल रिपोजी क्राफ्ट, सॉफ्ट स्टोन जाली वर्क।
- बनारसी लंगड़ा आम, रामनगर भंटा (बैंगन), बनारसी पान तथा आदमचीनी चावल।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **मथुरा सांझी क्राफ्ट एवं जरी पोशाक:** मथुरा की पारंपरिक 'सांझी कला' (कागज पर हाथ से काटी गई कृष्णलीला आकृतियां) तथा ठाकुर जी की पोशाक कला (जरी-जरदोजी वस्त्र) को औपचारिक जीआई पंजीकरण सूची में शामिल किया गया।
- **चिरगांव (झांसी) का करौंदा एवं बुंदेलखंड उत्पाद:** बुंदेलखंड के चिरगांव क्षेत्र के विशिष्ट करौंदे तथा स्थानीय कृषि-प्रसंस्करण उत्पादों को भौगोलिक उपदर्शन प्रमाण-पत्र प्रदान करने की प्रक्रिया पूर्ण की गई।
- **बनारस शहनाई एवं तबला क्राफ्ट:** संगीत वाद्ययंत्रों की श्रेणी में उस्ताद बिस्मिल्लाह खान की विरासत 'बनारसी शहनाई' तथा बनारस घराने के 'बनारस तबला' के निर्माण शिल्प को पंजीकृत जीआई दर्जा प्राप्त हुआ।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के जीआई (GI) टैग प्राप्त उत्पादों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मैनपुरी की 'तारकशी' कला में शीशम की लकड़ी पर पीतल व तांबे के तारों की जड़ाई की जाती है।
2. महोबा का 'गौरा पत्थर हस्तशिल्प' वैज्ञानिक रूप से पायरोफिलाइट (Pyrophyllite) नामक मृदु पत्थर से तैयार किया जाता है।
3. 'जलेसर धातु शिल्प' का संबंध मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले से है।
4. भौगोलिक उपदर्शन (GI) पंजीकरण की वैधता अवधि पंजीकरण की तिथि से 10 वर्ष होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: मैनपुरी तारकशी काष्ठ पर पीतल के तारों की नक्काशी है; महोबा गौरा पत्थर पायरोफिलाइट मृदु प्रस्तर शिल्प है; तथा जीआई अधिनियम 1999 के तहत पंजीकरण की वैधता 10 वर्ष होती है, जिसे नवीनीकृत किया जा सकता है।

- कथन 3 असत्य है: 'जलेसर धातु शिल्प' (Jalesar Metal Craft) उत्तर प्रदेश के **एटा जिले** के जलेसर से संबंधित है (जो पीतल की घंटियों व घुंघरू निर्माण हेतु प्रसिद्ध है), न कि अलीगढ़ से (अलीगढ़ अपने 'ताला शिल्प' हेतु प्रसिद्ध है)।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (जीआई टैग प्राप्त उत्पाद)	**सूची-II (संबद्ध जिला / क्षेत्र)**
a. कालपी हस्तनिर्मित कागज	1. बांदा
b. अमरोहा ढोलक	2. जालौन
c. शजर पत्थर शिल्प	3. बिजनौर
d. नगीना काष्ठ शिल्प	4. अमरोहा

कूट:

(A) a-2, b-4, c-1, d-3

(B) a-2, b-1, c-4, d-3

(C) a-4, b-2, c-1, d-3

(D) a-3, b-4, c-2, d-1

उत्तर: (A) a-2, b-4, c-1, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **कालपी हस्तनिर्मित कागज:** जालौन जिले की कालपी तहसील में अपशिष्ट कपड़ों और रीसाइकिल्ड लुगदी से तैयार किया जाता है।
  - **अमरोहा ढोलक:** अमरोहा जिले का प्रसिद्ध काष्ठ आधारित वाद्ययंत्र उद्योग।
  - **शजर पत्थर शिल्प:** बांदा जिले में केन नदी बेसिन में पाए जाने वाले वृक्ष-नुमा आकृति युक्त पत्थरों की नक्काशी।
  - **नगीना काष्ठ शिल्प:** बिजनौर जिले के नगीना क्षेत्र में शीशम व आबनूस पर बारीक काष्ठ कला।

टॉपिक - 5: खेल आयोजन, खेल अवसंरचना एवं राज्य खेल पुरस्कार

उत्तर प्रदेश में खेलों के समग्र प्रोत्साहन, ओलंपिक व अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक विजेताओं को सीधी राजपत्रित नियुक्तियां देने तथा ग्रामीण स्तर पर प्रतिभाओं को तराशने के लिए खेल नीति और पुरस्कार संरचना को व्यापक स्तर पर सशक्त किया गया है।

1. राज्य के सर्वोच्च खेल पुरस्कार एवं नीतिगत प्रावधान

- **लक्ष्मण पुरस्कार एवं रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार:**

- **प्रकृति:** उत्तर प्रदेश सरकार के खेल विभाग द्वारा प्रदान किए जाने वाले राज्य के सर्वोच्च खेल सम्मान।
- **वर्गीकरण:** पुरुष खिलाड़ियों को **'लक्ष्मण पुरस्कार'** तथा महिला खिलाड़ियों को **'रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार'**।
- **श्रेणियां (3 श्रेणियां):**
    1. सामान्य वर्ग (General Category)
    2. दिव्यांग/पैरा वर्ग (Differently-Abled/Para Category)
    3. वेटरन/अनुभवी वर्ग (Veteran Category - 40 वर्ष या उससे अधिक आयु)
- **पुरस्कार राशि व स्वरूप:** प्रत्येक विजेता को **₹3,11,000 (तीन लाख ग्यारह हजार रुपये)** की नकद धनराशि, कांस्य प्रतिमा (लक्ष्मण/रानी लक्ष्मीबाई) तथा प्रशस्ति-पत्र।
- **प्रमुख अर्हता:** खिलाड़ी का उत्तर प्रदेश का मूल निवासी होना तथा न्यूनतम लगातार 3 वर्षों तक राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन दर्ज करना अनिवार्य है।

- **उत्तर प्रदेश खेल नीति:**
    - ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक विजेता को ₹6 करोड़, रजत पदक विजेता को ₹4 करोड़ तथा कांस्य पदक विजेता को ₹2 करोड़ की पुरस्कार राशि अनुमन्य।
    - अंतरराष्ट्रीय पदक विजेताओं को उत्तर प्रदेश पुलिस एवं अन्य प्रशासनिक विभागों में सीधे राजपत्रित पदों (DSP, उप-जिलाधिकारी आदि) पर विशेष नियुक्ति का प्रावधान।

2. प्रमुख खेल अवसंरचना एवं खेल परिसर

- **मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय:**
    - **स्थान:** सरधना (सलावा गांव), **मेरठ**।
    - **विशिष्टता:** यह उत्तर प्रदेश का प्रथम खेल विश्वविद्यालय है, जिसे विश्वस्तरीय खेल विज्ञान, एथलेटिक्स और बहु-खेल अकादमियों से सुसज्जित किया गया है।
- **अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, वाराणसी (गंजारी):**
    - वाराणसी के राजातालाब (गंजारी) क्षेत्र में भगवान शिव की थीम (डमरू आकार का मीडिया सेंटर, अर्धचंद्राकार छत, त्रिशूल आकार की फ्लडलाइट्स) पर आधारित अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम।
- **खेलो इंडिया विंटर्स / यूनिवर्सिटी गेम्स सहभागिता:**
    - राज्य के विभिन्न संभागीय मुख्यालयों पर सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक, एस्ट्रोटर्फ हॉकी मैदान तथा बहुउद्देशीय इनडोर हॉलों का व्यापक संजाल तैयार किया गया है।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **लक्ष्मण एवं रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार वितरण:** राज्य सरकार द्वारा अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाले प्रमुख खिलाड़ियों को लोकभवन में सम्मानित किया गया। इसमें क्रिकेट में उल्लेखनीय योगदान हेतु रिंकू सिंह (अलीगढ़), भारतीय हॉकी टीम के फॉरवर्ड उत्तम सिंह (गाजीपुर) तथा पैरा-एथलेटिक्स में विश्व मंच पर स्वर्ण पदक जीतने वाली सिमरन शर्मा को रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

©IASHINDIMEDIUM

- **उत्तर प्रदेश खेल प्रोत्साहन प्राधिकरण (Sports Development Authority of UP):** राज्य के सभी 75 जिलों में ग्रामीण स्टेडियमों और 'एक ब्लॉक, एक खेल' (One Block One Sport) योजना के संचालन की निगरानी हेतु एक समर्पित प्राधिकरण को पूर्णतः क्रियाशील किया गया।
- **मोटोजीपी भारत (MotoGP Bharat) / अंतरराष्ट्रीय मोटरस्पोर्ट्स:** बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट (ग्रेटर नोएडा) में अंतरराष्ट्रीय रेसिंग प्रतियोगिताओं के नियमित आयोजनों के माध्यम से खेल पर्यटन को गति दी गई।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उत्तर प्रदेश के राज्य खेल पुरस्कारों एवं खेल अवसंरचना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिए जाने वाले लक्ष्मण पुरस्कार तथा रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार के तहत विजेताओं को ₹3,11,000 की नकद धनराशि प्रदान की जाती है।
2. यह पुरस्कार केवल सामान्य वर्ग के खिलाड़ियों को प्रदान किया जाता है; इसमें दिव्यांग (पैरा) तथा वेटरन वर्ग का कोई प्रावधान नहीं है।
3. उत्तर प्रदेश के प्रथम खेल विश्वविद्यालय 'मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय' की स्थापना मेरठ के सरधना में की जा रही है।
4. वाराणसी के गंजारी में भगवान शिव की थीम पर आधारित अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 3 और 4 सत्य हैं: लक्ष्मण और रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार के तहत ₹3.11 लाख की पुरस्कार राशि दी जाती है; उत्तर प्रदेश का पहला खेल विश्वविद्यालय मेरठ (सरधना) में स्थापित है; तथा वाराणसी (गंजारी) में शिव-थीम पर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण हुआ है।
    - कथन 2 असत्य है: यह पुरस्कार तीन अलग-अलग श्रेणियों में दिया जाता है—सामान्य वर्ग, दिव्यांग/पैरा वर्ग, तथा अनुभवी/वेटरन वर्ग (40 वर्ष से अधिक आयु)।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (खेल संस्थान / अवसंरचना)	**सूची-II (संबंधित जिला / स्थल)**
a. मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय	1. गौतम बुद्ध नगर

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (खेल संस्थान / अवसंरचना)	सूची-II (संबंधित जिला / स्थल)
b. बुद्ध इंटरनेशनल मोटर रेसिंग सर्किट	2. मेरठ (सरधना)
c. शिव-थीम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम	3. कानपुर
d. ग्रीन पार्क क्रिकेट स्टेडियम	4. वाराणसी (गंजारी)

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - **मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय:** सलावा, सरधना (मेरठ)।
  - **बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट:** ग्रेटर नोएडा (गौतम बुद्ध नगर)।
  - **शिव-थीम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम:** गंजारी, राजातालाब (वाराणसी)।
  - **ग्रीन पार्क स्टेडियम:** कानपुर का ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय टेस्ट क्रिकेट मैदान।

आर्थिक , खेल एवं विविध समसामयिकी

टॉपिक - 1: भारतीय अर्थव्यवस्था के नवीनतम आंकड़े: जीडीपी वृद्धि, मुद्रास्फीति एवं राजकोषीय स्थिति

भारतीय अर्थव्यवस्था के समष्टिगत आर्थिक संकेतकों (Macroeconomic Indicators) से जुड़े आंकड़े—विशेषकर राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) तथा वित्त मंत्रालय के आर्थिक सर्वेक्षण द्वारा जारी किए जाने वाले तथ्य परीक्षा हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

1. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एवं वृद्धि दर के आयाम

- **वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर (Real GDP Growth Rate):**

- राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के आंकड़ों एवं आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 में भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर लगभग **6.8% से 7.2%** के दायरे में रही, जबकि वित्त वर्ष 2025-26 के अग्रिम अनुमानों में यह दर **7.4% से 7.6%** के बीच दर्ज की गई।
- भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बना हुआ है तथा वर्तमान में वैश्विक स्तर पर 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है (क्रय शक्ति समता यानी PPP के आधार पर तीसरी सबसे बड़ी)।

- **आधार वर्ष एवं गणना पद्धति:**
  - भारत में वर्तमान में राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी (GDP/GVA) की गणना का आधार वर्ष **2011-12** है।
  - जीडीपी का आकलन बाजार मूल्य (Market Prices) पर तथा जीवीए (Gross Value Added) का आकलन बुनियादी मूल्यों (Basic Prices) पर किया जाता है।
- **क्षेत्रवार हिस्सेदारी (GVA Share):**
  - **सेवा क्षेत्र (Services):** लगभग **54%** हिस्सेदारी के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा चालक क्षेत्र।
  - **उद्योग क्षेत्र (Industry):** लगभग **28%** से **29%** की हिस्सेदारी।
  - **कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (Agriculture & Allied):** लगभग **17%** से **18%** हिस्सेदारी (किन्तु आजीविका एवं रोजगार का सबसे बड़ा प्रदाता)।

2. मुद्रास्फीति (Inflation) एवं मौद्रिक रूपरेखा

- **मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (Flexible Inflation Targeting - FIT):**
  - भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 45ZA के तहत केंद्र सरकार द्वारा RBI की मौद्रिक नीति समिति (MPC) हेतु खुदरा मुद्रास्फीति का लक्ष्य **4% ($\pm 2\%$)** यानी 2% से 6% का बैंड निर्धारित है।
- **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI - संयुक्त):**
  - **नोडल एजेंसी:** NSO (सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय - MoSPI)।
  - **आधार वर्ष: 2012 = 100**।
  - **महत्वपूर्ण घटक:** 'खाद्य एवं पेय पदार्थ' (Food and Beverages) का भारांक सर्वाधिक **45.86%** है।
  - **रुझान:** सब्जियों और दालों की आपूर्ति में सुधार तथा मौसमी अनुकूलता से खुदरा मुद्रास्फीति नियंत्रित सीमा में बनी रही।
- **थोक मूल्य सूचकांक (WPI):**
  - **नोडल कार्यालय:** आर्थिक सलाहकार कार्यालय (DPIIT), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय।
  - **आधार वर्ष: 2011-12 = 100**।
  - **घटक भारांक:** विनिर्मित उत्पाद (Manufactured Products - 64.23%), प्राथमिक वस्तुएं (Primary Articles - 22.62%), तथा ईंधन एवं बिजली (Fuel & Power - 13.15%)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

©IASHINDIMEDIUM

- **आरबीआई मौद्रिक नीति रुख:** भारतीय रिज़र्व बैंक की 6-सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने मुद्रास्फीति को 4% के मध्यबिंदु पर संरेखित रखने और विकास को गति देने के लिए नीतिगत रेपो दर (Repo Rate) के प्रबंधन को निरंतर संतुलित बनाए रखा।

- **राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) लक्ष्य:** केंद्रीय बजट एवं मध्यम अवधि राजकोषीय नीति वक्तव्य के तहत सरकार ने राजकोषीय समेकन के पथ पर आगे बढ़ते हुए राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के **4.5% से नीचे** लाने का लक्ष्य निर्धारित किया।

- **विदेशी मुद्रा भंडार (Forex Reserves) एवं चालू खाता घाटा (CAD):** भारत का विदेशी मुद्रा भंडार सुदृढ़ स्थिति में लगभग 11 महीनों के आयात को कवर करने में सक्षम रहा, तथा चालू खाता घाटा जीडीपी के **1% के आसपास** सीमित रहा।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में राष्ट्रीय आय (GDP) तथा मुद्रास्फीति की गणना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की गणना हेतु प्रयुक्त राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी का वर्तमान आधार वर्ष 2011-12 है।
2. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) मौद्रिक नीति के संचालन हेतु थोक मूल्य सूचकांक (WPI) को मुख्य मुद्रास्फीति संकेतक के रूप में उपयोग करता है।
3. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI-Combined) में 'खाद्य एवं पेय पदार्थ' समूह का भारांक (Weightage) 40% से अधिक है।
4. आरबीआई अधिनियम के अंतर्गत मौद्रिक नीति समिति (MPC) हेतु खुदरा मुद्रास्फीति का अनिवार्य लक्ष्य 4% ($\pm 2\%$) निर्धारित किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 3 और 4 सत्य हैं: भारत में GDP/GVA गणना का आधार वर्ष 2011-12 है; CPI (संयुक्त) में खाद्य एवं पेय समूह का भार 45.86% (40% से अधिक) है; तथा मौद्रिक नीति समिति हेतु 4% ($\pm 2\%$) यानी 2% से 6% का मुद्रास्फीति लक्ष्य निर्धारित है।
    - कथन 2 असत्य है: डॉ. उर्जित पटेल समिति की सिफारिशों के पश्चात वर्ष 2014 से RBI मौद्रिक नीति तय करने के लिए **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI-Combined)** को मुख्य मुद्रास्फीति संकेतक के रूप में उपयोग करता है, न कि थोक मूल्य सूचकांक (WPI) को।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

©IASHINDIMEDIUM

सूची-I (आर्थिक सूचक / घटक)	सूची-II (संबंधित नोडल संस्था / आधार वर्ष)
a. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI)	1. आर्थिक सलाहकार कार्यालय (DPIIT)
b. थोक मूल्य सूचकांक (WPI)	2. 2012 = 100
c. WPI में सर्वाधिक भारांक	3. विनिर्मित उत्पाद (लगभग 64.23%)
d. CPI में सर्वाधिक भारांक	4. खाद्य एवं पेय पदार्थ (लगभग 45.86%)

कूट:

(A) a-2, b-1, c-3, d-4

(B) a-1, b-2, c-3, d-4

(C) a-2, b-1, c-4, d-3

(D) a-4, b-3, c-1, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-3, d-4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI):** इसका वर्तमान आधार वर्ष 2012 = 100 है तथा इसे NSO द्वारा जारी किया जाता है।
    - **थोक मूल्य सूचकांक (WPI):** इसे उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) के आर्थिक सलाहकार कार्यालय द्वारा जारी किया जाता है।
    - **WPI में सर्वाधिक भारांक:** विनिर्मित उत्पादों (Manufactured Products) का भारांक 64.23% है।
    - **CPI में सर्वाधिक भारांक:** खाद्य एवं पेय पदार्थ समूह का भारांक 45.86% है।

टॉपिक - 2: भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) के प्रमुख समसामयिक निर्णय एवं विनियामक पहलें

भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 और बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 के अंतर्गत केंद्रीय बैंक द्वारा वित्तीय स्थिरता, मुद्रास्फीति नियंत्रण, भुगतान प्रणालियों के आधुनिकीकरण तथा डिजिटल बैंकिंग सुरक्षा हेतु कई ऐतिहासिक विनियामक निर्णय लिए गए हैं।

1. प्रमुख नीतिगत दरें, रूपरेखा एवं मौद्रिक रुख

- **लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (FIT ढांचा):**
    - RBI अधिनियम, 1934 की धारा 45ZB के तहत गठित 6-सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (MPC) उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित मुद्रास्फीति को 4% ($\pm$2%) के दायरे में बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है।

- समिति में 3 आंतरिक सदस्य (RBI गवर्नर, डिप्टी गवर्नर एवं नामित अधिकारी) तथा केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त 3 बाह्य विशेषज्ञ सदस्य शामिल होते हैं।

- **सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड (SGrBs):**
  - भारतीय रिज़र्व बैंक ने सरकार के बाजार उधारी कार्यक्रम के तहत नवीकरणीय ऊर्जा, स्वच्छ परिवहन और जलवायु अनुकूलन परियोजनाओं के वित्तपोषण हेतु सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड जारी करने की रूपरेखा का विस्तार किया।
  - विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPIs) को IFSC गिफ्ट सिटी (गांधीनगर) में सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड में पूर्ण स्वचालित मार्ग से निवेश की अनुमति प्रदान की गई।

2. डिजिटल मुद्रा एवं भुगतान प्रणाली सुधार

- **सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC - डिजिटल रुपया / e₹):**
  - भारतीय रिज़र्व बैंक ने **थोक (e₹-W)** और **खुदरा (e₹-R)** दोनों खंडों में सीबीडीसी के पायलट प्रोजेक्ट का दायरा बढ़ाया।
  - **प्रोग्रामेबिलिटी और ऑफलाइन क्षमता:** डिजिटल रुपये में विशिष्ट व्यय (जैसे कृषि सब्सिडी, कार्बन क्रेडिट) हेतु प्रोग्रामेबिलिटी जोड़ी गई तथा इंटरनेट-विहीन दूरदराज क्षेत्रों में लेन-देन हेतु ऑफलाइन कार्यक्षमता का सफल परीक्षण किया गया।
  - यूपीआई (UPI) इंटरऑपरेबिलिटी: डिजिटल रुपया वॉलेट को यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) क्यूआर कोड के साथ पूर्णतः एकीकृत किया गया।
- **अनसिक्योर्ड लेंडिंग (असुरक्षित ऋण) पर जोखिम भार (Risk Weight) वृद्धि:**
  - वित्तीय प्रणाली में प्रणालीगत जोखिम को रोकने हेतु व्यक्तिगत ऋण (Personal Loans), क्रेडिट कार्ड तथा एनबीएफसी (NBFCs) को दिए जाने वाले बैंक ऋण पर जोखिम भार को 100% से बढ़ाकर 125% से 150% किया गया।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन विनियामक संदर्भ (2025–2026)

- **उद्गम (UDGAM) पोर्टल का विस्तार:** बैंकों में जमा **दावारहित जमा राशि (Unclaimed Deposits)** को खोजने हेतु RBI के 'UDGAM' (Unclaimed Deposits - Gateway to Access inforMation) पोर्टल पर देश के 30 से अधिक प्रमुख सार्वजनिक व निजी वाणिज्यिक बैंकों को एकीकृत किया गया।
- **प्रवाह (PRAVAAH) पोर्टल एवं फिनटेक रिपॉजिटरी:** नियामक अनुमोदन, लाइसेंस और अनापत्ति प्रमाण-पत्र (NOC) प्राप्त करने की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने हेतु केंद्रीय बैंक ने 'PRAVAAH' (Platform for Regulatory Application, Validation and AutHorisation) पोर्टल तथा फिनटेक नवाचारों के आधिकारिक डेटाबेस हेतु 'फिनटेक रिपॉजिटरी' को पूरी तरह क्रियान्वित किया।
- **सुलभ यूपीआई सीमा में वृद्धि:** कर भुगतान (Tax Payments), अस्पतालों एवं शैक्षणिक संस्थानों में यूपीआई से भुगतान की सीमा को बढ़ाकर **₹5 लाख प्रति लेन-देन** किया गया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) के हालिया विनियामक निर्णयों एवं पहलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मौद्रिक नीति समिति (MPC) में कुल 6 सदस्य होते हैं, जिनमें 3 सदस्य RBI से तथा 3 बाह्य सदस्य केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।

2. भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा शुरू किया गया 'उद्गम' (UDGAM) पोर्टल बैंकों में जमा दावारहित जमा राशि (Unclaimed Deposits) की खोज करने हेतु एक केंद्रीकृत वेब पोर्टल है।

3. केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC - e₹) के खुदरा और थोक दोनों प्रारूपों को यूपीआई (UPI) क्यूआर कोड के साथ इंटरऑपरेबल बना दिया गया है।

4. व्यक्तिगत ऋणों एवं एनबीएफसी को दिए जाने वाले असुरक्षित ऋणों पर जोखिम भार (Risk Weight) को घटाकर 50% कर दिया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1, 2 और 3 सत्य हैं: MPC की संरचना 6-सदस्यीय (3 RBI + 3 सरकारी) है; UDGAM पोर्टल अनक्लेम्ड डिपॉजिट्स की ट्रैकिंग के लिए विकसित किया गया है; तथा सीबीडीसी रिटेल वॉलेट को यूपीआई क्यूआर कोड के साथ इंटरऑपरेबल बनाया गया है ताकि सामान्य व्यापारी क्यूआर कोड से भी डिजिटल रुपये में भुगतान हो सके।
    - कथन 4 असत्य है: असुरक्षित उपभोक्ता ऋणों में तीव्र वृद्धि और संभावित गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NPA) जोखिम को नियंत्रित करने हेतु रिज़र्व बैंक ने जोखिम भार को घटाया नहीं, बल्कि 100% से **बढ़ाकर 125% से 150%** किया है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (RBI पोर्टल / विनियामक पहल)	**सूची-II (प्राथमिक उद्देश्य / कार्यप्रणाली)**
a. उद्गम पोर्टल (UDGAM)	1. नियामक अनुमोदन एवं लाइसेंस हेतु एकीकृत डिजिटल मंच
b. प्रवाह पोर्टल (PRAVAAH)	2. दावारहित बैंक जमा राशियों की खोज एवं ट्रैकिंग
c. मौद्रिक नीति समिति (धारा 45ZB)	3. बैंकों में साइबर सुरक्षा मानकों की निगरानी
d. दक्ष पोर्टल (DAKSH)	4. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-1, b-2, c-4, d-3

(D) a-3, b-1, c-4, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **उद्गम पोर्टल (UDGAM):** नागरिकों को विभिन्न बैंकों में अप्रयुक्त/दावारहित जमा राशियों की पहचान करने में सहायता करता है।
    - **प्रवाह पोर्टल (PRAVAAH):** रिज़र्व बैंक से विभिन्न विनियामक अनुमतियां, अनापत्ति प्रमाण-पत्र और लाइसेंस प्राप्त करने का सिंगल-विंडो पोर्टल है।
    - **मौद्रिक नीति समिति:** RBI अधिनियम की धारा 45ZB के तहत 4% ($\pm 2\%$) मुद्रास्फीति लक्ष्य को हासिल करने हेतु नीतिगत दरों का निर्धारण करती है।
    - **दक्ष (DAKSH):** रिज़र्व बैंक की उन्नत पर्यवेक्षी और अनुपालन प्रबंधन निगरानी प्रणाली है।

टॉपिक - 3: प्रमुख खेल प्रतियोगिताएं, विजेता, नए रिकॉर्ड एवं उत्तर प्रदेश विशेष सहभागिता

वैश्विक एवं राष्ट्रीय खेल आयोजनों, पदक तालिकाओं, रिकॉर्ड्स तथा उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों की उपलब्धियों से जुड़े मुख्य तथ्य निम्नलिखित हैं:

1. 33वें ग्रीष्मकालीन पेरिस ओलंपिक (2024)

- **आयोजन स्थल व शुभंकर:** पेरिस (फ्रांस); आधिकारिक शुभंकर **'ओलंपिक फ्रिज' (Olympic Phryge)**।
- **शीर्ष देश (पदक तालिका):**
    - प्रथम: **संयुक्त राज्य अमेरिका** (40 स्वर्ण, 44 रजत, 42 कांस्य — कुल 126 पदक)।
    - द्वितीय: **चीन** (40 स्वर्ण, 27 रजत, 24 कांस्य — कुल 91 पदक)।
- **भारत का प्रदर्शन:** कुल **6 पदक** (1 रजत, 5 कांस्य); पदक तालिका में 71वां स्थान।
    - **नीरज चोपड़ा:** भाला फेंक (Javelin Throw) में **रजत पदक** (89.45 मीटर)। वे व्यक्तिगत स्पर्धा में लगातार दो ओलंपिक पदक (स्वर्ण + रजत) जीतने वाले स्वतंत्र भारत के पहले ट्रैक एंड फील्ड एथलीट बने। पाकिस्तान के अरशद नदीम ने 92.97 मीटर के ओलंपिक रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण जीता।
    - **मनु भाकर:** एक ही ओलंपिक संस्करण में 2 पदक जीतने वाली स्वतंत्र भारत की प्रथम एथलीट (10 मी एयर पिस्टल एकल में कांस्य तथा सरबजोत सिंह के साथ मिश्रित टीम में कांस्य)।
    - **स्वप्निल कुसाले:** 50 मीटर राइफल 3-पोजिशन में कांस्य पदक।
    - **अमन सहरावत:** पुरुष 57 किग्रा कुश्ती में कांस्य पदक (भारत के सबसे युवा व्यक्तिगत पदक विजेता)।

©IASHINDIMEDIUM

- **भारतीय पुरुष हॉकी टीम:** स्पेन को 2-1 से हराकर लगातार दूसरा कांस्य पदक (टोक्यो के बाद पेरिस में भी कांस्य)।

2. पेरिस पैरालंपिक (2024) एवं ऐतिहासिक रिकॉर्ड

- **भारत का ऐतिहासिक प्रदर्शन:** कुल **29 पदक** (7 स्वर्ण, 9 रजत, 13 कांस्य) जीतकर भारत ने 18वां स्थान प्राप्त किया, जो पैरालंपिक इतिहास का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।
- **शीर्ष स्थान:** चीन (प्रथम स्थान - 94 स्वर्ण, कुल 220 पदक)।
- **उत्तर प्रदेश के एथलीटों का कीर्तिमान:**
  - **प्रवीण कुमार (नोएडा/गौतम बुद्ध नगर):** पुरुषों की ऊंची कूद (High Jump T64) में 2.08 मीटर की छलांग के साथ **एशियाई रिकॉर्ड बनाकर स्वर्ण पदक** जीता।
  - **अजीत सिंह यादव (इटावा):** पुरुषों की भाला फेंक (F46) स्पर्धा में **रजत पदक**।
  - **प्रीति पाल (मुजफ्फरनगर):** 100 मीटर और 200 मीटर (T35) दोनों स्प्रिंट स्पर्धाओं में दो कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा।
  - **सिमरन शर्मा (गाजियाबाद):** महिलाओं की 200 मीटर (T12) दौड़ में कांस्य पदक।

3. आईसीसी टी-20 पुरुष विश्व कप (2024)

- **आयोजन स्थल:** वेस्टइंडीज एवं संयुक्त राज्य अमेरिका (USA)।
- **विजेता: भारत** (दक्षिण अफ्रीका को बारबाडोस के ब्रिजटाउन में 7 रन से पराजित कर दूसरी बार खिताब जीता; पूर्व में 2007 में जीता था)।
- **प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट:** जसप्रीत बुमराह (15 विकेट)।
- **प्लेयर ऑफ द मैच (फाइनल):** विराट कोहली (76 रन)।

4. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **आईसीसी महिला टी-20 एवं चैंपियंस ट्रॉफी परिदृश्य:** वैश्विक क्रिकेट आयोजनों में भारतीय महिला व पुरुष टीमों का उत्कृष्ट प्रदर्शन बना रहा; महिला टी-20 विश्व कप में न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को पराजित कर पहली बार खिताब जीता।
- **राष्ट्रीय खेल एवं खेलो इंडिया यूथ गेम्स:** 38वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तर प्रदेश के एथलीटों ने कुश्ती, रोइंग, एथलेटिक्स और निशानेबाजी में शीर्ष स्थान प्राप्त किए।
- **विश्व एथलेटिक्स डायमंड लीग एवं नीरज चोपड़ा:** नीरज चोपड़ा ने डायमंड लीग फाइनल और अंतरराष्ट्रीय आमंत्रण टूर्नामेंटों में 89+ मीटर के निरंतर प्रदर्शन के साथ पोडियम स्थान बरकरार रखा।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पेरिस ओलंपिक 2024 तथा पेरिस पैरालंपिक 2024 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत ने कुल 6 पदक (1 रजत एवं 5 कांस्य) प्राप्त किए।
2. मनु भाकर स्वतंत्र भारत के इतिहास में किसी एक ही ओलंपिक संस्करण में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय एथलीट बनीं।
3. पेरिस पैरालंपिक 2024 में भारत ने कुल 29 पदक जीतकर पदक तालिका में 18वां स्थान प्राप्त किया।

©IASHINDIMEDIUM

4. उत्तर प्रदेश के प्रवीण कुमार ने पेरिस पैरालंपिक की ऊंची कूद (T64) स्पर्धा में एशियाई रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (D) 1, 2, 3 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - सभी चारों कथन सत्य हैं:
        - पेरिस ओलंपिक में भारत ने 6 पदक (नीरज चोपड़ा का रजत, मनु भाकर के दो कांस्य, स्वप्निल कुसाले का कांस्य, अमन सहरावत का कांस्य और पुरुष हॉकी टीम का कांस्य) जीते।
        - मनु भाकर एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली स्वतंत्र भारतीय खिलाड़ी बनीं।
        - पैरालंपिक में भारत ने अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 7 स्वर्ण, 9 रजत और 13 कांस्य सहित कुल 29 पदक जीते और 18वां स्थान हासिल किया।
        - उत्तर प्रदेश (नोएडा) के प्रवीण कुमार ने 2.08 मीटर के नए एशियाई रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (खिलाड़ी)	**सूची-II (संबद्ध खेल स्पर्धा / उपलब्धि)**
a. स्वप्निल कुसाले	1. पुरुषों की भाला फेंक (F46) पैरालंपिक रजत
b. अजीत सिंह यादव	2. 50 मीटर राइफल 3-पोजिशन कांस्य
c. प्रीति पाल	3. पुरुष 57 किग्रा फ्रीस्टाइल कुश्ती कांस्य
d. अमन सहरावत	4. 100 मी / 200 मी स्प्रिंट (T35) पैरालंपिक कांस्य

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-3, b-1, c-4, d-2

©IASHINDIMEDIUM

(D) a-4, b-2, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **स्वप्निल कुसाले:** 50 मीटर राइफल 3-पोजिशन शूटिंग में कांस्य पदक विजेता।
    - **अजीत सिंह यादव:** उत्तर प्रदेश (इटावा) के पैरा-जैवलिन थ्रोअर, जिन्होंने पेरिस पैरालंपिक में F46 वर्ग में रजत पदक जीता।
    - **प्रीति पाल:** उत्तर प्रदेश (मुजफ्फरनगर) की धाविका, जिन्होंने पैरालंपिक में ट्रैक स्पर्धाओं (100 मी व 200 मी T35) में दो कांस्य पदक हासिल किए।
    - **अमन सहरावत:** पुरुष 57 किग्रा कुश्ती स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर ओलंपिक में भारत के सबसे कम उम्र के व्यक्तिगत पदक विजेता बने।

टॉपिक - 4: पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन रिपोर्टें (वैश्विक एवं भारत/उत्तर प्रदेश परिदृश्य)

1. प्रमुख वैश्विक एवं राष्ट्रीय पर्यावरण रिपोर्टें

- **पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक (Environmental Performance Index - EPI):**
    - **जारीकर्ता:** येल सेंटर फॉर एनवायरनमेंटल लॉ एंड पॉलिसी तथा कोलंबिया विश्वविद्यालय (WEF के सहयोग से द्विवार्षिक रूप से)।
    - **संरचना:** 3 नीतिगत उद्देश्य—पर्यावरणीय स्वास्थ्य (Environmental Health), पारिस्थितिक तंत्र जीवन शक्ति (Ecosystem Vitality), एवं जलवायु परिवर्तन (Climate Change); इसके तहत कुल 11 श्रेणियां व 58 संकेतक सम्मिलित हैं।
    - **शीर्ष देश:** एस्टोनिया, लक्ज़मबर्ग, जर्मनी।
    - **भारत की स्थिति:** भारत 180 देशों में **176वें स्थान** (स्कोर: 27.6) पर रहा।
- **जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (Climate Change Performance Index - CCPI):**
    - **जारीकर्ता:** जर्मनवॉच (Germanwatch), न्यूक्लाइमेट इंस्टीट्यूट तथा क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क (CAN)।
    - **4 श्रेणियां व भारांक:**
        1. ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन (40%)
        2. नवीकरणीय ऊर्जा (20%)
        3. ऊर्जा उपयोग (20%)
        4. जलवायु नीति (20%)

©IASHINDIMEDIUM

- **परिणाम:** पेरिस समझौते के लक्ष्यों को पूर्णतः प्राप्त न करने के कारण **प्रथम तीन स्थान रिक्त** रखे गए। चौथे स्थान पर **डेनमार्क** रहा।
- **भारत की स्थिति:** भारत वैश्विक स्तर पर शीर्ष 10 देशों में बना रहा तथा इसे **10वां स्थान** प्राप्त हुआ (G20 देशों में भारत शीर्ष प्रदर्शनकर्ताओं में शामिल)।

- **वैश्विक कार्बन बजट एवं उत्सर्जन रिपोर्ट (UNEP Emissions Gap Report):**
  - यूएनईपी (UNEP) की उत्सर्जन अंतराल रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5°C तक सीमित रखने हेतु वर्ष 2030 तक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 42% की कटौती आवश्यक है।

2. भारत वन स्थिति रिपोर्ट (ISFR) एवं उत्तर प्रदेश विशेष संदर्भ

- **जारीकर्ता:** भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI), देहरादून (पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन द्विवार्षिक प्रकाशन)।
- **उत्तर प्रदेश के प्रमुख वन आंकड़े:**
  - **वनावरण (Forest Cover):** राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 6.15%।
  - **वृक्षावरण (Tree Cover):** कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 3.08%।
  - **कुल हरित आवरण (Forest + Tree Cover):** राज्य के भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 9.23%।
  - **सर्वाधिक वनावरण क्षेत्रफल वाले जिले:** 1. सोनभद्र, 2. चंदौली, 3. पीलीभीत, 4. मिर्जापुर।
  - **न्यूनतम वनावरण क्षेत्रफल वाले जिले:** 1. भदोही (संत रविदास नगर), 2. मऊ, 3. मैनपुरी।
  - **सर्वाधिक वनावरण प्रतिशत वाला जिला:** सोनभद्र (लगभग 35% से अधिक)।
  - **न्यूनतम वनावरण प्रतिशत वाला जिला:** भदोही (0.37%)।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **उत्तर प्रदेश 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ जनअभियान':** राज्य सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष के दौरान एक ही दिन में **36.5 करोड़ से अधिक पौधरोपण** का कीर्तिमान स्थापित किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य राज्य के हरित आवरण को 9.23% से बढ़ाकर वर्ष 2026-27 तक 15% के लक्ष्य तक पहुंचाना है।
- **उत्तर प्रदेश जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (UP-SAPCC):** राज्य सरकार द्वारा बुंदेलखंड और विंध्य क्षेत्र के सूखा-प्रवण क्षेत्रों में जलवायु अनुकूलन हेतु भूजल पुनर्भरण, चेकडैम निर्माण तथा कृषि-वानिकी (Agro-forestry) के लिए विशेष 'क्लाइमेट रेजिलिएंट एग्रीकल्चर' पैकेज अधिसूचित किया गया।
- **राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) रैंकिंग:** केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) द्वारा 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहरों की स्वच्छ वायु रैंकिंग में उत्तर प्रदेश के **आगरा** शहर ने राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त किया।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन से संबंधित वैश्विक सूचकांकों तथा रिपोर्टों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

©IASHINDIMEDIUM

1. जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI) में वर्ष 2024-25 के संस्करण में प्रथम तीन स्थान रिक्त रखे गए हैं तथा चौथे स्थान पर डेनमार्क रहा है।
2. CCPI की गणना हेतु 'ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन' श्रेणी को सर्वाधिक 40% का भारांक (Weightage) दिया जाता है।
3. पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक (EPI) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा प्रतिवर्ष एकल रूप से जारी किया जाता है।
4. भारत वन स्थिति रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक वनावरण प्रतिशत वाला जिला सोनभद्र है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (C) केवल 1, 2 और 4

- **विस्तृत व्याख्या:**
  - कथन 1, 2 और 4 सत्य हैं: CCPI में किसी भी देश ने सभी श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं किया, अतः शीर्ष 3 स्थान रिक्त रहे और डेनमार्क चौथे स्थान पर रहा; इसमें GHG उत्सर्जन का भारांक 40% है; तथा उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक वनावरण क्षेत्रफल व प्रतिशत दोनों में सोनभद्र प्रथम स्थान पर है।
  - कथन 3 असत्य है: पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक (EPI) येल विश्वविद्यालय और कोलंबिया विश्वविद्यालय द्वारा विश्व आर्थिक मंच (WEF) के सहयोग से द्विवार्षिक (Biennial) रूप से जारी किया जाता है, UNEP द्वारा वार्षिक रूप से नहीं।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (रिपोर्ट / सूचकांक / पहल)	**सूची-II (जारीकर्ता संस्था / संबंधित जिला)**
a. जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक (CCPI)	1. येल एवं कोलंबिया विश्वविद्यालय
b. पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक (EPI)	2. जर्मनवॉच एवं क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क
c. उत्तर प्रदेश में न्यूनतम वनावरण क्षेत्रफल	3. आगरा
d. NCAP स्वच्छ वायु सर्वेक्षण (10 लाख+ शीर्ष शहर)	4. भदोही (संत रविदास नगर)

कूट:

(A) a-2, b-1, c-4, d-3

©IASHINDIMEDIUM

(B) a-2, b-4, c-1, d-3

(C) a-1, b-2, c-4, d-3

(D) a-3, b-1, c-4, d-2

उत्तर: (A) a-2, b-1, c-4, d-3

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - **CCPI:** जर्मनवॉच, न्यूक्लाइमेट इंस्टीट्यूट तथा CAN द्वारा संयुक्त रूप से जारी।
    - **EPI:** येल सेंटर फॉर एनवायरनमेंटल लॉ एंड पॉलिसी तथा कोलंबिया विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित।
    - **न्यूनतम वनावरण वाला जिला (UP):** भदोही (संत रविदास नगर)।
    - **NCAP स्वच्छ वायु सर्वेक्षण शीर्ष शहर:** केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के स्वच्छ वायु सर्वेक्षण में आगरा ने प्रथम स्थान हासिल किया।

टॉपिक - 5: प्रमुख पुस्तकें एवं उनके लेखक (राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय एवं उत्तर प्रदेश विशेष)

1. प्रमुख राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुस्तकें तथा लेखक

पुस्तक का शीर्षक	लेखक / रचनाकार	मुख्य विषय / विशिष्ट संदर्भ
इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार विजेता (2024): *कायरोज़ (Kairos)*	**जेनी एरपेनबेक (Jenny Erpenbeck)**	अनुवादक: माइकल हॉफमैन; बर्लिन की दीवार के पतन के दौर के प्रेम और विभाजन का यथार्थवादी चित्रण।
बुकर पुरस्कार विजेता (2024): *ऑर्बिटल (Orbital)*	**सामंथा हार्वे (Samantha Harvey)**	अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर बीते 24 घंटों में 16 सूर्योदयों को देखती एक अंतरिक्ष टीम का दार्शनिक आख्यान।
नाइफ: मेडिटेशन्स आफ्टर एन अटेम्पटेड मर्डर	**सलमान रुश्दी**	वर्ष 2022 के जानलेवा हमले से उबरने, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानसिक संघर्ष पर आधारित संस्मरण।
आई हैव द स्ट्रीट्स: ए कुट्टी क्रिकेट स्टोरी	**आर. अश्विन एवं महेश सेतुरामन**	भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के शुरुआती जीवन, घरेलू क्रिकेट और अंतरराष्ट्रीय सफलता की आत्मकथा।
सोर्स कोड: माय बिगिनिंग्स	**बिल गेट्स**	माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स के बचपन, प्रारंभिक संघर्ष और कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के आरंभिक दौर का विवरण।

©IASHINDIMEDIUM

पुस्तक का शीर्षक	लेखक / रचनाकार	मुख्य विषय / विशिष्ट संदर्भ
द गोल्डन रोड: हाउ एंशिएंट इंडिया शेप्ड द वर्ल्ड	**विलियम डेलरिम्पल**	प्राचीन और मध्यकालीन विश्व में भारतीय दर्शन, गणित, धर्म और व्यापारिक प्रभाव का ऐतिहासिक विश्लेषण।

2. संवैधानिक, राजनीतिक एवं उत्तर प्रदेश संदर्भ

- **अम्बेडकर और संविधान निर्माण:** न्याय, समता और संवैधानिक विकास पर केंद्रित रचनाएं।
- **उत्तर प्रदेश की साहित्यिक विरासत:** उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान तथा उर्दू अकादमी द्वारा पुरस्कृत कृतियां, जिनमें स्वतंत्रता संग्राम और लोक संस्कृति का रेखांकन किया गया है।
- **महाकुंभ एवं तीर्थ आख्यान:** प्रयागराज महाकुंभ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं का दस्तावेजीकरण करने वाले आधिकारिक ग्रंथ व संकलन।

3. विगत 1 वर्ष का अद्यतन संदर्भ (2025–2026)

- **साहित्य अकादमी पुरस्कार:** हिंदी भाषा में संजीव के उपन्यास *'मुझे पहचानो'* के पश्चात नवीन कथाकारों को उनके समकालीन सामाजिक यथार्थ पर आधारित उपन्यासों तथा अंग्रेजी में नए कथा-संग्रहों हेतु राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।
- **व्यास सम्मान एवं सरस्वती सम्मान:** के. शिवा रेड्डी, प्रो. रामदरश मिश्र और पुष्पा भारती के संस्मरण *'यादें, यादें और यादें'* के क्रम को आगे बढ़ाते हुए भारतीय भाषाओं के मूर्धन्य रचनाकारों को उनके समग्र साहित्यिक योगदान के लिए के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा सम्मानित किया गया।
- **प्रशासनिक व कूटनीतिक संस्मरण:** सेवानिवृत्त राजदूतों और सैन्य अधिकारियों द्वारा भारत की एक्ट ईस्ट नीति, हिंद-प्रशांत रणनीति और सीमा सुरक्षा चुनौतियों पर रणनीतिक पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

UPPCS प्रारंभिक परीक्षा हेतु अतिसंभावित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. वर्ष 2024 के प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय साहित्य पुरस्कारों एवं उनकी विजेता पुस्तकों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सामंथा हार्वे को उनके उपन्यास *'ऑर्बिटल'* (Orbital) के लिए बुकर पुरस्कार 2024 प्रदान किया गया।
2. जेनी एरपेनबेक को उनके उपन्यास *'कायरोज़'* (Kairos) के लिए इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया।
3. *'नाइफ: मेडिटेशन्स आफ्टर एन अटेम्पटेड मर्डर'* नामक पुस्तक अरुंधति रॉय द्वारा लिखी गई है।
4. *'आई हैव द स्ट्रीट्स: ए कुट्टी क्रिकेट स्टोरी'* पूर्व क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर की आत्मकथा है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (A) केवल 1 और 2

©IASHINDIMEDIUM

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - कथन 1 और 2 सत्य हैं: सामंथा हार्वे ने अंतरिक्ष स्टेशन पर आधारित उपन्यास *'ऑर्बिटल'* हेतु बुकर पुरस्कार 2024 जीता; तथा जर्मन लेखिका जेनी एरपेनबेक ने *'कायरोज़'* हेतु इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार 2024 जीता।
    - कथन 3 असत्य है: *'नाइफ: मेडिटेशन्स आफ्टर एन अटेम्पटेड मर्डर'* के लेखक **सलमान रुश्दी** हैं, न कि अरुंधति रॉय।
    - कथन 4 असत्य है: *'आई हैव द स्ट्रीट्स: ए कुड्डी क्रिकेट स्टोरी'* भारतीय क्रिकेटर **रविचंद्रन अश्विन** (आर. अश्विन) और महेश सेतुरामन द्वारा सह-लिखित पुस्तक है।

प्रश्न 2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (पुस्तक का शीर्षक)	**सूची-II (लेखक / रचनाकार)**
a. *ऑर्बिटल* (Orbital)	1. सलमान रुश्दी
b. *कायरोज़* (Kairos)	2. विलियम डेलरिम्पल
c. *नाइफ* (Knife)	3. सामंथा हार्वे
d. *द गोल्डन रोड*	4. जेनी एरपेनबेक

कूट:

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-3, b-1, c-4, d-2

(C) a-4, b-3, c-1, d-2

(D) a-2, b-4, c-1, d-3

उत्तर: (A) a-3, b-4, c-1, d-2

- **विस्तृत व्याख्या:**
    - ***ऑर्बिटल:*** सामंथा हार्वे (बुकर पुरस्कार 2024)।
    - ***कायरोज़:*** जेनी एरपेनबेक (इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार 2024)।
    - ***नाइफ:*** सलमान रुश्दी (संस्मरण)।
    - ***द गोल्डन रोड:*** विलियम डेलरिम्पल (प्राचीन भारतीय प्रभाव पर ऐतिहासिक पुस्तक)।

©IASHINDIMEDIUM